विश्वरूप जयादित्य जय विष्णो जयाच्युत। जय केशव ईशान जय कृष्ण नमोऽस्तु ते।। जयादित्य जय स्वामिञ्जय भानो जयामल। जय वेदपते शश्वत्तारयास्मानहर्पते।।

श्री सूर्याय नमः

श्री सरस्वत्यै नमः

श्री गणेशाय नमः

श्री विष्णवे नमः

श्री शंकराय नमः

युधिष्ठिर संवत्-५१६०
कलि संवत्-५१२५
विक्रम संवत्-२०८०
शक संवत्-१९४५
निम्बार्काब्द-५११८-१९
ईस्वी सन्-२०२३-२४

श्रीसूर्यसिद्धान्त पर आधारित राजस्थान का एकमात्र

श्रीसर्वेश्वर - जयादित्य - पञ्चाङ्गम्

गणितकर्ता : आचार्य विनय झा (त्रिस्कन्ध ज्योतिर्विद्, गणितज्ञ)
प्रधान सम्पादक : पं. अमित शर्मा (जयपुर)

राजा - बुध
मन्त्री - शुक्र
संवत्सर - पिंगल
अक्षांश रेखांश
२६/५५ उत्तर
तथा ७५/४८ पूर्व
जयपुर

प्रकाशक
श्रीनिम्बार्कपरिषद्
मन्दिर श्रीसरसबिहारी जी
कलवाड़ा, तह. सांगानेर, जयपुर

मार्गदर्शक
अखिल भारतीय विद्वत्परिषद्
वाराणसी

॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥

ठाकुर श्री सरसबिहारी जी सरकार

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः॥

रुक्मिणीसत्यभामाव्रजस्त्रीविशिष्टः श्रीभगवान्
पुरुषोत्तमो वासुदेवः सम्प्रदायिभिर्वैष्णवैः सदोपासनीयः

श्रीनिम्बार्क परिषद्

सुदर्शन चक्रावतार जगद्गुरु
भगवान श्रीनिम्बार्काचार्य

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज

सर्वज्ञो जगतः कर्ता भक्ताभीष्टप्रदो विभुः। यः केशवो नमामस्तं शरण्यं भक्तवत्सलम्।।
ॐ जय जयेङ्गितज्ञाता नियमानन्द आत्मवान्। नियमेन वशे कुर्वन्भगवन्मार्गदर्शकः।।

हे आचार्यशिरोमणे!

आपश्री के आश्रित ''श्रीनिम्बार्क परिषद्'' द्वारा समस्त शास्त्रवचन पोषित आर्ष
सूर्यसिद्धान्तीय गणना आधारित भारतवर्ष के मान्य आचार्यों द्वारा प्राप्त
सम्मति एवं विद्वानों के परिश्रम से निर्मित यह

''श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग''

आपश्री को ही समर्पित है।

॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

विषयानुक्रमणिका

क्रं.सं.	विषय	पृष्ठ
१.	विषयसूची	१.
२.	सम्पादक	२.
३.	व्रतपर्व निर्णय २०८०	३.
४.	नम्र निवेदन	४.
५.	पिङ्गल संवत्सरारम्भ २०८०	६.
६.	पिङ्गल संवत्सर की राज परिषद् का फल	७.
७.	वर्षलग्न, जगल्लग्न, सूर्यआर्द्राप्रवेश फल	८.
८.	ग्रह-गोचर-उदयास्त-वक्रीमार्गी	१०.
९.	सूर्यादि ग्रहों के नक्षत्र प्रवेश २०८०	११.
१०.	एकादशी, प्रदोष आदि व्रत पर्वों की सूची	१२.
११.	पंचक एवं त्रिपुष्कर योग सूची	१३.
१२.	द्वादश राशि फल २०८०	१४.
१३.	द्वादश संक्रान्ति का स्वरूप व फल	१६.
१४.	चन्द्र ग्रहण निर्णय २०८०	१८.
१५.	उपनयन संस्कार मुहूर्त्त २०८०	१९.
१६.	विवाह संस्कार मुहूर्त्त २०८०	२०.
१७.	गृहारम्भ मुहूर्त्त २०८०	२४.
१८.	गृहप्रवेश मुहूर्त्त २०८०	२६.
१९.	मुण्डन संस्कार मुहूर्त्त	२८.
२०.	कर्णविध संस्कार मुहूर्त्त	२९.
२१.	देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त	३०.
२२.	प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त	३१.
२३.	वाहन क्रय मुहूर्त्त	३४.
२४.	नामकरण संस्कार मुहूर्त्त	३६.
२५.	अन्नप्राशन संस्कार मुहूर्त्त	३८.
२६.	विपणि व्यापार मुहूर्त्त	४०.
२७.	आवश्यक मुहूर्त्तों का परिचय	४२.
२८.	**चैत्र शुक्लपक्ष २०८०**	४४.
२९.	चैत्र शुक्लपक्ष कृत्य एवं नवरात्र स्थापना मुहूर्त्त	४५.
३०.	**वैशाख कृष्णपक्ष २०८०**	४६.
३१.	मासकृत्य एवं नागशाप शान्तिप्रयोग	४७.
३२.	**वैशाख शुक्लपक्ष २०८०**	४८.
३३.	नृसिंह मन्त्र एवं द्वादशाक्षर मन्त्र जपविधि	४९.
३४.	**ज्येष्ठ कृष्णपक्ष २०८०**	५०.
३५.	मासकृत्य एवं शनि-ग्रह शान्ति के उपाय	५१.
३६.	**ज्येष्ठ शुक्लपक्ष २०८०**	५२.
३७.	मासकृत्य एवं बिल्ववृक्ष स्थापनाविधि	५३.
३८.	**आषाढ़ कृष्णपक्ष २०८०**	५४.
३९.	पंचगव्य निर्माण विधि	५५.
४०.	**आषाढ़ शुक्लपक्ष २०८०**	५६.
४१.	मासकृत्य	५७.
४२.	**श्रावण शुद्ध कृष्णपक्ष २०८०**	५८.
४३.	सर्पस्तोत्र एवं वर्षा शकुन विचार	५९.
४४.	**श्रावण अधिक शुक्लपक्ष २०८०**	६०.
४५.	अधिक मास का महत्त्व, वर्जित व विहित कार्य	६१.
४६.	**श्रावण अधिक कृष्णपक्ष २०८०**	६२.
४७.	पुरुषोत्तम-मास व्रत व मालपुआ दान विधान	६३.
४८.	**श्रावण शुद्ध शुक्लपक्ष २०८०**	६४.
४९.	मासकृत्य एवं सदन्त शिशुजन्म शान्ति	६५.
५०.	**भाद्रपद कृष्णपक्ष २०८०**	६६.
५१.	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का कृत्य	६७.
५२.	**भाद्रपद शुक्लपक्ष २०८०**	६८.
५३.	मासकृत्य	६९.
५४.	**आश्विन कृष्णपक्ष २०८०**	७०.
५५.	सांकल्पिक श्राद्धविधि	७१.
५६.	**आश्विन शुक्लपक्ष २०८०**	७२.
५७.	आश्विन कृत्य एवं नवरात्र स्थापना मुहूर्त्त	७३.
५८.	**कार्त्तिक कृष्णपक्ष २०८०**	७४.
५९.	कार्त्तिक कृष्णपक्ष कृत्य एवं दीपावली मुहूर्त्त	७५.
६०.	**कार्त्तिक शुक्लपक्ष २०८०**	७६.
६१.	कार्त्तिक शुक्लपक्ष कृत्य	७७.
६२.	**मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष २०८०**	७८.
६३.	आठ महाद्वादशियाँ	७९.
६४.	**मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष २०८०**	८०.
६५.	वारों में करणीय कृत्य, नजरदोष निवारण	८१.
६६.	**पौष कृष्णपक्ष २०८०**	८२.
६७.	नजर दोष निवारण, प्राणायाम विधि	८३.
६८.	**पौष शुक्लपक्ष २०८०**	८४.
६९.	मकर संक्रान्ति कृत्य	८५.
७०.	**माघ कृष्णपक्ष २०८०**	८६.
७१.	भूमि अवरोध निवारक दुर्लभ प्रयोग	८७.
७२.	**माघ शुक्लपक्ष २०८०**	८८.
७३.	सरस्वती पूजन मन्त्र एवं स्तोत्रादि	८९.
७४.	**फाल्गुन कृष्णपक्ष २०८०**	९०.
७५.	मासकृत्य एवं शिव पंचाक्षर मन्त्र जपविधि	९१.
७६.	**फाल्गुन शुक्लपक्ष २०८०**	९२.
७७.	होलिका मुहूर्त्त, जयन्ती विवेचन	९३.
७८.	**चैत्र कृष्णपक्ष २०८०**	९४.
७९.	वास्तुखण्ड जीर्णोद्धार/तोड़ने की संक्षिप्त विधि	९५.
८०.	२०८० में जन्मे बच्चों नामाक्षर, नक्षत्र व पाया	९६.
८१.	वैवाहिक अष्टकूट मेलापक चक्र	१०७.
८२.	वर-वधु मेलापक सारणी	१०८.
८३.	नाड़ीदोष विचार एवं परिहार	११०.
८४.	मंगली कुण्डली विचार एवं परिहार	१११.
८५.	शनि साढ़ेसाती विचार	१११.
८६.	नवग्रहों के वैदिक मन्त्र एवं स्तोत्रादि	११२.
८७.	अवकहड़ा चक्र	११३.
८८.	नवग्रह स्तोत्र एवं नवग्रह पीड़ाहर स्तोत्र	११३.
८९.	दिन व रात्रि की चौघड़िया सारणी	११३.
९०.	द्वादश भावस्थ ग्रह फलादेश	११४.
९१.	जयपुर से अन्य नगरों की लग्न संस्कार सारणी	११५.
९२.	प्रमुख नगरों की अक्षांश रेखांश सारणी	११६.
९३.	सूर्यसिद्धान्तीय पञ्चाङ्ग ही शास्त्रीय	१२२.
९४.	भारतीय ज्योतिष का विश्व को योगदान	१२४.
९५.	गृहप्रवेश से भी महत्त्वपूर्ण है गृहारम्भ मुहूर्त्त	१३३.
९६.	द्वादश मास फल २०८०	१३४.
९७.	श्रीसुदर्शन कवच प्रयोगविधि	१३५.
९८.	पर्व-निर्णय में सूर्यसिद्धान्त की अनिवार्यता	१३६.
९९.	अखिल भारतीय विद्वत् परिषद् के प्रकाशन	१३६.

॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥

विश्वरूप **जयादित्य** जय विष्णो जयाच्युत ।
जय केशव ईशान जय कृष्ण नमोऽस्तु ते ॥ – *व.पु.*

जयादित्य जय स्वामिञ्जय भानो जयामल।
जय वेदपते शश्वत्तारयास्मानहर्पते ॥ – स्क.पु.

पिङ्गल-नाम संवत्सर २०८०, २०२३-२४ ईस्वी

श्रीसूर्यसिद्धान्त पर आधारित
राजस्थान का एकमात्र पञ्चाङ्ग

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्गम्

✻ संरक्षक ✻

श्रीमहन्त श्रीवृन्दावनबिहारीदास जी महाराज
'काठिया बाबा' सुखचर, कोलकाता

महन्त श्रीबनवारीशरण जी महाराज
प्रन्यासी अ.भा. निम्बार्काचार्यपीठ

महन्त श्रीवृन्दावनदास जी महाराज
महामंत्री अ.भा. श्रीनिम्बार्क महासभा

आचार्य महामण्डलेश्वर श्रीमहन्त स्वामी श्रीपद्मनाभशरणदेवाचार्य जी महाराज
श्रीसर्वेश्वर सेवाधाम, जयपुर, परमाध्यक्ष, श्रीनिम्बार्क परिषद्

डॉ. कामेश्वर उपाध्याय
महासचिव, अखिल भारतीय विद्वत्परिषद्, वाराणसी

✻ मार्गदर्शक ✻

पं. आदित्यमोहन शर्मा
प्रधान सम्पादक, जयविनोदी जयपुर पञ्चांग

पं. गङ्गाधर पाठक
मुख्याचार्य श्रीरामजन्मभूमि शिलापूजन, अयोध्या

✻ पञ्चाङ्ग गणितकर्ता ✻

आचार्य विनय झा
संरक्षक, अखिल भारतीय विद्वत्परिषद्, वाराणसी

✻ प्रधान सम्पादक ✻

पं. अमित शर्मा
महामंत्री, श्रीनिम्बार्कपरिषद्, जयपुर

✻ सम्पादक ✻

पं. रमाकान्त शर्मा
ज्योतिषाचार्य, जयपुर

पं. पुरुषोत्तम शर्मा
राजज्योतिषी, कलवाड़ा, जयपुर

डॉ. गोविन्दचन्द्र द्विवेदी
ज्योतिषाचार्य, मीरजापुर

पं. मोहित शर्मा
ज्योतिषाचार्य, जयपुर

पं. साकेत झा
अखिल भारतीय विद्वत्परिषद्, लुधियाना

✻ प्रबन्ध सम्पादक ✻

मुदित मित्तल
अखिल भारतीय विद्वत्परिषद्, जयपुर

✻ प्रकाशक ✻

श्रीनिम्बार्क परिषद्

मन्दिर श्रीसरसबिहारी जी, गढ़ के सामने, कलवाड़ा
जयपुर, राजस्थान – 302037
मोबाइल – 7425824413, 7737114950
www.nimbarkparishad.com
https://www.facebook.com/ssjpanchang

✻ विशिष्ट सहयोग ✻

डॉ. पारसनाथ ओझा
प्रधान संपादक, आदित्य पञ्चाङ्ग, काशी

डॉ. नमिता मित्तल
सहा. आचार्य, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर

डॉ. सिद्धार्थ माहेश्वरी
एटलांटा, यू.एस.ए.

✻ समर्थक विद्वान ✻

स्वामी श्रीसियारामदास जी महाराज नैयायिक
श्रीमहन्त, सर्वेश्वर श्रीरघुनाथ जी मंदिर, माउंट आबू

महन्त श्री अवधेशदास जी महाराज
श्रीसिद्धेश्वर हनुमान जी मंदिर, सोडाला, जयपुर

श्री हरिप्रियदास जी महाराज 'विद्याभूषण'
श्रीमद्भागवत मर्मज्ञ, पराभक्तिपीठम्, वृन्दावन

स्वामी श्री राघवेन्द्रदास जी महाराज
धर्मशास्त्रमर्मज्ञ, हृषीकेश

प्रो. अर्कनाथ चौधरी
पूर्व निदेशक, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर

पं. बजरंगलाल शर्मा
आचार्य, श्रीवैकुण्ठनाथ जी मन्दिर, हरिमार्ग, जयपुर

डॉ. शचीन्द्रनाथ उपाध्याय, आचार्य, दिल्ली वि.वि.

✻ नवग्रह चित्रांकन ✻

श्री दृढ़व्रत गॉरिक
Drdha Vrata Gorrick - Website : www.divyakala.com

✻ मार्गदर्शक ✻

अखिल भारतीय विद्वत्परिषद्, वाराणसी
देवतायन, ९६, जानकीनगर, बजरडीहा, वाराणसी,
उत्तरप्रदेश – २२१००६

ॐ संवत् २०८० के व्रत पर्व निर्णय ॐ

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

ॐ **वर्षारम्भ तथा नवरात्र स्थापना** – चैत्र शुक्ल प्रतिपदा संवत २०८० बुधवार दिनाँक २२ मार्च २०२३ पिङ्गल नाम संवत्सर का प्रारम्भ होगा इस दिन प्रत्येक घर में ध्वजारोहण नवीन निम्बदल भक्षण पञ्चांग श्रवण करना चाहिए इसी दिन वासंतिक नवरात्र प्रारम्भ होंगे। इस वर्ष चित्रा नक्षत्र व वैधृति योग न होने से उ.भा. नक्षत्र व शुक्ल/ब्रह्म योग में कलश-स्थापन का श्रेष्ठ मुहूर्त्त है। **घटस्थापना मुहूर्त्त – प्रातःकाल वृष मिथुन लग्न में ०९:१७ से १३:२७ तक घटस्थापन पूजन के लिए श्रेष्ठ समय है।** चौघड़िया देखकर स्थापना करना अशास्त्रीय है, इस दिन बुधवार होने से अभिजित मुहूर्त्त ग्राह्य नहीं है।

ॐ **श्रीराम नवमी** – चैत्र शुक्ल नवमी के मध्याह्न में पुनर्वसु नक्षत्र, कर्क लग्न में प्रभु श्रीराम का जन्म हुआ था। व्रतपूर्वक श्रीरामजी का जन्माभिषेक कर श्रीरामचरितमानस, श्रीरामरक्षास्तोत्र का पाठ करे। इस वर्ष श्रीरामनवमी ३० मार्च २०२३ गुरुवार को है।

ॐ **अक्षय तृतीया**– वैशाख शुक्ल तृतीया पूर्वाह्न व्यापिनी ग्रहण करनी चाहिये, रोहिणी नक्षत्र सहित तृतीया बुधवार से युक्त होने पर भी द्वितीया से विद्धा हो तो वर्जित है, यह तृतीया युगादि भी है और शुक्ल पक्ष की युगादि में पूजन श्राद्ध पूर्वाह्न में ही ग्राह्य है, दोनों दिन पूर्वाह्न व्यापिनी हो तो अगली ही लेनी चाहिए, शुक्ल पक्ष की युगादी तथा मन्वादी तिथियों में उदयव्यापिनी तिथि ही ग्राह्य है। २३ अप्रैल रविवार २०२३ को उदयकाल व्यापिनी तृतीया और रोहिणी नक्षत्र है, अतः इसी दिन अक्षय तृतीया है। व्रतोपवास में उदयकाल व्यापिनी तिथि लेनी चाहिये, इस मत से श्री परशुराम जयन्ती भी इसी दिन मानना उचित है।

ॐ **रक्षाबन्धन** – संवत २०८० में शुद्ध श्रावण शुक्ल पूर्णिमा प्रातः ७:३६ तक ही पूर्णिमा है, तत्पश्चात प्रतिपदा होने से रक्षाबन्धन पूर्वदिन चतुर्दशी बुधवार ३० अगस्त २०२३ को होगा। रक्षाबन्धन श्रावण शुक्ल पूर्णिमा को भद्रारहित अपराह्नकाल में कहा गया है। भद्रा में श्रावणी करने से राजा की हानि होती है। ''भद्रायां द्वे न कर्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा। श्रावणी नृपति हन्ति ग्रामं दहति फाल्गुनी ।।'' – निर्णयसिन्धु, निर्णयसिन्धु में कहा है, भद्रा उतरने पर रात्रि में भी रक्षाबन्धन किया जा सकता है, 'इदं भद्रायां न कार्यम्। तत्सत्त्वे तु रात्रावपि तदन्ते कुर्यादिति निर्णयामृते। इदं प्रतिपद्युतायां न कार्यम्।' इस दिन रात्रि २० बजकर ५१ मिनट तक भद्रा रहेगी अतः राखी बाँधने का शुद्ध मुहूर्त्त रात्रि २०:५१ के पश्चात रहेगा।

रक्षाबंधन मुहूर्त्त – भद्रा समाप्ति पश्चात् – रात्रि २०:५१ पश्चात्

ॐ **महागणपति चतुर्थी** – भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को मध्याह्न काल में श्रीगणेश जी का पूजन करना चाहिए। १८ सितम्बर २०२३ सोमवार को १०:०१ से चतुर्थी तिथि आरम्भ होगी मध्याह्न काल प्रातः ११:१३ से १३:३७ तक रहेगा। अतः ११:१३ से १३:३७ से तक पूजन करना श्रेष्ठ रहेगा। उदया तिथि वालों के लिए १९ सितम्बर २०२३ को प्रातः १०:२६ पूर्व पूजन करना सम्मत है।

ॐ **शारदीय नवरात्र** – संवत २०८० में आश्विन शुक्ल प्रतिपदा रविवार १५ अक्टूबर २०२३ को शारदीय नवरात्र आरम्भ होंगे। धर्मशास्त्रीय निर्णय से वैधृति एवं चित्रा रहित शुभमुहूर्त में कलशस्थापन होता है, परन्तु संवत २०८० में इस दिन सम्पूर्ण दिन चित्रा-वैधृति विद्यमान रहने से आश्विन नवरात्र **घटस्थापना मुहूर्त्त– अभिजित् काल ११:४९ – १२:३६ में किया जाएगा।**

ॐ **शरद पूर्णिमा** – २८ अक्टूबर को खण्ड चन्द्रग्रहण होने व सायं १६:०५ पर सूतक लग जाने से पर्व कृत्य संभव नहीं होंगे, परन्तु २७ अक्टूबर को मध्यरात्रि बाद २७:१७ बजे पूर्णिमा तिथि लग जाएगी अतः शरदपूर्णिमा के चन्द्रकिरणों में खीर रखना, कोजागरी पूजा, महारास पूजा आदि कृत्य २७ अक्टूबर को करना शास्त्रसम्मत रहेगा।

ॐ **धन त्रयोदशी** – कार्तिक कृष्ण त्र्योदशी के दिन प्रदोषकाल में यमदीपदान करने से अपमृत्यु का नाश होता है। १० नवम्बर शुक्रवार २०२३ को प्रदोषकाल १७:३३ से १८:४५ तक है।

ॐ **धन्वन्तरी जयन्ती** – उदयकाल व्यापिनी कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी शनिवार ११ नवम्बर २०२३ को श्री धन्वन्तरी जयन्ती है।

ॐ **नरक चतुर्दशी**– कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को प्रदोषकाल में नरक नाश हेतु चार बत्ती संयुक्त दीपदान करना चाहिये, ११ नवम्बर २०२३ शनिवार को प्रदोषकाल १७:३३ से १८:४५ तक है।

ॐ **रूप चतुर्दशी** – १२ नवम्बर २०२३ रविवार कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को चंद्रोदय समय अरुणोदय काल में अभ्यंग (उबटन) लगाकर स्नान करें।

ॐ **दीपावली लक्ष्मी पूजन** – प्रदोष व्यापिनी अमावस्या को प्रदोषकाल में दीपदान-उल्का प्रदर्शन करके श्रीमहालक्ष्मी का पूजन करें फिर प्रसाद भोजन ग्रहण करें। संवत २०८० में कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी रविवार १२ नवम्बर २०२३ को प्रदोषकाल व्यापिनी अमावस्या होने से दीपावली पर्व होगा।

ॐ दीपावली पूजन समय ॐ

प्रदोषकाल– १७:३२ – १८:४४, **सर्वश्रेष्ठ स्थिर वृष लग्न** – १७:५२ – १९:४७,
वृष लग्न में सिंह नवांश– १८:०२ – १८:१३, **वृष लग्न में वृष नवांश** – १८:३८ – १८:५०,
रात्रिकालीन सिंहलग्न – ००:२२ – २६:३४ तक रहेगा।

दीपावली पूजन प्रदोषकालीन अमावस्या में होता है अतः दिन में पूजन करने का कोई विधान/मुहूर्त नहीं है। चौघड़िया मात्र यात्रा का मुहूर्त्त है अतः पूजन में उसकी कोई उपयोगिता नहीं है।

ॐ **होलिका दहन** – होलिका दहन फाल्गुन शुक्लपक्ष की भद्रारहित प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा को ग्राह्य है। संवत २०८० में फाल्गुन शुक्ल चतुर्दशी रविवार २४ मार्च २०२४ ईस्वी को प्रदोषकाल व्यापिनी पूर्णिमा है। इस दिन रात्रि १०:५१ तक भद्रा समाप्त होने के उपरान्त २४ मार्च २०२४ में रात्रि १०:५१ से मध्यरात्रि १२:३४ के मध्य होलिका दहन होगा। *दिनार्धात् परतो या स्यात् फाल्गुनी पूर्णिमा यदि। रात्रौ भद्रावसाने तु होलिकां तत्र पूजयेत्।। – भविष्योत्तर* अर्थात् यदि पहले दिन प्रदोष के समय भद्रा हो और दूसरे दिन सूर्यास्तसे पूर्व पूर्णिमा समाप्त हो जाए तो भद्रा के समाप्त होने की प्रतीक्षा करके सूर्योदय होने से पहले रात्रि में होलिकादाह करना चाहिए।

श्रीजयसिंह कल्पद्रुम में लिखा है कि – *'यदा तु प्रदोषे पूर्वदिने भद्रा भवति परदिने चास्तात्पूर्वमेव पंचदशी समाप्यते तदा सूर्योदयात्पूर्वं भद्रान्तं प्रतीक्ष्य होलिका दीपनीया।'* परन्तु आज शास्त्र व परम्परा को त्यागकर प्रमाणाभास के आधार पर सायं भद्रा में ही होलिकादहन का मिथ्या निर्णय दिया जा रहा है। भद्रा में होलिकादहन कथमपि शास्त्रसम्मत नहीं है क्योंकि– *भद्रायां द्वे न कर्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा । श्रावणी नृपति हन्ति ग्रामं दहति फाल्गुनी ।। – निर्णयसिन्धु* सिद्ध है कि पूर्णिमा-व्यापिनी रात्रिपर्यन्त कभी भी भद्रारहित काल मिलने पर भद्रा में होलिकादाह पूर्णतः शास्त्रविरुद्ध है।

भद्रा पुच्छकाल में होलिका दहन केवल तब ही होता है जब यदि पहले दिन भद्रारहित प्रदोष न मिले, रात्रिभर भद्रा रहे (सूर्योदय होने से पहले न उतरे) और दूसरे दिन सूर्यास्त से पहले ही पूर्णिमा समाप्त हो जाए, तो ऐसे अवसर में सूर्योदय पूर्व भद्रा के पुच्छकाल में होलिकादीपन कर देना चाहिए।

पर चूँकि भद्राकाल सूर्योदय पर्यन्त व्याप्त नहीं है और रात्रि १०:५१ पर ही समाप्त हो रहा है अतः ७ मार्च २०२२ को रात्रि १०:५१ से पहले होलिका दहन शास्त्र एवं परम्परा के विरुद्ध होगा।

❊ नम्र निवेदन ❊

सम्मानीय धर्मानुरागी जन !

'**श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग**' का तृतीय पुष्प विक्रम संवत् २०८० के समस्त व्रतपर्वोत्सवों हेतु आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है।

गत वर्ष के प्रकाशन के पश्चात् एक बात बारम्बार मुख्य रूप से पूछी गई की इतने पञ्चाङ्गों के होते हुए एक नए पञ्चाङ्ग की आवश्यकता क्यों? तो इसका एकमेव समाधान यही निवेदित है कि '**तिथिर्विष्णुस्तथा वारो नक्षत्रं विष्णुरेव च योगश्च करणं चैव सर्वं विष्णु मयं जगत्**' और उन धर्ममूर्ति भगवान् श्रीविष्णु के अनुगत समस्त धर्मपारायण जीवों द्वारा जिन वेद प्रतिपादित नियमों के पालन किया जाता है उनका नाम धर्म है और इन धर्मकृत्यों के व्यवस्थित पालन हेतु पञ्चाङ्ग नामक साधन का प्रणयन ऋषियों ने किया। सिद्धान्तग्रन्थों में इस रीति का विशद वर्णन है, जिसका अवलम्ब लेकर भारतवर्ष के प्रत्येक क्षेत्र से पञ्चाङ्ग प्रकाशित होते आये हैं। परन्तु विगत कुछ समय से पञ्चाङ्ग निर्माण की विधि को लेकर मतभेद प्रकट हुए हैं तथा भिन्न भिन्न गणना विधि से पञ्चाङ्ग बनने से सामान्य जन में व्रतोपवास एवं पर्वों को लेकर सतत् संशय की स्थिति निर्मित हो गयी है।

'**वेदप्रणिहितो धर्मो ह्यधर्मस्तद्विपर्ययः।**' वेद प्रतिपादित नियमों के पालन करने का नाम धर्म और उसके विपरीताचरण का नाम ही अधर्म है। धर्माचरण के निर्णय हेतु '**तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्य व्यवस्थितौ**' इस भगवद्वाक्यानुसार एकमात्र शास्त्र ही प्रमाण है।

समस्त सिद्धान्त-ग्रंथों और पुराणों के अनुसार सूर्यसिद्धान्त के अनुसार ही ग्रह साधन और तिथ्यादि का निर्धारण करना चाहिए। व्यास जी का स्पष्ट वचन है (विष्णुधर्मोत्तर पुराण) कि ग्रहण आदि घटनाओं में जहाँ दर्शन की आवश्यकता हो वहाँ ग्रहस्पष्ट आदि को दृक्कर्म संस्कार द्वारा दर्शन योग्य बनाना चाहिए, किन्तु तिथ्यादि में उनका प्रयोग कभी भी नहीं करना चाहिए। निर्णयसिन्धु का भी वचन है कि अदृष्ट-फल हेतु सूर्यसिद्धान्त का प्रयोग करें नारद पुराण में सूर्यसिद्धान्त का विस्तृत गणित भी दिया गया है। अन्य सभी पुराणों में गणना के लिये सूर्यसिद्धान्त का ही प्रयोग किया गया है और सूर्यसिद्धान्त का ही निचोड़ भी प्रस्तुत किया गया है। धर्मसम्राट स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज ने ने अपने कुम्भ तिथ्यादि निर्णय में स्कन्दपुराण के कलिमाहात्म्य से उद्धृत करते हुए लिखा है-

दृक्सिद्धखेटग्रहसाधितासु कुर्वन्ति केचित्तिथिषु प्रमादात् ।
श्राद्धादिकं तत्पितृशापतस्ते पुण्यक्षयं दुर्गतिमाप्नुवन्ति ।।
तथापि सन्तो बहवोऽत्र धार्मिकाः पुरातनाचारमथाजहन्तः ।
सूर्यांशजोक्तार्जितकाल एव कर्माणि कुर्वन्ति सुखं लभन्ते ।।

कुछ लोग प्रमाद के कारण दृक् सिद्धग्रह गणित के द्वारा निर्धारित तिथियों के अनुसार श्राद्धादि वैदिक कर्म करते हैं, वे पितृशाप के कारण पुण्यक्षीण होने से दुर्गति को प्राप्त होते हैं।

फिर भी यहां बहुत से ऐसे धार्मिक हैं, जो पुरातन आचारपद्धति को न छोड़ते हुए सूर्यपुत्र मय के द्वारा कहे गये सूर्यसिद्धान्त द्वारा निर्धारित काल में ही श्राद्धादि-कर्म करते हैं, व सुख प्राप्त करते हैं।

अदृष्ट-फल-सिध्यर्थ यथार्कगणितं कुरु ।
गणितं यदि दृष्टार्थ तद्दृष्ट्युद्भव तस्सदा ।। निर्णयसिन्धु

''अदृष्ट (प्रारब्ध) फल की सिद्धि हेतु सूर्यसिद्धान्त (अर्क-गणित) का प्रयोग करें, दृष्ट प्रयोजन यदि हो तो उसके लिए दृष्ट से उद्भूत गणित सदा प्रयुक्त करें।

कालिदास ज्योतिर्विदाभरण में लिखते हैं कि पञ्चाङ्ग में अधिकमास, क्षयमास, ग्रहों की संक्रान्ति आदि सूर्यसिद्धान्तीय गणना से ही लेनी चाहिए-

श्रीसूर्यसिद्धान्तमतोद्भवार्कात् साध्यौ तदा तावधिकक्षयौ।
मासौ तदा संक्रमकाल एव साध्यः सदा हौरिकशास्त्रविद्भिः।।

परम् आश्चर्य का विषय है कि सभी व्रत पर्वों के निर्धारण में सर्वमान्य एवं सर्वाधिक प्रतिष्ठित ग्रन्थ निर्णयसिन्धु है। उत्तरभारत के प्रायः सभी पञ्चाङ्ग निर्णयसिन्धु का अवलम्बन लेते हैं। इसी निर्णयसिन्धु के कर्ता सिद्धान्ततत्त्वविवेककार आचार्य कमलाकर भट्ट ने धर्मकृत्य निर्णय एवं फलादेश में दृश्यपक्ष को नकारकर सूर्यसिद्धान्त को ही परम प्रामाणिक मानते हुए इसे वेदवत कहा है, '**प्रमाणं श्रुतिवद् ग्राह्यम्।**' तब सूर्यसिद्धान्त को भ्रमजाल बताने वाले निर्णयसिन्धु का भी त्याग क्यों नहीं कर देते। इसी प्रकार 'धर्मसिन्धु' के टीकाकार महामहोपाध्याय पण्डित सदाशिव शास्त्री मुसलगाँवकर ने ५००० वर्षों के गणित का अध्ययन करने के उपरान्त सूर्यसिद्धान्त को ही परमप्रामाणिक सिद्ध किया व सन् १९२४ में ग्वालियर स्टेट में शास्त्रार्थ में वे सूर्यसिद्धान्त के पक्ष से विजयी हुए। ऐसी स्थिति में तो सूर्यसिद्धान्त के विरोधियों को निर्णयसिन्धु एवं धर्मसिन्धु दोनों का ही त्याग कर देना चाहिए।

दृक्गणित के पक्षपातियों का स्वसिद्धान्त के पक्ष में एकमेव कथन यह है कि उनकी गणना से ग्रह दर्शन प्रत्यक्ष होता है। इनके इस कथन पर वह कथा स्मरण हो आती है की जब गङ्गापुत्र भीष्म अपने पिता शान्तनु का श्राद्ध करने हरिद्वार गए। एकाग्रचित होकर उन्होंने जैसे ही विधिवत पिण्डदान देना आरम्भ किया, तो पिण्डवेदी पर बिछे कुशों में से एक हाथ निकलकर बाहर आया। शान्तनु स्वयं अपने निमित्त पिण्डदान लेने के लिये उपस्थित हो गए थे। धर्मनिष्ठ पुरूष भीष्म ने पिण्ड का दान उनके हाथ में न करके इस हेतु बनाई गयी वेदी के ऊपर रखे कुशों पर ही किया, क्योंकि शास्त्रों में कुशों पर ही पिण्डदान करने का विधान है- '**पिण्डो देयः कुशोष्वीति।**' पुत्र भीष्म की इस शास्त्रनिष्ठा पर शान्तनु अत्यन्त प्रसन्न हुए। स्पष्ट है धर्माधर्म का विवेक सूक्ष्म और अदृष्ट है जो 'अपूर्व' को उत्पन्न करता है। उसी प्रकार ज्योतिष का प्रमाण भी फलादेश होता है, भौतिक ग्रहों की दृश्यता नहीं।

केवल ग्रहदर्शनार्थ ही दृक्कर्मसंस्कार का शास्त्र में आदेश है, तिथि आदि के निर्णय में नहीं। ग्रहों के उदय-अस्त, शृङ्ग तथा सूर्य-चन्द्र के ग्रहण में ही दृक्कर्मसंस्कार करे, यह स्वयं सूर्यसिद्धान्त ही कहता है। श्रीमद्भागवत दशम स्कन्ध अध्याय आठ के पांचवें श्लोक में भी ज्योतिष को अतीन्द्रीय ही कहा गया है, उसके फलज्ञान को साक्षात् कहा गया है –

'ज्योतिषामयनं साक्षाद् यत्तज्ज्ञानं अतीन्द्रियम्।'

परन्तु पिछली कुछ शताब्दियों से भौतिकवादियों का बोलबाला बढ़ गया है, जो भौतिक पिण्डों को ही ज्योतिषीय ग्रह मानते हैं, किन्तु ऐसा करने पर ज्योतिषीय-ग्रहस्पष्ट में कई अंशों तक का अंतर पड़ जाता है, और षोडश-वर्गों में कई तो एकदम अशुद्ध बन जाते हैं और फलादेश सही नहीं निकलते। हमारे पूर्वज अविवेकी नहीं थे जो अभी कुछ समय पूर्व तक केरल से लेकर तिब्बत तक सहस्रों वर्ष पर्यन्त सूर्यसिद्धान्तीय पञ्चाङ्गों का प्रयोग करते आ रहे थे और ना ही आधुनिक पञ्चाङ्गकर्ता इतने मनोनिग्रही हैं कि उनके द्वारा सूर्यसिद्धान्तीय गणना को नकारा जाना स्वीकार किया जा सके।

जयपुराधीश महाराजा सवाई श्रीजयसिंह जी जो स्वयं ज्योतिष के विद्वान् थे, उन्होंने वेधशालाएँ निर्मित करवाकर ग्रहवेध द्वारा नवीनीकृत सारणियाँ बनवाई तथापि उनके शासन में व्रतपर्व-तिथि आदि निर्णयार्थ सूर्यसिद्धान्तीय गणना साधित पञ्चाङ्ग ही प्रकाशित किया गया जो विगत कुछ वर्षों पूर्व तक प्राचीन आर्षगणना द्वारा ही लगभग तीन सौ वर्ष से निरन्तर प्रकाशित होता रहा है। यह भारतख्यात सूर्यसिद्धान्तीय पञ्चाङ्ग ऐसे समय में भी धर्म की ध्वजा को थामे हुए था जब नवीन पञ्चाङ्गकर्ताओं ने अमावस्या में ही नवरात्र स्थापना करवा डाली थी और प्रत्येक पर्व-त्यौहारों के दो दो दिन पड़ने का क्रम आरम्भ हो गया था। आधुनिक दृग्गणित के पक्षपातियों ने सूर्यसिद्धान्त को कालबाह्य घोषित कर एकमेव दृग्गणित आधारित पञ्चाङ्ग को ही सर्वथा ग्राह्य बतलाते हुए समस्त धर्मशास्त्रीय प्रक्रिया का अतिक्रमण कर लिया तब जयपुर से प्रकाशित एकमात्र सौर पञ्चाङ्ग को भी विवशता में सूर्यसिद्धान्तीय गणना का त्याग करना पड़ा। यह घटना राजस्थान के ज्योतिष क्षेत्र के लिए अत्यन्त दुःखद थी।

ग्रहगणना सिद्धान्त का विवाद तो एक ओर रहा परन्तु वर्तमान में दृक्पक्षीय पञ्चाङ्गकर्ताओं की मनमानी पर्वों के निर्धारण में भी हतप्रभ कर देने वाली है। पर्वों के निर्धारण में अब शास्त्रवचन नहीं 'वर्तमानकाल की व्यवहारिता' को प्रयोग में लाने लगे हैं। अस्तु यह विषय इतना जटिल हो चुका है की इसका निराकरण सहज सम्भव नहीं लगने पर भी अगम्य नहीं है। बीज रूप में ही सही पर सिद्धान्त की रक्षा अवश्य ही हो, इस पावन उद्देश्य को लेकर संवत् २०७८ से इस 'श्रीसर्वेश्वर-जयादित्य-पञ्चाङ्ग' का प्रकाशन आरंभ हुआ है। श्रीसूर्यसिद्धान्तीय गणितज्ञ व त्रिस्कन्धज्योतिर्विद् आचार्य श्री विनय झा जी ने जयपुर के आराध्यदेव ठाकुर श्रीगोविन्ददेवजी मन्दिर के अक्षांश रेखांशों पर पञ्चाङ्ग हेतु सूर्यसिद्धान्तीय सूक्ष्मगणितसाधन किया। आचार्य जी द्वारा साधित गणना से काशी, दरभंगा आदि अनेक स्थानों से पञ्चाङ्ग प्रकाशित हो रहे हैं।

जयपुर के प्राचीनतम पञ्चाङ्ग के प्रधान सम्पादक पं. श्री आदित्यमोहन शर्मा जी ने जिस सरलता से इस प्रकल्प के प्रति अपना मार्गदर्शन व आशीर्वाद दिया वह अमूल्य धरोहर है।

इस कार्य में अखिल भारतीय विद्वत्परिषद्, काशी के महासचिव डॉ. श्री कामेश्वर उपाध्याय जी, व जयपुर निवासी प्रो. श्री मोहनलाल शर्मा जी का प्रारम्भ से ही सतत् मार्गदर्शन व सहयोग रहा है। पञ्चाङ्ग के प्रथम प्रकाशन के साथ ही जयपुर के वरिष्ठ विद्वान् महामहोपाध्याय आचार्य श्री कलानाथ शास्त्री जी, महामहोपाध्याय आचार्य श्री दयानन्द भार्गव जी, प्रो. श्री अर्कनाथ चौधरी जी ने इसे शुभाशंसन के साथ भूषित किया। डॉ. श्री गोविन्दचन्द्र जी द्विवेदी, पं. श्री साकेत जी झा ने पंचांग-निर्माण में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया है। प्रबन्ध सम्पादक श्री मुदित जी मित्तल का इस प्रकल्प हेतु परिश्रम अकथ्य है।

कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा, १३ नवम्बर २०२२ को श्रीमाधोबिहारी जी के मंदिर, जयपुर में आयोजित श्रीनिम्बार्क जयन्ती महोत्सव में श्रीशुकसम्प्रदाय पीठाधीश्वर अनन्तश्रीविभूषित श्रीअलबेलीमाधुरीशरण जी महाराज जयपुर, महन्त श्रीबनवारीशरण जी जूसरी नागौर, महन्त श्रीवृन्दावनदासजी वृन्दावन, श्रीमहन्त महामण्डलेश्वर स्वामी श्रीपद्मनाभशरण देवाचार्यजी जयपुर, महंत श्रीसर्वेश्वरदासजी नायला, आचार्य श्री गंगाधर पाठक जी वृन्दावन, श्री विष्णु कुमार आचार्य जी वृन्दावन, पं. रमाकान्त जी शर्मा द्वारा इस पंचांग को श्रीसर्वेश्वर प्रभु और श्रीनिम्बार्क भगवान् को समर्पित कर विमोचन किया गया। श्रीनिम्बार्क परिषद् इन सभी महानुभावों के प्रति सदा कृतज्ञ है, इसके साथ ही परिषद् अपने सम्पादक मण्डल के सभी विद्वानों का इस यज्ञकर्म के सम्पादन हेतु भूरिशः अभिनन्दन करती है।

संवत्सर ही प्रजापति है, '**सम्वत्सर एव प्रजापतिः**' (शतपथ, १।६।३।५)। काल ही सर्वेश्वर और प्रजापति का भी पिता है। '**कालो ह सर्वस्येश्वरो यः पितासीत् प्रजापतेः**'(अथर्व० १९.५३.८)। भगवान् श्रीकृष्ण ने स्वयं को गीता में अक्षय काल '**अहमेवाक्षयः कालः**' कहा है। कालरूपी सर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण का यह पञ्चाङ्ग जयपुर के धर्माकाश में भगवान् भुवनभास्कर आदित्य की भाँति उदित हुआ है। ऐसा यह '**श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग**' धार्मिकों के समक्ष प्रस्तुत है।

समस्त धर्मानुरागी जन धर्मफल की शाश्वत सिद्धि हेतु धर्मशास्त्रानुमोदित इस 'श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग' के अनुसार व्रतपर्वोत्सवों का पालन करें। इस पञ्चाङ्ग में जो कुछ भी श्रेष्ठ है वह सब श्रीसर्वेश्वर प्रभु के कृपाप्रसाद स्वरूप विद्वानों का अवदान है तथा प्रमादवश जो कुछ भी त्रुटि दृश्य हो, वह सब श्रीनिम्बार्क परिषद् की है जिनका परिमार्जन आप सभी के सहयोग एवं श्रीसर्वेश्वर प्रभु की कृपा से ही सम्भव हो सकेगा। श्रीसर्वेश्वर प्रभु हम सभी पर सदा कृपा रखें!

– अमित शर्मा

प्रधान सम्पादक, श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग

महामंत्री, श्रीनिम्बार्क परिषद्, जयपुर

।। श्रीसर्वेश्वरो जयति ।।

स ईश्वरो व्यष्टिसमष्टिरूपोऽव्यक्तस्वरूपःप्रकटस्वरूपः। सर्वेश्वरः सर्वगः सर्ववित्ता समस्तशक्तिः परमेश्वराख्यः।। नतोऽस्मि सर्वेश्वरमादिदेवं प्रपन्नसंरक्षणबद्धकक्षम्। कारुण्यवात्सल्यदयादिसिन्धुं जगद्गुरुं ब्रह्मशिवादिवन्द्यम्।। विश्वरूप जयादित्य जय विष्णो जयाच्युत । जय केशव ईशान जय कृष्ण नमोऽस्तु ते ।। जयस्व सर्वेश्वर विश्वमूर्त्ते सुरासुरैर्वन्दितपादपीठ । त्रैलोक्यमातुर्गुरवे वृषाङ्क भीतः शरण्यं शरणागतोऽस्मि।। कालरूपं कलयतां कालकालेश कारण। कालादतीत कालस्य कालकाल नमोऽस्तु ते।। प्रतिपन्मुख्यराकान्त तिथिमण्डलपूजिता। कलात्मिका कलानाथा काव्यालापविनोदिनी। कलाकाष्ठादिरूपेण परिणामप्रदायिनी । विश्वस्योपरतौ शक्ते नारायणि नमोऽस्तु ते ।। जयादित्य जय स्वामिञ्जय भानो जयामल । जय वेदपते शश्वत्तारयास्मानहर्पते ।। लव निमेष परमानु जुग बरष कलप सर चण्ड। भजसि न मन तेहि राम को कालु जासु कोदण्ड।। नियमेन यदानन्दो जगद्वासयतेऽखिलम् । तमहं नियमानन्दं वन्दे कृष्णं जगद्गुरुम् ।। जयोस्तु जयादित्यं पञ्चांगं वेदसम्मतम्। सूर्यसिद्धान्त संवाहं श्रीनिम्बार्क प्रसादतः। साङ्गोपाङ्गाय वेदाय ज्योतिषां ज्योतिषे नमः। सूर्याय सूर्यसिद्धान्तज्योतिर्विद्भ्यो नमो नमः।।

स्वस्ति श्रीः सूर्यसिद्धान्तमतेन समस्तजगदुत्पत्ति स्थिति लय नियमन-ज्ञानाज्ञानबन्धमोक्षकारणस्य स्वाभावतोऽपास्तसमस्तदोषोऽनन्ताचिन्त्य विचित्रयावदात्म-वृत्तिस्वाभाविककल्याणगुणशक्तिवैभवाश्रयो जगज्जन्मादिहेतुरखिलशास्त्रैकवेद्यो मुक्तप्राप्यः परब्रह्मभगवदादिशब्दाभिधेयश्चिदचित्पदार्थभिन्नाभिन्नसंबन्धाश्रयः श्रीपुरुषोत्तमोरमानिवास श्रीमहाविष्णोर्नाभिकमलोद्भवस्य चतुर्मुखब्रह्मणः परमायुः वर्षशतम्। तत्र पूर्वार्धं गतम्। उत्तरार्धे प्रथमवर्षे प्रथममासे प्रथमदिने श्वेतवराहकल्पसंज्ञे प्रथमकल्पे अह्नि त्रयोदशघटिकाः द्विचत्वारिंशत् पलानि च व्यत्यायन्। कृतत्रेताद्वापरकलियुगैरेकं महायुगं भवति। तैरेकसप्ततिमहायुगैः एकं मन्वन्तरम्। तैश्चतुर्दशभिरेकः कल्पः। तत् ब्रह्मणो दिनम्। तावती रात्रिः। एतादृशैः षष्ट्यधिकशतत्रयदिवसैरेकः ब्रह्मणो वर्षः। वर्तमानब्रह्मणो दिनमध्ये षण्मनवो गताः। इदानीं वर्तमानः सप्तमो वैवस्वतो मनुः। वैवस्वतमन्वन्तरेऽपि एकसप्ततिमहायुगमध्ये सप्तविंशतिमहायुगानि गतानि। अष्टाविंशतितमेऽपि महायुगे कृतत्रेताद्वापराख्यास्त्रयो युगपादाः गताः। कलियुगेऽपि ५१२४ वर्षाः गताः।।

महायुगप्रमाणम् - ४३ लक्ष २० सहस्रवर्षाः ।

कृतयुगप्रमाणम् - १७ लक्ष २८ सहस्रवर्षाः । **त्रेतायुगप्रमाणम्** - १२ लक्ष ९६ सहस्रवर्षाः।

द्वापरयुगप्रमाणम् - ८ लक्ष ६४ सहस्रवर्षाः । **कलियुगप्रमाणम्** - ४ लक्ष ३२ सहस्रवर्षाः।

कल्पादितः - १९७२९४९१२४ वत्सराव्यतीताः । **सृष्ट्यादितश्च** - १९५५८८५१२४ ।

श्रीरामरावणयोर्युद्धतो गताब्दाः - ८८०१६५ । **श्रीकृष्णावतारतो गताब्दाः** - ५२४९ ।

कुरुपाण्डवयुद्धतो गताब्दाः -५१२४ । **सम्राट-युधिष्ठिर राज्यात्संवत्** ५१६० ।

सम्राट-विक्रमादित्य राज्यात्संवत् २०८० । **शाके** १९४५ । **अंग्रेजी सन्** २०२३-२४ ई. ।

तत्र चैत्रशुक्लप्रतिपत् **२०८०** तिथिमारभ्य गुरुमानेन प्रभवादि षष्ट्यब्दानां मध्ये रूद्रविंशतिकायां

पिङ्गल नाम संवत्सरारम्भः

❋ पिङ्गल नाम संवत्सर एवं वर्षेशादि फल ❋

श्री शुभसंवत् २०८०, शक १९४५, कलियुगाब्दारम्भ ५१२५,
(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

❋❋ पिङ्गल संवत्सर का स्वरूप ❋❋

पिङ्गलः कालयुक्तिश्च रक्तास्यो रक्तलोचनः। जपतः श्वेतनीलांगौ वरेण्यनिम्बसन्निधौ ।।

पिङ्गल व कालयुक्त संवत्सर रक्तवर्ण के मुख व रक्त नेत्रों वाले हैं। इनके अंग श्वेत व नील हैं, यह संवत्सर उत्तम निम्ब(नीम) वृक्ष की सन्निधि में भगवान् श्रीकृष्ण का जप करते हैं।

❋❋ पिङ्गल सम्वत्सर के अधिष्ठातृ देव भगवान् श्रीकृष्ण जी का ध्यान ❋❋

कृष्णं पिङ्गलनामानं बर्हिबर्होज्ज्वलाकृतिम्। नवनीतोज्ज्वलकरं नृत्यन्तं हृदि संश्रये ।।

जो मोर के पंख से सुशोभित हैं, माखन से जिनका हाथ सुशोभित हो रहा है, व जो नृत्य कर रहे हैं, ऐसे पिङ्गल नाम के व श्याम वर्ण के भगवान् श्रीकृष्ण का मैं ह्रदय में आश्रय ग्रहण करता हूँ।

❋❋ पिङ्गल संवत्सर का फल ❋❋

दुर्भिक्षं देशभङ्गश्च व्याधिशोकार्दिताः प्रजाः । पिङ्गलादौ वरारोहे कृशानोः पीडितं जगत् ।।
पिंगलाब्दे त्वीतिभीतिर्मध्यसस्याऽर्धवृष्टयः । राजानो विक्रमाक्रान्ता भुंजते शत्रुमेदिनीम् ।।

इस वर्ष पिङ्गल संवत्सर होने से वायुवेग से यत्र-तत्र खण्डवृष्टि होगी। आसाम, गुजरात, उत्तराखण्ड आदि राज्यों में वर्षा से जनधन की क्षति होगी। देश में जहाँ-तहाँ दुर्भिक्ष देशभङ्ग, व्याधि शोकादि की बाहूल्यता रहेगी। जल, अग्नि, दुर्घटना आदि से जनधन की क्षति होगी। पिङ्गल नाम संवत्सर में अतिरोग भय होता है, अनाज की उपज मध्यम होती है, वर्षा आधी होती है, राजा लोग पराक्रम से अभिभूत होकर शत्रु की धरा का उपभोग करते हैं।

❋❋ पिङ्गल संवत्सर में उत्पन्न जातकों के गुण ❋❋

पिङ्गेक्षणो गर्हितकर्मकर्ता स्यादुत्थितश्चंचलवैभवादयः ।
त्यागी शठोऽत्यन्तकठोरवाक्यो जातो नरः पिङ्गलनामधेये ।।
पित्तप्रकोपसर्वात्मा नानाव्याधिरनेकधा। वाहनैश्च समायुक्तः पिङ्गले जायते नरः।।

पिङ्गल नाम संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य भूरी आंखों वाला होता है, गर्हित कर्म करता है, चंचल वैभव वाला होता है, त्यागी, शठ, व अत्यंत कठोर वाक्य बोलने वाला होता है। पिङ्गल नाम संवत् में उत्पन्न हुआ मनुष्य पित्त कोप से व्याप्त अंग वाला, अनेक प्रकार की व्याधियों से युक्त और अनेक वाहनों का स्वामी होता है।

※ संवत्सर २०८० की राज परिषद् ※

राजा बुध

मन्त्री शुक्र ※ शस्येश चन्द्र

धान्येश शनि ※ मेघेश गुरु

रसेश बुध ※ नीरसेश चन्द्र

फलेश गुरु ※ धनेश सूर्य

दुर्गेश गुरु

※※ राजा बुध ※※

बुधस्य राज्ये सजलं महीतले गृहे गृहे तुर्य विवाह मङ्गलम्।
प्रकुर्वते दानदयां जनोपि स्वस्थ सुभिक्षं धनधान्य सङ्कुलम् ।।

इस वर्ष बुध के राजा होने से पृथ्वी सजल रहेगी। कहीं-कहीं झंझावात के साथ खण्डवृष्टि होगी। रोग तथा राजकोप से प्रजा पीड़ित रहेगी। फसल अच्छी होगी। औसतन प्रजा में सात्विक प्रवृत्ति तथा घरों में माङ्गलिक कार्यों की बाहूल्यता रहेगी।

※※ मन्त्री शुक्र ※※

भूपालानिजधर्मकर्मनिरता गृह्णन्ति दण्डं जनेह ।
दुष्टानाशपरा महासुविफलाः संवाहके भार्गवे ।।

इस वर्ष शुक्र के मन्त्री होने से देश की प्रमुख व्यवस्था सुदृढ़ रहेगी। ऊपज अच्छी होगी। खाद्य पदार्थों की व्यवस्था अच्छी रहेगी। देश के पश्चिमी भूभाग में औसतन धान्य की ऊपज अच्छी होगी। सामाजिक तथा धार्मिक कार्यों पर बल दिया जायेगा ।

※※ शस्येश चन्द्र ※※

चन्द्रमा के सस्येश होने से इस वर्ष पृथिवी सस्यशालिनी रहेगी। धन धान्य, गेहूँ, तेलहन, दलहन की ऊपज अच्छी होगी। प्रजा में सात्विक प्रवृत्ति की वृद्धि होगी ।

※※ धान्येश शनि ※※

निर्धनाः क्षितिभुजो रणादराः सस्यमल्पमतिरोगिणो नराः।
नैव वर्षति जलं सुरेश्वरः स्याद्यदान्त्यकणपः शनैश्चरः ।।

इस वर्ष शनि के धान्याधिपति होने से राजा महाराजाओं के धनधान्य में न्यूनता तथा धनधान्य सम्बन्धित विवादों की बाहूल्यता अधिक होगी। प्रजा में अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होंगे। यत्र-तत्र समयोजित काल में वर्षा का अभाव रहेगा।

※※ मेघेश गुरु ※※

गुरूरपिप्रियवृष्टिकरः सदाखिल विलासवती धरणी तदा।
श्रुतिविचारपरा नरपालका रससमृद्धियुताखिलमानवाः ।।

इस वर्ष गुरु के मेघेश होने से उत्तमवर्षा होगी। सस्यशालिनी पृथ्वी होगी। प्रजा में सुख एवं विलासिता अधिक रहेगी। धर्माचरण श्रौत-स्मार्त्त आदि द्वारा यज्ञ बहुतायत में सम्पन्न होते रहेंगे।

※※ रसेश बुध ※※

बुध के रसेश होने से इस वर्ष फल-फूल की वृद्धि होगी । तरलीय पेय पदार्थों में तेजी रहेगी। गैस, कैरोसिन तेल, पेट्रोल तथा डीजल आदि के भाव में तेजी रहेगी।

※※ नीरसेश चन्द्र ※※

शुक्लवर्णादि वस्तूनां मुक्तारजतवाससाम्।
अर्घवृद्धिप्रजायेत शशांके नीरसाधिपे ।।

चन्द्रमा के नीरसेश होने से इस वर्ष औसतन सफेद के नीरसेश होने से इस वर्ष औसतन सफेद विस्तुओं में तथा मोती, चाँदी, सफेद वस्त्र में मन्दी रहेगी।

※※ फलेश गुरु ※※

यजनयाजन कौत्सवमन्दिराः श्रुतिविचारेपाराद्विजपूर्वकः।।

शुरू के फलेश होने से इस वर्ष वृक्षारोपण का कार्य देश में अधिक होगा। वन की सुरक्षा का देशस्तर पर बल दिया जायेगा। लोगों में सात्विकता की अधिकता। रहेगी। प्रायः प्रत्येक घरों में पूजा-पाठ का वातावरण रहेगा।

※※ धनेश सूर्य ※※

द्रविणपे यदि वासरपे तथा वणिजतो बहुद्रव्यसमागमः ।
गजतुरंग मेषखरोष्ट्रतो धनचयं लभते क्रय-विक्रयात् ।।

इस वर्ष सूर्य के धनेश होने से हाथी, घोड़े, गदहे, खच्चर एवं ऊँट आदि के व्यापारियों के क्रय-विक्रय में अधिक लाभ मिलेगा।

※※ दुर्गेश गुरु ※※

सुरगुरौगढ़पेन यशोभिता नरवरानर करा पालिताः
गिरिषुवैनगरेषु समं सुखं सुमतिद्विजशास्त्रवतोऽनिशम् ।।

इस वर्ष गुरू के दुर्गेश होने से देशाधिपति (देश के उच्चस्तरीय नेता) द्वारा देश के हित में अनेक योजनाएँ पारित की जायेगी। गाँव, शहर एवं जंगली (आदिवासियों) सभी के विकास एवं आधुनिक सुख, सुविधाओं पर विशेष ध्यान दिया जायेगा।

ग्रहों का वर्ष चार देखने से विदित होता है कि इस वर्ष बृहस्पति मघा नक्षत्र में उदित होने के कारण यह माघ नामक वर्ष कहलाएगा। संवत् २०८० में पितृ लोगों की पूजा बढ़ेगी, प्राणियों का मंगल होगा, आरोग्य, सुवृष्टि, धान्य सस्ता, श्रेष्ठ संपत्ति और मित्रलाभ होगा।

ब्रह्माविंशति		विष्णुविंशति		रुद्रविंशति	
प्रभव	ईश्वर	सर्वजित्	हेमलम्बी	प्लवंग	पिंगल
विभव	बहुधान्य	सर्वधारी	विलम्बी	कीलक	कालयुक्त
शुक्ल	प्रमाथी	विरोधी	विकारी	सौम्य	सिद्धार्थ
प्रमोद	विक्रम	विकृत	शार्वरी	साधारण	रौद्र
प्रजापति	वृष	खर	प्लव	विरोधकृत	दुर्मति
अंगिरा	चित्रभानु	नन्दन	शुभकृत्	परिधावी	दुन्दुभि
श्रीमुख	सुभानु	विजय	शोभन	प्रमादी	रुधिरोद्गारी
भाव	तारण	जय	क्रोधी	आनन्द	रक्ताक्ष
युवा	पार्थिव	मन्मथ	विश्वावसु	राक्षस	क्रोधन
धाता	अव्यय	दुर्मुख	पराभव	अनल	क्षय

✼ जयपुर केन्द्रित वर्षलग्न एवं जगल्लग्न का सामान्य फल ✼

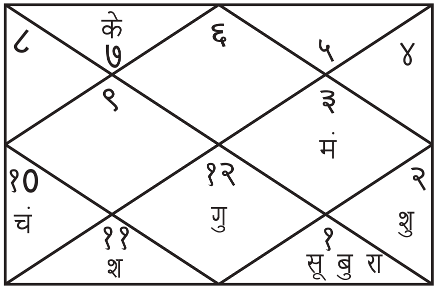

जगल्लग्न

दिनांक- १४ अप्रैल २०२३, समय- १७:१३, स्थान- श्रीगोविन्ददेवजी, जयपुर

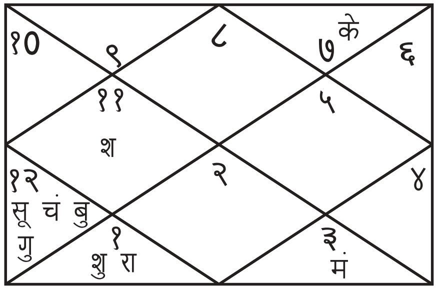

वर्षलग्न

दिनांक- २१ मार्च २०२३, समय- २३:३०, स्थान- श्रीगोविन्ददेवजी, जयपुर

संवत् २०८० के वर्षलग्न वृश्चिक एवं जगल्लग्न कन्या है। संवत्सर के दशाधिकारियों में आठ शुभ ग्रह तथा दो पाप ग्रह पदासीन हैं। मुख्य पद राजा बुध, मन्त्री पद पर शुक्र एवं दुर्गेश भी गुरू है। जगल्लग्नाधिपति बुध अष्टम भाव में सूर्य तथा राहु के साथ है। दुर्गेश गुरू स्वगृही होकर सप्तम भाव में स्थित है। वर्ष कुण्डली के लग्नेश मंगल की अष्टम भावगत है। वर्षलग्न तथा जगल्लग्न दोनों ग्रहों के स्थिति के अनुसार देश विदेश ना दोनों स्थानों में रोग व्याधि, दुर्घटना, अशोभनीय वातावरण अधिक देखने को मिलेगें। जिससे सभी जगह की प्रजा में भयाव्याप्त रहेगा। शिक्षा, व्यवयाय आदि में राज्य तथा केन्द्र सरकार दोनों विकास के लिए तत्पर रहेंगे।

देश के सीमा क्षेत्रों में तनाव की स्थिति बनी रहेगी। देश देशान्तर में व्यवसाय जन्य अनेक प्रस्ताव पारित किये जायेंगे। किन्तु मार्च २०२४ तक कोई भी प्रस्ताव क्रियान्वित नहीं होगा। देश तथा विदेशों में विशेषकर दक्षिण पश्चिम के देशों में तूफान, वायुयान, अग्नि आदि से जनधन की क्षति-अधिक होगी। देश के नीचप्रवृत्ति के लोगों द्वारा ओछी राजनीति से सैन्य बल में न्यूनता तथा खिन्नता देखी जायेगी। एवं देश में मान सम्मान पर आघात पहुँचेगा।

देश में शिक्षा, यातायात, नई-नई तकनीतियों से सम्बन्धित अनेक विचार विमर्श राज्य तथा केन्द्र सरकार द्वारा विकसित किये जायेंगे। राज्य तथा केन्द्र द्वारा किसानों, गरीब लोगों एवं व्यवसासियों के अनेक लुभावने प्रस्ताव पारित किये जायेंगे। पीली तथा सफेद धातुओं में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। पेट्रोल, डीजल, केरोसीन तेल तथा तरलीय पदार्थों के मूल्यों में समय-समय पर वृद्धि होती रहेगी। देश के पूर्वी भाग में कृषि में क्षति की सम्भावना अधिक रहेगी। जगल्लग्न कन्या होने से सीमावर्ती देशों से विवाद को निपटाने हेतु अनेक समझौतें होंगे किन्तु सफलता नहीं मिलेगी।

कन्यायां बहुलं युद्धं पूर्वास्यां धान्य नष्टता उदग्दक्षिणयोः मेघा बहवोधान्य संग्रहः ।
पश्चिमायां स्वल्प मेघा छत्रभंगः च विग्रहः मध्य देशेर्घ निष्पतिः चतुष्पद सरोगता ।।

✼ सूर्य आर्द्रानक्षत्र प्रवेश सामान्य फल ✼

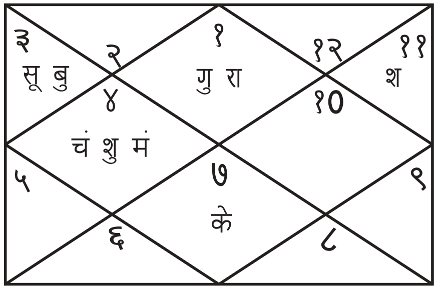

सूर्य आर्द्रा नक्षत्र प्रवेश

दिनांक- २३ जून २०२३, समय- ०२:१९, स्थान- श्रीगोविन्ददेवजी, जयपुर

इस वर्ष २२ जून, आषाढ शुक्ल पञ्चमी तिथि, गुरुवार, आश्लेषा नक्षत्र, हर्षण योग, बव करण, कर्क राशि, मेष लग्न रात्रि २६:१९ पर सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश कर रहा है। तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण तथा आर्द्रा प्रवेश लग्न के ग्रहों के अनुसार झंझावात के साथ कृषियोग वर्षा होगी। दक्षिण पश्चिमोत्तर के राज्यों में वर्षाधिक्य होने से जनधन की क्षति होगी। रोग व्याधि की अधिकता रहेगी। माङ्गलिक कार्य औसतन अधिक होंगे। प्रजा खुशहाल रहेगी।

देश के उच्चस्तरीय राज नेताओं में परस्पर विरोध रहेगा। उच्चस्तरीय राजनेताओं के असामयिक निधन की सम्भावना है। देश में चोरी, डकैती, अपहरण, दुर्घटना आदि बहुतायत में सुनाई पड़ेंगे।

✼ स्तम्भ विचार ✼

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र, वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र है अतः इस संवत् में जल स्तम्भ व तृण स्तम्भ हैं। पर ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिरा नक्षत्र व आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र नहीं होने के कारण वायु स्तम्भ व अन्न स्तम्भ नहीं है, अतः इस वर्ष दो ही स्तम्भ हैं। यह वर्ष मध्यम फल वाला रहेगा। इस वर्ष वर्षा, घास व जड़ी बूटियां अच्छे व समय पर होंगे परन्तु अन्न कम होगा।

✼ अग्नि-वास चक्र ✼

शु.प. तिथि	कृ.प. तिथि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१, ९	२, १०	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
२, १०	३, ११	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
३, ११	४, १२	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
४, १२	५, १३	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
५, १३	४, १४	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
६, १४	७, ३०	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
७, १५	८	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
८	१, ९	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी

✼ शिव-वास ✼

शु.प. तिथि	कृ.प. तिथि	शिव वासम्	फलम्
१, ८	७, १४	श्मशाने	मृत्युः
२, ९	१, ८	गौरीसन्निधौ	शुभम्
३, १०	२, ९	सभायाम्	तापकारक
४, ११	३, १०	क्रीडायाम्	विशिष्टकष्ट
५, १२	४, ११	कैलाशे	सुखम्
६, १३	५, १२	वृषे	श्री प्राप्तिः
७, १४	६, १३	भोजने	कष्टप्राप्तिः

❊ भारतदेशीय विदिशा केन्द्रित सौर वर्षप्रवेश कुण्डली का सामान्यफल ❊

– मुदित मित्तल

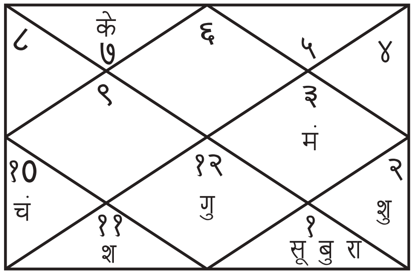

सौर वर्ष प्रवेश राशिचक्र

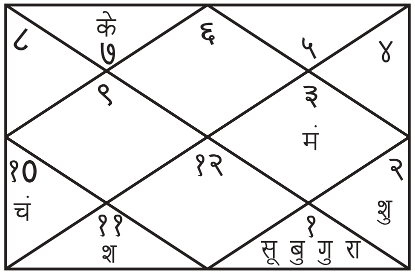

सौर वर्ष प्रवेश भावचलित चक्र

दिनांक- १४ अप्रैल २०२३, समय- १७:१३,

स्थान- विदिशा, मध्यप्रदेश, अक्षांश २३:३१:१९ उ., रेखांश ७७:४८:३९ पू.

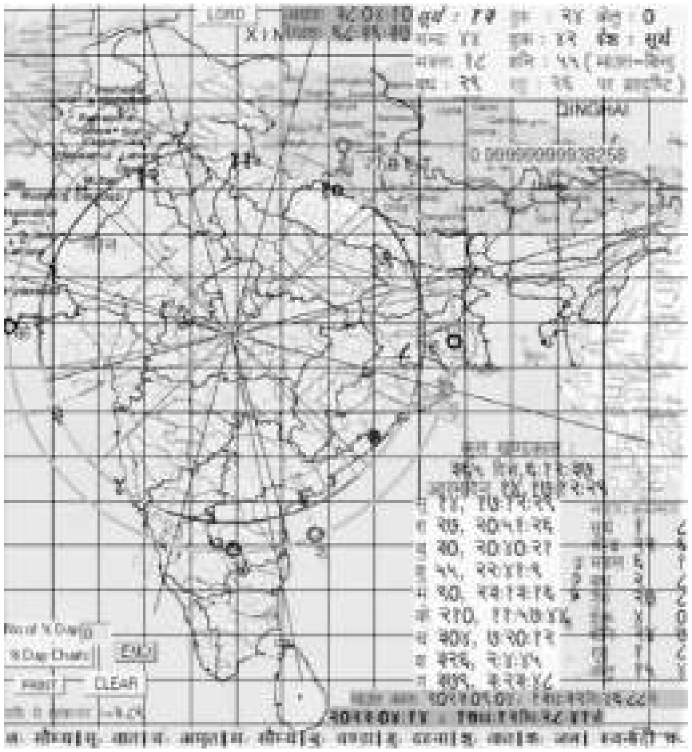

भारत की वर्ष कुण्डली में भावचलित में उच्चस्थ सूर्य, बुध, स्वगृही गुरु एवं राहु अष्टमस्थ हो गए हैं, गुरु सूर्य में अस्त हैं। लग्नेश, चतुर्थेश, सप्तमेश, दशमेश, व्ययेश व षष्ठेश राहु, चारों केन्द्रेश समेत ६ भावेश अष्टमस्थ हो गए हैं जिस कारण राष्ट्र में महामारी, युद्ध आदि द्वारा मानव क्षति का योग बन रहा है। अष्टमेश मंगल का दशमेश बुध के साथ स्थान परिवर्तन राज्य का जनता को बचाने हेतु संघर्ष दिखा रहा है। लग्नेश बुध अष्टमस्थ होकर यम के नक्षत्र भरणी में हैं, मंगल स्वयं आर्द्रा नक्षत्र में हैं। यह महामारी, युद्ध, रहस्यमयी औचक दुर्घटनाओं आदि के माध्यम से जनहानि का संकेत है। इसका सर्वाधिक प्रभाव मृत्युभाव के बंगाल क्षेत्र एवं लग्न के राजस्थान क्षेत्र में होगा। परन्तु षष्ठस्थ शनि स्वग्रही हैं, वे शत्रुओं को सीमित करेंगे। जनता में क्रोध होगा, देश में रोग, व्यभिचार, चोरी, जुआ, दुर्घटना, एक्सीडेंट के बढ़ने के आसार बनेंगे। मेष सौर मास में देश की दक्षिण दिशा में उत्पात, दुर्घटना के योग हैं।

आयेश चन्द्रमा पञ्चमस्थ होकर मंगल से दृष्ट हैं व एकादश भाव को पूर्ण मित्रदृष्टि से देख रहे हैं, आय भाव पर स्वगृही गुरु की दृष्टि भी है। धनेश शुक्र स्वगृही होकर नवमस्थ हैं। अतः देश में क्लेश के बावजूद अर्थव्यवस्था एवं राष्ट्रीय आय अच्छी रहेगी। देश में उद्यमिता में वृद्धि होगी, परन्तु उद्यमों की सफलता संदिग्ध रहेगी। आवासीय उद्योगों हेतु अशुभ रहेगा। नवजात शिशुओं में रोग बढ़ेगा। परीक्षा घोटालों जैसी अव्यवस्था के कारण शिक्षा क्षेत्र की स्थिति खराब रहेगी।

स्वगृही शुक्र धर्मस्थान में विराजमान हैं, अतः देश में धर्म कर्म में वृद्धि होगी, धर्मेश शुक्र धर्मपालन करने वालों की अपने मारक प्रभाव से रक्षा करेंगे। यह शुभ प्रभाव सबसे अधिक पूर्वी उत्तर प्रदेश में देखने को मिलेगा, लेकिन मारकेश दैत्यगुरू इस हेतु संघर्ष भी कराएंगे, विशेषतः महादेवजी के मंदिरों का पुनरुद्धार होगा। मेरु केंद्रित वर्षकुण्डली में स्वगृही शुक्र नवमस्थ हैं, जिसका अधिकांश भाग भारत में पड़ता है। मेरू केंद्रित वर्षकुण्डली में शुक्र पराक्रम भाव के भी स्वामी हैं, अतः संघर्ष के साथ धर्म को बल मिलेगा।

मंगल, शनि व केतु राहु के नक्षत्रों में बैठे हैं, व राहु व सूर्य केतु के नक्षत्र में बैठे हैं। अतः तृतीयेश द्वितीयस्थ केतु व षष्ठेश अष्टमस्थ राहु का आयु, हानि, मृत्यु हेतु अशुभ प्रभाव बढ़ गया है। राहु केतु का नक्षत्र परिवर्तन होने के कारण वायु प्रकुपित होगी, व वायु के माध्यम से रोग फैलेगा। पिङ्गल संवत्सर का फल भी निर्देशित करता है कि इस संवत् में श्वास और ठोढ़ी को कम्पायमान करने वाली खाँसी होगी।

सर्वतोभद्र में सूर्य, राहु व पापचन्द्र के 'उ', 'ल', 'च', 'म', 'य' अक्षरों पर क्रूरवेध के कारण इन अक्षरों के शुरू होने वाले नाम वाले व्यक्तियों, ग्राम, शहर आदि के लिए अशुभ रहेगा। मिथुन व धनु राशि पर सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु के क्रूरवेध के कारण इन राशि के लोगों के लिए यह वर्ष संताप, धनहानि, रोग, पीड़ा, विघ्न देने वाला होगा। मीन राशि भी सूर्य, शनि, राहु से विद्ध होने के कारण संताप, रोग और विघ्न से पीड़ित रहेगी। देशचक्र के अष्टम भावस्थ अश्विनी नक्षत्र में सूर्य राहु के कारण यह वर्ष अश्विनी के जातकों हेतु अशुभ रहेगा, इसके साथ ही आश्विन पूर्णिमा को क्षय अश्विनी नक्षत्र में चन्द्रग्रहण भी लग रहा है।

धनिष्ठा नक्षत्र में शनि के होने से मगधेश्वर की जय होगी और धनिकों की वृद्धि होगी। शतभिषा नक्षत्र में शनि संचार के समय वैद्य, कवि, कलवार, व्यापारियों व नीतिकुशल आदमियों के लिए विघ्न होगा। इस वर्ष चित्रा नक्षत्र में केतु जाने के कारण कुरुक्षेत्र, हरियाणा, पंजाब के आसपास के राजनेताओं के प्राणों को संकट होगा।

※ ग्रहों के गोचर, उदय-अस्त, वक्री-मार्गी आदि विचार २०८० ※

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

※ सूर्य संचार ※

सूर्य की इन द्वादश संक्रान्तियों का स्वरूप, फल, एवं पुण्यकाल आदि पृष्ठ १४-१५ पर दिया गया है।

राशि प्रवेश	सूर्य राशि संचार	
	दिनांक	समय घं.मि.
मेष	१४ अप्रैल २०२३	१७:१३
वृषभ	१५ मई	१५:४०
मिथुन	१५ जून	२५:४४
कर्क	१७ जुलाई	१७:१५
सिंह	१७ अगस्त	२८:३३
कन्या	१७ सितम्बर	२८:५७
तुला	१८ अक्टूबर	१५:२४
वृश्चिक	१७ नवम्बर	१२:४४
धनु	१६ दिसम्बर	२४:४६
मकर	१५ जनवरी २०२४	०८:४१
कुम्भ	१३ फरवरी २०२४	०९:३६
मीन	१४ मार्च २०२४	१५:०८

※ भौम संचार ※

राशि प्रवेश	मंगल राशि संचार	
	दिनांक	समय घं.मि.
कर्क	११ मई २०२३	१५:५१
सिंह	१ जुलाई	०७:५९
कन्या	१८ अगस्त	०८:००
तुला	३ अक्टूबर	१०:१८
वृश्चिक	१६ नवम्बर	१८:१६
धनु	२८ दिसम्बर	३०:५८
मकर	७ फरवरी २०२४	२१:५८
कुम्भ	१७ मार्च २०२४	१९:०३

※ संवत् २०८० मे मंगल पूरे वर्ष मार्गी रहेगा।

मंगल अस्त- १५ सितम्बर २०२३, १२:३९ बजे, पश्चिम में।

मंगल उदय- १४ जनवरी २०२४, १४:०५ बजे, पूर्व दिशा में।

※ बुध संचार ※

राशि प्रवेश	बुध राशि संचार		उदय अस्त	बुध उदय अस्त	
	दिनांक	घं.मि.		दिनांक	घं.मि.
मेष	३१ मार्च २३	१८:४६	उदय पश्चि.	२७ मार्च २०२३	१४:३२
वृषभ	४ जून	२२:३०	अस्त पश्चि.	२५ अप्रैल	१७:२९
मिथुन	२१ जून	२१:५३	उदय पूर्व	१२ मई	२४:१३
कर्क	७ जुलाई	२०:४०	अस्त पूर्व	२१ जून	१०:०२
सिंह	२४ जुलाई	२८:०९	उदय पश्चि.	११ जुलाई	०६:११
कन्या	३० सितम्बर	०९:५७	अस्त पश्चि.	२६ अगस्त	०७:०१
तुला	१८ अक्टूबर	१४:३२	उदय पूर्व	१२ सितम्बर	०८:२५
वृश्चिक	४ नवम्बर	२०:२८	अस्त पूर्व	६ अक्टूबर	२७:४६
धनु	२५ नवम्बर	१२:३३	उदय पश्चि.	१२ नवम्बर	२४:३१
वृश्चिक	२१दिसम्बर	२८:२७	अस्त पश्चि.	१८ दिसम्बर	०६:१८
धनु	९ जनवरी २४	१३:०२	उदय पूर्व	२७ दिसम्बर	०५:३२
मकर	३१ जनवरी	१३:४५	अस्त पूर्व	८ फर. २०२४	११:०४
कुम्भ	१७ फरवरी	१३:४२	उदय पश्चि.	१० मार्च २०२४	११:२६
मीन	५ मार्च	१६:३१	अस्त पश्चि.	५ अप्रैल २०२४	२४:५८

बुध वक्री - २० अप्रैल २०२३, १७:३४ बजे

बुध मार्गी - १३ मई २०२३, ०९:२५ बजे

बुध वक्री - १६ अगस्त २०२३, १९:११ बजे

बुध मार्गी - ८ सितम्बर २०२३, ०७:३२ बजे

बुध वक्री - ८ दिसम्बर २०२३, १७:४९ बजे

बुध मार्गी - ३० दिसम्बर २०२३, २७:५३ बजे

बुध वक्री - १ अप्रैल २०२४, २४:२५ बजे

※ गुरु संचार ※

राशि प्रवेश	गुरु राशि संचार	
	दिनांक	समय घं.मि.
मेष	१७ अप्रैल २०२३	२६:२३

गुरु वक्री - २ सितम्बर २०२३, १४:४३ बजे

गुरु मार्गी - ४ जनवरी २०२४, १६:४५ बजे

गुरु अस्त- ३१ मार्च २०२३, १६:२६ बजे, पश्चिम दिशा में।

गुरु उदय- २९ अप्रैल २०२३, २०:२८ बजे, पूर्व दिशा में।

※ शुक्र संचार ※

राशि प्रवेश	शुक्र राशि संचार	
	दिनांक	समय घं.मि.
वृषभ	५ अप्रैल	१३:०३
मिथुन	१ मई	२१:१३
कर्क	३० मई	१७:०४
सिंह	३ अक्टूबर	१८:२६
कन्या	२ नवम्बर	२०:२०
तुला	२९ नवम्बर	०९:३२
वृश्चिक	२४ दिसम्बर	१४:४६
धनु	१७ जनवरी २०२४	२७:२९
मकर	११ फरवरी २०२४	०८:०२
कुम्भ	६ मार्च २०२४	१०:२३
मीन	३० मार्च २०२४	१३:०४

शुक्र वक्री - १६ जुलाई २०२३, २७:३१ बजे

शुक्र मार्गी - २७ अगस्त २०२३, १९:२७ बजे

शुक्र अस्त- ४ अगस्त २०२३, १४:५९ बजे, पश्चिम दिशा में।

शुक्र उदय-१७ अगस्त २०२३, २६:०३ बजे, पूर्व दिशा में।

※ शनि संचार ※

※ संवत् २०८० मे शनि पूरे वर्ष कुम्भ राशि में रहेगा।

शनि वक्री - १५ जून २०२३, १०:१९ बजे

शनि मार्गी - ३० अक्टूबर २०२३, १०:२४ बजे

शनि अस्त- १५ फरवरी २०२४, १२:२७ बजे, पश्चिम दिशा में।

शनि उदय- २१ मार्च २०२४, २१:१४ बजे, पूर्व दिशा में।

※ राहु केतु संचार ※

राशि प्रवेश	राहु केतु राशि संचार	
	दिनांक	समय घं.मि.
राहु मीन	१५ दिसम्बर २०२३	०८:४०
केतु कन्या	१५ दिसम्बर २०२३	०८:४०:

✼ संवत् २०८० के सूर्यादि ग्रहों के नक्षत्र प्रवेश ✼

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

✼ सूर्य नक्षत्रप्रवेश ✼

अश्विनी	१४ अप्रैल	१७:१३ बजे
भरणी	२८ अप्रैल	०९:३० बजे
कृत्तिका	११ मई	२८:३१ बजे
रोहिणी	२५ मई	२५:५८ बजे
मृगशिरा	०८ जून	२५:२६ बजे
आर्द्रा	२२ जून	२६:२१ बजे
पुनर्वसु	०६ जुलाई	२८:०४ बजे
पुष्य	२० जुलाई	२९:३२ बजे
आश्लेषा	०३ अगस्त	२९:५४ बजे
मघा	१७ अगस्त	२८:३३ बजे
पू.फा.	३१ अगस्त	२५:०१ बजे
उ.फा.	१५ सितम्बर	१८:५४ बजे
हस्त	२८ सितम्बर	१०:०० बजे
चित्रा	११ अक्टूबर	२२:१७ बजे
स्वाती	२५ अक्टूबर	०७:५० बजे
विशाखा	०७ नवम्बर	१४:५३ बजे
अनुराधा	२० नवम्बर	१९:४७ बजे
ज्येष्ठा	०३ दिसम्बर	२२:५५ बजे
मूल	१६ दिसम्बर	२४:४६ बजे
पूर्वाषाढ़	२९ दिसम्बर	२६:४३ बजे
२०२४		
उ.षाढ़	११ जनवरी	२६:२६ बजे
श्रवण	२४ जनवरी	२७:४० बजे
धनिष्ठा	०६ फरवरी	२९:५६ बजे
शतभिषा	२० फरवरी	०९:४२ बजे
पू.भाद्र.	०४ मार्च	१५:२२ बजे
उ.भाद्र.	१७ मार्च	२३:२२ बजे
रेवती	३१ मार्च	१०:१० बजे

✼ बुध नक्षत्रप्रवेश ✼

अश्विनी	३१ मार्च	१८:४६ बजे
भरणी	११ अप्रैल	१२:५१ बजे
अश्विनी	०१ मई	११:४१ बजे
भरणी	२३ मई	१३:४९ बजे
कृत्तिका	०२ जून	१९:२४ बजे
रोहिणी	१० जून	२१:४५ बजे
मृगशिरा	१८ जून	०७:४८ बजे
आर्द्रा	२५ जून	११:०१ बजे
पुनर्वसु	०२ जुलाई	१२:२० बजे
पुष्य	०९ जुलाई	१५:५९ बजे
आश्लेषा	१६ जुलाई	२६:२५ बजे
मघा	२४ जुलाई	२८:०९ बजे
पू.फा.	०३ अगस्त	२३:४२ बजे
मघा	३० अगस्त	२४:०१ बजे
पू.फा.	१६ सितम्बर	०८:०८ बजे
उ.फा.	२७ सितम्बर	२६:३१ बजे
हस्त	०६ अक्टूबर	२०:०२ बजे
चित्रा	१४ अक्टूबर	१८:१८ बजे
स्वाती	२२ अक्टूबर	०९:४५ बजे
विशाखा	२९ अक्टूबर	२४:२० बजे
अनुराधा	०६ नवम्बर	२०:२३ बजे
ज्येष्ठा	१५ नवम्बर	०७:०३ बजे
मूल	२५ नवम्बर	१२:३३ बजे
ज्येष्ठा	२१ दिसम्बर	२६:२७ बजे
२०२४		
मूल	०९ जनवरी	१३:०२ बजे
पूर्वाषाढ़	२० जनवरी	२२:३५ बजे
उ.षाढ़	२९ जनवरी	१३:३७ बजे
श्रवण	०६ फरवरी	०९:२० बजे
धनिष्ठा	१३ फरवरी	२१:०० बजे
शतभिषा	२० फरवरी	३०:३३ बजे
पू.भाद्र.	२८ फरवरी	१९:१२ बजे
उ.भाद्र.	०७ मार्च	१७:३७ बजे
रेवती	१६ मार्च	१८:०६ बजे

✼ शुक्र नक्षत्रप्रवेश ✼

भरणी	२२ मार्च	१०:०७ बजे
कृत्तिका	०२ अप्रैल	१६:४३ बजे
रोहिणी	१३ अप्रैल	२७:५८ बजे
मृगशिरा	२५ अप्रैल	२१:२६ बजे
आर्द्रा	०७ मई	२३:३७ बजे
पुनर्वसु	२० मई	१५:०९ बजे
पुष्य	०३ जून	०५:५४ बजे
आश्लेषा	१८ जून	२४:४६ बजे
पुष्य	१० अगस्त	२९:५० बजे
आश्लेषा	१५ सितम्बर	२२:२४ बजे
मघा	०३ अक्टूबर	१८:२६ बजे
पू.फा.	१७ अक्टूबर	२२:०२ बजे
उ.फा.	३० अक्टूबर	१८:२० बजे
हस्त	११ नवम्बर	२२:०६ बजे
चित्रा	२३ नवम्बर	१५:३५ बजे
स्वाती	०४ दिसम्बर	२६:०१ बजे
विशाखा	१५ दिसम्बर	०७:२१ बजे
अनुराधा	२७ दिसम्बर	०८:४९ बजे
२०२४		
ज्येष्ठा	०६ जनवरी	३१:११ बजे
मूल	१७ जनवरी	२७:२९ बजे
पूर्वाषाढ़	२८ जनवरी	२२:०३ बजे
उ.षाढ़	०८ फरवरी	१५:४४ बजे
श्रवण	१९ फरवरी	०८:५४ बजे
धनिष्ठा	२९ फरवरी	२५:५४ बजे
शतभिषा	११ मार्च	१८:५३ बजे
पू.भाद्र.	२२ मार्च	१२:०२ बजे
उ.भाद्र.	०१ अप्रैल	२९:२७ बजे

✼ मंगल नक्षत्रप्रवेश ✼

आर्द्रा	२८ मार्च	२७:०७ बजे
पुनर्वसु	२३ अप्रैल	१७:३९ बजे
पुष्य	१७ मई	११:३४ बजे
आश्लेषा	०८ जून	२९:२९ बजे
मघा	०१ जुलाई	०७:५९ बजे
पू.फा.	२२ जुलाई	२२:२१ बजे
उ.फा.	१२ अगस्त	२६:२६ बजे
हस्त	०३ सितम्बर	२१:३० बजे
चित्रा	२३ सितम्बर	०८:०६ बजे
स्वाती	१३ अक्टूबर	१०:२६ बजे
विशाखा	०१ नवम्बर	२८:२४ बजे
अनुराधा	२१ नवम्बर	१३:५० बजे
ज्येष्ठा	१० दिसम्बर	१४:५० बजे
मूल	२८ दिसम्बर	३०:५८ बजे
२०२४		
पूर्वाषाढ़	१६ जनवरी	१४:०४ बजे
उ.षाढ़	०३ फरवरी	११:५४ बजे
श्रवण	२० फरवरी	२५:०३ बजे
धनिष्ठा	०८ मार्च	२०:३६ बजे
शतभिषा	२५ मार्च	३०:१९ बजे

✼ बृहस्पति नक्षत्रप्रवेश ✼

अश्विनी	१७ अप्रैल	२६:२३ बजे
भरणी	१४ जून	०७:३० बजे
अश्विनी	१२ दिसम्बर	०६:५५ बजे
भरणी	२४ जनवरी	२५:१५ बजे

✼ शनि नक्षत्रप्रवेश ✼

शतभिषा	१२ अप्रैल	०९:३४ बजे
धनिष्ठा	१६ अगस्त	२६:०३ बजे

✼ राहु केतु नक्षत्रप्रवेश ✼

राहु अश्वि.	०७ अप्रैल	१७:२२ बजे
केतु चित्रा	११ अगस्त	१३:०७ बजे
राहु रेवती	१५ दिसम्बर	०८:४० बजे

✻ संवत् २०८० के व्रत-पर्व ✻

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

श्रीसर्वेश्वर
जयादित्य पञ्चांगम्

✻ पक्षों का आरम्भ दिन ✻

वैशाख कृष्ण	०७ अप्रैल
वैशाख शुक्ल	२१ अप्रैल
ज्येष्ठ कृष्ण	०६ मई
ज्येष्ठ शुक्ल	२० मई
आषाढ़ कृष्ण	०५ जून
आषाढ़ शुक्ल	१९ जून
श्रावण कृष्ण	०४ जुलाई
श्रावण अ. शुक्ल	१८ जुलाई
श्रावण अ. कृष्ण	०२ अगस्त
श्रावण शुक्ल	१७ अगस्त
भाद्र. कृष्ण	०१ सितम्बर
भाद्र. शुक्ल	१५ सितम्बर
आश्विन कृष्ण	३० सितम्बर
आश्विन शुक्ल	१५ अक्टूबर
कार्त्तिक कृष्ण	२९ अक्टूबर
कार्त्तिक शुक्ल	१४ नवम्बर
मार्ग. कृष्ण	२८ नवम्बर
मार्ग. शुक्ल	१३ दिसम्बर
पौष कृष्ण	२७ दिसम्बर

२०२४

पौष शुक्ल	१२ जनवरी
माघ कृष्ण	२६ जनवरी
माघ शुक्ल	१० फरवरी
फाल्गु. कृष्ण	२५ फरवरी
फाल्गु. शुक्ल	११ मार्च
चैत्र कृष्ण	२६ मार्च

✻संकष्टी गणेश चतुर्थी✻

वैशाख कृष्ण	९ अप्रै.
ज्येष्ठ कृष्ण	८ मई
आषाढ़ कृष्ण	७ जून
श्रावण कृष्ण	६ जुला.
श्रावण अ. कृ	४ अग.
भाद्र. कृष्ण	३ सित.
आश्विन कृष्ण	२ अक्टू.
कार्त्तिक कृष्ण	१ नव.
मार्ग. कृष्ण	३० नव.
पौष कृष्ण	३० दिस.
माघ कृष्ण	२९ जन.
फाल्गु. कृष्ण	२८ फर.
चैत्र कृष्ण	२८ मार्च

✻वैनायकी गणेश चतुर्थी✻

चैत्र शुक्ल	२५ मार्च
वैशाख शुक्ल	२३ अप्रै.
ज्येष्ठ शुक्ल	२३ मई
आषाढ़ शुक्ल	२२ जून
श्रावण अ. शु	२१ जुला.
श्रावण शुक्ल	२० अग.
भाद्र. शुक्ल	१९ सित.
आश्विन शुक्ल	१८ अक्टू.
कार्त्तिक शुक्ल	१६ नव.
मार्ग. शुक्ल	१६ दिस.
पौष शुक्ल	१४ जन.
माघ शुक्ल	१३ फर.
फाल्गु. शुक्ल	१३ मार्च

✻ प्रदोष व्रत ✻

चैत्र शुक्ल	०३ अप्रैल
वैशाख कृष्ण	१७ अप्रैल
वैशाख शुक्ल	०३ मई
ज्येष्ठ कृष्ण	१७ मई
ज्येष्ठ शुक्ल	०१ जून
आषाढ़ कृष्ण	१५ जून
आषाढ़ शुक्ल	०१ जुलाई
श्रावण कृष्ण	१५ जुलाई
श्रावण अ. शु.	३० जुलाई
श्रावण अ. कृ.	१३ अगस्त
श्रावण शुक्ल	२८ अगस्त
भाद्र. कृष्ण	१२ सितम्बर
भाद्र. शुक्ल	२७ सितम्बर
आश्विन कृष्ण	१२ अक्टूबर
आश्विन शुक्ल	२६ अक्टूबर
कार्त्तिक कृष्ण	१० नवम्बर
कार्त्तिक शुक्ल	२४ नवम्बर
मार्ग. कृष्ण	१० दिसम्बर
मार्ग. शुक्ल	२४ दिसम्बर
पौष कृष्ण	०९ जनवरी
पौष शुक्ल	२३ जनवरी
माघ कृष्ण	०७ फरवरी
माघ शुक्ल	२२ फरवरी
फाल्गु. कृष्ण	०८ मार्च
फाल्गु. शुक्ल	२२ मार्च
चैत्र कृष्ण	०६ अप्रैल

✻ एकादशी व्रत ✻

चैत्र शुक्ल	०१ अप्रैल	वैष्णव, स्मार्त
	०२ अप्रैल	निम्बार्क
वैशाख कृष्ण	१६ अप्रैल	वैष्णव, स्मार्त
वैशाख शुक्ल	०१ मई	वैष्णव, स्मार्त
ज्येष्ठ कृष्ण	१५ मई	वैष्णव, स्मार्त
	१६ मई	निम्बार्क
ज्येष्ठ शुक्ल	३१ मई	वैष्णव, स्मार्त
आषाढ़ कृष्ण	१४ जून	वैष्णव, स्मार्त
आषाढ़ शुक्ल	२९ जून	वैष्णव, स्मार्त
श्रावण कृष्ण	१३ जुलाई	वैष्णव, स्मार्त
श्रावण अ. शु.	२८ जुलाई	वैष्णव, स्मार्त
श्रावण अ. कृ.	१२ अगस्त	वैष्णव, स्मार्त
श्रावण शुक्ल	२७ अगस्त	वैष्णव, स्मार्त
भाद्र. कृष्ण	१० सितम्बर	वैष्णव, स्मार्त
भाद्र. शुक्ल	२५ सितम्बर	वैष्णव, स्मार्त
	२६ सितम्बर	निम्बार्क
आश्विन कृष्ण	१० अक्टूबर	वैष्णव, स्मार्त
आश्विन शुक्ल	२५ अक्टूबर	वैष्णव, स्मार्त
कार्त्तिक कृष्ण	०९ नवम्बर	वैष्णव, स्मार्त
कार्त्तिक शुक्ल	२३ नवम्बर	वैष्णव, स्मार्त
मार्ग. कृष्ण	०८ दिसम्बर	वैष्णव, स्मार्त
	०९ दिसम्बर	निम्बार्क
मार्ग. शुक्ल	२३ दिसम्बर	वैष्णव, स्मार्त
पौष कृष्ण	०७ जनवरी	वैष्णव, स्मार्त
पौष शुक्ल	२१ जनवरी	वैष्णव, स्मार्त
माघ कृष्ण	०६ फरवरी	वैष्णव, स्मार्त
माघ शुक्ल	२० फरवरी	वैष्णव, स्मार्त
फाल्गु. कृष्ण	०६ मार्च	वैष्णव, स्मार्त
	०७ मार्च	निम्बार्क
फाल्गु. शुक्ल	२० मार्च	वैष्णव, स्मार्त
	२१ मार्च	निम्बार्क
चैत्र कृष्ण	०५ अप्रैल	वैष्णव, स्मार्त

✻ चन्द्र पूर्णिमा व्रत ✻

चैत्र	०५ अप्रैल
वैशाख	०५ मई
ज्येष्ठ	०३ जून
आषाढ़	०२ जुलाई
श्रावण	०१ अगस्त
श्रावण अ.	३० अगस्त
भाद्रपद	२८ सितम्बर
आश्विन	२८ अक्टूबर
कार्त्तिक	२६ नवम्बर
मार्गशीर्ष	२६ दिसम्बर
पौष	२५ जनवरी
माघ	२३ फरवरी
फाल्गुन	२४ मार्च

✻सत्यनारायण पूर्णिमा✻

चैत्र	०६ अप्रैल
वैशाख	०५ मई
ज्येष्ठ	०४ जून
आषाढ़	०३ जुलाई
श्रावण	०१ अगस्त
श्रावण अ.	३१ अगस्त
भाद्रपद	२९ सितम्बर
आश्विन	२८ अक्टूबर
कार्त्तिक	२७ नवम्बर
मार्गशीर्ष	२६ दिसम्बर
पौष	२५ जनवरी
माघ	२४ फरवरी
फाल्गुन	२५ मार्च

❊ संवत् २०८० के व्रत-पर्व, पंचक, त्रिपुष्कर योग आदि ❊

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

❊ मासिक शिवरात्रि ❊

(कृष्ण चतुर्दशी)

वैशाख	१८ अप्रैल
ज्येष्ठ	१७ मई
आषाढ़	१६ जून
श्रावण	१५ जुलाई
श्रावण अ.	१४ अगस्त
भाद्रपद	१३ सितम्बर
आश्विन	१२ अक्टूबर
कार्त्तिक	११ नवम्बर
मार्गशीर्ष	११ दिसम्बर
पौष	९ जनवरी
माघ	८ फरवरी
फाल्गुन	८ मार्च
चैत्र	७ अप्रैल

❊ मासिक कालाष्टमी ❊

(कृष्णपक्ष)

वैशाख	१३ अप्रैल
ज्येष्ठ	११ मई
आषाढ़	१० जून
श्रावण	१० जुलाई
श्रावण अ.	८ अगस्त
भाद्रपद	६ सितम्बर
आश्विन	६ अक्टूबर
कार्त्तिक	५ नवम्बर
मार्गशीर्ष	५ दिसम्बर
पौष	४ जनवरी
माघ	२ फरवरी
फाल्गुन	३ मार्च
चैत्र	१ अप्रैल

❊ पितृकार्य अमावस्या ❊

(श्राद्ध)

वैशाख	१९ अप्रैल
ज्येष्ठ	१९ मई
आषाढ़	१७ जून
श्रावण	१७ जुलाई
श्रावण अ.	१५ अगस्त
भाद्रपद	१४ सितम्बर
आश्विन	१४ अक्टूबर
कार्त्तिक	१३ नवम्बर
मार्गशीर्ष	१२ दिसम्बर
पौष	११ जनवरी २०२४
माघ	०९ फरवरी २०२४
फाल्गुन	१० मार्च २०२४
चैत्र	०८ अप्रैल २०२४

❊ देवकार्य अमावस्या ❊

(स्नान दान)

वैशाख	२० अप्रैल
ज्येष्ठ	१९ मई
आषाढ़	१८ जून
श्रावण	१७ जुलाई
श्रावण अ.	१६ अगस्त
भाद्रपद	१४ सितम्बर
आश्विन	१४ अक्टूबर
कार्त्तिक	१३ नवम्बर
मार्गशीर्ष	१२ दिसम्बर
पौष	११ जनवरी २०२४
माघ	०९ फरवरी २०२४
फाल्गुन	१० मार्च २०२४
चैत्र	०८ अप्रैल २०२४

❊ पितृपक्ष श्राद्ध तिथि ❊

२९ सितम्बर	पूर्णिमा श्राद्ध
३० सितम्बर	प्रतिपदा श्राद्ध, द्वितीया श्राद्ध
०१ अक्टूबर	तृतीया श्राद्ध
०२ अक्टूबर	चतुर्थी श्राद्ध
०३ अक्टूबर	पंचमी श्राद्ध
०४ अक्टूबर	षष्ठी श्राद्ध
०५ अक्टूबर	सप्तमी श्राद्ध
०६ अक्टूबर	अष्टमी श्राद्ध
०७ अक्टूबर	नवमी श्राद्ध, मातृनवमी श्राद्ध
०८ अक्टूबर	दशमी श्राद्ध, अन्वष्टका श्राद्ध
०९ अक्टूबर	एकादशी श्राद्ध
१० अक्टूबर	मघा श्राद्ध
११ अक्टूबर	द्वादशी श्राद्ध, संन्यासी-यति श्राद्ध, वैष्णवानां एकादशी श्राद्ध
१२ अक्टूबर	त्रयोदशी श्राद्ध
१३ अक्टूबर	चतुर्दशी श्राद्ध केवल शस्त्र हतानां
१४ अक्टूबर	सर्वपितृ श्राद्ध महालय समाप्ति

पितरों का श्राद्ध अवश्य करना चाहिए

❊ एकादशी श्राद्ध निषेध के वाक्य प्राप्त होते हैं विशेषकर वैष्णवों को एकादशी का श्राद्ध द्वादशी में करना चाहिये।

❊ सुहागिन माता का श्राद्ध किसी भी तिथि को हो नवमी में ही करना चाहिये।

❊ चतुर्दशी को जो शस्त्रादि अपमृत्यु को प्राप्त हुए हैं उनका ही श्राद्ध होता है, जिनकी तिथि चतुर्दशी हो उनका श्राद्ध अमावस्या अथवा त्रयोदशी को करें।

❊ पंचक ❊

वर्षारम्भ	से	२३ मार्च	१६:१० तक
१५ अप्रैल	१७:३७ से	१९ अप्रैल	२३:५७ तक
१२ मई	२५:४२ से	१७ मई	०७:५६ तक
०९ जून	०९:५५ से	१३ जून	१५:५० तक
०६ जुलाई	१८:१० से	१० जुलाई	२३:५४ तक
०२ अगस्त	२६:२२ से	०७ अगस्त	०७:५४ तक
३० अगस्त	१०:२८ से	०३ सितम्बर	१५:४८ तक
२६ सितम्बर	१८:२८ से	३० सितम्बर	२३:४० तक
२३ अक्टूबर	२६:३० से	२८ अक्टूबर	०७:३६ तक
२० नवम्बर	१०:४१ से	२४ नवम्बर	१५:४२ तक
१७ दिसम्बर	१९:०१ से	२१ दिसम्बर	२३:५८ तक
१३ जनवरी	२७:२३ से	१८ जनवरी	०८:१७ तक
१० फरवरी	११:३९ से	१४ फरवरी	१६:२८ तक
०८ मार्च	१९:४४ से	१२ मार्च	२४:३० तक
०४ अप्रैल	२७:४३ से	०८ अप्रैल	वर्षान्त तक

❊ त्रिपुष्कर योग ❊

१६ अप्रैल	२८:१५ से	अगले सूर्योदय तक
२२ अप्रैल	सूर्योदय से	०८:१९ तक
०२ मई	सूर्योदय से	१८:४५ तक
२० जून	सूर्योदय से	११:१५ तक
२५ जून	०७:२९ से	२०:२८ तक
०५ जुलाई	१५:०५ से	अगले सूर्योदय तक
२२ अगस्त	२८:२८ से	अगले सूर्योदय तक
२७ अगस्त	२६:१८ से	अगले सूर्योदय तक
०६ सितम्बर	२०:२४ से	अगले सूर्योदय तक
२१ अक्टूबर	१८:०९ से	अगले सूर्योदय तक
२९ अक्टूबर	२९:४७ से	अगले सूर्योदय तक
०५ नवम्बर	सूर्योदय से	०९:३५ तक
१९ दिसम्बर	सूर्योदय से	२६:४८ तक
२३ दिसम्बर	२२:०२ से	अगले सूर्योदय तक
२० फरवरी	१४:२६ से	अगले सूर्योदय तक
२५ फरवरी	२४:३५ से	अगले सूर्योदय तक
०२ मार्च	सूर्योदय से	१०:३८ तक

※ संवत् २०८० का राशिफल ※

- डॉ. पारसनाथ ओझा

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

(यहाँ ग्रहयोग पर आधारित एक वर्ष का स्थूल राशिफल दिया जा रहा है।)

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो अ)

इस राशि एवं लग्नवाले जातक के लिए वर्ष के प्रारम्भ में राहु प्रथम, मंगल तृतीय, केतु सप्तम, शनि एकादश एवं गुरू द्वादश भावगत रहेगा। ग्रहों की स्थिति के अनुसार स्वकार्यों में संघर्ष के साथ सफलता मिलेगी। परिवार में माङ्गलिक तथा विकास के कार्य होंगे। स्वास्थ्य में समय-समय पर न्यूनता, परिवार में आन्तरिक मतभेद, आर्थिक चिन्ता, रोगादि में धनव्यय होंगे। कठिन परिश्रम के साथ शिक्षा में सफलता मिलेगी वैवाहिक जीवन में समय-समय पर कटुता बनी रहेगी। पुत्रादिकों के कार्य से असन्तुष्टि बनी रहेगी। व्यापार में उतार-चढ़ाव की स्थिति, नौकरी में सफलता मिलेगी। विशेषकर वर्ष के ३,५,६,९ मास नेष्ट रहेगा। जातक को राहु, केतु, शनि, मंगल इन ग्रहों का जप दान करना आयु-आरोग्यता की दृष्टि से उत्तम रहेगा।

वृष (ई उ ए ओ वा वी वु वे वो)

इस राशि एवं लग्नवाले जातक के लिए वर्ष के प्रारम्भ में मंगल द्वितीय, केतु षष्ठ, शनि दशम, गुरू एकादश एवं राहु द्वादश भावगत रहेगा ग्रहों के स्थिति के अनुसार स्वास्थ्य सामान्य, परिवार में शुभ तथा विकास के कार्य होंगे। शिक्षा में सफलता, व्यापार लाभप्रद, सन्तान सुख, स्त्री सुख, माता-पिता का सुख उत्तम रहेगा। वाहन, भूमि आदि के क्रय-विक्रय में धोखाधड़ी की सम्भावना, चोट-चपेट लगने के योग, विपक्षियों से सावधानी की आवश्यकता रहेगी। अनावश्यक रोगादि में धनव्यय होंगे। नौकरी से असन्तुष्टि रहेगी। विशेषकर वर्ष के ३,७,११ मास नेष्ट रहेगा। जातक को राहु, मंगल, सूर्य इन ग्रहों का जप, दान करना जातक एवे जातक के परिवार के लिए उत्तम रहेगा।

मिथुन (का की कु घ ङ छ के को हा)

इस राशि एवं लग्न वाले जातक के लिए मंगल प्रथम, केतु पञ्चम, शनि नवम, गुरू दशम भावगत रहेगा। ग्रहों के स्थिति के अनुसार जातक के स्वास्थ्य में समय - समय पर न्यूनता विशेषकर वातजन्य विकार, चिड़चिड़ापन, मानसिक अशान्ति बनी रहेगी गृह में शुभकार्य तथा विकास कार्य होंगे। परिवार तथा मित्रादिकों का सहयोग प्राप्त रहेगा। समाजिक धार्मिक कार्य होंगे। व्यापार लाभप्रद, नौकरी में सफलता, अनिष्टकार्य की सिद्धि होगी। शिक्षा में प्रगति, राजनैतिक कार्यों में रूचि उत्पन्न होगी। अनेक सुखद यात्राऐं होंगी। सामान्यतया वर्ष के ५, ७, ११ मास नेष्ट रहेगा। मंगल, केतु, शनि का जपदान करना गृह में श्रीदुर्गासप्तशती का पाठ कराना लाभप्रद रहेगा।

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो)

इस राशि एवं लग्न वाले जातक के लिए वर्ष के प्रारम्भ में केतु चतुर्थ, शनि अष्ठम, गुरु नवम, राहु दशम एवं मंगल द्वादश भावगत रहेगा। शनि की ढैय्या रहेगी। ग्रहों के स्थिति के अनुसार जातक को मानसिक पारिवारिक आर्थिक चिन्ता बनी रहेगी। विपक्षी प्रबल रहेंगे। कठिन परिश्रम से कार्य की सिद्धि होगी। स्वास्थ्य में समय-समय पर न्यूनता रहेगी। स्वजनों से मतान्तर की स्थिति, पुत्रादि के कार्यों से असन्तुष्टि बनी रहेगी। क्रय-विक्रय में धोखाधड़ी, चोट-चपेट लगने का योग है। कठिन परिश्रम से शिक्षा, व्यापार आदि कार्यों में सफलता मिलेगी। यात्राऐं कष्टप्रद, राजनैतिक कार्यों में क्षति तथा भागदौड़ की स्थिति बनी रहेगी। विशेषकर वर्ष के १, २, ७, ११ मास नेष्ट रहेगा। जातक को मंगल, गुरु, शनि, केतु, इन ग्रहों का दान करना, स्वयं हनुमत आराधना, शनि चालीसा, हनुमान चालीसा तथा सुन्दरकाण्ड का पाठ कराना श्रेयस्कर रहेगा।

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे)

इस राशि एवं लग्नवाले जातक के लिए वर्ष के प्रारम्भ में केतु तृतीय, शनि सप्तम, गुरु अष्ठम एवं मंगल एकादश भावगत रहेगा। ग्रहों के स्थिति के अनुसार जातक का स्वास्थ्य मध्मय, परिवार में माङ्गलिक तथा विकास के कार्य, विद्या क्षेत्र में सफलता, विपक्षी निर्बल, अनेक सुखद यात्राऐं, राजनीति कार्यों में संघर्ष, व्यवसाय लाभप्रद, नौकरी के अवसर प्राप्त, स्वजनों तथा इष्टमित्रों के सहयोग से अभीष्टकार्य की सिद्धि होगी। पत्नी के स्वास्थ्य में समय-समय पर न्यूनता, न्यायालीय कार्य में सफलता मिलेगी। विशेषकर वर्ष के ६, ९, १२ मास नेष्ट रहेगा गुरू, मंगल, शनि इन ग्रहों का जप तथा स्वयं को श्रीदुर्गाकवच का पाठ करना लाभप्रद रहेगा।

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो) -

इस राशि एवं लग्नवाले जातक के लिए वर्ष के प्रारम्भ में केतु द्वितीय, शनि षष्ठ, राहु अष्ठम, गुरू सप्तम तथा मंगल दशम भावगत रहेगा। स्वास्थ्य में समय-समय पर न्यूनता रहेगी। परिवार में मतान्तर की स्थिति बनी रहेगी। अनावश्यक तथा रोगादि में धनव्यय होंगे। अभीष्टकार्य की सिद्धि में विलम्ब, विपक्षी प्रबल, क्रय-विक्रय, लेनदेन आदि कार्यों में धोखाधड़ी, व्यापार मध्यम, गृह में शुभ तथा विकास कार्य होंगे। कुसंगति तथा नीच प्रवृत्तिक लोगों के सम्पर्क से पनौती, सामाजिक प्रतिष्ठा की हानि की सम्भावना रहेगी। कठिन परिश्रम से शिक्षा में सफलता मिलेगी। नौकरी से असन्तुष्टि रहेगी। विशेषकर वर्ष के १, ३, ५, ६, ९ मास नेष्ट रहेगा। जातक को राहु, केतु, शनि, गुरू इन ग्रहों का जप दान करना, स्वयं हनुमद्दर्शन, नवग्रहस्तोत्र का पाठ करना आयु आरोग्यता की दृष्टि से लाभदायक रहेगा।

❊ संवत् २०८० का राशिफल ❊

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

तुला (रा री रू रे रो ता ती तू ते)

इस राशि एवं लग्नवाले जातक के लिए वर्ष के प्रारम्भ में केतु प्रथम, शनि पञ्चम, गुरु षष्ठ, राहु सप्तम एवं मंगल नवम भावगत रहेंगे। ग्रहों की स्थिति के अनुसार मानसिक चिन्ता, आर्थिक तथा पारिवारिक तनाव की स्थिति बनी रहेगी। गृह में शुभ कार्य होंगे, शिक्षा में प्रगति रहेगी। व्यापार मध्यम, विपक्षी निर्बल रहेंगे। संघर्ष के साथ इष्टकार्य की सिद्धि होगी। रोगादि में धनव्यय होंगे। स्त्री के स्वास्थ्य में समय-समय पर न्यूनता रहेगी। धार्मिक सामाजिक स्तर के कार्य होंगे। सुखद यात्राऐं होंगी। राजनीति के कार्यों में संघर्ष के साथ सफलता मिलेगी। वर्ष के ३,७,९ मास नेष्ट रहेगा। शान्त्यर्थ केतु, राहु, शनि इन ग्रहों का जप तथा गोमेद धारण करना लाभप्रद रहेगा।।

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो या यी यू)

इस राशि एवं लग्न वाले जातक के लिए वर्ष के प्रारम्भ में शनि चतुर्थ, गुरू पञ्चम, राहु षष्ठ एवं मंगल अष्ठमभावगत रहेगा। शनि की ढैय्या चल रही है। ग्रहों के स्थिति के अनुसार जातक को शारीरिक सुख सामान्य, मानसिक, आर्थिक, पारिवारिक चिन्ता, अभीष्टकार्य की सिद्धि में अवरोध, संघर्ष के साथ कार्य में सफलता मिलेगी। स्वजनों से मतभेद की स्थिति बनी रहेगी। व्यापार मध्यम, नौकरी में भागदौड़ तथा स्थानान्तर की स्थिति बनेगी। क्रय-विक्रय तथा लेनदेन में धोखाधड़ी की विशेष सम्भावना है। वाहन, अग्नि, जल से दुर्घटना, चोट-चपेट आदि का योग प्रबल है अतः सदा सावधानी की आवश्यकता रखनी चाहिये । कुसंगति अनावश्यक धनव्यय होंगे। कठिन परिश्रम से स्वकार्यों में सफलता मिलेगी। विशेषकर वर्ष के २,५,७ मास नेष्ट रहेगा। शान्त्यर्थ शनि, राहु, केतु, मंगल इन ग्रहों का जपदान करना, हनुमद्दर्शन, शनि न चालीसा, हनुमान चालीसा आदि का पाठ करना लाभप्रद रहेगा।

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे)

इस राशि एवं लग्नवाले जातक के लिए वर्ष के प्रारम्भ में शनि तृतीय, गुरू चतुर्थ, राहु पञ्चम, मंगल सप्तम एवं केतु एकादश भावगत रहेगा। ग्रहों के स्थिति के अनुसार स्वास्थ्य सामान्य, परिवार में शुभ तथा विकास के कार्य होंगे। व्यापार लाभप्रद, शिक्षा में प्रगति, नौकरी में पदोन्नति का योग है। अनेक सुखद यात्राऐं तथा सामाजिक, धार्मिक कार्य होंगे। पत्नी के स्वास्थ्य में समय-समय पर न्यूनता आती रहेगी। विपक्षी निर्बल रहेंगे। न्यायालीय कार्य में सफलता मिलेगी। विशेषकर वर्ष के १,७,९ मास नेष्ट रहेगा। मंगल, गुरू, राहु इन ग्रहों का जप तथा गृह में श्रीदुर्गासप्तशति का पाठ कराना लाभप्रद रहेगा।

मकर (भी जा जी खी खू खे खो गा गी)

इस राशि एवं लग्नवाले जातक के लिए वर्ष के प्रारम्भ में शनि द्वितीय, गुरू तृतीय, राहु चतुर्थ, मंगल षष्ठ एवं केतु दशम भावगत रहेगा। शनि की साढ़ेसाती अपनी उग्रता की स्थिति में रहेगी। ग्रहों के स्थिति के अनुसार जातक के स्वास्थ्य में समय-समय पर न्यूनता, आर्थिक, पारिवारिक चिन्ता, क्रय-विक्रय, लेनदेन आदि के कार्यों में धोखाधड़ी की सम्भावना है। व्यापार में उतार-चढ़ाव की स्थिति, परिवार में आन्तरिक मतभेद, विपक्षी प्रबल, चोट-चपेट, अभीष्टकार्य की सिद्धि में विलम्ब, कठिन परिश्रम से शिक्षा में सफलता मिलेगी। रोगादि में अनावश्यक धनव्यय होंगे। विशेषकर वर्ष के ३,७,९ मास नेष्ट रहेगा। शान्त्यर्थ शनि, राहु, केतु इन ग्रहों का जप दान करना तथा स्वयं हनुमद्‌आराधना, शनि चालीसा, हनुमान चालीसा का पाठ करना लाभप्रद रहेगा।

कुम्भ (गू गे गो सा सी सू से सो दा)

इस राशि एवं लग्न वाले जातकों के लिए वर्ष के प्रारम्भ में शनि प्रथम, गुरू द्वितीय, राहु तृतीय, मंगल पञ्चम एवं केतु दशम भावगत रहेगा। ग्रहों के स्थिति के अनुसार जातक को मानसिक चिन्ता, आर्थिक चिन्ता, पारिवारिक चिन्ता बनी रहेगी। शुभकार्यों में तथा विकास के कार्यों में व्यवधान उपस्थित होता रहेगा । रोगादि में अनावश्यक धनव्यय होगा विपक्षी प्रबल रहेंगे। क्रय-विक्रय, लेनदेन आदि में धोखाधड़ी का योग है। परिवार में मतान्तर की स्थिति बनी रहेगी। संघर्ष के साथ अभीष्टकार्य की सिद्धि होगी । कुसंगति तथा नीच प्रवृत्ति के लोगों द्वारा मानहानि तथा सामाजिक क्षति की सम्भावना है। विशेषकर वर्ष के १,३,७,११ मास नेष्ट रहेगा। शान्त्यर्थ शनि, गुरू, मंगल, राहु, केतु इन ग्रहों का जप दान करना तथा स्वयं हनुमद्‌आराधना, शनि चालीसा एवं हनुमान चालीसा का पाठ करना लाभप्रद रहेगा।

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची)

इस राशि एवं लग्न वाले जातक के लिए गुरू प्रथम, राहु द्वितीय, मंगल चतुर्थ, केतु अष्ठम एवं शनि द्वादश भावगत रहेगा। शनि की साढ़ेसाती चल रही है। शारीरिक, मानसिक, आर्थिक चिन्ता, अधिक प्रयाश करने पर गृह में शुभकार्य तथा विकासकार्य होंगे। स्वकार्यों के प्रति उदासीनता बनी रहेगी। व्यापार में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। स्वजनों तथा इष्टमित्रादिकों से आन्तरिक मतान्तर बनी रहेगी। स्त्री-पुत्रादिकों के कार्य तथा व्यवहार से मानसिक खिन्नता बनी रहेगी। क्रय-विक्रय तथा लेनदेन के कार्यों में धोखाधड़ी की सम्भावना विशेष रहेगी। वाहन आदि से चोट-चपेट, ऑपरेशन आदि के योग बनेंगे अनावश्यक धनव्यय होंगे। विशेषकर वर्ष के १,२,५,७,११ मास नेष्ट रहेगा शान्त्यर्थ शनि, राहु, गुरू, मंगल, केतु इन ग्रहों का जप दान करना, नीला या काला वस्त्र धारण करना, हनुमद्दर्शन, शनि चालीसा, हनुमान चालीसा का पाठ स्वयं करना श्रेयस्कर रहेगा।

✻ सूर्य की १२ संक्रान्तियों का समय, पुण्यकाल, स्वरूप एवं फल ✻

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

मेष संक्रान्ति - १४ अप्रैल २०२३ - १७:१३

संक्रान्ति पुण्यकाल - १३:१३ से सूर्यास्त तक

वसन्त ऋतु, खरमास समाप्ति, शुक्रवार, श्रवण नक्षत्र, गर करण, विषुव संक्रान्ति।

मेष संक्रान्ति बाघ पर सवार, जटिला, अग्निरूपा, तीन नेत्रों वाली, रक्तवर्णा कपालहस्ता, एकमुखी व कराली नाम की होती है। इसका सूर्य धाता है। इसमें मेषदान शुभ होता है। **यह मेष संक्रान्ति गर करण में होने से** पशु जाति की, हाथी वाहन पर, लाल वस्त्र पहने, धनुष लिए, दूध पीते हुए, गोरोचन का लेपन किए, बिल्व का पुष्प लिए, प्रौढ़ वय में, दुर्मुखी अवस्था में बैठी हुई प्रवेश कर रही है। बैठी संक्रान्ति इष्ट अनिष्ट कुछ नहीं करती, धर्म आयु वर्षा हेतु समभाव होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ है। इस सूर्य संक्रमण काल में बैठे नहीं रहना चाहिए। यह मन्दा नाम की विप्रसुखकारक है। श्रवण की संक्रान्ति ३० मुहूर्त की होने से अन्नादि का भाव समान रहता है। श्रवण जातकों को कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान।

वृष संक्रांति - १५ मई २०२३ - १५:४०

संक्रान्ति पुण्यकाल - ०९:१६ से १५:४० तक

ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ, गुरूवार, उ.भा. नक्षत्र, बालव करण, विष्णुपद संक्रान्ति।

वृष संक्रान्ति सिंह पर सवार, त्रिनेत्रा कपालहस्ता, श्वेतवर्णा, द्विहस्ता, एकमुखी व महाघोरा नाम की होती है। इसका सूर्य अर्यमा है। इसमें गौदान शुभ होता है। **यह वृष संक्रान्ति बालव करण में होने से** भूत जाति की, बाघ पर सवार, पीले वस्त्र पहने, गदा लिए, खीर खाते हुए, कुंकुम लेपन किए, जातीपुष्प लिए, कुमार वय में, भोग अवस्था में बैठी हुई प्रवेश कर रही है।बैठी संक्रान्ति इष्ट अनिष्ट कुछ नहीं करती, धर्म आयु वर्षा हेतु समभाव होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ होती है। इस सूर्य संक्रमण काल में बैठे नहीं रहे। उ.भा. की संक्रान्ति ४५ मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव सस्ता होता है। उ.भा. जातकों को कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान।

मिथुन संक्रांति - १५ जून २०२३ - २५:४४

संक्रान्ति पुण्यकाल - १६ जून - ०५:३४ से ११:५८ तक

ग्रीष्म ऋतु, गुरूवार, कृत्तिका नक्षत्र, वणिज करण, षडशीतिमुख संक्रान्ति।

मिथुन संक्रान्ति वराह पर सवार, त्रिनेत्रा, एकमुखी, हरित वर्णा, अभयमुद्राधारी और कपालहस्ता, शुभ व विरुपाक्षी नाम की होती है। इसका सूर्य मित्र है। इसमें वस्त्र, अन्न, जल का दान शुभ होता है। **यह मिथुन संक्रान्ति वणिज करण में होने से** मृग जाति की, महिष वाहन पर, काले वस्त्र पहने, बाण लिए, दही खाते हुए, हल्दी लेपन किए, आक का पुष्प लिए, प्रगल्भा वय में, जरा अवस्था में बैठी हुई प्रवेश कर रही है। बैठी संक्रान्ति इष्ट अनिष्ट कुछ नहीं करती, धर्म आयु वर्षा हेतु समभाव होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ होती है। इस सूर्य संक्रमण काल में बैठे नहीं रहना चाहिए। कृत्तिका की संक्रान्ति ३० मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव समान रहता है। कृत्तिका नक्षत्र जातकों को एक मास कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान करें।

कर्क संक्रांति - १७ जुलाई २०२३, १७:१५

संक्रान्ति पुण्यकाल - १०:५१ से १७:१५ तक

वर्षा ऋतु आरम्भ, दक्षिणायन आरम्भ, सोमवार, पुनर्वसु नक्षत्र, नाग करण, याम्यायन संक्रान्ति।

कर्क संक्रान्ति अश्व पर सवार, गुलाबी रंग की, एकमुखी, द्विहस्ता, कपालहस्ता, कटका व महोदरी नाम की होती है। इसका सूर्य अरुण है। इसमें घृतधेनु का दान शुभ होता है। **यह कर्क संक्रान्ति नाग करण में होने से** शूद्र जाति की, मुर्गे पर सवार, मेघवर्ण वस्त्र पहने, बाण लिए, घी खाते हुए, अगरु लेपन किए, गुलाब लिए, सुतार्थिनी वय में, कर्कश अवस्था में बैठी हुई प्रवेश कर रही है। सोती हुई संक्रान्ति धर्म हेतु अनिष्ट, अन्नादि के भाव महंगे व अवर्षणकारक होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ होती है। इस सूर्य संक्रमण काल में सोते नहीं रहना चाहिए। पुनर्वसु की संक्रान्ति ४५ मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव सस्ता होता है। पुनर्वसु नक्षत्र जातकों को एक मास कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान करें।

सिंह संक्रांति - १७ अगस्त २०२३, २८:३३

संक्रान्ति पुण्यकाल - १८ अगस्त - सूर्योदय से १०:५७ तक

वर्षा ऋतु, गुरूवार, पू.फा. नक्षत्र, कौलव करण, विष्णुपद संक्रान्ति।

सिंह संक्रान्ति शुनक पर सवार, एकमुखी, रक्तवर्णा, कपालहस्ता व चामरधारी व जिंहिका नाम की होती है। इसका सूर्य इन्द्र है। इसमें छाता व स्वर्ण शुभ होता है। **यह सिंह संक्रान्ति कौलव करण में होने से** सर्प जाति की, वराह वाहन पर, नीला वस्त्र पहने, तलवार लिए, भिक्षान्न खाते हुए, लाल चन्दन का लेपन किए, बकुल अशोक का पुष्प लिए, गतालक वय में, रति अवस्था में खड़ी हुई प्रवेश कर रही है। खड़ी संक्रान्ति धर्म हेतु श्रेष्ठ, अन्नादि के भाव सस्ते व वृष्टिकारक होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ है। इस सूर्य संक्रमण काल में खड़े नहीं रहना चाहिए। पू.फा. की संक्रान्ति ३० मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव समान रहता है। पू.फा. नक्षत्र जातकों को एक मास कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान करें।

कन्या संक्रान्ति १७ सितम्बर २०२३, २८:५७

संक्रान्ति पुण्यकाल - १८ सितम्बर - सूर्योदय से ११:२१ तक

शरद ऋतु आरम्भ, रविवार, चित्रा नक्षत्र, गर करण, षडशीतिमुख संक्रान्ति।

कन्या संक्रान्ति गज पर सवार, त्रिनेत्रा, कपालधारी, कृष्ण मुख व रक्तिम वर्ण की देह वाली, व सिंहिका नाम की होती है। इसका सूर्य विवस्वत है। इसमें वस्त्र व गौदान शुभ होता है। **यह कन्या संक्रान्ति गर करण में होने से** पशु जाति की, हाथी वाहन पर, लाल वस्त्र पहने, धनुष लिए, दूध पीते हुए, गोरोचन का लेपन किए, बिल्व का पुष्प लिए, प्रौढ़ वय में, दुर्मुखी अवस्था में बैठी हुई प्रवेश कर रही है। बैठी संक्रान्ति इष्ट अनिष्ट कुछ नहीं करती, धर्म आयु वर्षा हेतु समभाव होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ होती है। इस सूर्य संक्रमण काल में बैठे नहीं रहना चाहिए। चित्रा की संक्रान्ति ३० मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव समान रहता है। चित्रा नक्षत्र जातकों को एक मास कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान करें।

✻ सूर्य की १२ संक्रान्तियों का समय, पुण्यकाल, स्वरूप एवं फल ✻

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

तुला संक्रान्ति १८ अक्टूबर २०२३, १५:२४

संक्रान्ति पुण्यकाल – ११:२४ से सूर्यास्त तक

शरद ऋतु, बुधवार, अनुराधा नक्षत्र, विष्टि करण, विषुव संक्रांति।

तुला संक्रान्ति कुक्कुर पर सवार, षडानन, त्रिनेत्रा, नीलवर्णा, कपालधारी, व मन्दा नाम की होती है। इसका सूर्य त्वष्टा है। इसमें धान्य व बीजों का दान शुभ होता है। **यह तुला संक्रान्ति विष्टि करण में होने से** ब्राह्मण जाति की, घोड़ा वाहन पर, श्याम वस्त्र पहने, मुद्गर लिए, खिचड़ी खाते हुए, जौखार का लेपन किए, दूर्वा का पुष्प लिए, वृद्धा वय में, भुक्ता अवस्था में बैठी हुई प्रवेश कर रही है। बैठी संक्रान्ति इष्ट अनिष्ट कुछ नहीं करती, धर्म आयु वर्षा हेतु समभाव होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ होती है। इस सूर्य संक्रमण काल में बैठे नहीं रहना चाहिए। अनुराधा की संक्रान्ति ३० मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव समान रहता है। अनुराधा नक्षत्र जातकों को एक मास कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान करें।

वृश्चिक संक्रांति – १७ नवम्बर २०२३, १२:४४

संक्रान्ति पुण्यकाल – सूर्योदय से १२:४४ तक

हेमन्त ऋतु आरम्भ, शुक्रवार, पूर्वाषाढ़ नक्षत्र, बव करण, विष्णुपद संक्रान्ति।

वृश्चिक संक्रान्ति अजा पर सवार, त्रिनेत्रा, कपालहस्ता, शक्तिधारी, नीलवर्णा, व आह्लादिनी नाम की होती है। इसका सूर्य विष्णु है। इसमें वस्त्रदान, दीपकदान शुभ होता है। **यह वृश्चिक संक्रान्ति बव करण में होने से** देवता जाति की, सिंह पर सवार, श्वेत वस्त्र पहने, भुशुण्डी लिए, अन्न खाते हुए, कस्तूरी का लेपन किए, नागकेशर का पुष्प लिए, शिशु वय में, पंथाती हुई अवस्था में बैठी हुई प्रवेश क र रही है। बैठी संक्रान्ति इष्ट अनिष्ट कुछ नहीं करती, धर्म आयु वर्षा हेतु समभाव होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ होती है। इस सूर्य संक्रमण काल में बैठे नहीं रहना चाहिए। पूर्वाषाढ़ की संक्रान्ति ३० मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव समान रहता है। पूर्वाषाढ़ नक्षत्र जातकों को एक मास कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान करें।

धनु संक्रांति – १६ दिसम्बर २०२३, २४:४६

संक्रान्ति पुण्यकाल – सूर्योदय से १३:३६ तक

हेमंत ऋतु, खरमास आरम्भ, शनिवार, श्रवण नक्षत्र, बव करण, षडशीतिमुख संक्रान्ति।

धनु संक्रान्ति महिष पर सवार, त्रिनेत्रा, कपालधारी, चित्रवर्णा व उज्ज्वला नाम की होती है। इसका सूर्य अंशु है। इसमें वस्त्र व वाहनदान शुभ होता है। **यह धनु संक्रान्ति बव करण में होने से** देवता जाति की, सिंह पर सवार, श्वेत वस्त्र पहने, भुशुण्डी लिए, अन्न खाते हुए, कस्तूरी का लेपन किए, नागकेशर का पुष्प लिए, शिशु वय में, पंथाती हुई अवस्था में बैठी हुई प्रवेश क र रही है। बैठी संक्रान्ति इष्ट अनिष्ट कुछ नहीं करती, धर्म आयु वर्षा हेतु समभाव होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ होती है। इस सूर्य संक्रमण काल में बैठे नहीं रहना चाहिए। श्रवण की संक्रान्ति ३० मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव समान रहता है। श्रवण नक्षत्र जातकों को एक मास कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान करें।

मकर संक्रांति – १५ जनवरी २०२४, ०८:४१

संक्रान्ति पुण्यकाल – सूर्योदय से सूर्यास्त तक

शिशिर ऋतु, उत्तरायण आरम्भ, खरमास समाप्ति, सोमवार, शतभिषा नक्षत्र, विष्टि करण, सौम्यायन संक्रान्ति।

मकर संक्रान्ति ऊँट पर सवार, त्रिनेत्रा, दंष्ट्रिकानना, रक्तवर्णा, कपालहस्ता व वज्रधारी, व राक्षसी नाम की होती है। अन्य विवरण से द्विमुख, त्रिनेत्रा, कृष्णवर्ण, चार बाँहों, सात हाथों और तीन पैरों वाली, ऊपर देखती हुई, सात आयुध धारण किये हुए- दाएं हाथों में मुसल, तलवार, बाण, व बाएं हाथों में गदा, खेटक, पात्र, व शरासन धारण करती है। इसका सूर्य भग है। इसमें अग्निदान शुभ होता है। यह मकर संक्रान्ति **विष्टि करण में होने से** ब्राह्मण जाति की, घोड़ा वाहन पर, श्याम वस्त्र पहने, मुद्गर लिए, खिचड़ी खाते हुए, जौखार का लेपन किए, दूर्वा का पुष्प लिए, वृद्धा वय में, भुक्ता अवस्था में बैठी हुई प्रवेश कर रही है। बैठी संक्रान्ति इष्ट अनिष्ट कुछ नहीं करती, धर्म आयु वर्षा हेतु समभाव होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ होती है। इस सूर्य संक्रमण काल में बैठे नहीं रहना चाहिए। शतभिषा की संक्रान्ति १५ मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव महंगा होता है। शतभिषा नक्षत्र जातकों को एक मास कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान करें।

कुम्भ संकान्ति – १३ फरवरी २०२४, ०९:३६

संक्रान्ति पुण्यकाल – सूर्योदय से ०९:३६ तक

शिशिर ऋतु, मंगलवार, उ.भा. नक्षत्र, विष्टि करण, विष्णुपद संक्रान्ति।

कुम्भ संक्रान्ति तुरग पर सवार, कपालहस्ता, नीलवर्णा, व भंजिका नाम की होती है। इसका सूर्य पूषा है। इसमें गौ के लिए घास व जलदान शुभ होता है। **यह कुम्भ संक्रान्ति विष्टि करण में होने से** ब्राह्मण जाति की, घोड़ा वाहन पर, श्याम वस्त्र पहने, मुद्गर लिए, खिचड़ी खाते हुए, जौखार का लेपन किए, दूर्वा का पुष्प लिए, वृद्धा वय में, भुक्तावस्था में बैठी हुई प्रवेश कर रही है। बैठी संक्रान्ति इष्ट अनिष्ट कुछ नहीं करती, धर्म आयु वर्षा हेतु समभाव है।यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ है। इस संक्रमण काल में बैठे न रहे। उ.भा. की संक्रान्ति ४५ मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव सस्ता होता है। उ.भा. जातकों को १ मास कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल,हल्दी,सरसों मिले जल से स्नान।

मीन संक्रांति – १४ मार्च २०२४, १५:०८

संक्रान्ति पुण्यकाल – ०६:४४ से १५:०८ तक

वसंत ऋतु प्रारम्भ, खरमास आरम्भ, गुरुवार, भरणी नक्षत्र, बव करण, षडशीतिमुख संक्रान्ति।

मीन संक्रान्ति भालू पर सवार, त्रिनेत्रा, कपालहस्ता, अरुण वर्णा व वक्रा नाम की होती है। इसका सूर्य पर्जन्य है। इसमें भूमि व माला का दान शुभ होता है। **यह मीन संक्रान्ति बव करण में होने से** देवता जाति की, सिंह पर सवार, श्वेत वस्त्र पहने, भुशुण्डी लिए, अन्न खाते हुए, कस्तूरी का लेपन किए, नागकेशर का पुष्प लिए, शिशु वय में, पंथाती हुई अवस्था में बैठी हुई प्रवेश क र रही है। बैठी संक्रान्ति इष्ट अनिष्ट कुछ नहीं करती, धर्म आयु वर्षा हेतु समभाव होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ होती है। इस सूर्य संक्रमण काल में बैठे नहीं रहना चाहिए। भरणी की संक्रान्ति १५ मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव महंगा होता है। भरणी नक्षत्र जातकों को एक मास कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान करें।

❊ संवत् २०८० के ग्रहण ❊

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

संवत् २०८०, सन् २०२३-२४ ई० में विश्व में चार ग्रहण लगेगें। जिसमें तीन सूर्यग्रहण तथा एक चन्द्रग्रहण लगेगा। जिसमें तीनों सूर्यग्रहण भारत में दिखाई नहीं देंगे। तीनों सूर्यग्रहण भारत में अदृश्य होने से महत्त्व के नहीं होंगे। चन्द्रग्रहण भारत में दिखाई देगा। इन चारों ग्रहण के अतिरिक्त दो चन्द्रग्रहण के प्रतिबिम्ब होंगे जिसका कोई धर्मशास्त्रीय महत्व नहीं है। ये प्रतिबिम्ब ०५ मई २०२३ तथा २६ मार्च को होंगे। जो ग्रहण अपने भूखण्ड पर दिखाई नहीं देता उसका धार्मिक महत्त्व (सूतक आदि) नहीं होता है। दिन का चन्द्रग्रहण तथा रात्रि का सूर्यग्रहण विफल होता है।

सूर्यग्रहो यदा रात्रै दिवा चन्द्रग्रहो यदि। तत्र स्नानं न कुर्वीत दद्याद् दानं न च क्वचित्।।

१. खग्रास सूर्यग्रहण - यह वैशाखकृष्ण अमावस्या गुरूवार दिनांक २० अप्रैल २०२३ ई० को होगा, जो भारत में दृश्य नहीं होगा। यह दक्षिणपूर्व एशिया, दक्षिणपूर्व यूरोप, ऑस्ट्रेलिया, फिलिपीन्स, अटलान्टिक, आर्कटिक के कुछ भूभाग में तथा इण्डोनेशिया में दृश्य होगा। भारतीय समयानुसार ग्रहण का प्रारम्भ दिवा ०७:०४:१५, मध्य दिवा ०९:४७:२० तथा मोक्ष दिवा १२:२९:२० पर होगा । ग्रासमान ०१.०१ होगा। **यह ग्रहण भारत में दृश्य नहीं होगा अतः इस ग्रहण का धार्मिक महत्त्व व सूतक नहीं होगा।**

२. कंकणाकृति सूर्यग्रहण - यह ग्रहण आश्विन अमावस्या शनिवार दिनांक १४ अक्टूबर २०२३ ई० को होगा जो भारत में दृश्य नहीं होगा। भारत के अतिरिक्त अफ्रीका, अमेरिका, अटलांटिक, पैसेफिक में दृश्य होगा। भारतीय समयानुसार ग्रहण का प्रारम्भ रात्रि २१:४८:०५, मध्य रात्रि २३:३०:०७ एवं मोक्ष रात्रि २५:१९:१० पर होगा। ग्रासमान ०.९५२ होगा। **यह ग्रहण भारत में दृश्य नहीं होगा अतः इस ग्रहण का धार्मिक महत्त्व व सूतक नहीं होगा।**

३. खग्रास सूर्यग्रहण - यह चैत्रकृष्ण अमावस्या सोमवार दिनांक ०८ अप्रैल २०२४ को होगा। जो भारत में दृश्य नहीं होगा। यह खग्रास सूर्यग्रहण पश्चिमी यूरोप, अमेरिका महाद्वीप, पैसेफिक ओशन, अटलान्टिक, आर्कटिक आदि स्थानों में दृश्य होगा। ग्रहण का प्रारम्भ भारतीय समयानुसार स्पर्श रात्रि २१:२२:१०, मध्य रात्रि २३:४७:१५ एवं मोक्ष रात्रि २५:२६:१० पर होगा। ग्रासमान ०१:३६ होगा। **यह ग्रहण भारत में दृश्य नहीं होगा अतः इस ग्रहण का धार्मिक महत्त्व व सूतक नहीं होगा।**

४. खण्ड चन्द्रग्रहण २८/२९ अक्टूबर २०२३

यह चन्द्रग्रहण आश्विन पूर्णिमा शनिवार २८/२९ अक्टूबर २०२३ को होगा। यह खण्डग्रास चन्द्रग्रहण भारत में दृश्य होगा। सुदूर दक्षिणपूर्वी ऑस्ट्रेलिया को छोड़कर, ऑस्ट्रेलिया के अन्य भूभाग में, यूरोप, एशिया, अफ्रीका, उत्तरी पश्चिमी व दक्षिणी अमेरिका, पैसेफिक ओशन, अटलान्टिका, अन्टर्कटिक देशों में दिखाई देगा। भारतीय समयानुसार ग्रहण का प्रारम्भ रात्रि ०१:०५, मध्य ०१:४४ एवं मोक्ष रात्रि ०२:२४ पर होगा। ग्रहण का ग्रासमान ०.१२६ होगा। ग्रहण अवधि प्रारम्भ से मोक्ष तक १ घंटा १९ मिनट होगा। यह खण्ड चन्द्रग्रहण अश्विनी नक्षत्र मेष राशि पर होगा। **ग्रहण का सूतक १६:०५ से प्रारम्भ हो जाएगा**, सूतक काल के नियम आगे दिए हैं।

इस **खण्ड चन्द्रग्रहण** का **राशिफल** इस प्रकार है :-

मेष-	घात	**वृष-**	हानिप्रद	**मिथुन-**	लाभप्रद
कर्क-	सुखदायक	**सिंह-**	मानहानि	**कन्या-**	कष्टदायक
तुला-	स्त्री कष्ट	**वृश्चिक-**	सुखदायक	**धनु-**	चिन्ता
मकर-	कष्टदायक	**कुम्भ-**	श्रीप्रद	**मीन-**	क्षतिप्रद

ग्रहणफलः - यह ग्रहण दक्षिणायन में होने से वैश्य व शूद्रों के लिए हानिकारक कहा है। यह ग्रहण मेष राशि व अश्विनी नक्षत्र में हो रहा है अतः मेष व अश्विनी के जातकों के लिए हानिकारक होगा। यह ग्रहण पंजाब, मथुरा, उड़ीसा, कश्मीर, उत्तरी पाकिस्तान क्षेत्र, और चीन में उत्पात व हानि करेगा। अग्नि से सम्बंधित आजीविका वाले पीड़ित होंगे। दक्षिण में राहु दिखने से यह ग्रहण जलचरों और हाथियों को अशुभ है। घी, शहद, तेल, पेट्रोल तेज हों, राजाओं को भय हो, युद्ध में मारकाट, अग्निकाण्ड और चोरों का भय हो, दुर्भिक्ष और अवृष्टि का भय रहे। विद्वान, राजमंत्री, हाथी, घोड़ों, सैन्य आयुधों का नाश होगा, सिन्धुन्दी के पास व उत्तरदिशा के पुरुषों का नाश होगा। अनाज, कपास, रुई, सोना, चाँदी, चीनी, ऊन में तेजी होगी। गुड़ और खाण्ड में मंदी होगी। लाल वस्तुओं, घी, तेल, पीतल, पीली चीजों में भी तेजी होगी। सरसों, तिल, लोहा, स्टील, काले वस्त्रों आदि में ६ माह बाद तेजी होगी। यदि ग्रहण के ७ दिन के भीतर अच्छी वर्षा हो जाए तो सब अशुभफल नष्ट हो जाता है।

❊ ग्रहणकाल के सूतक आदि के नियम ❊

चन्द्रग्रहण का सूतक ९ घण्टे पहले लगता है। सूतक में वृद्ध, बालक व रोगी को छोड़ किसी को भोजन नहीं करना चाहिए। पर ग्रहण आरम्भ के एक पहर पहले से बालक, वृद्ध व रोगी को भी भोजन न करना चाहिए।

सूतक काल में मन्दिर में दर्शन मङ्गल करदे व देवमूर्ति आदि का स्पर्श न करे। सूतक का पका अन्न ग्रहण करने योग्य नहीं रहता है। पर दूध, दही, घी, जल सूतक में दूषित नहीं होता है। जल, सब्जी आदि खाद्य पदार्थों में ग्रहण के पहले कुशा और तिल डाल देने से यह दूषित नहीं होते।

ग्रहण के समय में सोने, व मल-मूत्र त्याग का भी निषेध है। सोने से रोग, मूत्रत्याग से दरिद्रता व मलत्याग से अधम योनि, मैथुन से शूकर योनि, उबटन करने से चर्मरोग और भोजन करने से अधोगति मिलती है। ग्रहण काल में केवल जप, तप करना चाहिए। ग्रहण के जप-तप, स्नान-दान का चन्द्रग्रहण में लाख गुणा फल होता है। यदि गंगा स्नान प्राप्त हो जाए तो चन्द्रग्रहण में करोड़ गुणा पुण्य कहा है।

ग्रहण आरम्भ के पूर्व स्नान करना चाहिए, ग्रहणकाल में जप, पाठ, हवन, करना चाहिए और ग्रहण समाप्त होने पर वस्त्रों सहित स्नान करना चाहिए व अन्न, तिल, वस्त्र, स्वर्ण, गौ आदि का दान करना चाहिए। ग्रहण समाप्ति के उपरान्त मोक्षस्नान करके ही सूतक समाप्त होता है। सूर्य व चन्द्रग्रहण में श्राद्ध अवश्य करना चाहिए, इसका अमोघ फल सब शास्त्रों में कहा है। ग्रहण में श्राद्ध सूखे अन्न, घी व दक्षिणा से संकल्पपूर्वक करना चाहिए। आश्विन कृष्णपक्ष पृष्ठ पर आमान्न श्राद्ध की संक्षिप्त विधि दी है जो ग्रहणश्राद्ध में उपयोगी है।

जिसकी जन्मराशि या जन्मनक्षत्र पर ग्रहण हो, या ४,८,१२ वीं राशि पर ग्रहण हो उसको ग्रहण बहुत अनिष्टकारक होता है, उसे निम्न प्रकार से शान्ति व दान करना चाहिए। चन्द्रग्रहण में चाँदी का चन्द्रबिंब व सोने का सर्पबिम्ब बनवाकर घी से पूर्ण किये ताम्बे या काँसे के पात्र में स्थापित कर तिल, वस्त्र, दक्षिणा आदि लेकर संकल्प करे **'ममजन्मराशि-जन्मनक्षत्रस्थित अमुकग्रहणसूचित सर्वानिष्टप्रशान्तिपूर्वकं एकादश स्थानस्थित-ग्रहणसूचित-शुभफलावाप्तये बिम्बदानं करिष्ये।'** फिर सूर्य-चन्द्र,राहु-केतु को प्रणाम कर पढ़े,

तमोमय महाभीम सोमसूर्यविमर्दन। हेमता प्रदानेन मम शांतिप्रदो भव ।।

विधुंतुद नमस्तुभ्यं सिंहिकानन्दनाच्युत। दानेमानेन नागस्य रक्ष मां वेधजायान्।।

फिर इस दानवाक्य से ब्राह्मण को उपर्युक्त दान प्रदान करे, **'इदं सौवर्णं राहुबिम्बंनागं सौवर्ण रविबिम्बं/ राजतं चन्द्रबिम्बं वा घृतपूर्णताम्र/कांस्यपात्रनि हितं यथाशक्ति तिलवस्त्रदक्षिणासहितं ग्रहणसूचितारिष्टविनाशार्थ शुभफलप्राप्त्यर्थं च तुभ्यमहं सम्प्रददे।'**

इस चन्द्रग्रहण में मेष, वृष, कन्या, मकर व अश्विनी नक्षत्र के जातकों को ग्रहण शान्ति करना चाहिए।

✻ उपनयन (यज्ञोपवीत, व्रतबन्ध) मुहूर्त्त २०८० ✻

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

✻ **उपनयन के नाम-** उपनयन को व्रतबन्ध, यज्ञोपवीत या जनेऊ संस्कार भी कहते हैं। इस संस्कार से ब्रह्मविद्या, वेदाध्ययन का अधिकार मिलता है।

✻ **उपनयन की आयु-** पंचम, षष्ठ, अष्टम, एकादश, द्वादश वर्ष में उपनयन कराना चाहिए।

✻ **उपनयन अयन-** उपनयन संस्कार केवल उत्तरायण में ही किया जाता है।

✻ **उपनयन मास-** माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ मास। (चैत्र मास में केवल ब्राह्मण बटुकों का उपनयन होता है।)

✻ **उपनयन के वार-** रवि, सोम, बुध, गुरू, शुक्र (शनि वर्जित)।

✻ **उपनयन तिथियाँ-** **शुक्लपक्ष-** २, ३, ५, १०, ११, १२, १३ **कृष्णपक्ष-** २, ३, ५

✻ **उपनयन नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती (कुल २२ नक्षत्र)।

✻ **वर्जित नक्षत्र-** भरणी, कृत्तिका, ज्येष्ठा, विशाखा, मघा (कुल ५ नक्षत्र)।

पुनर्वसु में विप्र बटुकों का उपनयन वर्जित है- *पुनर्वसौ कृतो विप्रः पुनः संस्कारमर्हति।(राजमार्तण्ड)*

✻ **उपनयन लग्न-** २, ३, ४, ५, ६, ७, ९, १२ ✻ **वर्जित लग्न-** १, ८, १०, ११

✻ **उपनयन काल-** पूर्वाह्न एवं मध्याह्न (अपराह्न वर्जित)

✻ **उपनयन में बाणदोष-** रोगबाण में उपनयन नहीं होता है (अन्य चार बाणों में होता है)। सूर्य के ८, १७, २६ अंश पर रोगबाण होता है।

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	नक्षत्र	यज्ञोपवीत मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	चन्द्र राशि
३१ मार्च	चैत्र शुक्ल १० शुक्रवार	पुष्य	वृष/मिथुन ०८:४१ - १२:५२ सिंह १५:१२ - १७:२८	कर्क
३ अप्रैल	चैत्र शुक्ल १३ सोमवार	पू.फा.	वृष/मिथुन ०८:३० - १२:४० सिंह १५:०० - १७:१६	सिंह
२३ अप्रैल	वैशाख शुक्ल ३ रविवार	रोहिणी	**अक्षय तृतीया स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त** वृष/मिथुन ७:११-११:२१, सिंह/कन्या १३:४१-१८:१३	वृष
३ मई	वैशाख शुक्ल १३ बुधवार	हस्त	वृष/मिथुन ०६:३२ - १०:४२ सिंह/कन्या १३:०२ - १७:३३	कन्या
१० मई	ज्येष्ठ कृष्ण ५ बुधवार	पूर्वाषाढ	वृष/मिथुन ०६:०४ - १०:१४ सिंह/कन्या १२:३५ - १५:१५ (पञ्चमी अंत)	धनु
२१ मई	ज्येष्ठ शुक्ल २ रविवार	मृगशीर्ष	मिथुन ७:१६ - ०९:३१ सिंह/कन्या ११:५१ - १६:२२	मिथुन
२२ मई	ज्येष्ठ शुक्ल ३ सोमवार	आर्द्रा	मिथुन ७:१२ - ०९:२७, सिंह/कन्या ११:४७ - १६:१८	मिथुन
२४ मई	ज्येष्ठ शुक्ल ५ बुधवार	पुनर्वसु	मिथुन ०७:०५ - ०९:१९ सिंह/कन्या ११:३९ - १६:१०	मिथुन
२९ मई	ज्येष्ठ शुक्ल १० सोमवार	उ.फा.	सिंह/कन्या ११:१९ - १५:५१	कन्या
३० मई	ज्येष्ठ शुक्ल १० मंगलवार	हस्त	**गङ्गा दशहरा स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त** मिथुन ६:४१ - ८:५५, सिंह ११:१५-१५:४७	कन्या
१ जून	ज्येष्ठ शुक्ल १२ गुरुवार	स्वाती	मिथुन ०६:३३ - ०८:४७ सिंह/कन्या ११:०८ - १५:३९	तुला
८ जून	आषाढ कृष्ण ५ गुरुवार	श्रवण	मिथुन - ०६:०६ - ०८:२० सिंह/कन्या - १०:४० - १५:१२	मकर
१९ जून	आषाढ शुक्ल २ सोमवार	आर्द्रा	सिंह/कन्या- ०९:५७ - १४:२८	मिथुन

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	नक्षत्र	यज्ञोपवीत मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	चन्द्र राशि
२० जून	आषाढ शुक्ल २ मंगलवार	पुनर्वसु	सिंह/कन्या- ०९:५३ - १४:२५	कर्क
२१ जून	आषाढ शुक्ल ३ बुधवार	पुष्य	सिंह/कन्या ०९:४९ - १४:२१	कर्क
२८ जून	आषाढ शुक्ल १० बुधवार	स्वाती	सिंह/कन्या ०९:२२ - १३:५३	तुला
३० जनवरी	माघ कृष्ण ५ मंगलवार	उ.फा.	कुम्भ/मीन - ०८:०९ - ११:०४ वृष/मिथुन १२:४० - १६:५०	कन्या
१४ फरवरी	माघ शुक्ल ५ बुधवार	रेवती	**वसन्त पञ्चमी स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त** कुम्भ/मीन ०७:०९-१०:०४, वृष/मिथुन ११:४०-१५:५०	मीन
१९ फरवरी	माघ शुक्ल १० सोमवार	मृगशीर्ष	कुम्भ/मीन - ०७:०६ - ०९:४५ वृष/मिथुन ११:२१ - १५:३०	मिथुन
२० फरवरी	माघ शुक्ल १२ मंगलवार	आर्द्रा/पुन	वृष/मिथुन १२:२०(भद्रान्त) - १५:२६	मिथुन
२१ फरवरी	माघ शुक्ल १२ बुधवार	पुनर्वसु	मीन - ०८:११ - ०९:३७ वृष/मिथुन - ११:२३ - १५:२२	कर्क
२२ फरवरी	माघ शुक्ल १३ गुरुवार	पुष्य	मीन - ०८:०७ - ०९:३३ वृष/मिथुन - ११:०९ - १३:५५ (चतुर्दशी पूर्व)	कर्क
२६ फरवरी	फाल्गुन कृष्ण २ सोमवार	उ.फा.	मीन - ०७:५१ - ०९:१७ वृष/मिथुन - १०:५३ - १४:४२ (शूल पूर्व)	कन्या
२९ फरवरी	फाल्गुन कृष्ण ५ गुरुवार	स्वाती	वृष/मिथुन - १०:४१ - १४:५१	तुला
१२ मार्च	फाल्गुन शुक्ल २ मंगलवार	रेवती	**फुलेरा दौज स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त** वृष/मिथुन ०९:५४ - १४:०३	मीन
२७ मार्च	चैत्र कृष्ण २ बुधवार	चित्रा	वृष/मिथुन - ०८:५५ - १३:०४	तुला

❊ विवाह मुहूर्त्त २०८० ❊

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

❊ **विवाह के मास–** चैत्र (मेषकासूर्य), वैशाख (वृषकासूर्य), ज्येष्ठ (वृष-मिथुनकासूर्य), आषाढ़ (मिथुनकासूर्य, शुक्लदशमीतक), कार्तिक (वृश्चिककासूर्य), मार्गशीर्ष (वृश्चिककासूर्य), पौष (मकरकासूर्य), माघ (मकरकासूर्य), फाल्गुन (कुम्भकासूर्य)। कार्तिक व पौष में प्रायः वृश्चिक और मकर का सूर्य नहीं मिलता है। ❊ **वर्जित मास–** श्रावण, भाद्रपद, आश्विन।

❊ **विवाह के वार–** रवि, सोम, बुध, गुरू, शुक्र।

❊ **विवाह नक्षत्र–** रोहिणी, मृगशिरा, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वाती, अनुराधा, मूल व रेवती।

❊ मृत्युबाण में विवाह वर्जित होता है। सूर्य के १, १०, १९, २८ गतांश पर मृत्युबाण होता है।

❊ **विवाह तिथियाँ–** २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३

❊ **पारस्कर गृह्यसूत्रोक्त–** अश्विनी, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा।

❊ **पारस्कर गृह्यसूत्रोक्त नक्षत्र चतुष्टयी** को मुहूर्तों में सम्मिलित किया गया है।

❊ **विवाह हेतु वर्जित काल :–** ❊ **मीन मलमास –** वर्षारम्भ से १४ अप्रैल २०२३ तक। ❊ **देवशयन काल–** २९ जून से २३ नवम्बर २०२३ तक ❊ **कर्क संक्रान्ति दोष–** १७ जुलाई २०२३ से।

❊ **शुक्र अस्त** बालत्व वृद्धत्व वर्जित काल – १ अगस्त से २० अगस्त २०२३ तक **गुरू अस्त** बालत्व वृद्धत्व वर्जित काल – २८ मार्च से २ मई २०२३ तक

❊ **धनु मलमास –** १६ दिसम्बर २०२३ से १५ जनवरी २०२४ ❊ **होलाष्टक –** १७ मार्च से २५ मार्च २०२४ तक ❊ **मीन मलमास–** १४ मार्च २०२४ से वर्षान्त तक

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	चन्द्र नक्षत्र (विवाह नक्षत्र)	सूर्य राशि	चन्द्र राशि	गुरु राशि	लतादि दशदोष रेखा दोष– ऽ, शुद्ध रेखा– ।	रेखा संख्या	विवाह लग्न समय	
								दिवा लग्न	रात्रि लग्न
१ मई	वैशाख शुक्ल ११ सोमवार	उ. फा.	मेष	कन्या	मेष	||||||ऽ|||	९	--	मकरः २४:२८-२६:१३, मीन २७:४६-२९:०४
३ मई	वैशाख शुक्ल १३ बुधवार	हस्त	मेष	कन्या	मेष	ऽऽ||||||||	८	वृष-मिथुन-कर्क ०६:३२-१३:०२	--
१० मई	ज्येष्ठ कृष्ण ५ बुधवार	उ.षा.	मेष	धनु/ मकर	मेष	|ऽ||ऽ||||ऽ	७	--	मीन २७:०२-२८:२४
११ मई	ज्येष्ठ कृष्ण ६ गुरुवार	उ.षा.	मेष	मकर	मेष	|ऽ||ऽ||||ऽ	७	वृष-मिथुन ०६:००-१०:१०	--
१६ मई	ज्येष्ठ कृष्ण १२ मंगलवार	रेवती	मेष	मीन	मेष	||||||||||	१०	मिथुन ०८:१५-०९:४९	--
२१ मई	ज्येष्ठ शुक्ल २ रविवार	रोहि.-मृग.	वृष	वृष/ मिथुन	मेष	ऽ|||||||||, ||||||||||	९, १०	मिथुन-कर्क-कन्या, गोधूलि	मीन २६:१९-२७:४१
२२ मई	ज्येष्ठ शुक्ल ३ सोमवार	मृग.	वृष	मिथुन	मेष	||||ऽ||||	९	वृष ०५:३९-०७:१२	--
२६ मई	ज्येष्ठ शुक्ल ७ शुक्रवार	मघा	वृष	सिंह	मेष	ऽ|||ऽऽऽ||	६	--	कुम्भ २४:२६-२५:५५ मेष-वृष २७:२१-३०:५३
२८ मई	ज्येष्ठ शुक्ल ८ रविवार	उ.फा.	वृष	सिंह	मेष	||||ऽऽ|||	८	--	मेष-वृष २७:१४-२८:४९

❊ विवाह मुहूर्त्त २०८० ❊

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	चन्द्र नक्षत्र (विवाह नक्षत्र)	सूर्य राशि	चन्द्र राशि	गुरु राशि	लतादि दशदोष रेखा दोष- ऽ, शुद्ध रेखा- ।	रेखा संख्या	विवाह लग्न समय	
								दिवा लग्न	रात्रि लग्न
२९ मई	ज्येष्ठ शुक्ल ९ सोमवार	उ.फा.	वृष	सिंह कन्या	मेष	|||||ऽऽ||| ||||||||||	८ १०	मिथुन ०६:४४-०८:५८	धनु-कुम्भ २०:२८-०१:४८ मीन २५:४८-२७:१४
३० मई	ज्येष्ठ शुक्ल १० मंगलवार	हस्त	वृष	कन्या	मेष	||||||||||	१०	मिथुन ०६:४०-०८:५४	गोधूलि
३ जून	ज्येष्ठ शुक्ल १४ शनिवार	अनुराधा	वृष	वृश्चिक	मेष	|||ऽ|||ऽ||	८	--	मीन २५:२३-२६:५०
५ जून	आषाढ़ कृष्ण २ सोमवार	मूल	वृष	धनु	मेष	|ऽ|||ऽ||||	८	मिथुन ०६:१७-०८:३२ कन्या १३:०८-१५:२३, गोधूलि	--
७ जून	आषाढ़ कृष्ण ४ बुधवार	उ.षा.	वृष	मकर	मेष	|||||||ऽऽऽ	७	वृष-कन्या ०५:३५-१५:१५ गोधूलि	धनु १९:५३-२१:५९
११ जून	आषाढ़ कृष्ण ८ रविवार	उ.भा.	वृष	मीन	मेष	|||||ऽ|ऽ||	८	गोधूलि	धनु १९:३८-२१:४७
१२ जून	आषाढ़ कृष्ण ९ सोमवार	उ.भा. रेवती	वृष	मीन	मेष	|||||ऽ|ऽ|| |||||||ऽ||	८ ९	मिथुन-कर्क ०५:५०-१०:२४ कन्या १२:४१-१४:५६, गोधूलि	-- धनु १९:३४-२१:३९
२३ जून	आषाढ़ शुक्ल ५ शुक्रवार	मघा	मिथुन	सिंह	मेष	||||||ऽऽ||	८	मिथुन-कर्क ०५:३६-०९:४१ कन्या११:५८-१४:१३ वृश्चिक १६:३२-१८:५१	मेष-वृष २५:३६-२९:०७
२५ जून	आषाढ़ शुक्ल ७ रविवार	उ.फा.	मिथुन	सिंह	मेष	|ऽ||||ऽऽ||	७	कन्या ११:५०-१४:०५ वृश्चिक १६:२४-१८:४३, गोधूलि	--
२७ नवम्बर	कार्तिक शुक्ल १५ सोमवार	रोहिणी	वृश्चिक	वृष	मेष	ऽ|||ऽऽ|ऽ||	६	--	कर्क २१:०२-२३:२२ कन्या-वृश्चिक २५:३९-३०:५९
२९ नवम्बर	मार्गशीर्ष कृष्ण २ बुधवार	मृग.	वृश्चिक	मिथुन	मेष	||||||||||	१०	वृश्चिक-धनु ०७:००-१०:२९	--
४ दिसम्बर	मार्गशीर्ष कृष्ण ७ सोमवार	मघा	वृश्चिक	सिंह	मेष	ऽऽ||||ऽ|||	७	--	कर्क २०:३५-२२:०२ वैधृति २२:०२ पूर्व

❋ विवाह मुहूर्त्त २०८० ❋

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	चन्द्र नक्षत्र (विवाह नक्षत्र)	सूर्य राशि	चन्द्र राशि	गुरु राशि	लतादि दशदोष रेखा दोष- ऽ, शुद्ध रेखा- ।	रेखा संख्या	विवाह लग्न समय	
								दिवा लग्न	रात्रि लग्न
६ दिसम्बर	मार्गशीर्ष कृष्ण ९ बुधवार	हस्त	वृश्चिक	कन्या	मेष	ऽ।।।।ऽ।ऽ।ऽ	६		वृश्चिक २९:३५-३१:०६
७ दिसम्बर	मार्गशीर्ष कृष्ण १० गुरुवार	हस्त	वृश्चिक	कन्या	मेष	ऽ।।।।ऽ।ऽ।ऽ	६	वृश्चिक-मकर ०५:३३-११:४२	तुला २७:१४-२९:३३
८ दिसम्बर	मार्गशीर्ष कृष्ण ११ शुक्रवार	हस्त	वृश्चिक	कन्या	मेष	ऽ।।।।।।ऽ।।	८	वृश्चिक ०५:२९- ७:२९ पर्यन्त	--
१५ दिसम्बर	मार्गशीर्ष शुक्ल ३ शुक्रवार	उ.षा.	वृश्चिक	मकर	मेष	।।।।।ऽ।।।।	९	मिथुन-कर्क १७:३७-२२:११	कन्या-वृश्चिक २४:२८-३१:२०
२१ जनवरी	पौष शुक्ल ११ रविवार	रोहिणी	मकर	वृष	मेष	ऽ।।।।।।।।ऽ	८	मकर-कुम्भ ०७:००-१०:१३ मेष ११:३९-१३:१५, गोधूलि	कन्या-वृश्चिक २२:०२-२८:५५
२२ जनवरी	पौष शुक्ल १२ सोमवार	मृग.	मकर	वृष	मेष	ऽ।।।।।।।।ऽ	८	--	वृश्चिक २६:३२-२८:५१
३१ जनवरी	माघ कृष्ण ५ बुधवार	हस्त	मकर	कन्या	मेष	।।।।।।।ऽ।।	९	मकर-कुम्भ ०७:१९-०९:३४ गोधूलि	तुला २३:३७-२५:५६
४ फरवरी	माघ कृष्ण ९ रविवार	अनुराधा	मकर	वृश्चिक	मेष	।।।ऽ।ऽ।ऽ।।	७	मेष-वृष १२:४०-१४:१६ गोधूलि	कन्या-तुला २१:०६-२५:४० धनु २७:५९-३०:०५
१२ फरवरी	माघ शुक्ल ३ सोमवार	उ.भा.	मकर	मीन	मेष	।।।।।ऽ।।।।	९	गोधूलि	कन्या २०:३५-२२:५० वृश्चिक-धनु २५:०८-२९:३३
१८ फरवरी	माघ शुक्ल ९ रविवार	मृग.	कुम्भ	धनु	मेष	।ऽ।।।।।ऽ।।	८	वृष-मिथुन ११:२५-१५:३४ गोधूलि	कन्या-तुला २०:११-२३:५९
३ मार्च	फाल्गुन कृष्ण ८ रविवार	अनुराधा	कुम्भ	वृश्चिक	मेष	।।।ऽ।।।ऽ।।	८	मेष-वृष ०८:५३-१२:२५	--
४ मार्च	फाल्गुन कृष्ण ९ सोमवार	मूल	कुम्भ	धनु	मेष	ऽ।।।।ऽ।ऽ।।	७	--	मकर-कुम्भ २८:१०-३१:२३

❊ विवाह मुहूर्त्त २०८० ❊

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	चन्द्र नक्षत्र (विवाह नक्षत्र)	सूर्य राशि	चन्द्र राशि	गुरु राशि	लतादि दशदोष रेखा दोष- ऽ, शुद्ध रेखा- ।	रेखा संख्या	विवाह लग्न समय	
								दिवा लग्न	रात्रि लग्न
६ मार्च	फाल्गुन कृष्ण ११ बुधवार	उ.षा.	कुम्भ	धनु/मकर	मेष	|||||ऽ|ऽ||	८		तुला- धनु २१:१९-०४:०२ कुम्भ ०५:४६-०७:१६
७ मार्च	फाल्गुन कृष्ण १२ गुरुवार	उ.षा.	कुम्भ	मकर	मेष	|||||ऽ|ऽ||	८	वृष १०:१३-१२:०९	मीन ०७:१२-०८:३४
❊ पारस्कर गृह्यसूत्रोक्त विवाह मुहूर्त्त २०८० ❊									
३ मई	वैशाख शुक्ल १३ बुधवार	चित्रा	मेष	कन्या	मेष	||||||ऽ|||	९	--	वृश्चिक-मकर १९:५२-२३:०५
११ मई	ज्येष्ठ कृष्ण ६ गुरुवार	श्रवण	मेष	मकर	मेष	ऽ|||ऽ||||	८	--	धनु २१:३९-२३:४५ कुम्भ-मेष २५:२९-२८:२०
१२ मई	ज्येष्ठ कृष्ण ७ शुक्रवार	श्रवण	मेष	मकर	मेष	ऽ|||ऽ||||	८	वृष-कर्क ०५:५६-१२:२६	--
१२ मई	ज्येष्ठ कृष्ण ७ शुक्रवार	धनिष्ठा	मेष	मकर/कुम्भ	मेष	|||||||ऽ||	९	गोधूलि	मीन-मेष २६:५४-२८:१६
७ जून	आषाढ़ कृष्ण ४ बुधवार	श्रवण	वृष	मकर	मेष	||||ऽऽ|ऽ||	७	--	मीन २५:१२-२६:३४
८ जून	आषाढ़ कृष्ण ५ गुरुवार	श्रवण	वृष	मकर	मेष	||||ऽ|ऽऽऽ|	६	कन्या १२:५७-१५:१२	--
२५ नवम्बर	कार्तिक शुक्ल १३ शनिवार	अश्विनी	वृश्चिक	मेष	मेष	ऽऽ||ऽऽ||||	६	धनु-मकर ०८:३९-१२:२९	--
१८ जनवरी	पौष शुक्ल ८ गुरुवार	अश्विनी	मकर	मेष	मेष	||ऽ|ऽ||ऽ||	७	गोधूलि	तुला २४:२९-२६:४८
१४ फरवरी	माघ शुक्ल ५ बुधवार	अश्विनी	कुम्भ	मेष	मेष	||||ऽ|||||	९	वृष ११:४०-१३:३६	--
७ मार्च	फाल्गुन कृष्ण १२ गुरुवार	श्रवण	कुम्भ	मेष	मेष	|||||||ऽ||	९	मिथुन १२:०९-१४:२३	--

❊ गृहारम्भ मुहूर्त्त (नींव) २०८० ❊

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

❊ **गृहारम्भ मास-** वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, पौष एवं फाल्गुन

❊ **गृहारम्भ नक्षत्र-** रोहिणी, मृगशीर्ष, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती (कुल १४ नक्षत्र)

❊ **गृहारम्भ तिथि-** १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियाँ

❊ **गृहारम्भ वार-** सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार

❊ **गृहारम्भ में सूर्यराशि-** जब सूर्य मेष, वृष, कर्क, सिंह, वृश्चिक, मकर या कुम्भ राशिस्थ हो

❊ **गृहारम्भ में वर्ज्य-** अग्निबाण(सूर्य के २,११,२०,२९ गतांश) पंचक और भूशयनदोष (परिहारपूर्वक)

❊ चैत्र, ज्येष्ठ, आषाढ़, भाद्रपद, कार्तिक और माघ में गृहारम्भ नहीं करना चाहिए।

❊ चैत्र में शोक, ज्येष्ठ में मृत्यु, आषाढ़ में पशुनाश, भाद्रपद में मृत्यु, आश्विन में कलह, कार्तिक में हानि और माघ में अग्निभय उत्पन्न होता है।

❊ **गृहारम्भ लग्न-** २, ३, ५, ६, ८, ९, ११, १२

❊ **लग्न शुद्धि-** लग्न से १, ४, ७, १०, ५, ९ में शुभग्रह, लग्न से ३, ६, ११ में पापग्रह

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	गृहारम्भ नक्षत्र	गृहारम्भ मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	नींव दिशा	चन्द्र राशि	सूर्य राशि
३ मई	वैशाख शुक्ल १३ बुधवार	हस्त	वृष/मिथुन ०६:३२ - १०:४२ कन्या १५:१८ - १७:३३	नैऋत्य	कन्या	मेष
११ मई	वैशाख शुक्ल ६ बुधवार	उ.षा.	वृष/मिथुन ०६:०० - १०:१० सिंह १२:३० - १२:५६ (१२:५६ बाद भद्रादोष है)	नैऋत्य	मकर	मेष
१५ मई	ज्येष्ठ कृष्ण ११ सोमवार	उ.भा.	कन्या १४:३१ - १६:४६	नैऋत्य	मीन	मेष
२२ मई	ज्येष्ठ शुक्ल ३ सोमवार	मृगशिरा	मिथुन ७:१२ - ०९:२७, कन्या १४:०३ - १६:१८	आग्नेय	वृष	वृष
२४ मई	ज्येष्ठ शुक्ल ५ बुधवार	पुष्य	मिथुन ०७:०५ - ०९:१९ कन्या १३:५५ - १६:१०	आग्नेय	कर्क	वृष
२५ मई	ज्येष्ठ शुक्ल ६ गुरुवार	पुष्य	मिथुन ०७:०१ - ०९:१५ कन्या १३:५१ - १६:०६	आग्नेय	कर्क	वृष
२९ मई	ज्येष्ठ शुक्ल १० सोमवार	उ.फा.	कन्या १३:३६ - १५:५१	आग्नेय	कन्या	वृष
३० मई	ज्येष्ठ शुक्ल १० मंगलवार	हस्त	**गङ्गा दशहरा स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त** मिथुन ६:४१ - ८:५५ कन्या १३:३२ - १५:४७	आग्नेय	कन्या	वृष
१ जून	ज्येष्ठ शुक्ल १३ गुरुवार	स्वाती	मिथुन ०६:३३ - ०८:४७ कन्या १३:२४ - १५:३९	आग्नेय	तुला	वृष

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	गृहारम्भ नक्षत्र	गृहारम्भ मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	नींव दिशा	चन्द्र राशि	सूर्य राशि
८ जून	आषाढ कृष्ण ५ गुरुवार	श्रवण	मिथुन - ०६:०६ - ०८:२० कन्या - १२:५७ - १५:१२	आग्नेय	मकर	वृष
१२ जून	आषाढ कृष्ण १० सोमवार	उ.भा.	कन्या - १३:१९ - १४:५६	आग्नेय	मीन	वृष
१५ जुलाई	श्रावण कृष्ण १३ शनिवार	मृगशिरा	कन्या १०:३२ - १२:४७ वृश्चिक १५:०६ - १७:२४	आग्नेय	वृष	मिथुन
१९ अगस्त	श्रावण शुक्ल ३ शनिवार	उ.फा.	कन्या ८:१४ - १०:२९ वृश्चिक १२:४७ - १५:०६	आग्नेय	कन्या	कर्क
२१ अगस्त	श्रावण शुक्ल ५ सोमवार	चित्रा	कन्या ८:०६ - १०:२१ वृश्चिक १२:४० - १४:५८	आग्नेय	कन्या	कर्क
२८ अगस्त	श्रावण शुक्ल १३ सोमवार	उ.भा.	कन्या ७:३८ - ९:५३ वृश्चिक १२:१२ - १४:३१	ईशान	मीन	सिंह
२ सितम्बर	भाद्रपद कृष्ण ३ शनिवार	स्वाति	कन्या ७:१८ - ९:३३ वृश्चिक/धनु ११:५२ - १६:१६	ईशान	तुला	सिंह
१६ सितम्बर	भाद्रपद शुक्ल २ शनिवार	हस्त	कन्या ७:४४ - ८:३८ वृश्चिक/धनु १०:५७ - १५:२१	ईशान	कन्या	सिंह
२३ अक्टूबर	आश्विन शुक्ल ९ सोमवार	धनिष्ठा	कुम्भ/मीन १४:४० - १७:३५	ईशान	मकर	तुला

✻ गृहारम्भ मुहूर्त्त (नींव) २०८० ✻

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	गृहारम्भ नक्षत्र	गृहारम्भ मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	नींव दिशा	चन्द्र राशि	सूर्य राशि
४ नवम्बर	कार्तिक कृष्ण ७ शनिवार	पुष्य	१२:३७ पूर्व भद्रादोष है कुम्भ/मीन १३:५२ - १६:४७	ईशान	कर्क	तुला
१० नवम्बर	कार्तिक कृष्ण १३ शुक्रवार	हस्त	धनु ९:३९ - ११:४४ कुम्भ/मीन १३:२९ - १६:२४	ईशान	कन्या	तुला
१८ नवम्बर	कार्तिक शुक्ल ५ शनिवार	उ.षा.	धनु ९:०७ - ११:१२ कुम्भ/मीन १२:५७ - १५:५२	वायव्य	मकर	वृश्चिक
२७ नवम्बर	कार्तिक शुक्ल १५ सोमवार	रोहिणी	कुम्भ/मीन १३:३४ - १३:५४	वायव्य	वृष	वृश्चिक
२९ नवम्बर	मार्गशीर्ष कृष्ण २ बुधवार	मृगशिरा	वृश्चिक/धनु ७:०० - १०:२९ कुम्भ/मीन १२:१३ - १४:१९ (१४:१९ मृगशिरा अंत)	वायव्य	वृष	वृश्चिक
२ दिसम्बर	मार्गशीर्ष कृष्ण ५ शनिवार	पुष्य	वृश्चिक/धनु ७:०२ - १०:१७ कुम्भ/मीन १२:०२ - १४:५७	वायव्य	वृष	वृश्चिक
७ दिसम्बर	मार्गशीर्ष कृष्ण १० गुरूवार	हस्त	वृश्चिक/धनु ७:०६ - ९:५७ कुम्भ/मीन ११:४२ - १३:४३ (१३:४३ बाद भद्रादोष है)	वायव्य	कन्या	वृश्चिक
८ दिसम्बर	मार्गशीर्ष कृष्ण ११ शुक्रवार	चित्रा	धनु ७:४८ - ९:५३ कुम्भ/मीन ११:३८ - १४:३३	वायव्य	कन्या	वृश्चिक
९ दिसम्बर	मार्गशीर्ष शुक्ल १२ शनिवार	स्वाती	धनु ७:४४ - ९:४९ कुम्भ/मीन ११:३४ - १४:२९	वायव्य	तुला	वृश्चिक
१५ दिसम्बर	मार्गशीर्ष शुक्ल ३ शुक्रवार	उ.षा.	कुम्भ/मीन ११:१० - १४:०५	वायव्य	मकर	वृश्चिक
१७ जनवरी २०२४	पौष शुक्ल ७ बुधवार	उ.भा.	कुम्भ/मीन ९:०० - ११:५५ वृष/मिथुन १३:३१-१७:४१	वायव्य	मीन	मकर

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	गृहारम्भ नक्षत्र	गृहारम्भ मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	नींव दिशा	चन्द्र राशि	सूर्य राशि
२२ जनवरी २०२४	पौष शुक्ल १२ सोमवार	मृगशिरा	कुम्भ/मीन - ८:४० - ११:३५ वृष/मिथुन-१३:११ - १७:२१	वायव्य	वृष	मकर
२५ जनवरी २०२४	पौष शुक्ल १५ गुरूवार	पुष्य	मीन १०:०२ - ११:२४ वृष/मिथुन १३:०० - १७:०९	वायव्य	कर्क	मकर
८ फरवरी २०२४	माघ कृष्ण १३ गुरूवार	उ.षा.	कुम्भ/मीन - ७:३३ - ९:२४	वायव्य	मकर	मकर
१४ फरवरी २०२४	माघ शुक्ल ५ बुधवार	रेवती	**वसन्त पञ्चमी स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त** कुम्भ/मीन ०७:०९-१०:०४ वृष/मिथुन ११:४०-१५:५०	नैऋत्य	मीन	कुम्भ
१९ फरवरी २०२४	माघ शुक्ल १० सोमवार	मृगशिरा	कुम्भ/मीन - ०७:०६ - ०९:४५ वृष/मिथुन ११:२१ - १५:३०	नैऋत्य	वृष	कुम्भ
२१ फरवरी २०२४	माघ शुक्ल १२ बुधवार	पुष्य	मीन - ०८:११ - ०९:३७ वृष/मिथुन - ११:२३ - १५:२२	नैऋत्य	कर्क	कुम्भ
२२ फरवरी २०२४	माघ शुक्ल १३ गुरूवार	पुष्य	मीन - ०८:०७ - ०९:३३ वृष/मिथुन - ११:०९ - १३:५५ (चतुर्दशी पूर्व)	नैऋत्य	कर्क	कुम्भ
२६ फरवरी २०२४	फाल्गुन कृष्ण २ सोमवार	उ.फा.	मीन - ०७:५१ - ०९:१७ वृष/मिथुन - १०:५३ - १४:४२ (शूल पूर्व)	नैऋत्य	कन्या	कुम्भ
२९ फरवरी २०२४	फाल्गुन कृष्ण ५ गुरूवार	स्वाती	वृष/मिथुन - १०:४१ - १४:५१	नैऋत्य	तुला	कुम्भ
६ मार्च २०२४	फाल्गुन कृष्ण११ बुधवार	उ.षा.	वृष/मिथुन - १०:४३-१४:२७	नैऋत्य	मकर	कुम्भ
१२ मार्च २०२४	फाल्गुन शुक्ल २ मंगलवार	रेवती	**फुलेरा दौज स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त** वृष/मिथुन ०९:५४ - १४:०३	नैऋत्य	मीन	कुम्भ

✲ नवीन व जीर्ण गृहप्रवेश मुहूर्त्त २०८० ✲

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

✲ **नूतन गृहप्रवेश मास-** माघ, फाल्गुन, वैशाख एवं ज्येष्ठ मास (सौम्यायन) का गृहप्रवेश सर्वोत्तम होता है- *अथ प्रवेशो नवसद्मनश्च सौम्यायने जीवसिते बलाढ्ये (वसिष्ठसंहिता)। अथ सौम्यायने कार्यं नववेश्मप्रवेशनम् (नारदसंहिता)। माघफाल्गुनवैशाखज्येष्ठ मासेषु शोभनः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्याकार्त्तिक- मासयोः (नारदसंहिता) (सौम्य = मार्गशीर्ष)।*

✲ **जीर्ण गृहप्रवेश मास-** श्रावण, कार्त्तिक एवं मार्गशीर्ष- *मार्गोर्जयोः श्रावणिकेऽपि सत्स्यात्।*

✲ **नूतन गृहप्रवेश नक्षत्र-**रोहिणी, मृगशीर्ष, तीनों उत्तरा, चित्रा, अनुराधा, रेवती।(कुल८)

✲ **जीर्ण गृहप्रवेश नक्षत्र -** शतभिषा, पुष्य, स्वाती, धनिष्ठा- *अम्बुपेज्यानिलवासवेषु।(मु.चि.प्रक.१३,श्लो.२)*

✲ **गृहप्रवेश वार -** सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार और शनिवार

✲ **गृहप्रवेश में वर्जित मास -** चैत्र, आषाढ़, भाद्रपद, आश्विन, पौष मासों में गृहप्रवेश सर्वथा वर्जित है। गृहप्रवेश में चान्द्रमास लिया जाता है, सौरमास नहीं। *चैत्रेऽर्थहानिः । परेषु नूनं हानिप्रदं पुत्रभयप्रदं च। (वसिष्ठसंहिता)*

✲ **गृहप्रवेश तिथि-** १, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३ तिथियाँ

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	नूतन प्रवेश नक्षत्र	जीर्ण प्रवेश नक्षत्र	गृहप्रवेश मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	चन्द्र राशि
२३ अप्रैल	वैशाख शुक्ल ३ रविवार	रोहिणी		**अक्षय तृतीया स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त** वृष/मिथुन ७:११-११:२१ सिंह/कन्या १३:४१-१८:१३	वृष
२४ अप्रैल	वैशाख शुक्ल ४ सोमवार	मृगशिरा		सिंह/कन्या १३:३७ - १८:०९ (पंचमी में)	वृष
१५ मई	ज्येष्ठ कृष्ण ११ सोमवार	उ.भा.		सिंह/कन्या १२:१४ - १६:४६	मीन
२२ मई	ज्येष्ठ शुक्ल ३ सोमवार	मृगशिरा		मिथुन ७:१२ - ०९:२७, सिंह/कन्या ११:४७ - १६:१८	वृष
२४ मई	ज्येष्ठ शुक्ल ५ बुधवार		पुष्य	मिथुन ०७:०५ - ०९:१९ सिंह/कन्या ११:३९ - १६:१०	कर्क
२५ मई	ज्येष्ठ शुक्ल ६ गुरुवार		पुष्य	मिथुन ०७:०१ - ०९:१५ सिंह/कन्या ११:३५ - १६:०६	कर्क
२९ मई	ज्येष्ठ शुक्ल १० सोमवार	उ.फा.		सिंह/कन्या ११:१९ - १५:५१	कन्या
३० मई	ज्येष्ठ शुक्ल १० मंगलवार	हस्त		**गङ्गा दशहरा स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त** मिथुन ६:४१ - ८:५५ सिंह/कन्या ११:१५ - १५:४७	कन्या
१ जून	ज्येष्ठ शुक्ल १३ गुरुवार	स्वाती		मिथुन ०६:३३ - ०८:४७ सिंह/कन्या ११:०८ - १५:३९	तुला
१२ जून	आषाढ कृष्ण १० सोमवार	उ.भा.		सिंह/कन्या - १०:२४ - १४:५६	मीन
२१ जून	आषाढ शुक्ल ३ बुधवार		पुष्य	सिंह/कन्या ९:४९ - १२:५९ (चतुर्थी १२:५९ पूर्व)	कर्क
१ जुलाई	आषाढ शुक्ल १३ शनिवार	अनुराधा		सिंह/कन्या ९:१० - १३:०६ (१३:०६ अनुराधा अंत)	वृश्चिक

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	नूतन प्रवेश नक्षत्र	जीर्ण प्रवेश नक्षत्र	गृहप्रवेश मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	चन्द्र राशि
१४ जुलाई	श्रावण कृष्ण १२ शुक्रवार		रोहिणी	सिंह/कन्या ८:१९ - १२:५१ वृश्चिक १५:०९ - १७:२८	वृष
१५ जुलाई	श्रावण कृष्ण १३ शनिवार		मृगशिरा	सिंह/कन्या ८:१५ - १२:४७ वृश्चिक १५:०६ - १७:२४	वृष
१९ अगस्त	श्रावण शुक्ल ३ शनिवार		उ.फा.	सिंह/कन्या ६:०२ - १०:२९ वृश्चिक १२:४७ - १५:०६	कन्या
२१ अगस्त	श्रावण शुक्ल ५ सोमवार		चित्रा	सिंह/कन्या ६:०२ - १०:२१ वृश्चिक १२:४० - १४:५८	कन्या
२८ अगस्त	श्रावण शुक्ल १३ सोमवार		उ.भा.	कन्या ७:३८ - ९:५३ वृश्चिक १२:१२ - १४:३१	मीन
२५ अक्टूबर	आश्विन शुक्ल ११ बुधवार		शतभिषा	वृश्चिक/ धनु ९:५५ - १२:०१ (भद्रा बाद शतभिषा में)	कुम्भ
४ नवम्बर	कार्तिक कृष्ण ७ शनिवार		पुष्य	१२:३७ पूर्व भद्रादोष है कुम्भ/मीन १३:५२ - १६:४७	कर्क
११ नवम्बर	कार्तिक कृष्ण १३ शनिवार		चित्रा	वृश्चिक/ धनु ७:१६ - ११:४०	कन्या
२४ नवम्बर	कार्तिक शुक्ल १२ शुक्रवार		रेवती	वृश्चिक/ धनु ६:२५ - ९:३१ (व्यतीपात पूर्व)	मीन
१० नवम्बर	कार्तिक कृष्ण १३ शुक्रवार		हस्त	धनु ९:३९ - ११:४४ कुम्भ/मीन १३:२९ - १६:२४	कन्या
१८ नवम्बर	कार्तिक शुक्ल ५ शनिवार		उ.षा.	धनु ९:०७ - ११:१२ कुम्भ/मीन १२:५७ - १५:५२	मकर
२७ नवम्बर	कार्तिक शुक्ल १५ सोमवार		रोहिणी	कुम्भ/मीन १३:३४ - १३:५४	वृष

✼ नवीन व जीर्ण गृहप्रवेश मुहूर्त्त २०८० ✼

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	नूतन प्रवेश नक्षत्र	जीर्ण प्रवेश नक्षत्र	गृहप्रवेश मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	चन्द्र राशि
२९ नवम्बर	मार्गशीर्ष कृष्ण २ बुधवार		मृगशिरा	वृश्चिक/धनु ७:०० - १०:२९ कुम्भ/मीन १२:१३ - १४:१९ (१४:१९ मृगशिरा अंत)	वृष
२ दिसम्बर	मार्गशीर्ष कृष्ण ५ शनिवार		पुष्य	वृश्चिक/धनु ७:०२ - १०:१७ कुम्भ/मीन १२:०२ - १४:५७	वृष
८ दिसम्बर	मार्गशीर्ष कृष्ण ११ शुक्रवार		चित्रा	धनु ७:४८ - ९:५३ कुम्भ/मीन ११:३८ - १४:३३	कन्या
९ दिसम्बर	मार्गशीर्ष शुक्ल १२ शनिवार		स्वाती	धनु ७:४४ - ९:४९ कुम्भ/मीन ११:३४ - १४:२९	तुला
१५ दिसम्बर	मार्गशीर्ष शुक्ल ३ शुक्रवार		उ.षा.	कुम्भ/मीन ११:१० - १४:०५	मकर
८ फरवरी २०२४	माघ कृष्ण १३ गुरुवार	उ.षा.		कुम्भ/मीन - ७:३३ - ९:२४	मकर
१४ फरवरी	माघ शुक्ल ५ बुधवार	रेवती		**वसन्त पञ्चमी स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त** कुम्भ/मीन ०७:०९-१०:०४ वृष/मिथुन ११:४०-१५:५०	मीन
१९ फरवरी	माघ शुक्ल १० सोमवार	मृगशिरा		कुम्भ/मीन - ०७:०६ - ०९:४५ वृष/मिथुन ११:२१ - १५:३०	वृष
२१ फरवरी	माघ शुक्ल १२ बुधवार		पुष्य	मीन - ०८:११ - ०९:३७ वृष/मिथुन - ११:२३ - १५:२२	कर्क
२२ फरवरी	माघ शुक्ल १३ गुरुवार		पुष्य	मीन - ०८:०७ - ०९:३३ वृष/मिथुन - ११:०९ - १३:५५ (चतुर्दशी पूर्व)	कर्क
२६ फरवरी	फाल्गुन कृष्ण २ सोमवार	उ.फा.		मीन - ०७:५१ - ०९:१७ वृष/मिथुन - १०:५३ - १४:४२ (शूल पूर्व)	कन्या
२९ फरवरी	फाल्गुन कृष्ण ५ गुरुवार		स्वाती	वृष/मिथुन - १०:४१ - १४:५१ सिंह १७:११ - १८:२३	तुला
६ मार्च	फाल्गुन कृष्ण ११ बुधवार	उ.षा.		वृष/मिथुन - १०:४३-१४:२७ सिंह १६:४७ - १८:२७	मकर

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	नूतन प्रवेश नक्षत्र	जीर्ण प्रवेश नक्षत्र	गृहप्रवेश मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	चन्द्र राशि
११ मार्च	फाल्गुन शुक्ल १ सोमवार	उ.भा.		मिथुन ०३:०१ - १४:०७ सिंह/कन्या १६:०८ - १८:२४	मीन
१२ मार्च	फाल्गुन शुक्ल २ मंगलवार	रेवती		**फुलेरा दौज स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त** वृष/मिथुन ०९:५४ - १४:०३	मीन
१६ मार्च	फाल्गुन शुक्ल ७ शनिवार	रोहिणी		वृष/मिथुन ०९:३८ - १३:४८ सिंह १६:०८ - १८:२४	वृष

✼ मुहूर्त्त पारिजातोक्त गृहप्रवेश मुहूर्त्त –
मुहूर्त्त पारिजात ग्रन्थ में ५ नक्षत्रों- अश्विनी, पुनर्वसु, हस्त, मूल व श्रवण को भी गृहप्रवेश में ग्राह्य कहा है, कई पंचांगों में इनके आधार पर मुहूर्त्त दिए जा रहे हैं, अधिक आवश्यकता की स्थिति में स्वमतानुसार इन्हें उपयोग में लिया जा सकता है।

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	नूतन प्रवेश नक्षत्र	जीर्ण प्रवेश नक्षत्र	गृहप्रवेश मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	चन्द्र राशि
२६ अप्रैल	वैशाख शुक्ल ६ बुधवार	पुनर्वसु		सिंह/कन्या १३:२९ - १८:०९	कर्क
३ मई	वैशाख शुक्ल १३ बुधवार	हस्त		वृष/मिथुन ०६:३२ - १०:४२ सिंह/कन्या १३:०२ - १७:३३	कन्या
१२ मई	ज्येष्ठ कृष्ण ७ शुक्रवार	श्रवण		मिथुन ०७:५२ - १०:०३ (अष्ठमी पूर्व)	मकर
१७ मई	ज्येष्ठ कृष्ण १३ बुधवार	अश्विनी		मिथुन ०७:३२ - ९:४६ सिंह/कन्या १२:०७ - १६:३८	मेष
८ जून	आषाढ कृष्ण ५ गुरुवार	श्रवण		मिथुन - ०६:०६ - ०८:२० सिंह/कन्या - १०:४० - १५:१२	मकर
२६ अगस्त	श्रावण शुक्ल १० शनिवार	मूल		कन्या ७:४६ - १०:०१ वृश्चिक १२:२० - १६:४४	धनु
७ दिसम्बर	मार्गशीर्ष कृष्ण १० गुरुवार	हस्त		वृश्चिक/धनु ७:०६ - ९:५७ कुम्भ/मीन ११:४२ - १३:४३ (१३:४३ बाद भद्रादोष है)	कन्या
८ मार्च २०२४	फाल्गुन कृष्ण १३ शुक्रवार	श्रवण		मीन - ७:०८ - ८:२७ (धनिष्ठा पूर्व)	मकर

✲ मुण्डन मुहूर्त्त २०८० ✲

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

✲ **मुण्डन के नाम-** मुण्डन को चौल, चूड़ा या वपन कहते हैं।

✲ **मुण्डन काल-** एक वर्ष के भीतर, तीसरे वर्ष या विषम वर्ष में किया जाता है।

✲ **मुण्डन अयन-** मुण्डन उत्तरायण में किया जाता है-
चौलोपवीतं नैवयाम्यायने स्यात्। *मुहूर्त्तचिन्तामणि,* ५.२६

✲ **मुण्डन मास-** माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ मास में हरिशयनपूर्व

✲ **मुण्डनमें वर्जितमास-** चैत्र में मुण्डन वर्जित है- *चैत्रे चौलं न कारयेत्।*

✲ **मुण्डन पक्ष-** कृष्णपक्ष में पंचमी तिथि पर्यन्त एवं सम्पूर्ण शुक्लपक्ष में।

✲ **मुण्डन के वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्र - *ज्ञेन्दुशुक्रेज्यकानाम्।*

✲ **मुण्डन नक्षत्र-** अश्विनी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, ज्येष्ठा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती (१२ नक्षत्र)।

✲ **वर्जित नक्षत्र-** रोहिणी, तीनों उत्तरा एवं अनुराधा (५ नक्षत्र)। इसके अतिरिक्त भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, तीनों पूर्वा, विशाखा, मूल भी वर्जित हैं।

✲ **मुण्डन लग्न-** २, ३, ४, ५, ६, ७, ९, १२ ✲ **वर्जित लग्न-** १, ८, १०, ११

✲ **मुण्डन तिथियाँ-** २,३,५,७,१०,११,१३ (कुल ७)

✲ **वर्जित तिथियाँ-** १, ४,६, ८, ९,१२, १४, १५, ३०

✲ **मुण्डन समय-** पूर्वाह्न एवं मध्याह्न

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	नक्षत्र	मुण्डन मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	चन्द्र राशि
२३ अप्रैल	वैशाख शुक्ल ३ रविवार	रोहिणी	**अक्षय तृतीया स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त** वृष-कन्या ७:११-१८:१३	वृष
३ मई	वैशाख शुक्ल १३ बुधवार	हस्त	वृष-सिंह ०६:३२ - १७:३३	कन्या
८ मई	ज्येष्ठ कृष्ण ५ बुधवार	ज्येष्ठा	वृष ०६:१२ - ०८:०८ (भद्रारम्भ)	वृश्चिक
१२ मई	ज्येष्ठ शुक्ल २ रविवार	मृगशीर्ष	मिथुन-कर्क ७:४२ - १०:२९ (सप्तमी अंत)	मिथुन
१७ मई	ज्येष्ठ कृष्ण १३ सोमवार	रेवती	मिथुन-कन्या ७:३२ - १६:३८	मीन
२२ मई	ज्येष्ठ शुक्ल ३ सोमवार	मृगशीर्ष	मिथुन-कर्क ७:१२ - १०:००	मिथुन
२४ मई	ज्येष्ठ शुक्ल ५ सोमवार	पुनर्वसु	मिथुन-कन्या ०७:०५ - १६:१०	कर्क
२९ मई	ज्येष्ठ शुक्ल १० सोमवार	उ.फा.	कर्क-तुला ०८:५९ - १८:१०	कन्या
३० मई	ज्येष्ठ शुक्ल १० मंगलवार	हस्त	**गङ्गा दशहरा स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त** मिथुन-तुला ०६:४१ - १८:०६	कन्या
१ जून	ज्येष्ठ शुक्ल १२ गुरुवार	स्वाती	मिथुन-कन्या ०६:३३ - १५:३९	तुला
२ जून	आषाढ कृष्ण ५ गुरुवार	श्रवण	मिथुन-कर्क ०६:२९ - १०:५४ (चतुर्दशी पूर्व)	मकर
८ जून	आषाढ कृष्ण ५ गुरुवार	श्रवण	मिथुन-तुला ०६:०६ - १७:३०	मकर
१४ जून	आषाढ कृष्ण ११ गुरुवार	अश्विनी	मिथुन-सिंह ०५:४२ - १०:०७	मेष
२१ जून	आषाढ शुक्ल ३ बुधवार	पुष्य	कर्क-कन्या ०७:२९ - १२:५९ (चतुर्थी पूर्व)	कर्क

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	नक्षत्र	मुण्डन मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	चन्द्र राशि
२८ जून	आषाढ शुक्ल १० बुधवार	स्वाती	कर्क-तुला ०७:०२ - १६:१२	तुला
२९ नवम्बर	मार्गशीर्ष कृष्ण २ बुधवार	मृगशीर्ष	धनु ०८:२३-१०:२९ मीन १३:४३-१४:१९ (मृगशीर्ष अंत)	मिथुन
७ दिसम्बर	मार्गशीर्ष कृष्ण १० गुरुवार	हस्त	धनु ०७:५२-०९:५७ मीन १३:११-१३:४३ (भद्रारम्भ)	कन्या
८ दिसम्बर	मार्गशीर्ष कृष्ण ११ शुक्रवार	हस्त	धनु ०७:४८-०९:५३ मीन १३:०७-१४:३३	कन्या
३१ जनवरी	माघ कृष्ण ५ बुधवार	हस्त	मीन ०९:३४ - ११:०४ वृष/मिथुन १२:४० - १६:५०	कन्या
२ फरवरी	माघ कृष्ण ७ शुक्रवार	स्वाती	मीन ०९:२६ - १०:५२	तुला
५ फरवरी	माघ कृष्ण १० सोमवार	ज्येष्ठा	वृष-कर्क १२:४०(भद्रान्त)- १८:०३	वृश्चिक
१४ फरवरी	माघ शुक्ल ५ बुधवार	रेवती	**वसन्त पञ्चमी स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त** मीन ०८:३९-१०:०४, वृष-कर्क ११:४०-१८:१०	मीन
१९ फरवरी	माघ शुक्ल १० सोमवार	मृगशीर्ष	मीन - ०८:१९ - ०९:४५ वृष/मिथुन ११:२१ - १५:३०	मिथुन
२१ फरवरी	माघ शुक्ल १२ बुधवार	पुनर्वसु	मीन ०८:११ - ०९:३७ वृष-कर्क ११:२३ - १७:४३	कर्क
२२ फरवरी	माघ शुक्ल १३ गुरुवार	पुष्य	मीन ०८:०७ - ०९:३३ वृष/मिथुन ११:०९ - १३:५५ (चतुर्दशी पूर्व)	कर्क
२९ फरवरी	फाल्गुन कृष्ण ५ गुरुवार	स्वाती	वृष-सिंह १०:४१ - १८:२३	तुला
८ मार्च	फाल्गुन कृष्ण १३ शुक्रवार	श्रवण	वृष-सिंह १०:१० - १८:२८	मकर
११ मार्च	फाल्गुन शुक्ल २ सोमवार	उ.भा.	**फुलेरा दौज स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त** मिथुन-सिंह १३:०१ (द्वितीया आरम्भ) - १८:३०	मीन

२०२४

※ कर्णवेध संस्कार मुहूर्त्त २०८० ※

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

※ **कर्णवेध नक्षत्र –** अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती। ※ **तिथि –** २, ३, ५, ६, ७, १०, १२, १३ ※ **लग्न –** २, ३, ४, ६, ७, ९, १२

※ **समय-** जन्मदिन से १२वें या १६वें दिन, जन्म से ६, ७ या ८वें माह में अथवा जन्म से तीसरे या पांचवे वर्ष में कर्णवेध संस्कार किया जाता है। ※ **कर्णवेध वार –** सोम, बुध, गुरु, शुक्र

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	नक्षत्र	कर्णवेध मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	चन्द्र राशि
२३ अप्रैल	वैशाख शुक्ल ३ रविवार	रोहिणी	**अक्षय तृतीया स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त** वृष-कन्या ७:११-१८:१३	वृष
३ मई	वैशाख शुक्ल १३ बुधवार	हस्त	वृष-कर्क ०६:३२ - १३:०२ कन्या १५:१८ - १७:३३	कन्या
१२ मई	ज्येष्ठ शुक्ल २ रविवार	मृगशीर्ष	मिथुन-कर्क ७:४२ - १०:२९ (सप्तमी अंत)	मिथुन
१७ मई	ज्येष्ठ कृष्ण १३ सोमवार	रेवती	मिथुन-कर्क ०७:३२ - १२:०७ कन्या १४:२३ - १६:३८	मीन
२२ मई	ज्येष्ठ शुक्ल ३ सोमवार	मृगशीर्ष	मिथुन-कर्क ०७:१२ - १०:००	मिथुन
२४ मई	ज्येष्ठ शुक्ल ५ बुधवार	पुनर्वसु	मिथुन-कर्क ०७:०५ - ११:३९ कन्या १३:५५ - १६:१०	कर्क
२५ मई	ज्येष्ठ शुक्ल ६ गुरुवार	पुष्य	मिथुन ०७:०१ - ०९:१५, कन्या १३:५१ - १६:०६	कर्क
३० मई	ज्येष्ठ शुक्ल १० मंगलवार	हस्त	**गङ्गा दशहरा स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त** मिथुन-तुला ०६:४१ - १८:०६	कन्या
८ जून	आषाढ कृष्ण ५ गुरुवार	श्रवण	मिथुन-कर्क ०६:०६ - १०:४० कन्या-तुला १२:५७ - १७:३०	मकर
१४ जून	आषाढ कृष्ण ११ गुरुवार	अश्विनी	मिथुन-कर्क ०५:४२ - १०:०७	मेष
२१ जून	आषाढ शुक्ल ३ बुधवार	पुष्य	कर्क-कन्या ०७:२९ - १२:५९ (चतुर्थी पूर्व)	कर्क
२८ जून	आषाढ शुक्ल १० बुधवार	चित्रा	कन्या ११:३८ - १२:२७(स्वाती पूर्व)	तुला

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	नक्षत्र	कर्णवेध मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	चन्द्र राशि
२९ नवम्बर	मार्गशीर्ष कृष्ण २ बुधवार	मृगशीर्ष	धनु ०८:२३-१०:२९ मीन १३:४३-१४:१९ (मृगशीर्ष अंत)	मिथुन
७ दिसम्ब	मार्गशीर्ष कृष्ण १० गुरुवार	हस्त	धनु ०७:५२-०९:५७ मीन १३:११-१३:४३ (भद्रारम्भ)	कन्या
८ दिसम्ब	मार्गशीर्ष कृष्ण ११ शुक्रवार	हस्त	धनु ०७:४८-०९:५३ मीन १३:०७-१४:३३	कन्या
२०२४				
३१ जनवरी	माघ कृष्ण ५ बुधवार	हस्त	मीन ०९:३४ - ११:०४ वृष/मिथुन १२:४० - १६:५०	कन्या
१ फरवरी	माघ कृष्ण ६ गुरुवार	चित्रा	मीन ०९:३० - ०९:५८	तुला
१४ फरवरी	माघ शुक्ल ५ बुधवार	रेवती	**वसन्त पञ्चमी स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त** मीन ०८:३९-१०:०४, वृष-कर्क ११:४०-१८:१०	मीन
१९ फरवरी	माघ शुक्ल १० सोमवार	मृगशीर्ष	मीन - ०८:१९ - ०९:४५ वृष/मिथुन ११:२१ - १५:३०	मिथुन
२१ फरवरी	माघ शुक्ल १२ बुधवार	पुनर्वसु	मीन ०८:११ - ०९:३७ वृष-कर्क ११:२३ - १७:४३	कर्क
२२ फरवरी	माघ शुक्ल १३ गुरुवार	पुष्य	मीन ०८:०७ - ०९:३३ वृष/मिथुन ११:०९ - १३:५५ (चतुर्दशी पूर्व)	कर्क
२९ फरवरी	फाल्गुन कृष्ण ५ गुरुवार	चित्रा	वृष-कर्क १०:४१ - १७:११	तुला
८ मार्च	फाल्गुन कृष्ण १३ शुक्रवार	श्रवण	मीन ०७:०८ - ०८:३६ वृष-कर्क १०:१० - १६:३९	मकर

❊ देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त २०८० ❊

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

❊ देव प्रतिष्ठा नक्षत्र- अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती (कुल १६ नक्षत्र)।
जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा सौम्यायने जीवशशाङ्कशुक्रे। दृश्ये मृदुक्षिप्रचरध्रुवे स्यात् पक्षेसिते स्वर्क्षतिथिक्षणे वा।। मु.चि.,२.६१

❊ देव प्रतिष्ठा मास- चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, माघ, फाल्गुन (हरिशयनपूर्व) बृहस्पति के मतानुसार पौष और माघ सभी देवों की प्रतिष्ठा हेतु ग्राह्य हैं- *सर्वेषां पौषमाघौ द्वौ विबुधस्थापने शुभौ।*
आषाढ़ यजमान विनाशक, श्रावण राज्य-राष्ट्रनाशक, भाद्रपद पृथ्वीनाशक, आश्विन राज्यनाशक, कार्तिक एवं मार्गशीर्ष शत्रुवर्धक (बृहदैवज्ञरंजन)।

❊ देव प्रतिष्ठा तिथि- २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १५ *द्वितीयसादिद्वयोः पञ्चम्यादितः तिसृषु क्रमात् । दशम्यादिचतसृषु पौर्णमास्यां विशेषतः।। - नारदसंहिता*
मुहूर्त्त चिन्तामणि के अनुसार प्रतिमा प्रतिष्ठा रिक्ता तिथि (४, ९, १४) को छोड़कर सभी तिथियाँ ग्राह्य हैं- रिक्तारवर्जे अर्थात् १, ८ तिथि भी ग्राह्य है।

❊ उग्रदेव प्रतिष्ठा- काली, नृसिंह, वराह, वामन, महिषवाहिनी, महाविद्या, श्मशानदेवता, भैरव आदि की प्रतिष्ठा दक्षिणायन में भी होती है (वैखानससंहिता)।

❊ विशेषदेवता प्रतिष्ठा- **विष्णु-** पुष्य, श्रवण, अभिजित्, कन्या। **सूर्य-** हस्त नक्षत्र, सिंहलग्न। **चन्द्रादि अष्टग्रह-** पुष्य नक्षत्र। **ब्रह्मा-** पुष्य, श्रवण, अभिजित्, कुम्भ।
शिव-पार्वती- पुष्य, श्रवण, अभिजित्, मिथुन। **दुर्गा-** मूल नक्षत्र। **कुबेर-कार्तिकेय-** अनुराधा नक्षत्र।

❊ देव प्रतिष्ठा वार- सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, रवि। **❊ मंगलवार** को निषेध है। **❊ देव प्रतिष्ठा लग्न-** २, ३, ५, ६, ८, ११, १२

०३ मई — वैशाख शुक्ल १३ बुधवार हस्त में।
समय- लग्न: वृष-मिथुन ०६:३२-१०:४२, सिंह-कन्या १३:०२-१७:३३

११ मई — ज्येष्ठ कृष्ण ०६ गुरुवार उ.षा. में।
समय- लग्न: मिथुन ०७:४६-१०:१०

१२ मई — ज्येष्ठ कृष्ण ०७ शुक्रवार श्रवण में।
समय- लग्न: मिथुन ०७:५२-१०:०६, सिंह-कन्या १२:२६-१६:५८

२१ मई — ज्येष्ठ शुक्ल ०२ रविवार, मृगशिरा में।
समय- लग्न: वृष-मिथुन ०५:३९-०९:३१, सिंह-कन्या ११:५१-१६:२२

२२ मई — ज्येष्ठ शुक्ल ०३ सोमवार, मृगशिरा में।
समय- लग्न: वृष-मिथुन ०५:३९-०९:२७

२४ मई — ज्येष्ठ शुक्ल ०५ बुधवार, पुनर्वसु में।
समय- लग्न: वृष-मिथुन ०५:३८-०९:१९, सिंह-कन्या ११:३९-१६:१०

२५ मई — ज्येष्ठ शुक्ल ०६ गुरुवार, पुष्य में।
समय- लग्न: मिथुन ०७:०१-०९:१५, सिंह-कन्या ११:३५-१६:०६

२९ मई — ज्येष्ठ शुक्ल १० सोमवार, उ.फा. में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या ११:२३-१५:५५

०१ जून — ज्येष्ठ शुक्ल १२ गुरुवार, स्वाती में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या ११:०८-१५:३९

०८ जून — आषाढ़ कृष्ण ५ गुरुवार, श्रवण में।
समय- लग्न: वृष-मिथुन ०५:३४-०८:२०, सिंह-कन्या १०:४०-१५:१२

१० जून — आषाढ़ कृष्ण ०७ शनिवार, शतभिषा में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या १०:३२-१५:०४, वृश्चिक १७:२३-१९:१६

१२ जून — आषाढ़ कृष्ण १० सोमवार, उ.भा. में।
समय- लग्न: कन्या १३:१९-१४:५६, वृश्चिक १७:१५-१९:१७

२१ जून — आषाढ़ शुक्ल ३ बुधवार, पुष्य में।
समय- लग्न: मिथुन ०५:३५-०७:२९, सिंह-कन्या ०९:४९-१२:५९

२६ जून — आषाढ़ शुक्ल ८ बुधवार, पुष्य में।
समय- लग्न: मिथुन ०५:३५-०७:२९, सिंह-कन्या ०९:४९-१२:५९

२८ जून — आषाढ़ शुक्ल १० बुधवार चित्रा में।
समय- लग्न: मिथुन ०५:३७-०७:०२, सिंह-कन्या ०९:२२-१३:५३

३१ जनवरी — माघ कृष्ण ०५ बुधवार हस्त में।
समय- लग्न: कुम्भ-मीन ०८:०५-११:००, वृष-मिथुन १२:३६-१६:४६

०१ फरवरी — माघ कृष्ण ०६ गुरुवार चित्रा में।
समय- लग्न: मीन ०९:३०-१०:१६

०२ फरवरी — माघ कृष्ण ०७ शुक्रवार स्वाती में।
समय- लग्न: वृष-मिथुन १२:२८-१६:३८

०४ फरवरी — माघ कृष्ण १० रविवार अनुराधा में।
समय- लग्न: वृष-मिथुन १२:४९-१६:३०

११ फरवरी — माघ शुक्ल ०२ रविवार शतभिषा में।
समय- लग्न: कुम्भ-मीन ०७:२१-१०:१२ वृष-मिथुन ११:५२-१६:०२

१४ फरवरी — माघ शुक्ल ०५ बुधवार रेवती में।
समय- लग्न: कुम्भ-मीन ०७:१०-१०:०४ वृष-मिथुन ११:४०-१५:५०

१५ फरवरी — माघ शुक्ल ०६ गुरुवार अश्विनी में।
समय- लग्न: कुम्भ-मीन ०७:१०-१०:०० वृष-मिथुन ११:३६-१५:४६

१९ फरवरी — माघ शुक्ल १० सोमवार मृगशिरा में।
समय- लग्न: कुम्भ-मीन ०७:०६-०९:४१ वृष-मिथुन ११:२१-१३:४०

२१ फरवरी — माघ शुक्ल १२ बुधवार पुनर्वसु में।
समय- लग्न: कुम्भ-मीन ०७:०५-०९:३३ वृष-मिथुन ११:१३-१५:२२

२२ फरवरी — माघ शुक्ल १३ गुरुवार पुष्य में।
समय- लग्न: कुम्भ-मीन ०७:०४-०९:२९ वृष-मिथुन ११:०९-१५:१८

२६ फरवरी — फाल्गुन कृष्ण ०२ सोमवार उ.फा. में।
समय- लग्न: वृष-मिथुन १०:५३-१४:४२

२९ फरवरी — फाल्गुन कृष्ण ०५ गुरुवार स्वाती में।
समय- लग्न: मीन ०७:३९-०९:०५, वृष-मिथुन १०:४१-१४:५१

०३ मार्च — फाल्गुन कृष्ण ०८ रविवार अनुराधा में।
समय- लग्न: मीन ०७:२७-०८:५२

०८ मार्च — फाल्गुन कृष्ण १३ शुक्रवार धनिष्ठा में।
समय- लग्न: वृष-मिथुन १०:१०-१४:१९

११ मार्च — फाल्गुन शुक्ल ०१ सोमवार उ.भा. में।
समय- लग्न: मीन ०६:५६-०८:२२, वृष-मिथुन ०९:५८-१४:०७

विशेष-फुलेरा दौज स्वयं सिद्ध अबूझ मुहूर्त्त

※ प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त २०८० ※

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

※ सन्तानोत्पत्ति के छठवें एवं बारहवें दिन प्रसूतिका स्नान करती है। इसे लोक में छठी एवं बरही का स्नान कहते हैं। यह संस्कार अनिवार्य कृत्य होने के कारण आवश्यक करणीय है। प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त में लग्न शुद्धि विचार आवश्यक नहीं है। स्नान के दिन चन्द्रमा की दिशा का विचार किया जाता है। स्नान करते समय चन्द्रमा प्रसूतिका के सम्मुख या दक्षिण होना चाहिए।

※ **स्नान के नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वाती, अनुराधा, रेवती।

※ **स्नान में मध्यम नक्षत्र-** आश्लेषा, तीनों पूर्वा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, शतभिषा।

※ **स्नान की तिथियाँ-**१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५, ३०।

※ **स्नान में त्याज्य नक्षत्र-** भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, मघा, चित्रा, विशाखा, मूल, श्रवण।

※ **स्नान के वार-** रवि, मंगल, बृहस्पति। रवीज्यकुजेषु शस्तम्। मुहूर्त्तचिन्तामणि, ५/१२।

※ **स्नान में त्याज्य-** रिक्तातिथि ४, ९, १४ तथा ६, ८, १२ तिथियाँ। भद्रा एवं वैधृतिदोष।

चैत्र शुक्लपक्ष

२३ मार्च — चैत्र शुक्ल २ गुरुवार, रेवती में।
समय- लग्न: वृष-मिथुन ०९:१३-१३:२३

२६ मार्च — चैत्र शुक्ल ५ रविवार, १६:३९ पश्चात्, रोहिणी में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या १६:३९-१८:३७

२८ मार्च — चैत्र शुक्ल ७ मंगलवार मृगशिरा में।
समय- लग्न: वृष-मिथुन ८:५३-१३:०३, सिंह-कन्या १५:२४-१८:३८

४ अप्रैल — चैत्र शुक्ल १३ मंगलवार ९:३९ पश्चात् उ.फा. में।
समय- लग्न: मीन ०६:२०-०६:५०

६ अप्रैल — चैत्र शुक्ल १५ गुरुवार १२:४८ पूर्व हस्त में।
समय- लग्न: वृष-मिथुन ८:१८-१२:२८

वैशाख कृष्णपक्ष

१८ अप्रैल — वैशाख कृष्ण १३ मंगलवार १२:४८ पूर्व उ.भा. में।
समय- लग्न: वृष-मिथुन ०७:३१-११:४१

२० अप्रैल — वैशाख कृष्ण ३० गुरुवार अश्विनी में।
समय- लग्न: वृष-मिथुन ०७:२३-११:३३, सिंह १३:५३-१८:२४

वैशाख शुक्लपक्ष

२३ अप्रैल — वैशाख शुक्ल ०३ रविवार रोहिणी में।
अक्षय तृतीया-स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त

३० अप्रैल — वैशाख शुक्ल १० रविवार १४:३५ बाद, पू.फा. में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या १४:३५-१७:४५

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

७ मई — ज्येष्ठ कृष्ण ०२ रविवार अनुराधा में।
समय- लग्न: वृष-मिथुन ०६:१६-१०:२६, सिंह-कन्या १२:४६-१७:१७
दोष: परिघ पूर्वार्ध दोष

११ मई — ज्येष्ठ कृष्ण ०६ गुरुवार १२:५५ बाद सप्तमी उ.षा.में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या १२:५५-१७:०२

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

२१ मई — ज्येष्ठ शुक्ल ०२ रविवार रोहिणी में।
समय- लग्न: वृष-मिथुन ०५:३९-०९:३१, सिंह-कन्या ११:५१-१६:२२

३० मई — ज्येष्ठ शुक्ल १० मंगलवार हस्त में।
समय- लग्न: वृष-मिथुन ०५:३६-०८:५५, सिंह-कन्या ११:१५-१५:४७

०१ जून — ज्येष्ठ शुक्ल १२ गुरुवार ११:०९ बाद स्वाती में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या ११:०९-१५:३९

०४ जून — ज्येष्ठ शुक्ल १५ रविवार ज्येष्ठा में।
समय- लग्न: मिथुन ०५:३५-०८:३६, सिंह-कन्या १०:५६-१५:२७

आषाढ़ कृष्णपक्ष

०६ जून — आषाढ़ कृष्ण ०२ मंगलवार १५:५४ बाद पू.षा. में।
समय- लग्न: मिथुन ०६:१५-०८:२८, सिंह-कन्या १०:४८-१५:१९

१३ जून — आषाढ़ कृष्ण १० मंगलवार भद्रान्त ११:३३ बाद रेवती में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या ११:३३-१४:५२, वृश्चिक १७:११-१९:१७

१८ जून — आषाढ़ कृष्ण ३० रविवार १४:०३ बाद मृगशिरा में।
समय- लग्न: मिथुन ०५:३५-०७:४१, सिंह-कन्या १०:०१-१४:३२
वृश्चिक १६:५१-१९:१०

❊ प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त २०८० ❊

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

आषाढ़ शुक्लपक्ष

२९ जून — आषाढ़ शुक्ल ११ गुरुवार भद्रारम्भ १०:४४ पूर्व स्वाती में।
समय- लग्न: सिंह ०९:१८-१०:४४

शुद्ध श्रावण कृष्णपक्ष

०४ जुलाई — श्रावण कृष्ण ०१ मंगलवार १४:१६ पूर्व उ.षा. में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०८:५८-१३:३०

०९ जुलाई — श्रावण कृष्ण ७ रविवार भद्रान्त १४:०१ बाद उ.भा. में।
समय- लग्न: वृश्चिक-धनु १५:२९-१९:२१

अधिक श्रावण शुक्लपक्ष

२० जुलाई — श्रावण शुक्ल ०३ गुरुवार ०९:४४ पूर्व आश्लेषा में।
समय- लग्न: सिंह ०७:५६-०९:४४

२३ जुलाई — श्रावण शुक्ल ०५ रविवार १३:३२ बाद उ.फा. में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०७:४४-१२:१५

०१ अगस्त — श्रावण शुक्ल १५ मंगलवार भद्रान्त १३:३९ बाद उ.षा.में।
समय- लग्न: वृश्चिक-धनु १३:५९-१८:२३

अधिक श्रावण कृष्णपक्ष

०३ अगस्त — श्रावण शुक्ल ०२ गुरुवार धनिष्ठा में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०७:००-११:३२, वृश्चिक-धनु १३:५१-१८:१५

०६ अगस्त — श्रावण शुक्ल ०५ रविवार १२:४२ पूर्व रेवती में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०६:४९-११:२०

१० अगस्त — श्रावण शुक्ल ०९ गुरुवार भद्रान्त ०७:४१ बाद रोहिणी में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०७:४१-११:०४, वृश्चिक-धनु १३:२३-१७:४७

शुद्ध श्रावण शुक्लपक्ष

३१ अगस्त — श्रावण शुक्ल १५ गुरुवार शतभिषा में।
समय- लग्न: सिंह ०६:०७-०७:३६
दोष: इसके आगे क्षय तिथि दोष, इस पक्ष में अन्य मुहूर्त्त का अभाव

भाद्रपद कृष्णपक्ष

१२ सितम्बर — भाद्रपद कृष्ण १३ मंगलवार आश्लेषा में।
समय- लग्न: कन्या ०६:३९-०८:५४, वृश्चिक-धनु ११:१३-१५:३७

१४ सितम्बर — भाद्रपद कृष्ण ३० गुरुवार पू.फा. में।
समय- लग्न: कन्या ०६:३१-०८:४६, वृश्चिक-धनु ११:०५-१५:२९

भाद्रपद शुक्लपक्ष

१७ सितम्बर — भाद्रपद शुक्ल ०२ रविवार ०९:२२ पूर्व हस्त में।
समय- लग्न: कन्या ०६:१९-०८:३४

२१ सितम्बर — भाद्रपद शुक्ल ०६ गुरुवार ९:४६ बाद अनुराधा में।
समय- लग्न: वृश्चिक-धनु १०:३७-१५:०२

२४ सितम्बर — भाद्रपद शुक्ल १० रविवार उ.षा. में।
समय- लग्न: कन्या ०६:१८-०८:०७, वृश्चिक १०:२५-१४:५०

आश्विन कृष्णपक्ष

०१ अक्टूबर — कार्तिक कृष्ण ०२ रविवार अश्विनी में।
समय- लग्न: वृश्चिक-धनु ०९:५८-१४:२२, कुम्भ-मीन १६:११-१८:१०

१२ अक्टूबर — कार्त्तिक कृष्ण १३ गुरुवार पू.फा. में।
समय- लग्न: वृश्चिक-धनु ०९:१४-१३:३९, कुम्भ-मीन १५:२३-१७:५८

आश्विन शुक्लपक्ष

१९ अक्टूबर — आश्विन शुक्ल ०५ गुरुवार ज्येष्ठा में।
समय- लग्न: वृश्चिक-धनु ०८:४७-१३:११, कुम्भ-मीन १४:५६-१७:५१

२४ अक्टूबर — आश्विन शुक्ल १० मंगलवार धनिष्ठा में।
समय- लग्न: वृश्चिक-धनु ०८:२७-१२:५१, कुम्भ-मीन १४:३६-१७:३१

२६ अक्टूबर — आश्विन शुक्ल १३ गुरुवार पू.भा. में।
समय- लग्न: वृश्चिक-धनु ०८:१९-१२:४६, कुम्भ-मीन १४:२८-१७:२३
दोष: क्षय तिथि दोष, व्याघात योग

कार्त्तिक कृष्णपक्ष

३१ अक्टूबर — कार्त्तिक कृष्ण ०३ मंगलवार भद्रारम्भ १८:२० पूर्व पू.फा. में।
समय- लग्न: वृश्चिक-धनु ०७:५९-१०:४६

❊ प्रसूतिका स्नान मुहूर्त्त २०८० ❊

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

कार्त्तिक शुक्लपक्ष

१४ नवम्बर कार्त्तिक शुक्ल ०१ मंगलवार १५:०८ पूर्व अनुराधा में।
समय- लग्नः वृश्चिक-धनु ०७:०४-११:२८, मीन १४:४२-१५:०८

२३ नवम्बर कार्त्तिक शुक्ल ११ गुरूवार, भद्रारम्भ ०९:०१ पूर्व उ.भा. में।
समय- लग्नः वृश्चिक-धनु ०६:५५-०९:०१

मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष

२८ नवम्बर मार्गशीर्ष कृष्ण ०१ मंगलवार रोहिणी में।
समय- लग्नः वृश्चिक-धनु ०६:५९-१०:३३, कुम्भ-मीन १२:१७-१५:१२

०७ दिसम्बर मार्गशीर्ष कृष्ण १० गुरूवार भद्रारम्भ १३:४३ पूर्व हस्त में।
समय- लग्नः वृश्चिक-धनु ०७:०६-०९:५७, कुम्भ ११:४२-१३:०६

१० दिसम्बर मार्गशीर्ष कृष्ण १३ रविवार १०:३५ पूर्व स्वाती में।
समय- लग्नः धनु ०७:४०-०९:४५

मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष

१७ दिसम्बर मार्गशीर्ष शुक्ल ०५ रविवार ०७:४७ बाद धनिष्ठा में।
समय- लग्नः धनु ०७:४७-०९:१८, कुम्भ-मीन ११:०२-१३:५७
दोषः क्षय नक्षत्र दोष

२१ दिसम्बर मार्गशीर्ष शुक्ल ०९ गुरूवार ११:१६ बाद, १५:५५ पूर्व रेवती में।
समय- लग्नः कुम्भ-मीन ११:१६-१३:४२

२६ दिसम्बर मार्गशीर्ष शुक्ल १५ मंगलवार भद्रान्त १७:०० बाद मृगशिरा में।
समय- लग्नः मिथुन १७:००-१७:३४

पौष कृष्णपक्ष

०९ जन. २०२४ पौष कृष्ण १३ मंगलवार ज्येष्ठा में।
समय- लग्नः धनु ०७:४७-०९:३२, कुम्भ-मीन १२:२७-१५:५८

पौष शुक्लपक्ष

१४ जन. २०२४ पौष शुक्ल ०३ रविवार १०:३५ पूर्व धनिष्ठा में।
समय- लग्नः कुम्भ- ०९:१२-१०:३५
दोषः १०:३५ बाद व्यतीपात दोष

२१ जन. २०२४ माघ शुक्ल ११ रविवार भद्रारम्भ ०९:३२ पूर्व रोहिणी में।
समय- लग्नः कुम्भ ०८:४४-०९:३२

माघ कृष्णपक्ष २०२४

३० जनवरी माघ कृष्ण ०५ मंगलवार उ.फा. में।
समय- लग्नः कुम्भ-मीन ०८:०९-११:०४, वृष-मिथुन १२:४०-१६:५०

०४ फरवरी माघ कृष्ण ०९ रविवार १२:४९ बाद, अनुराधा में।
समय- लग्नः वृष-मिथुन १२:२०-१६:३०

०८ फरवरी माघ कृष्ण १३ गुरुवार भद्रारम्भ ०९:२४ पूर्व उ.षा. में।
समय- लग्नः कुम्भ-मीन ०७:३३-०९:२४

माघ शुक्लपक्ष २०२४

१८ फरवरी माघ शुक्ल ०९ रविवार १६:३२ बाद, मृगशिरा में।
समय- लग्नः सिंह १७:५४-१८:१६
इस पक्ष में अन्य मुहूर्त्त का अभाव

फाल्गुन कृष्णपक्ष २०२४

२५ फरवरी फाल्गुन कृष्ण ०१ रविवार पू.फा. में।
समय- लग्नः वृष-मिथुन १०:५७-१५:०७, सिंह १७:२७-१८:२१

२९ फरवरी फाल्गुन कृष्ण ०५ गुरुवार ०७:४३ बाद, स्वाती में।
समय- लग्नः वृष-मिथुन १०:४१-१४:५१, सिंह १७:११-१८:२३

०५ मार्च फाल्गुन कृष्ण ०५ गुरुवार ११:२२ बाद, भद्रारम्भ १४:१५ पूर्व पू.षा. में।
समय- लग्नः वृष-मिथुन ११:२२-१४:१५

१० मार्च फाल्गुन कृष्ण ३० रविवार पू.भा. में।
समय- लग्नः वृष-मिथुन १०:०२-१४:११, सिंह १६:३१-१८:२९

फाल्गुन शुक्लपक्ष २०२४

१२ मार्च फाल्गुन शुक्ल ०२ मंगलवार रेवती में।
समय- लग्नः वृष-मिथुन ०९:५४-१४:०३, सिंह १६:२४-१८:३०

चैत्र कृष्णपक्ष २०२४

२६ मार्च चैत्र कृष्ण ०१ मंगलवार हस्त में।
समय- लग्नः वृष-मिथुन ०८:५९-१२:४४

✻ वाहन खरीदने का मुहूर्त्त २०८० ✻

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

✻ **तिथि:** २,३,५,७,१०,११,१२,१३,१५ ✻ **पक्ष:** शुक्ल व कृष्ण ✻ **वार:** सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, रवि ✻ **नक्षत्र:** अश्विनी, स्वाति, चित्रा, रेवती, शतभिषा, श्रवण, मृगशिरा, मूल, पुष्य, हस्त, धनिष्ठा, अनुराधा *(मुहूर्त्त चिन्तामणि)* ✻ **अबूझ मुहूर्त्तः- अक्षय तृतीया-** २३ अप्रैल, **जानकी नवमी-** २९ अप्रैल, **पीपल पूर्णिमा-** ५ मई, **गंगा दशहरा-** ३० मई, **भड़ल्या नवमी-** २७ जून, **देवशयनी एकादशी-** २९ जून, **गणेश चतुर्थी-** १८ सितम्बर, **विजयादशमी-** २३ अक्तूबर, **धनतेरस-** १० नवम्बर, **देवउठान एकादशी-** २३ नवम्बर, **वसन्त पञ्चमी-** १४ फरवरी, **फुलेरा दौज-** १२ मार्च

२२ मार्च	चैत्र शुक्ल १ बुधवार उ.भा. में।
	समय- लग्नः वृष-मिथुन ०९:१७-१३:२७, सिंह-कन्या १५:४७-२०:१९
२३ मार्च	चैत्र शुक्ल २ गुरुवार रेवती में।
	समय- लग्नः वृष-मिथुन ९:१३-१३:२३, सिंह-कन्या १५:४३-१८:००
२६ मार्च	चैत्र शुक्ल ५ रविवार रोहिणी में।
	समय- लग्नः वृष-मिथुन ०९:०१-१३:११, सिंह-कन्या १५:३१-२०:०३
३१ मार्च	चैत्र शुक्ल १० शुक्र वार पुष्य में।
	समय- लग्नः वृष-मिथुन ०८:४१-१२:५२, सिंह-कन्या १५:१२-१९:४३
०६ अप्रैल	चैत्र शुक्ल १५ गुरुवार हस्त में।
	समय- लग्नः सिंह-कन्या ०८:१८-१०:००
०७ अप्रैल	वैशाख कृष्ण १ शुक्रवार चित्रा में।
	समय- लग्नः वृष-मिथुन ०८:१४-१२:२४, सिंह-कन्या १४:४४-१९:१६
२३ अप्रैल	वैशाख कृष्ण ३ रविवार रोहिणी में।
	अक्षय तृतीया-स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त
२७ अप्रैल	वैशाख कृष्ण ७ गुरुवार भद्रापूर्व पुष्य में।
	समय- लग्नः वृष-मिथुन ०६:५५-११:०५
०३ मई	वैशाख शुक्ल १३ बुधवार हस्त में।
	समय- लग्नः वृष-मिथुन ०६:३२-१०:४२, सिंह-कन्या १३:०२-१७:३३
२१ मई	ज्येष्ठ शुक्ल ०२ रविवार मृगशिरा में।
	समय- लग्नः वृष-मिथुन ०५:३९-०९:३१, सिंह-कन्या ११:५१-१६:२२
२२ मई	ज्येष्ठ शुक्ल ०३ सोम मृगशिरा में।
	समय- लग्नः वृष-मिथुन ०५:३९-०९:२७
२४ मई	ज्येष्ठ शुक्ल ०५ बुधवार पुनर्वसु में।
	समय- लग्नः वृष-मिथुन ०५:३८-०९:१९, सिंह-कन्या ११:३९-१६:१०
०१ जून	ज्येष्ठ शुक्ल १२ गुरुवार स्वाति में।
	समय- लग्नः वृष-मिथुन ०५:३६-०८:४७, सिंह-कन्या ११:०८-१५:३९
०८ जून	आषाढ़ कृष्ण ५ गुरुवार, श्रवण में।
	समय- लग्नः वृष-मिथुन ०५:३४-०८:२०, सिंह-कन्या १०:४०-१५:१२

०८ जून	आाषाढ़ कृष्ण ५ गुरुवार, श्रवण में।
	समय- लग्नः वृष-मिथुन ०५:३४-०८:२०, सिंह-कन्या १०:४०-१५:१२
१२ जून	आषाढ़ कृष्ण १० सोमवार में उ.भा. में।
	समय- लग्नः कन्या १३:१९-१४:५३, वृश्चिक १७:१५-१९:१७
२१ जून	आषाढ़ शुक्ल ३ बुधवार, पुष्य में।
	समय- लग्नः मिथुन ०५:३५-०७:२९, सिंह-कन्या ०९:४९-१२:५९
२८ जून	आषाढ़ शुक्ल १० बुधवार चित्रा में।
	समय- लग्नः मिथुन ०५:३७-०७:०२, सिंह-कन्या ०९:२२-१३:५३
२९ जून	आषाढ़ शुक्ल ११ गुरुवार स्वाति में।
	समय- लग्नः मिथुन ०५:३७-०६:५८, सिंह-कन्या ०९:१८-१०:४४
३० जून	आषाढ़ शुक्ल १२ शुक्रवार अनुराधा में।
	समय- लग्नः सिंह-कन्या १३:२१-१३:४५
०५ जुलाई	श्रावण कृष्ण ०२ बुधवार श्रवण में।
	समय- लग्नः सिंह-कन्या ०८:५४-१३:२६, वृश्चिक १५:४५-१८:०४
२३ जुलाई	अ. श्रावण शुक्ल ०५ रविवार उ.फा में।
	समय- लग्नः सिंह-कन्या ०७:४४-०७:५१
२४ जुलाई	अ. श्रावण शुक्ल ०६ सोमवार हस्त में।
	समय- लग्नः सिंह-कन्या ०९:०७-१२:११
२८ जुलाई	अ. श्रावण शुक्ल १० शुक्रवार अनुराधा में।
	समय- लग्नः सिंह-कन्या ०७:२४-११:५६, वृश्चिक १४:१४-१६:३३
२१ अगस्त	शु. श्रावण शुक्ल ५ सोमवार चित्रा में।
	समय- लग्नः सिंह-कन्या ०६:०२-१०:२१, वृश्चिक-धनु १२:४०-१७:०४
२८ अगस्त	शु. श्रावण शुक्ल १२ सोमवार उ.ष में।
	समय- लग्नः सिंह-कन्या ०५:२१-०९:५३, वृश्चिक-धनु १२:१२-१६:३६
१० सितम्बर	भाद्रपद कृष्ण ११ रविवार पुनर्वसु में।
	समय- लग्नः सिंह-कन्या ०६:१२-०८:२६
११ सितम्बर	भाद्रपद कृष्ण १२ सोमवार पुष्य में।
	समय- लग्नः सिंह-कन्या ०६:१२-०८:५८, वृश्चिक-धनु ११:१७-१५:४१
१७ सितम्बर	भाद्रपद शुक्ल ०२ रविवार हस्त में।
	समय- लग्नः सिंह-कन्या ०६:१५-०६:१९ वृश्चिक-धनु १०:५३-१५:१७

✻ वाहन खरीदने का मुहूर्त्त २०८० ✻

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

१८ सितम्बर	भाद्रपद शुक्ल ०३ सोमवार चित्रा में। **समय-** लग्न:सिंह-कन्या ०६:१६-०८:३०
२१ सितम्बर	भाद्रपद शुक्ल ०७ गुरुवार अनुराधा में। **समय-** लग्न: वृश्चिक-धनु १०:३७-१२:३१
२४ सितम्बर	भाद्रपद शुक्ल १० रविवार उ.षा में। **समय-** लग्न: वृश्चिक-धनु १०:२५-१४:५० कुम्भ-मीन १६:३४-१८:१९
२५ सितम्बर	भाद्रपद शुक्ल ११ सोमवार उ.षा.-श्रवण में। **समय-** लग्न: कन्या ०६:१८-०८:०३, वृश्चिक-धनु १०:२२-१४:१८
२७ सितम्बर	भाद्रपद शुक्ल १३ बुधवार शतभिषा में। **समय-** लग्न: कन्या ०६:१९-०७:५५, वृश्चिक-धनु १०:१४-१४:३८ कुम्भ-मीन १६:२२-१८:१५
२९ सितम्बर	भाद्रपद शुक्ल १५ शुक्रवार उ.भा. में। **समय-** लग्न: कन्या ०६:२०-०७:४७, वृश्चिक-धनु १०:०६-१४:३०
१६ अक्टूबर	आश्विन शुक्ल ०२ सोमवार स्वाति में। **समय-** लग्न: कन्या ०६:२९-०६:४० वृश्चिक-धनु ०८:५९-१३:२३, कुम्भ-मीन १५:०७-१७:५४
२३ अक्तूबर	आश्विन शुक्ल १० सोमवार धनिष्ठा में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन १४:४१-१७:३१
२५ अक्तूबर	आश्विन शुक्ल ११ बुधवार शतभिषा में। **समय-** लग्न: वृश्चिक-धनु ०९:५५-१०:४२
१० नवम्बर	कार्त्तिक कृष्ण १२ शुक्रवार हस्त में। **समय-** लग्न: वृश्चिक-धनु ०७:२०-११:४४, कुम्भ-मीन १३:२९-१६:२०
२३ नवम्बर	कार्त्तिक शुक्ल ११ गुरुवार उ.भा. में। **समय-** लग्न: वृश्चिक-धनु ०६:५५-०९:०१
२४ नवम्बर	कार्त्तिक शुक्ल १२, शुक्रवार रेवती में। **समय-** लग्न: वृश्चिक-धनु ०६:५५-०९:३१
२५ नवम्बर	कार्त्तिक शुक्ल १३, शनिवार अश्विनी में। **समय-** लग्न: वृश्चिक-धनु ०६:५७-१०:४५, कुम्भ-मीन १२:२९-१४:३८
२९ नवम्बर	मार्गशीर्ष कृष्ण २ बुधवार मृगशिरा में। **समय-** लग्न: वृश्चिक-धनु ०७:००-१०:२९, कुम्भ-मीन १२:१३-१४:१९
०७ दिसम्बर	मार्गशीर्ष कृष्ण १० गुरुवार हस्त में। **समय-** लग्न: वृश्चिक-धनु ०७:०६-०९:५७, कुम्भ-मीन ११:४२-१३:४३
१५ दिसम्बर	मार्गशीर्ष शुक्ल ०३ शुक्रवार उ.षा. में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन ११:१०-१४:०१
१७ जनवरी	पौष शुक्ल ०७ बुधवार रेवती में। **समय- लग्न:** कुम्भ-मीन ०९:००-११:५१ वृष-मिथुन १३:३१-१७:४१
२१ जनवरी	पौष शुक्ल ११ रविवार रोहिणी में। **समय- लग्न:** कुम्भ-मीन ०८:४४-०९:३२
२२ जनवरी	पौष शुक्ल १२ सोमवार मृगशिरा में। **समय- लग्न:** कुम्भ-मीन ०८:४०-११:३१ वृष-मिथुन १३:११-१७:२१
२६ जनवरी	माघ कृष्ण ०१ शुक्रवार पुष्य में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन ०८:२४-१०:०३
१० फरवरी	माघ शुक्ल ०१ शनिवार धनिष्ठा में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन ०७:२५-१०:१६ वृष-मिथुन ११:५६-१६:०६
११ फरवरी	माघ शुक्ल ०२ रविवार शतभिषा में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन ०७:२१-१०:१२ वृष-मिथुन ११:५२-१६:०२
१४ फरवरी	माघ शुक्ल ०५ बुधवार रेवती में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन ०७:१०-१०:०० वृष-मिथुन ११:४०-१५:५०
१९ फरवरी	माघ शुक्ल १० सोमवार मृगशिरा में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन ०७:०६-०९:४१ वृष-मिथुन ११:२१-१३:४०
२१ फरवरी	माघ शुक्ल १२ बुधवार पुनर्वसु में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन ०७:०५-०९:३३ वृष-मिथुन ११:१३-१५:२२
२२ फरवरी	माघ शुक्ल १३ गुरुवार पुष्य में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन ०७:०४-०९:२९ वृष-मिथुन ११:०९-१५:१८
०६ मार्च	फाल्गुन कृष्ण ११ बुधवार उ.षा. में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन ०७:४७-०८:३८ वृष-मिथुन १०:१७-१४:२७
०७ मार्च	फाल्गुन कृष्ण १२ गुरुवार उ.षा. में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या १६:४३-१८:२८
०८ मार्च	फाल्गुन कृष्ण १३ शुक्रवार धनिष्ठा में। **समय-** लग्न: मीन ०७:०८-०८:३४, वृष-मिथुन १०:१०-१४:१९
११ मार्च	फाल्गुन शुक्ल ०१ सोमवार उ.भा. में। **समय-** लग्न: मीन ०६:५६-०८:२२, वृष-मिथुन ०९:५८-१४:०७ **विशेष-फुलेरा दौज स्वयं सिद्ध अबूझ मुहूर्त्त**
१६ मार्च	फाल्गुन शुक्ल ०७ शनिवार रोहिणी में। **समय-** लग्न: मीन ०६:४०-०८:०२, वृष-मिथुन ०९:३८-१३:४८
२० मार्च	फाल्गुन शुक्ल ११ बुधवार पुष्य में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ०९:२२-१३:३२

✻ नामकरण एवं जातकर्म संस्कार मुहूर्त्त २०८० ✻

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

✻ **तिथियाँ-** १,२,३,५,७,१०,११,१२,१३ ✻ **वार-** सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार ✻ **समय-** कुलपरम्परा अनुसार

✻ **नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती (कुल १६)

✻ **अबूझ मुहूर्त्त :-** **अक्षय तृतीया-** २३ अप्रैल, **जानकी नवमी-** २९ अप्रैल, **पीपल पूर्णिमा-** ५ मई, **गंगा दशहरा-** ३० मई, **भड़ल्या नवमी-** २७ जून, **देवशयनी एकादशी-** २९ जून, **गणेश चतुर्थी-** १८ सितम्बर, **विजयादशमी-** २३ अक्तूबर, **धनतेरस-** १० नवम्बर, **देवउठान एकादशी-** २३ नवम्बर, **वसन्त पञ्चमी-** १४ फरवरी, **फुलेरा दौज-** १२ मार्च

२२ मार्च	चैत्र शुक्ल १ बुधवार उ.भा. में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ०९:१७-१३:२७, सिंह-कन्या १५:४७-२०:१९
२३ मार्च	चैत्र शुक्ल २ गुरुवार रेवती में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ९:१३-१३:२३, सिंह-कन्या १५:४३-१८:००
३१ मार्च	चैत्र शुक्ल १० शुक्र वार पुष्य में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ०८:४१-१२:५२, सिंह-कन्या १५:१२-१९:४३
०६ अप्रैल	चैत्र शुक्ल १५ गुरुवार हस्त में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या ०८:१८-१०:००
०७ अप्रैल	वैशाख कृष्ण १ शुक्रवार चित्रा में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ०८:१४-१२:२४, सिंह-कन्या १४:४४-१९:१६
२४ अप्रैल	वैशाख शुक्ल ५ सोमवार मृगशीर्ष में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या १३:३७-१८:०९
२७ अप्रैल	वैशाख शुक्ल ७ गुरुवार भद्रापूर्व पुष्य में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ०६:५५-११:०५
०३ मई	वैशाख शुक्ल १३ बुधवार हस्त में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ०६:३२-१०:४२, सिंह-कन्या १३:०२-१७:३३
१२ मई	ज्येष्ठ कृष्ण ०७ शुक्रवार श्रवण में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ०५:५६-१०:०६
१७ मई	ज्येष्ठ कृष्ण १३ बुधवार श्रवण में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ०५:४१-०९:४६, सिंह-कन्या १२:०७-१६:३८
२२ मई	ज्येष्ठ शुक्ल ०३ सोमवार मृगशिरा में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ०५:३९-०९:२७
२४ मई	ज्येष्ठ शुक्ल ०५ बुधवार पुनर्वसु में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ०५:३८-०९:१९, सिंह-कन्या ११:३९-१६:१०
०१ जून	ज्येष्ठ शुक्ल १२ गुरुवार स्वाति में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ०५:३६-०८:४७, सिंह-कन्या ११:०८-१५:३९
०८ जून	आषाढ़ कृष्ण ५ गुरुवार, श्रवण में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ०५:३४-०८:२०, सिंह-कन्या १०:४०-१५:१२
१२ जून	आषाढ़ कृष्ण १० सोमवार में उ.भा. में। **समय-** लग्न: कन्या १३:१९-१४:५३, वृश्चिक १७:१५-१९:१७

२१ जून	आषाढ़ शुक्ल ३ बुधवार, पुष्य में। **समय-** लग्न: मिथुन ०५:३५-०७:२९, सिंह-कन्या ०९:४९-१२:५९
२८ जून	आषाढ़ शुक्ल १० बुधवार चित्रा में। **समय-** लग्न: मिथुन ०५:३७-०७:०२, सिंह-कन्या ०९:२२-१३:५३
२९ जून	आषाढ़ शुक्ल ११ गुरुवार स्वाति में। **समय-** लग्न: मिथुन ०५:३७-०६:५८, सिंह-कन्या ०९:१८-१०:४४
३० जून	आषाढ़ शुक्ल १२ शुक्रवार अनुराधा में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या १३:२१-१३:४५
०५ जुलाई	श्रावण कृष्ण ०२ बुधवार श्रवण में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या ०८:५४-१३:२६, वृश्चिक १५:४५-१८:०४
२४ जुलाई	अ. श्रावण शुक्ल ०६ सोमवार हस्त में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या ०९:०७-१२:११
२८ जुलाई	अ. श्रावण शुक्ल १० शुक्रवार अनुराधा में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या ०७:२४-११:५६, वृश्चिक १४:१४-१६:३३
०३ अगस्त	अ. श्रावण कृष्ण ०२ गुरुवार धनिष्ठा में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या ०७:००-११:३२, वृश्चिक १३:५१-१६:१०
१४ अगस्त	अ. श्रावण कृष्ण १३ सोमवार भद्रा पूर्व पुनर्वसु में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या ०६:१७-१०:१०
२१ अगस्त	शु. श्रावण शुक्ल ५ सोमवार चित्रा में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या ०६:०२-१०:२१, वृश्चिक-धनु १२:४०-१७:०४
२८ अगस्त	शु. श्रावण शुक्ल १२ सोमवार उ.ष में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या ०५:२१-०९:५३, वृश्चिक-धनु १२:१२-१६:३६
११ सितम्बर	भाद्रपद कृष्ण १२ सोमवार पुष्य मे। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या ०६:१२-०८:५८, वृश्चिक-धनु ११:१७-१५:४१
१८ सितम्बर	भाद्रपद शुक्ल ०३ सोमवार चित्रा में। **समय-** लग्न:सिंह-कन्या ०६:१६-०८:३०
२१ सितम्बर	भाद्रपद शुक्ल ०७ गुरुवार अनुराधा में। **समय-** लग्न: वृश्चिक-धनु १०:३७-१२:३१
२५ सितम्बर	भाद्रपद शुक्ल ११ सोमवार उ.षा.-श्रवण में। **समय-** लग्न: कन्या ०६:१८-०८:०३, वृश्चिक-धनु १०:२२-१४:१८

❊ नामकरण एवं जातकर्म संस्कार मुहूर्त्त २०८० ❊

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

२७ सितम्बर	भाद्रपद शुक्ल १३ बुधवार शतभिषा में। **समय-** लग्न: कन्या ०६:१९-०७:५५, वृश्चिक-धनु १०:१४-१४:३८ कुम्भ-मीन १६:२२-१८:१५
२९ सितम्बर	भाद्रपद शुक्ल १५ शुक्रवार उ.भा. में। **समय-** लग्न: कन्या ०६:२०-०७:४७, वृश्चिक-धनु १०:०६-१४:३०
१६ अक्टूबर	आश्विन शुक्ल ०२ सोमवार स्वाति में। **समय-** लग्न: कन्या ०६:२९-०६:४० वृश्चिक-धनु ०८:५९-१३:२३, कुम्भ-मीन १५:०७-१७:५४
२३ अक्तूबर	आश्विन शुक्ल १० सोमवार धनिष्ठा में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन १४:४१-१७:३१
२५ अक्तूबर	आश्विन शुक्ल ११ बुधवार शतभिषा में। **समय-** लग्न: वृश्चिक-धनु ०९:५५-१०:४२
१० नवम्बर	कार्त्तिक कृष्ण १२ शुक्रवार हस्त में। **समय-** लग्न: वृश्चिक-धनु ०७:२०-११:४४, कुम्भ-मीन १३:२९-१६:२०
२३ नवम्बर	कार्त्तिक शुक्ल ११ गुरुवार उ.भा. में। **समय-** लग्न: वृश्चिक-धनु ०६:५५-०९:०१
२४ नवम्बर	कार्त्तिक शुक्ल १२, शुक्रवार रेवती में। **समय-** लग्न: वृश्चिक-धनु ०६:५५-०९:३१
२७ नवम्बर	कार्त्तिक शुक्ल १५, सोमवार १३:३४ बाद रोहिणी में। **समय-** लग्न: मीन १३:५०-१५:१६
२९ नवम्बर	मार्गशीर्ष कृष्ण २ बुधवार मृगशिरा में। **समय-** लग्न: वृश्चिक-धनु ०७:००-१०:२९, कुम्भ-मीन १२:१३-१४:१९
०७ दिसम्बर	मार्गशीर्ष कृष्ण १० गुरुवार हस्त में। **समय-** लग्न: वृश्चिक-धनु ०७:०६-०९:५७, कुम्भ-मीन ११:४२-१३:४३
१५ दिसम्बर	मार्गशीर्ष शुक्ल ०३ शुक्रवार उ.षा. में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन ११:१०-१४:०१
२१ दिसम्बर	मार्गशीर्ष शुक्ल १० गुरुवार ११:२३ बाद १५:५५ पूर्व रेवती में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन ११:२३-१३:४२, वृष १५:१८-१५:५५
२२ दिसम्बर	मार्गशीर्ष शुक्ल १० शुक्रवार अश्विनी में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन १०:४३-१३:३८, वृष १५:१४-१७:०९
२८ दिसम्बर	पौष कृष्ण ०२ गुरुवार पुनर्वसु में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन ०८:३४-११:४८, वृष-मिथुन १३:१४-१६:४६
०३ जनवरी	पौष कृष्ण ०७ बुधवार उ.फा. में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन ०८:११-११:२५, वृष-मिथुन १२:५०-१६:२२
१७ जनवरी	पौष शुक्ल ०७ बुधवार रेवती में। **समय- लग्न:** कुम्भ-मीन ०९:००-११:५१ वृष-मिथुन १३:३१-१७:४१
२२ जनवरी	पौष शुक्ल १२ सोमवार मृगशिरा में। **समय- लग्न:** कुम्भ-मीन ०८:४०-११:३१ वृष-मिथुन १३:११-१७:२१
२६ जनवरी	माघ कृष्ण ०१ शुक्रवार पुष्य में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन ०८:२४-१०:०३
१४ फरवरी	माघ शुक्ल ०५ बुधवार रेवती में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन ०७:१०-१०:०० वृष-मिथुन ११:४०-१५:५०
१९ फरवरी	माघ शुक्ल १० सोमवार मृगशिरा में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन ०७:०६-०९:४१ वृष-मिथुन ११:२१-१३:४०
२१ फरवरी	माघ शुक्ल १२ बुधवार पुनर्वसु में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन ०७:०५-०९:३३ वृष-मिथुन ११:१३-१५:२२
२२ फरवरी	माघ शुक्ल १३ गुरुवार पुष्य में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन ०७:०४-०९:२९ वृष-मिथुन ११:०९-१५:१८
२६ फरवरी	फाल्गुन कृष्ण २ सोमवार उ.फा. में। **समय-** लग्न: मीन ०७:५१-०९:१७, वृष-मिथुन १०:५३-१४:४२ (शूल पूर्व)
२९ फरवरी	फाल्गुन कृष्ण ५ गुरुवार स्वाती में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन १०:४१-१४:५१, सिंह १७:११-१८:२३
०६ मार्च	फाल्गुन कृष्ण ११ बुधवार उ.षा. में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन ०७:४७-०८:३८ वृष-मिथुन १०:१७-१४:२७
०७ मार्च	फाल्गुन कृष्ण १२ गुरुवार उ.षा. में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या १६:४३-१८:२८
०८ मार्च	फाल्गुन कृष्ण १३ शुक्रवार धनिष्ठा में। **समय-** लग्न: मीन ०७:०८-०८:३४, वृष-मिथुन १०:१०-१४:१९
११ मार्च	फाल्गुन शुक्ल ०१ सोमवार उ.भा. में। **समय-** लग्न: मीन ०६:५६-०८:२२, वृष-मिथुन ०९:५८-१४:०७ **विशेष-फुलेरा दौज स्वयं सिद्ध अबूझ मुहूर्त्त**
२० मार्च	फाल्गुन शुक्ल ११ बुधवार पुष्य में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ०९:२२-१३:३२
२५ मार्च	फाल्गुन शुक्ल १५ सोमवार ११:५२ बाद हस्त में। **समय-** लग्न: मिथुन ११:५२-१३:१२, सिंह-कन्या १५:३२-१७:४९

❊ श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम् ❊

प्रकाशक- श्रीनिम्बार्क परिषद् , जयपुर, ९९२८०२४४१४, ७७३७११४९५०

※ अन्नप्राशन मुहूर्त्त २०८० ※

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

※ **अन्नप्राशन तिथियाँ-** २,३,५,७,१०,१३,१५ ※ **अन्नप्राशन वार-** सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार ※ **अन्नप्राशन मास-** षष्ठ मास से आरम्भ कर सम मास बालकों के लिए एवं पंचम से आरम्भ कर विषम मास कन्याओं के लिए ※ **अन्नप्राशन नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती (कुल १६)

※ **अबूझ मुहूर्त्तः- अक्षय तृतीया-** २३ अप्रैल, **जानकी नवमी-** २९ अप्रैल, **पीपल पूर्णिमा-** ५ मई, **गंगा दशहरा-** ३० मई, **भड़ल्या नवमी-** २७ जून, **देवशयनी एकादशी-** २९ जून, **गणेश चतुर्थी -** १८ सितम्बर, **विजयादशमी-** २३ अक्तूबर, **धनतेरस-** १० नवम्बर, **देवउठान एकादशी-** २३ नवम्बर, **वसन्त पञ्चमी-** १४ फरवरी, **फुलेरा दौज -** १२ मार्च

२३ मार्च	चैत्र शुक्ल २ गुरुवार रेवती में। **समय-** लग्नः वृष-मिथुन ९:१३-१३:२३, सिंह-कन्या १५:४३-१८:००
३१ मार्च	चैत्र शुक्ल १० शुक्र वार पुष्य में। **समय-** लग्नः वृष-मिथुन ०८:४१-१२:५२, सिंह-कन्या १५:१२-१९:४३
०६ अप्रैल	चैत्र शुक्ल १५ गुरुवार हस्त में। **समय-** लग्नः सिंह-कन्या ०८:१८-१०:००
०७ अप्रैल	वैशाख कृष्ण २ शुक्रवार चित्रा में। **समय-** लग्नः वृष-मिथुन १०:१७-१२:२४, सिंह-कन्या १४:४४-१९:१६
२४ अप्रैल	वैशाख शुक्ल ५ सोमवार मृगशीर्ष में। **समय-** लग्नः सिंह-कन्या १३:३७-१८:०९
२७ अप्रैल	वैशाख शुक्ल ७ गुरुवार भद्रापूर्व पुष्य में। **समय-** लग्नः वृष-मिथुन ०६:५५-११:०५
०३ मई	वैशाख शुक्ल १३ बुधवार हस्त में। **समय-** लग्नः वृष-मिथुन ०६:३२-१०:४२, सिंह-कन्या १३:०२-१७:३३
१२ मई	ज्येष्ठ कृष्ण ०७ शुक्रवार श्रवण में। **समय-** लग्नः वृष-मिथुन ०५:५६-१०:०६
१७ मई	ज्येष्ठ कृष्ण १३ बुधवार श्रवण में। **समय-** लग्नः वृष-मिथुन ०५:४१-०९:४६, सिंह-कन्या १२:०७-१६:३८
२२ मई	ज्येष्ठ शुक्ल ०३ सोमवार मृगशिरा में। **समय-** लग्नः वृष-मिथुन ०५:३९-०९:२७
२४ मई	ज्येष्ठ शुक्ल ०५ बुधवार पुनर्वसु में। **समय-** लग्नः वृष-मिथुन ०५:३८-०९:१९, सिंह-कन्या ११:३९-१६:१०
०१ जून	ज्येष्ठ शुक्ल १२ गुरुवार स्वाति में। **समय-** लग्नः वृष-मिथुन ०५:३६-०८:४७, सिंह-कन्या ११:०८-१५:३९
०८ जून	आषाढ़ कृष्ण ५ गुरुवार, श्रवण में। **समय-** लग्नः वृष-मिथुन ०५:३४-०८:२०, सिंह-कन्या १०:४०-१५:१२
१२ जून	आषाढ़ कृष्ण १० सोमवार में उ.भा. में। **समय-** लग्नः कन्या १३:१९-१४:५३, वृश्चिक १७:१५-१९:१७
२१ जून	आषाढ़ शुक्ल ३ बुधवार, पुष्य में। **समय-** लग्नः मिथुन ०५:३५-०७:२९, सिंह-कन्या ०९:४९-१२:५९
२८ जून	आषाढ़ शुक्ल १० बुधवार चित्रा में। **समय-** लग्नः मिथुन ०५:३७-०७:०२, सिंह-कन्या ०९:२२-१३:५३
०५ जुलाई	श्रावण कृष्ण ०२ बुधवार श्रवण में। **समय-** लग्नः सिंह-कन्या ०८:५४-१३:२६, वृश्चिक १५:४५-१८:०४
२४ जुलाई	अ. श्रावण शुक्ल ०६ सोमवार हस्त में। **समय-** लग्नः सिंह-कन्या ०९:०७-१२:११
२८ जुलाई	अ. श्रावण शुक्ल १० शुक्रवार अनुराधा में। **समय-** लग्नः सिंह-कन्या ०७:२४-११:५६, वृश्चिक १४:१४-१६:३३
०३ अगस्त	अ. श्रावण कृष्ण ०२ गुरुवार धनिष्ठा में। **समय-** लग्नः सिंह-कन्या ०७:००-११:३२, वृश्चिक १३:५१-१६:१०
१४ अगस्त	अ. श्रावण कृष्ण १३ सोमवार भद्रा पूर्व पुनर्वसु में। **समय-** लग्नः सिंह-कन्या ०६:१७-१०:१०
२१ अगस्त	शु. श्रावण शुक्ल ५ सोमवार चित्रा में। **समय-** लग्नः सिंह-कन्या ०६:०२-१०:२१, वृश्चिक-धनु १२:४०-१७:०४
२८ अगस्त	शु. श्रावण शुक्ल १२ सोमवार उ.ष में। **समय-** लग्नः सिंह-कन्या ०५:२१-०९:५३, वृश्चिक-धनु १२:१२-१६:३६
११ सितम्बर	भाद्रपद कृष्ण १२ सोमवार पुष्य मे। **समय-** लग्नः सिंह-कन्या ०६:१२-०८:५८, वृश्चिक-धनु ११:१७-१५:४१
१८ सितम्बर	भाद्रपद शुक्ल ०३ सोमवार चित्रा में। **समय-** लग्नःसिंह-कन्या ०६:१६-०८:३०
२१ सितम्बर	भाद्रपद शुक्ल ०७ गुरुवार अनुराधा में। **समय-** लग्नः वृश्चिक-धनु १०:३७-१२:३१

❊ अन्नप्राशन मुहूर्त्त २०८० ❊

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

२७ सितम्बर	भाद्रपद शुक्ल १३ बुधवार शतभिषा में। **समय-** लग्न: कन्या ०६:१९-०७:५५, वृश्चिक-धनु १०:१४-१४:३८ कुम्भ-मीन १६:२२-१८:१५
२९ सितम्बर	भाद्रपद शुक्ल १५ शुक्रवार उ.भा. में। **समय-** लग्न: कन्या ०६:२०-०७:४७, वृश्चिक-धनु १०:०६-१४:३०
१६ अक्टूबर	आश्विन शुक्ल ०२ सोमवार स्वाति में। **समय-** लग्न: कन्या ०६:२९-०६:४० वृश्चिक-धनु ०८:५९-१३:२३, कुम्भ-मीन १५:०७-१७:५४
२३ अक्तूबर	आश्विन शुक्ल १० सोमवार धनिष्ठा में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन १४:४१-१७:३१
१० नवम्बर	कार्त्तिक कृष्ण १३ शुक्रवार हस्त में। **समय-** लग्न: धनु ११:१६-११:४४, कुम्भ-मीन १३:२९-१६:२०
२७ नवम्बर	कार्त्तिक शुक्ल १५, सोमवार १३:३४ बाद रोहिणी में। **समय-** लग्न: मीन १३:५०-१५:१६
२९ नवम्बर	मार्गशीर्ष कृष्ण २ बुधवार मृगशिरा में। **समय-** लग्न: वृश्चिक-धनु ०७:००-१०:२९, कुम्भ-मीन १२:१३-१४:१९
०७ दिसम्बर	मार्गशीर्ष कृष्ण १० गुरुवार हस्त में। **समय-** लग्न: वृश्चिक-धनु ०७:०६-०९:५७, कुम्भ-मीन ११:४२-१३:४३
१५ दिसम्बर	मार्गशीर्ष शुक्ल ०३ शुक्रवार उ.षा. में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन ११:१०-१४:०१
२१ दिसम्बर	मार्गशीर्ष शुक्ल १० गुरुवार ११:२३ बाद १५:५५ पूर्व रेवती में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन ११:२३-१३:४२, वृष १५:१८-१५:५५
२२ दिसम्बर	मार्गशीर्ष शुक्ल १० शुक्रवार अश्विनी में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन १०:४३-१३:३८, वृष १५:१४-१७:०९
२८ दिसम्बर	पौष कृष्ण ०२ गुरुवार पुनर्वसु में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन ०८:३४-११:४८, वृष-मिथुन १३:१४-१६:४६
०३ जनवरी	पौष कृष्ण ०७ बुधवार उ.फा. में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन ०८:११-११:२५, वृष-मिथुन १२:५०-१६:२२
१७ जनवरी	पौष शुक्ल ०७ बुधवार रेवती में। **समय- लग्न:** कुम्भ-मीन ०९:००-११:५१ वृष-मिथुन १३:३१-१७:४१
१४ फरवरी	माघ शुक्ल ०५ बुधवार रेवती में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन ०७:१०-१०:०० वृष-मिथुन ११:४०-१५:५०
१९ फरवरी	माघ शुक्ल १० सोमवार मृगशिरा में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन ०७:०६-०९:४१ वृष-मिथुन ११:२१-१३:४०
२१ फरवरी	माघ शुक्ल १३ बुधवार पुनर्वसु में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन १२:४७-१५:२२
२२ फरवरी	माघ शुक्ल १३ गुरुवार पुष्य में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन ०७:०४-०९:२९ वृष-मिथुन ११:०९-१५:१८
२६ फरवरी	फाल्गुन कृष्ण २ सोमवार उ.फा. में। **समय-** लग्न: मीन ०७:५१-०९:१७, वृष-मिथुन १०:५३-१४:४२ (शूल पूर्व)
२९ फरवरी	फाल्गुन कृष्ण ५ गुरुवार स्वाती में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन १०:४१-१४:५१, सिंह १७:११-१८:२३
०८ मार्च	फाल्गुन कृष्ण १३ शुक्रवार धनिष्ठा में। **समय-** लग्न: मीन ०७:०८-०८:३४, वृष-मिथुन १०:१०-१४:१९
११ मार्च	फाल्गुन शुक्ल ०२ सोमवार उ.भा. में। **समय-** लग्न: मिथुन १३:०१-१४:०७, सिंह १६:२८-१८:३० **विशेष-फुलेरा दौज स्वयं सिद्ध अबूझ मुहूर्त्त**
२५ मार्च	फाल्गुन शुक्ल १५ सोमवार ११:५२ बाद हस्त में। **समय-** लग्न: मिथुन ११:५२-१३:१२, सिंह-कन्या १५:३२-१७:४९

❊ गर्गाचार्य और ज्योतिषशास्त्र की महानता ❊

ज्योतिषामयनं साक्षाद् यत्तज्ज्ञानमतीन्द्रियम् । प्रणीतं भवता येन पुमान्वेद परावरम् ।।

– श्रीमद्भागवत महापुराण, दशम स्कन्ध, अष्टम अध्याय, श्लोक ५

श्रीनन्दबाबा महर्षि गर्ग से बोले, ग्रहादि से सम्बन्धित ज्ञान इन्द्रियातीत है। आपने इस ज्ञान को प्रतिपादित करने वाले शास्त्र की रचना की है। इसके द्वारा भूत और भविष्य से सम्बन्धित ज्ञान प्रत्यक्ष हो जाता है।

ज्योतिषशास्त्र की उपयोगिता व कल्याणकारक महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए महर्षि गर्ग ने अन्यत्र कहा कि यह शास्त्र तो परमगति भी प्रदान करता है –

ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य सर्वस्योक्तं शुभाशुभम्। ज्योतिर्ज्ञानं तु यो वेद स याति परमां गतिम् ।।

ज्योतिष् चक्र समस्त लोगों के शुभ और अशुभ का ज्ञान कराता है। जिसे ज्योतिष् विद्या का ज्ञान है, वह परमगति को प्राप्त करता है।

✻ विपणि व्यापार मुहूर्त्त २०८० ✻

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

✻ **तिथि:** २,३,५,७,८,१०,११,१२,१३,१५ ✻ **पक्ष:** शुक्ल व कृष्ण ✻ **वार:** सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, रवि ✻ **मंगलवार का निषेध**

✻ **नक्षत्र:** तीनों उत्तरा, अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, चित्रा, मूल, पुष्य, हस्त, धनिष्ठा, रेवती, स्वाती, अनुराधा, श्रवण

२२ मार्च	चैत्र शुक्ल १ बुधवार उ.भा. में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ०९:१७-१३:२७, सिंह-कन्या १५:४७-२०:१९
२३ मार्च	चैत्र शुक्ल २ गुरुवार रेवती में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ९:१३-१३:२३, सिंह-कन्या १५:४३-१८:००
२६ मार्च	चैत्र शुक्ल ५ रविवार रोहिणी में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ०९:०१-१३:११, सिंह-कन्या १५:३१-२०:०३
३१ मार्च	चैत्र शुक्ल १० शुक्र वार पुष्य में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ०८:४१-१२:५२, सिंह-कन्या १५:१२-१९:४३
०६ अप्रैल	चैत्र शुक्ल १५ गुरुवार हस्त में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या ०८:१८-१०:००
०७ अप्रैल	वैशाख कृष्ण १ शुक्रवार चित्रा में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ०८:१४-१२:२४, सिंह-कन्या १४:४४-१९:१६
२३ अप्रैल	वैशाख कृष्ण ३ रविवार रोहिणी में। **अक्षय तृतीया-स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त**
२७ अप्रैल	वैशाख कृष्ण ७ गुरुवार भद्रापूर्व पुष्य में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ०६:५५-११:०५
०३ मई	वैशाख शुक्ल १३ बुधवार हस्त में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ०६:३२-१०:४२, सिंह-कन्या १३:०२-१७:३३
७ मई	ज्येष्ठ कृष्ण ०२ रविवार अनुराधा में। **दोष:** परिघ पूर्वार्ध दोष **समय- लग्न:** वृष-मिथुन ०६:१६-१०:२६, सिंह-कन्या १२:४६-१७:१७
११ मई	ज्येष्ठ कृष्ण ०६ गुरुवार १२:५५ बाद सप्तमी उ.षा.में। **समय- लग्न:** सिंह-कन्या १२:५५-१७:०२
२१ मई	ज्येष्ठ शुक्ल ०२ रविवार मृगशिरा में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ०५:३९-०९:३१, सिंह-कन्या ११:५१-१६:२२
२२ मई	ज्येष्ठ शुक्ल ०३ सोम मृगशिरा में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ०५:३९-०९:२७
२४ मई	ज्येष्ठ शुक्ल ०५ बुधवार पुनर्वसु में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ०५:३८-०९:१९, सिंह-कन्या ११:३९-१६:१०
२५ मई	ज्येष्ठ शुक्ल ०६ गुरुवार, पुष्य में। **समय-** लग्न: मिथुन ०७:०१-०९:१५, सिंह-कन्या ११:३५-१६:०६
०१ जून	ज्येष्ठ शुक्ल १२ गुरुवार स्वाती में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ०५:३६-०८:४७, सिंह-कन्या ११:०८-१५:३९
०८ जून	आषाढ़ कृष्ण ५ गुरुवार, श्रवण में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ०५:३४-०८:२०, सिंह-कन्या १०:४०-१५:१२
१२ जून	आषाढ़ कृष्ण १० सोमवार में उ.भा. में। **समय-** लग्न: कन्या १३:१९-१४:५३, वृश्चिक १७:१५-१९:१७
२१ जून	आषाढ़ शुक्ल ३ बुधवार, पुष्य में। **समय-** लग्न: मिथुन ०५:३५-०७:२९, सिंह-कन्या ०९:४९-१२:५९
२६ जून	आषाढ़ शुक्ल ८ बुधवार, पुष्य में। **समय-** लग्न: मिथुन ०५:३५-०७:२९, सिंह-कन्या ०९:४९-१२:५९
२८ जून	आषाढ़ शुक्ल १० बुधवार चित्रा में। **समय-** लग्न: मिथुन ०५:३७-०७:०२, सिंह-कन्या ०९:२२-१३:५३
२९ जून	आषाढ़ शुक्ल ११ गुरुवार स्वाती में। **समय-** लग्न: मिथुन ०५:३७-०६:५८, सिंह-कन्या ०९:१८-१०:४४
३० जून	आषाढ़ शुक्ल १२ शुक्रवार अनुराधा में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या १३:२१-१३:४५
०१ जुलाई	आषाढ शुक्ल १३ शनिवार अनुराधा में। **समय-** लग्न: सिंह/कन्या ९:१० - १३:०६ (१३:०६ अनुराधा अंत)
०५ जुलाई	श्रावण कृष्ण ०२ बुधवार श्रवण में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या ०८:५४-१३:२६, वृश्चिक १५:४५-१८:०४
१४ जुलाई	श्रावण कृष्ण १२ शुक्रवार रोहिणी में। **समय-** लग्न: सिंह/कन्या ८:१९ - १२:५१, वृश्चिक १५:०९ - १७:२८
१५ जुलाई	श्रावण कृष्ण १३ शनिवार मृगशिरा में। **समय-** लग्न: सिंह/कन्या ८:१५ - १२:४७, वृश्चिक १५:०६ - १७:२४
२३ जुलाई	अ. श्रावण शुक्ल ०५ रविवार उ.फा में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या ०७:४४-०७:५१
२४ जुलाई	अ. श्रावण शुक्ल ०६ सोमवार हस्त में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या ०९:०७-१२:११
२८ जुलाई	अ. श्रावण शुक्ल १० शुक्रवार अनुराधा में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या ०७:२४-११:५६, वृश्चिक १४:१४-१६:३३
२१ अगस्त	शु. श्रावण शुक्ल ५ सोमवार चित्रा में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या ०६:०२-१०:२१, वृश्चिक-धनु १२:४०-१७:०४
२८ अगस्त	शु. श्रावण शुक्ल १२ सोमवार उ.ष में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या ०५:२१-०९:५३, वृश्चिक-धनु १२:१२-१६:३६

✻ विपणि व्यापार मुहूर्त्त २०८० ✻

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

१० सितम्बर	भाद्रपद कृष्ण ११ रविवार पुनर्वसु में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या ०६:१२-०८:२६
११ सितम्बर	भाद्रपद कृष्ण १२ सोमवार पुष्य में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या ०६:१२-०८:५८, वृश्चिक-धनु ११:१७-१५:४१
१७ सितम्बर	भाद्रपद शुक्ल ०२ रविवार हस्त में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या ०६:१५-०६:१९ वृश्चिक-धनु १०:५३-१५:१७
१८ सितम्बर	भाद्रपद शुक्ल ०३ सोमवार चित्रा में। **समय-** लग्न:सिंह-कन्या ०६:१६-०८:३०
२१ सितम्बर	भाद्रपद शुक्ल ०७ गुरुवार अनुराधा में। **समय-** लग्न: वृश्चिक-धनु १०:३७-१२:३१
२४ सितम्बर	भाद्रपद शुक्ल १० रविवार उ.षा में। **समय-** लग्न: वृश्चिक-धनु १०:२५-१४:५० कुम्भ-मीन १६:३४-१८:१९
२५ सितम्बर	भाद्रपद शुक्ल ११ सोमवार उ.षा.-श्रवण में। **समय-** लग्न: कन्या ०६:१८-०८:०३, वृश्चिक-धनु १०:२२-१४:१८
२९ सितम्बर	भाद्रपद शुक्ल १५ शुक्रवार उ.भा. में। **समय-** लग्न: कन्या ०६:२०-०७:४७, वृश्चिक-धनु १०:०६-१४:३०
१६ अक्टूबर	आश्विन शुक्ल ०२ सोमवार स्वाति में। **समय-** लग्न: कन्या ०६:२९-०६:४० वृश्चिक-धनु ०८:५९-१३:२३, कुम्भ-मीन १५:०७-१७:५४
२३ अक्तूबर	आश्विन शुक्ल १० सोमवार धनिष्ठा में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन १४:४१-१७:३१
२६ अक्टूबर	आश्विन शुक्ल १३ गुरुवार पू.भा. में। **दोष:** क्षय तिथि दोष, व्याघात योग **समय-** लग्न: वृश्चिक-धनु ०८:१९-१२:४६, कुम्भ-मीन १४:२८-१७:२३
१० नवम्बर	कार्तिक कृष्ण १२ शुक्रवार हस्त में। **समय-** लग्न: वृश्चिक-धनु ०७:२०-११:४४, कुम्भ-मीन १३:२९-१६:२०
२३ नवम्बर	कार्तिक शुक्ल ११ गुरुवार उ.भा. में। **समय-** लग्न: वृश्चिक-धनु ०६:५५-०९:०१
२४ नवम्बर	कार्त्तिक शुक्ल १२, शुक्रवार रेवती में। **समय-** लग्न: वृश्चिक-धनु ०६:५५-०९:३१
२५ नवम्बर	कार्तिक शुक्ल १३, शनिवार अश्विनी में। **समय-** लग्न: वृश्चिक-धनु ०६:५७-१०:४५, कुम्भ-मीन १२:२९-१४:३८
२९ नवम्बर	मार्गशीर्ष कृष्ण २ बुधवार मृगशिरा में। **समय-** लग्न: वृश्चिक-धनु ०७:००-१०:२९, कुम्भ-मीन १२:१३-१४:१९
०७ दिसम्बर	मार्गशीर्ष कृष्ण १० गुरुवार हस्त में। **समय-** लग्न: वृश्चिक-धनु ०७:०६-०९:५७, कुम्भ-मीन ११:४२-१३:४३
१५ दिसम्बर	मार्गशीर्ष शुक्ल ०३ शुक्रवार उ.षा. में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन ११:१०-१४:०१
१७ जनवरी	पौष शुक्ल ०७ बुधवार रेवती में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन ०९:००-११:५१ वृष-मिथुन १३:३१-१७:४१
२१ जनवरी	पौष शुक्ल ११ रविवार रोहिणी में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन ०८:४४-०९:३२
२२ जनवरी	पौष शुक्ल १२ सोमवार मृगशिरा में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन ०८:४०-११:३१ वृष-मिथुन १३:११-१७:२१
२६ जनवरी	माघ कृष्ण ०१ शुक्रवार पुष्य में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन ०८:२४-१०:०३
१० फरवरी	माघ शुक्ल ०१ शनिवार धनिष्ठा में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन ०७:२५-१०:१६ वृष-मिथुन ११:५६-१६:०६
१४ फरवरी	माघ शुक्ल ०५ बुधवार रेवती में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन ०७:१०-१०:०० वृष-मिथुन ११:४०-१५:५०
१९ फरवरी	माघ शुक्ल १० सोमवार मृगशिरा में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन ०७:०६-०९:४१ वृष-मिथुन ११:२१-१३:४०
२१ फरवरी	माघ शुक्ल १२ बुधवार पुनर्वसु में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन ०७:०५-०९:३३ वृष-मिथुन ११:१३-१५:२२
२२ फरवरी	माघ शुक्ल १३ गुरुवार पुष्य में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन ०७:०४-०९:२९ वृष-मिथुन ११:०९-१५:१८
२९ फरवरी	फाल्गुन कृष्ण ०५ गुरुवार ०७:४३ बाद, स्वाती में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन १०:४१-१४:५१, सिंह १७:११-१८:२३
०६ मार्च	फाल्गुन कृष्ण ११ बुधवार उ.षा. में। **समय-** लग्न: कुम्भ-मीन ०७:४७-०८:३८ वृष-मिथुन १०:१७-१४:२७
०७ मार्च	फाल्गुन कृष्ण १२ गुरुवार उ.षा. में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या १६:४३-१८:२८
०८ मार्च	फाल्गुन कृष्ण १३ शुक्रवार धनिष्ठा में। **समय-** लग्न: मीन ०७:०८-०८:३४, वृष-मिथुन १०:१०-१४:१९
११ मार्च	फाल्गुन शुक्ल ०१ सोमवार उ.भा. में। **समय-** लग्न: मीन ०६:५६-०८:२२, वृष-मिथुन ०९:५८-१४:०७ **विशेष-फुलेरा दौज स्वयं सिद्ध अबूझ मुहूर्त्त**
१६ मार्च	फाल्गुन शुक्ल ०७ शनिवार रोहिणी में। **समय-** लग्न: मीन ०६:४०-०८:०२, वृष-मिथुन ०९:३८-१३:४८
२० मार्च	फाल्गुन शुक्ल ११ बुधवार पुष्य में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ०९:२२-१३:३२

❋ कतिपय आवश्यक मुहूर्त्त ❋

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग में अधिकांश आवश्यक मुहूर्त्त निर्णय दिया गया है। मुहूर्त्त शास्त्रों में अनेकविध कृत्यों के मुहूर्त्त दिए गए हैं, जिनमें से कुछ का विवरण यहाँ दिया जा रहा है।

❋ गर्भाधान मुहूर्त्त ❋

❋ **तिथि-** क्षीणचन्द्रमा रहित १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ **तिथि**। ❋ **वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्र। ❋ **नक्षत्र-** रोहिणी, मृगशि, उत्तराषाढ़ा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, हस्त, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, चित्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्विनी। ❋ **विशेष-** रजोदर्शन की चतुर्थ रात्रि से १२ रात्रियों तक। ❋ **त्याज्य-** ४, ६, ८, ९, १४, ३० **तिथि**, प्रातः, सायं, सन्ध्या, ग्रहण, संक्रान्ति, श्राद्ध।❋ **लग्नशुद्धि-** शुभग्रह केन्द्र त्रिकोणस्थ व पापग्रह त्रिषडाय में।

❋ सीमन्तोन्नयन पुंसवन मुहूर्त्त ❋

पुंसवन गर्भाधान से तृतीय मास में करना चाहिए। सीमन्तोन्नयन षष्ठ वा अष्टम मास में करना चाहिए। ❋ **तिथि-** शुक्लपक्ष- १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, कृष्णपक्ष-१, २, ३, ५। ❋ **वार-** सोम, मंगल, गुरुवार में। अन्यमतेन सोम, शुक्रवार को पूर्वाह्न में। ❋ **नक्षत्र-** मृगशिरा, पुष्य, श्रवण, पुनर्वसु, हस्त, रोहिणी, रेवती, तीनों उत्तरा (जन्मनक्षत्र त्याज्य)। ❋ **लग्नशुद्धि-** १, ४, ५, ७, ९, १० भावों में शुभग्रह, २, ३, ४, ५, ९, १०, ११ स्थानों में चन्द्र तथा ४, ८, १० में पापग्रह वर्जित ।

❋ जातकर्म मुहूर्त्त ❋

शिशु के ग्रहदोष निवारण व आयुवृद्धि हेतु जन्म-समय में या एकादश या द्वादश दिन में पिता को जातकर्म करना चाहिए। ❋ **नक्षत्र-** चित्रा, अनुराधा, रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा। ❋ **तिथि-** १, २,३,५,७,१०,११,१२,१३ ❋ **वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्र। ❋ **लग्न-** २, ३, ४, ६, ७, ९ १२, लग्न व नवांश की शुद्धि अनिवार्य।

❋ नामकरण मुहूर्त्त ❋

❋ **तिथि-** १,२,३,५,७,१०,११,१२,१३। वार-सोम,बुध,गुरु,शुक्र। पूर्वाह्न में शुभ, मध्याह्न में मध्यम। ❋ **नक्षत्र-** स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, हस्त, अश्वि, पुष्य, अभिजित्, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, शतभिषा, अनुराधा। ❋ **लग्न-** २,३,५,६,८,९,११,१२। ❋ **लग्नशुद्धि-** १, ४, ५, ७, ९, १० भावों में शुभग्रह, २, ३, ५, ९, १०, ११ स्थानों में चन्द्र, त्रिषडाय में पापग्रह हो। शुभग्रहदृष्टलग्न।

❋ अन्नप्राशन मुहूर्त्त ❋

❋ **तिथि-** २,३,५,७,१०,१३,१५। क्षीणचन्द्र वर्जित। ❋ **वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार। ❋ **नक्षत्र-** जन्म नक्षत्र एवं अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती। ❋ **लग्न-** २,३,५,६,७,९,११,१२। ❋ **लग्नशुद्धि-** जन्मलग्न व जन्म राशि से अष्टमलग्न व नवांश वर्जित है। दशम भाव में चन्द्र के अतिरिक्त अन्य ग्रह वर्जित। १,६, ८ भाव में चन्द्रवर्जित। ❋ **बालकों का अन्नप्राशन-** ६,८,१०,१२ मासों में, **बालिकाओं** का ५, ७, ९, ११ मासों में। पूर्वाह्न शुभ।

❋ कर्णविध मुहूर्त्त ❋

१,२,६ मास में व विषमवर्ष में, रिक्ता एवं समवर्ष त्याज्य है। ❋ **कालशुद्धि-** सौर चैत्र व पौषमास, क्षयदिन, हरिशयन (आषाढ शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल दशमी तक) एवं जन्ममास त्याज्य है। पूर्वाह्न एवं मध्याह्न में। ❋ **तिथि-** १, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५ ❋ **वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार। ❋ **नक्षत्र-** अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती। ❋ **लग्नशुद्धि-** वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, धनु व मीन लग्न प्रशस्त। लग्न से अष्टम भाव शुद्धि।

❋ चूड़ाकर्म मुण्डन मुहूर्त्त ❋

❋ **कालशुद्धि-** उत्तरायण। गुरुशुक्रास्त वर्ज्य। पूवाह्न व मध्याह्न शुभ। १,२,६ मास में व विषमवर्ष में, समवर्ष त्याज्य है। सौर चैत्र व पौषमास, क्षयदिन, हरिशयन (आषाढ शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल दशमी तक) एवं जन्ममास त्याज्य है। ❋ **मास-** माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ मास में हरिशयनपूर्व। ❋ **वर्जितमास-** चैत्र। ❋ **पक्ष-**कृष्णपक्ष में पंचमी तिथि पर्यन्त एवं सम्पूर्ण शुक्लपक्ष में। ❋ **तिथियाँ-** २,३,५,७,१०,११,१३ (कुल ७)। ❋ **वर्जित तिथियाँ-** १, ४,६, ८, ९,१२, १४, १५, ३०। ❋ **वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्र ❋ **नक्षत्र-** अश्विनी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, ज्येष्ठ, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती (१२ नक्षत्र)। ❋ **वर्जित नक्षत्र-** रोहिणी, तीनों उत्तरा एवं अनुराधा (५ नक्षत्र)। इसके अतिरिक्त भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, तीनों पूर्वा, विशाखा, मूल भी वर्जित हैं। ❋ **लग्न-** २, ३, ४, ५, ६, ७, ९, १२। ❋ **वर्जित लग्न-** १, ८, १०, ११। ❋ **लग्नशुद्धि**-जन्मलग्न व जन्मराशि से अष्टम लग्न वर्जित। अष्टम स्थानशुद्धि। केन्द्र में क्षीणचन्द्र, मंगल, शनि व सूर्य अशुभ।

❋ अक्षरारम्भ मुहूर्त्त ❋

उत्तरायण, गुरु शुक्र के अस्तादि विचारणीय। ❋ **तिथि-** २, ३, ५, ६, १०, ११, १२। ❋ **वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्र। ❋ **नक्षत्र-** अश्विनी, आर्द्रा, पुन, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनु., श्रवण, रेवती। ❋ **लग्न-** २,३,६,९,१२ शुभ, ५,८,११ मध्यम।

❋ उपनयन मुहूर्त्त ❋

❋ **मास-** माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ। ❋ **तिथि-** शुक्लपक्ष- २,३,५,१०,११,१२। कृष्णपक्ष- २,३,५ । ❋ **वार-** सूर्य, सोम, बुध, गुरु व शुक्रवार। ❋ **नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, तीनों पूर्वा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनु, मूल, श्रवण, धनि., शत, तीनों उत्तरा, रेवती। ❋ **समयशुद्धि-** उत्तरायण में। देवशयन, गुरु-शुक्र अस्तादि वर्जित। पूवाह्न व मध्याह्न तक ही उपनयन शुभ। अपराह्न निषिद्ध। ❋ **लग्नशुद्धि-** षष्ठ व अष्टम भाव में शुक्र, गुरु, चन्द्र व लग्नेश वर्जित। द्वादश भाव में चन्द्र व शुक्र वर्जित। लग्न पञ्चम व अष्टम में पापग्रह वर्जित। ❋ **त्याज्य-** आषाढ शुक्ल दशमी, ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया, पौष शुक्ल एकादशी, मघा शुक्ल द्वादशी तथा संक्रान्ति दिन। सूर्य के ८, १७, २६ अंश पर रोगबाण में वर्जित।

❋ प्रथम रजोदर्शन विचार ❋

❋ **मास-** वैशाख, ज्येष्ठ, श्रावण, आश्विन, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन ❋ **तिथि-** १,२,३,५,७,१०,११,१२,१३,१५ । ❋ **वार-** सोम, बुध, गुरु व शुक्रवार। ❋ **नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृग., पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती। ❋ **लग्न-** २,३,४,६,७,९,१२ शुभयुक्त एवं दृष्ट लग्न राशि। ❋ **विशेष-** प्रथम रजोदर्शन में कुयोग (परिघ, व्यतिपात, वैधृति आदि) भद्रा, सूर्यचन्द्र ग्रहण, मासान्त, सन्ध्या, निद्रावस्था आदि अशुभ कहा गया है। यदि इन कुयोगो में प्रथम ऋतुमति हो तो गायत्री मन्त्र से तिल, घृत, दूर्वा सहित १०८ आहुति देने से कुयोगों की शान्ति होती है।

❋ विद्यारम्भ मुहूर्त्त ❋

उत्तरायण, गुरु-शुक्र अस्तादि शुद्धि विचारणीय। ❋ **तिथि-** २, ३, ५, ६, १०, ११, १२। ❋ **वार-** सूर्य, बुध, गुरु, शुक्रवार। ❋ **नक्षत्र-** अश्विनी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, तीनों पूर्वा, हस्त, चित्रा, स्वाती, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा। अन्यमतेन रोहिणी, तीनों उत्तरा, अनुराधा, रेवती भी ग्राह्य हैं। ❋ **लग्न-** २,३,५,६,८,९,११,१२

✻ विवाह मुहूर्त्त ✻

गुरु शुक्र अस्तादि शद्धि, देवशयनादि विचार आवश्यक। ✻ **मास-** मीन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला व धनु के सूर्य में वर्जित। सौरमासों में वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ, मार्गशीर्ष, माघ व फाल्गुन ग्राह्य। दोनों पक्षों की ✻ **तिथि**- २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३ व शुक्लपक्ष की १५। ✻ **वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्र। रवि, शनि- मध्यम। मंगल त्याज्य (मु.चि. ६/५५)। ✻ **नक्षत्र-** रोहिणी, मृगशिरा, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वाती, अनुराधा, मूल व रेवती। ✻ **कात्यायन गृह्यसूत्रोक्त**- अश्विनी, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा। ✻ **लग्न-** लग्नस्थ चन्द्र, पापग्रह, तृतीयस्थ शुक्र, षष्ठस्थ चन्द्र, शुक्र व लग्नेश, सप्तम में सभी ग्रह, अष्टमस्थ चन्द्र, लग्नेश, मंगल व शुभग्रह, दशमस्थ मंगल व द्वादशस्थ शनि वर्जित।

✻ वधूप्रवेश मुहूर्त्त ✻

✻ **कालशुद्धि-** 'वधूप्रवेशो न दिवा प्रशस्त:' के अनुसार वधू का प्रवेश रात्रि में ही शुभ होता है, शेष विवाह मुहूर्त्त के समान। ✻ **वार**- सोम, बुध, गुरु, शुक्र व शनिवार। **तिथि**- १, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५। ✻ **नक्षत्र-** अश्विनी, रो, मृग, पुष्य, मघा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, तीनों उत्तरा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, व रेवती। ✻ **लग्नशुद्धि**- वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ राशि के लग्न शुभ। चतुर्थाष्टम शुद्धि चाहिए। ✻ **त्याज्य-** भद्रा, व्यति, क्षयतिथि, रिक्ता, अमा., ग्रहण, वैधृति व संक्रान्ति।

✻ द्विरागमन मुहूर्त्त ✻

कुम्भ, वृश्चिक व मेष राशि में सूर्य के रहने पर ही द्विरागमन विहित है। ✻ **वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार। ✻ **तिथि**- १, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५ ✻ **नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा रेवती। ✻ **वर्जित लग्न-** १,४,७,१०

✻ प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त ✻

✻ **स्नान के नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वाती, अनुराधा, रेवती। ✻ **स्नान में त्याज्य नक्षत्र-** भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, मघा, चित्रा, विशाखा, मूल, श्रवण। ✻ **स्नान में मध्यम नक्षत्र-** आश्लेषा, तीनों पूर्वा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, शतभिषा। ✻ **स्नान के वार-** रवि, मंगल, बृहस्पति। रवीज्यकुजेषु शस्तम्। मुहूर्त्तचिन्तामणि, ५/१२। ✻ **स्नान की तिथियाँ-**१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५, ३०।

✻ **स्नान में त्याज्य-** रिक्तातिथि ४, ९, १४ तथा ६, ८, १२ **तिथियाँ**। भद्रा एवं वैधृतिदोष।

✻ गृहारम्भ मुहूर्त्त ✻

गुरु-शुक्र अस्तादि विचार आवश्यक है। पर देवशयन विचार आवश्यक नहीं। ✻ **चान्द्रमास**- वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, पौष, फाल्गुन। ✻ **सौरमास**- मेष, वृष, कर्क, सिंह, वृश्चिक, मकर, कुम्भ राशिस्थ। ✻ **तिथि**- २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १५। ✻ **वार**- सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनिवार। ✻ **नक्षत्र**- रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती(मु. चि. १२/१५) पराशरमतानुसार- अश्विनी, पुनर्वसु, मूल व श्रवण भी ग्राह्य। वास्तु राजवल्लभ के अनुसार ज्येष्ठ भी ग्राह्य। **योग व करण**- वैधृति, शूल, गण्ड, परिघ, व्याघात, वज्र, विष्कुम्भ एवं व्यतीपात योग तथा भद्रा वर्जित। ✻ **लग्न**- २,३,५,६,८,९,११,१२। अष्टम, द्वादश भाव की शुद्धि।

✻ नवीन गृहप्रवेश मुहूर्त्त ✻

उत्तरायण विशेष शुभ। गुरु-शुक्र अस्तादिविचार आवश्यक। दिन व रात दोनों ही में प्रवेश शुभ। ✻ **मास-** माघ, फाल्गुन, वैशाख व ज्येष्ठ श्रेष्ठ। मार्गशीर्ष, कार्तिक मध्यम। ✻ **तिथि**- दोनों पक्षों की- १,२,३, ५,६,७,८,१०। एवं शु.प. ११,१२,१३,१५ ✻ **वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि। ✻ **नक्षत्र-** रोहिणी, मृगशिरा, तीनों उत्तरा, चित्रा, अनुराधा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती। मतान्तर से अश्विनी, पुष्य, स्वाती, मूल व श्रवण भी ग्राह्य (मुहूर्त्तपारिजात)। ✻ **लग्न-** २,३, ५,६,८,९,११,१२। लग्न से चतुर्थाष्टम शुद्धि आवश्यक। ✻ **समय-शुद्धि**- भद्रा, व्यतीपात, वैधृति योग त्याज्य, परिघ का आधा मान, शूल योग की आदि ५ घटी, गण्ड व अतिगण्ड योग की आदि ६ घटी, व्याघात की ९ घटी, विष्कुम्भ व वज्र की ३-३ घटी मुहूर्त्त में त्याज्य।

✻ जीर्ण गृह प्रवेश मुहूर्त्त ✻

नवीन गृह प्रवेश मुहूर्त्त के समान ही। पर श्रावण, मार्गशीर्ष एवं कार्तिक मास भी ग्राह्य। नवीन गृह प्रवेश मुहूर्त में भी प्रवेश। गुरु शुक्र अस्तादि विचार की आवश्यकता नहीं। ✻ **जीर्ण गृहप्रवेश नक्षत्र -** शतभिषा, पुष्य, स्वाती, धनिष्ठा।

✻ सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त ✻

उत्तरायण, गुरु-शुक्र अस्तादि का विचार आवश्यक। मकर, कुम्भ, मीन, मेष, वृष एवं मिथुन में सूर्य के रहने पर।

✻ **देव प्रतिष्ठा नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती (कुल १६ नक्षत्र)। ✻ **देव प्रतिष्ठा मास-** चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, माघ, फाल्गुन (हरिशयनपूर्व) ✻ **वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, रवि। मंगलवार को निषेध है। ✻ **लग्न-** २, ३, ५, ६, ८, ११, १२ । ✻ **तिथि-** २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १५ ।

✻ ऋण देने का मुहूर्त्त ✻

✻ **वार-** चन्द्र, गुरु, शुक्र, शनि नक्षत्र स्वाती, पुनर्वसु, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, मूल, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा। ✻ **लग्न-** १, ४, ७, १० लग्न में। ✻ **तिथि-** १, २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १५। ✻ **कर्ज देने में निषिद्ध समय-** बुधवार, भरणी, कृतिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, तीनों पूर्वा, चित्रा, ज्येष्ठ नक्षत्रों में, भद्रा एवं पात योगों में निषिद्ध होता है। ✻ **कर्ज लेने में निषिद्ध समय-** रविवार, मंगलवार, संक्रान्ति, हस्त नक्षत्र में ऋणग्रहण नहीं करना चाहिए।

✻ औषधि/दवाई ग्रहण करने का मुहूर्त्त ✻

✻ **वार-** सूर्य, सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार। ✻ **नक्षत्र-** अश्विनी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, अभिजित्, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रोहिणी में शुभ। ✻ **लग्न-** ३, ६, ९, १२। शुभग्रह ३, ६, ९, १२ राशिमें स्थित हो, तथा लग्न से ७, ८, १२ स्थान ग्रहरहित हों, इसमें औषधि ग्रहण शुभ।

✻ ऑपरेशन का मुहूर्त्त ✻

✻ **वार-** सूर्य, मंगल, गुरुवार। ✻ **नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, अभिजित्, श्रवण, शतभिषा। ✻ **तिथि-** ४, ९, १४, १५, ३० वर्जित।

✻ भूमि क्रय विक्रय मुहूर्त्त ✻

✻ **वार-** गुरु, शुक्र। ✻ **तिथि-** दोनों पक्षों की- ५, ६, १०, ११, पूर्णिमा व कृष्णपक्ष की १। ✻ **नक्षत्र-** मृगशिरा, पुनर्वसु, आश्लेषा, मघा, विशाखा, अनुराधा, तीनों पूर्वा, मूल, रेवती। ✻भद्रा एवं कुयोग त्याज्य

✻ व्यवहार पत्रारम्भ मुहूर्त्त ✻

✻ **तिथि-** १,२,३,५,७,१०,११,१३ ✻ **वार-** रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्रवार। ✻ **नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, अभिजित्, श्रवण, रेवती।

चैत्र शुक्लपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, २२ मार्च से ६ अप्रैल, २०२३ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– २२ः३ः२०२३ मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः; मार्गी शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपश्चिमोदितः ;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
मार्च	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	२२ मार्च से ६ अप्रैल, २०२३
२२	१ बु	३८:०४	२१:४८	उ·भा·	२५:४५	१६:५२	शुक्ल	०९:४४	१०:२८	बव	१०:०४	बाल	३८:०४	३०:०१	६:३४	१८:३५	मीन	अहोरात्र	लुम्ब	७	२२	**विक्रम नववर्ष आरम्भः, नवरात्र घटस्थापना,**
२३	२ गु	३४:४८	२०:२८	रेवती	२४:०१	१६:१०	ब्रह्म ऐन्द्र	०३:५० ५४:५०	०८:०५ ३०:०१	बाल	०६:२०	कौल	३४:४८	३०:०६	६:३३	१८:३६	मे·२४:०१	१६:१०	मित्र	८	२३	चेटीचण्ड–श्रीझूलेलाल जयन्ती, बालेन्दु चन्द्रपूजन,
२४	३ शु	३२:३४	१९:३४	अश्वि·	२३:१८	१५:५१	वैधृ·	५४:२६	२८:१९	तैति	०३:३४	गर	३२:३४	३०:१०	६:३२	१८:३६	मेष	अहोरात्र	वज्र	९	२४	**गणगौर पूजा, मत्स्यावतार जयन्ती** (वैष्णव), मन्वादि
२५	४ श	३१:३२	१९:०८	भरणी	२३:४३	१६:०१	विष्कु·	५१:०९	२६:५९	वणि	०१:५५	विष	३१:३२	३०:१४	६:३१	१८:३७	वृ·३९:००	२२:०७	ध्वांक्ष	१०	२५	**अंगारकी वैनायकी श्रीगणेशचतुर्थी,**
२६	५ र	३१:४४	१९:१२	कृत्ति·	२५:२२	१६:३९	प्रीति	४८:५२	२६:०३	बव	०१:२९	बाल	३१:४४	३०:१८	६:३०	१८:३७	वृष	अहोरात्र	धूम्र	११	२६	**श्रीपञ्चमी, रंगपञ्चमी,** श्री रामराज्य महोत्सव,
२७	६ चं	३३:१५	१९:४७	रोहि·	२८:१५	१७:४७	आयु·	४७:३५	२५:३१	कौल	०२:२१	तैति	३३:१५	३०:२२	६:२९	१८:३८	वृष	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	१२	२७	श्रीयमुना जयन्ती, स्कन्द षष्ठी,
२८	७ मं	३५:५८	२०:५१	मृग·	३२:२०	१९:२४	सौभा·	४७:१३	२५:२१	गर	०४:२८	वणि	३५:५८	३०:२६	६:२८	१८:३८	मि·००:१०	०६:३२	राक्षस	१३	२८	दुर्गापूजा प्रारम्भ (बंगाल), सूर्यसप्तमी, मोदन व्रत
२९	८ बु	३९:४७	२२:२१	आर्द्रा	३७:२९	२१:२६	शोभ·	४७:४१	२५:३१	विष	०७:४६	बव	३९:४७	३०:३०	६:२७	१८:३९	मिथुन	अहोरात्र	मुसल	१४	२९	**महाष्टमी**, अशोकाष्टमी, नवपद पूजा (जैन),
३०	९ गु	४४:२७	२४:१२	पुन·	४३:२८	२३:४९	अतिग·	४८:४५	२५:५६	बाल	१२:०३	कौल	४४:२७	३०:३४	६:२५	१८:३९	क·२६:५५	१७:१२	सिद्धि	१५	३०	**श्रीरामनवमी, नवरात्र समाप्तिः**, श्रीमहानवमी,
३१	१० शु	४९:३८	२६:१५	पुष्य	४९:५७	२६:२३	सुकर्मा	५०:१३	२६:२९	तैति	१७:०१	गर	४९:३८	३०:३८	६:२४	१८:४०	कर्क	अहोरात्र	उत्पात	१६	३१	**नवरात्रोत्थापन, नवरात्र व्रतपारणा**, जयन्ती ग्रहणम्,
अप्रैल	११ श	५४:५४	२८:२१	आश्ले·	५६:३१	२९:०१	धृति	५१:४४	२७:०५	वणि	२२:१८	विष	५४:५४	३०:४२	६:२३	१८:४०	सिं·५६:३१	२९:०१	मानस	१७	अप्रैल	**श्रीकामदा एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त),**
२	१२ र	५९:५०	३०:१८	मघा	६०:००	अहोरात्र	शूल	५३:०१	२७:३५	बव	२७:२७	बाल	५९:५०	३०:४६	६:२२	१८:४१	सिंह	अहोरात्र	मुद्गर	१८	२	**श्रीकामदा एकादशी (निम्बार्क), हरि दमनोत्सव,**
३	१३ चं	६०:००	अहोरात्र	मघा	०२:४६	०७:२८	गण्ड	५३:४८	२७:५२	कौल	३२:०४	तैति	६०:००	३०:५०	६:२१	१८:४१	सिंह	अहोरात्र	ध्वांक्ष	१९	३	**सोमप्रदोष व्रतम्, श्रीमहावीर जयन्ती,** अनंग त्रयोदशी
४	१३ मं	०४:०४	०७:५७	पू·फा·	०८:१८	०९:३९	वृद्धि	५३:५०	२७:५२	तैति	०४:०४	गर	३५:४७	३०:५४	६:२०	१८:४२	कं·२४:३२	१६:०९	धूम्र	२०	४	**शिव दमनोत्सव चतुर्दशी**
५	१४ बु	०७:१६	०९:१३	उ·फा·	१२:५१	११:२७	ध्रुव	५२:५९	२७:३०	वणि	०७:१६	विष	३८:२४	३०:५८	६:१९	१८:४२	कन्या	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	२१	५	**चैत्रपूर्णिमा** (व्रत), **नृसिंह दोलोत्सव,**
६	१५ गु	०९:१६	१०:००	हस्त	१६:१५	१२:४८	व्याघ·	५१:१०	२६:४६	बव	०९:१६	बाल	३९:४७	३१:०२	६:१८	१८:४३	तु·४७:२८	२६:१७	राक्षस	२२	६	**चैत्रपूर्णिमा** (स्नान–दान), **श्रीहनुमानजयन्ती,**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क	तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर	चन्द्रोदयः
मार्च	वार	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि			मि:से	
२२	१ बु	११:०६:५२:३०	११:१०:४२:२१	०२:०३:२१:५८	११:१४:४३:४६	११:२३:२९:५९	००:१३:०९:५६	१०:०४:२६:१६	१२:१४:१२:१८	४५:००:५९	द·००:०९:१२	– ८:३५	०६:४६
२३	२ गु	११:०७:५२:०४	११:२४:३१:३९	०२:०३:५०:२०	११:१६:२५:३९	११:२३:४४:२१	००:१४:२१:१९	१०:०४:३३:०३	१२:१४:०९:०८	४५:०३:०२	उ·००:१५:०२	– ८:१७	०७:२३
२४	३ शु	११:०८:५१:३६	००:०८:०७:११	०२:०४:१८:५४	११:१८:०६:२९	११:२३:५८:४४	००:१५:३२:३७	१०:०४:३९:४८	१२:१४:०५:५७	४५:०५:०५	उ·००:३९:१४	– ७:५८	०८:००
२५	४ श	११:०९:५१:०५	००:२१:२७:४२	०२:०४:४७:३८	११:१९:४६:११	११:२४:१३:०८	००:१६:४३:५०	१०:०४:४६:३१	१२:१४:०२:४६	४५:०७:०८	उ·०१:०३:२५	– ७:३९	०८:४२
२६	५ र	११:१०:५०:३२	०१:०४:३२:४२	०२:०५:१६:३२	११:२१:२४:३८	११:२४:२७:३४	००:१७:५४:५७	१०:०४:५३:११	१२:१३:५९:३६	४५:०९:११	उ·०१:२७:३४	– ७:२०	०९:२३
२७	६ चं	११:११:४९:५७	०१:१७:२२:२५	०२:०५:४५:३७	११:२३:०१:४५	११:२४:४२:०१	००:१९:०५:५८	१०:०४:५९:४८	१२:१३:५६:२५	४५:११:१३	उ·०१:५१:४१	– ७:०२	१०:११
२८	७ मं	११:१२:४९:२०	०१:२९:५७:५३	०२:०६:१४:५२	११:२४:३७:२६	११:२४:५६:२९	००:२०:१६:५४	१०:०५:०६:२३	१२:१३:५३:१४	४५:१३:१६	उ·०२:१५:४५	– ६:४३	१०:५९
२९	८ बु	११:१३:४८:४०	०२:१२:२०:४८	०२:०६:४४:१७	११:२६:११:३३	११:२५:१०:५९	००:२१:२७:४५	१०:०५:१२:५६	१२:१३:५०:०४	४५:१५:१८	उ·०२:३९:४६	– ६:२४	११:५१
३०	९ गु	११:१४:४७:५८	०२:२४:३३:३२	०२:०७:१३:५२	११:२७:४३:६०	११:२५:२५:२९	००:२२:३८:२९	१०:०५:१९:२६	१२:१३:४६:५३	४५:१७:२०	उ·०३:०३:४४	– ६:०५	१२:४४
३१	१० शु	११:१५:४७:१३	०३:०६:३८:५९	०२:०७:४३:३६	११:२९:१४:३७	११:२५:३९:६०	००:२३:४९:०८	१०:०५:२५:५३	१२:१३:४३:४२	४५:१९:२१	उ·०३:२७:३८	– ५:४६	१३:३८
अप्रैल	११ श	११:१६:४६:२७	०३:१८:४०:२५	०२:०८:१३:२९	००:००:४३:१८	११:२५:५४:३१	००:२४:५९:४०	१०:०५:३२:१७	१२:१३:४०:३२	४५:२१:२३	उ·०३:५१:२८	– ५:२७	१४:३२
२	१२ र	११:१७:४५:३८	०४:००:४१:३५	०२:०८:४३:३२	००:०२:०९:५३	११:२६:०९:०४	००:२६:१०:०७	१०:०५:३८:३८	१२:१३:३७:२१	४५:२३:२४	उ·०४:१५:१४	– ५:०८	१५:२६
३	१३ चं	११:१८:४४:४६	०४:१२:४६:२१	०२:०९:१३:४३	००:०३:३४:१३	११:२६:२३:३७	००:२७:२०:२७	१०:०५:४४:५६	१२:१३:३४:११	४५:२५:२५	उ·०४:३८:५५	– ४:५०	१६:१९
४	१३ मं	११:१९:४३:५३	०४:२४:५८:०२	०२:०९:४४:०३	००:०४:५६:०७	११:२६:३८:११	००:२८:३०:४१	१०:०५:५१:१२	१२:१३:३०:६०	४५:२७:२५	उ·०५:०२:३१	– ४:३१	१७:१२
५	१४ बु	११:२०:४२:५८	०५:०७:१९:३३	०२:१०:१४:३२	००:०६:१५:२५	११:२६:५२:४५	००:२९:४०:४८	१०:०५:५७:२४	१२:१३:२७:४९	४५:२९:२६	उ·०५:२६:०२	– ४:१२	१८:०७
६	१५ गु	११:२१:४२:००	०५:१९:५३:२१	०२:१०:४५:०९	००:०७:३१:५४	११:२७:०७:२०	०१:००:५०:४९	१०:०६:०३:३३	१२:१३:२४:३९	४५:३१:२६	उ·०५:४९:२७	– ३:५४	१९:०२

२५ मार्च सूर्योदयकालीन तिथिः४

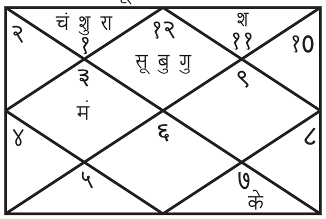

१ अप्रैल सूर्योदयकालीन तिथिः११

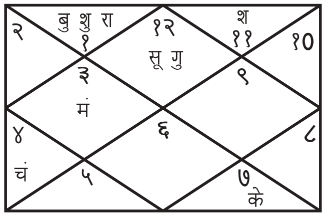

चैत्र शुक्लपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, २२ मार्च से ६ अप्रैल, २०२३ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःदक्षिण । ऋतुःवसन्त । उत्तरायणं । याम्य गोलः । ति·१५ अयनांशाः२२:५१:३५

दिनाङ्क मार्च	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
२२	१ बु	पंचांग फलश्रवण, गुड़ी पड़वा, **पंचक**, भरण्यांशुक्रः घं·१०:०७।
२३	२ गु	कड़क पूजा (बंगाल), **पंचकान्तः१६:१०, गण्डान्तः१०:१९–२२:०३**, ①
२४	३ शु	वैधृति पुण्यम्, गौरी तृतीया, मनोरथ तृतीया, मेवाड़ उत्सव आरम्भ।
२५	४ श	**भद्रा ७:१८–१९:०८घं·**। ① रेवत्यांबुधःघं·१०:०७।
२६	५ र	गुरु हरगोविन्द पुण्यदिवस, मेवाड़ उत्सव समाप्त, कल्पादि।
२७	६ चं	अशोक षष्ठी (बंगाल), बुध पश्चिमोदित घं·१४:३२।
२८	७ मं	**भद्रारंभः२०:५१घं·**, महानिशा पूजा (निशीथव्यापिनी अष्टम्यां), ②
२९	८ बु	**भद्रांतः९:३४घं·**, श्री भवानी उत्पत्ति। ② आर्द्रायांमङ्गलःघं·२७:०७।
३०	९ गु	**श्रीरामजन्मभूमि दर्शन अयोध्या**, स्वामीनारायण जयन्ती (अक्षरधाम)।
३१	१० शु	धर्मराजदशमी, गुरु पश्चिमास्त घं·१६:२६, रेवत्यांरविःघं·२७:४७, ③
अप्रैल	११ श	**भद्रा १५:१९–२८:२१घं·**, लक्ष्मीकान्त दोलोत्सव, **गण्डान्तारम्भः२२:२१**, ④
२	१२ र	मदन द्वादशी, श्यामबाबा द्वादशी, **गण्डान्तः११:३८**, कृत्तिकायांशुक्रःघं·१६:४३।
३	१३ चं	। ③ आश्वन्यांबुधःघं·१८:४६।
४	१३ मं	। ④ बुधःपश्चिमोदितः घं·१०:०३।
५	१४ बु	**भद्रा ९:१४–२१:४१घं·**, वृषेशुक्रः घं·१३:०३।
६	१५ गु	**वैशाखस्नान आरम्भ, मन्वादि, श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा**, छत्रपति शिवाजी पुण्यदिवस।

❀ चैत्रशुक्लपक्ष – कृत्य एवं मुहूर्त्त ❀

❀**नववर्षारम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा–** यदि उदयकाल में प्रतिपदा का मान स्वल्प भी हो तो उसी दिन वर्षारम्भ होता है। यह चान्द्रवर्ष होता है– *तत्रौदयिकी प्रतिपद् ग्राह्या। दिनद्वये उदयव्यासौ अव्यासौ वा पूर्वा (धर्मसिन्धु, परिच्छेद २, वर्षनिर्णय)।*

❀ **वासन्तिक नवरात्रि–** चैत्र शुक्ल प्रतिपदा मुहूर्त्तमात्र भी द्वितीयायुक्त ग्राह्य होती है– *''परयुता मुहूर्त्तमात्रापि प्रतिपद् ग्राह्या (धर्मसिन्धु, द्वितीय परिच्छेद)।''* **घटस्थापना मुहूर्त्त – प्रातःकाल वृष मिथुन लग्न में ०९:१७ से १३:२७ तक** नवरात्रि में चित्रा नक्षत्र एवं वैधृति योग में कभी भी कलशस्थापन नहीं करना चाहिए।(रुद्रयामल) इस वर्ष चित्रा नक्षत्र व वैधृति योग न होने से उ.भा. नक्षत्र व शुक्ल/ब्रह्म योग में कलश–स्थापन का श्रेष्ठ मुहूर्त्त है।

अखण्ड दीप जलाने का मन्त्र – अखण्डदीपकं देव्याः प्रीतये नवरात्रिकम्। प्रज्वालयेद् अहोरात्रं एकचित्तं दृढव्रतः।।

❀ **श्रीरामनवमी–** चैत्र शुक्ल नवमी के मध्याह्न में पुनर्वसु नक्षत्र, कर्क लग्न में प्रभु श्रीराम का जन्म हुआ था। व्रतपूर्वक श्रीरामजी का जन्माभिषेक कर श्रीरामचरितमानस, श्रीरामरक्षास्तोत्र का पाठ करे। श्रीरामचन्द्रजी व तीनों भाइयों को निम्न मंत्र से अर्घ्य दें– *दशाननवधार्थाय धर्मसंस्थापनाय च। राक्षसानां विनाशाय दैत्यानां निधनाय च।*
परित्राणाय साधूनां जातो रामः स्वयं हरिः । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं भ्रातृभिः सहितोनघ ।।

❀ **दुर्गापाठ हवन व बलिदान–** नवमी तिथि में दुर्गापाठ का हवन करना चाहिए– *''नवम्यां पूजां विधाय होमः कार्यः''* (धर्मसिन्धु)। नवरात्रि पारणा दशमी में होती है– *''दशम्यामेव पारणा''*।

❀ **निम्बपत्रभक्षण–** चैत्र शुक्लपक्ष में निम्ब की सुकोमल पत्तियों एवं पुष्पों का चूर्ण बनाकर उसमें मरीचि (कालीमिर्च), सेंधा नमक, हींग, जीरा एवं आजवाइन को सम मात्रा में मिला कर खाने से वर्षपर्यन्त रक्तविकार एवं चर्मरोग नहीं होता है।
''पारिभद्रस्य पत्राणि कोमलानि विशेषतः । सपुष्पाणि समानीय चूर्णं कृत्वा विधानतः।
मरीचिं लवणं हिंगुं जीरकेण च संयुतम्। अजमोदयुतं कृत्वा भक्षयेद्रोगशान्तये।।''

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	१२:११–१३:४७
१५	१२:०५–१३:४५

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि· भारतीय मानक समयानुसार

मार्च	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
२२	०७:४१	०९:१७	११:१३	१३:२७	१५:४७	१८:०४	२०:१९	२२:३७	००:५६	०३:०२	०४:४६	०६:१६
२३	०७:३७	०९:१३	११:०९	१३:२३	१५:४३	१८:००	२०:१५	२२:३३	००:५२	०२:५८	०४:४२	०६:१२
२४	०७:३३	०९:०९	११:०५	१३:१९	१५:३९	१७:५६	२०:११	२२:२९	००:४८	०२:५४	०४:३८	०६:०८
२५	०७:२९	०९:०५	११:०१	१३:१५	१५:३५	१७:५२	२०:०७	२२:२६	००:४४	०२:५०	०४:३४	०६:०३
२६	०७:२५	०९:०१	१०:५७	१३:११	१५:३१	१७:४८	२०:०३	२२:२२	००:४०	०२:४६	०४:३०	०५:५९
२७	०७:२१	०८:५७	१०:५३	१३:०७	१५:२७	१७:४४	१९:५९	२२:१८	००:३६	०२:४२	०४:२६	०५:५६
२८	०७:१७	०८:५३	१०:४९	१३:०३	१५:२४	१७:४०	१९:५५	२२:१४	००:३३	०२:३८	०४:२२	०५:५२
२९	०७:१३	०८:४९	१०:४५	१२:५९	१५:२०	१७:३६	१९:५१	२२:१०	००:२९	०२:३४	०४:१९	०५:४८
३०	०७:०९	०८:४५	१०:४१	१२:५६	१५:१६	१७:३२	१९:४७	२२:०६	००:२५	०२:३०	०४:१५	०५:४४
३१	०७:०५	०८:४१	१०:३७	१२:५२	१५:१२	१७:२८	१९:४३	२२:०२	००:२१	०२:२६	०४:११	०५:४०
अप्रैल	०७:०२	०८:३७	१०:३३	१२:४८	१५:०८	१७:२४	१९:३९	२१:५८	००:१७	०२:२२	०४:०७	०५:३६
२	०६:५८	०८:३४	१०:३०	१२:४४	१५:०४	१७:२०	१९:३५	२१:५४	००:१३	०२:१८	०४:०३	०५:३२
३	०६:५४	०८:३०	१०:२६	१२:४०	१५:००	१७:१६	१९:३१	२१:५०	००:०९	०२:१४	०३:५९	०५:२८
४	०६:५०	०८:२६	१०:२२	१२:३६	१४:५६	१७:१२	१९:२७	२१:४६	००:०५	०२:१०	०३:५५	०५:२४
५	०६:४६	०८:२२	१०:१८	१२:३२	१४:५२	१७:०८	१९:२३	२१:४२	००:०१	०२:०६	०३:५१	०५:२०
६	०६:४२	०८:१८	१०:१४	१२:२८	१४:४८	१७:०५	१९:१९	२१:३८	२३:५७	०२:०३	०३:४७	०५:१६

मार्च	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, अमृत, रवि आदि योग 卐
२२	**अमृत**·१, **सिद्ध**·२,
२३	**द·ति**·२, **सर्वार्थ**·रे, **सर्वार्थ**·अ, **अमृत**·३,
२४	**द·ति**·२, **सर्वार्थ**·अ, **रवियोग**ःभ, **अमृत**·४,
२५	**सिद्ध**·४, **रवियोग**ःभ, **मृत्यु**·५,
२६	**अमृत**·५, **रवियोग**ःरो, **मृत्यु**·६,
२७	**सर्वार्थ**·रो, **सिद्ध**·६, **रवियोग**ःरो, **सर्वार्थ**·मृ, **मृत्यु**·७,
२८	**अमृत**·७, **द्विपुष्कर**ः७+मृ, **सिद्ध**·८,
२९	**मृत्यु**·८, **रवियोग**ःपुन,
३०	**सर्वार्थ**·पुन, **रवियोग**ःपुन, **सर्वार्थ**·पु, **रवियोग**ःपु, **सिद्ध**·१०,
३१	**रवियोग**ःपु, **सिद्ध**·११, **रवियोग**ःआश्ले
अप्रैल	**अमृत**·११, **रवियोग**ःआश्ले,
२	**सिद्ध**·१३
४	**सिद्ध**·१३, **रवियोग**ःउफा,
५	**रवियोग**ःउफा, **सर्वार्थ**·ह,
६	**सिद्ध**·१५,

❀ सृष्टि और सतयुग का आरम्भ **चैत्र शुक्ल प्रतिपदा** को हुआ था। इस दिन संवत्सर पूजन, नवरात्रि घटस्थापन, पंचांग श्रवण, निज गृह पर ध्वजारोपण करें, श्रीठाकुरजी को नवीन पोशाक धारण करावें, वंदनवार लगावें, शंखध्वनि पूर्वक **पिङ्गल नव संवत्सर २०८०** का अभिनन्दन करें। **चैत्र शुक्ल नवमी** को उपवास व भक्तिपूर्वक विधिविधान से भगवान् श्री रामचन्द्रजी का प्राकट्य महोत्सव करें। **श्रीरामनवमी** पूर्वविद्धा त्याज्य है। नवमी पूर्वविद्धा हो तो दशमी में व्रत करे और दशमी की वृद्धि ना हो तो पारणा का त्याग करने में भी कोई दोष नहीं। श्रीसनत्कुमारों ने कहा है **– चैत्र शुक्ल एकादशी** को श्रीभगवान् को डोल पर विराजमान करके भक्तिपूर्वक पूजाकर उन्हें झुलावें।

❀ **चैत्र शुक्ल पूर्णिमा** ६ अप्रैल को परम महाभागवत अंजनीनन्दन श्री हनुमान्जी का जयन्ती उत्सव उल्लासपूर्वक संपन्न करें।

वैशाख कृष्णपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, ७ अप्रैल से २० अप्रैल, २०२३ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– ७:४:२०२३ मार्गी गुरुःपश्चिमास्तः; मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः; मार्गी शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपश्चिमोदितः;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
अप्रैल	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	७ अप्रैल से २० अप्रैल
७	१ शु	१०:०१	१०:१७	चित्रा	१८:२५	१३:३८	हर्षण	४८:२१	२५:३७	कौल	१०:०१	तैति	३९:५२	३१:०६	६:१७	१८:४३	तुला	अहोरात्र	मुसल	२३	७	श्रीमहावीरजी रथयात्रा
८	२ श	०९:२७	१०:०२	स्वाती	१९:२०	१३:५९	वज्र	४४:३४	२४:०५	गर	०९:२७	वणि	३८:४२	३१:१०	६:१५	१८:४४	तुला	अहोरात्र	सिद्धि	२४	८	आशा द्वितीया
९	३ र	०७:४१	०९:१९	विशा·	१९:०४	१३:५२	सिद्धि	३९:५१	२२:११	विष	०७:४१	बव	३६:२२	३१:१४	६:१४	१८:४४	वृ·०४:१५	०७:५६	उत्पात	२५	९	**संकष्टी श्रीगणेशचतुर्थी,चन्द्रोदय घं·२२:०१**
१०	४ चं	०४:४८	०८:०९	अनु·	१७:४४	१३:१९	व्यति·	३४:१८	१९:५६	बाल	०४:४८	कौल	३२:५८	३१:१८	६:१३	१८:४५	वृश्चिक	अहोरात्र	मानस	२६	१०	सती अनुसूया जयन्ती
११	५ मं ६ मं	००:५७ ५५:१८	०६:३५ २८:४२	ज्ये·	१५:२९	१२:२४	वरी·	२८:०३	२९:२६	तैति	००:५७	गर	२८:४२	३१:२२	६:१२	१८:४५	ध·१५:२९	१२:२४	मुद्गर	२७	११	गुरु तेगबहादुर जयन्ती
१२	७ बु	५०:५८	२६:३४	मूल	१२:२८	११:१०	परिघ	२१:१४	१४:४१	विष	२३:४२	बव	५०:५८	३१:२६	६:११	१८:४६	धनु	अहोरात्र	ध्वज	२८	१२	श्रीकोकिला षष्ठी, गुरु अर्जुनदेव जयन्ती
१३	८ गु	४५:१३	२४:१५	पू·षा·	०८:५३	०९:४३	शिव	१३:५७	११:४५	बाल	१८:०९	कौल	४५:१३	३१:३०	६:१०	१८:४६	म·२२:५५	१५:२०	धाता	२९	१३	**बूढ़ा बास्योड़ा, श्रीकालाष्टमी**
१४	९ शु	३९:१३	२१:५०	उ·षा·	०४:५६	०८:०७	सिद्ध साध्य	०६:२३ ५२:१५	०८:४२ २९:३६	तैति	१२:१५	गर	३९:१३	३१:३४	६:०९	१८:४७	मकर	अहोरात्र	कालदंड	३०	१४	
१५	१० श	३३:१०	१९:२४	श्रवण धनिष्ठा	००:४७ ५५:५२	०६:२७ २८:४७	शुभ	५०:५७	२६:३१	वणि	०६:१२	विष	३३:१०	३१:३८	६:०८	१८:४७	कु·२८:४२	१७:३७	प्रवर्द्ध	१	१५	
१६	११ र	२७:१८	१७:०२	शत·	५२:४८	२८:१४	शुक्ल	४३:२८	२३:३०	बव	००:१३	बाल	२७:१८	३१:४२	६:०७	१८:४८	कुंभ	अहोरात्र	राक्षस	२	१६	**श्रीवरूथिनी एकादशी (वैष्णव,स्मार्त्त)**
१७	१२ चं	२१:४६	०२:४८	पू·भा·	४९:२४	२६:५१	ब्रह्म	३६:१९	२०:३७	तैति	२१:४६	गर	४९:११	३१:४५	६:०६	१८:४८	मी·३५:१२	२०:११	मुसल	३	१७	**सोम प्रदोष व्रतम्**
१८	१३ मं	१६:४८	१२:४८	उ·भा·	४६:३८	२४:४४	ऐन्द्र	२९:३९	१७:५७	वणि	१६:४८	विष	४४:३३	३१:४९	६:०५	१८:४९	मीन	अहोरात्र	सिद्धि	४	१८	**मास शिवरात्रि**
१९	१४ बु	१२:३४	११:०५	रेवती	४४:४२	२३:५७	वैधृ·	२३:३८	१५:३१	शकु	१२:३४	चतु	४०:४५	३१:५३	६:०४	१८:४९	मे·४४:४२	२३:४७	उत्पात	५	१९	**अमावस्या (पितृकार्य)**, वैधृति पुण्यम्
२०	३० गु	०९:१२	०९:४४	अश्वि·	४३:४४	२३:३२	विष्कु·	१८:२१	१३:२३	नाग	०९:१२	किं	३७:५४	३१:५७	६:०३	१८:५०	मेष	अहोरात्र	मानस	६	२०	**अमावस्या (देवकार्य)**, श्रीशुकदेव जयन्ती

औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः

दिनाङ्क अप्रैल	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः (मा/व) रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	राहुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
७	१ शु	११:२२:४१:००	०६:०२:४१:१४	०२:११:१५:५४	००:०८:४५:२३	११:२७:२१:५५	०१:०२:००:४३	१०:०६:०९:३८	१२:१३:२१:२८	४५:३३:२५	उ·०६:१२:४६	– ३:३६	१९:५९
८	२ श	११:२३:३९:५८	०६:१५:४४:१८	०२:११:४६:४७	००:०९:५५:३९	११:२७:३६:३०	०१:०३:१०:३१	१०:०६:१५:४१	१२:१३:१८:१७	४५:३५:२५	उ·०६:३५:५९	– ३:१८	२०:५९
९	३ र	११:२४:३८:५४	०६:२९:०२:५५	०२:१२:१७:४८	००:११:०२:२७	११:२७:५१:०५	०१:०४:२०:११	१०:०६:२१:४०	१२:१३:१५:०७	४५:३७:२४	उ·०६:५९:०४	– ३:००	२२:०१
१०	४ चं	११:२५:३७:४७	०७:१२:३६:३९	०२:१२:४८:५७	००:१२:०५:३३	११:२८:०५:४१	०१:०५:२९:४४	१०:०६:२७:३५	१२:१३:११:५६	४५:३९:२२	उ·०७:२२:०२	– २:४३	२३:०२
११	५ मं	११:२६:३६:३८	०७:२६:२४:२१	०२:१३:२०:१३	००:१३:०४:४२	११:२८:२०:१६	०१:०६:३९:१०	१०:०६:३३:२७	१२:१३:०८:४५	४५:४१:२०	उ·०७:४४:५३	– २:२५	२४:०४
१२	७ बु	११:२७:३५:२७	०८:१०:२४:०७	०२:१३:५१:३६	००:१३:५९:३७	११:२८:३४:५२	०१:०७:४८:२९	१०:०६:३९:१५	१२:१३:०५:३५	४५:४३:१८	उ·०८:०७:३६	– २:०८	२४:५९
१३	८ गु	११:२८:३४:१३	०८:२४:३३:३०	०२:१४:२३:०७	००:१४:५०:०१	११:२८:४९:२७	०१:०८:५७:४०	१०:०६:४४:५९	१२:१३:०२:२४	४५:४५:१५	उ·०८:३०:११	– १:५१	२५:५५
१४	९ शु	११:२९:३२:५७	०९:०८:४९:२९	०२:१४:५४:४५	००:१५:३५:३७	११:२९:०४:०२	०१:१०:०६:४३	१०:०६:५०:४०	१२:१२:५९:१४	४५:४७:११	द·२१:१४:४२	– १:३५	२६:४१
१५	१० श	००:००:३१:३९	०९:२३:०८:४६	०२:१५:२६:२९	००:१६:१६:०९	११:२९:१८:३७	०१:११:१५:३९	१०:०६:५६:१७	१२:१२:५६:०३	४५:४९:०७	उ·०९:१४:५५	– १:१९	२७:२६
१६	११ र	००:०१:३०:१९	१०:०७:२७:२४	०२:१५:५८:२१	००:१६:५१:१७	११:२९:३३:१२	०१:१२:२४:२६	१०:०७:०१:५०	१२:१२:५२:५२	४५:५१:०३	उ·०९:३७:०३	– १:०३	२८:०५
१७	१२ चं	००:०२:२८:५६	१०:२१:४१:४३	०२:१६:३०:१९	००:१७:२०:४६	११:२९:४७:४६	०१:१३:३३:०५	१०:०७:०७:१८	१२:१२:४९:४२	४५:५२:५८	उ·०९:५९:०१	– ०:४७	२८:४३
१८	१३ मं	००:०३:२७:३१	११:०५:४८:२८	०२:१७:०२:२३	००:१७:४४:१९	००:००:०२:२१	०१:१४:४१:३६	१०:०७:१२:४३	१२:१२:४६:३१	४५:५४:५२	उ·१०:२०:५०	– ०:३२	२९:२१
१९	१४ बु	००:०४:२६:०४	११:१९:४४:४८	०२:१७:३४:३४	००:१८:०१:४०	००:००:१६:५६	०१:१५:४९:५९	१०:०७:१८:०४	१२:१२:४३:२०	४५:५६:४६	उ·१०:४२:२८	– ०:१७	२९:५८
२०	३० गु	००:०५:२४:३५	००:०३:२८:२५	०२:१८:०६:५२	वक्री१८:१२:३८	००:००:३१:३१	०१:१६:५८:१२	१०:०७:२३:२०	१२:१२:४०:१०	४५:५८:३९	उ·११:०३:५६	– ०:०२	०६:३९

१० अप्रैल सूर्योदयकालीन तिथिः**४**

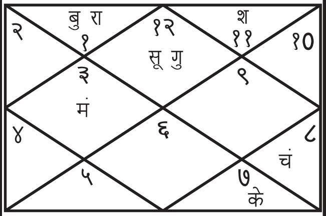

१६ अप्रैल सूर्योदयकालीन तिथिः**११**

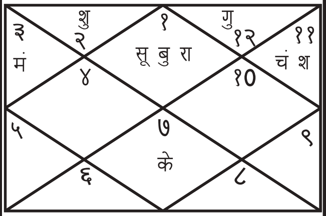

वैशाख कृष्णपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, ७ अप्रैल से २० अप्रैल, २०२३ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःदक्षिण । ऋतुःवसन्त । उत्तरायणं ।
याम्य गोलः मेषार्कतः सौम्यगोलः । ति·३० अयनांशाः२२:५१:३७

दिनाङ्क अप्रैल	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
७	१ शु	श्रीएकलिंगजी पाटोत्सव (मेवाड़)।
८	२ श	**भद्रारंभः २१:४५घं·।**
९	३ र	**भद्रांतः ९:१९घं·।**
१०	४ चं	व्यतीपात पुण्यम्। ① भरण्यांबुधःघं·१२:५१।
११	५ मं	**भद्रारंभः २८:४३घं·**, श्रीमलूकदासजी जयन्ती, **गण्डान्तः६:४०–१८:०७** ①
१२	७ बु	**भद्रांतः १५:४०घं·**, शतभिषायांशनिःघं·०९:३४।
१३	८ गु	**अभिजितारम्भः ५०:५५**, मासान्तः, रोहिण्यांशुक्रःघं·२७:५८।
१४	९ शु	**अभिजितान्तः८:३९, मेष संक्रान्ति पुण्यकालं,१३:१३–१८:४७घं·**, ②
१५	१० श	**भद्रा ८:३७–१९:२५घं·, पंचकारंभः१७:३७**, मासादिः।
१६	११ र	**पंचक, श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती।** ② आश्वन्यांमेषेरविःघं·१७:१३।
१७	१२ चं	**पंचक, श्रीसुव्रतनाथ जयंती**, आश्वन्यांगुरुःघं·२६:२३।
१८	१३ मं	**पंचक, भद्रा १२:४८–२३:५५घं·।**
१९	१४ बु	**पंचकान्तः २३:४७, गण्डान्तः १८:०७–२९:४९।**
२०	३० गु	वक्री बुधः घं·१७:३४।

ति	**श्राद्धकालं** घं·मि·
१	१२:०५–१३:४५
३०	१२:०१–१३:४३

❀ वैशाख मास कृत्य ❀

इस मास में भगवान् श्रीहरि की पूजा करने से दारुण पाप जलकर भस्म हो जाते हैं। वैशाख में प्रातःकाल पीपल वृक्ष की जड़ में प्रतिदिन जल देने से अपूर्व पुण्य की प्राप्ति व कुल का तारण होता है–"**अनेन अनेककुलतारणं फलम्।**"

वैशाख स्नान का महत्त्व– चैत्र पूर्णिमा से लेकर वैशाख पूर्णिमा तक सूर्योदयपूर्व संकल्पपूर्वक स्नान करने से समस्त पाप का नाश होता है। अशक्त होने की स्थिति में वैशाख शुक्ल त्रयोदशी से पूर्णिमा तक सूर्योदयपूर्व स्नान करना चाहिए। वैशाखमास में तुलसीपत्र से भगवान् विष्णु की त्रिकाल पूजा करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है–

माधवं सकलं मासं तुलस्या योऽर्चयेन्नरः ।
त्रिसन्ध्यं मधुहन्तारं नास्ति तस्य पुनर्भवः।

❀ शनि, रवि, मंगल को दाढ़ी–बाल न बनवायें ❀

शनि, रवि और मंगलवार को दाढ़ी, बाल, नाखून कटवाने से आयु घटती है। शेष दिनों में क्षौर कराने से आयु बढ़ती है। अनुराधा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, कृत्तिका और मघा नक्षत्र में भी दाढ़ी–बाल कटवाने से आयु की हानि होती है। **युक्षयोऽनुराधाग्नित्र्युत्तरारोहिणीमघे।।** जो लोग प्रतिदिन दाढ़ी बनाते हैं, उनपर यह दोष नहीं लगता है।

❀ नागशाप, कालसर्प व राहु–केतु शान्त्यर्थ वैदिक प्रयोग ❀

संकल्प– ॐ ... देशकाल संकीर्त्य ... अमुक गोत्रोत्पन्नोहं अमुक नामाहं मम जन्मकुण्डल्यां सामुद्रिकलक्षणे वा सर्पशापजनित–दोषोपशान्तये च ममेह जन्मनि जन्मान्तरे वा ज्ञानाद् अज्ञानाद् वा कृतस्य सर्पवधस्य तदुत्थदोषस्य परिहारार्थं जीविका– व्यवसाय– विद्या– विवाह– सत्पुत्र स्वास्थ्य– राजसत्ता– पदप्रतिष्ठासम्बन्धी समस्तविघ्ननिरसनपूर्वकं साफल्यं सम्प्राप्तये, प्राप्तश्रीरक्षणार्थं, राहुकेतुजनित समस्त–अशुभफल निवारणार्थं शुभफलप्राप्तिकामनया नागशापशान्त्यर्थं कालसर्पदोषशान्त्यर्थं च श्रीसर्पदेवताप्रीत्यर्थं यजुर्वेदीय त्रिमन्त्रात्मक सर्पसूक्तस्य द्वादशशत पाठ कर्माऽहं करिष्ये/ ब्राह्मणानां कारयिष्ये।

विनियोगः – ॐ अस्य सर्पसूक्तस्य देवश्रवा ऋषिः भुरिगुष्णिक् अनुष्टुप् निचृदनुष्टुप् नानाछन्दांसि सर्पसमूह देवता मम संकल्प सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

सर्पगायत्री–भुजङ्गेशाय विद्महे सर्पराजाय धीमहि । तन्नो नागः प्रचोदयात्।।

❀ सर्पसूक्तम् ❀

ॐ नमो अस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।।१।।
येऽदो रोचने दिवो ये वा सूर्यस्य रश्मिषु ।
येषामप्सु सदः कृतं तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।।२।।
या इषवो यातुधानानां ये वा वनस्पतीँरनु ।
ये वा वटेषु शेरते तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।।३।।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

अप्रैल	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीनः
७	०६:३८	०८:१४	१०:१०	१२:२४	१४:४४	१७:०१	१९:१६	२१:३४	२३:५३	०१:५९	०३:४३	०५:१२
८	०६:३४	०८:१०	१०:०६	१२:२०	१४:४०	१६:५७	१९:१२	२१:३०	२३:४९	०१:५५	०३:३९	०५:०८
९	०६:३१	०८:०६	१०:०२	१२:१६	१४:३६	१६:५३	१९:०८	२१:२६	२३:४५	०१:५१	०३:३५	०५:०४
१०	०६:२७	०८:०३	०९:५८	१२:१२	१४:३२	१६:४९	१९:०४	२१:२३	२३:४१	०१:४७	०३:३१	०५:००
११	०६:२३	०७:५९	०९:५४	१२:०८	१४:२८	१६:४५	१९:००	२१:१९	२३:३७	०१:४३	०३:२७	०४:५६
१२	०६:१९	०७:५५	०९:५०	१२:०४	१४:२४	१६:४१	१८:५६	२१:१५	२३:३४	०१:३९	०३:२३	०४:५३
१३	०६:१५	०७:५१	०९:४६	१२:००	१४:२१	१६:३७	१८:५२	२१:११	२३:३०	०१:३५	०३:१९	०४:४९
१४	०६:११	०७:४७	०९:४२	११:५६	१४:१७	१६:३३	१८:४८	२१:०७	२३:२६	०१:३१	०३:१६	०४:४५
१५	०६:०७	०७:४३	०९:३८	११:५२	१४:१३	१६:२९	१८:४४	२१:०३	२३:२२	०१:२७	०३:१२	०४:४१
१६	०६:०३	०७:३९	०९:३४	११:४९	१४:०९	१६:२५	१८:४०	२०:५९	२३:१८	०१:२३	०३:०८	०४:३७
१७	०५:५९	०७:३५	०९:३०	११:४५	१४:०५	१६:२१	१८:३६	२०:५५	२३:१४	०१:१९	०३:०४	०४:३३
१८	०५:५५	०७:३१	०९:२७	११:४१	१४:०१	१६:१७	१८:३२	२०:५१	२३:१०	०१:१५	०३:००	०४:२९
१९	०५:५१	०७:२७	०९:२३	११:३७	१३:५७	१६:१३	१८:२८	२०:४७	२३:०६	०१:११	०२:५६	०४:२५
२०	०५:४७	०७:२३	०९:१९	११:३३	१३:५३	१६:०९	१८:२४	२०:४३	२३:०२	०१:०७	०२:५२	०४:२१

अप्रैल	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
७	**द·ति·**२, **सिद्ध·**१, **मृत्यु·**२,
८	**द·ति·**२, **सर्वार्थ·**स्वा,
९	**सिद्ध·**३,
१०	**सर्वार्थ·**अनु, **अमृत·**५,
११	**मृत्यु·**६, **रवियोगः**मू, **अमृत·**७,
१२	**सिद्ध·**७, **रवियोगः**मू, **मृत्यु·**८,
१३	**अमृत·**८, **मृत्यु·**९,
१४	**अमृत·**९, **सर्वार्थ·**श्र,
१५	**सर्वार्थ·**श्र, **मृत्यु·**१०, **अमृत·**११,
१६	**मृत्यु·**११, **त्रिपुष्करः**१२+पूभा,
१७	**मृत्यु·**१२,
१८	**सर्वार्थ·**उभा, **सिद्ध·**१३,
२०	**सर्वार्थ·**अ, **सिद्ध·**१५,

❀ वैशाख मास में विशेष दान ❀

वैशाख में जलदान करने का विशेष पुण्य है। मिट्टी के घड़े द्रोण कलश में सुगन्धित शीतल जल भरकर दान करने का अपूर्व महत्व होता है। **इस मास में शिवलिंग पर कलश से जल टपकाने की व्यवस्था करना अक्षय पुण्यकारी होता है।** गर्मी से बचाने वाली वस्तु, मटका, जल दान, जूता, चप्पल, छाता, कपड़ा, पंखा, चंदन, मलमल वस्त्र, कर्पूर, ताम्बूल, फूल माला, सुगन्धित पदार्थ, शर्बत, अंगूर, तरबूज, खीरा, आम्र आदि दान करने से अक्षयफल की प्राप्ति होती है। वैशाख में प्रपा (प्याऊ) लगाने का महत्व है। प्यासे पशु पक्षियों को पानी दें।

प्रपा कार्याच वैशाखे देवे देया गलन्तिका।
उपानद्व्यजनंछत्रं सूक्ष्मवासांसि चंदनम् ॥

वैशाख शुक्लपक्षः पिङ्गल संवत् २०८० शाके १९४५, २१ अप्रैल से ५ मई, २०२३

ग्रहस्थितिः– २१:४:२०२३ मार्गी गुरुःपश्चिमास्त; मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः; मार्गी शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; वक्री बुधःपश्चिमोदितः; **मध्यम गुरु संवत्सरारम्भ** :ति·:१०, १:४७:४ दण्डादि

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
अप्रैल	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	२१ अप्रैल से ५ मई
२१	१ शु	०६:५४	०८:४७	भरणी	४३:५२	२३:३५	प्रीति	१३:५६	११:३६	बव	०६:५४	बाल	३६:१०	३२:०१	६:०२	१८:५०	वृ·५९:०६	२९:४०	मुद्गर	७	२१	गुरु अंगददेव जयन्ती
२२	२ श	०५:४६	०८:१९	कृत्ति·	४५:१४	२४:०६	आयु·	१०:२७	१०:१२	कौल	०५:४६	तैति	३५:३९	३२:०४	६:०१	१८:५१	वृष	अहोरात्र	ध्वज	८	२२	श्रीपरशुराम जयन्ती (स्मार्त्त)
२३	३ र	०५:५४	०८:२१	रोहि·	४७:५०	२५:०८	सौभा·	०७:५९	०९:११	गर	०५:५४	वणि	३६:२६	३२:०८	६:००	१८:५१	वृष	अहोरात्र	धाता	९	२३	अक्षय तृतीया, श्रीपरशुराम जयन्ती (वैष्णव)
२४	४ चं	०७:१८	०८:५४	मृग·	५१:३९	२६:३९	शोभ·	०६:३१	०८:३५	विष	०७:१८	बव	३८:२७	३२:१२	५:५९	१८:५२	मि·१९:३७	१३:५०	आनन्द	१०	२४	① श्रीमद् रामानुजाचार्य जयन्ती
२५	५ मं	०९:५६	०९:५६	आर्द्रा	५६:३४	२८:३६	अतिग·	०५:६०	०८:२२	बाल	०९:५६	कौल	४१:३९	३२:१५	५:५८	१८:५२	मिथुन	अहोरात्र	सुस्थिर	११	२५	श्रीमद् आद्य शंकराचार्य जयन्ती ①
२६	६ बु	१३:३९	११:२५	पुन·	६०:००	अहोरात्र	सुकर्मा	०६:२०	०८:२९	तैति	१३:३९	गर	४५:४९	३२:१९	५:५७	१८:५३	क·४५:५२	२४:१८	गद	१२	२६	श्रीगंगासप्तमी
२७	७ गु	१८:१२	१३:१३	पुन·	०२:२५	०६:५४	धृति	०७:२१	०८:५३	वणि	१८:१२	विष	५०:४१	३२:२२	५:५६	१८:५३	कर्क	अहोरात्र	सिद्धि	१३	२७	श्रीकामदा सप्तमी, शर्करा सप्तमी, निम्ब सप्तमी
२८	८ शु	२३:१६	१५:१४	पुष्य	०८:४८	०९:२७	शूल	०८:४८	०९:२७	बव	२३:१६	बाल	५५:५२	३२:२६	५:५५	१८:५४	कर्क	अहोरात्र	उत्पात	१४	२८	श्रीदुर्गाष्टमी, श्रीबगलामुखी जयन्ती
२९	९ श	२८:२७	१७:१७	आश्ले·	१५:२३	१२:०४	गण्ड	१०:२६	१०:०५	कौल	२८:२७	तैति	६०:००	३२:३०	५:५४	१८:५४	सिं·१५:२३	१२:०४	मानस	१५	२९	श्रीजानकी नवमी (वैष्णव,स्मार्त्त)
३०	१० र	३३:१६	१९:१२	मघा	२१:४३	१४:३५	वृद्धि	११:५२	१०:३८	तैति	००:५६	गर	३३:१६	३२:३३	५:५४	१८:५५	सिंह	अहोरात्र	मुद्गर	१६	३०	श्रीमहावीर स्वामी कैवल्यज्ञान
मई	११ चं	३७:२३	२०:५०	पू·फा·	२७:२६	१६:५१	ध्रुव	१२:५२	११:०२	वणि	०५:२७	विष	३७:२३	३२:३७	५:५३	१८:५६	कं·४३:४३	२३:२२	ध्वज	१७	मई	श्रीमोहिनी एकादशी (वैष्णव,स्मार्त्त)
२	१२ मं	४०:३०	२२:०४	उ·फा·	३२:१३	१८:४५	व्याघ·	१३:१०	११:०८	बव	०९:०५	बाल	४०:३०	३२:४०	५:५२	१८:५६	कन्या	अहोरात्र	धाता	१८	२	श्रीपरशुराम द्वादशी
३	१३ बु	४२:२६	२२:४९	हस्त	३५:५३	२०:१२	हर्षण	१२:३७	१०:५४	कौल	११:३८	तैति	४२:२६	३२:४३	५:५१	१८:५७	कन्या	अहोरात्र	आनन्द	१९	३	प्रदोष व्रतम्
४	१४ गु	४३:०६	२३:०५	चित्रा	३८:२०	२१:१०	वज्र	११:०७	१०:१७	गर	१२:५६	वणि	४३:०६	३२:४७	५:५०	१८:५७	तु·०७:१७	०८:४५	सुस्थिर	२०	४	श्रीनृसिंह जयन्ती (वैष्णव,स्मार्त्त)
५	१५ शु	४२:२९	२२:४९	स्वाती	३९:३२	२१:३८	सिद्धि	०८:३७	०९:१६	विष	१२:५७	बव	४२:२९	३२:५०	५:४९	१८:५८	तुला	अहोरात्र	गद	२१	५	वैशाखी पूर्णिमा (व्रत–स्नान–दान), बुद्ध पूर्णिमा

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क अप्रैल	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	वक्री बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	राहुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
२१	१ शु	००:०६:२३:०३	००:१६:५७:३९	०२:१८:३९:१५	००:१८:१७:०३	००:००:४६:०६	०१:१८:०६:१७	१०:०७:२८:३२	१२:१२:३६:५९	४६:००:३१	उ·११:२५:१३	+ ०:१२	०६:३८
२२	२ श	००:०७:२१:३०	०१:००:११:३३	०२:१९:११:४५	००:१८:१४:४७	००:०१:००:४१	०१:१९:१४:१२	१०:०७:३३:४०	१२:१२:३३:४८	४६:०२:२३	उ·११:४६:१८	+ ०:२५	०७:१९
२३	३ र	००:०८:१९:५४	०१:१३:०९:५६	०२:१९:४४:२०	००:१८:०५:५२	००:०१:१५:१६	०१:२०:२१:५९	१०:०७:३८:४३	१२:१२:३०:३८	४६:०४:१४	उ·१२:०७:१२	+ ०:३९	०८:०४
२४	४ चं	००:०९:१८:१६	०१:२५:५३:२३	०२:२०:१७:०१	००:१७:५०:२०	००:०१:२९:५१	०१:२१:२९:३५	१०:०७:४३:४२	१२:१२:२७:२७	४६:०६:०४	उ·१२:२७:५४	+ ०:५२	०८:५३
२५	५ मं	००:१०:१६:३६	०२:०८:२३:१४	०२:२०:४९:४८	००:१७:२८:२६	००:०१:४४:२६	०१:२२:३७:०२	१०:०७:४८:३६	१२:१२:२४:१६	४६:०७:५३	उ·१२:४८:२४	+ १:०४	०९:४२
२६	६ बु	००:११:१४:५३	०२:२०:४१:३०	०२:२१:२२:४०	००:१७:००:२७	००:०१:५९:०१	०१:२३:४४:१९	१०:०७:५३:२६	१२:१२:२१:०६	४६:०९:४२	उ·१३:०८:४१	+ १:१६	१०:३६
२७	७ गु	००:१२:१३:०९	०३:०२:५०:४६	०२:२१:५५:३८	००:१६:२६:५४	००:०२:१३:३५	०१:२४:५१:२५	१०:०७:५८:११	१२:१२:१७:५५	४६:११:२९	उ·१३:२८:४६	+ १:२७	११:२९
२८	८ शु	००:१३:११:२२	०३:१४:५४:०७	०२:२२:२८:४१	००:१५:४८:२४	००:०२:२८:०८	०१:२५:५८:२१	१०:०८:०२:५१	१२:१२:१४:४४	४६:१३:१६	उ·१३:४८:३७	+ १:३९	१२:२३
२९	९ श	००:१४:०९:३४	०३:२६:५४:५९	०२:२३:०१:५०	००:१५:०५:४३	००:०२:४२:४२	०१:२७:०५:०७	१०:०८:०७:२६	१२:१२:११:३४	४६:१५:०२	उ·१४:०८:१४	+ १:४९	१३:१७
३०	१० र	००:१५:०७:४३	०४:०८:५७:२०	०२:२३:३५:०४	००:१४:१९:४६	००:०२:५७:१४	०१:२८:११:४१	१०:०८:११:५६	१२:१२:०८:२३	४६:१६:४७	उ·१४:२७:३८	+ १:५९	१४:१०
मई	११ चं	००:१६:०५:५०	०४:२१:०४:४५	०२:२४:०८:२२	००:१३:३१:३४	००:०३:११:४६	०१:२९:१८:०४	१०:०८:१६:२१	१२:१२:०५:१३	४६:१८:३१	उ·१४:४६:४७	+ २:०९	१५:०३
२	१२ मं	००:१७:०३:५६	०५:०३:२०:२३	०२:२४:४१:४६	००:१२:४२:१६	००:०३:२६:१७	०२:००:२४:१५	१०:०८:२०:४२	१२:१२:०२:०२	४६:२०:१४	उ·१५:०५:४२	+ २:१८	१५:५७
३	१३ बु	००:१८:०१:५९	०५:१५:४६:६०	०२:२५:१५:१५	००:११:५३:०९	००:०३:४०:४७	०२:०१:३०:१५	१०:०८:२४:५७	१२:११:५८:५१	४६:२१:५६	उ·१५:२४:२२	+ २:२६	१६:५१
४	१४ गु	००:१८:५९:६०	०५:२८:२६:४५	०२:२५:४८:४८	००:११:०५:३०	००:०३:५५:१७	०२:०२:३६:०२	१०:०८:२९:०७	१२:११:५५:४१	४६:२३:३७	उ·१५:४२:४७	+ २:३४	१७:४७
५	१५ शु	००:१९:५७:५९	०६:११:२१:१०	०२:२६:२२:२६	००:१०:२०:२४	००:०४:०९:४५	०२:०३:४१:३७	१०:०८:३३:१२	१२:११:५२:३०	४६:२५:१७	उ·१६:००:५६	+ २:४१	१८:४६

२४ अप्रैल सूर्योदयकालीन तिथिः४

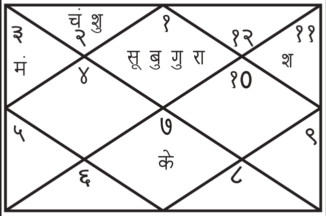

१ मई सूर्योदयकालीन तिथिः**११**

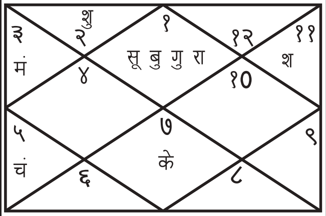

वैशाख शुक्लपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, २१ अप्रैल से ५ मई, २०२३ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःपश्चिम । ऋतुःवसन्त वृषार्कतः ऋतुःग्रीष्म ।
उत्तरायणं । सौम्यगोलः, ति·१५ अयनांशाः२२:५०:४६

दिनाङ्क अप्रैल	तिथि वार	卐 **व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार** (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
२१	१ शु	**श्री कुन्थुनाथ जयंती।**
२२	२ श	छत्रपति शिवाजी जयन्ती। (१) श्रीमातंगी जयन्ती, पुनर्वसौमङ्गलःघं·१७:३९।
२३	३ र	**वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी**, चन्दन श्रृंगार, **भद्रारंभः २०:३५घं·**, (१)
२४	४ चं	**भद्रांतः ८:५५घं·।** (१) त्रेतायुगादि, कल्पादि, जलकलश दान, रोहिणीव्रत (जैन)।
२५	५ मं	मृगशिरायांशुक्रःघं·२१:२६, बुध पश्चिमास्त घं·१७:२९।
२६	६ बु	**श्रीस्कन्दषष्ठी**, संत श्री सूरदास जयन्ती।
२७	७ गु	**भद्रा १३:१४–२६:१३घं·**, चन्दनषष्ठी।
२८	८ शु	**गण्डान्तारम्भः २९:२५**, श्रीकमला सप्तमी, भरण्यांरविःघं·०९:३०।
२९	९ श	**गण्डान्तः १८:४३**, गुरु पूर्वोदित घं·२०:२८।
३०	१० र	**श्रीहितहरिवंश महाप्रभु जयन्ती।**
मई	११ चं	**भद्रा ८:०४–२०:५०घं·**, विश्व मजदूर दिवस, आश्वन्यांबुधःघं·११:४१, (२)
२	१२ मं	। (२) मिथुनेशुक्रःघं·२१:१३।
३	१३ बु	।
४	१४ गु	**भद्रारंभः २३:०५घं·**, गुरु अमरदास जयन्ती।
५	१५ शु	**भद्रांतः ११:०१घं·**, **श्रीकूर्म जयन्ती**, **श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा**, **पीपल पूर्णिमा**, मेला देवयानी सांभर।

ति	**श्राद्धकालं** घं·मि·
१	१२:००–१३:४३
१५	११:५७–१३:४२

❀ वैशाख मास कृत्य ❀

❀ **अक्षयतृतीया**– वैशाख शुक्ल तृतीया को अक्षय तृतीया पूर्वाह्नव्यापिनी ग्राह्य होती है। दो दिन पूर्वाह्न में होने पर अगली तिथि ग्राह्य होती है। द्वितीया विद्धा अग्राह्य व चतुर्थी विद्धा शुभ होती है–

वैशाखशुक्लतृतीया अक्षय्यतृतीयोच्यते।
सापूर्वाह्नव्यापिनीग्राह्या। दिनद्वयेपितद्व्याप्तौपरैव।

(निर्णयसिन्धु)। इसमें जप, होम, पितृतर्पण, तिल या स्वर्ण आदि दान का अक्षयफल होता है। यह युगादि तिथि भी है।

❀ **चन्दनोत्सव**– भी इसी दिन करें। श्रीठाकुरजी को अभ्यंग पूर्वक स्नान कराकर गुलाब जल में घिसे हुए केशर–कपूर–चन्दन का सर्वांग में लेपन करें, अत्यन्त महीन–वस्त्र धारण करावें, आभूषण–पुष्पादि से श्रृंगार कर सिंहासन पर विराजमान करें।

❀ **श्रीगंगासप्तमी**– वैशाख शुक्ल सप्तमी के दिन महर्षि जह्नु ने अपने दाहिने कान से गंगा को पृथ्वी पर छोड़ा था। गंगा सप्तमी मध्याह्नव्यापिनी ग्राह्य होती है। दोनों दिन मध्याह्न व्यापिनी होने, या न होने पर पूर्वातिथि ग्राह्य होती है।

❀ श्रीनृसिंह मंत्रराज ❀

विनियोगः– ॐ अस्य श्री नृसिंह मन्त्रराजस्य ब्रह्मा ऋषिः अनुष्टुप् छंदः नृसिंह देवता हं बीजं ई शक्तिः श्रीनृसिंहप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः

सौम्य ध्यान –जान्वोरासक्ततीक्ष्णस्वनखरुचिलसद्बाहुसंस्पृष्टं,
केशश्चक्रं खड्गं च दोर्भ्यां दधदनलसमज्योतिषा ग्रस्तदैत्यः ।
ज्वालामालापरीतं रविशशिदहनत्रीक्षणं दीप्तजिह्वं,
दंष्ट्रोग्रं धूतकेशं वदनमपि वहन् पातु वो नारसिंहः ।।

मन्त्रः– **ॐ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतो मुखम् ।**
नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युं मृत्युं नमाम्यहम् ।

इस मन्त्र के दस हज़ार जप से पुरश्चरण होता है व ३२ हज़ार जप के बाद मन्त्र प्रयोग का अधिकारी बनता है। जप पूर्णता के लिए प्रतिदिन श्रीनरसिंह भगवान् की पूजा करते रहना चाहिए। इस मंत्र के जप के बाद द्वादशाक्षर मन्त्र का जप भी करना चाहिए।

❀ द्वादशाक्षर मन्त्र ❀

विनियोगः–ॐ अस्य श्रीद्वादशाक्षरमन्त्रस्य प्रजापति ऋषिः गायत्री छन्दः वासुदेव देवता ॐ बीजं नमः शक्तिः श्रीवासुदेवप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः। **ध्यानम्**:–

हरिमुज्जवल चक्रदराब्ज गदाकुलदोः परिघं सितपद्मगतम्।
वलयांगदहारकिरीटधरं नवकुन्दरुचं प्रणमामि सदा। (प्रपंचसारे)

मन्त्रः – **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय**

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

अप्रैल	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
२१	०५:४३	०७:१९	०९:१५	११:२९	१३:४९	१६:०५	१८:२०	२०:३९	२२:५८	०१:०३	०२:४८	०४:१७
२२	०५:३९	०७:१५	०९:११	११:२५	१३:४५	१६:०२	१८:१६	२०:३५	२२:५४	०१:००	०२:४४	०४:१३
२३	०५:३५	०७:११	०९:०७	११:२१	१३:४१	१५:५८	१८:१३	२०:३१	२२:५०	००:५६	०२:४०	०४:०९
२४	०५:३१	०७:०७	०९:०३	११:१७	१३:३७	१५:५४	१८:०९	२०:२७	२२:४६	००:५२	०२:३६	०४:०५
२५	०५:२७	०७:०३	०८:५९	११:१३	१३:३३	१५:५०	१८:०५	२०:२३	२२:४२	००:४८	०२:३२	०४:०१
२६	०५:२३	०६:५९	०८:५५	११:०९	१३:२९	१५:४६	१८:०१	२०:२०	२२:३८	००:४४	०२:२८	०३:५७
२७	०५:१९	०६:५५	०८:५१	११:०५	१३:२५	१५:४२	१७:५७	२०:१६	२२:३४	००:४०	०२:२४	०३:५३
२८	०५:१५	०६:५२	०८:४७	११:०१	१३:२१	१५:३८	१७:५३	२०:१२	२२:३०	००:३६	०२:२०	०३:५०
२९	०५:११	०६:४८	०८:४३	१०:५७	१३:१७	१५:३४	१७:४९	२०:०८	२२:२७	००:३२	०२:१६	०३:४६
३०	०५:०८	०६:४४	०८:३९	१०:५३	१३:१४	१५:३०	१७:४५	२०:०४	२२:२३	००:२८	०२:१३	०३:४२
मई	०५:०४	०६:४०	०८:३५	१०:४९	१३:१०	१५:२६	१७:४१	२०:००	२२:१९	००:२४	०२:०९	०३:३८
२	०५:००	०६:३६	०८:३१	१०:४५	१३:०६	१५:२२	१७:३७	१९:५६	२२:१५	००:२०	०२:०५	०३:३४
३	०४:५६	०६:३२	०८:२७	१०:४२	१३:०२	१५:१८	१७:३३	१९:५२	२२:११	००:१६	०२:०१	०३:३०
४	०४:५२	०६:२८	०८:२३	१०:३८	१२:५८	१५:१४	१७:२९	१९:४८	२२:०७	००:१२	०१:५७	०३:२६
५	०४:४८	०६:२४	०८:१९	१०:३४	१२:५४	१५:१०	१७:२५	१९:४४	२२:०३	००:०८	०१:५३	०३:२२

अप्रैल	卐 **सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग** 卐
२१	**सिद्ध**·१ ८:४७ तक, **मृत्यु**·२ ८:४७ से,
२२	**त्रिपुष्कर**ः२+कृ ८:१९ तक, **सर्वार्थ·रवियोग**ःरो ८:१९ से
२३	**सिद्ध**·३ ८:२१ तक, **रवियोग**ःरो २५:०८ तक,
२४	**सर्वार्थ**·मृ २६:३९तक, **अमृत**·५८:५४से, **रवियोग**ःआर२६:३९से,
२५	**रवियोग**ःआ २८:३६ तक, **मृत्यु**·६·**द·ति**·६ ९:५६ से,
२६	द·ति·६·**अमृत**·६ ११:२५ तक, **सिद्ध**·७ ११:२५ से
२७	**सर्वार्थ**·पुन·पु अहोरात्र, **अमृत**·८ १३:१३ से,
२८	**रवियोग**ःआश्ले ९:२७ से, **अमृत**·९ १५:१४ से,
२९	**सिद्ध**·९ १७:१७तक, **रवियोग**ःम१२:०४से, **मृत्यु**·१० १७:१७से,
३०	**अमृत**·१० १९:१२तक, **रवियोग**ःमःपूफा, **मृत्यु**·११ १९:१२
मई	**सिद्ध**·११ २०:५०तक, **रवियोग**ःपूफा१६:५१ तक,
२	**अमृत**·१२ २२:०४से, **त्रिपुष्कर**ः१२+उफा १८:४५ तक,
३	**सर्वार्थ**·ह २०:१२ तक, **रवियोग**ःचि २०:१२से,
४	**मृत्यु**·१४ २३:०५ तक, **रवियोग**ःचि २१:१० तक,
५	**सिद्ध**·१ २२:४९ से,

❀ **वैशाख शुक्ल तृतीया** को भगवान् श्री परशुरामजी का अवतार व त्रेतायुग की प्रवृत्ति हुई। उस दिन वेद धर्म की प्रवृत्ति हुई। यह अक्षय तृतीया श्रीहरि भगवान् को बहुत प्यारी है, इस में स्नान, दान, पूजा, श्राद्ध, जप और पितृ–तर्पण का अक्षय फल प्राप्त होता है। ३ मई।

❀ **वैशाख शुक्ल चतुर्दशी** ४ मई को श्रीनृसिंह भगवान् का व्रतपूर्वक, विधिपूर्वक जन्मोत्सव करें। यह व्रत नृसिंह भगवान् की तुष्टि के लिए पूर्णिमा से युक्त चतुर्दशी में करें। जो मनुष्य अज्ञानता से त्रयोदशी विद्ध चतुर्दशी का व्रत करता है, वह धन और सन्तान से वियोग पाता है इस कारण त्रयोदशी से युक्त चतुर्दशी का परित्याग करें, ऐसी स्कन्द पुराण में श्रीनृसिंह भगवान् की उक्ति है।

ज्येष्ठ कृष्णपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, ६ मई से १९ मई, २०२३ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– ६:५:२०२३ मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः; मार्गी शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; वक्री बुधःपश्चिमास्तः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		५ व्रत–पर्व–उत्सव ५
मई	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	६ मई से १९ मई
६	१ श	४०:३९	२२:०४	विशा·	३९:३१	२१:३७	व्यति·	०५:०७	०७:५२	बाल	११:४४	कौल	४०:३९	३२:५३	५:४९	१८:५८	वृ·२४:३८	१५:४०	शुभ	२२	६	**श्रीठाकुरजी की जलसेवा आरम्भ, श्रीनारद जयन्ती**
७	२ र	३७:४२	२०:५३	अनु·	३८:२५	२१:१०	वरी· परिघ	००:४१ ५४:४०	०६:०४ २७:५६	तैति	०९:१९	गर	३७:४२	३२:५७	५:४८	१८:५९	वृश्चिक	अहोरात्र	मृत्यु	२३	७	वृन्दावन परिक्रमा व वनविहार
८	३ चं	३३:४८	१९:१८	ज्ये·	३६:२१	२०:२०	शिव	४९:१९	२५:३१	वणि	०५:५२	विष	३३:४८	३३:००	५:४७	१८:५९	ध·३६:२१	२०:२०	पद्म	२४	८	**संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी, चन्द्रोदय घं·२१:४९**
९	४ मं	२९:०५	१७:२४	मूल	३३:३०	१९:११	सिद्ध	४२:४०	२२:५१	बव	०१:३२	बाल	२९:०५	३३:०३	५:४७	१९:००	धनु	अहोरात्र	छत्र	२५	९	**मुनि शान्तिनाथ जयंती**
१०	५ बु	२३:४३	१५:१५	पू·षा·	३०:०२	१७:४६	साध्य	३५:३२	१९:५९	तैति	२३:४३	गर	५०:५१	३३:०६	५:४६	१९:००	म·४४:०५	२३:२४	श्रीवत्स	२६	१०	
११	६ गु	१७:५५	१२:५५	उ·षा·	२६:०८	१७:१२	शुभ	२८:०४	१६:५९	वणि	१७:५५	विष	४४:५३	३३:०९	५:४५	१९:०१	मकर	अहोरात्र	सौम्य	२७	११	
१२	७ शु	११:५१	१०:२९	श्रवण	२२:००	१४:५३	शुक्ल	२०:२५	१३:५५	बव	११:५१	बाल	३८:४६	३३:१२	५:४४	१९:०२	कु·४९:५४	२५:४२	धूम्र	२८	१२	**श्रीकालाष्टमी,** श्री दादूदयाल पुण्यदिवस
१३	८ श ९ श	०५:४३ ५४:०१	०८:०१ २९:३७	धनि·	१७:५२	१२:५३	ब्रह्म	१२:४६	१०:५०	कौल	०५:४३	तैति	३२:४२	३३:१५	५:४४	१९:०२	कुंभ	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	२९	१३	मार्गी बुधः घं·०९:२५,
१४	१० र	५४:०८	२७:२२	शत·	१३:५६	११:१८	ऐन्द्र वैधृति	०५:१५ ५२:४७	०७:४९ २८:५६	वणि	२६:५४	विष	५४:०८	३३:१८	५:४३	१९:०३	मी·५६:१३	२८:१२	राक्षस	३०	१४	
१५	११ चं	४९:०४	२५:२०	पू·भा·	१०:२४	०९:५२	विष्कु·	५१:१८	२६:१४	बव	२१:३२	बाल	४९:०४	३३:२१	५:४३	१९:०३	मीन	अहोरात्र	मुसल	३१	१५	**श्रीअपरा एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त)**
१६	१२ मं	४४:४४	२३:३५	उ·भा·	०७:२८	०८:४१	प्रीति	४५:१०	२३:४६	कौल	१६:४८	तैति	४४:४४	३३:२४	५:४२	१९:०४	मीन	अहोरात्र	सिद्धि	१	१६	**श्रीअपरा एकादशी (निम्बार्क), मासादिः**
१७	१३ बु	४१:१६	२२:१२	रेवती	०५:१९	०७:४९	आयु·	३९:४५	२१:३५	गर	१२:५३	वणि	४१:१६	३३:२७	५:४१	१९:०४	मे·०५:१९	०७:४९	उत्पात	२	१७	**प्रदोष व्रतम्, वटसावित्री व्रतारम्भ (उत्तर भारत)**
१८	१४ गु	३८:५१	२१:१३	अश्वि·	०४:०६	०७:१९	सौभा·	३५:१०	१९:४५	विष	०९:५६	बव	३८:५१	३३:२९	५:४१	१९:०५	मेष	अहोरात्र	मानस	३	१८	**वटसावित्री द्वितीय दिन, श्री शान्तिनाथ जयन्ती**
१९	३० शु	३७:३५	२०:४३	भरणी	०३:५८	०७:१६	शोभ·	३१:३२	१८:१७	चतु	०८:०५	नाग	३७:३५	३३:३२	५:४०	१९:०५	वृ·१९:०७	१३:१९	मुद्गर	४	१९	**ज्येष्ठी अमावस्या (देव–पितृकार्य), वटसावित्री व्रतपूर्ति**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क	तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः (मा/व)	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर	चन्द्रोदयः
मई	वार	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि			मि:से	
६	१ श	००:२०:५५:५६	०६:२४:३१:०१	०२:२६:५६:०९	००:०९:३८:५२	००:०४:२४:१३	०२:०४:४६:५९	१०:०८:३७:११	१२:११:४९:१९	४६:२६:५५	उ·१६:१८:५०	+ २:४८	१९:४७
७	२ र	००:२१:५३:५२	०७:०७:५६:२०	०२:२७:२९:५६	००:०९:०१:४६	००:०४:३८:३९	०२:०५:५२:०८	१०:०८:४१:०५	१२:११:४६:०९	४६:२८:३३	उ·१६:३६:२७	+ २:५४	२०:४७
८	३ चं	००:२२:५१:४५	०७:२१:३६:२२	०२:२८:०३:४८	००:०८:२९:५०	००:०४:५३:०४	०२:०६:५७:०३	१०:०८:४४:५४	१२:११:४२:५८	४६:३०:०९	उ·१६:५३:४८	+ ३:००	२१:४९
९	४ मं	००:२३:४९:३७	०८:०५:२९:३७	०२:२८:३७:४४	००:०८:०३:४०	००:०५:०७:२७	०२:०८:०१:४४	१०:०८:४८:३७	१२:११:३९:४७	४६:३१:४४	उ·१७:१०:५२	+ ३:०५	२२:४७
१०	५ बु	००:२४:४७:२६	०८:१९:३३:५८	०२:२९:११:४५	००:०७:४३:४३	००:०५:२१:५०	०२:०९:०६:११	१०:०८:५२:१४	१२:११:३६:३७	४६:३३:१७	उ·१७:२७:३९	+ ३:१०	२३:४२
११	६ गु	००:२५:४५:१४	०९:०३:४६:४१	०२:२९:४५:४९	००:०७:३०:१७	००:०५:३६:११	०२:१०:१०:२४	१०:०८:५५:४६	१२:११:३३:२६	४६:३४:४९	उ·१७:४४:०९	+ ३:१४	२४:३२
१२	७ शु	००:२६:४२:६०	०९:१८:०४:३८	०३:००:१९:५८	००:०७:२३:३३	००:०५:५०:३०	०२:११:१४:२१	१०:०८:५९:१३	१२:११:३०:१५	४६:३६:२०	उ·१८:००:२१	+ ३:१७	२५:१८
१३	८ श	००:२७:४०:४४	१०:०२:२४:१४	०३:००:५४:११	मार्गी ०७:२३:३३	००:०६:०४:४७	०२:१२:१८:०३	१०:०९:०२:३३	१२:११:२७:०५	४६:३७:५०	उ·१८:१६:१५	+ ३:२०	२६:००
१४	१० र	००:२८:३८:२६	१०:१६:४१:३२	०३:०१:२८:२८	००:०७:३०:१५	००:०६:१९:०३	०२:१३:२१:२९	१०:०९:०५:४८	१२:११:२३:५४	४६:३९:१८	उ·१८:३१:५१	+ ३:२३	२६:३८
१५	११ चं	००:२९:३६:०७	११:००:५३:०४	०३:०२:०२:४९	००:०७:४३:३३	००:०६:३३:१७	०२:१४:२४:३८	१०:०९:०८:५७	१२:११:२०:४३	४६:४०:४४	उ·१८:४७:०८	+ ३:२४	२७:१६
१६	१२ मं	०१:००:३३:४६	११:१४:५५:४५	०३:०२:३७:१४	००:०८:०३:१६	००:०६:४७:३०	०२:१५:२७:३१	१०:०९:१२:००	१२:११:१७:३३	४६:४२:०९	उ·१९:०२:०७	+ ३:२५	२७:५४
१७	१३ बु	०१:०१:३१:२३	११:२८:४६:५७	०३:०३:११:४३	००:०८:२९:१२	००:०७:०१:४०	०२:१६:३०:०६	१०:०९:१४:५८	१२:११:१४:२२	४६:४३:३२	उ·१९:१६:४६	+ ३:२६	२८:३३
१८	१४ गु	०१:०२:२८:५९	००:१२:२४:३७	०३:०३:४६:१५	००:०९:०१:०४	००:०७:१५:४८	०२:१७:३२:२३	१०:०९:१७:४९	१२:११:११:११	४६:४४:५४	उ·१९:३१:०६	+ ३:२६	२९:१५
१९	३० शु	०१:०३:२६:३३	००:२५:४७:२४	०३:०४:२०:५१	००:०९:३८:३६	००:०७:२९:५४	०२:१८:३४:२१	१०:०९:२०:३४	१२:११:०८:०१	४६:४६:१४	उ·१९:४५:०६	+ ३:२५	०५:५७

९ मई सूर्योदयकालीन तिथिः४

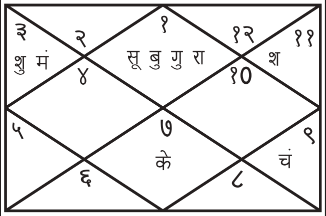

१५ मई सूर्योदयकालीन तिथिः११

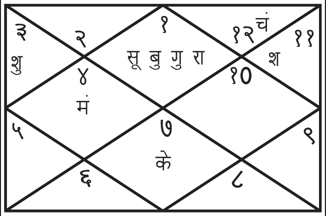

ज्येष्ठ कृष्णपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, ६ मई से १९ मई, २०२३ ईस्वी

पक्षान्तः–कालःपश्चिम । ऋतुःग्रीष्म । उत्तरायणं ।
सौम्यगोलः । ति·३० अयनांशाः२२:५१:४१

दिनाङ्क मई	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
६	१ श	
७	२ र	आर्द्रायांशुक्रः घं·२३:३७।
८	३ चं	भद्रा ८:०९–१९:१९घं·, गण्डान्तः १४:३५–२६:०५।
९	४ मं	।
१०	५ बु	कृष्ण पंचमी (जैन)।
११	६ गु	अभिजितः १२:०८–२९:५१, भद्रा १२:५६–२३:४३घं·, ①
१२	७ शु	पंचकारंभः २५:४२, मेला चनानी माताजी, बुध पूर्वोदित घं·२४:१३।
१३	८ श	पंचक। ① कृत्तिकायांरविः घं·२८:३१, कर्कमङ्गलः घं·१५:५१।
१४	१० र	पंचक, भद्रा १६:२९–२७:२३घं·, मासान्तः।
१५	११ चं	पंचक, वृषेरविः घं·१५:४०, वृष संक्रान्ति पुण्यकालं,०९:१६–१५:४०घं·।
१६	१२ मं	पंचक, मधुसूदन द्वादशी, श्री अनन्तनाथ जयन्ती, गण्डान्तारम्भः २६:०१।
१७	१३ बु	मास शिवरात्रि, पंचकान्तः ७:५०, गण्डान्तः १३:४०, ②
१८	१४ गु	भद्रांतः ९:४०घं·। ② भद्रारंभः २२:१२घं·, पुष्येमङ्गलः घं·११:३४।
१९	३० शु	श्रीशनि जयन्ती, बड़पूजन, संत श्री ज्ञानेश्वर जयन्ती।

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	११:५७–१३:४२
३०	११:५६–१३:४३

❀ ज्येष्ठ मास कृत्य ❀

❀ **वटसावित्री व्रत–** यह त्रिदिवसीय व्रत ज्येष्ठ मास के दोनों पक्षों (कृष्ण–शुक्ल) में होता है। भविष्य पुराण के अनुसार ज्येष्ठ की अमावास्या में पूर्ण होता है तथा स्कन्द पुराण के अनुसार ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा में मनाया जाता है–

''अमायां च तथा ज्येष्ठे वटमूले तथासति त्रिरात्रोपोषिता नारी विधिनाऽनेन पूजयेत्।''(भवि.),
''ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे पूर्णिमायां तथा व्रतम्। चीर्णं पुरा महाभक्त्या कथितं ते मया नृप।'' (स्कन्द)

अमावास्या में इसकी पूर्ति होती है– *अत्र व्रते त्रयोदश्यादिदिनत्रयमुपवासः* (धर्मसिन्धु)। यह सौभाग्य रक्षक व्रत है। इसमें उपवास के बिना भी पूजन किया जाता है। वट के मूल में ब्रह्माजी, मध्य में विष्णुजी एवं अग्र भाग में शिवजी का निवास है– *वटमूलेस्थितो ब्रह्मा वटमध्ये जनार्दनः। वटाग्रे तु शिवो देवः सावित्रीवटसंश्रिता।।* कतिपय स्त्रियाँ केवल पूजन से सावित्री व्रत करती हैं।

❀**शनिजयन्ती–** ज्येष्ठ अमावास्या के दिन शनि देव की जयन्ती मनायी जाती है। आज शनि का पूजन एवं दान किया जाता है। कालावस्त्र, तिल, तेल का दान शनिजनित कष्ट को दूर करता है।

शनिग्रह का ध्यानमंत्र– नीलाम्बरः शूलधरः किरीटी, गृध्रस्थितः शस्त्रधरो धनुष्मान्।
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रशान्तः, सदास्तु मह्यं वरदोस्तु नित्यम् ।।

नीलवस्त्र धारण करने वाले, शूल धारण करने वाले, मुकुट धारण करने वाले, गृध्रवाहन पर स्थित शस्त्रधारण करने वाले, धनुष से युक्त, चार भुजाधारी भगवान् सूर्य के पुत्र प्रशान्त शनि हमारे लिए हमेशा वरदायी हों।

शनि गायत्री– ॐ भगभवाय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहि तन्नो शनिः प्रचोदयात्।।

शनिमन्त्र– ॐ नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

❀ शनि दोष शान्ति के उपाय

पुस्तक – 'नवग्रह विज्ञान'

छायादान– लोहा, कांसा या स्टील की कटोरी या कड़ाही में सरसों तेल भरकर पाँच का सिक्का एवं काली तिल डालकर शनिवार के दिन दोपहर में तेल में अपने चेहरे की छाया देखकर दान करने से शनिग्रह का दोष तत्काल दूर होता है। इससे स्वास्थ्य एवं मन पर शीघ्र शुभ प्रभाव पड़ता है।

उतारा(भैरवप्रयोग)–एक रोटी में गुड़–घी लगाके अपने सिर पर से सात बार घड़ी की तरह घुमाकर शनिवार को कुत्ते को खिलाने से व्यापक लाभ होता है। रोटी घुमाते समय कोई टोके नहीं। इससे प्रभामण्डल ठीक हो जाता है।

सिक्का का उतारा– शनिवार रात्रि में किसी चौराहे पर जाकर पाँच सिक्कों को मुट्ठी में बंदकर अपने सिर पर से सात बार घड़ी की तरह घुमाकर वहीं पर छोड़ दें। यह प्रयोग एक या दो बार करने से ही अद्भुत लाभ देता है।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

मई	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
६	०४:४४	०६:२०	०८:१६	१०:३०	१२:५०	१५:०६	१७:२१	१९:४०	२१:५९	००:०४	०१:४९	०३:१८
७	०४:४०	०६:१६	०८:१२	१०:२६	१२:४६	१५:०२	१७:१७	१९:३६	२१:५५	००:००	०१:४५	०३:१४
८	०४:३६	०६:१२	०८:०८	१०:२२	१२:४२	१४:५८	१७:१३	१९:३२	२१:५१	२३:५७	०१:४१	०३:१०
९	०४:३२	०६:०८	०८:०४	१०:१८	१२:३८	१४:५४	१७:०९	१९:२८	२१:४७	२३:५३	०१:३७	०३:०६
१०	०४:२८	०६:०४	०८:००	१०:१४	१२:३४	१४:५१	१७:०५	१९:२४	२१:४३	२३:४९	०१:३३	०३:०२
११	०४:२४	०६:००	०७:५६	१०:१०	१२:३०	१४:४७	१७:०२	१९:२०	२१:३९	२३:४५	०१:२९	०२:५८
१२	०४:२०	०५:५६	०७:५२	१०:०६	१२:२६	१४:४३	१६:५८	१९:१६	२१:३५	२३:४१	०१:२५	०२:५४
१३	०४:१६	०५:५२	०७:४८	१०:०२	१२:२२	१४:३९	१६:५४	१९:१३	२१:३१	२३:३७	०१:२१	०२:५०
१४	०४:१२	०५:४८	०७:४४	०९:५८	१२:१८	१४:३५	१६:५०	१९:०९	२१:२७	२३:३३	०१:१७	०२:४७
१५	०४:०९	०५:४४	०७:४०	०९:५४	१२:१४	१४:३१	१६:४६	१९:०५	२१:२४	२३:२९	०१:१३	०२:४३
१६	०४:०५	०५:४१	०७:३६	०९:५०	१२:१०	१४:२७	१६:४२	१९:०१	२१:२०	२३:२५	०१:१०	०२:३९
१७	०४:०१	०५:३७	०७:३२	०९:४६	१२:०७	१४:२३	१६:३८	१८:५७	२१:१६	२३:२१	०१:०६	०२:३५
१८	०३:५७	०५:३३	०७:२८	०९:४२	१२:०३	१४:१९	१६:३४	१८:५३	२१:१२	२३:१७	०१:०२	०२:३१
१९	०३:५३	०५:२९	०७:२४	०९:३८	११:५९	१४:१५	१६:३०	१८:४९	२१:०८	२३:१३	००:५८	०२:२७

मई	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
६	अमृत·१
७	सिद्ध·३
१०	द·ति·६, अमृत·६, रवियोग·उषा
११	रवियोग·उषा, रवियोग·श्र, द·ति·६,
१२	सर्वार्थ·श्र, मृत्यु·७, रवियोग·श्र,
१३	सिद्ध·९, मृत्यु·१०,
१४	अमृत·१०, मृत्यु·११,
१५	सिद्ध·११, मृत्यु·१२,
१६	सर्वार्थ·उभा, अमृत·१२, सिद्ध·१३,
१७	मृत्यु·१३,
१८	सर्वार्थ·अ, मृत्यु·१४, सिद्ध·१५,
१९	सिद्ध·१,

❀ **सम्पूर्ण ज्येष्ठ मास** में जलमंदिर के मध्य संपादित उपचारों से श्रीहरि की सेवा करें। जल क्रीड़ा के उपयोगी सब सामग्री और भोग धरें।

❀ **माँ गंगा का स्वरूप –** १· चतुर्भुजा, २· त्रिनेत्रा, ३· एक हाथ में पूर्णकुम्भ, ४· एक हाथ में श्वेत कमल, ५· एक हाथमें अभयमुद्रा, ६· एक हाथ में वरद मुद्रा, ७· नदी नद से सुशोभित, ८· श्वेतछत्र से सुशोभित, ९· छरहरी देह युक्त, १०· देव, ऋषि आदि से संस्तुत।
– (स्कन्दपुराण, काशीखण्ड– २७/१४२–१४५)

❀ **गंगा पूजा –** दश संख्या की वस्तु से गंगा पूजन का विशेष महत्व है। दशविध पुष्प, दशांग, दशविध फल, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूलादि से पूजा करें।

❀ **कलौ गंगा हि केवलम्–** कलियुग में मनुष्य के उद्धार के लिए एकमात्र गंगा ही साधन हैं–

ध्यानं कृते मोक्ष हेतुः त्रेतायां पुष्करं परम् ।
द्वापरे तद्वद् यज्ञाः कलौ गंगैव केवलम् ॥

गंगातट पर वास मात्र से ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति होती है–

वास एव हि गंगायां ब्रह्मज्ञानस्य कारणम्॥

ज्येष्ठ शुक्लपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, २० मई से ४ जून, २०२३ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– **२०:५:२०२३** मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः; मार्गी शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपूर्वोदितः,

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः	
मई	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी
२०	१ श	३७:३५	२०:४२	कृत्ति·	०५:०२	०७:४१	अतिग·	२८:५३	१७:१३	बव	०७:२६	बाल	३७:३५	३३:३५	५:४०	१९:०६	वृष	अहोरात्र	ध्वज	५	२०
२१	२ र	३८:५१	२१:१२	रोहि·	०७:२०	०८:३५	सुकर्मा	२७:१४	१६:३३	बाल	०८:०४	कौल	३८:५१	३३:३७	५:३९	१९:०६	मि·३८:५७	२१:१४	धाता	६	२१
२२	३ चं	४१:२१	२२:११	मृग·	१०:५२	१०:००	धृति	२६:३४	१६:१७	तैति	०९:५८	गर	४१:२१	३३:४०	५:३९	१९:०७	मिथुन	अहोरात्र	आनन्द	७	२२
२३	४ मं	४४:५६	२३:३७	आर्द्रा	१५:३३	११:५२	शूल	२६:४७	१६:२१	वणि	१३:०१	विष	४४:५६	३३:४२	५:३८	१९:०८	मिथुन	अहोरात्र	सुस्थिर	८	२३
२४	५ बु	४९:२२	२५:२३	पुन·	२१:१०	१४:०६	गण्ड	२७:४४	१६:४३	बव	१७:०४	बाल	४९:२२	३३:४४	५:३८	१९:०८	क·०४:४२	०७:३१	गद	९	२४
२५	६ गु	५४:२०	२७:२२	पुष्य	२७:२७	१६:३६	वृद्धि	२९:१०	१७:१८	कौल	२१:४९	तैति	५४:२०	३३:४७	५:३८	१९:०९	कर्क	अहोरात्र	शुभ	१०	२५
२६	७ शु	५९:२५	२९:२३	आश्ले·	३४:०१	१९:१४	ध्रुव	३०:५०	१७:५७	गर	२६:५४	वणि	५९:२५	३३:४९	५:३७	१९:०९	सिं·३४:०१	१९:१४	मृत्यु	११	२६
२७	८ श	६०:००	अहोरात्र	मघा	४०:२६	२१:४७	व्याघ·	३२:२४	१८:३४	विष	३१:५२	बव	६०:००	३३:५१	५:३७	१९:१०	सिंह	अहोरात्र	पद्म	१२	२७
२८	८ र	०४:११	०७:१७	पू·फा·	४६:१८	२४:०८	हर्षण	३३:३३	१९:०२	बव	०४:११	बाल	३६:१९	३३:५३	५:३७	१९:१०	सिंह	अहोरात्र	छत्र	१३	२८
२९	९ चं	०८:१५	०८:५४	उ·फा·	५१:१९	२६:०८	वज्र	३४:०५	१९:१४	कौल	०८:१५	तैति	३९:५६	३३:५५	५:३६	१९:११	कं·०२:४०	०६:४१	श्रीवत्स	१४	२९
३०	१० मं	११:२०	१०:०८	हस्त	५५:१४	२७:४२	सिद्धि	३३:४६	१९:०६	गर	११:२०	वणि	४२:२६	३३:५७	५:३६	१९:११	कन्या	अहोरात्र	सौम्य	१५	३०
३१	११ बु	१३:१५	१०:५४	चित्रा	५७:५७	२८:४७	व्यति·	३२:३२	१८:३६	विष	१३:१५	बव	४३:४४	३३:५९	५:३६	१९:१२	तु·२६:४६	१६:१८	कालदंड	१६	३१
जून	१२ गु	१३:५४	११:०९	स्वाती	५९:२५	२९:२२	वरी·	३०:१७	१७:४२	बाल	१३:५४	कौल	४३:४५	३४:०१	५:३६	१९:१२	तुला	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	१७	जून
२	१३ शु	१३:१७	१०:५४	विशा·	५९:४१	२९:२८	परिघ	२७:०१	१६:२४	तैति	१३:१७	गर	४२:३०	३४:०३	५:३५	१९:१३	वृ·४४:४४	२३:२९	मातङ्ग	१८	२
३	१४ श	११:२७	१०:१०	अनु·	५८:४८	२९:०६	शिव	२२:४९	१४:४३	वणि	११:२७	विष	४०:०५	३४:०४	५:३५	१९:१३	वृश्चिक	अहोरात्र	अमृत	१९	३
४	१५ र	०८:२९	०८:५९	ज्ये·	५६:५६	२८:२१	सिद्ध	१७:४३	१२:४०	बव	०८:२९	बाल	३६:३७	३४:०६	५:३५	१९:१४	ध·५६:५६	२८:२१	काण	२०	४

卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐

२० मई से ४ जून

- **२०** करवीर व्रत, गंगा दशाश्वमेध स्नानप्रारम्भ १० तिथि यावत्
- **२२** **रम्भा तृतीया, श्री महाराणा प्रताप जयन्ती, हल्दीघाटी मेला**
- **२३** **वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी**, गुरु अर्जुनदेव पुण्य दिवस
- **२४** मेला भन्दे के बालाजी (जयपुर), श्रुति पंचमी (जैन)
- **२५** **श्री स्कन्दषष्ठी**, श्री अरण्य षष्ठी, विन्ध्यवासिनी पूजा
- **२८** **श्रीदुर्गाष्टमी व्रतम्, मेला क्षीरभवानी कश्मीरे**
- **२९** **श्रीमहेश नवमी (माहेश्वरी समाज)**, श्रीहरि जयन्ती
- **३०** **श्रीगंगा दशहरा व्रतम्, ठाकुर श्रीसरसबिहारीजी पाटोत्सव**
- **३१** **श्रीनिर्जला भीमसेनी एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त)**
- **जून** **प्रदोष व्रत, वटसावित्री व्रतारम्भ (दक्षिण भारत)**
- **२** **वटसावित्री व्रत द्वितीय दिन**
- **३** **पूर्णिमा (व्रत), वटसावित्री व्रतपूर्ति**
- **४** **पूर्णिमा (स्नान–दान)**, ज्येष्ठाभिषेक, जलसेवा पूर्ति

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

मई जून	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	राहुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
२०	१ श	०१:०४:२४:०५	०१:०८:५४:४१	०३:०४:५५:३१	००:१०:२१:३२	००:०७:४३:५८	०२:१९:३६:०१	१०:०९:२३:१३	१२:११:०४:५०	४६:४७:३२	उ·१९:५८:४७	+ ३:२४	०५:५७
२१	२ र	०१:०५:२१:३५	०१:२१:४६:३६	०३:०५:३०:१५	००:११:०९:३४	००:०७:५७:५९	०२:२०:३७:२१	१०:०९:२५:४६	१२:११:०१:३९	४६:४८:४९	उ·२०:१२:०७	+ ३:२३	०६:४६
२२	३ चं	०१:०६:१९:०५	०२:०४:२४:०५	०३:०६:०५:०२	००:१२:०२:२४	००:०८:११:५८	०२:२१:३८:२०	१०:०९:२८:१३	१२:१०:५८:२९	४६:५०:०४	उ·२०:२५:०७	+ ३:२०	०७:३५
२३	४ मं	०१:०७:१६:३२	०२:१६:४८:४५	०३:०६:३९:५२	००:१२:५९:४६	००:०८:२५:५५	०२:२२:३८:५९	१०:०९:३०:३४	१२:१०:५५:१८	४६:५१:१७	उ·२०:३७:४६	+ ३:१८	०८:२९
२४	५ बु	०१:०८:१३:५८	०२:२९:०२:५४	०३:०७:१४:४६	००:१४:०१:२४	००:०८:३९:४९	०२:२३:३९:१६	१०:०९:३२:४८	१२:१०:५२:०७	४६:५२:२८	उ·२०:५०:०४	+ ३:१४	०९:२२
२५	६ गु	०१:०९:११:२३	०३:११:०९:१९	०३:०७:४९:४३	००:१५:०७:००	००:०८:५३:४०	०२:२४:३९:११	१०:०९:३४:५६	१२:१०:४८:५६	४६:५३:३७	उ·२१:०२:००	+ ३:१०	१०:१६
२६	७ शु	०१:१०:०८:४६	०३:२३:११:१७	०३:०८:२४:४४	००:१६:१६:२१	००:०९:०७:२९	०२:२५:३८:४३	१०:०९:३६:५८	१२:१०:४५:४६	४६:५४:४४	उ·२१:१३:३६	+ ३:०६	११:१०
२७	८ श	०१:११:०६:०८	०४:०५:१२:२६	०३:०८:५९:४८	००:१७:२९:१२	००:०९:२१:१४	०२:२६:३७:५१	१०:०९:३८:५३	१२:१०:४२:३५	४६:५५:५०	उ·२१:२४:४९	+ ३:०१	१२:०३
२८	८ र	०१:१२:०३:२८	०४:१७:१६:४२	०३:०९:३४:५५	००:१८:४५:१९	००:०९:३४:५७	०२:२७:३६:३४	१०:०९:४०:४२	१२:१०:३९:२४	४६:५६:५३	उ·२१:३५:४१	+ २:५६	१२:५५
२९	९ चं	०१:१३:००:४७	०४:२९:२७:२८	०३:१०:१०:०५	००:२०:०४:२९	००:०९:४८:३७	०२:२८:३४:५२	१०:०९:४२:२४	१२:१०:३६:१४	४६:५७:५४	उ·२१:४६:१०	+ २:५०	१३:४८
३०	१० मं	०१:१३:५८:०४	०५:११:४७:४३	०३:१०:४५:१९	००:२१:२६:३१	००:१०:०२:१४	०२:२९:३२:४४	१०:०९:४४:००	१२:१०:३३:०३	४६:५८:५३	उ·२१:५६:१७	+ २:४३	१४:४२
३१	११ बु	०१:१४:५५:२१	०५:२४:१९:५८	०३:११:२०:३५	००:२२:५१:१२	००:१०:१५:४७	०३:००:३०:०९	१०:०९:४५:३०	१२:१०:२९:५२	४६:५९:५०	उ·२२:०६:०२	+ २:३६	१५:३७
जून	१२ गु	०१:१५:५२:३६	०६:०७:०६:०७	०३:११:५५:५५	००:२४:१८:२३	००:१०:२९:१७	०३:०१:२७:०५	१०:०९:४६:५३	१२:१०:२६:४२	४७:००:४४	उ·२२:१५:२३	+ २:२९	१६:३४
२	१३ शु	०१:१६:४९:५०	०६:२०:०७:२३	०३:१२:३१:१७	००:२५:४७:५३	००:१०:४२:४४	०३:०२:२३:३३	१०:०९:४८:०९	१२:१०:२३:३१	४७:०१:३७	उ·२२:२४:२२	+ २:२१	१७:३४
३	१४ श	०१:१७:४७:०२	०७:०३:२४:११	०३:१३:०६:४३	००:२७:१९:३३	००:१०:५६:०७	०३:०३:१९:३०	१०:०९:४९:१९	१२:१०:२०:२०	४७:०२:२७	उ·२२:३२:५७	+ २:१३	१८:३५
४	१५ र	०१:१८:४४:१४	०७:१६:५६:१४	०३:१३:४२:११	००:२८:५३:१३	००:११:०९:२६	०३:०४:१४:५६	१०:०९:५०:२३	१२:१०:१७:१०	४७:०३:१५	उ·२२:४१:०९	+ २:०५	१९:३५

२३ मई सूर्योदयकालीन तिथिः**४**

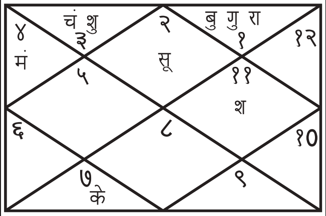

३१ मई सूर्योदयकालीन तिथिः**११**

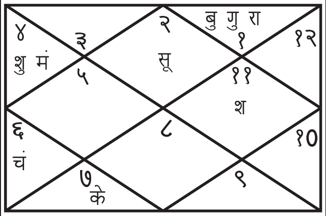

ज्येष्ठ शुक्लपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, २० मई से ४ जून, २०२३ ईस्वी

पक्षान्तः–कालःपश्चिम । ऋतुःग्रीष्म । उत्तरायणं । सौम्यगोलः । ति·१५ अयनांशाः२२:५१:४३

दिनाङ्क मई	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
२०	१ श	पुनर्वसौशुक्रःघं·१५:०९।
२१	२ र	
२२	३ चं	
२३	४ मं	**भद्रा १०:५१–२३:३७घं·**,उमाचतुर्थी (बंगाल),भरण्यांबुधःघं·१३:४९।
२४	५ बु	महादेव विवाह (उड़ीसा)। ⓢ साईं टेऊँराम पुण्यतिथि।
२५	६ गु	**रोहिणी नौतपा आरम्भ**, आरोग्य षष्ठी रोहिण्यांरविःघं·२५:५८ ⓢ
२६	७ शु	**भद्रारंभः २९:२४घं·, गण्डान्तः१२:३५–२५:५३।**
२७	८ श	**भद्रांतः १८:२२घं·।**
२८	८ र	श्री धूमावती जयन्ती।
२९	९ चं	।
३०	१० मं	**श्री बटुकभैरव जयन्ती, भद्रारंभः २२:३५घं·**, कर्केशुक्रःघं·१७:०४।
३१	११ बु	श्री गायत्री जयन्ती, व्यतीपात पुण्यम्, **भद्रांतः १०:५४घं·।**
जून	१२ गु	**चम्पाद्वादशी, श्री सुपार्श्वनाथ जयन्ती।**
२	१३ शु	कृत्तिकायांबुधःघं·१९:२४।
३	१४ श	**भद्रा १०:१०–२१:३८घं·**, पुष्येशुक्रःघं·०५:५४।
४	१५ र	**श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा**, मन्वादि, बिल्व त्रिरात्रि व्रत, सन्त कबीर जयन्ती, सरयू जयन्ती, **गण्डान्तारम्भः**२२:३५, वृषेबुधःघं·२२:३०।

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	११:५६–१३:४३
१५	११:५७–१३:४६

❀ ज्येष्ठ मास कृत्य ❀

❀ **निर्जला एकादशी–** आज के दिन आचमन को छोड़कर अन्य किसी भी प्रकार से जल का ग्रहण नहीं किया जाता है। इसे करने से विष्णुलोक की प्राप्ति होती है। एकादशी व्रत करके द्वादशी में जलकुम्भ और शर्करा दान करे। दान देते समय निम्नलिखित मन्त्र का प्रयोग करे–

देव देव हृषीकेश संसारार्णवतारक।
उदकुम्भप्रदानेन यास्यामि परमां गतिम्।।

❀ **त्रिविक्रम(वामन) पूजन–** ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी तिथि में भगवान् त्रिविक्रम विष्णु की दिन–रात पूजा की जाती है। इस पूजन के प्रभाव से गो–अयन यज्ञ का पुण्य प्राप्त होता है।

❀ **बिल्वत्रिरात्रिव्रत(स्कन्दपुराण)–** ज्येष्ठ पूर्णिमा को ज्येष्ठ नक्षत्र और मंगलवार हो, तब यह व्रत होता है। इस वर्ष यह दुर्लभ संयोग बन रहा है। इस दिन सरसों मिले हुए जल से स्नान करके 'श्रीवृक्ष'(बिल्ववृक्ष) का गन्ध पुष्पादि से पूजन करे और एक समय भोजन करे। बिल्ववृक्ष के समीप उमा महेश्वर का पूजन करके इस मन्त्र से प्रार्थना करे।

'श्रीनिकेत नमस्तुभ्यं हरप्रिय नमोऽस्तु ते।
अवैधव्यं च मे देहि श्रियं जन्मनि जन्मनि।।'

तो सब प्रकार के अभीष्ट सिद्ध हो जाते हैं। *(संक्षिप्त)*

❀ बिल्ववृक्ष स्थापना विधि ❀ (भविष्यपुराणोक्त)

❀ **इस मंत्र से बिल्व वृक्ष का स्थापन करे –** ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्। उर्वारुकमिव बन्धनाद् इतो मुक्षीय मामुतः।।

❀ **इस मन्त्र से वृक्ष को गंधोदक से स्नान करवाए –**
ॐ सुनावम् आ रुहेयम् अस्रवन्तीम् अनागसम्। शतारित्रा ँ स्वस्तये।।

❀ **इस मन्त्र से वृक्ष पर अक्षत चढ़ाए –**
ॐ मित्रावरुणाभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामि। इन्द्राय त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामि। इन्द्राग्निभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामि। इन्द्रावरुणाभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामि। इन्द्राबृहस्पतिभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामि। इन्द्राविष्णुभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामि ।।

❀ **इस मन्त्र से धूप, वस्त्र, माला चढ़ाए –**
ॐ कया नश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठ या वृता ।।

तदुपरान्त रुद्रदेव, दुर्गा और कुबेर का पूजन करे। दूसरे दिन ७ ब्राह्मणों को भोजन करवाए। सुन्दर पुष्प, चूर्ण आदि से बिल्ववृक्ष को रंजित करे। लाल सूत्र से ५, ७ या ९ बार वेष्टित करे। वृक्ष के मूल में धान्य बोए। उत्तराभिमुख होकर शिव, विष्णु, ब्रह्मा, गणेश, शेष, अनन्त, इन्द्र, वनपाल, सोम, सूर्य व पृथ्वी का पूजन करे। तिल अक्षत से हवन करें तथा घी और भात का नैवेद्य दे। यक्षों के लिए उड़द और भात का भोग लगाए। ग्रहों की तुष्टि के लिए बाँस के पात्र पर नैवेद्य दे। बिल्व वृक्ष को दक्षिण दिशा से दूध की धारा प्रदान करें। यूप का आरोपण करें। वृक्ष का कर्णविध संस्कार करें और भगवान् सूर्य को अर्घ्य प्रदान करें। ब्राह्मण को दक्षिणा प्रदान करें।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

मई	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
२०	०३:४९	०५:२५	०७:२०	०९:३५	११:५५	१४:११	१६:२६	१८:४५	२१:०४	२३:०९	००:५४	०२:२३
२१	०३:४५	०५:२१	०७:१६	०९:३१	११:५१	१४:०७	१६:२२	१८:४१	२१:००	२३:०५	००:५०	०२:१९
२२	०३:४१	०५:१७	०७:१२	०९:२७	११:४७	१४:०३	१६:१८	१८:३७	२०:५६	२३:०१	००:४६	०२:१५
२३	०३:३७	०५:१३	०७:०८	०९:२३	११:४३	१३:५९	१६:१४	१८:३३	२०:५२	२२:५७	००:४२	०२:११
२४	०३:३३	०५:०९	०७:०५	०९:१९	११:३९	१३:५५	१६:१०	१८:२९	२०:४८	२२:५४	००:३८	०२:०७
२५	०३:२९	०५:०५	०७:०१	०९:१५	११:३५	१३:५१	१६:०६	१८:२५	२०:४४	२२:५०	००:३४	०२:०३
२६	०३:२५	०५:०१	०६:५७	०९:११	११:३१	१३:४८	१६:०३	१८:२१	२०:४०	२२:४६	००:३०	०१:५९
२७	०३:२१	०४:५७	०६:५३	०९:०७	११:२७	१३:४४	१५:५९	१८:१७	२०:३६	२२:४२	००:२६	०१:५५
२८	०३:१७	०४:५३	०६:४९	०९:०३	११:२३	१३:४०	१५:५५	१८:१४	२०:३२	२२:३८	००:२२	०१:५२
२९	०३:१४	०४:४९	०६:४५	०८:५९	११:१९	१३:३६	१५:५१	१८:१०	२०:२८	२२:३४	००:१८	०१:४८
३०	०३:१०	०४:४६	०६:४१	०८:५५	११:१५	१३:३२	१५:४७	१८:०६	२०:२५	२२:३०	००:१५	०१:४४
३१	०३:०६	०४:४२	०६:३७	०८:५१	११:११	१३:२८	१५:४३	१८:०२	२०:२१	२२:२६	००:११	०१:४०
जून	०३:०२	०४:३८	०६:३३	०८:४७	११:०८	१३:२४	१५:३९	१७:५८	२०:१७	२२:२२	००:०७	०१:३६
२	०२:५८	०४:३४	०६:२९	०८:४३	११:०४	१३:२०	१५:३५	१७:५४	२०:१३	२२:१८	००:०३	०१:३२
३	०२:५४	०४:३०	०६:२५	०८:३९	११:००	१३:१६	१५:३१	१७:५०	२०:०९	२२:१४	२३:५९	०१:२८
४	०२:५०	०४:२६	०६:२१	०८:३६	१०:५६	१३:१२	१५:२७	१७:४६	२०:०५	२२:१०	२३:५५	०१:२४

मई	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
२०	**अमृत**·१, **सर्वार्थ**·रो,
२१	**द्विपुष्कर**·२+मृ, **सिद्ध**·३,
२२	**सर्वार्थ**·मृ, **रवियोग**·आ,
२३	द·ति·४, **रवियोग**·आ,
२४	**रवियोग**·पु, **अमृत**·६,
२५	**सर्वार्थ**·पु, **रवियोग**·पु, **रवियोग**·आश्ले,
२६	**मृत्यु**·७, **रवियोग**·आश्ले,
२८	**सिद्ध**·८, **सर्वार्थ**·उफा, **रवियोग**·उफा,
२९	**रवियोग**·उफा, **अमृत**·१०, **रवियोग**·ह,
३०	**रवियोग**·ह, **मृत्यु**·११,
३१	**अमृत**·११, **सिद्ध**·१२,
जून	**अमृत**·१३, **रवियोग**·वि,
२	**रवियोग**·वि, **अमृत**·१४, **सर्वार्थ**·अनु,
३	**सिद्ध**·१४, **मृत्यु**·१५,
४	**अमृत**·१५, **मृत्यु**·१, **सर्वार्थ**·मू,

卐 **गंगा दशहरा –** ज्येष्ठ, शुक्लपक्ष, दशमी, बुधवार, **हस्त** नक्षत्र, व्यतीपात योग, गर करण, आनंद योग, कन्या राशिस्थ चन्द्रमा, वृषभ राशिस्थ सूर्य, ये दस योग से गंगा दशमी कहलाती है। इस दिन गंगास्नान करने से मनुष्य सब पापों से छूट जाता है। यह नवमीविद्धा दशमी हो वा एकादशी विद्धा हो जिसमें योग अधिक हो, वही ग्रहण करना चाहिये। पूजन का विशेष मन्त्र है– **ॐ नमः शिवायै नारायण्यै दशहरायै गंगायै स्वाहा।** इसी मन्त्र से भगवती गंगा का बार बार स्मरण कर पूजन पदार्थ अर्पित करे। गंगा दशहरा को अबूझ मुहूर्त्त माना जाता है, इस दिन किया जप, तप, दान आदि कोई भी कार्य अक्षय फल प्रदान करता है।

卐 **निर्जला एकादशी–** वृष वा मिथुन राशिस्थ सूर्य हो, तब ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी को यत्नपूर्वक निर्जल व्रत करें। इस एक ही व्रत के प्रभाव से बारह द्वादशियों के व्रत करने का फल प्राप्त होता है। – पद्मपुराण

आषाढ़ कृष्णपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, ५ जून से १८ जून, २०२३ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– ५:६:२०२३ मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः; मार्गी शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपूर्वोदितः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		व्रत–पर्व–उत्सव
जून	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	५ जून से १८ जून
५	१ चं २ चं	०४:३४ ५५:१५	०७:२४ २९:३०	मूल	५४:१४	२७:१६	साध्य	११:५२	१०:१९	कौल	०४:३४	तैति	३२:१६	३४:०८	५:३५	१९:१४	धनु	अहोरात्र	लुम्ब	२१	५	गुरु हरगोविन्द सिंह जयन्ती
६	३ मं	५४:२५	२७:२१	पू·षा·	५०:५२	२५:५५	शुभ शुक्ल	०५:२१ ५२:५८	०७:४३ २८:५४	वणि	२७:११	विष	५४:२५	३४:०९	५:३५	१९:१४	धनु	अहोरात्र	मित्र	२२	६	**(१) चन्द्रोदय घं·२२:२५**
७	४ बु	४८:३४	२५:०१	उ·षा·	४७:०२	२४:२३	ब्रह्म	५०:५६	२५:५७	बव	२१:३३	बाल	४८:३४	३४:१०	५:३५	१९:१५	म·०४:५७	०७:३३	वज्र	२३	७	**संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी (१)**
८	५ गु	४२:२७	२२:३३	श्रवण	४२:५६	२२:४५	ऐन्द्र	४३:२१	२२:५५	कौल	१५:३२	तैति	४२:२७	३४:१२	५:३४	१९:१५	मकर	अहोरात्र	ध्वज	२४	८	वैधृति पुण्यम्, कोकिला पंचमी (जैन)
९	६ शु	३६:१६	२०:०५	धनि·	३८:४५	२१:०४	वैधृ·	३५:४२	१९:५१	गर	०९:२२	वणि	३६:१६	३४:१३	५:३४	१९:१६	कु·१०:५०	०९:५५	धाता	२५	९	
१०	७ श	३०:१४	१७:४०	शत·	३४:४५	१९:२८	विष्कु·	२८:१०	१६:५०	विष	०३:१४	बव	३०:१४	३४:१४	५:३४	१९:१६	कुंभ	अहोरात्र	आनन्द	२६	१०	**श्रीकालाष्टमी**
११	८ र	२४:३२	१५:२३	पू·भा·	३१:०५	१८:०१	प्रीति	२०:५५	१३:५६	कौल	२४:३२	तैति	५१:५३	३४:१५	५:३४	१९:१६	मी·१६:५८	१२:२१	सुस्थिर	२७	११	
१२	९ चं	१९:२३	१३:१९	उ·भा·	२७:५९	१६:४६	आयु·	१४:०६	११:१३	गर	१९:२३	वणि	४७:०३	३४:१६	५:३४	१९:१७	मीन	अहोरात्र	गद	२८	१२	
१३	१० मं	१४:५६	११:३३	रेवती	२५:३८	१५:४९	सौभा·	०७:५१	०८:४३	विष	१४:५६	बव	४३:००	३४:१७	५:३४	१९:१७	मे·२५:३८	१५:४९	शुभ	२९	१३	मुनि नमीनाथ जयन्ती
१४	११ बु	११:२०	१०:०७	अश्वि·	२४:१०	१५:१४	शोभ· अतिगण्ड	०२:१८ ५५:१५	०६:२९ २८:३५	बाल	११:२०	कौल	३९:५६	३४:१८	५:३४	१९:१८	मेष	अहोरात्र	मृत्यु	३०	१४	**योगिनी एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त)**
१५	१२ गु	०८:४७	०९:०५	भरणी	२३:४५	१५:०५	सुकर्मा	५३:४४	२७:०४	तैति	०८:४७	गर	३७:५६	३४:१८	५:३४	१९:१८	वृ·३८:५०	२१:०६	पद्म	३१	१५	**प्रदोष व्रतम्,** वक्री शनि घं·१०:१९,
१६	१३ शु	०७:२४	०८:३२	कृत्ति·	२४:३१	१५:२३	धृति	५०:५४	२५:५६	वणि	०७:२४	विष	३७:०९	३४:१९	५:३४	१९:१८	वृष	अहोरात्र	छत्र	१	१६	**मास शिवरात्रि**
१७	१४ श	०७:१५	०८:२८	रोहि·	२६:३१	१६:११	शूल	४९:०५	२५:१३	शकु	०७:१५	चतु	३७:३८	३४:१९	५:३५	१९:१९	मि·५७:५९	२८:४६	श्रीवत्स	२	१७	**अमावस्या (पितृकार्य)**
१८	३० र	०८:२२	०८:५५	मृग·	२९:४६	१७:२९	गण्ड	४८:१५	२४:५३	नाग	०८:२२	किं	३९:२३	३४:२०	५:३५	१९:१९	मिथुन	अहोरात्र	सौम्य	३	१८	**अमावस्या (देवकार्य)**

औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः

दिनाङ्क जून	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः (मा/व) रा अं क वि	राहुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
५	१ चं	०१:१९:४१:२४	०८:००:४२:२७	०३:१४:१७:४२	०१:००:२८:४७	००:११:२२:४२	०३:०५:०९:५०	१०:०९:५१:१९	१२:१०:१३:५९	४७:०४:०१	उ·२२:४८:५८	+ १:५६	२०:३६
६	३ मं	०१:२०:३८:३३	०८:१४:४१:०३	०३:१४:५३:१७	०१:०२:०६:०६	००:११:३५:५४	०३:०६:०४:१०	१०:०९:५२:०९	१२:१०:१०:४८	४७:०४:४४	उ·२२:५६:२३	+ १:४६	२१:३१
७	४ बु	०१:२१:३५:४१	०८:२८:४९:३७	०३:१५:२८:५४	०१:०३:४५:०१	००:११:४९:०२	०३:०६:५७:५५	१०:०९:५२:५३	१२:१०:०७:३७	४७:०५:२५	उ·२३:०३:२४	+ १:३७	२२:२५
८	५ गु	०१:२२:३२:४८	०९:१३:०५:१४	०३:१६:०४:३३	०१:०५:२५:२५	००:१२:०२:०६	०३:०७:५१:०४	१०:०९:५३:२९	१२:१०:०४:२७	४७:०६:०३	उ·२३:१०:०१	+ १:२७	२३:१०
९	६ शु	०१:२३:२९:५४	०९:२७:२४:३६	०३:१६:४०:१६	०१:०७:०७:११	००:१२:१५:०६	०३:०८:४३:३६	१०:०९:५३:५९	१२:१०:०१:१६	४७:०६:३९	उ·२३:१६:१३	+ १:१६	२३:५५
१०	७ श	०१:२४:२६:५९	१०:११:४३:५३	०३:१७:१६:०१	०१:०८:५०:१४	००:१२:२८:०२	०३:०९:३५:२९	१०:०९:५४:२३	१२:०९:५८:०५	४७:०७:१३	उ·२३:२२:०२	+ १:०६	२४:३४
११	८ र	०१:२५:२४:०३	१०:२५:५९:१७	०३:१७:५१:४९	०१:१०:३४:२७	००:१२:४०:५४	०३:१०:२६:४२	१०:०९:५४:३९	१२:०९:५४:५५	४७:०७:४४	उ·२३:२७:२६	+ ०:५५	२५:१२
१२	९ चं	०१:२६:२१:०६	११:१०:०७:३१	०३:१८:२७:३९	०१:१२:१९:४६	००:१२:५३:४१	०३:११:१७:१३	१०:०९:५४:५०	१२:०९:५१:४४	४७:०८:१३	उ·२३:३२:२५	+ ०:४४	२५:५०
१३	१० मं	०१:२७:१८:०८	११:२४:०५:४१	०३:१९:०३:३२	०१:१४:०६:०४	००:१३:०६:२४	०३:१२:०७:००	१०:०९:५४:५३	१२:०९:४८:३३	४७:०८:३९	उ·२३:३७:००	+ ०:३२	२६:२७
१४	११ बु	०१:२८:१५:०९	००:०७:५१:२३	०३:१९:३९:२८	०१:१५:५३:१९	००:१३:१९:०२	०३:१२:५६:०३	१०:०९:५४:४९	१२:०९:४५:२२	४७:०९:०२	उ·२३:४१:१०	+ ०:२०	२७:०९
१५	१२ गु	०१:२९:१२:०९	००:२१:२२:५३	०३:२०:१५:२६	०१:१७:४१:२४	००:१३:३१:३५	०३:१३:४४:१९	वक्री ०९:५४:३९	१२:०९:४२:१२	४७:०९:२३	उ·२३:४४:५६	+ ०:०९	२७:५१
१६	१३ शु	०२:००:०९:०९	०१:०४:३९:०७	०३:२०:५१:२७	०१:१९:३०:१६	००:१३:४४:०४	०३:१४:३१:४६	१०:०९:५४:२३	१२:०९:३९:०१	४७:०९:४२	उ·२३:४८:१६	− ०:०३	२८:३९
१७	१४ श	०२:०१:०६:०७	०१:१७:३९:४९	०३:२१:२७:३०	०१:२१:१९:५०	००:१३:५६:२७	०३:१५:१८:२४	१०:०९:५३:५९	१२:०९:३५:५०	४७:०९:५८	उ·२३:५१:११	− ०:१६	२९:२८
१८	३० र	०२:०२:०३:०५	०२:००:२५:२७	०३:२२:०३:३५	०१:२३:१०:०३	००:१४:०८:४६	०३:१६:०४:१०	१०:०९:५३:२९	१२:०९:३२:३९	४७:१०:११	उ·२३:५३:४२	− ०:२८	०६:२०

७ जून सूर्योदयकालीन तिथि:**४**

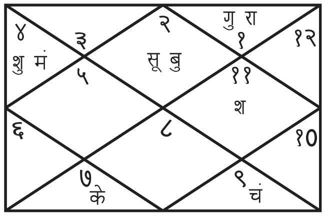

१४ जून सूर्योदयकालीन तिथि:**११**

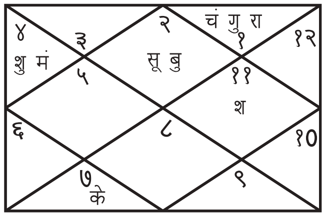

आषाढ़ कृष्णपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, ५ जून से १८ जून, २०२३ ईस्वी

पक्षान्तः–कालःपश्चिम । ऋतुःग्रीष्म । उत्तरायणं । सौम्यगोलः । ति·३० अयनांशाः२२:५१:४५

दिनाङ्क जून	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
५	१ चं	**गण्डान्तः १०:०७**, विश्व पर्यावरण दिवस।
६	३ मं	**भद्रा १६:२८–२७:२१घं·।**
७	४ बु	**अभिजितः ३३:०२–५०:४६।**
८	५ गु	नागपंचमी बंगाल, मृगशिरायांरविःघं·२५:२६, ①
९	६ शु	**पंचकारंभः ०९:५५, भद्रारंभः २०:०५घं·।**
१०	७ श	**पंचक, भद्रांतः ०६:५२घं·**, रोहिण्यांबुधः घं·२१:४५।
११	८ र	**पंचक।** ① आश्लेषयांमङ्गलः घं·२९:२९।
१२	९ चं	**पंचक, भद्रारंभः २४:२४घं·।**
१३	१० मं	**पंचकान्तः १५:५०, भद्रांतः ११:३३घं·**, ②
१४	११ बु	भरण्यांगुरुः घं·०७:३०। ② **गण्डान्तः १०:०२–२१:३९।**
१५	१२ गु	मिथुनेरविः घं·२५:४४, मासान्तः।
१६	१३ शु	**भद्रा ८:३३–२०:२७घं·, मिथुन संक्रान्ति पुण्यकालं**,५:३४–११:५८ घं· ③
१७	१४ श	। ③ मासादिः।
१८	३० र	मृगशिरायांबुधः घं·०७:४८, आश्लेषयांशुक्रः घं·२४:४६।

ति	**श्राद्धकालं** घं·मि·
१	११:५७–१३:४६
३०	११:५९–१३:४९

❀ आषाढ़ मास कृत्य ❀

वृष्टिविचार– आषाढ़ कृष्णपक्ष प्रतिपदा के दिन आकाश में वर्षा सम्बन्धी यदि पञ्चनिमित्त न दिखें, तो दो मास तक वृष्टि नहीं होती है, ये पञ्चनिमित्त हैं– १.बादल २.गर्जन ३.वायु ४.विद्युत् तथा ५.वर्षण–

आषाढमासे प्रथमे च पक्षे
निरभ्रदृष्टे रविमण्डले च।
विद्युन्नगजर्त्यथ नैव मेघो मासद्वयं
तत्र न वर्षणं स्यात् ।।

योगिनी एकादशी– आषाढ कृष्ण एकादशी को योगिनी एकादशी कहते हैं। इस एकादशी व्रत के प्रभाव से कुष्ठनाश होता है। अतः इस व्रत को करने वाला त्वचारोग से रहित होता है–

आषाढे कृष्णपक्षे तु योगिनी–व्रतमाचरेत्। अस्य व्रतस्य पुण्येन कुष्ठो नश्यति वै ध्रुवम्।।

❀ पंचगव्य निर्माण विधि ❀

इससे गोमूत्र – ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्यः धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। १० ग्राम
इससे गोबर – ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।२ ग्राम
इससे दूध– ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्णियम् । भवा वाजस्य संगथे।। ७० ग्राम
दही– ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयूंषि तारिषत्।।३० ग्राम
इससे घृत – ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि।। १० ग्राम
इससे कुशोदक – ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे ऽश्विनोर् बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।
इससे मिलाएं– ॐ आपो हि ष्ठा मयो भुवः। ता न ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे। यो वः शिवतमो रसः। तस्य भाजयतेह नः। उषतीरिव मातरः। तस्मा अरङ्गमाम वः। यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः।
अभिमन्त्रण– ॐ मानस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः ।
मा नो वीरान् रुद्रभामिनोऽबधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे ।।

पञ्चगव्य में देवताओं– गोमूत्र में वरुणदेव, गोबर में अग्निदेव, दही में वायुदेव, दूध में चन्द्रदेव और घृत में सूर्यदेव का निवास होता है। वृद्धशातातप में कहा है, ब्रह्मकूर्च (पञ्चगव्य+कुशोदक) पीने से त्वचा, हड्डी, उदर में स्थित पाप भस्म हो जाता है। यह अभक्ष्य–अपेय शुद्धि तथा धर्मान्तरण–शुद्धि का दिव्य माध्यम है।

❀ श्रीमद्भागवत महापुराण के स्कन्ध ७ के अध्याय ११ में धर्म के ३० लक्षण बतलाये गये हैं–

१. सत्य २. दया ३. तप ४. शौच ५. तितीक्षा ६. शम ७. दम ८. अहिंसा ९. ब्रह्मचर्य १०. त्याग ११. स्वाध्याय १२. आर्जव (सीधापन) १३. संतोष १४. समदृष्टि १५. सेवा १६. भोगनिवृत्ति १७. अनहंकार १८. मौन १९. आत्मविमर्श २०. बलिवैश्वदेव(संविभाग) २१. प्राणियों में आत्मदेवता बुद्धि २२. श्रवण २३. कीर्तन २४. स्मरण २५. सेवा २६. पूजा २७ प्रणाम २८. दास्य भाव २९. मित्र भाव तथा ३०. आत्मसमर्पण

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

जून	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
५	०२:४६	०४:२२	०६:१७	०८:३२	१०:५२	१३:०८	१५:२३	१७:४२	२०:०१	२२:०६	२३:५१	०१:२०
६	०२:४२	०४:१८	०६:१४	०८:२८	१०:४८	१३:०४	१५:१९	१७:३८	१९:५७	२२:०३	२३:४७	०१:१६
७	०२:३८	०४:१४	०६:१०	०८:२४	१०:४४	१३:००	१५:१५	१७:३४	१९:५३	२१:५९	२३:४३	०१:१२
८	०२:३४	०४:१०	०६:०६	०८:२०	१०:४०	१२:५७	१५:१२	१७:३०	१९:४९	२१:५५	२३:३९	०१:०८
९	०२:३०	०४:०६	०६:०२	०८:१६	१०:३६	१२:५३	१५:०८	१७:२६	१९:४५	२१:५१	२३:३५	०१:०४
१०	०२:२६	०४:०२	०५:५८	०८:१२	१०:३२	१२:४९	१५:०४	१७:२३	१९:४१	२१:४७	२३:३१	०१:०१
११	०२:२३	०३:५९	०५:५४	०८:०८	१०:२८	१२:४५	१५:००	१७:१९	१९:३८	२१:४३	२३:२८	००:५७
१२	०२:१९	०३:५५	०५:५०	०८:०४	१०:२४	१२:४१	१४:५६	१७:१५	१९:३४	२१:३९	२३:२४	००:५३
१३	०२:१५	०३:५१	०५:४६	०८:००	१०:२०	१२:३७	१४:५२	१७:११	१९:३०	२१:३५	२३:२०	००:४९
१४	०२:११	०३:४७	०५:४२	०७:५६	१०:१७	१२:३३	१४:४८	१७:०७	१९:२६	२१:३१	२३:१६	००:४५
१५	०२:०७	०३:४३	०५:३८	०७:५२	१०:१३	१२:२९	१४:४४	१७:०३	१९:२२	२१:२७	२३:१२	००:४१
१६	०२:०३	०३:३९	०५:३४	०७:४९	१०:०९	१२:२५	१४:४०	१६:५९	१९:१८	२१:२३	२३:०८	००:३७
१७	०१:५९	०३:३५	०५:३०	०७:४५	१०:०५	१२:२१	१४:३६	१६:५५	१९:१४	२१:१९	२३:०४	००:३३
१८	०१:५५	०३:३१	०५:२७	०७:४१	१०:०१	१२:१७	१४:३२	१६:५१	१९:१०	२१:१६	२३:००	००:२९

जून	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
५	**सिद्ध**·१, **मृत्यु**·२,
६	**सिद्ध**·३, **द·न**·उषा,
७	**द·ति**·४,
८	**द·ति**·४, **सिद्ध**·५, **रवियोग**ः ध,
९	**सिद्ध**·६, **मृत्यु**·७, **रवियोग**ः श,
१०	**रवियोग**ः श,
११	**सिद्ध**·८, **सर्वार्थ**·उभा,
१२	**अमृत**·१०,
१३	**मृत्यु**·११, **सर्वार्थ**·अ,
१४	**अमृत**·११, **सिद्ध**·१२,
१५	**अमृत**·१३,
१६	**अमृत**·१४,
१७	**सर्वार्थ**·रो, **सिद्ध**·१४, **मृत्यु**·१५,
१८	**अमृत**·१५, **मृत्यु**·१,

व्रतों में **एकादशी व्रत** प्रधान है। एकादशी और भगवत्महोत्सव एक व्रत में गिने जाते हैं। जब तक एकादशी और भगवत्महोत्सव हों तब तक उपवास रखना चाहिये। दशमी को असुरों तथा एकादशी में देवताओं की उत्पत्ति हुई है, दशमी में भी अर्धरात्र का समय असुरों की उत्पत्ति का कारण है। अतः एकादशी में दशमी का वेध निषिद्ध माना जाता है। कूर्मपुराण,

अर्धरात्रमति क्रम्य दशमी दृश्यते यदि।
तदाह्येकादशीं त्यक्त्वा द्वादशीं समुपोषयेत् ।।

जो सूर्योदय पूर्व ५५ घटी (४५ घटी निम्बार्क) के उपरान्त यदि दशमी हो तो निश्चय ही उस एकादशी को छोड़ कर द्वादशी में व्रत करे। वैष्णवाचार्यों ने पूर्वविद्धा तिथि का त्याग वैष्णवों का लक्षण माना है– *"पूर्वविद्धा तिथिस्त्यागो वैष्णवस्य हि लक्षणम्"*। इस नारदपंचरात्र के प्रमाणानुसार पूर्वविद्धा तिथि का त्याग ही वैष्णव का लक्षण है। अतः वैष्णव व्रतोपवासादि में पूर्वविद्धा तिथि छोड़ परविद्धा तिथि ही ग्राह्य है।

आषाढ़ शुक्लपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, १९ जून से ३ जुलाई, २०२३ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– १९:६:२०२३ मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः; वक्री शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपूर्वास्तः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		ऋ व्रत–पर्व–उत्सव ऋ
जून	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	१९ जून से ३ जुलाई
१९	१ चं	१०:४२	०९:५२	आर्द्रा	३४:१०	१९:१५	वृद्धि	४८:१९	२४:५५	बव	१०:४२	बाल	४२:१८	३४:२०	५:३५	१९:१९	मिथुन	अहोरात्र	कालदंड	४	१९	**गुप्त नवरात्र आरम्भः**
२०	२ मं	१४:०९	११:१५	पुन·	३९:३४	१९:२५	ध्रुव	४९:०९	२५:१५	कौल	१४:०९	तैति	४६:१४	३४:२०	५:३५	१९:१९	क·२३:०८	१४:५०	प्रवर्द्ध	५	२०	**श्रीजगन्नाथ रथयात्रा,** श्रीरामबलराम रथोत्सव
२१	३ बु	१८:२९	१२:५९	पुष्य	४५:४३	२३:५२	व्याघ·	५०:३२	२५:४८	गर	१८:२९	वणि	५०:५२	३४:२१	५:३५	१९:२०	कर्क	अहोरात्र	मातङ्ग	६	२१	बुध पूर्वास्त घं·१०:०२
२२	४ गु	२३:२१	१४:५६	आश्ले·	५२:१४	२६:२९	हर्षण	५२:१२	२६:२८	विष	२३:२१	बव	५५:५३	३४:२१	५:३५	१९:२०	सिं·५२:१४	२६:२९	अमृत	७	२२	**वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी**
२३	५ शु	२८:२३	१६:५७	मघा	५८:४२	२९:०४	वज्र	५३:५०	२७:०७	बाल	२८:२३	कौल	६०:००	३४:२१	५:३६	१९:२०	सिंह	अहोरात्र	काण	८	२३	श्रीद्वारकाधीश पाटोत्सव कांकरोली
२४	६ श	३३:०७	१८:५०	पू·फा·	६०:००	अहोरात्र	सिद्धि	५५:०७	२७:३८	कौल	००:४८	तैति	३३:०७	३४:२१	५:३६	१९:२०	सिंह	अहोरात्र	लुम्ब	९	२४	**श्रीस्कन्द षष्ठी,** कर्दमषष्ठी·मनसापूजा (बंगाल)
२५	७ र	३७:११	२०:२८	पू·फा·	०४:४३	०७:२९	व्यति·	५५:४८	२७:५५	गर	०५:१५	वणि	३७:११	३४:२१	५:३६	१९:२०	कं·२१:०६	१४:०२	छत्र	१०	२५	विवस्वत सप्तमी, विवस्वत सूर्यपूजा
२६	८ चं	४०:१७	२१:४३	उ·फा·	०९:५६	०९:३५	वरी·	५५:४०	२७:५२	विष	०८:५२	बव	४०:१७	३४:२०	५:३६	१९:२१	कन्या	अहोरात्र	श्रीवत्स	११	२६	**श्रीदुर्गाष्टमी,** श्रीपरशुराम अष्टमी (उड़ीसा)
२७	९ मं	४२:१३	२२:३०	हस्त	१४:०५	११:१५	परिघ	५४:३८	२७:२८	बाल	११:२४	कौल	४२:१३	३४:२०	५:३७	१९:२१	तु·४५:४५	२३:५४	सौम्य	१२	२७	**आषाढ़ गुप्तनवरात्र समाप्तिः, भड़ल्या नवमी**
२८	१० बु	४२:५५	२२:४७	चित्रा	१७:०५	१२:२७	शिव	५२:३५	२६:३९	तैति	१२:४४	गर	४२:५५	३४:१९	५:३७	१९:२१	तुला	अहोरात्र	कालदंड	१३	२८	**गुप्तनवरात्रोत्थापन,** मन्वादि, गिरिजा पूजा
२९	११ गु	४२:२०	२२:३३	स्वाती	१८:४९	१३:०९	सिद्ध	४९:३२	२५:२६	वणि	१२:४७	विष	४२:२०	३४:१९	५:३७	१९:२१	तुला	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	१४	२९	**श्रीहरिशयनी एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त)**
३०	१२ शु	४०:३२	२१:५०	विशा·	१९:१९	१३:२१	साध्य	४५:३०	२३:४९	बव	११:३५	बाल	४०:३२	३४:१८	५:३७	१९:२१	वृ·०४:१८	०७:२१	मातङ्ग	१५	३०	**हरिवासर पारणा १३:३१ पूर्व**
जुलाई	१३ श	३७:३७	२०:४०	अनु·	१८:४०	१३:०६	शुभ	४०:३४	२१:५१	कौल	०९:१२	तैति	३७:३७	३४:१८	५:३८	१९:२१	वृश्चिक	अहोरात्र	अमृत	१६	जुलाई	**शनि प्रदोष व्रतम्**
२	१४ र	३३:४३	१९:०७	ज्ये·	१६:६०	१२:२६	शुक्ल	३४:५१	१९:३५	गर	०५:४६	वणि	३३:४३	३४:१७	५:३८	१९:२१	ध·१६:६०	१२:२६	काण	१७	२	**शिवशयनचतुर्दशी, पूर्णिमा** (व्रत), चौमासी चौदस (जैन)
३	१५ चं	२८:५९	१७:१४	मूल	१४:२७	११:२५	ब्रह्म	२८:२८	१७:०२	विष	०१:२६	बव	२८:५९	३४:१६	५:३८	१९:२१	धनु	अहोरात्र	लुम्ब	१८	३	**पूर्णिमा (स्नान, दान), श्रीगुरुपूर्णिमा**

❀ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❀

दिनाङ्क	तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	वक्री शनिः	राहुः	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर	चन्द्रोदयः
जून	वार	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि			मि:से	
१९	१ चं	०२:०३:००:०२	०२:१२:५७:१७	०३:२२:३९:४४	०१:२५:००:५१	००:१४:२०:६०	०३:१६:४९:०२	१०:०९:५२:५३	१२:०९:२९:२९	४७:१०:२२	उ·२३:५५:४७	– ०:४०	०६:२०
२०	२ मं	०२:०३:५६:५९	०२:२५:१७:१३	०३:२३:१५:५४	०१:२६:५२:०९	००:१४:३३:०८	०३:१७:३२:५७	१०:०९:५२:०९	१२:०९:२६:१८	४७:१०:३०	उ·२३:५७:२७	– ०:५३	०७:१४
२१	३ बु	०२:०४:५३:५४	०३:०७:२७:४८	०३:२३:५२:०७	०१:२८:४३:५५	००:१४:४५:११	०३:१८:१५:५४	१०:०९:५१:२०	१२:०९:२३:०७	४७:१०:३५	उ·२३:५८:४२	– १:०५	०८:०८
२२	४ गु	०२:०५:५०:४९	०३:१९:३२:०४	०३:२४:२८:२२	०२:००:३६:०६	००:१४:५७:०८	०३:१८:५७:५०	१०:०९:५०:२३	१२:०९:१९:५७	४७:१०:३८	उ·२३:५९:३२	– १:१८	०९:०३
२३	५ शु	०२:०६:४७:४४	०४:०१:३३:२३	०३:२५:०४:३९	०२:०२:२८:३७	००:१५:०९:००	०३:१९:३८:४२	१०:०९:४९:२०	१२:०९:१६:४६	४७:१०:३८	उ·२३:५९:५७	– १:३०	०९:५७
२४	६ श	०२:०७:४४:३८	०४:१३:३५:४२	०३:२५:४०:५९	०२:०४:२१:२६	००:१५:२०:४७	०३:२०:१८:२९	१०:०९:४८:११	१२:०९:१३:३५	४७:१०:३६	उ·२३:५९:५७	– १:४३	१०:५०
२५	७ र	०२:०८:४१:३१	०४:२५:४२:४०	०३:२६:१७:२१	०२:०६:१४:३०	००:१५:३२:२७	०३:२०:५७:०६	१०:०९:४६:५५	१२:०९:१०:२४	४७:१०:३१	उ·२३:५९:३१	– १:५५	११:४२
२६	८ चं	०२:०९:३८:२४	०५:०७:५७:३१	०३:२६:५३:४६	०२:०८:०७:४५	००:१५:४४:०२	०३:२१:३४:३२	१०:०९:४५:३३	१२:०९:०७:१४	४७:१०:२३	उ·२३:५८:४०	– २:०८	१२:३६
२७	९ मं	०२:१०:३५:१६	०५:२०:२३:०२	०३:२७:३०:१३	०२:१०:०१:०९	००:१५:५५:३०	०३:२२:१०:४४	१०:०९:४४:०४	१२:०९:०४:०३	४७:१०:१३	उ·२३:५७:२५	– २:२०	१३:३०
२८	१० बु	०२:११:३२:०९	०६:०३:०१:२९	०३:२८:०६:४३	०२:११:५४:३९	००:१६:०६:५३	०३:२२:४५:३८	१०:०९:४२:२९	१२:०९:००:५२	४७:१०:००	उ·२३:५५:४४	– २:३२	१४:२६
२९	११ गु	०२:१२:२९:००	०६:१५:५४:२८	०३:२८:४३:१५	०२:१३:४८:११	००:१६:१८:०९	०३:२३:१९:११	१०:०९:४०:४८	१२:०८:५७:४१	४७:०९:४५	उ·२३:५३:३८	– २:४४	१५:२४
३०	१२ शु	०२:१३:२५:५२	०६:२९:०२:५१	०३:२९:१९:५०	०२:१५:४१:४३	००:१६:२९:१९	०३:२३:५१:२०	१०:०९:३८:६०	१२:०८:५४:३०	४७:०९:२७	उ·२३:५१:०७	– २:५६	१६:२४
जुलाई	१३ श	०२:१४:२२:४३	०७:१२:२६:४६	०३:२९:५६:२७	०२:१७:३५:११	००:१६:४०:२२	०३:२४:२२:०२	१०:०९:३७:०६	१२:०८:५१:२०	४७:०९:०६	उ·२३:४८:११	– ३:०८	१७:२५
२	१४ र	०२:१५:१९:३४	०७:२६:०५:३३	०४:००:३३:०६	०२:१९:२८:३०	००:१६:५१:१९	०३:२४:५१:१३	१०:०९:३५:०६	१२:०८:४८:०९	४७:०८:४३	उ·२३:४४:५१	– ३:१९	१८:२६
३	१५ चं	०२:१६:१६:२५	०८:०९:५७:४७	०४:०१:०९:४८	०२:२१:२१:३६	००:१७:०२:०९	०३:२५:१८:४९	१०:०९:३३:००	१२:०८:४४:५८	४७:०८:१७	उ·२३:४१:०६	– ३:३१	१९:२२

२२ जून सूर्योदयकालीन तिथिः**४**

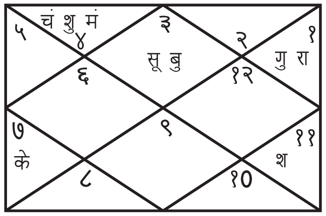

२९ जून सूर्योदयकालीन तिथिः**११**

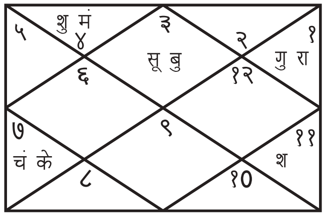

आषाढ़ शुक्लपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, १९ जून से ३ जुलाई, २०२३ ईस्वी

पक्षान्तः–कालःपश्चिम । ऋतुःग्रीष्म । उत्तरायणं ।
सौम्यगोलः । तिः१५ अयनांशाः२२:५१:४८

दिनाङ्क जून	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
१९	१ चं	।
२०	२ मं	।
२१	३ बु	**भद्रारंभः २५:५६घं·**, मिथुनेबुधः घं·२१:५३।
२२	४ गु	**भद्रांतः १४:५६घं·**, **गण्डान्तारम्भः १९:५०**, आर्द्रायांरविः घं·२६:२१।
२३	५ शु	**गण्डान्तः ०९:०९**, साईं टेऊँराम जयन्ती।
२४	६ श	**श्रीमहावीर स्वामी गर्भ कल्याणक**, व्यतीपात पुण्यम्।
२५	७ र	**भद्रारंभः २०:२९घं·**, आर्द्रायांबुधः घं·११:०१।
२६	८ चं	महिषघ्नी व्रत, **भद्रांतः ९:०९घं·**।
२७	९ मं	कन्दर्प नवमी, ऐन्द्री पूजा।
२८	१० बु	**आशादशमी**, मन्वादि।
२९	११ गु	**भद्रा १०:४४–२२:३४घं·**, **चातुर्मास्य व्रतारम्भः**, श्रीविष्णुशयनोत्सव।
३०	१२ शु	श्रीवासुदेव द्वादशी, हरिवासराभाव।
जुलाई	१३ श	मघायांसिंहेमङ्गलः घं·०७:५९।
२	१४ र	**भद्रारंभः १९:०८घं·**, **गण्डान्तः ६:३९–१८:१३**, पुनर्वसौबुधः घं·१२:२०।
३	१५ चं	**भद्रांतः ६:१३घं·**, **श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा**, **श्रीवेदव्यास जयन्ती**, **वायु धारिणी पूर्णिमा**, मन्वादि, कोकिला व्रत, वायु परीक्षण।

ति	**श्राद्धकालं** घं·मि·
१	११:५९–१३:४९
१५	१२:०२–१३:५२

❀ आषाढ़ मास कृत्य ❀

❀ **आषाढ़ी गुप्त नवरात्रि–** आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा से लेकर नवमी पर्यन्त गुप्त नवरात्रि होती है। इसमें भगवती का आराधन करना चाहिए। वासन्तिक (चैत्र) एवं शारदीय (आश्विन) नवरात्रि प्रकट होती हैं, व आषाढ़ी एवं माघी नवरात्रि गुप्त होती हैं।

– **चैत्रेऽश्विने तथाषाढे माघे कार्यो महोत्सवः नवरात्रे महाराज! पूजा कार्या विशेषतः।।** – श्रीमद्देवीभागवत, ३/२४/२१।।

गुप्त नवरात्रि में अपने इष्टदेव की आराधना, पाठ, जपादि कर्म परम सिद्धिदायक हो जाता है।

❀ **रथयात्रादर्शन–** आषाढ़ शुक्ल द्वितीया के दिन रथयात्रा उत्सव करें। तिथि का अभाव हो, अर्थात् द्वितीया तिथि न हो, तो केवल पुष्य नक्षत्र में ही उस उत्सव को नहीं करना चाहिये। क्योंकि, ''तिथि न होने पर जो मनुष्य (रथयात्रा आदि) कर्म करते हैं, उनका किया हुआ सब कर्म वृथा हो जाता है, और वे अपने को नरक में ले जाते हैं।''–ऐसा गर्गाचार्य का कथन है। विद्धाधिक होने पर दूसरे दिन तृतीया में यह उत्सव करें।

❀ **श्रीहरि(विष्णु) शयन–** आषाढ़ शुक्ल एकादशी श्रीहरिशयनी अथवा पद्मा कहलाती है। इस दिन से भगवान् विष्णु क्षीरसागर में शेषशैय्या पर चार मास के लिए शयन करते हैं। फलतः इन चार मासों में सभी प्रकार के शुभकर्म वर्जित हैं। श्रीविष्णु शयनोत्सव की रात्रि में श्रीभगवान् की पूजा करे। वस्त्र–चन्दनादि, छत्र, चामर, ध्वजा, पताकादि अर्पण कर भगवान् को सन्तुष्ट करे। श्रीभगवान् को पालकी में जलाशय के निकट ले जाकर पूजा करके जूही के फूल से प्रार्थनापूर्वक पुष्पाञ्जलि दे –

सुप्ते त्वयि जगन्नाथे जगत्सुप्तं भवेदिदम् । विबुद्धे त्वयि बुध्येत तत्सर्वं सचराचरम् ।

(हे भगवान् विष्णु! आपके सोने से संसार सो जाता है। आपके जागने से यह चराचर जगत् जाग उठता है।)

❀ **श्री गुर पद नख मनि गन जोती। सुमिरत दिब्य दृष्टि हियँ होती।। दलन मोह तम सो सप्रकासू। बड़े भाग उर आवइ जासू।।**

श्री गुरुदेव भगवान् के चरण नखों की ज्योति मणियों के प्रकाश के समान है, जिसके स्मरण करते ही हृदय में दिव्य दृष्टि उत्पन्न हो जाती है। वह प्रकाश अज्ञान रूपी अन्धकार का नाश करने वाला है, वह जिसके हृदय में आ जाता है, उसके बड़े भाग्य हैं।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

जून	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१९	०१:५१	०३:२७	०५:२३	०७:३७	०९:५७	१२:१३	१४:२८	१६:४७	१९:०६	२१:१२	२२:५६	००:२५
२०	०१:४७	०३:२३	०५:१९	०७:३३	०९:५३	१२:१०	१४:२५	१६:४३	१९:०२	२१:०८	२२:५२	००:२१
२१	०१:४३	०३:१९	०५:१५	०७:२९	०९:४९	१२:०६	१४:२१	१६:४०	१८:५८	२१:०४	२२:४८	००:१८
२२	०१:४०	०३:१६	०५:११	०७:२५	०९:४५	१२:०२	१४:१७	१६:३६	१८:५५	२१:००	२२:४४	००:१४
२३	०१:३६	०३:१२	०५:०७	०७:२१	०९:४१	११:५८	१४:१३	१६:३२	१८:५१	२०:५६	२२:४१	००:१०
२४	०१:३२	०३:०८	०५:०३	०७:१७	०९:३७	११:५४	१४:०९	१६:२८	१८:४७	२०:५२	२२:३७	००:०६
२५	०१:२८	०३:०४	०४:५९	०७:१३	०९:३४	११:५०	१४:०५	१६:२४	१८:४३	२०:४८	२२:३३	००:०२
२६	०१:२४	०३:००	०४:५५	०७:०९	०९:३०	११:४६	१४:०१	१६:२०	१८:३९	२०:४४	२२:२९	२३:५८
२७	०१:२०	०२:५६	०४:५२	०७:०६	०९:२६	११:४२	१३:५७	१६:१६	१८:३५	२०:४०	२२:२५	२३:५४
२८	०१:१६	०२:५२	०४:४८	०७:०२	०९:२२	११:३८	१३:५३	१६:१२	१८:३१	२०:३६	२२:२१	२३:५०
२९	०१:१२	०२:४८	०४:४४	०६:५८	०९:१८	११:३४	१३:४९	१६:०८	१८:२७	२०:३३	२२:१७	२३:४६
३०	०१:०८	०२:४४	०४:४०	०६:५४	०९:१४	११:३०	१३:४५	१६:०४	१८:२३	२०:२९	२२:१३	२३:४२
जुलाई	०१:०४	०२:४०	०४:३६	०६:५०	०९:१०	११:२७	१३:४२	१६:००	१८:१९	२०:२५	२२:०९	२३:३८
२	०१:००	०२:३६	०४:३२	०६:४६	०९:०६	११:२३	१३:३८	१५:५६	१८:१५	२०:२१	२२:०५	२३:३५
३	००:५७	०२:३२	०४:२८	०६:४२	०९:०२	११:१९	१३:३४	१५:५३	१८:११	२०:१७	२२:०१	२३:३१

जून	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
१९	**सिद्ध**·१, **मृत्यु**·२
२०	**अमृत**·२, **त्रिपुष्करः**२+पुन, **सिद्ध**·३, **रवियोग**ःपु
२१	**मृत्यु**·३, **रवियोग**ःपु,
२२	**मृत्यु**·४, **सिद्ध**·५,
२३	**सिद्ध**·६, **रवियोग**ःपूफा,
२४	**अमृत**·६, **रवियोग**ःपूफा
२५	**रवियोग**ःपूफा, **सर्वार्थ**·उफा, **त्रिपुष्करः**७+उफा, **सिद्ध**·८,
२६	**द·ति**·८,
२७	**द·ति**·८, **रवियोग**ःचि,
२८	**रवियोग**ःचि, **रवियोग**ःस्वा, **अमृत**·११,
२९	**रवियोग**ःस्वा,
३०	**मृत्यु**·१२, **सर्वार्थ**·अनु,
जुलाई	**रवियोग**ःज्ये, **सिद्ध**·१४,
२	**रवियोग**ःज्ये, **सर्वार्थ**·मू, **अमृत**·१५,
३	**अमृत**·१५, **सिद्ध**·१,

卐 **देवशयनी एकादशी** को श्रीहरि क्षीरसागर में शयन करते हैं। इस मन्त्र से पूजा करें–

सुप्ते त्वयि जगन्नाथे जगत्सुप्तं भवेदिदम्। विबुद्धे च विबुध्येत प्रसन्नो मे भवाव्यय।।

अभीष्ट फलप्राप्ति हेतु चातुर्मास में ४ माह के लिए लिये पदार्थों का त्याग और ग्रहण करे। स्वर्गप्राप्तिके लिये पुष्पादि भोगों का त्याग करे। देह–शुद्धि के लिये पंचगव्य पान करे, वंश–वृद्धिके लिये नियमित दूध का, सर्वपापक्षयपूर्वक सकल पुण्यफल प्राप्त करने के लिये एकभुक्त, नक्तव्रत, अयाचित भोजन या सर्वथा उपवास का व्रत ग्रहण करे।

卐 आषाढ़ी **गुरु पूर्णिमा** पर समस्त आचार्य परम्परा सहित निजगुरुदेव का पूजन करना चाहिये। यह पूर्णिमा मध्याह्नव्यापिनी ग्राह्य है। परंतु दोनों दिन मध्याह्नव्यापिनी हो तो परदिन की पूर्णिमा ग्रहण करनी चाहिये।

श्रावण कृष्णपक्षः शुद्ध पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, ४ जुलाई से १७ जुलाई, २०२३ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– ४:७:२०२३ मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः; वक्री शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपूर्वास्त

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		व्रत–पर्व–उत्सव
जुलाई	वार	घ.प.	घं:मि	नक्षत्र	घ.प.	घं:मि	योग	घ.प.	घं:मि	क१	घ.प.	क२	घ.प.	घ.प.	घं:मि	घं:मि	राशि घ.प.	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	४ जुलाई से १७ जुलाई
४	१ मं	२३:३६	१५:०५	पू.षा.	११:१३	१०:०८	ऐन्द्र	२१:३२	१४:१६	कौल	२३:३६	तैति	५०:४३	३४:१५	५:३९	१९:२१	म.२५:१९	१५:४६	मित्र	१९	४	**हिण्डोला प्रारम्भ, अशून्य शयन व्रतम्**
५	२ बु	१७:४४	१२:४५	उ.षा.	०७:२७	०८:३८	वैधृ.	१४:१२	११:२०	गर	१७:४४	वणि	४४:४२	३४:१४	५:३९	१९:२१	मकर	अहोरात्र	मुद्गर	२०	५	जयापार्वती व्रतारम्भ (गुजरात)
६	३ गु	११:३६	१०:१८	श्रवण धनिष्ठा	०३:२२ ५५:४९	०७:०० २९:१९	विष्कु. प्रीति	०६:३८ ५२:२१	०८:१९ २९:१५	विष	११:३६	बव	३८:२९	३४:१३	५:४०	१९:२१	कु.३१:१६	१८:१०	ध्वज	२१	६	**संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी, चन्द्रोदय घं.२१:३०**
७	४ शु ५ शु	०५:२२ ५३:५५	०७:४९ २९:२३	शत.	५५:०५	२७:४२	आयु.	५१:२५	२६:१४	बाल	०५:२२	कौल	३२:१८	३४:१२	५:४०	१९:२१	कुंभ	अहोरात्र	सौम्य	२२	७	**नाग पञ्चमी (जयपुर परम्परागत)**
८	६ श	५३:३२	२७:०५	पू.भा.	५१:१९	२६:१२	सौभा.	४४:०६	२३:१९	गर	२६:२२	वणि	५३:३२	३४:११	५:४०	१९:२१	मी.३७:१३	२०:३४	कालदंड	२३	८	
९	७ र	४८:१७	२५:०१	उ.भा.	४८:०३	२४:५४	शोभ.	३७:१०	२०:३३	विष	२०:५०	बव	४८:१७	३४:०९	५:४१	१९:२१	मीन	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	२४	९	भानुसप्तमी
१०	८ चं	४३:४५	२३:११	रेवती	४५:२९	२३:५६	अतिग.	३०:४७	१८:०१	बाल	१५:५५	कौल	४३:४५	३४:०८	५:४१	१९:२१	मे.४५:२९	२३:५३	मातङ्ग	२५	१०	**श्रीकालाष्टमी, श्रावण सोमवार व्रतम्**
११	९ मं	४०:०३	२१:४३	अश्वि.	४३:४७	२३:१३	सुकर्मा	२५:०५	१५:४४	तैति	११:४६	गर	४०:०३	३४:०६	५:४२	१९:२०	मेष	अहोरात्र	अमृत	२६	११	मंगलागौरी पूजा
१२	१० बु	३७:२३	२०:४०	भरणी	४३:०६	२२:५७	धृति	२०:११	१३:४७	वणि	०८:३५	विष	३७:२३	३४:०५	५:४२	१९:२०	वृ.५८:०७	२८:५७	काण	२७	१२	गुरु हरकिशन जयन्ती
१३	११ गु	३५:५२	२०:०४	कृत्ति.	४३:३४	२३:०८	शूल	१६:१०	१२:११	बव	०६:२८	बाल	३५:५२	३४:०३	५:४३	१९:२०	वृष	अहोरात्र	लुम्ब	२८	१३	**श्रीकामदा एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त)**
१४	१२ शु	३५:३६	१९:५७	रोहि.	४५:१६	२३:४९	गण्ड	१३:०८	१०:५८	कौल	०५:३४	तैति	३५:३६	३४:०१	५:४३	१९:२०	वृष	अहोरात्र	मित्र	२९	१४	
१५	१३ श	३६:३५	२०:२२	मृग.	४८:१२	२५:०१	वृद्धि	११:०७	१०:१०	गर	०५:५५	वणि	३६:३५	३४:००	५:४४	१९:२०	मि.१६:३४	१२:२१	वज्र	३०	१५	**प्रदोष व्रतम्, मास शिवरात्रि व्रतम्**
१६	१४ र	३८:४९	२१:१६	आर्द्रा	५२:२०	२६:४०	ध्रुव	१०:०५	०९:४६	विष	०७:३३	बव	३८:४९	३३:५८	५:४४	१९:१९	मिथुन	अहोरात्र	ध्वांक्ष	३१	१६	वक्री शुक्रः घं.२७:३१
१७	३० चं	४२:१०	२२:३७	पुन.	५७:३१	२८:४५	व्याघ.	०९:५८	०९:४४	चतु	१०:२१	नाग	४२:१०	३३:५६	५:४५	१९:१९	क.४१:०८	२२:१२	धूम्र	३२	१७	**हरियाली अमावस्या (देव–पितृकार्य)**

औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः

दिनाङ्क जुलाई	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः (मा/व) रा अं क वि	वक्री शनिः रा अं क वि	राहुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
४	१ मं	०२:१७:१३:१६	०८:२४:०१:२५	०४:०१:४६:३२	०२:२३:१४:२७	००:१७:१२:५३	०३:२५:४४:४८	१०:०९:३०:४८	१२:०८:४१:४७	४७:०७:४९	उ.२३:३६:५६	– ३:४२	२०:१७
५	२ बु	०२:१८:१०:०७	०९:०८:१३:४८	०४:०२:२३:१९	०२:२५:०७:०२	००:१७:२३:२९	०३:२६:०९:०४	१०:०९:२८:३०	१२:०८:३८:३७	४७:०७:१९	उ.२३:३२:२१	– ३:५२	२१:०५
६	३ गु	०२:१९:०६:५९	०९:२२:३१:४७	०४:०३:००:०९	०२:२६:५९:१५	००:१७:३३:५९	०३:२६:३१:३५	१०:०९:२६:०६	१२:०८:३५:२६	४७:०६:४६	उ.२३:२७:२३	– ४:०३	२१:५१
७	४ शु	०२:२०:०३:५०	१०:०६:५१:५४	०४:०३:३७:००	०२:२८:५१:०४	००:१७:४४:२१	०३:२६:५२:१६	१०:०९:२३:३६	१२:०८:३२:१५	४७:०६:१०	उ.२३:२१:५९	– ४:१३	२२:३१
८	६ श	०२:२१:००:४१	१०:२१:१०:१०	०४:०४:१३:५४	०३:००:४२:२६	००:१७:५४:३६	०३:२७:११:०३	१०:०९:२१:०१	१२:०८:२९:०४	४७:०५:३२	उ.२३:१६:१२	– ४:२३	२३:१०
९	७ र	०२:२१:५७:३३	११:०५:२३:०२	०४:०४:५०:५०	०३:०२:३३:१७	००:१८:०४:४४	०३:२७:२७:५३	१०:०९:१८:२०	१२:०८:२५:५४	४७:०४:५२	उ.२३:१०:०१	– ४:३२	२३:४८
१०	८ चं	०२:२२:५४:२५	११:१९:२७:२३	०४:०५:२७:४९	०३:०४:२३:३५	००:१८:१४:४४	०३:२७:४२:४१	१०:०९:१५:३३	१२:०८:२२:४३	४७:०४:०९	उ.२३:०३:२६	– ४:४१	२४:२५
११	९ मं	०२:२३:५१:१८	००:०३:२०:३०	०४:०६:०४:४९	०३:०६:१३:१५	००:१८:२४:३७	०३:२७:५५:२३	१०:०९:१२:४१	१२:०८:१९:३२	४७:०३:२४	उ.२२:५६:२७	– ४:५०	२५:०६
१२	१० बु	०२:२४:४८:११	००:१७:००:१८	०४:०६:४१:५२	०३:०८:०२:१६	००:१८:३४:२२	०३:२८:०५:५६	१०:०९:०९:४३	१२:०८:१६:२१	४७:०२:३७	उ.२२:४९:०४	– ४:५८	२५:४८
१३	११ गु	०२:२५:४५:०४	०१:००:२५:१८	०४:०७:१८:५७	०३:०९:५०:३३	००:१८:४३:५९	०३:२८:१४:१५	१०:०९:०६:४०	१२:०८:१३:१०	४७:०१:४८	उ.२२:४१:१८	– ५:०६	२६:३२
१४	१२ शु	०२:२६:४१:५८	०१:१३:३४:४९	०४:०७:५६:०५	०३:११:३८:०२	००:१८:५३:२८	०३:२८:२०:१७	१०:०९:०३:३२	१२:०८:०९:६०	४७:००:५६	उ.२२:३३:०९	– ५:१४	२७:२२
१५	१३ श	०२:२७:३८:५३	०१:२६:२८:५५	०४:०८:३३:१४	०३:१३:२४:३९	००:१९:०२:४९	०३:२८:२३:५९	१०:०९:००:१८	१२:०८:१२:४९	४७:००:०२	उ.२२:२४:३७	– ५:२१	२८:११
१६	१४ र	०२:२८:३५:४८	०२:०९:०८:२४	०४:०९:१०:२६	०३:१५:१०:२१	००:१९:१२:०१	वक्री २८:२५:१७	१०:०८:५६:६०	१२:०८:०३:३८	४६:५९:०६	उ.२२:१५:४२	– ५:२७	२९:०६
१७	३० चं	०२:२९:३२:४४	०२:२१:३४:५१	०४:०९:४७:३९	०३:१६:५५:०३	००:१९:२१:०५	०३:२८:२४:०९	१०:०८:५३:३७	१२:०८:००:२७	४६:५८:०८	उ.२२:०६:२४	– ५:३३	०६:००

जुलाई सूर्योदयकालीन तिथिः**४**

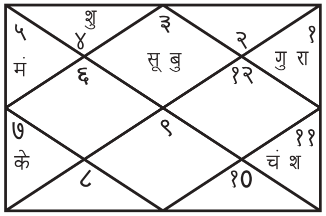

जुलाई सूर्योदयकालीन तिथिः**११**

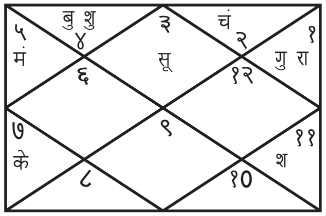

श्रावण कृष्णपक्षः शुद्ध पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, ४ जुलाई से १७ जुलाई, २०२३ ईस्वी

पक्षान्तः–कालःपश्चिम । ऋतुःग्रीष्म उत्तरायणं । सौम्यगोलः ।
कर्कार्कतः ऋतुःवर्षा दक्षिणायनं । ति·३० अयनांशाः२२:५१:५०

दिनाङ्क जुलाई	तिथि वार	व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·)
४	१ मं	**वैधृति पुण्यम्, मैथिल नववर्ष आरम्भ अभिजितारम्भः ५३:२६।**
५	२ बु	**अभिजितान्तः ११:११, भद्रारंभः २३:३२घं·।**
६	३ गु	**पंचकारंभः १८:१०, भद्रांतः १०:१९घं·**, पुनर्वसौरविः घं·२८:०४।
७	४ शु	हरदेवजी पूजा (जयपुरे), **पंचक**, कर्केबुधः घं·२०:४०।
८	६ श	**पंचक, भद्रारंभः २७:०६घं·।**
९	७ र	**पंचक, भद्रांतः १४:०१घं·**, पुष्येबुधः घं·१५:५९।
१०	८ चं	**गण्डान्तः १८:०७–२९:४१, पंचकान्तः २३:५४**, मन्वादि।
११	९ मं	बुध पश्चिमोदित घं·०६:११।
१२	१० बु	**भद्रा ९:०९–२०:४०घं·।**
१३	११ गु	।
१४	१२ शु	।
१५	१३ श	**भद्रारंभः २०:२२घं·।**
१६	१४ र	**भद्रांतः ८:४६घं·**, आश्लेषयांबुधः घं·२६:२५, मासान्तः।
१७	३० चं	**श्रावण सोमवार व्रत**, श्रीसरसमाधुरी जयन्ती शुकपीठ (जयपुर), **कर्क संक्रान्ति पुण्यकाल,१०:५१–१७:१५घं·**, मन्वादि, कर्केरविः घं·१७:१५।

ति	**श्राद्धकाल** घं·मि·
१	१२:०३–१३:५२
३०	१२:०५–१३:५३

❀ श्रावण मास कृत्य ❀

❀ **नागपंचमी**– जयपुर में श्रावण कृष्णपक्ष की पंचमी को नागपंचमी मनाई जाती है, अन्य क्षेत्रों में परम्पराभेद से श्रावण शुक्लपक्ष अथवा भाद्र कृष्ण की पञ्चमी को मनाई जाती है। यह षष्ठीयुक्ता शुभ होती है, ***''पञ्चमी नागपूजायां कार्या षष्ठीसमन्विता।*** आज सर्पों की पूजा करें। घर के मुख्य दरवाजे के दोनों पार्श्वों में नागों के चित्र सटाकर अथवा गोबर से नागों की आकृति बनाकर अनन्त आदि नागों की पूजा दूध, घी, नैवेद्य, दधि, अक्षत, दूर्वा, कुशा, गन्ध, पुष्प आदि से करके प्रार्थना करे कि हमारे जीवन में सर्पों का भय न हो। भविष्यपुराण में कहा है कि प्रत्येक पञ्चमी तिथि में नागपूजा करे। सर्पस्तोत्र के पाठ से कालसर्पदोष एवं सर्पशाप की शान्ति होती है। **सर्पस्तोत्र** –

ब्रह्मलोके च ये सर्पाः शेषनागपुरोगमाः। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ॥१॥
विष्णुलोके च ये सर्पा वासुकिप्रमुखाश्च ये। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ॥२॥
रुद्रलोके च ये सर्पास्तक्षकप्रमुखास्तथा। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ॥३॥
खाण्डवस्य तथा दाहे स्वर्गे ये च समाश्रिताः। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ॥४॥
सर्पसत्रे च ये सर्पा आस्तिकेन च रक्षिताः। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ॥५॥
मलये चैव ये सर्पाः कर्कोटकप्रमुखाश्च ये। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ॥६॥
धर्मलोके च ये सर्पा वैतरण्यां समाश्रिताः। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ॥७॥
ये सर्पाः पार्वतीयेषु दरीसंधिषु संस्थिताः। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ॥८॥
ग्रामे वा यदि वारण्ये ये सर्पाः प्रचरन्ति हि । नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ॥९॥
पृथिव्यां चैव ये सर्पा ये सर्पा बिलसंस्थिताः। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ॥१०॥
रसातले च ये सर्पा अनन्ताद्या महाबलाः। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ॥११॥

❀ **सर्प गायत्री --** भुजङ्गेशाय विद्महे सर्पराजाय धीमहि । तन्नो नागः प्रचोदयात् ।

शकुन के आधार पर वर्षा विचारः-

१. गौरैया धूल में स्नान करे या चातक बोले तो शीघ्र वर्षा होती है। **२.** शतभिषा नक्षत्र के दिन दक्षिण हवा जोर से बहे तो शीघ्र वर्षा होती है। **३.** गाय या गिरगिट सूर्य की ओर देखे, कुत्ता घर से बाहर जाने को अधिक उद्यत हो तो वर्षा होती है। **४.** पशु, कुत्ता खुरों से मिट्टी खोदे, आधी रात को मुर्गा बोले तो शीघ्र वर्षा होती है। **५.** लाल चीटी अंडों के साथ ऊपर की ओर चढ़े अथवा शमी वृक्ष पर चढ़े तो वर्षा होती हैं। ६. गोबर में अधिक कीड़ा हो जाए, धूप में तेजी रहे, पपीहा बोले तो शीघ्र वर्षा होती है। ७. जहाँ तहाँ बगुला पंख फैलाकर पंक्ति में दिखे तो २–३ प्रहरों के बीच वर्षा होती है। ८. मक्खी, भ्रमर–पंक्ति में उड़े, गोबर की ओर जाय तो वर्षा होती है। ९. मछली जमीन की ओर आने को उद्यत हो और मेढ़क जोर से शब्द करे तो शीघ्र वर्षा होती है। १०. गुड़, नमक, मक्खन (घी), अनायास पिघले तो वर्षा होती है।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

जुलाई	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
४	००:५३	०२:२९	०४:२४	०६:३८	०८:५८	११:१५	१३:३०	१५:४९	१८:०८	२०:१३	२१:५८	२३:२७
५	००:४९	०२:२५	०४:२०	०६:३४	०८:५४	११:११	१३:२६	१५:४५	१८:०४	२०:०९	२१:५४	२३:२३
६	००:४५	०२:२१	०४:१६	०६:३०	०८:५१	११:०७	१३:२२	१५:४१	१८:००	२०:०५	२१:५०	२३:१९
७	००:४१	०२:१७	०४:१२	०६:२६	०८:४७	११:०३	१३:१८	१५:३७	१७:५६	२०:०१	२१:४६	२३:१५
८	००:३७	०२:१३	०४:०८	०६:२२	०८:४३	१०:५९	१३:१४	१५:३३	१७:५२	१९:५७	२१:४२	२३:११
९	००:३३	०२:०९	०४:०५	०६:१९	०८:३९	१०:५५	१३:१०	१५:२९	१७:४८	१९:५३	२१:३८	२३:०७
१०	००:२९	०२:०५	०४:०१	०६:१५	०८:३५	१०:५१	१३:०६	१५:२५	१७:४४	१९:४९	२१:३४	२३:०३
११	००:२५	०२:०१	०३:५७	०६:११	०८:३१	१०:४७	१३:०२	१५:२१	१७:४०	१९:४६	२१:३०	२२:५९
१२	००:२१	०१:५७	०३:५३	०६:०७	०८:२७	१०:४३	१२:५८	१५:१७	१७:३६	१९:४२	२१:२६	२२:५५
१३	००:१७	०१:५३	०३:४९	०६:०३	०८:२३	१०:४०	१२:५५	१५:१३	१७:३२	१९:३८	२१:२२	२२:५१
१४	००:१३	०१:४९	०३:४५	०५:५९	०८:१९	१०:३६	१२:५१	१५:०९	१७:२८	१९:३४	२१:१८	२२:४७
१५	००:०९	०१:४५	०३:४१	०५:५५	०८:१५	१०:३२	१२:४७	१५:०६	१७:२४	१९:३०	२१:१४	२२:४४
१६	००:०६	०१:४१	०३:३७	०५:५१	०८:११	१०:२८	१२:४३	१५:०२	१७:२१	१९:२६	२१:१०	२२:४०
१७	००:०२	०१:३८	०३:३३	०५:४७	०८:०७	१०:२४	१२:३९	१४:५८	१७:१७	१९:२२	२१:०७	२२:३६

जुलाई	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
४	मृत्यु·१, द·न·उषा, **अमृत**·२, **त्रिपुष्कर**:२+उषा,
५	**सिद्ध**·२, **मृत्यु**·३,
६	**अमृत**·३, **मृत्यु**·४,
७	**अमृत**·४, **सिद्ध**·६,
८	**अमृत**·६, **रवियोग**:उभा,
९	**सर्वार्थ**·उभा, **रवियोग**:उभा, **सिद्ध**·८
१०	द·ति·८,
११	**सर्वार्थ**·अ,
१२	**अमृत**·११, **सर्वार्थ**·कृ,
१४	**मृत्यु**·१२
१५	**सिद्ध**·१४,
१६	**अमृत**·१५,
१७	**अमृत**·१५, **सिद्ध**·१, **सर्वार्थ**·पु,

卐 **अशून्यशयन व्रत** का आरम्भ श्रावण मास में होता है। इसके प्रभावसे विवाहविच्छेद की संभावना नष्ट हो जाती है। श्रावण में जो श्री शिव–पार्वती की युग्मपूजा करेगा उसका शुभ विवाह होगा और उपवासपूर्वक श्रावण कृष्ण द्वितीया की रात्रि में जो श्री विष्णुलक्ष्मी की पूजा बिस्तर पर करेंगी उनका विवाह–विच्छेद नहीं होगा–

यथा त्वशून्यं तव देव तल्पं समं हि लक्ष्म्या वरदाच्युतेश।
सत्येन तेनामितवीर्य विष्णो गार्हस्थ्यनाशो मम नास्तु देव।

हे विष्णु! आप और लक्ष्मीजी का गृहस्थ जीवन कभी नष्ट नहीं होता, आपकी पूजासे मेरा भी नष्ट न हो।

卐 **नागपंचमी** को नागों और सर्पो की पूजा कर कालसर्प दोष से मुक्ति की प्रार्थना की जायेगी। सर्पदोष निवारक वैदिक मन्त्र –

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये ऽन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।

श्रावण शुक्लपक्षः अधिक पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, १८ जुलाई से १ अगस्त, २०२३ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– १८:७:२०२३ मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; वक्री शुक्रःपश्चिमोदितः; वक्री शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपश्चिमोदितः ;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		व्रत–पर्व–उत्सव
जुलाई	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	१८ जुलाई से १ अगस्त
१८	१ मं	४६:२५	२४:१९	पुष्य	६०:००	अहोरात्र	हर्षण	१०:३९	१०:०१	बव	१४:११	बाल	४६:२५	३३:५४	५:४५	१९:१९	कर्क	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	१	१८	पुरुषोत्तम मास, अधिक मास आरम्भ
१९	२ बु	५१:१५	२६:१५	पुष्य	०३:२८	०७:०९	वज्र	११:५६	१०:३२	बाल	१८:४६	कौल	५१:१५	३३:५२	५:४६	१९:१८	कर्क	अहोरात्र	मातङ्ग	२	१९	
२०	३ गु	५६:१६	२८:१६	आश्ले·	०९:५५	०९:४४	सिद्धि	१३:३३	११:११	तैति	२३:४५	गर	५६:१६	३३:५०	५:४६	१९:१८	सिं·०९:५५	०९:४४	अमृत	३	२०	
२१	४ शु	६०:००	अहोरात्र	मघा	१६:२६	१२:२१	व्यति·	१५:११	११:५१	वणि	२८:४१	विष	६०:००	३३:४७	५:४७	१९:१८	सिंह	अहोरात्र	काण	४	२१	वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी
२२	४ श	०१:००	०६:११	पू·फा·	२२:३३	१४:४८	वरी·	१६:३१	१२:२४	विष	०१:००	बव	३३:१०	३३:४५	५:४७	१९:१७	कं·३८:६०	२१:२३	लुम्ब	५	२२	
३	५ र	०५:०७	०७:५१	उ·फा·	२७:५८	१६:५९	परिघ	१७:१९	१२:४३	बाल	०५:०७	कौल	३६:५१	३३:४३	५:४८	१९:१७	कन्या	अहोरात्र	मित्र	६	२३	
२४	६ चं	०८:१८	०९:०७	हस्त	३२:२२	१८:४५	शिव	१७:२०	१२:४४	तैति	०८:१८	गर	३९:२९	३३:४०	५:४८	१९:१६	कन्या	अहोरात्र	वज्र	७	२४	श्रावण सोमवार
२५	७ मं	१०:२०	०९:५७	चित्रा	३५:३७	२०:०४	सिद्ध	१६:२६	१२:२३	वणि	१०:२०	विष	४०:५५	३३:३८	५:४९	१९:१६	तु·०४:०८	०७:२८	ध्वांक्ष	८	२५	मंगलागौरी पूजा
२६	८ बु	११:०८	१०:१६	स्वाती	३७:३८	२०:०४	साध्य	१४:३३	११:३८	बव	११:०८	बाल	४१:०४	३३:३५	५:४९	१९:१६	तुला	अहोरात्र	धूम्र	९	२६	श्रीदुर्गाष्टमी
२७	९ गु	१०:३९	१०:०५	विशा·	३८:२४	२१:११	शुभ	११:३९	१०:२९	कौल	१०:३९	तैति	३९:५७	३३:३३	५:५०	१९:१५	वृ·२३:१८	१५:०९	प्रवर्द्ध	१०	२७	
२८	१० शु	०८:५७	०९:२५	अनु·	३७:५९	२१:०२	शुक्ल	०७:४७	०८:५७	गर	०८:५७	वणि	३७:४०	३३:३०	५:५०	१९:१४	वृश्चिक	अहोरात्र	राक्षस	११	२८	
२९	११ श	०६:०६	०८:१७	ज्ये·	३६:३१	२०:२७	ब्रह्म ऐन्द्र	०२:५९ ५४:२५	०७:०२ २८:४८	विष	०६:०६	बव	३४:१९	३३:२७	५:५१	१९:१४	ध·३६:३१	२०:२७	मुसल	१२	२९	श्रीपुरुषोत्तम एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त)
३०	१२ र १३ र	०२:१६ ५५:२१	०६:४६ २८:५४	मूल	३४:०९	१९:३१	वैधृ·	५१:०६	२६:१७	बाल	०२:१६	कौल	३०:०३	३३:२५	५:५१	१९:१३	धनु	अहोरात्र	सिद्धि	१३	३०	प्रदोष व्रतम्
३१	१४ चं	५२:१७	२६:४७	पू·षा·	३१:०२	१८:१६	विष्कु·	४४:१३	२३:३३	गर	२५:०१	वणि	५२:१७	३३:२२	५:५२	१९:१३	म·४५:१०	२३:५६	उत्पात	१४	३१	मास शिवरात्रि व्रतम्, श्रावण सोमवार
अगस्त	१५ मं	४६:२८	२४:२८	उ·षा·	२७:२१	१६:४९	प्रीति	३६:५५	२०:३८	विष	१९:२५	बव	४६:२८	३३:१९	५:५२	१९:१२	मकर	अहोरात्र	मानस	१५	अगस्त	श्रावण पूर्णिमा (व्रत,स्नान,दान)

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क जुलाई	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	वक्री शुक्रः रा अं क वि	वक्री शनिः रा अं क वि	राहुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मिःसे	चन्द्रोदयः
१८	१ मं	०३:००:२९:४१	०३:०३:५०:२८	०४:१०:२४:५५	०३:१८:३८:४२	००:१९:३०:०१	०३:२८:२०:३१	१०:०८:५०:०९	१२:०७:५७:१६	४६:५७:०८	उ·२१:५६:४४	– ५:३९	०६:०१
१९	२ बु	०३:०१:२६:३८	०३:१५:५८:०३	०४:११:०२:१३	०३:२०:२१:११	००:१९:३८:४८	०३:२८:१४:२४	१०:०८:४६:३६	१२:०७:५४:०६	४६:५६:०५	उ·२१:४६:४२	– ५:४४	०६:५५
२०	३ गु	०३:०२:२३:३६	०३:२८:००:४६	०४:११:३९:३४	०३:२२:०२:२६	००:१९:४७:२७	०३:२८:०५:४३	१०:०८:४२:५८	१२:०७:५०:५५	४६:५५:०१	उ·२१:३६:१७	– ५:४८	०७:४९
२१	४ शु	०३:०३:२०:३५	०४:१०:०२:१५	०४:१२:१६:५६	०३:२३:४२:२२	००:१९:५५:५६	०३:२७:५४:३०	१०:०८:३९:१६	१२:०७:४७:४४	४६:५३:५५	उ·२१:२५:३१	– ५:५२	०८:४३
२२	४ श	०३:०४:१७:३५	०४:२२:०६:२७	०४:१२:५४:२०	०३:२५:२०:५४	००:२०:०४:१७	०३:२७:४०:४४	१०:०८:३५:३०	१२:०७:४४:३३	४६:५२:४७	उ·२१:१४:२३	– ५:५५	०९:३५
२३	५ र	०३:०५:१४:३६	०५:०४:१६:४९	०४:१३:३१:४७	०३:२६:५७:५५	००:२०:१२:२८	०३:२७:२४:२६	१०:०८:३१:४०	१२:०७:४१:२२	४६:५१:३७	उ·२१:०२:५४	– ५:५८	१०:२९
२४	६ चं	०३:०६:११:३८	०५:१६:३६:२२	०४:१४:०९:१५	०३:२८:३३:१९	००:२०:२०:३१	०३:२७:०५:३७	१०:०८:२७:४५	१२:०७:३८:१२	४६:५०:२५	उ·२०:५१:०३	– ६:००	११:२३
२५	७ मं	०३:०७:०८:४०	०५:२९:०७:४१	०४:१४:४६:४६	०४:००:०६:५९	००:२०:२८:२४	०३:२६:४४:२०	१०:०८:२३:४६	१२:०७:३५:०१	४६:४९:११	उ·२०:३८:५२	– ६:०२	१२:१८
२६	८ बु	०३:०८:०५:४४	०६:११:५२:४६	०४:१५:२४:१९	०४:०१:३८:४८	००:२०:३६:०७	०३:२६:२०:४०	१०:०८:१९:४४	१२:०७:३१:५०	४६:४७:५६	उ·२०:२६:२०	– ६:०३	१३:१५
२७	९ गु	०३:०९:०२:४८	०६:२४:५२:५२	०४:१६:०१:५३	०४:०३:०८:३९	००:२०:४३:४१	०३:२५:५४:४०	१०:०८:१५:३८	१२:०७:२८:३९	४६:४६:३९	उ·२०:१३:२८	– ६:०३	१४:१४
२८	१० शु	०३:०९:५९:५४	०७:०८:०८:३१	०४:१६:३९:३०	०४:०४:३६:२२	००:२०:५१:०५	०३:२५:२६:२७	१०:०८:११:२८	१२:०७:२५:२८	४६:४५:२०	उ·२०:००:१६	– ६:०३	१५:१४
२९	११ श	०३:१०:५७:००	०७:२१:३९:३०	०४:१७:१७:०९	०४:०६:०१:५१	००:२०:५८:२०	०३:२४:५६:०८	१०:०८:०७:१४	१२:०७:२२:१८	४६:४३:५९	उ·१९:४६:४४	– ६:०३	१६:१५
३०	१२ र	०३:११:५४:०८	०८:०५:२४:४८	०४:१७:५४:५०	०४:०७:२४:५४	००:२१:०५:२४	०३:२४:२३:५२	१०:०८:०२:५८	१२:०७:१९:०७	४६:४२:३७	उ·१९:३२:५२	– ६:०१	१७:१४
३१	१४ चं	०३:१२:५१:१७	०८:१९:२२:४३	०४:१८:३२:३२	०४:०८:४५:२२	००:२१:१२:१९	०३:२३:४९:४८	१०:०७:५८:३८	१२:०७:१५:५६	४६:४१:१३	उ·१९:१८:४१	– ५:५९	१८:०९
अगस्त	१५ मं	०३:१३:४८:२६	०९:०३:३०:५३	०४:१९:१०:१७	०४:१०:०३:०५	००:२१:१९:०३	०३:२३:१४:०७	१०:०७:५४:१५	१२:०७:१२:४५	४६:३९:४८	उ·१९:०४:११	– ५:५७	१९:०१

२१ जुलाई सूर्योदयकालीन तिथिः**४**

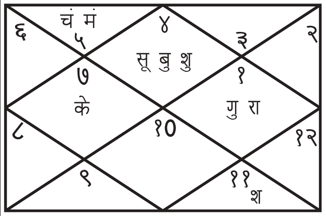

२९ जुलाई सूर्योदयकालीन तिथिः**११**

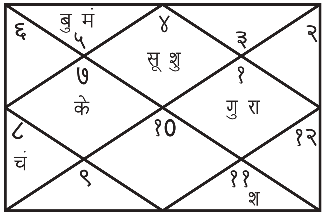

श्रावण शुक्लपक्षः अधिक पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, १८ जुलाई से १ अगस्त, २०२३ ईस्वी

पक्षान्तः–कालःपश्चिम । ऋतुःवर्षा दक्षिणायनं । सौम्यगोलः । ति·१५ अयनांशाः२२:५१:५२

दिनाङ्क जुलाई	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार 卐
१८	१ मं	मासादिः।
१९	२ बु	**गण्डान्तारम्भः २७:०५।**
२०	३ गु	**गण्डान्तः १६:२४,** पुष्येरविःघं·२९:३२।
२१	४ शु	**भद्रा १७:१६–३०:१२घं·।**
२२	४ श	**भद्रांतः ६:१२घं·,** पूर्वफल्गुन्यांमङ्गलःघं·२२:२१।
२३	५ र	।
२४	६ चं	**द·ति·६,** मघायांसिंहेबुधःघं·२८:०९।
२५	७ मं	**भद्रा ९:५७–२२:११घं·।**
२६	८ बु	।
२७	९ गु	।
२८	१० शु	**भद्रारंभः २०:५५घं·।**
२९	११ श	**भद्रांतः ८:१८घं·, गण्डान्तः १४:३९–२६:१५।**
३०	१२ र	।
३१	१४ चं	**भद्रारंभः २६:४७घं·। ⑪ अभिजितः १३:१८–३१:०६।**
अगस्त	१५ मं	**श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा, भद्रांतः १३:३९घं·, ⑪**

ति	**श्राद्धकालं** घं·मि·
१	१२:०५–१३:५३
१५	१२:०६–१३:५२

❀ श्रावण अधिक मास संवत् २०८०, महत्त्व व कृत्य ❀

संवत् २०८० में श्रावण अधिक मास पड़ रहा है, जिससे सब कामों में समृद्धि और निम्नवर्ग की वृद्धि होती है। जब किसी चान्द्र मास में दो अमावस्या के मध्य सूर्य की संक्रांति नहीं आती तो वह मास अधिकमास होता है। अधिकमास में सभी मांगलिक कार्य, महोत्सव, प्रतिष्ठा, यज्ञ आदि वर्जित हैं।

अधिकमास माहात्म्य में वर्णन है कि अधिमास उत्पत्ति होने पर सभी से तिरस्कृत हुआ और दुःखी होकर विष्णुलोक गया। वहाँ अधिकमास ने नारायण से कहा कि प्रत्येक मास का एक स्वामी होता है परन्तु मेरा कोई स्वामी नहीं है, जिस कारण सभी मुझे मलमास, मलिम्लुच आदि नामों से पुकारते हैं और सभी प्रकार के मांगलिक व पितृकार्य वर्जित किये हैं। तब भगवान् विष्णु ने अधिकमास को अपना नाम 'पुरुषोत्तम' प्रदान किया और यह पुरुषोत्तम मास कहाया। नारायण कहते हैं–

गुणैः कीर्त्याऽनुभावेन षड्भगैश्च पराक्रमैः। भक्तानां वरदानेन गुणैरन्यैश्च मासकैः।।
अहमेतैर्यथालोके प्रथितः पुरुषोत्तमः । तथाऽयमपि लोकेषु प्रथितः पुरुषोत्तमः।।

गुणों से, कीर्ति के अनुभाव से, षडैश्वर्य से, पराक्रम से भक्तों को वर देने से और जो मेरे अन्य गुण हैं, उनसे मैं लोक में पुरुषोत्तम नाम से प्रसिद्ध हूँ। वैसे ही यह मलमास भी लोकों में पुरुषोत्तम नाम से प्रसिद्ध होगा। इसके पुरुषोत्तम नाम से सारा जगत पवित्र होगा। मेरी समानता पाकर यह अधिमास सब मासों का राजा एवं जगत्पूज्य होगा। जो इसमें पूजा और व्रत करेंगे, उनके दुःख–दारिद्र्य का नाश होगा। चैत्रादि सब मास सकाम हैं, इसको हमने निष्काम किया है, व समस्त प्राणियों को मोक्ष देने वाला बनाया है। जो प्राणी सकाम अथवा निष्काम होकर अधिमास का पूजन करेगा, वह अपने सब कर्मों को भस्म कर निश्चय ही मुझको प्राप्त होगा। जैसे हल से खेत में बोये हुए बीज करोड़ो गुणा बढ़ते हैं, वैसे ही मेरे पुरुषोत्तम मास में किया हुआ पुण्य करोड़ो गुणा अधिक होता है।

शास्त्रों में ऋषि मुनियों ने अधिकमास के वर्जित और विहित कर्म बताये हैं–

वर्जित कार्य : अग्न्याधान, यज्ञ, मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा, माङ्गलिक कार्य, विशेष दान, महादान, गौदान, व्रत, वेदव्रत (वेदाध्ययन का आरम्भ), दीक्षा, महोत्सव, व्रतोत्सर्ग, चूड़ाकर्म, देवतीर्थों में गमन, वास्तुकर्म, ऐसे देव और तीर्थ का दर्शन जो पहले न देखे हों, विवाह, कामना के लिए देवता का अभिषेक, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, कुँआ तालाब आदि खुदवाना, किसी भी काम्य कार्य का आरम्भ, उद्यापन, महालय, अष्टकाश्राद्ध, उपाकर्म, यज्ञोपवीत संस्कार, मुण्डन, संन्यास। परन्तु स्मृति–रत्नावली ग्रन्थ में आया है कि जिस काम्य कर्म का प्रारम्भ मलमास से पहले हो चुका है, उसकी समाप्ति इसमें हो सकती है।

विहित कार्य : सभी नित्य कर्म, सभी नैमित्तिक कर्म, नित्य दान, मन्वादि तिथियों का दान, सभी कार्य जो निष्काम भाव से किये जायें, वार्षिक श्राद्ध, दर्शश्राद्ध, प्रेतश्राद्ध, तीर्थश्राद्ध, गजच्छाया श्राद्ध, ग्रहणस्नान, प्राणघातक रोगादि की निवृत्ति के रुद्रजपादि अनुष्ठान, कपिलषष्ठी जैसे अलभ्य योगोंके प्रयोग, बुधाष्टमी आदि के प्रयोग।

अधिकमास के वर्जित कार्य देखकर लोगों को ऐसा आभास होता है कि इसमें जपादि नहीं करने चाहिए, जो कि अर्द्धसत्य है। अधिकमास में किसी कामना से जपादि वर्जित हैं, जबकि निष्काम जपादि करने का करोड़ों गुना महत्व है। पुराणों ने तो यहाँ तक कह दिया है कि जो मनुष्य इस अधिमास में जप, दान नहीं करते, वे महामूर्ख हैं– 'य एतस्मिन्महामूढ जपदानादिवर्जिताः', वे दुष्ट, अभागी और दूसरे के भाग्य से जीवन चलाने वाले होते हैं, 'जायन्ते दुर्भगा दुष्टाः परभाग्योपजीविनः' अर्थात भाग्यहीन होते हैं।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

जुलाई	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१८	२३:५८	०१:३४	०३:२९	०५:४३	०८:०३	१०:२०	१२:३५	१४:५४	१७:१३	१९:१८	२१:०३	२२:३२
१९	२३:५४	०१:३०	०३:२५	०५:३९	०८:००	१०:१६	१२:३१	१४:५०	१७:०९	१९:१४	२०:५९	२२:२८
२०	२३:५०	०१:२६	०३:२१	०५:३५	०७:५६	१०:१२	१२:२७	१४:४६	१७:०५	१९:१०	२०:५५	२२:२४
२१	२३:४६	०१:२२	०३:१७	०५:३१	०७:५२	१०:०८	१२:२३	१४:४२	१७:०१	१९:०६	२०:५१	२२:२०
२२	२३:४२	०१:१८	०३:१३	०५:२८	०७:४८	१०:०४	१२:१९	१४:३८	१६:५७	१९:०२	२०:४७	२२:१६
२३	२३:३८	०१:१४	०३:०९	०५:२४	०७:४४	१०:००	१२:१५	१४:३४	१६:५३	१८:५८	२०:४३	२२:१२
२४	२३:३४	०१:१०	०३:०६	०५:२०	०७:४०	०९:५६	१२:११	१४:३०	१६:४९	१८:५४	२०:३९	२२:०८
२५	२३:३०	०१:०६	०३:०२	०५:१६	०७:३६	०९:५२	१२:०७	१४:२६	१६:४५	१८:५१	२०:३५	२२:०४
२६	२३:२६	०१:०२	०२:५८	०५:१२	०७:३२	०९:४८	१२:०३	१४:२२	१६:४१	१८:४७	२०:३१	२२:००
२७	२३:२२	००:५८	०२:५४	०५:०८	०७:२८	०९:४५	११:५९	१४:१८	१६:३७	१८:४३	२०:२७	२१:५६
२८	२३:१८	००:५४	०२:५०	०५:०४	०७:२४	०९:४१	११:५६	१४:१४	१६:३३	१८:३९	२०:२३	२१:५२
२९	२३:१४	००:५०	०२:४६	०५:००	०७:२०	०९:३७	११:५२	१४:१०	१६:२९	१८:३५	२०:१९	२१:४८
३०	२३:१०	००:४६	०२:४२	०४:५६	०७:१६	०९:३३	११:४८	१४:०६	१६:२५	१८:३१	२०:१५	२१:४४
३१	२३:०६	००:४२	०२:३८	०४:५२	०७:१२	०९:२९	११:४४	१४:०३	१६:२१	१८:२७	२०:११	२१:४१
अगस्त	२३:०२	००:३८	०२:३४	०४:४८	०७:०८	०९:२५	११:४०	१३:५९	१६:१७	१८:२३	२०:०७	२१:३७

जुलाई	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
१८	**मृत्यु**·१, **अमृत**·२,
१९	**सिद्ध**·२, **मृत्यु**·३,
२०	**अमृत**·३, **रवियोग**:म, **मृत्यु**·४,
२१	**अमृत**·४, **रवियोग**:पूफा
२२	**सिद्ध**·४, **रवियोग**:पूफा, **मृत्यु**·५,
२३	द·ति·६, **सर्वार्थ**·उफा, **अमृत**·५, **मृत्यु**·६, **सर्वार्थ**·ह, **रवियोग**:ह
२४	**सिद्ध**·६, **रवियोग**:ह, **मृत्यु**·७, द·न·चि,
२५	**अमृत**·७, **द्विपुष्कर**:७+चि, **सिद्ध**·८,
२६	**मृत्यु**·८, **रवियोग**:वि
२७	**मृत्यु**·९, **रवियोग**:वि, **सिद्ध**·१०, **सर्वार्थ**·अनु, **रवियोग**:अनु
२८	**सर्वार्थ**·अनु, **रवियोग**:अनु, **सिद्ध**·११, द·न·ज्ये,
३०	**सर्वार्थ**·मू, **सिद्ध**·१३, **रवियोग**:पूषा,
३१	**रवियोग**:पूषा, **अमृत**·१५,
अगस्त	द·न·उषा, **मृत्यु**·१,

❀ पुरुषोत्तम मास के धार्मिक कार्य ❀

ततः सम्पूज्य कलशमुपचारैः समन्त्रकैः ।
गन्धाक्षतैश्च नैवेद्यैः पुष्पैस्तत्कालसम्भवैः।।

पुरुषोत्तम मास के पुरुषोत्तम देवता हैं। पुरुषोत्तम मास के आने पर उनकी पूजा करनी चाहिये।

तस्मात्सर्वात्मना सर्वैः स्नानपूजाजपादिकम्।
विशेषेण प्रकर्तव्यं दानं शक्त्योनुसारतः।।

सब प्राणियों को अधिमास में स्नान, पूजा, जप आदि और विशेषतः शक्ति अनुसार दान अवश्य कर्तव्य है

एकमप्युपवासं यः करोत्यस्मिस्तपोनिधे। असावनन्तपापानि भस्मीकृत्य द्विजोत्तम । सुरयानं समारुह्य बैकुण्ठं याति मानवः

अधिकमास में जो एक भी उपवास करे, तो वह अनन्त पापों को भस्मकर विमान से बैकुण्ठलोक को जाता है।

श्रीमद्भागवतं भक्त्या श्रोतव्यं पुरुषोत्तमे ।
तत्पुण्यं वचसा वक्तुं विधाताऽपि न शक्नुयात्।।

अधिकमास में भक्ति से श्रीमद्भागवत का श्रवण करे तो उस पुण्य को ब्रह्मा कभी कहने में समर्थ नहीं होंगे।

शालिग्रामार्चनं कार्यं मासे श्रीपुरुषोत्तमे तुलसीदल लक्षेण तस्य पुण्यमनन्तकम् ।।

श्रीपुरुषोत्तम मास में लाख तुलसीदल से शालग्राम का पूजन करे तो उसका अनन्त पुण्य होता है।

श्रावण कृष्णपक्षः अधिक पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, २ अगस्त से १६ अगस्त, २०२३ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– २:८:२०२३ मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; वक्री शुक्रःपश्चिमास्तः; वक्री शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपश्चिमोदितः ;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
अगस्त	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	२ अगस्त से १६ अगस्त
२	१ बु	४०:२१	२२:०१	श्रवण	२३:१९	१५:१२	आयु·	२९:२१	१७:३७	बाल	१३:२५	कौल	४०:२१	३३:१६	५:५३	१९:१२	कु·५१:१४	२६:२२	छत्र	१६	२	
३	२ गु	३४:०८	१९:३३	धनि·	१९:०६	१३:३२	सौभा·	२१:३९	१४:३३	तैति	०७:१४	गर	३४:०८	३३:१३	५:५३	१९:११	कुंभ	अहोरात्र	श्रीवत्स	१७	३	
४	३ शु	२८:०२	१७:०७	शत·	१४:५८	११:५३	शोभ·	१४:०१	११:३०	वणि	०१:०३	विष	२८:०२	३३:१०	५:५४	१९:१०	मी·५७:०२	२८:४३	सौम्य	१८	४	संकष्टी गणेश चतुर्थी, चन्द्रोदय घं·२१:०८
५	४ श	२२:१६	१४:४९	पू·भा·	११:०५	१०:२०	अतिग· सुकर्मा	०६:३६ ५२:५८	०८:३३ २९:४४	बाल	२२:१६	कौल	४९:३३	३३:०७	५:५४	१९:१०	मीन	अहोरात्र	कालदंड	१९	५	
६	५ र	१६:५९	१२:४२	उ·भा·	०७:४०	०८:५९	धृति	५३:०३	२७:०८	तैति	१६:५९	गर	४४:३६	३३:०४	५:५५	१९:०९	मीन	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	२०	६	
७	६ चं	१२:२४	१०:५३	रेवती	०४:५५	०७:५३	शूल	४७:१०	२४:४७	वणि	१२:२४	विष	४०:२५	३३:०१	५:५५	१९:०८	मे·०४:५५	०७:४३	मातङ्ग	२१	७	
८	७ मं	०८:३९	०९:२४	अश्वि·	०२:५९	०७:०८	गण्ड	४२:०३	२२:४५	बव	०८:३९	बाल	३७:१०	३२:५८	५:५६	१९:०७	मेष	अहोरात्र	अमृत	२२	८	श्रीकालाष्टमी
९	८ बु	०५:५६	०८:१९	भरणी	०२:०२	०६:४५	वृद्धि	३७:४९	२१:०४	कौल	०५:५६	तैति	३५:००	३२:५५	५:५६	१९:०७	वृ·१६:५९	१२:४४	काण	२३	९	मंगलागौरी पूजा
१०	९ गु	०४:२१	०७:४१	कृत्ति·	०२:१३	०६:५०	ध्रुव	३४:३३	१९:४६	गर	०४:२१	वणि	३४:०२	३२:५१	५:५७	१९:०६	वृष	अहोरात्र	लुम्ब	२४	१०	
११	१० शु	०४:००	०७:३४	रोहि·	०३:३७	०७:२४	व्याघ·	३२:१७	१८:५२	विष	०४:००	बव	३४:१९	३२:४८	५:५८	१९:०५	मि·३४:४७	१९:४३	मित्र	२५	११	
१२	११ श	०४:५६	०७:५७	मृग·	०६:१५	०८:२८	हर्षण	३१:०१	१८:२२	बाल	०४:५६	कौल	३५:५४	३२:४५	५:५८	१९:०४	मिथुन	अहोरात्र	वज्र	२६	१२	श्रीपुरुषोत्तम एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त)
१३	१२ र	०७:०७	०८:४९	आर्द्रा	१०:०६	१०:०१	वज्र	३०:४१	१८:१५	तैति	०७:०७	गर	३८:३९	३२:४२	५:५९	१९:०३	क·५८:४५	१७:२८	ध्वांक्ष	२७	१३	प्रदोष व्रतम्
१४	१३ चं	१०:२६	१०:०९	पुन·	१५:०३	१२:००	सिद्धि	३१:१०	१८:२७	वणि	१०:२६	विष	४२:२८	३२:३८	५:५९	१९:०३	कर्क	अहोरात्र	धूम्र	२८	१४	मास शिवरात्रि व्रतम्, श्रावण सोमवार
१५	१४ मं	१४:४०	११:५१	पुष्य	२०:५२	१४:२०	व्यति·	३२:१८	१८:५५	शकु	१४:४०	चतु	४७:०३	३२:३५	६:००	१९:०२	कर्क	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	२९	१५	अमावस्या (पितृकार्य)
१६	३० बु	१९:३०	१३:४८	आश्ले·	२७:१३	१६:५३	वरी·	३३:४८	१९:३१	नाग	१९:३०	किं	५२:०३	३२:३१	६:००	१९:०१	सिं·२७:१३	१६:५३	राक्षस	३०	१६	अमावस्या (देवकार्य)

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क	तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः (मा/व)	गुरुः	वक्री शुक्रः	वक्री शनिः	राहुः	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर	चन्द्रोदयः
अगस्त	वार	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि			मिःसे	
२	१ बु	०३:१४:४५:३७	०९:१७:४६:२६	०४:१९:४८:०४	०४:११:१७:५१	००:२१:२५:३७	०३:२२:३७:०२	१०:०७:४९:४९	१२:०७:०९:३४	४६:३८:२२	उ·१८:४९:२२	– ५:५४	१९:४६
३	२ गु	०३:१५:४२:५०	१०:०२:०६:०४	०४:२०:२५:५३	०४:१२:२९:२८	००:२१:३२:००	०३:२१:५८:४४	१०:०७:४५:२०	१२:०७:१२:२३	४६:३६:५३	उ·१८:३४:१५	– ५:५०	२०:३०
४	३ शु	०३:१६:४०:०३	१०:१६:२६:०२	०४:२१:०३:४४	०४:१३:३७:४२	००:२१:३८:१४	०३:२१:१९:२८	१०:०७:४०:४९	१२:०७:०३:१३	४६:३५:२४	उ·१८:१८:५०	– ५:४५	२१:०८
५	४ श	०३:१७:३७:१८	११:००:४२:२८	०४:२१:४१:३६	०४:१४:४२:२२	००:२१:४४:१६	०३:२०:३९:२९	१०:०७:३६:१५	१२:०७:००:०२	४६:३३:५३	उ·१८:०३:०७	– ५:४०	२१:४७
६	५ र	०३:१८:३४:३४	११:१४:५२:०२	०४:२२:१९:३१	०४:१५:४३:११	००:२१:५०:०८	०३:१९:५९:०१	१०:०७:३१:३९	१२:१२:५६:५१	४६:३२:२१	उ·१७:४७:०६	– ५:३५	२२:२४
७	६ चं	०३:१९:३१:५१	११:२८:५१:४६	०४:२२:५७:२८	०४:१६:३९:५६	००:२१:५५:४९	०३:१९:१८:२०	१०:०७:२७:०१	१२:१२:५३:४०	४६:३०:४८	उ·१७:३०:४८	– ५:२९	२३:०२
८	७ मं	०३:२०:२९:०९	००:१२:३९:१५	०४:२३:३५:२७	०४:१७:३२:२१	००:२२:०१:१८	०३:१८:३७:४७	१०:०७:२२:२०	१२:१२:५०:२९	४६:२९:१३	उ·१७:१४:१३	– ५:२२	२३:४५
९	८ बु	०३:२१:२६:२९	००:२६:१२:३८	०४:२४:१३:२७	०४:१८:२०:०९	००:२२:०६:३७	०३:१७:५७:४०	१०:०७:१७:३८	१२:१२:४७:१८	४६:२७:३७	उ·१६:५७:२१	– ५:१४	२४:२७
१०	९ गु	०३:२२:२३:५०	०१:०९:३०:४८	०४:२४:५१:३०	०४:१९:०३:०४	००:२२:११:४५	०३:१७:१८:१२	१०:०७:१२:५४	१२:१२:४४:०८	४६:२६:००	उ·१६:४०:१३	– ५:०६	२५:१७
११	१० शु	०३:२३:२१:१३	०१:२२:३३:२४	०४:२५:२९:३४	०४:१९:४०:४९	००:२२:१६:४१	०३:१६:३९:३९	१०:०७:०८:०९	१२:१२:४०:५७	४६:२४:२२	उ·१६:२२:४९	– ४:५८	२६:०६
१२	११ श	०३:२४:१८:३७	०२:०५:२०:५१	०४:२६:०७:४१	०४:२०:१३:०९	००:२२:२१:२६	०३:१६:०२:१४	१०:०७:०३:२२	१२:१२:३७:४६	४६:२२:४२	उ·१६:०५:०९	– ४:४९	२६:५९
१३	१२ र	०३:२५:१६:०३	०२:१७:५४:१९	०४:२६:४५:४९	०४:२०:३९:४७	००:२२:२५:६०	०३:१५:२६:११	१०:०६:५८:३४	१२:१२:३४:३५	४६:२१:०२	उ·१५:४७:१४	– ४:३९	२७:५४
१४	१३ चं	०३:२६:१३:३०	०३:००:१५:४०	०४:२७:२३:६०	०४:२१:००:२८	००:२२:३०:२२	०३:१४:५१:४२	१०:०६:५३:४४	१२:१२:३१:२४	४६:१९:२१	उ·१५:२९:०३	– ४:२९	२८:४८
१५	१४ मं	०३:२७:१०:५९	०३:१२:२७:२३	०४:२८:०२:१२	०४:२१:१४:५९	००:२२:३४:३२	०३:१४:१८:५८	१०:०६:४८:५४	१२:१२:२८:१३	४६:१७:३८	उ·१५:१०:३८	– ४:१८	२९:४२
१६	३० बु	०३:२८:०८:२९	०३:२४:३२:२७	०४:२८:४०:२६	वक्री २१:२३:१०	००:२२:३८:३१	०३:१३:४८:०९	१०:०६:४४:०३	१२:१२:२५:०३	४६:१५:५५	उ·१४:५१:५८	– ४:०६	०६:३६

५ अगस्त सूर्योदयकालीन तिथि:४

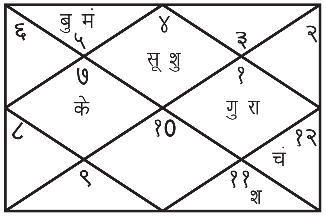

१२ अगस्त सूर्योदयकालीन तिथि:११

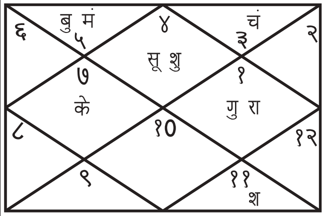

श्रावण कृष्णपक्षः अधिक पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, २ अगस्त से १६ अगस्त, २०२३ ईस्वी

पक्षान्तः–कालःपश्चिम । ऋतुः वर्षा दक्षिणायनं । सौम्यगोलः । ति·३० अयनांशाः२२:५१:५४

दिनाङ्क अगस्त	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
२	१ बु	**पंचकारंभः २६:२२।**
३	२ गु	**पंचक**, आश्लेषयांरविः घं·२९:५४, पूर्वफल्गुन्यांबुधः घं·२३:४२।
४	३ शु	**भद्रा ६:२०–१७:०७घं·, पंचक,** शुक्र पश्चिमास्त घं·१४:५९।
५	४ श	**पंचक।**
६	५ र	**पंचक, गण्डान्तारम्भः २६:०९।**
७	६ चं	**पंचकान्तः ७:५४, गण्डान्तः १३:४०, भद्रा १०:५३–२२:०६घं·।**
८	७ मं	।
९	८ बु	।
१०	९ गु	**भद्रारंभः १९:३४घं·**, पुष्येशुक्रः घं·२९:५०।
११	१० शु	**भद्रांतः ७:३४घं·**, चित्रायांकेतुः घं·१३:०७।
१२	११ श	उत्तरफल्गुन्यांमङ्गलः घं·२६:२६।
१३	१२ र	।
१४	१३ चं	**भद्रा १०:१०–२२:५९घं·।**
१५	१४ मं	स्वतंत्रता दिवस। ① धनिष्ठायांशनिः घं·२६:०३।
१६	३० बु	**गण्डान्तः १०:१५–२३:३३**, वक्री बुधः घं·१९:११, ①

ति	**श्राद्धकालं** घं·मि·
१	१२:०६–१३:५२
१५	१२:०५–१३:४९

❀ पुरुषोत्तममास व्रत (भविष्योत्तरपुराण)

इस व्रतके विषय में श्रीकृष्ण ने कहा था कि इसका फलदाता, भोक्ता और अधिष्ठाता सब कुछ मैं हूँ। इस महीने में केवल ईश्वर के उद्देश्य से जो व्रत, उपवास, स्नान, दान या पूजनादि किये जाते हैं, उनका अक्षयफल होता है और व्रती के सम्पूर्ण अनिष्ट नष्ट हो जाते हैं। जो महीना अधिमास हो, उसके सम्पूर्ण तीस दिनों में अधिमास के निमित्त का उपवास या नक्त अथवा एकभुक्त व्रत करके यथासामर्थ्य दान–पुण्यादि करे।

❀ मलमास व्रत (देवीभागवत)

इस महीने में दान, पुण्य या शरीर–शोषण, जो भी किया जाय, उसका अक्षय फल है। सामर्थ्य न हो तो ब्राह्मण और साधुओं की सेवा से तीर्थस्नानादि के समान फल होता है। पुण्य कामों में व्यय धन क्षीण नहीं होता, बल्कि बढ़ता है। जैसे अणुमात्र बीज के दान से वट जैसा दीर्घजीवी महावृक्ष होता है, वैसे ही मलमास में दिया दान अधिक फल देता है।

❀ ताम्बूल दान

इलायची, लौंग, कपूर, कत्था और चूना इनमें से जो पदार्थ मिल जाएँ उन सब पदार्थों को मिलाकर भगवान् के लिये प्रिय ताम्बूल को जो ब्राह्मण को लिये देता है, वह ऐश्वर्य सुख भोगता है, उसका दुर्भाग्य भी सौभाग्य में बदल जाता है।

❀ पुरुषोत्तम मास में मालपुआ दान- विधान ❀

संवत् २०८० में श्रावण मास मलमास है। इसमें विष्णु भगवान् की प्रीति के लिए तैंतीस (३३) मालपुओं का भोग उनके तैंतीस नामों से लगाया जाता है। इन मालपुओं का प्रसाद स्वयं, सपरिवार खाया जाता है और वितरित भी किया जाता है। इससे जन्म–जन्मान्तर में समृद्धि बनी रहती है। तैंतीस मालपुओं को ब्राह्मण को दक्षिणा सहित दान में भी दिया जाता है। पुरुषोत्तम मास में जो श्रीहरि को तैंतीस मालपुए का भोग चढ़ाता है वह विष्णुलोक को प्राप्त करता है। विष्णु भगवान् को इन मालपुओं को निम्न क्रम में चढ़ाया जाता है– १. ॐ विष्णवे नमः २. ॐ जिष्णवे नमः, ३. ॐ महाविष्णवे नमः ४. ॐ हरये नमः ५. ॐ कृष्णाय नमः, ६. ॐ अधोक्षजाय नमः, ७. ॐ केशवाय नमः, ८. ॐ माधवाय नमः ९. ॐ रामाय नमः १०. ॐ अच्युताय नमः ११. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः, १२. ॐ गोविन्दाय नमः १३. ॐ वामनाय नमः १४. ॐ श्रीशाय नमः १५. ॐ श्रीकृष्णाय नमः, १६. ॐ विश्वसाक्षिणे नमः १७. ॐ नारायणाय नमः १८. ॐ मधुरिपवे नमः, १९. ॐ अनिरुद्धाय नमः, २०. ॐत्रिविक्रमाय नमः २१. ॐ वासुदेवाय नमः २२. ॐ जगद्योनये नमः, २३. ॐ अनन्ताय नमः, २४. ॐ शेषशायिने नमः, २५. ॐ संकर्षणाय नमः २६. ॐ प्रद्युम्नाय नमः, २७. ॐ दैत्यारये नमः, २८. विश्वतोमुखाय नमः, २९. ॐ जनार्दनाय नमः ३०. ॐ धरावासाय नमः ३१. ॐ दामोदराय नमः, ३२. मघार्दनाय नमः ३३. ॐ श्रीपतये नमः

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

अगस्त	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
२	२२:५९	००:३४	०२:३०	०४:४४	०७:०४	०९:२१	११:३६	१३:५५	१६:१४	१८:१९	२०:०३	२१:३३
३	२२:५५	००:३१	०२:२६	०४:४०	०७:००	०९:१७	११:३२	१३:५१	१६:१०	१८:१५	२०:००	२१:२९
४	२२:५१	००:२७	०२:२२	०४:३६	०६:५७	०९:१३	११:२८	१३:४७	१६:०६	१८:११	१९:५६	२१:२५
५	२२:४७	००:२३	०२:१८	०४:३२	०६:५३	०९:०९	११:२४	१३:४३	१६:०२	१८:०७	१९:५२	२१:२१
६	२२:४३	००:१९	०२:१४	०४:२८	०६:४९	०९:०५	११:२०	१३:३९	१५:५८	१८:०३	१९:४८	२१:१७
७	२२:३९	००:१५	०२:१०	०४:२४	०६:४५	०९:०१	११:१६	१३:३५	१५:५४	१७:५९	१९:४४	२१:१३
८	२२:३५	००:११	०२:०६	०४:२०	०६:४१	०८:५७	११:१२	१३:३१	१५:५०	१७:५५	१९:४०	२१:०९
९	२२:३१	००:०७	०२:०२	०४:१६	०६:३७	०८:५३	११:०८	१३:२७	१५:४६	१७:५१	१९:३६	२१:०५
१०	२२:२७	००:०३	०१:५८	०४:१३	०६:३३	०८:४९	११:०४	१३:२३	१५:४२	१७:४७	१९:३२	२१:०१
११	२२:२३	२३:५९	०१:५४	०४:०९	०६:२९	०८:४५	११:००	१३:१९	१५:३८	१७:४३	१९:२८	२०:५७
१२	२२:१९	२३:५५	०१:५०	०४:०५	०६:२५	०८:४१	१०:५६	१३:१५	१५:३४	१७:३९	१९:२४	२०:५३
१३	२२:१५	२३:५१	०१:४६	०४:०१	०६:२१	०८:३७	१०:५२	१३:११	१५:३०	१७:३५	१९:२०	२०:४९
१४	२२:११	२३:४७	०१:४३	०३:५७	०६:१७	०८:३३	१०:४८	१३:०७	१५:२६	१७:३२	१९:१६	२०:४५
१५	२२:०७	२३:४३	०१:३९	०३:५३	०६:१३	०८:३०	१०:४४	१३:०३	१५:२२	१७:२८	१९:१२	२०:४१
१६	२२:०३	२३:३९	०१:३५	०३:४९	०६:०९	०८:२६	१०:४१	१२:५९	१५:१८	१७:२४	१९:०८	२०:३७

अगस्त	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
२	**अमृत**·१, द·न·ध, **सिद्ध**·२,
३	**अमृत**·३,
४	**अमृत**·४,
५	**सिद्ध**·४, **मृत्यु**·५,
६	**द·ति**·६, **सर्वार्थ**·उभा, **अमृत**·५, **मृत्यु**·६,
७	**द·ति**·६, **सिद्ध**·६, **रवियोग**ःअ, **मृत्यु**·७,
८	**सर्वार्थ**·अ, **अमृत**·७, **रवियोग**ःअ, **सिद्ध**·८
९	**मृत्यु**·८, **सर्वार्थ**·कृ
१०	**मृत्यु**·९, **सिद्ध**·१०,
११	**सिद्ध**·११,
१२	**अमृत**·११, **द्विपुष्कर**ः१२+मृ,
१३	**सिद्ध**·१३
१४	**सर्वार्थ**·पु,
१५	**सर्वार्थ**·आश्ले,
१६	**अमृत**·१,

वेद की प्रवृत्ति यज्ञों के सम्पादन के लिए ही हुई है, और यज्ञ के सम्पादन के लिए विहितकाल का ज्ञान आवश्यक होता है। ज्योतिष कालबोधक शास्त्र है। अतः जो ज्योतिष शास्त्र को जानता है वही यज्ञ को जानता है। श्रुति कहती है –

ते असुरा अयज्ञा अदक्षिणा अनक्षत्रा यच्च किंचाकुर्वत तां कृत्यामेवाकुर्वत्।

अनुचित नक्षत्र एवं अनुपयुक्त काल में किया गया यज्ञ, कृत्या को समर्पित हो जाता है न कि देवताओं को। अतः यज्ञ हेतु उपयुक्त काल का चयन यज्ञ से पहले ज्योतिष द्वारा किया जाता है। ज्योतिष के बिना कालज्ञान नहीं हो सकता और कालज्ञान के बिना श्रौतस्मार्तकर्म, गर्भाधान, जातकर्म, यज्ञोपवीत, विवाह, दान, होम, जप आदि संस्कार ऊसर भूमि में बोए गए बीज के समान निष्फल हो जाते हैं। कहा है –

अतीतानागते काले दानहोमजपादिकम्।
उषरे वपितं बीजं तद्वद्भवति निष्फलम् ।।

श्रावण शुक्लपक्षः शुद्ध पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, १७ अगस्त से ३१ अगस्त, २०२३ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– १७:८:२०२३ मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; वक्री शुक्रःपूर्वोदितः; वक्री शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; वक्री बुधःपश्चिमोदितः;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
अगस्त	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	१७ अगस्त से ३१ अगस्त
१७	१ गु	२४:३४	१५:५०	मघा	३३:४५	१९:३०	परिघ	३५:२५	२०:१०	बव	२४:३४	बाल	५७:०३	३२:२८	६:०१	१९:००	सिंह	अहोरात्र	मुसल	३१	१७	शुक्र पूर्वोदित घं·२६:०३,
१८	२ शु	२९:२४	१७:४७	पू·फा·	३९:५९	२२:०१	शिव	३६:४७	२०:४४	कौल	२९:२४	तैति	६०:००	३२:२४	६:०१	१८:५९	कं·५६:२८	२८:३६	सिद्धि	१	१८	**सिंजारा**, स्वामी श्री करपात्री जयन्ती
१९	३ श	३३:३७	१९:२८	उ·फा·	४५:३५	२४:१५	सिद्ध	३७:३९	२१:०५	तैति	०१:३५	गर	३३:३७	३२:२१	६:०२	१८:५८	कन्या	अहोरात्र	उत्पात	२	१९	**हरियाली तीज, झूलनोत्सव**, तीज मेला जयपुर
२०	४ र	३६:५४	२०:४८	हस्त	५०:१४	२६:०७	साध्य	३७:४६	२१:०९	वणि	०५:२३	विष	३६:५४	३२:१७	६:०२	१८:५७	कन्या	अहोरात्र	मानस	३	२०	**वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी**, मेला बूढ़ीतीज जयपुर
२१	५ चं	३९:०४	२१:४०	चित्रा	५३:४४	२७:३२	शुभ	३७:०१	२०:५१	बव	०८:०७	बाल	३९:०४	३२:१४	६:०२	१८:५६	तु·२२:०७	२६:५३	मुद्गर	४	२१	**नागपञ्चमी (शास्त्रीय,अन्यक्षेत्रे), श्रावण सोमवार व्रतम्**
२२	६ मं	३९:५९	२२:०३	स्वाती	५६:०२	२८:२८	शुक्ल	३५:१७	२०:१०	कौल	०९:४०	तैति	३९:५९	३२:१०	६:०३	१८:५५	तुला	अहोरात्र	ध्वज	५	२२	**श्रीस्कन्दषष्ठी, श्रीकल्कि जयन्ती, श्रीनेमीनाथ जयन्ती**
२३	७ बु	३९:३७	२१:५४	विशा·	५७:०४	२८:५३	ब्रह्म	३२:३३	१९:०५	गर	०९:५७	वणि	३९:३७	३२:०६	६:०३	१८:५४	वृ·४१:५५	२२:४९	धाता	६	२३	**श्री तुलसीदास जयन्ती**
२४	८ गु	३८:०२	२१:१७	अनु·	५६:५४	२८:५०	ऐन्द्र	२८:४९	१७:३६	विष	०८:५७	बव	३८:०२	३२:०३	६:०४	१८:५३	वृश्चिक	अहोरात्र	आनन्द	७	२४	**श्रीदुर्गाष्टमी**
२५	९ शु	३५:१८	२०:११	ज्ये·	५५:४०	२८:२०	वैधृ·	२४:०९	१५:४४	बाल	०६:४७	कौल	३५:१८	३१:५९	६:०४	१८:५२	ध·५५:४०	२८:२०	सुस्थिर	८	२५	**कौमारी नवमी**, जीवन्तिका पूजन
२६	१० श	३१:३३	१८:४२	मूल	५३:२९	२७:२८	विष्कु·	१८:३९	१३:३३	तैति	०३:३१	गर	३१:३३	३१:५५	६:०५	१८:५१	धनु	अहोरात्र	गद	९	२६	**कलश दशमी**, बुध पश्चिमास्त घं·०७:०१,
२७	११ र	२६:५८	१६:५३	पू·षा·	५०:३१	२६:१८	प्रीति	१२:२६	११:०४	विष	२६:५८	बव	५४:२६	३१:५२	६:०५	१८:५०	धनु	अहोरात्र	शुभ	१०	२७	**श्रीपवित्रा एकादशी (वैष्णव,स्मार्त्त)**
२८	१२ चं	२१:४२	१४:४७	उ·षा·	४६:५६	२४:५२	आयु· सौभाग्य	०५:३८ ५२:४६	०८:२१ २९:२७	बाल	२१:४२	कौल	४८:५४	३१:४८	६:०६	१८:४९	म·०४:३९	०७:५७	मृत्यु	११	२८	**प्रदोष व्रतम्**, श्रीदामोदर द्वादशी, **श्रावण सोमवार व्रत**
२९	१३ मं	१५:५७	१२:२९	श्रवण	४२:५७	२३:१७	शोभ·	५०:४९	१४:२६	तैति	१५:५७	गर	४२:५७	३१:४४	६:०६	१८:४८	मकर	अहोरात्र	लुम्ब	१२	२९	आखेट त्रयोदशी (उड़ीसा), श्रीशिव पवित्रारोपण
३०	१४ बु	०९:५३	१०:०४	धनि·	३८:४६	२१:३७	अतिग·	४३:०५	२३:२१	वणि	०९:५३	विष	३६:४९	३१:४०	६:०७	१८:४७	कुं·१०:५२	१०:२७	मित्र	१३	३०	**पूर्णिमा व्रत, रक्षाबन्धन,श्रावणी उपाकर्म**, चरण जयन्ती
३१	१५ गु १ गु	०३:४२ ५३:५८	०७:३६ २९:११	शत·	३४:३५	१९:५७	सुकर्मा	३५:२२	२०:१६	बव	०३:४२	बाल	३०:४०	३१:३७	६:०७	१८:४६	कुंभ	अहोरात्र	वज्र	१४	३१	**श्रावण पूर्णिमा (स्नान,दान), श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क	तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	वक्री बुधः	गुरुः	शुक्रः (मा/व)	वक्री शनिः	राहुः	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर	चन्द्रोदयः
अगस्त	वार	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि			मि:से	
१७	१ गु	०३:२९:०६:००	०४:०६:३४:१४	०४:२९:१८:४२	०४:२१:२४:५१	००:२२:४२:१७	०३:१३:१९:२३	१०:०६:३९:१२	१२:१२:२१:५२	४६:१४:११	उ·१४:३३:०४	– ३:५४	०६:३७
१८	२ शु	०४:००:०३:३४	०४:१८:३६:३९	०४:२९:५७:००	०४:२१:२०:००	००:२२:४५:५२	०३:१२:५२:४९	१०:०६:३४:२०	१२:१२:१८:४१	४६:१२:२६	उ·१४:१३:५६	– ३:४२	०७:२९
१९	३ श	०४:०१:०१:०९	०५:००:४३:२३	०५:००:३५:२०	०४:२१:०८:३७	००:२२:४९:१५	०३:१२:२८:३२	१०:०६:२९:२७	१२:१२:१५:३०	४६:१०:४०	उ·१३:५४:३४	– ३:२९	०८:२२
२०	४ र	०४:०१:५८:४५	०५:१२:५७:४३	०५:०१:१३:४२	०४:२०:५०:४९	००:२२:५२:२६	०३:१२:०६:३८	१०:०६:२४:३५	१२:१२:१२:१९	४६:०८:५३	उ·१३:३४:६०	– ३:१६	०९:१५
२१	५ चं	०४:०२:५६:२४	०५:२५:२२:२९	०५:०१:५२:०६	०४:२०:२६:५०	००:२२:५५:२४	०३:११:४७:११	१०:०६:१९:४२	१२:१२:०९:०८	४६:०७:०५	उ·१३:१५:१२	– ३:०१	१०:०९
२२	६ मं	०४:०३:५४:०४	०६:०८:००:०१	०५:०२:३०:३२	०४:१९:५७:००	००:२२:५८:१०	०३:११:३०:१४	१०:०६:१४:५०	१२:१२:०५:५८	४६:०५:१७	उ·१२:५५:११	– २:४७	११:०५
२३	७ बु	०४:०४:५१:४६	०६:२०:५१:५७	०५:०३:०८:६०	०४:१९:२१:५०	००:२३:००:४४	०३:११:१५:४९	१०:०६:०९:५७	१२:१२:०२:४७	४६:०३:२७	उ·१२:३४:५९	– २:३२	१२:०३
२४	८ गु	०४:०५:४९:२९	०७:०३:५९:१६	०५:०३:४७:२९	०४:१८:४१:५७	००:२३:०३:०५	०३:११:०३:५६	१०:०६:०५:०५	१२:०५:५९:३६	४६:०१:३८	उ·१२:१४:३४	– २:१७	१३:०३
२५	९ शु	०४:०६:४७:१४	०७:१७:२२:०८	०५:०४:२६:०१	०४:१७:५८:०७	००:२३:०५:१४	०३:१०:५४:३८	१०:०६:००:१३	१२:०५:५६:२५	४५:५९:४७	उ·११:५३:५८	– २:०१	१४:०३
२६	१० श	०४:०७:४५:०२	०८:००:५९:५८	०५:०५:०४:३४	०४:१७:११:१३	००:२३:०७:११	०३:१०:४७:५२	१०:०५:५५:२०	१२:०५:५३:१४	४५:५७:५६	उ·११:३३:१०	– १:४४	१५:०४
२७	११ र	०४:०८:४२:५१	०८:१४:५१:२५	०५:०५:४३:०९	०४:१६:२२:१४	००:२३:०८:५५	मार्गी १०:४३:३८	१०:०५:५०:२८	१२:०५:५०:०३	४५:५६:०४	उ·११:१२:११	– १:२८	१५:५९
२८	१२ चं	०४:०९:४०:४१	०८:२८:५४:२८	०५:०६:२१:४७	०४:१५:३२:१४	००:२३:१०:२६	०३:१०:४१:५४	१०:०५:४५:३६	१२:०५:४६:५३	४५:५४:११	उ·१०:५१:०२	– १:११	१६:५३
२९	१३ मं	०४:१०:३८:३४	०९:१३:०६:३०	०५:०७:००:२६	०४:१४:४२:३०	००:२३:११:४५	०३:१०:४२:३८	१०:०५:४०:४५	१२:०५:४३:४२	४५:५२:१८	उ·१०:२९:४२	– ०:५३	१७:४०
३०	१४ बु	०४:११:३६:२९	०९:२७:२४:२७	०५:०७:३९:०७	०४:१३:५४:११	००:२३:१२:५१	०३:१०:४५:४७	१०:०५:३५:५४	१२:०५:४०:३१	४५:५०:२५	उ·१०:०८:१२	– ०:३५	१८:२५
३१	१५ गु	०४:१२:३४:२५	१०:११:४४:५२	०५:०८:१७:५०	०४:१३:०८:२२	००:२३:१३:४४	०३:१०:५१:१८	१०:०५:३१:०४	१२:०५:३७:२०	४५:४८:३०	उ·०९:४६:३२	– ०:१७	१९:०५

२० अगस्त सूर्योदयकालीन तिथि:**४**

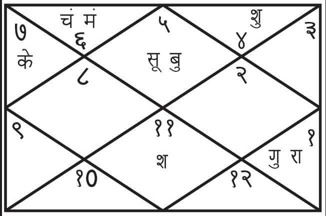

२७ अगस्त सूर्योदयकालीन तिथि:**११**

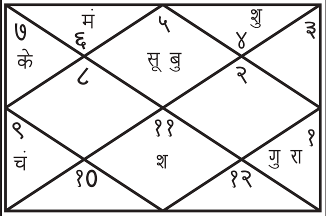

श्रावण शुक्लपक्षः शुद्ध पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, १७ अगस्त से ३१ अगस्त, २०२३ ईस्वी

पक्षान्तः –कालः उत्तर । ऋतुः वर्षा । दक्षिणायनं । सौम्यगोलः । ति·१५ अयनांशाः२२:५१:५६

दिनाङ्क अगस्त	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
१७	१ गु	मघायांसिंहेरविः घं·२८:३३, संक्रान्ति, मासान्तः।
१८	२ शु	**श्री सुमतिनाथ जयंती, रोटक व्रत, पुण्यकालं,**६:०१–१०:५७ घं· ①
१९	३ श	मधुश्रवा तीज, मासादिः। ①कन्यायांमङ्गलः घं·०८:००
२०	४ र	**भद्रा ८:१२–२०:४८घं·।**
२१	५ चं	तक्षक पूजा।
२२	६ मं	पंचदिवसीय श्रीडिग्गी कल्याणजी यात्रारम्भ (जयपुर)।
२३	७ बु	**भद्रारंभः २१:५५घं·**, कुमारी पूजा, मोक्ष सप्तमी (जैन)।
२४	८ गु	**भद्रांतः ९:३९घं·।**
२५	९ शु	**गण्डान्तारम्भः २२:३०।**
२६	१० श	**भद्रारंभः २९:४८घं·, गण्डान्तः १०:१०।**
२७	११ र	**पवित्रारोपण, भद्रांतः १६:५३घं·**, मार्गी शुक्रः घं·१९:२७।
२८	१२ चं	बुद्ध द्वादशी, **अभिजितः ३२:५२–५०:४१।**
२९	१३ मं	। ② पूर्वफल्गुन्यांरविः घं·२५:०१।
३०	१४ बु	**भद्रा १०:०४–२०:५१घं·, पंचकारंभः१०:२८**, मघायांबुधः घं·२४:०१।
३१	१५ गु	**संस्कृत दिवस, पंचक**, अमरनाथ यात्रा, गोगामेड़ी मेला आरम्भ, ②

ति	**श्राद्धकालं** घं·मि·
१	१२:०५–१३:४९
१५	१२:०२–१३:४३

❀ श्रावण मास कृत्य ❀

❀ **उपाकर्म (श्रावणी)**– श्रावण पूर्णिमा के दिन अथवा हस्त नक्षत्र युक्त श्रावण शुक्ल पंचमी के दिन श्रावणीकर्म किया जाता है। यदि पूर्णिमा भद्रा या ग्रहण से दूषित हो, तभी हस्त एवं पञ्चमी के योग में श्रावणी कर्म किया जाता है – ***भद्रायां द्वे न कर्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा। श्रावणी नृपति हन्ति ग्रामं दहति फाल्गुनी।।*** (पूर्णिमा में भद्रा होने पर श्रावणी और होलिकादाह नहीं करते हैं।) शुक्ल यजुर्वेदी उपनीत द्विज श्रावण पूर्णिमा को ही श्रावणी करते हैं। विधिपूर्वक वेदारम्भ कर्म का नाम उपाकर्म या श्रावणी–कर्म है। द्विजों को इस दिन अधिकाधिक गायत्री जप करना चाहिए। इस दिन ऋषि–तर्पण भी करने से ऋषितेज की प्राप्ति होती है।

❀ **रक्षाबन्धन मुहूर्त्त** – श्रावण शुक्ल पूर्णिमा के दिन रक्षाबन्धन का पर्व मनाया जाता है। **भद्रा समाप्ति पश्चात्** – रात्रि २०:५१ पश्चात् रक्षा बन्धन का मंत्र इस प्रकार से है– **येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः। तेन त्वामभिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल।।**

रक्षाबन्धन पर्व भद्रारहित अपराह्णकाल में कहा गया है। पूर्णिमा न्यूनतम त्रिमुहूर्तव्यापिनी होनी चाहिए। इससे कम होने पर पूर्व दिन प्रदोष काल में रक्षा बन्धन करने का विधान है (धर्मसिन्धु)। विस्तृत निर्णय हेतु देखें व्रत पर्व निर्णय पृष्ठ ३।

❀ सदन्त शिशु जन्मफल एवं शान्ति विधि ❀

यदि शिशु का दाँत सहित जन्म होता है तो वह माता, पिता, अपना, मामा एवं स्वकुल का विनाशक होता है। अतः यत्न करके कल्याणार्थ इसकी शान्ति करानी चाहिए। सर्व प्रथम बालक को सर्वौषधि से स्नान तदनन्तर शुद्ध जल से स्नान कराकर माता–पिता एवं बालक सहित धाता, अग्नि, सोम, वायु, पर्वत और केशव भगवान विष्णु की प्रतिमाओं की पूजा कलश पर स्थापित कर करें। तदनन्तर नवग्रह तथा कुल देवताओं की पूजा करनी चाहिये। संकल्प में *'सदन्त जनन सूचित सर्वारिष्टेत्यादि शान्त्यर्थं'* जोड़ना चाहिये। पूजन के बाद प्रत्येक स्थापित देव मन्त्रों से यथाशक्ति १००० या १०० या २८ आहूति देकर हवन करना चाहिये। अन्त में ब्राह्मण भोजन कराकर यथा शक्ति दक्षिणा देनी चाहिए। यथा --

मातरं पितरं खादेदात्मानं वापि मातुलान्।
सदन्तं बालकं विद्याद्राक्षसं तत्कुलान्तकृत् ।।
देवदेवं केशवं च वृद्धि सोमं समीरणम्।
धातरं च विधातारं कुलदेवं नवग्रहान् ।।
यजेत्तल्लिंगजैर्मन्त्रैः नाममन्त्रैरथापि वा।
यथा शक्ति सहस्रं वा शतं वाथाष्ट विंशतिः ।।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

अगस्त	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१७	२१:५९	२३:३५	०१:३१	०३:४५	०६:०५	०८:२२	१०:३७	१२:५५	१५:१४	१७:२०	१९:०४	२०:३३
१८	२१:५५	२३:३१	०१:२७	०३:४१	०६:०१	०८:१८	१०:३३	१२:५१	१५:१०	१७:१६	१९:००	२०:२९
१९	२१:५१	२३:२७	०१:२३	०३:३७	०५:५७	०८:१४	१०:२९	१२:४७	१५:०६	१७:१२	१८:५६	२०:२५
२०	२१:४७	२३:२३	०१:१९	०३:३३	०५:५३	०८:१०	१०:२५	१२:४४	१५:०२	१७:०८	१८:५२	२०:२१
२१	२१:४३	२३:१९	०१:१५	०३:२९	०५:४९	०८:०६	१०:२१	१२:४०	१४:५८	१७:०४	१८:४८	२०:१७
२२	२१:३९	२३:१५	०१:११	०३:२५	०५:४५	०८:०२	१०:१७	१२:३६	१४:५५	१७:००	१८:४४	२०:१४
२३	२१:३५	२३:११	०१:०७	०३:२१	०५:४१	०७:५८	१०:१३	१२:३२	१४:५१	१६:५६	१८:४०	२०:१०
२४	२१:३२	२३:०७	०१:०३	०३:१७	०५:३७	०७:५४	१०:०९	१२:२८	१४:४७	१६:५२	१८:३७	२०:०६
२५	२१:२८	२३:०३	००:५९	०३:१३	०५:३३	०७:५०	१०:०५	१२:२४	१४:४३	१६:४८	१८:३३	२०:०२
२६	२१:२४	२३:००	००:५५	०३:०९	०५:२९	०७:४६	१०:०१	१२:२०	१४:३९	१६:४४	१८:२९	१९:५८
२७	२१:२०	२२:५६	००:५१	०३:०५	०५:२५	०७:४२	०९:५७	१२:१६	१४:३५	१६:४०	१८:२५	१९:५४
२८	२१:१६	२२:५२	००:४७	०३:०१	०५:२१	०७:३८	०९:५३	१२:१२	१४:३१	१६:३६	१८:२१	१९:५०
२९	२१:१२	२२:४८	००:४३	०२:५७	०५:१८	०७:३४	०९:४९	१२:०८	१४:२७	१६:३२	१८:१७	१९:४६
३०	२१:०८	२२:४४	००:३९	०२:५३	०५:१४	०७:३०	०९:४५	१२:०४	१४:२३	१६:२८	१८:१३	१९:४२
३१	२१:०४	२२:४०	००:३५	०२:४९	०५:१०	०७:२६	०९:४१	१२:००	१४:१९	१६:२४	१८:०९	१९:३८

अगस्त	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
१८	**मृत्यु**·२,
१९	**सिद्ध**·४, रवियोगः ह,
२०	**सर्वार्थ**·ह, रवियोगःह, **अमृत**·५,
२१	**अमृत**·५, द·न·चि, **सिद्ध**·६, रवियोगःस्वा
२२	**मृत्यु**·६, रवियोगःस्वा, **अमृत**·७, **त्रिपुष्करः**७+वि
२३	**सिद्ध**·७, **मृत्यु**·८, **सर्वार्थ**·अनु
२४	**सर्वार्थ**·अनु, **अमृत**·८, **मृत्यु**·९, रवियोगःज्ये
२५	**अमृत**·९, रवियोगःज्ये, द·न·ज्ये, रवियोगःमू
२६	**द·ति**·१०, **मृत्यु**·१०, रवियोगःमू, **अमृत**·११
२७	**मृत्यु**·११, **सर्वार्थ**·उषा, **त्रिपुष्करः**१२+उषा,
२८	**मृत्यु**·१२, **सर्वार्थ**·श्र, रवियोगःश्र,
२९	**सिद्ध**·१३, रवियोगःश्र,
३०	द·न·ध,
३१	**सिद्ध**·१५,

पारणा की अनिवार्यता– वारव्रत और श्रीगणेश (संकष्टी) चतुर्थीव्रत में रात्रि में भोजन करना आवश्यक है। पारणा व्रत का अंग है। पारणा दूसरे के अन्न से न करे –

व्रतेरात्रिभोजनमेवकार्यम्। (धर्मसिन्धु)

उदयातिथि का महत्व– स्नान, जप, दान, नवरात्र पाठ का हवन उदयातिथि में ही होता है। यह सम्पूर्ण दिन ग्राह्य होती है–

यां तिथिम् समनुप्राप्य उदयं यातिभास्करः।
सा तिथिःसकला ज्ञेया स्नान दान जपादिषु।

प्रदोष व्रत– सूर्यास्त बाद त्रयोदशी यदि प्रदोषकाल में हो तो उसी दिन प्रदोष व्रत होता है। यह कभी द्वादशी तिथि में प्रदोषकाल में मिलती है तो कभी त्रयोदशी के दिन सायंकाल में मिलती है। जब दोनों दिन प्रदोषकाल में त्रयोदशी हो तो परा (बाद वाली) ग्राह्य है। प्रदोष व्रत से संतानप्राप्ति, ऋणमुक्ति, समृद्धि, कष्टनिवारण तथा शिवसान्निध्य की प्राप्ति होती है।

भाद्रपद कृष्णपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, १ सितम्बर से १४ सितम्बर, २०२३ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– ०१:९:२०२३ मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः; वक्री शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; वक्री बुधःपश्चिमास्तः;

दिनाङ्क सितम्बर	तिथि वार	तिथ्यन्तः घ·प·	तिथ्यन्तः घं:मि	नक्षत्रान्तः नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योगान्तः योग	घ·प·	घं:मि	करणान्तः क१	घ·प·	क२	घ·प·	दिनमानं घ·प·	सूर्योदयः घं:मि	सूर्यास्तः घं:मि	चन्द्र राशिप्रवेश राशि घ·प·	घं:मि	आनंदादि योग	दिनाङ्कः सौर	अंग्रेजी	卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐 १ सितम्बर से १४ सितम्बर
१	२ शु	५१:५५	२६:५४	पू·भा·	३०:३७	१८:२२	धृति	२७:५१	१७:१६	तैति	२४:४४	गर	५१:५५	३१:३३	६:०८	१८:४५	मी·१६:३४	१२:४५	ध्वांक्ष	१५	१	अशून्यशयन व्रत
२	३ श	४६:३९	२४:४८	उ·भा·	२७:०४	१६:५८	शूल	२०:४०	१४:२४	वणि	१९:१२	विष	४६:३९	३१:२९	६:०८	१८:४४	मीन	अहोरात्र	धूम्र	१६	२	**कज्जली तीज, सातूड़ी तीज, श्रीबहुला चतुर्थी,**
३	४ र	४२:०५	२२:५८	रेवती	२४:०८	१५:४८	गण्ड	१३:५७	११:४३	बव	१४:१५	बाल	४२:०५	३१:२५	६:०९	१८:४३	मे·२४:०८	१५:४८	प्रवर्द्ध	१७	३	**संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी, चन्द्रोदय घं·२०:५९**
४	५ चं	३८:२१	२१:२९	अश्वि·	२१:६०	१४:५७	वृद्धि	०७:५२	०९:१८	कौल	१०:०५	तैति	३८:२१	३१:२१	६:०९	१८:४२	मेष	अहोरात्र	राक्षस	१८	४	नाग पंचमी (गुजरात), कोकिला पंचमी (जैन)
५	६ मं	३५:३७	२०:२४	भरणी	२०:४९	१४:२९	ध्रुव व्याघात	०२:३१ ५५:३३	०७:१० २७:३३	गर	०६:५०	वणि	३५:३७	३१:१७	६:०९	१८:४१	वृ·३५:४१	२०:२६	मुसल	१९	५	**श्रीहल षष्ठी, संक्रान्ति पुण्यकालं,१३:००–१९:००घं·**
६	७ बु	३४:०२	१९:४७	कृत्ति·	२०:४३	१४:२७	हर्षण	५४:३१	२७:५८	विष	०४:४०	बव	३४:०२	३१:१३	६:१०	१८:३९	वृष	अहोरात्र	सिद्धि	२०	६	**श्रीकालाष्टमी**
७	८ गु	३३:४२	१९:३९	रोहि·	२१:४९	१४:५४	वज्र	५१:५८	२६:५८	बाल	०३:४२	कौल	३३:४२	३१:०९	६:१०	१८:३८	मि·५२:५१	२७:१९	उत्पात	२१	७	**श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वैष्णव, स्मार्त्त),गोकुलाष्टमी**
८	९ शु	३४:३९	२०:०२	मृग·	२४:१०	१५:५१	सिद्धि	५०:२५	२६:२१	तैति	०३:५९	गर	३४:३९	३१:०५	६:११	१८:३७	मिथुन	अहोरात्र	मानस	२२	८	**नन्दोत्सव, श्री गोगानवमी,** विश्व साक्षरता दिवस
९	१० श	३६:५०	२०:५५	आर्द्रा	२७:४५	२९:१७	व्यति·	४९:४९	२६:०७	वणि	०५:३५	विष	३६:५०	३१:०२	६:११	१८:३१८	मिथुन	अहोरात्र	मुद्गर	२३	९	
१०	११ र	४०:११	२२:१६	पुन·	३२:२७	१९:१०	वरी·	५०:०४	२६:१३	बव	०८:२१	बाल	४०:११	३०:५८	६:१२	१८:३५	क·१६:१०	१२:४०	ध्वज	२४	१०	**श्रीअजा एकादशी (वैष्णव,स्मार्त्त)**
११	१२ चं	४४:२७	२३:५९	पुष्य	३८:०५	२१:२६	परिघ	५१:००	२६:३६	कौल	१२:१२	तैति	४४:२७	३०:५४	६:१२	१८:३४	कर्क	अहोरात्र	धाता	२५	११	**बछ बारस,** गौवत्स द्वादशी
१२	१३ मं	४९:२१	२५:५७	आश्ले·	४४:२०	२३:५७	शिव	५२:२३	२७:१०	गर	१६:५०	वणि	४९:२१	३०:५०	६:१३	१८:३३	सिं·४४:२०	२३:५७	आनन्द	२६	१२	**प्रदोष व्रतम्, पर्यूषण पर्व आरम्भ** (श्वेताम्बर)
१३	१४ बु	५४:३०	२८:०१	मघा	५०:५२	२६:३४	सिद्ध	५३:५५	२७:४८	विष	२१:५५	बव	५४:३०	३०:४६	६:१३	१८:३१	सिंह	अहोरात्र	सुस्थिर	२७	१३	**मासशिवरात्रि व्रतम्,** अघोर चतुर्दशी, द्वापरयुगादि
१४	३० गु	५९:२६	२९:५९	पू·फा·	५७:१२	२९:०६	साध्य	५५:१८	२८:२	चतु	२७:००	नाग	५९:२६	३०:४२	६:१३	१८:३०	सिंह	अहोरात्र	गद	२८	१४	**कुशोत्पाटिनी अमावस्या (देव–पितृकार्य)**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क सितम्बर	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः (मा/व) रा अं क वि	गुरुः (मा/व) रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	वक्री शनिः रा अं क वि	राहुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
१	२ शु	०४:१३:३२:२४	१०:२६:०३:४४	०५:०८:५६:३५	०४:१२:२५:५७	००:२३:१४:२४	०३:१०:५९:०९	१०:०५:२६:१४	१२:०५:३४:०९	४५:४६:३६	उ·०९:२४:४३	+ ०:०२	१९:४३
२	३ श	०४:१४:३०:२४	११:१०:१७:३०	०५:०९:३५:२२	०४:११:४७:४८	वक्री २३:१४:५२	०३:११:०९:१४	१०:०५:२१:२६	१२:०५:३०:५८	४५:४४:४०	उ·०९:०२:४५	+ ०:२१	२०:२१
३	४ र	०४:१५:२८:२७	११:२४:२२:५९	०५:१०:१४:११	०४:११:१४:३६	००:२३:१५:०७	०३:११:२१:३२	१०:०५:१६:४०	१२:०५:२७:४७	४५:४२:४५	उ·०८:४०:३८	+ ०:४०	२०:५९
४	५ चं	०४:१६:२६:३१	००:०८:१७:२७	०५:१०:५३:०१	०४:१०:४६:५७	००:२३:१५:०९	०३:११:३५:५७	१०:०५:११:५४	१२:०५:२४:३७	४५:४०:४९	उ·०८:१८:२३	+ ०:५९	२१:४०
५	६ मं	०४:१७:२४:३८	००:२१:५८:४३	०५:११:३१:५४	०४:१०:२५:१५	००:२३:१४:५८	०३:११:५२:२७	१०:०५:०७:१०	१२:०५:२१:२६	४५:३८:५२	उ·०७:५५:६०	+ १:१९	२२:२३
६	७ बु	०४:१८:२२:४६	०१:०५:२५:१७	०५:१२:१०:४८	०४:१०:०९:४९	००:२३:१४:३४	०३:१२:१०:५६	१०:०५:०२:२८	१२:०५:१८:१५	४५:३६:५५	उ·०७:३३:२८	+ १:३९	२३:१०
७	८ गु	०४:१९:२०:५७	०१:१८:३६:२३	०५:१२:४९:४५	०४:१०:००:४९	००:२३:१३:५८	०३:१२:३१:२२	१०:०४:५७:४८	१२:०५:१५:०४	४५:३४:५८	उ·०७:१०:५०	+ १:००	२३:५९
८	९ शु	०४:२०:१९:०९	०२:०१:३१:५९	०५:१३:२८:४३	मार्गी ०९:५८:१९	००:२३:१३:०९	०३:१२:५३:४०	१०:०४:५३:१०	१२:०५:११:५३	४५:३३:००	उ·०६:४८:०४	+ २:२०	२४:५१
९	१० श	०४:२१:१७:२४	०२:१४:१२:५३	०५:१४:०७:४३	०४:१०:०२:१७	००:२३:१२:०६	०३:१३:१७:४७	१०:०४:४८:३४	१२:०५:०८:४२	४५:३१:०२	उ·०६:२५:११	+ २:४१	२५:४६
१०	११ र	०४:२२:१५:४१	०२:२६:४०:३४	०५:१४:४६:४६	०४:१०:१२:३७	००:२३:१०:५२	०३:१३:४३:३७	१०:०४:४४:०१	१२:०५:०५:३२	४५:२९:०३	उ·०६:०२:१२	+ ३:०२	२६:४०
११	१२ चं	०४:२३:१३:६०	०३:०८:५७:१३	०५:१५:२५:५०	०४:१०:२९:०९	००:२३:०९:२४	०३:१४:११:०९	१०:०४:३९:३०	१२:०५:०२:२१	४५:२७:०४	उ·०५:३९:०७	+ ३:२३	२७:३५
१२	१३ मं	०४:२४:१२:२१	०३:२१:०५:३२	०५:१६:०४:५६	०४:१०:५१:४१	००:२३:०७:४४	०३:१४:४०:१७	१०:०४:३५:०१	१२:०४:५९:१०	४५:२५:०५	उ·०५:१५:५६	+ ३:४४	२८:२९
१३	१४ बु	०४:२५:१०:४४	०४:०३:०८:४३	०५:१६:४४:०४	०४:११:१९:५७	००:२३:०५:५१	०३:१५:१०:५८	१०:०४:३०:३५	१२:०४:५५:५९	४५:२३:०६	उ·०४:५२:३९	+ ४:०६	२९:२२
१४	३० गु	०४:२६:०९:१०	०४:१५:१०:१९	०५:१७:२३:१४	०४:११:५३:४४	००:२३:०३:४५	०३:१५:४३:१०	१०:०४:२६:१३	१२:०४:५२:४८	४५:२१:०६	उ·०४:२९:१८	+ ४:२७	०६:१४

४ सितम्बर सूर्योदयकालीन तिथिः**४**

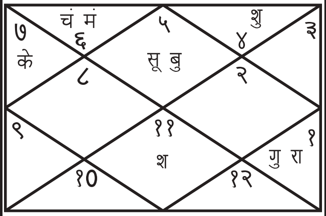

११ सितम्बर सूर्योदयकालीन तिथिः**११**

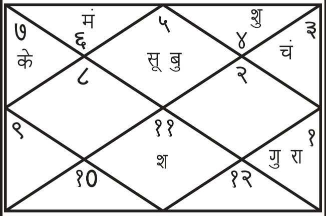

भाद्रपद कृष्णपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, १ सितम्बर से १४ सितम्बर, २०२३ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःउत्तर । ऋतुः वर्षा । दक्षिणायनं । सौम्यगोलः । ति·३० अयनांशाः२२:५१:५८

दिनाङ्क सितम्बर	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
१	२ शु	**पंचक।**
२	३ श	**पंचक, भद्रा १३:४९–२४:४८घं·, ①**
३	४ र	**गण्डान्तः१०:०४–२१:३४, पंचकान्तः१५:४८।**
४	५ चं	वक्रःगुरुः२१:२८।
५	६ मं	**भद्रारंभः२०:२५घं·**, वक्रःगुरुः२१:२८।
६	७ बु	मन्वादि, **भद्रांतः८:०२घं·।**
७	८ गु	① वक्री गुरु घं·१४:४३, हस्तेमङ्गलःघं·२१:३०।
८	९ शु	मार्गी बुधः घं·०७:३२।
९	१० श	**भद्रा ८:२६–२०:५६घं·।**
१०	११ र	अघोर द्वादशी।
११	१२ चं	। ② बुध पूर्वोदित घं·०८:२५।
१२	१३ मं	**भद्रारंभः२५:५८घं·, गण्डान्तारम्भः१७:१९, ②**
१३	१४ बु	**भद्रांतः१४:५९घं·, गण्डान्तः६:३६।**
१४	३० गु	लोहार्गल यात्रा, सतीपूजन (अग्रवंश), राणीसती दादी माँ मेला (झुंझुनू), पिठैरी अमावस (जैन), सप्तपुरी अमावस्या (उड़ीसा), आलोक अमावस्या।

ति	**श्राद्धकाल** घं·मि·
१	१२:०२–१३:४३
३०	११:५८–१३:३६

❀ सर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण के प्राकट्योत्सव जन्माष्टमी का संक्षिप्त कृत्य ❀

जन्माष्टमी को पूरा दिन यथाशक्ति कठोर व्रत रखे। प्रात:काल उठकर स्नानादि नित्यकर्म से निवृत्त होकर व्रत का निम्न संकल्प करे – ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य पिङ्गल नामसंवत्सरे सूर्य दक्षिणायने वर्षतौ भाद्रपदमासे कृष्णपक्षे श्रीकृष्णजन्माष्टम्यां तिथौ गुरुवासरे_ नामाहं मम चतुर्वर्गसिद्धिद्वारा श्रीकृष्णदेवप्रीतये जन्माष्टमीव्रताङ्गत्वेन श्रीकृष्णदेवस्य यथामिलितोपचारैः पूजनं करिष्ये।

केले के खम्भे, आम–अशोक के पल्लव, बहुविध पुष्पादि से श्रीठाकुरजी की दिव्य झाँकी सजाए, सारा दिन संकीर्तन आदि से श्रीकृष्णचन्द्र परमानंदकंद की भक्ति करे। रात्रि में पञ्चामृत एवं दुग्धाभिषेक के साथ माता देवकीसहित श्रीबालकृष्ण का षोडशोपचार से पूजन करे। विविध शृङ्गारादिक वस्तुओं से विशेषरूप से अलंकृत करे। **'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'**–इस मन्त्र से पूजन करता हुआ सुसज्जित करके भगवान् को सुन्दर सजे हुए हिंडोले में प्रतिष्ठित करे। अन्नरहित नैवेद्य तथा सुस्वादु मिष्टान्न, नमकीन पदार्थों, फल, पुष्पों और नारियल, छुहारे, अनार, पंजीरी, नारियल के मिष्टान्न तथा नाना प्रकार के मेवे का प्रसाद सजाकर श्रीभगवान् को अर्पण करे। पूजन में देवकी, वसुदेव, वासुदेव, बलदेव, नन्द, यशोदा और लक्ष्मी–इन सबका क्रमशः नाम निर्दिष्ट करना चाहिये। अन्त में **'प्रणमे देवजननीं त्वया जातस्तु वामनः।'** वसुदेव को तथा **'कृष्णो नमस्तुभ्यं नमो नमः।। सपुत्राघ्र्यं प्रदत्तं मे गृहाणेमं नमोऽस्तु ते।'** से देवकी को अर्घ्य दे और **'धर्माय धर्मेश्वराय धर्मपतये धर्मसम्भवाय गोविन्दाय नमो नमः।'** से श्रीकृष्ण को 'पुष्पांजलि' अर्पण करे। विशेषार्घ्य प्रदानपूर्वक धूप, दीप, नैवेद्य नीराजनपर्यन्त सेवा सम्पादन करके पुष्पाञ्जलि अर्पण करे। जन्मोत्सव के पश्चात् कर्पूरादि प्रज्जवलित कर समवेत स्वर से भगवान् की आरती–स्तुति करे, पश्चात् प्रसाद वितरण करे। तत्पश्चात् **'सोमाय सोमेश्वराय सोमपतये सोमसम्भवाय सोमाय नमो नमः।'** से चन्द्रमा का पूजन करे और फिर शंख में जल, फल, कुश, कुसुम और गन्ध डालकर दोनों घुटने जमीन में लगावे और **'क्षीरोदार्णवसंभूत** अ**त्रिनेत्रसमुद्भव। गृहाणार्घ्यं शशांकेमं रोहिण्या सहितो मम।। ज्योत्स्नापते नमस्तुभ्यं नमस्ते ज्योतिषां पते। नमस्ते रोहिणीकान्त** अर्घ्यं **मे प्रतिगृह्यताम्'** से चन्द्रमा को अर्घ्य दे।

इसके द्वितीय दिन अर्थात् नवमी को दधिकांदो या (नन्दमहोत्सव) किया जाता है। इस समय भगवान् पर कपूर, हल्दी, दही, घी, जल, तेल तथा केसर आदि चढ़ाकर लोग परस्पर विलेपन तथा सेचन करते हैं। वाद्य यन्त्रों से कीर्तन करते हैं तथा मिठाइयाँ बाँटते हैं। **इस प्रकार नन्दनन्दन भगवान् श्रीकृष्ण का प्राकट्योत्सव प्रीतिपूर्वक सम्पन्न करे।**

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

सितम्बर	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१	२१:००	२२:३६	००:३१	०२:४६	०५:०६	०७:२२	०९:३७	११:५६	१४:१५	१६:२०	१८:०५	१९:३४
२	२०:५६	२२:३२	००:२७	०२:४२	०५:०२	०७:१८	०९:३३	११:५२	१४:११	१६:१६	१८:०१	१९:३०
३	२०:५२	२२:२८	००:२३	०२:३८	०४:५८	०७:१५	०९:२९	११:४८	१४:०७	१६:१३	१७:५७	१९:२६
४	२०:४८	२२:२४	००:२०	०२:३४	०४:५४	०७:११	०९:२६	११:४४	१४:०३	१६:०९	१७:५३	१९:२२
५	२०:४४	२२:२०	००:१६	०२:३०	०४:५०	०७:०७	०९:२२	११:४०	१३:५९	१६:०५	१७:४९	१९:१८
६	२०:४०	२२:१६	००:१२	०२:२६	०४:४६	०७:०३	०९:१८	११:३६	१३:५५	१६:०१	१७:४५	१९:१४
७	२०:३६	२२:१२	००:०८	०२:२२	०४:४२	०६:५९	०९:१४	११:३२	१३:५१	१५:५७	१७:४१	१९:१०
८	२०:३२	२२:०८	००:०४	०२:१८	०४:३८	०६:५५	०९:१०	११:२९	१३:४७	१५:५३	१७:३७	१९:०६
९	२०:२८	२२:०४	२३:५९	०२:१४	०४:३४	०६:५१	०९:०६	११:२५	१३:४३	१५:४९	१७:३३	१९:०२
१०	२०:२४	२२:००	२३:५६	०२:१०	०४:३०	०६:४७	०९:०२	११:२१	१३:४०	१५:४५	१७:२९	१८:५९
११	२०:२०	२१:५६	२३:५२	०२:०६	०४:२६	०६:४३	०८:५८	११:१७	१३:३६	१५:४१	१७:२५	१८:५५
१२	२०:१७	२१:५२	२३:४८	०२:०२	०४:२२	०६:३९	०८:५४	११:१३	१३:३२	१५:३७	१७:२२	१८:५१
१३	२०:१३	२१:४९	२३:४४	०१:५८	०४:१८	०६:३५	०८:५०	११:०९	१३:२८	१५:३३	१७:१८	१८:४७
१४	२०:०९	२१:४५	२३:४०	०१:५४	०४:१४	०६:३१	०८:४६	११:०५	१३:२४	१५:२९	१७:१४	१८:४३

सितम्बर	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर आदि योग 卐
१	**सिद्ध**·१५,
२	**मृत्यु**·२
३	द·न·रे, **सिद्ध**·४
४	**सर्वार्थ**·अ, **अमृत**·५,
५	**अमृत**·५, **सिद्ध**·६,
६	**मृत्यु**·६, **सर्वार्थ**·कृ, **रवियोग**ःकृ, **अमृत**·७, **त्रिपुष्कर**ः७+कृ,
७	**सर्वार्थ**·कृ, **सिद्ध**·७, **रवियोग**ःकृ, **सर्वार्थ**·रो, **मृत्यु**·८,
८	**अमृत**·८, **मृत्यु**·९,
९	**अमृत**·९
१०	द·ति·१०, **मृत्यु**·१०, **अमृत**·११,
११	**मृत्यु·११, सर्वार्थ·पु**
१२	**सर्वार्थ**·पु, **मृत्यु**·१२
१३	**सर्वार्थ**·आश्ले, **सिद्ध**·१३,

भाद्रपद कृष्ण अष्टमी के दिन नराकृति परब्रह्म स्वराटपुरुष भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र का जन्मोत्सव है। "इस दिन चारों वर्णों को यथाशक्ति उपवास करना चाहिये। जो जानकर भी श्रीकृष्णजन्माष्टमी का व्रत नहीं करते हैं वे वनमें सर्प और व्याघ्र होते हैं। हे द्विजोत्तम्! जो मनुष्य **श्रीकृष्णजन्माष्टमी** के दिन भोजन कर लेता है, उसका वह भोजन नहीं है किंतु वह तीनों लोकों के पाप को भक्षण करता है इसमें कुछ भी संदेह नहीं है।" **–स्कन्द पुराण** "सप्तमी सहित अष्टमी यत्नपूर्वक वर्जित करें और बिना रोहिणी नक्षत्र के नवमी सहित अष्टमी का व्रत करें।" **–ब्रह्मवैवर्त** "पूर्व सप्तमी से विद्ध अष्टमी नवमी के दिन सूर्योदय में मुहूर्त्त मात्र भी हो तो वह अष्टमी संपूर्ण होती है। नवमी के दिन यदि कला, काष्ठा वा मुहूर्त्त मात्र भी अष्टमी तिथि हो तो वही अष्टमी ग्राह्य है, परंतु सप्तमी सहित अष्टमी कभी ग्रहण नहीं करना चाहिये।" **–पद्मपुराण**

ॐ कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने।
प्रणतः क्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः।

भाद्रपद शुक्लपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, १५ सितम्बर से २९ सितम्बर, २०२३ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– १५:९:२०२३ वक्री गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः; वक्री शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपश्चिमास्तः; मार्गी बुधःपूर्वोदितः;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
सितम्बर	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	१५ सितम्बर से २९ सितम्बर
१५	१ शु	६०:००	अहोरात्र	उ·फा·	६०:००	अहोरात्र	शुभ	००:००	२८:४३	नाग	००:००	किं	००:००	३०:३८	६:१४	१८:२९	क·१४:५३	११:४३	शुभ	२९	१५	भौम पश्चिमास्त घं· १२:३९,
१६	१ श	०३:४४	०७:४४	उ·फा·	०२:५६	०७:२५	शुक्ल	५६:२८	२८:४९	बव	०३:४४	बाल	३५:३५	३०:३४	६:१४	१८:२८	कन्या	अहोरात्र	उत्पात	३०	१६	
१७	२ र	०७:०८	०९:०६	हस्त	०७:४९	०९:२२	ब्रह्म	५५:५१	२८:३५	कौल	०७:०८	तैति	३८:२६	३०:३०	६:१५	१८:२७	तु·३९:५२	२२:११	मानस	३१	१७	मेला रुणीचा रामदेवरा आरम्भ जैसलमेर, विश्वकर्मा पूजन
१८	३ चं	०९:२५	१०:०१	चित्रा	११:३६	१०:५३	ऐन्द्र	५४:१७	२७:५८	गर	०९:२५	वणि	४०:०७	३०:२६	६:१५	१८:२६	तुला	अहोरात्र	मुद्गर	१	१८	**श्रीमहागणपति चतुर्थी, हरितालिका तीज, श्रीवाराह जयन्ती,** ①
१९	४ मं	१०:२७	१०:२६	स्वाती	१४:१०	११:५६	वैधृ·	५१:४३	२६:५७	विष	१०:२७	बव	४०:३०	३०:२२	६:१६	१८:२४	तुला	अहोरात्र	ध्वज	२	१९	**श्रीमहागणपति चतुर्थी (उदया तिथि)** ①मोतीडूंगरी गणेशजी मेला जयपुर
२०	५ बु	१०:१२	१०:२१	विशा·	१५:२९	१२:२८	विष्कु·	४८:०९	२५:३१	बाल	१०:१२	कौल	३९:३७	३०:१८	६:१६	१८:२३	वृ·००:१६	०६:२२	धाता	३	२०	**श्रीऋषि पञ्चमी, पर्यूषण पर्वारम्भ (दिगम्बर जैन)**
२१	६ गु	०८:४३	०९:४६	अनु·	१५:३६	१२:३१	प्रीति	४३:३८	२३:४४	तैति	०८:४३	गर	३७:३३	३०:१४	६:१६	१८:२२	वृश्चिक	अहोरात्र	आनन्द	४	२१	**श्रीबलराम जयन्ती, श्रीलोलार्क सूर्यषष्ठी (पञ्चगव्य प्राशन)**
२२	७ शु	०६:०५	०८:४३	ज्ये·	१४:३५	१२:०७	आयु·	३८:१५	२१:३५	वणि	०६:०५	विष	३४:२३	३०:१०	६:१७	१८:२१	ध·१४:३५	१२:०७	सुस्थिर	५	२२	**श्रीमहालक्ष्मी व्रतारम्भ, दूर्वाष्टमी,** अपराजिता पूजा
२३	८ श ९ श	०२:२६ ५५:३२	०७:१६ २९:२९	मूल	१२:३६	११:२०	सौभा·	३२:०८	१९:०९	बव	०२:२६	बाल	३०:१८	३०:०६	६:१७	१८:२०	धनु	अहोरात्र	गद	६	२३	**श्रीराधाष्टमी,** स्वामी श्रीहरिदास जयन्ती, दधीचि जयन्ती
२४	१० र	५२:४७	२७:२५	पू·षा·	०९:४८	१०:१३	शोभ·	२५:२३	१६:२७	तैति	२५:२६	गर	५२:४७	३०:०१	६:१८	१८:१९	म·२३:६०	१५:५४	शुभ	७	२४	**बाबा श्री रामदेव जयन्ती, श्री तेजा दशमी,** सुगंध दशमी
२५	११ चं	४७:०६	२५:०९	उ·षा·	०६:२०	०८:५०	अतिग·	१८:०९	१३:३४	वणि	१९:५९	विष	४७:०६	२९:५७	६:१८	१८:१७	मकर	अहोरात्र	काण	८	२५	**श्रीपद्मा जलझूलनी एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त)**
२६	१२ मं	४१:०६	२२:४५	श्रवण धनिष्ठा	०२:२६ ५५:५२	०७:१७ २९:३८	सुकर्मा	१०:३५	१०:३३	बव	१४:०७	बाल	४१:०६	२९:५३	६:१९	१८:१६	कु·३०:२३	१८:२८	लुम्ब	९	२६	**श्रीपद्मा जलझूलनी एकादशी (निम्बार्क), श्रीविजया महाद्वादशी**
२७	१३ बु	३४:६०	२०:१९	शत·	५४:०५	२७:५७	धृति शूल	०२:४९ ५२:१५	०७:२७ २८:२१	कौल	०८:०२	तैति	३४:६०	२९:४९	६:१९	१८:१५	कुंभ	अहोरात्र	मानस	१०	२७	**प्रदोष व्रतम्,** मन्वादि, पाली व्रत (वरुण)
२८	१४ गु	२८:५९	१७:५५	पू·भा·	५०:०३	२६:२१	गण्ड	४७:२५	१३:१८	गर	०१:५७	वणि	२८:५९	२९:४५	६:२०	१८:१४	मी·३६:०२	२०:४४	मुद्गर	११	२८	**श्रीअनन्त चतुर्दशी, पूर्णिमा व्रत**
२९	१५ शु	२३:१७	१५:३९	उ·भा·	४६:२४	२४:५४	वृद्धि	४०:०४	२२:२२	बव	२३:१७	बाल	५०:३८	२९:४१	६:२०	१८:१३	मीन	अहोरात्र	ध्वज	१२	२९	**पूर्णिमा (स्नान–दान), पितृपक्ष आरम्भ–पूर्णिमा श्राद्ध**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क सितम्बर	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	वक्री गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	वक्री शनिः रा अं क वि	राहुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
१५	१ शु	०४:२७:०७:३४	०४:२७:१३:४२	०५:१८:०२:१०	०४:१२:३२:२५	००:२३:०१:२७	०३:१६:१६:३३	१०:०४:२१:५३	१२:०४:४९:३७	४५:२३:१२	उ·०४:०६:४७	+ ४:४९	०६:१५
१६	१ श	०४:२८:०६:०७	०५:०९:२४:१४	०५:१८:४१:४०	०४:१३:१६:३८	००:२२:५८:५७	०३:१६:५१:४८	१०:०४:१७:३७	१२:०४:४६:२६	४५:१७:०६	उ·०३:४२:२१	+ ५:११	०७:०७
१७	२ र	०४:२९:०४:३९	०५:२१:४३:०५	०५:१९:२०:५६	०४:१४:०५:११	००:२२:५६:१४	०३:१७:२८:०९	१०:०४:१३:२३	१२:०४:४३:१६	४५:१५:०६	उ·०३:१८:४५	+ ५:३२	०८:०१
१८	३ चं	०५:००:०३:१४	०६:०४:१३:३१	०५:२०:००:१४	०४:१४:५८:०८	००:२२:५३:१९	०३:१८:०५:४६	१०:०४:०९:१४	१२:०४:४०:०५	४५:१३:०५	उ·०२:५५:०७	+ ५:५४	०८:५५
१९	४ मं	०५:०१:०१:५०	०६:१६:५७:३४	०५:२०:३९:३३	०४:१५:५५:१०	००:२२:५०:११	०३:१८:४४:३७	१०:०४:०५:०८	१२:०४:३६:५४	४५:११:०५	उ·०२:३१:२४	+ ६:१६	०९:५३
२०	५ बु	०५:०२:००:२९	०६:२९:५६:३३	०५:२१:१८:५५	०४:१६:५६:०२	००:२२:४६:५२	०३:१९:२४:३९	१०:०४:०१:०६	१२:०४:३३:४३	४५:०९:०४	उ·०२:०७:३९	+ ६:३८	१०:५२
२१	६ गु	०५:०२:५९:१०	०७:१३:११:०५	०५:२१:५८:१९	०४:१८:००:३१	००:२२:४३:२१	०३:२०:०५:४९	१०:०३:५७:०७	१२:०४:३०:३२	४५:०७:०३	उ·०१:४३:५१	+ ६:००	११:५१
२२	७ शु	०५:०३:५७:५३	०७:२६:४०:६०	०५:२२:३७:४४	०४:१९:०८:२०	००:२२:३९:३८	०३:२०:४८:०४	१०:०३:५३:१३	१२:०४:२७:२१	४५:०५:०१	उ·०१:२०:००	+ ७:२१	१२:५२
२३	८ श	०५:०४:५६:३९	०८:१०:२५:२०	०५:२३:१७:१२	०४:२०:१९:१७	००:२२:३५:४३	०३:२१:३१:२२	१०:०३:४९:२२	१२:०४:२४:१०	४५:०३:००	उ·००:५६:०७	+ ७:४३	१३:४९
२४	१० र	०५:०५:५५:२७	०८:२४:२२:२७	०५:२३:५६:४२	०४:२१:३३:०९	००:२२:३१:३६	०३:२२:१५:४१	१०:०३:४५:३६	१२:०४:२०:६०	४५:००:५९	उ·००:३२:१३	+ ८:०५	१४:४३
२५	११ चं	०५:०६:५४:१७	०९:०८:३०:०२	०५:२४:३६:१४	०४:२२:४९:४४	००:२२:२७:१९	०३:२३:००:५८	१०:०३:४१:५५	१२:०४:१७:४९	४४:५८:५७	उ·००:०८:१७	+ ८:२६	१५:३३
२६	१२ मं	०५:०७:५३:०९	०९:२२:४५:१४	०५:२५:१५:४७	०४:२४:०८:५०	००:२२:२२:४९	०३:२३:४७:११	१०:०३:३८:१७	१२:०४:१४:३८	४४:५६:५६	द·००:१५:४०	+ ८:४८	१६:१८
२७	१३ बु	०५:०८:५२:०४	१०:०७:०४:४८	०५:२५:५५:२३	०४:२५:३०:१८	००:२२:१८:०९	०३:२४:३४:१८	१०:०३:३४:४५	१२:०४:११:२७	४४:५४:५४	द·००:३९:३७	+ ९:०९	१७:०१
२८	१४ गु	०५:०९:५१:०१	१०:२१:२५:०२	०५:२६:३५:०१	०४:२६:५३:५८	००:२२:१३:१८	०३:२५:२२:१७	१०:०३:३१:१७	१२:०४:०८:१६	४४:५२:५२	द·०१:०३:३५	+ ९:३०	१७:३९
२९	१५ शु	०५:१०:४९:६०	११:०५:४१:६०	०५:२७:१४:४०	०४:२८:१९:३९	००:२२:०८:१७	०३:२६:११:०५	१०:०३:२७:५४	१२:०४:०५:०५	४४:५०:५१	द·०१:२७:३३	+ ९:५१	१८:१८

१९ सितम्बर सूर्योदयकालीन तिथि:**४**

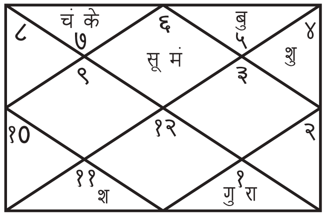

२५ सितम्बर सूर्योदयकालीन तिथि:**११**

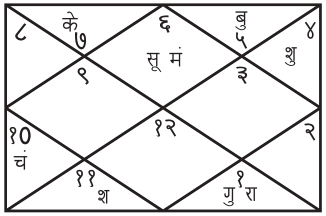

भाद्रपद शुक्लपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, १५ सितम्बर से २९ सितम्बर, २०२३ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःउत्तर । ऋतुः वर्षा कन्यार्कतः ऋतुः शरद । दक्षिणायनं । सौम्यगोलः । ति·१५ अयनांशाः२२:५२:१

दिनाङ्क सितम्बर	तिथि वार	व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·)
१५	१ शु	उत्तरफल्गुन्यांरविःघं·१८:५४, आश्लेषयांशुक्रः घं·२२:२४।
१६	१ श	पूर्वफल्गुन्यांबुधः घं·०८:०८।
१७	२ र	श्री शंकरदेव तिथि (आसाम), कन्यायांरविः घं·२८:५७, संक्रान्ति, मासान्तः।
१८	३ चं	**भद्रारंभः २२:१८घं·, रोट तीज, कन्या संक्रान्ति पुण्यकालं,६:१५–११:२१ घं·**, मन्वादि ⑦
१९	४ मं	**चन्द्रदर्शन निषेध**, मासादिः, **भद्रांतः १०:२७घं·।** ⑦ **श्री श्यामाचरण जयन्ती शुकपीठ (जयपुर)।**
२०	५ बु	सप्तर्षि पूजा, संवत्सरी पंचमी (जैन), गर्ग जयन्ती, अंगिरा जयन्ती, रक्षा पंचमी (बंगाल)।
२१	६ गु	चन्दन षष्ठी (जैन), ललिता षष्ठी (गुजरात), **गण्डान्तारम्भः ३०:१६।**
२२	७ शु	**भद्रा ८:४३–२०:०३घं·**, देवनारायणजी का मेला, सन्तानसप्तमी, सूर्यसप्तमी, वैधृति पुण्यम्।
२३	८ श	श्रीमद्भागवत सप्ताहारम्भ, लवणरहित भोजन, चित्रायांमङ्गलः घं·०८:०६।
२४	१० र	दशावतार व्रत, **अभिजितारम्भः ५२:१७।**
२५	११ चं	**भद्रा १४:१८–२५:०९घं·, डोल ग्यारस, अभिजितान्तः१०:०५।**
२६	१२ मं	**श्रीवामन द्वादशी, श्रवण द्वादशी, विष्णुश्रृंखल**, हरिवासराभाव, भुवनेश्वरी जयन्ती, **पंचकारंभः १८:२८।**
२७	१३ बु	**पंचक**, उत्तरफल्गुन्यांबुधः घं·२६:३१।
२८	१४ गु	**भद्रा १७:५६–२८:३६घं·**, कदली व्रत, इन्द्रगोविन्द पूजा (उड़ीसा), **पंचक**, हस्तेरविः घं·१०:००।
२९	१५ शु	**श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा, कुमारीणां साँझी–सन्ध्या पूजनारम्भः, पंचक।**

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	११:५७–१३:३५
१५	११:५३–१३:२८

❀ भाद्रपद मास कृत्य ❀

❀ **हरितालिका तीज व्रत**– भाद्रपद शुक्ल तृतीया यदि उदयकाल में मुहूर्त्तमात्र हो, तो भी परा ग्राह्य है। यदि क्षय के कारण द्वितीया में हो तो द्वितीयायुता ग्राह्य होती है। दो दिन होने पर परातिथि ग्राह्य है।

तत्र मुहूर्त्तमात्रा ततो न्यूनापि परा ग्राह्या। यदा क्षयवशात्परदिने नास्ति तदा द्वितीयायुतापि ग्राह्या।।

❀ **श्रीअनन्त चतुर्दशी व्रत**– भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी तिथि के दिन अनन्तव्रत में मध्याह्न में भगवान् अनन्त की पूजा करे। इस व्रत में चौदह गाँठ की डोर में अनन्त भगवान् की स्थापना करके भुजा में धारण किया जाता है।

❀ **श्रीवामन द्वादशी** – भाद्रपद में शुक्ल द्वादशी के दिन अभिजित् मुहूर्त में अर्थात् श्रवण नक्षत्र के प्रथम पाद में ग्रह नक्षत्र तारा आदि अनुकूल होने पर द्वादशी को मध्याह्न में वामन भगवान् के आविर्भाव का उत्सव मनावें। श्रीसनकादिकों की आज्ञा है – भाद्रपद शुक्ला द्वादशी श्रवण युक्त हो तो उसे महाद्वादशी समझें, एकादशी तथा द्वादशी दोनों दिन उपवास करें। यहाँ विधि का लोप नहीं समझना चाहिये, क्योंकि दोनों के देवता एक ही हैं। अतः एकादशी व्रत का पारणा किये बिना द्वादशी का व्रत कर सकते हैं। श्रीवामन भगवान् को पञ्चामृत से महास्नान कराकर महाभोग समर्पण करें। गायन–वादन द्वारा श्रीवामन जयन्ती उत्सव मनावें प्रसाद वितरण करें।

❀ **पाली व्रत भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी**– तालाब, जलाशय(पाली) के समीप वरुण दम्पत्ति को अर्घ्य दे, समुद्र की भी प्रार्थना करे। इस भविष्यपुरणोक्त व्रत से व्रती समस्त पातकों से मुक्त हो जाता है और वरुण वारुणी का पूजन करने वाले को अचल भूमि की प्राप्ति होती है। शतभिषा नक्षत्र के जातक नक्षत्रस्वामी वरुणदेव की प्रसन्नता हेतु कर सकते हैं। **अर्घ्य में** – पुष्प, फल, वस्त्र, दीपक, महावर, चन्दन, अनाग्नि, पाक तिल चावल मिश्रित सिद्धान्न, खजूर, नारियल, बिजौरा, नींबू, किशमिश, अनार, सुपारी, ककड़ी आदि यथोपलब्ध सामग्री रखे।

अर्घ्य मन्त्र – वरुणाय नमस्तुभ्यं नमस्ते यादसां पते। अपाम्पते नमस्तुभ्यं रसानां पतये नमः।।

प्रार्थना मन्त्र – मा क्लेदं मा च दौर्गन्ध्यं वैरस्यं मा मुखेऽस्तु मे। वरुणो वारुणीभर्ता वरदोऽस्तु सदा मम।।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

सितम्बर	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१५	२०:०५	२१:४१	२३:३६	०१:५०	०४:१०	०६:२७	०८:४२	११:०१	१३:२०	१५:२५	१७:१०	१८:३९
१६	२०:०१	२१:३७	२३:३२	०१:४६	०४:०६	०६:२३	०८:३८	१०:५७	१३:१६	१५:२१	१७:०६	१८:३५
१७	१९:५७	२१:३३	२३:२८	०१:४२	०४:०३	०६:१९	०८:३४	१०:५३	१३:१२	१५:१७	१७:०२	१८:३१
१८	१९:५३	२१:२९	२३:२४	०१:३८	०३:५९	०६:१५	०८:३०	१०:४९	१३:०८	१५:१३	१६:५८	१८:२७
१९	१९:४९	२१:२५	२३:२०	०१:३५	०३:५५	०६:११	०८:२६	१०:४५	१३:०४	१५:०९	१६:५४	१८:२३
२०	१९:४५	२१:२१	२३:१६	०१:३१	०३:५१	०६:०८	०८:२२	१०:४१	१३:००	१५:०५	१६:५०	१८:१९
२१	१९:४१	२१:१७	२३:१२	०१:२७	०३:४७	०६:०४	०८:१९	१०:३७	१२:५६	१५:०२	१६:४६	१८:१५
२२	१९:३७	२१:१३	२३:०९	०१:२३	०३:४३	०६:००	०८:१५	१०:३३	१२:५२	१४:५८	१६:४२	१८:११
२३	१९:३३	२१:०९	२३:०५	०१:१९	०३:३९	०५:५६	०८:११	१०:२९	१२:४८	१४:५४	१६:३८	१८:०७
२४	१९:२९	२१:०५	२३:०१	०१:१५	०३:३५	०५:५२	०८:०७	१०:२५	१२:४४	१४:५०	१६:३४	१८:०३
२५	१९:२५	२१:०१	२२:५७	०१:११	०३:३१	०५:४७	०८:०३	१०:२२	१२:४०	१४:४६	१६:३०	१७:५९
२६	१९:२१	२०:५७	२२:५३	०१:०७	०३:२७	०५:४४	०७:५९	१०:१८	१२:३६	१४:४२	१६:२६	१७:५५
२७	१९:१७	२०:५३	२२:४९	०१:०३	०३:२३	०५:४०	०७:५५	१०:१४	१२:३३	१४:३८	१६:२२	१७:५२
२८	१९:१३	२०:४९	२२:४५	००:५९	०३:१९	०५:३६	०७:५१	१०:१०	१२:२९	१४:३४	१६:१८	१७:४८
२९	१९:१०	२०:४५	२२:४१	००:५५	०३:१५	०५:३२	०७:४७	१०:०६	१२:२५	१४:३०	१६:१५	१७:४४

सितम्बर	सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, अमृत, रवि आदि योग
१५	**द·न**·उफा,
१६	**अमृत**·१,
१७	**सर्वार्थ**·ह, **सिद्ध**·३,
१८	द·न·चि, रवियोगःस्वा,
१९	रवियोगःस्वा,
२०	**अमृत**·६, **सर्वार्थ**·अनु, रवियोगःअनु
२१	**सर्वार्थ**·अनु, रवियोगःअनु,
२२	**द·ति**·८, गण्डान्तः१७:५८, **मृत्यु**·७, द·न·ज्ये,
२३	**द·ति**·८, **सिद्ध**·९, रवियोगःपूषा, **मृत्यु**·१०,
२४	**अमृत**·१०, रवियोगःपूषा, **सर्वार्थ**·उषा, रवियोगःउषा, **मृत्यु**·११,
२५	**सिद्ध**·११, रवियोगःउषा, **सर्वार्थ**·श्र, **मृत्यु**·१२,
२६	**अमृत**·१२, **द्विपुष्करः**१२+ध, **सिद्ध**·१३, रवियोगःश,
२७	**मृत्यु**·१३, रवियोगःश,
२८	**मृत्यु**·१४, **सिद्ध**·१५, रवियोगःपूभा,
२९	**सिद्ध**·१, **सर्वार्थ**·रे,

❀ **भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी** को श्रीगणेशजी प्रकटे, *नभस्ये मासि शुक्लायां चतुर्थ्यां मम जन्मनि। दूर्वाभिः नामभिः पूजां तर्पणं विधिवत् चरेत्।।* श्रीगणेशजी को दूर्वा व शमी और मंदार के पुष्प बहुत प्रिय है। दूर्वा नरक नाशक, वंशवर्धक, आयुवर्धक, तेजवर्धक होती है– *हरिता श्वेतवर्णा वा पंचत्रिपत्र संयुताः। दूर्वांकुरा मया दत्ता एकविंशतिः सम्मिताः।*

❀ **श्रीगणेश चतुर्थी** पर चन्द्र दर्शन निषिद्ध है। दूसरों से कड़वे और अपशब्द सुनकर व्यक्ति कलंक मुक्त हो पाता है।

गणेशजी का मन्त्र– "ॐ गं गणपतये नमः" है। श्रीगणेशजी की आराधना निम्न क्रम में करे **१·** षोडशोपचार पूजन, **२·** श्रीगणेश स्तवराज पाठ, **३·** श्रीगणेश कवच का पाठ, **४·** श्रीगणपति अथर्वशीर्ष पाठ, **५·** श्रीगणेश शतनाम पाठ और **६·** श्रीगणेश सहस्रनाम का पाठ करें।

आश्विन कृष्णपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, ३० सितम्बर से १४ अक्टूबर, २०२२ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– ३०:९:२०२३ वक्री गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः; वक्री शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपश्चिमास्तः; मार्गी बुधःपूर्वोदितः;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
सितम्बर	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	३० सितम्बर से १४ अक्टूबर
३०	१ श	१८:०५	१३:३५	रेवती	४३:१८	२३:४०	ध्रुव	३३:१०	१९:३७	कौल	१८:०५	तैति	४५:४५	२९:३७	६:२१	१८:१२	मे·४३:१८	२३:४०	धाता	१३	३०	प्रतिपदा श्राद्ध, द्वितीया श्राद्ध, अशून्यशयन व्रत
अक्टूबर	२ र	१३:३४	११:४७	अश्वि·	४०:५८	२२:४४	व्याघ·	२६:५२	१७:०६	गर	१३:३४	वणि	४१:३८	२९:३३	६:२१	१८:१०	मेष	अहोरात्र	आनन्द	१४	अक्टू·	तृतीया श्राद्ध
२	३ चं	०९:५४	१०:१९	भरणी	३९:३३	२२:११	हर्षण	२१:१६	१४:५२	विष	०९:५४	बव	३८:२६	२९:२९	६:२२	१८:०९	वृ·५४:२२	२८:०६	सुस्थिर	१५	२	चतुर्थी श्राद्ध, संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी, चन्द्रोदय घं·२०:१८
३	४ मं	०७:१४	०९:१५	कृत्ति·	३९:११	२२:०२	वज्र	१६:२९	१२:५८	बाल	०७:१४	कौल	३६:२०	२९:२५	६:२२	१८:०८	वृष	अहोरात्र	गद	१६	३	पञ्चमी श्राद्ध
४	५ बु	०५:४३	०८:४०	रोहि·	४०:००	२२:२३	सिद्धि	१२:३८	११:२६	तैति	०५:४३	गर	३५:२६	२९:२१	६:२२	१८:०७	वृष	अहोरात्र	शुभ	१७	४	षष्ठी श्राद्ध, चन्द्र षष्ठी व्रत चन्द्रोदये घं·२१:४८
५	६ गु	०५:२६	०८:३४	मृग·	४२:०४	२३:१३	व्यति·	०९:४५	१०:१७	वणि	०५:२६	विष	३५:४८	२९:१७	६:२३	१८:०६	मि·१०:५२	१०:४४	मृत्यु	१८	५	सप्तमी श्राद्ध, व्यतीपात पुण्यम्
६	७ शु	०६:२८	०८:५९	आर्द्रा	४५:२२	२४:३२	वरी·	०७:५३	०९:३२	बव	०६:२८	बाल	३७:२८	२९:१३	६:२३	१८:०५	मिथुन	अहोरात्र	पद्म	१९	६	अष्टमी श्राद्ध, श्रीमहालक्ष्मीव्रत, श्रीमहालक्ष्मी व्रतसमापन
७	८ श	०८:४४	०९:५४	पुन·	४९:४९	२६:२०	परिघ	०६:५८	०९:११	कौल	०८:४४	तैति	४०:२०	२९:०९	६:२४	१८:०४	क·३३:३६	१९:५०	छत्र	२०	७	नवमी श्राद्ध, मातृनवमी श्राद्ध, जीमूतवाहन पूजा
८	९ र	१२:१०	११:१६	पुष्य	५५:१६	२८:३१	शिव	०६:५६	०९:११	गर	१२:१०	वणि	४४:१६	२९:०५	६:२४	१८:०३	कर्क	अहोरात्र	श्रीवत्स	२१	८	दशमी श्राद्ध, अन्वष्टका श्राद्ध
९	१० चं	१६:३२	१३:०२	आश्ले·	६०:००	अहोरात्र	सिद्ध	०७:३८	०९:२८	विष	१६:३२	बव	४८:६०	२९:०१	६:२५	१८:०१	कर्क	अहोरात्र	सौम्य	२२	९	एकादशी श्राद्ध, गुरु नानकदेव पुण्यतिथि
१०	११ मं	२१:३२	१५:०२	आश्ले·	०१:२३	०६:५९	साध्य	०८:५१	०९:५८	बाल	२१:३२	कौल	५४:११	२८:५७	६:२५	१८:००	सिं·०१:२३	०६:५९	आनन्द	२३	१०	श्रीइन्दिरा एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त), मघा श्राद्ध
११	१२ बु	२६:४७	१७:०९	मघा	०७:५३	०९:३५	शुभ	१०:१८	१०:३३	तैति	२६:४७	गर	५९:२२	२८:५३	६:२६	१७:५९	सिंह	अहोरात्र	सुस्थिर	२४	११	द्वादशी श्राद्ध, संन्यासी–यति श्राद्ध, वैष्णवानां एकादशी श्राद्ध
१२	१३ गु	३१:४९	१९:१०	पू·फा·	१४:१८	१२:१०	शुक्ल	११:४०	११:०६	वणि	३१:४९	विष	६०:००	२८:४९	६:२७	१७:५८	कं·३०:५१	०६:४७	गद	२५	१२	त्रयोदशी श्राद्ध, प्रदोषव्रतम्, मासशिवरात्रि व्रतम्, कलियुगादि
१३	१४ शु	३६:१५	२०:५७	उ·फा·	२०:१३	१४:३२	ब्रह्म	१२:३९	११:३१	विष	०४:०७	बव	३६:१५	२८:४५	६:२७	१७:५७	कन्या	अहोरात्र	शुभ	२६	१३	चतुर्दशी श्राद्ध (केवल शस्त्रहत पितरों के लिए)
१४	३० श	३९:४५	२२:२१	हस्त	२५:२०	१६:३५	ऐन्द्र	१३:०१	११:४०	चतु	०८:०७	नाग	३९:४५	२८:४१	६:२८	१७:५६	तु·५७:३१	२९:२८	मृत्यु	२७	१४	सर्वपितृ अमावस्या (देव–पितृकार्य), महालय समाप्ति

औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः

दिनाङ्क सितम्बर	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	वक्री गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	वक्री शनिः रा अं क वि	राहुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
३०	१ श	०५:११:४९:०२	११:१९:५२:२०	०५:२७:५४:२२	०४:२९:४७:१३	००:२२:०३:०४	०३:२७:००:४१	१०:०३:२४:३६	१२:०४:०१:५४	४४:४८:४९	द·०१:५१:३१	+१०:१२	१८:५६
अक्टूबर	२ र	०५:१२:४८:०५	००:०३:५३:०५	०५:२८:३४:०६	०५:०१:१६:३३	००:२१:५७:४२	०३:२७:५१:०४	१०:०३:२१:२३	१२:०३:५८:४४	४४:४६:४७	द·०२:१५:२८	+१०:३२	१९:३५
२	३ चं	०५:१३:४७:१२	००:१७:४१:४३	०५:२९:१३:५२	०५:०२:४७:३१	००:२१:५२:०९	०३:२८:४२:११	१०:०३:१८:१५	१२:०३:५५:३३	४४:४४:४६	द·०२:३९:२४	+१०:५३	२०:१८
३	४ मं	०५:१४:४६:२०	०१:०१:१६:२३	०५:२९:५३:३९	०५:०४:१९:५९	००:२१:४६:२७	०३:२९:३४:००	१०:०३:१५:१२	१२:०३:५२:२२	४४:४२:४४	द·०३:०३:१८	+११:१३	२१:०१
४	५ बु	०५:१५:४५:३१	०१:१४:३५:५३	०६:००:३३:२९	०५:०५:५३:५१	००:२१:४०:३४	०४:००:२६:३१	१०:०३:१२:१४	१२:०३:४९:११	४४:४०:४३	द·०३:२७:१०	+११:३२	२१:५२
५	६ गु	०५:१६:४४:४३	०१:२७:३९:४८	०६:०१:१३:२१	०५:०७:२९:००	००:२१:३४:३३	०४:०१:१९:४१	१०:०३:०९:२२	१२:०३:४६:००	४४:३८:४१	द·०३:५१:०१	+११:५२	२२:४१
६	७ शु	०५:१७:४३:५८	०२:१०:२८:३१	०६:०१:५३:१५	०५:०९:०५:२१	००:२१:२८:२२	०४:०२:१३:३०	१०:०३:०६:३५	१२:०३:४२:४९	४४:३६:४०	द·०४:१४:४८	+१२:११	२३:३७
७	८ श	०५:१८:४३:१५	०२:२३:०३:०६	०६:०२:३३:११	०५:१०:४२:४९	००:२१:२२:०३	०४:०३:०७:५५	१०:०३:०३:५४	१२:०३:३९:३९	४४:३४:३९	द·०४:३८:३३	+१२:२९	२४:३१
८	९ र	०५:१९:४२:३४	०३:०५:२५:२४	०६:०३:१३:०९	०५:१२:२१:१७	००:२१:१५:३४	०४:०४:०२:५७	१०:०३:०१:१९	१२:०३:३६:२८	४४:३२:३८	द·०५:०२:१५	+१२:४८	२५:२६
९	१० चं	०५:२०:४१:५६	०३:१७:३७:५०	०६:०३:५३:१०	०५:१४:००:४१	००:२१:०८:५८	०४:०४:५८:३२	१०:०२:५८:४९	१२:०३:३३:१७	४४:३०:३७	द·०५:२५:५२	+१३:०६	२६:२०
१०	११ मं	०५:२१:४१:२०	०३:२९:४३:२३	०६:०४:३३:१२	०५:१५:४०:५६	००:२१:०२:१३	०४:०५:५४:४०	१०:०२:५६:२६	१२:०३:३०:०६	४४:२८:३६	द·०५:४९:२६	+१३:२३	२७:१४
११	१२ बु	०५:२२:४०:४६	०४:११:४५:२१	०६:०५:१३:१६	०५:१७:२१:५९	००:२०:५५:२१	०४:०६:५१:२१	१०:०२:५४:०८	१२:०३:२६:५५	४४:२६:३६	द·०६:१२:५६	+१३:४०	२८:०६
१२	१३ गु	०५:२३:४०:१५	०४:२३:४७:३६	०६:०५:५३:२३	०५:१९:०३:४३	००:२०:४८:२१	०४:०७:४८:३२	१०:०२:५१:५५	१२:०३:२३:४४	४४:२४:३५	द·०६:३६:२०	+१३:५७	२८:५९
१३	१४ शु	०५:२४:३९:४६	०५:०५:५३:५६	०६:०६:३३:३२	०५:२०:४६:०७	००:२०:४१:१४	०४:०८:४६:१३	१०:०२:४९:४९	१२:०३:२०:३३	४४:२२:३५	द·०६:५९:४०	+१४:१३	२९:५२
१४	३० श	०५:२५:३९:१९	०५:१८:०७:३५	०६:०७:१३:४२	०५:२२:२९:०५	००:२०:३४:००	०४:०९:४४:२३	१०:०२:४७:५०	१२:०३:१७:२३	४४:२०:३६	द·०७:२२:५४	+१४:२९	०६:४६

३ अक्टूबर सूर्योदयकालीन तिथिः४

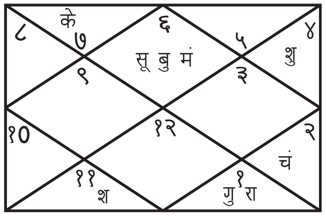

१० अक्टूबर सूर्योदयकालीन तिथिः११

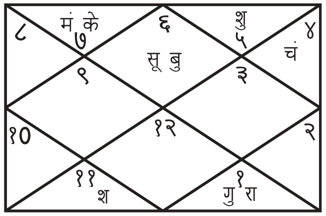

आश्विन कृष्णपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, ३० सितम्बर से १४ अक्टूबर, २०२२ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःउत्तर । ॠतुः शरद । दक्षिणायनं । सौम्यगोलः । ति·३० अयनांशाः२२:५२:३

दिनाङ्क सितम्बर	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
३०	१ श	जैन क्षमावाणी पर्व, **पंचकान्तः २३:४०, गण्डान्तः१७:५७–२९:२५,** ①
अक्टूबर	२ र	**भद्रारंभः २३:०१घं·।** ① पड़वा ढ़ोक, कन्यायांबुधः घं·०९:५७।
२	३ चं	**भरणी श्राद्ध, भद्रांतः १०:१९घं·,** महात्मा गाँधी जयन्ती, ②
३	४ मं	मघायांसिंहेशुक्रः घं·१८:२६, तुलायांमङ्गलः घं·१०:१८।
४	५ बु	। ② लालबहादुर शास्त्री जयन्ती।
५	६ गु	**भद्रा ८:३४–२०:४३घं·।**
६	७ शु	**श्रीकालाष्टमी,** बुध पूर्वास्त घं·२७:४६, हस्तेबुधः घं·२०:०२।
७	८ श	।
८	९ र	**भद्रारंभः २४:०७घं·।**
९	१० चं	**भद्रांतः १३:०२घं·, गण्डान्तारम्भः २४:२१।**
१०	११ मं	**गण्डान्तः १३:३८।**
११	१२ बु	चित्रायांरविः घं·२२:१७।
१२	१३ गु	**भद्रा १९:११–३२:०६घं·।**
१३	१४ शु	**भद्रांतः ८:०६घं·,** स्वात्यांमङ्गलः घं·१०:२६।
१४	३० श	**पितृ विसर्जन,** चित्रायांबुधः घं·१८:१८।

ति	**श्राद्धकालं** घं·मि·
१	११:५३–१३:२८
३०	११:४९–१३:२१

❀ सर्वश्रेष्ठ कर्म है श्राद्ध ❀

ब्रह्म पुराण–जो अपनी संपत्ति के अनुकूल व्यय करता हुआ श्राद्ध करता है वह ब्रह्माण्ड को प्रसन्न कर लेता है। श्राद्ध का फल कभी भी व्यर्थ नहीं जाता––*न किंचिद् व्यर्थतां व्रजेत्।।* जो लोग देवता, पितर, अग्नि और ब्राह्मण की पूजा करते हैं वे सभी प्राणियों के आत्मा विष्णु की ही आराधना करते हैं––*विष्णुमेव यजन्ति ते।*– यमस्मृति। **इच्छा शक्ति होने पर श्राद्ध कराना पहाड़ तोड़ना नहीं बल्कि फूल तोड़ने जैसा कार्य है।**

देव कार्य से भी महत्त्वपूर्ण है श्राद्ध कार्य – देवता से पूर्व पितरों का पूजन करना चाहिए। पितृपूजा देवपूजा से अधिक महत्त्वपूर्ण है––*देवकार्यादपि सदा पितृकार्यं विशिष्यते। देवताभ्यः पितृनां हि पूर्वमाप्यायनं शुभम्।* (ब्रह्मवैवर्त पुराण)। ब्रह्मपुराण और अधिक महत्त्व को बतलाते हुए कहता है यदि कोई शाक से भी श्राद्ध करता है तो उसके कुल में कोई कष्ट नहीं भोगता–– *शाकैरपि यथाविधिः।* **अशक्ति में श्राद्ध कैसे करायें** नौकरी में छुट्टी न मिलने की स्थिति में, कारागार में रहने पर, रोग से ग्रस्त रहने पर या अन्य किसी भी अवरोध के होने पर सुयोग्य ब्राह्मण को संकल्पपूर्वक धन दे कर श्राद्ध कराना चाहिए–*राजकार्येनियुक्तस्य बन्धनिग्रहवर्तिनः । व्यसनेषु च सर्वेषु श्राद्धं विप्रेणकारयेत्।।* –धर्मसिन्धु, परि. ३ **श्राद्ध त्याग का दुष्परिणाम** आदित्य पुराण में है कि जो लोग मन में यह सोचते हैं कि पितर नहीं होते हैं श्राद्ध क्या करना? ऐसे लोगों के परिवार का रक्त पितृगण पीते हैं– *न सन्ति पितरश्चेति कृत्वा मनसि यो नरः। श्राद्धन् न कुरुते तत्र तस्य रक्तं पिबन्ति ते।।* वंश हीनता और निर्धनता से बचने के लिए श्राद्ध अवश्य करना चाहिए। सुमन्तु मुनि ने भी कहा है कि– "**श्राद्ध से पुण्यशाली** अन्य **कोई कर्म नहीं है**" – श्राद्धात्परतरं नान्यत् श्रेयस्करमुदाहृतम्।

❀ श्राद्धतिथि पर अन्नदानात्मक सांकल्पिक श्राद्ध ❀

यदि श्रद्धतिथि पर ब्राह्मण भोजन कराना सम्भव न हो तो निम्न विधि से संकल्प करके सूखे अन्न, घृत, चीनी, नमक आदि षड् रस वस्तुओं को दक्षिणा सहित श्राद्ध भोजन के निमित्त ब्राह्मण को दे देना चाहिये–

❀ **प्रतिज्ञासंकल्प**– हाथ में तिल, जल लेकर संकल्प करे –

ॐ अद्य ... देशकालसंकीर्त्य... अमुक गोत्रः अमुक नामाहं अस्मत् पिता/ पितामहानां/ माता/... क्षुधापिपासानिवृत्तिपूर्वम् अक्षयतृप्ति सम्पादनार्थं सोपस्करम् आमान्नदानात्मकं सांकल्पिक श्राद्धं करिष्ये।

हाथ से संकल्प–जल जमीन पर छोड़े।

❀ **आमान्नदानका संकल्प**– अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर हाथ में मोटक, तिल, जल लेकर आमान्नदान का निम्न संकल्प करे–

ॐ अद्य अमुक गोत्राय पित्रे (पितृ का नाम) शर्माय/वर्माय/गुप्ताय सांकल्पिक श्राद्धे एक/त्रि/पंच ब्राह्मणभोजनतृप्तिपर्याप्तं इदमन्नं ते नमः

कहकर संकल्पजल आमान्न सामग्री पर छोड़ दे और आमान्न ब्राह्मण को प्रदान करे तथा दक्षिणा भी दे।

❀ **पितरों की तृप्ति हेतु वस्त्र** आदि **दान का संकल्प –**

ॐ ...देशकाल संकीर्त्य... अमुक गोत्रः अमुक नामाहं अमुकगोत्राणां अस्मत् पिता/पितामहः/ (पितृ का नाम) शर्मा/वर्मा/गुप्तानां श्राद्धे क्षुधापिपासानिवृत्तिपूर्वम् अक्षयतृप्तिप्राप्त्यर्थम् असद्गतीनां सद्गतिप्राप्तये सद्गतीनाञ्च अपुनरावर्तिविष्णवादिलोकप्राप्तिकामनया शास्त्रोक्त फल प्राप्त्यर्थं वस्त्रं दक्षिणाद्रव्यं च अमुकगोत्राय–नामाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

सितम्बर	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
३०	१९:०६	२०:४२	२२:३७	००:५१	०३:११	०५:२८	०७:४३	१०:०२	१२:२१	१४:२६	१६:११	१७:४०
अक्टूबर	१९:०२	२०:३८	२२:३३	००:४७	०३:०७	०५:२४	०७:३९	०९:५८	१२:१७	१४:२२	१६:०७	१७:३६
२	१८:५८	२०:३४	२२:२९	००:४३	०३:०३	०५:२०	०७:३५	०९:५४	१२:१३	१४:१८	१६:०३	१७:३२
३	१८:५४	२०:३०	२२:२५	००:३९	०३:००	०५:१६	०७:३१	०९:५०	१२:०९	१४:१४	१५:५९	१७:२८
४	१८:५०	२०:२६	२२:२१	००:३५	०२:५६	०५:१२	०७:२७	०९:४६	१२:०५	१४:१०	१५:५५	१७:२४
५	१८:४६	२०:२२	२२:१७	००:३१	०२:५२	०५:०८	०७:२३	०९:४२	१२:०१	१४:०६	१५:५१	१७:२०
६	१८:४२	२०:१८	२२:१३	००:२८	०२:४८	०५:०४	०७:१९	०९:३८	११:५७	१४:०२	१५:४७	१७:१६
७	१८:३८	२०:१४	२२:०९	००:२४	०२:४४	०५:००	०७:१५	०९:३४	११:५३	१३:५८	१५:४३	१७:१२
८	१८:३४	२०:१०	२२:०५	००:२०	०२:४०	०४:५६	०७:११	०९:३०	११:४९	१३:५५	१५:३९	१७:०८
९	१८:३०	२०:०६	२२:०२	००:१६	०२:३६	०४:५२	०७:०८	०९:२६	११:४५	१३:५१	१५:३५	१७:०४
१०	१८:२६	२०:०२	२१:५८	००:१२	०२:३२	०४:४८	०७:०४	०९:२२	११:४१	१३:४७	१५:३१	१७:००
११	१८:२२	१९:५८	२१:५४	००:०८	०२:२८	०४:४४	०७:००	०९:१८	११:३७	१३:४३	१५:२७	१६:५६
१२	१८:१८	१९:५४	२१:५०	००:०४	०२:२४	०४:४०	०६:५६	०९:१४	११:३३	१३:३९	१५:२३	१६:५२
१३	१८:१४	१९:५०	२१:४६	२३:५९	०२:२०	०४:३७	०६:५२	०९:११	११:२९	१३:३५	१५:१९	१६:४८
१४	१८:१०	१९:४६	२१:४२	२३:५६	०२:१६	०४:३३	०६:४८	०९:०७	११:२५	१३:३१	१५:१५	१६:४४

सितम्ब	卐 सर्वार्थसिद्धि,त्रिपुष्कर,अमृत,रवि आदि योग 卐
३०	**अमृत**·१, द·न·रे,
अक्टू·	**सर्वार्थ**·अ, **सिद्ध**·३, द·न·भ,
३	**सर्वार्थ**·कृ,
४	**सर्वार्थ**·रो, **अमृत**·६, **सर्वार्थ**·मृ, **रवियोग**ःमृ
५	**रवियोग**ःमृ,
६	**द·ति**·८, **मृत्यु**·७, **सर्वार्थ**·पुन,
७	**द·ति**·८, **सिद्ध**·९,
८	**सर्वार्थ**·पु, **अमृत**·१०,
९	**अमृत**·१०, **सिद्ध**·११
१०	**सर्वार्थ**·आश्ले, **मृत्यु**·११, **अमृत**·१२,
११	**सिद्ध**·१२, **मृत्यु**·१३,
१२	**अमृत**·१३, द·न·उफा, **मृत्यु**·१४,
१३	**अमृत**·१४,
१४	**मृत्यु**·१५, **अमृत**·१,

कन्याराशिस्थ सूर्य और **आश्विन कृष्णपक्ष** का जब सम्मिलन होता है तब एक त्रिकोण में सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी की स्थिति बनती है और पितृगण सीधे धरती पर उतर आते हैं। यह खगोलीय स्थिति **पितृपक्ष** के लिए अनिवार्य होती है। अदृष्ट भाग दिखने वाले से करोड़ों करोड़ गुणा महत्वपूर्ण है। अतः **वेद–शास्त्र को प्रमाण मानकर श्राद्ध करना चाहिए।** संतुष्ट पितृगण राज्य, वंश और आयु प्रदान करते हैं। जिस वंश में पितृगण मुक्त नहीं होते, उसके वंशधर मोक्ष नहीं प्राप्त कर सकते। मोक्ष तो बड़ी बात है उन्हें प्रेत योनि से ही मुक्ति नहीं मिलती अंततः श्रीमद्भागवत का सप्ताहयज्ञ कराना पड़ता है। "जिनके घर श्राद्ध नहीं होता उनके कुल में वीर पुत्र उत्पन्न नहीं होते, कोई निरोग नहीं रहता, दीर्घायु नहीं होती और किसी तरह का कल्याण नहीं होता।" –मार्कण्डेयपुराण

न तत्र वीराः जायन्ते निरोगी न शतायुषः।
न तत्र श्रेयः कांक्षन्ते यत्र श्राद्धः विवर्जितः।।

आश्विन शुक्लपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, १५ अक्टूबर से २८ अक्टूबर, २०२३ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– १५:१०:२०२३ वक्री गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः; वक्री शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपश्चिमास्तः; मार्गी बुधःपूर्वास्तः;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		व्रत–पर्व–उत्सव
अक्टूबर	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	१५ अक्टूबर से २८ अक्टूबर
१५	१ र	४२:०७	२३:१९	चित्रा	२९:२३	१८:१३	वैधृ·	१२:३३	११:२९	बव	११:०३	बाल	४२:०७	२८:३७	६:२८	१७:५५	तुला	अहोरात्र	पद्म	२८	१५	**शारदीय नवरात्रारम्भः, कलशस्थापना,** ध्वजा रोपण
१६	२ चं	४३:१४	२३:४६	स्वाती	३२:१४	१९:२२	विष्कु·	११:११	१०:५७	बाल	१२:४९	कौल	४३:१४	२८:३३	६:२९	१७:५४	तुला	अहोरात्र	छत्र	२९	१६	**ब्रह्मचारिणीदेवी दर्शन**
१७	३ मं	४३:०३	२३:४३	विशा·	३३:५०	२०:०१	प्रीति	०८:४८	१०:००	तैति	१३:१७	गर	४३:०३	२८:२९	६:२९	१७:५३	वृ·१८:३३	१३:५४	श्रीवत्स	३०	१७	**चन्द्रघण्टादेवी दर्शन,** वैधृति पुण्यम्
१८	४ बु	४१:३९	२३:०९	अनु·	३४:१३	२०:११	आयु·	०५:२५	०८:४०	वणि	१२:२९	विष	४१:३९	२८:२५	६:३०	१७:५२	वृश्चिक	अहोरात्र	सौम्य	३१	१८	**वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी, कूष्माण्डादेवी दर्शन**
१९	५ गु	३९:०५	२२:०८	ज्ये·	३३:२८	१९:५३	सौभा· शोभन	०१:०५ ५४:४९	०६:५६ २८:५१	बव	१०:२९	बाल	३९:०५	२८:२१	६:३०	१७:५१	ध·३३:२८	१९:५३	कालदंड	१	१९	**स्कन्दमातादेवी दर्शन, उपांग ललिता व्रत**
२०	६ शु	३५:३०	२०:४३	मूल	३१:४१	१९:११	अतिग·	४९:५५	२६:२९	कौल	०७:२३	तैति	३५:३०	२८:१७	६:३१	१७:५०	धनु	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	२	२०	**कात्यायनीदेवी दर्शन, श्री सरस्वती आवाहन** (मूलेषु)
२१	७ श	३१:०४	१८:५७	पू·षा·	२९:०४	१८:०९	सुकर्मा	४३:१६	२३:५०	गर	०३:२२	वणि	३१:०४	२८:१३	६:३२	१७:४९	म·४३:१८	२३:५१	मातङ्ग	३	२१	**कालरात्रिदेवी दर्शन, श्री सरस्वती पूजन** (पू·षाढ़ासु)
२२	८ र	२५:५७	१६:५५	उ·षा·	२५:४४	१६:५०	धृति	३६:०५	२०:५८	बव	२५:५७	बाल	५३:१२	२८:०९	६:३२	१७:४८	मकर	अहोरात्र	अमृत	४	२२	**महाष्टमी, दुर्गाष्टमी, श्री सरस्वती बलिदान** (उ·षाढ़ासु)
२३	९ चं	२०:२०	१४:४१	श्रवण	२१:५५	१५:१९	शूल	२८:३२	१७:५८	कौल	२०:२०	तैति	४७:२४	२८:०५	६:३३	१७:४७	कु·४९:५४	२६:३०	सिद्धि	५	२३	**दुर्गा महानवमी, विजयादशमी, सरस्वती विसर्जन** (श्रवणेषु)
२४	१० मं	१४:२४	१२:१९	धनि·	१७:४८	१३:४१	गण्ड	२०:४५	१४:५२	गर	१४:२४	वणि	४१:२४	२८:०१	६:३३	१७:४६	कुंभ	अहोरात्र	उत्पात	६	२४	**विजयादशमी** (उदयात), नवरात्र व्रतपारणा
२५	११ बु	०८:२२	०९:५५	शत·	१३:३५	१२:०१	वृद्धि	१२:५४	११:४४	विष	०८:२२	बव	३५:२३	२७:५८	६:३४	१७:४५	मी·५५:३१	२८:४६	मानस	७	२५	**श्री पापाङ्कुशा एकादशी (वैष्णव,स्मार्त्त)**
२६	१२ गु १३ गु	०२:२६ ५४:२५	०७:३३ २९:१९	पू·भा·	०९:२९	१०:२२	ध्रुव व्याघात	०५:०९ ५२:३२	०८:३८ २९:३९	बाल	०२:२६	कौल	२९:३५	२७:५४	६:३५	१७:४४	मीन	अहोरात्र	मुद्गर	८	२६	**प्रदोषव्रतम्,** श्री पद्मनाभद्वादशी, दुग्ध दान
२७	१४ शु	५१:४३	२७:१७	उ·भा·	०५:४४	०८:५३	हर्षण	५०:३५	२६:४९	गर	२४:१२	वणि	५१:४३	२७:५०	६:३५	१७:४३	मीन	अहोरात्र	ध्वज	९	२७	शरदपूर्णिमा निमित्त पायस निर्माण अगले दिन ग्रहण होने से
२८	१५ श	४७:१८	२५:३१	रेवती अश्विनी	०२:२९ ५७:३१	०७:३६ ३०:३६	वज्र	४४:०२	२४:१३	विष	१९:२४	बव	४७:१८	२७:४६	६:३६	१७:४३	मे·०२:२९	०७:३६	धाता	१०	२८	**शरदपूर्णिमा (व्रत–स्नान–दान), खण्ड चन्द्रग्रहण**

औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः

दिनाङ्क अक्टूबर	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	वक्री गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	वक्री शनिः रा अं क वि	राहुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मिःसे	चन्द्रोदयः
१५	१ र	०५:२६:३८:५५	०६:००:३१:२९	०६:०७:५३:५५	०५:२४:१२:३४	००:२०:२६:४०	०४:१०:४३:०१	१०:०२:४५:५६	१२:०३:१४:१२	४४:१८:३६	द·०७:४६:०२	+१४:४४	०६:४६
१६	२ चं	०५:२७:३८:३२	०६:१३:०७:५८	०६:०८:३४:१०	०५:२५:५६:३०	००:२०:१९:१४	०४:११:४२:०६	१०:०२:४४:०८	१२:०३:११:०१	४४:१६:३७	द·०८:०९:०४	+१४:५८	०७:४२
१७	३ मं	०५:२८:३८:१२	०६:२५:५८:४६	०६:०९:१४:२७	०५:२७:४०:५०	००:२०:११:४२	०४:१२:४१:३७	१०:०२:४२:२७	१२:०३:०७:५०	४४:१४:३८	द·०८:३१:५९	+१५:१२	०८:४१
१८	४ बु	०५:२९:३७:५४	०७:०९:०४:५३	०६:०९:५४:४७	०५:२९:२५:३१	००:२०:०४:०४	०४:१३:४१:३३	१०:०२:४०:५२	१२:०३:०४:३९	४४:१२:४०	द·०८:५४:४६	+१५:२६	०९:४०
१९	५ गु	०६:००:३७:३९	०७:२२:२६:३४	०६:१०:३५:०८	०६:०१:१०:२८	००:१९:५६:२१	०४:१४:४१:५३	१०:०२:३९:२३	१२:०३:०१:२८	४४:१०:४२	द·०९:१७:२७	+१५:३९	१०:३९
२०	६ शु	०६:०१:३७:२५	०८:०६:०३:१६	०६:११:१५:३२	०६:०२:५५:४०	००:१९:४८:३३	०४:१५:४२:३७	१०:०२:३८:००	१२:०२:५८:१७	४४:०८:४४	द·०९:३९:५९	+१५:५१	११:३९
२१	७ श	०६:०२:३७:१४	०८:१९:५३:४४	०६:११:५५:५८	०६:०४:४१:०३	००:१९:४०:४१	०४:१६:४३:४४	१०:०२:३६:४४	१२:०२:५५:०७	४४:०६:४७	द·१०:०२:२४	+१६:०३	१२:३३
२२	८ र	०६:०३:३७:०५	०९:०३:५५:५८	०६:१२:३६:२६	०६:०६:२६:३३	००:१९:३२:४५	०४:१७:४५:१२	१०:०२:३५:३५	१२:०२:५१:५६	४४:०४:५०	द·१०:२४:३९	+१६:१३	१३:२७
२३	९ चं	०६:०४:३६:५८	०९:१८:०७:२६	०६:१३:१६:५६	०६:०८:१२:०८	००:१९:२४:४५	०४:१८:४७:०३	१०:०२:३४:३२	१२:०२:४८:४५	४४:०२:५४	द·१०:४६:४५	+१६:२४	१४:१२
२४	१० मं	०६:०५:३६:५४	१०:०२:२५:०२	०६:१३:५७:२८	०६:०९:५७:४४	००:१९:१६:४१	०४:१९:४९:१४	१०:०२:३३:३५	१२:०२:४५:३४	४४:००:५८	द·११:०८:४२	+१६:३३	१४:५७
२५	११ बु	०६:०६:३६:५१	१०:१६:४५:२४	०६:१४:३८:०३	०६:११:४३:१७	००:१९:०८:३५	०४:२०:५१:४५	१०:०२:३२:४६	१२:०२:४२:२३	४३:५९:०३	द·११:३०:२९	+१६:४२	१५:३६
२६	१२ गु	०६:०७:३६:५१	११:०१:०४:३२	०६:१५:१८:४०	०६:१३:२८:४२	००:१९:००:२६	०४:२१:५४:३६	१०:०२:३२:०२	१२:०२:३९:१२	४३:५७:०९	द·११:५२:०६	+१६:५०	१६:१४
२७	१४ शु	०६:०८:३६:५३	११:१५:१८:४९	०६:१५:५९:१९	०६:१५:१३:५५	००:१८:५२:१५	०४:२२:५७:४६	१०:०२:३१:२५	१२:०२:३६:०२	४३:५५:१५	द·१२:१३:३२	+१६:५८	१६:५२
२८	१५ श	०६:०९:३६:५७	११:२९:२५:०३	०६:१६:४०:००	०६:१६:५८:५४	००:१८:४४:०२	०४:२४:०१:१४	१०:०२:३०:५५	१२:०२:३२:५१	४३:५३:२२	द·१२:३४:४६	+१७:०४	१७:३०

१८ अक्टूबर सूर्योदयकालीन तिथिः**४**

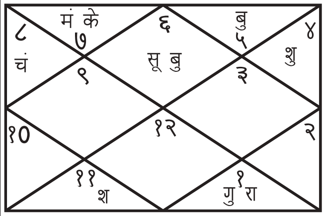

२५ अक्टूबर सूर्योदयकालीन तिथिः**११**

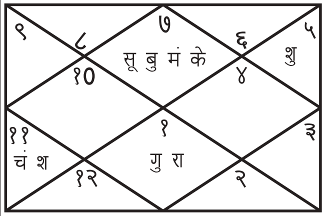

आश्विन शुक्लपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, १५ अक्टूबर से २८ अक्टूबर, २०२३ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःउत्तर । ऋतुः शरद । दक्षिणायनं । सौम्यगोलः तुलार्कतः याम्यगोलः । ति·१५ अयनांशाः२२:५२:५

दिनाङ्क अक्टूबर	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
१५	१ र	**शैलपुत्री दर्शन, दुर्गा सप्तशती पाठारम्भ, महाराजा श्री अग्रसेन जयन्ती।**
१६	२ चं	। ① तुलायांरविः घं·१५:२४, तुलायांबुधः घं·१४:३२।
१७	३ मं	पूर्वफल्गुन्यांशुक्रः घं·२२:०२, मासान्तः।
१८	४ बु	**भद्रा ११:३०–२३:१०घं·**, रथोत्सव चतुर्थी, **पुण्यकालं,११:२४–१७:५२घं·**, ①
१९	५ गु	मासादिः, **गण्डान्तः १४:०१–२५:४६।** ① **मान चतुर्थी** (उड़ीसा), ①
२०	६ शु	आमेर मेला। ② **श्रीअपराजिता पूजा,** मन्वादि, पंचकारंभः २६:३०।
२१	७ श	**भद्रा १८:५८–२९:५४घं·, बिल्वसप्तमी।**
२२	८ र	**महागौरी दर्शन**, स्वात्यांबुधः घं·०९:४५, **अभिजितः ११:३७–२९:३०।**
२३	९ चं	**सिद्धिदात्रीदेवी दर्शन, पाठ हवन पूर्णाहुति महाबलिदान, श्रीसुदर्शनादि सर्वायुध पूजा,**②
२४	१० मं	**भद्रारंभः २३:०७घं·, पंचक,** जगद्गुरु श्रीमाधवाचार्य जयन्ती।
२५	११ बु	**भद्रांतः ९:५५घं·,**स्वात्यांरविः घं·०७:५०।
२६	१२ गु	**पंचक।**
२७	१४ शु	**भद्रारंभः २७:१७घं·, पंचक, गण्डान्तारम्भः २५:५४।**
२८	१५ श	**भद्रांतः १४:२२घं·, श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा, महारास पूर्णिमा, कोजागरी लक्ष्मी पूजा, श्रीवाल्मीकि जयन्ती, कार्तिकस्नान आरम्भ,** मेला श्री सालासर बालाजी, **गण्डान्तः १३:२०, पंचकान्तः ७:३६।**

ति	**श्राद्धकालं** घं·मि·
१	११:४९–१३:२१
१५	११:४७–१३:१६

✻ **खग्रास चन्द्रग्रहण** ✻
२८ अक्टूबर २०२४
सम्पूर्ण जानकारी पृष्ठ १८

❀ आश्विन मास कृत्य ❀

❀ **शारदीय नवरात्रि–** आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से नवमी पर्यन्त्। प्रथम दिन वैधृति एवं चित्रा रहित शुभमुहूर्त में कलशस्थापन करे। ✻ **आश्विन नवरात्र घटस्थापना मुहूर्त्त** – अभिजित् काल ११:४९ – १२:३६ ✻

नवरात्रि में देवी की प्रीति हेतु श्रीसप्तशती पाठ करें व अखण्ड दीप निम्न मन्त्र से प्रज्ज्वलित करें –

अखण्डदीपकं देव्याः प्रीतये नवरात्रिकम्। प्रज्ज्वालयेद् अहोरात्रं एकचित्तं दृढव्रतः।।

❀ **विजयादशमी २०८० निर्णय–** उदये दशमीकिञ्चित् सम्पूर्णैकादशी यदि श्रवणः यदा काले सा तिथिः विजयाऽभिधः।।

अन्यच्च– *इषस्य दशमी शुक्ला पूर्वविद्धा न कारयेत्। श्रवणेनापि संयुक्ता राज्ञां पट्टाभिषेचने।।*

सूर्योदये यदा राजन दृश्यते दशमी तिथिः। आश्विने मासि शुक्ले तु विजयां ता विदुर्बुधा ।।

विजयादशमी अपराह्नकाल व्यापिनी श्रवण नक्षत्र युक्त ग्राह्य है। इस वर्ष २३ अक्टू. सोमवार को १४:४१ पर दशमी लग रही है जो दूसरे दिन मंगलवार को १२:१९ तक रहेगी। २३ अक्टूबर को दशमी अपराह्नयुक्त–श्रवण नक्षत्र युक्त है परन्तु २४ अक्टू. को नहीं है। अतः इस वर्ष २३ अक्टू. सोमवार को दशमी अपराह्नयुक्त व श्रवण युक्त होने से विजयादशमी, आयुधपूजन २३ अक्टू. को परन्तु पूर्वविद्धा तिथि ग्राह्य न होने से राज्याभिषेक आदि २४ अक्टू. को शास्त्रानुसार होगा।

❀ **शमी वृक्ष पूजन–** दशहरा के दिन शमीवृक्ष पूजन से पाप, दुःस्वप्न तथा यात्राकष्ट का निवारण होता है।

❀ **शरद पूर्णिमा** –आज मनुष्यों को आयु देने वाली चन्द्र किरणों का वर्षण होता है। आज की रात में भगवती लक्ष्मी जागने वाले अपने भक्तों को ढूंढती रहती हैं– ***को जागर्ति इति भाषिणी।*** **मेरी** आराधना **में कौन जाग रहा है, उसे मैं धन समृद्धि दूंगी।** यही कोजागरी है। कोजागरी में ऐरावत हाथी पर सवार लक्ष्मी की पूजा करे। शरदपूर्णिमा को **रासोत्सव** करे। नारद पुराण में कहा है– **'हे ब्राह्मण श्रेष्ठ! जो रासलीला महोत्सव करता है उसके मन में जब तक इन्द्र का राज्य है तब तक श्रीकृष्ण भगवान् परम भक्ति देते हैं।'** ''वह पूर्णिमा विद्ध होकर अधिक हो तो पर दिन में करे। चतुर्दशी विद्धा अमावस्या और पूर्णिमा को कभी ग्रहण न करे।'', यह ब्रह्मवैवर्त में कहा है।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

अक्टूबर	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१५	१८:०६	१९:४२	२१:३८	२३:५२	०२:१२	०४:२८	०६:४४	०९:०३	११:२२	१३:२७	१५:११	१६:४१
१६	१८:०२	१९:३८	२१:३४	२३:४८	०२:०८	०४:२४	०६:४०	०८:५९	११:१८	१३:२३	१५:०७	१६:३७
१७	१७:५९	१९:३४	२१:३०	२३:४४	०२:०४	०४:२०	०६:३६	०८:५५	११:१४	१३:१९	१५:०४	१६:३३
१८	१७:५५	१९:३१	२१:२६	२३:४०	०२:००	०४:१६	०६:३२	०८:५१	११:१०	१३:१५	१५:००	१६:२९
१९	१७:५१	१९:२७	२१:२२	२३:३६	०१:५६	०४:१३	०६:२८	०८:४७	११:०६	१३:११	१४:५६	१६:२५
२०	१७:४७	१९:२३	२१:१८	२३:३२	०१:५२	०४:०९	०६:२४	०८:४३	११:०२	१३:०७	१४:५२	१६:२१
२१	१७:४३	१९:१९	२१:१४	२३:२८	०१:४९	०४:०५	०६:२०	०८:३९	१०:५८	१३:०३	१४:४८	१६:१७
२२	१७:३९	१९:१५	२१:१०	२३:२४	०१:४५	०४:०१	०६:१६	०८:३५	१०:५४	१२:५९	१४:४४	१६:१३
२३	१७:३५	१९:११	२१:०६	२३:२०	०१:४१	०३:५७	०६:१२	०८:३१	१०:५०	१२:५५	१४:४०	१६:०९
२४	१७:३१	१९:०७	२१:०२	२३:१७	०१:३७	०३:५३	०६:०८	०८:२७	१०:४६	१२:५१	१४:३६	१६:०५
२५	१७:२७	१९:०३	२०:५८	२३:१३	०१:३३	०३:४९	०६:०४	०८:२३	१०:४२	१२:४७	१४:३२	१६:०१
२६	१७:२३	१८:५९	२०:५४	२३:०९	०१:२९	०३:४५	०६:००	०८:१९	१०:३८	१२:४३	१४:२८	१५:५७
२७	१७:१९	१८:५५	२०:५०	२३:०५	०१:२५	०३:४१	०५:५६	०८:१५	१०:३४	१२:३९	१४:२४	१५:५३
२८	१७:१५	१८:५१	२०:४७	२३:०१	०१:२१	०३:३७	०५:५२	०८:११	१०:३०	१२:३५	१४:२०	१५:४९

अक्टूबर	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
१५	**मृत्यु**·१
१६	**मृत्यु**·२,
१७	**सिद्ध**·३, **रवियोग**ःअनु,
१८	**सर्वार्थ**·अनु, **रवियोग**ःअनु,
१९	**सिद्ध**·५, **रवियोग**ःमू,
२०	**सिद्ध**·६, **रवियोग**ःमू, **मृत्यु**·७,
२१	**त्रिपुष्कर**ः७+उषा,
२२	**सर्वार्थ**·उषा, **सिद्ध**·८, **रवियोग**ःश्र,
२३	**सर्वार्थ**·श्र, **रवियोग**ःश्र, **अमृत**·१०, **रवियोग**ःध,
२४	**मृत्यु**·११, **रवियोग**ःध,
२५	द·ति·१२, **अमृत**·११, **सिद्ध**·१२, **रवियोग**ःश,
२६	द·ति·१२, **अमृत**·१३, **मृत्यु**·१४,
२७	**अमृत**·१४, **सर्वार्थ**·रे, **रवियोग**ःरे,
२८	**मृत्यु**·१५, **रवियोग**ःरे, द·न·रे, **अमृत**·१,

❀ नवार्ण मन्त्र की व्यापकता ❀

मूल– "ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे"

यह सांसारिक सुख और मोक्ष दोनों को देने वाला मन्त्र है। इस मन्त्र का जप किसी भी वर्ण, जाति, धर्म, सम्प्रदाय वाला व्यक्ति कर सकता है। यह गायत्री मन्त्र की तरह अपने भीतर गुप्तरूप से २४ वर्णाक्षरों को समेटे है। ऐ, म्, ह, र, ई, म्, क, ल, ई, म्, च, आ, म, उ, म्, ड, आ, य, ऐ, व, इ, च्, च, ए। सावित्री मन्त्र की तरह इसमें ब्रह्मा, विष्णु, महेश समाहित हैं। यह ब्रह्मस्वरूपिणी महाशक्ति का मन्त्र है, जो सगुणरूप में महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती होती है। ॐ रहित नवार्ण का जप श्रेयस्कर है। इसी से सप्तशती का सम्पुटित पाठ, हवन किया जाता है। यह भगवती महाशक्ति का ब्रह्ममय विग्रह है।

कार्तिक कृष्णपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, २९ अक्टूबर से १३ नवम्बर, २०२३ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– २९:१०:२०२३ वक्री गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः; वक्री शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपश्चिमास्तः; मार्गी बुधःपूर्वास्त;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
अक्टूबर	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	२९ अक्टूबर से १३ नवम्बर
२९	१ र	४३:४४	२४:०६	भरणी	५८:२१	२९:५७	सिद्धि	३८:०९	२१:५२	बाल	१५:२३	कौल	४३:४४	२७:४२	६:३७	१७:४२	मेष	अहोरात्र	कालदंड	११	२९	**त्याग व्रतारम्भः, आकाश दीपदान आरम्भ**
३०	२ चं	४१:१०	२३:०५	कृत्ति·	५७:४४	२९:४३	व्यति·	३३:०४	१९:५१	तैति	१२:१८	गर	४१:१०	२७:३९	६:३७	१७:४१	वृ·१३:०४	११:५१	प्रवर्द्ध	१२	३०	अशून्यशयन व्रत, गुरु रामदास जयन्ती
३१	३ मं	३९:४६	२२:३२	रोहि·	५८:१७	२९:५७	वरी·	२८:५३	१८:११	वणि	१०:१८	विष	३९:४६	२७:३५	६:३८	१७:४०	वृष	अहोरात्र	मातङ्ग	१३	३१	
नवम्बर	४ बु	३९:३७	२२:३०	मृग·	६०:००	अहोरात्र	परिघ	२५:३९	१६:५४	बव	०९:३१	बाल	३९:३७	२७:३१	६:३९	१७:३९	मि·२८:६०	१८:१४	अमृत	१४	नव·	**करवा चौथ, करक संकष्टी चतुर्थी, चन्द्रोदय घं·२०:२६**
२	५ गु	४०:४७	२२:५८	मृग·	००:०२	०६:४०	शिव	२३:२६	१६:०२	कौल	१०:०१	तैति	४०:४७	२७:२८	६:३९	१७:३९	मिथुन	अहोरात्र	मृत्यु	१५	२	व्यतीपात पुण्यम्
३	६ शु	४३:११	२३:५६	आर्द्रा	०३:०४	०७:५३	सिद्ध	२२:११	१५:३२	गर	११:४९	वणि	४३:११	२७:२४	६:४०	१७:३८	क·५१:०८	२७:०७	पद्म	१६	३	**श्रीस्कन्द षष्ठी**
४	७ श	४६:४५	२५:२३	पुन·	०७:१६	०९:३५	साध्य	२१:५०	१५:२५	विष	१४:४९	बव	४६:४५	२७:२१	६:४१	१७:३७	कर्क	अहोरात्र	छत्र	१७	४	
५	८ र	५१:१५	२७:११	पुष्य	१२:३०	११:४१	शुभ	२२:१६	१५:३६	बाल	१८:५३	कौल	५१:१५	२७:१७	६:४१	१७:३६	कर्क	अहोरात्र	श्रीवत्स	१८	५	**श्रीअहोई अष्टमी, श्रीकालाष्टमी,** दाम्पत्य अष्टमी
६	९ चं	५६:२२	२९:१५	आश्ले·	१८:३१	१४:०६	शुक्ल	२३:१७	१६:०१	तैति	२३:४४	गर	५६:२२	२७:१४	६:४२	१७:३६	सिं·१८:३१	१४:०६	सौम्य	१९	६	गुरु हरिराय पुण्यदिवस
७	१० मं	६०:००	अहोरात्र	मघा	२४:५८	१६:४२	ब्रह्म	२४:३७	१६:३४	वणि	२९:०१	विष	६०:००	२७:१०	६:४३	१७:३५	सिंह	अहोरात्र	कालदंड	२०	७	
८	१० बु	०१:४१	०७:२४	पू·फा·	३१:२७	१९:१८	ऐन्द्र	२५:५८	१७:०७	विष	०१:४१	बव	३४:१९	२७:०७	६:४३	१७:३४	कं·४८:०२	२५:५६	प्रवर्द्ध	२१	८	
९	११ गु	०६:४८	०९:२७	उ·फा·	३७:३२	२१:४५	वैधृ·	२७:०२	१७:३३	बाल	०६:४८	कौल	३९:०९	२७:०३	६:४४	१७:३४	कन्या	अहोरात्र	मातङ्ग	२२	९	**श्रीरमा एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त), श्रीगोवत्सद्वादशी**
१०	१२ शु	११:१७	११:१६	हस्त	४२:५२	२३:५४	विष्कु·	२७:३२	१७:४६	तैति	११:१७	गर	४३:१३	२७:००	६:४५	१७:३३	कन्या	अहोरात्र	अमृत	२३	१०	**शनि प्रदोष व्रतम्, धनत्रयोदशी, धनतेरस**
११	१३ श	१४:५१	१२:४२	चित्रा	४७:१०	२५:३८	प्रीति	२७:१७	१७:४०	वणि	१४:५१	विष	४६:१२	२६:५७	६:४६	१७:३३	तु·१५:०८	१२:४९	काण	२४	११	**धन्वन्तरि जयन्ती, नरक चतुर्दशी, रूप चौदस,**
१२	१४ र	१७:१५	१३:४०	स्वाती	५०:१९	२६:५४	आयु·	२६:०७	१७:१३	शकु	१७:१५	चतु	४७:६०	२६:५३	६:४६	१७:३२	तुला	अहोरात्र	लुम्ब	२५	१२	**दीपावली** (प्रदोष–रात्रिव्यापिनी अमावस्या में)
१३	३० चं	१८:२४	१४:०९	विशा·	५२:१३	२७:४०	सौभा·	२३:५९	१७:२३	नाग	१८:२४	किं	४८:३०	२६:५०	६:४७	१७:३१	वृ·३६:५१	२१:३२	मित्र	२६	१३	**सोमवती कार्तिक अमावस्या (देव–पितृकार्य)**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क	तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	वक्री गुरुः	शुक्रः	शनिः (मा/व)	राहुः	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर	चन्द्रोदयः
अक्टूबर	वार	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि			मि:से	
२९	१ र	०६:१०:३७:०३	००:१३:२०:२७	०६:१७:२०:४४	०६:१८:४३:३५	००:१८:३५:४८	०४:२५:०४:६०	१०:०२:३०:३२	१२:०२:२९:४०	४३:५१:३०	द·१२:५५:४९	+१७:१०	१८:१३
३०	२ चं	०६:११:३७:११	००:२७:०२:४८	०६:१८:०१:३०	०६:२०:२७:५५	००:१८:२७:३२	०४:२६:०९:०३	मार्गी ०२:३०:१५	१२:०२:२६:२९	४३:४९:३८	द·१३:१६:४०	+१७:१५	१८:५५
३१	३ मं	०६:१२:३७:२१	०१:१०:३०:३३	०६:१८:४२:१८	०६:२२:११:५२	००:१८:१९:१६	०४:२७:१३:२३	१०:०२:३०:०५	१२:०२:२३:१८	४३:४७:४७	द·१३:३७:१९	+१७:२०	१९:४४
नवम्बर	४ बु	०६:१३:३७:३३	०१:२३:४२:५०	०६:१९:२३:०९	०६:२३:५५:२०	००:१८:१०:६०	०४:२८:१७:६०	१०:०२:३०:०१	१२:०२:२०:०७	४३:४५:५७	द·१३:५७:४५	+१७:२३	२०:३४
२	५ गु	०६:१४:३७:४७	०२:०६:३९:३८	०६:२०:०४:०१	०६:२५:३८:१८	००:१८:०२:४३	०४:२९:२२:५२	१०:०२:३०:०४	१२:०२:१६:५६	४३:४४:०८	द·१४:१७:५७	+१७:२६	२१:२७
३	६ शु	०६:१५:३८:०३	०२:१९:२१:३६	०६:२०:४४:५६	०६:२७:२०:४२	००:१७:५४:२७	०५:००:२८:००	१०:०२:३०:१४	१२:०२:१३:४६	४३:४२:१९	द·१४:३७:५६	+१७:२८	२२:२३
४	७ श	०६:१६:३८:२२	०३:०१:५०:१३	०६:२१:२५:५४	०६:२९:०२:२७	००:१७:४६:१२	०५:०१:३३:२३	१०:०२:३०:३१	१२:०२:१०:३५	४३:४०:३२	द·१४:५७:४१	+१७:२९	२३:१७
५	८ र	०६:१७:३८:४२	०३:१४:०७:३६	०६:२२:०६:५४	०७:००:४३:३१	००:१७:३७:५६	०५:०२:३९:०१	१०:०२:३०:५४	१२:०२:०७:२४	४३:३८:४६	द·१५:१७:११	+१७:२९	२४:१२
६	९ चं	०६:१८:३९:०४	०३:२६:१६:२५	०६:२२:४७:५६	०७:०२:२३:४९	००:१७:२९:३९	०५:०३:४४:५३	१०:०२:३१:२४	१२:०२:०४:१३	४३:३७:००	द·१५:३६:२७	+१७:२८	२५:०६
७	१० मं	०६:१९:३९:२८	०४:०८:१९:५०	०६:२३:२८:६०	०७:०४:०३:१८	००:१७:२१:२३	०५:०४:५०:५८	१०:०२:३२:०१	१२:०२:०१:०२	४३:३५:१६	द·१५:५५:२६	+१७:२६	२५:५९
८	१० बु	०६:२०:३९:५३	०४:२०:२१:२२	०६:२४:१०:०७	०७:०५:४१:५२	००:१७:१३:०७	०५:०५:५७:१७	१०:०२:३२:४४	१२:०१:५७:५१	४३:३३:३३	द·१६:१४:१०	+१७:२४	२६:५१
९	११ गु	०६:२१:४०:२१	०५:०२:२५:००	०६:२४:५१:१६	०७:०७:१९:२७	००:१७:०४:५२	०५:०७:०३:५०	१०:०२:३३:३४	१२:०१:५४:४१	४३:३१:५१	द·१६:३२:३८	+१७:२०	२७:४४
१०	१२ शु	०६:२२:४०:५१	०५:१४:३४:१५	०६:२५:३२:२७	०७:०८:५५:५९	००:१६:५६:३९	०५:०८:१०:३५	१०:०२:३४:३०	१२:०१:५१:३०	४३:३०:१०	द·१६:५०:४९	+१७:१६	२८:३७
११	१३ श	०६:२३:४१:२२	०५:२६:५२:१३	०६:२६:१३:४१	०७:१०:३१:२३	००:१६:४८:२७	०५:०९:१७:३२	१०:०२:३५:३३	१२:०१:४८:१९	४३:२८:३१	द·१७:०८:४३	+१७:११	२९:३१
१२	१४ र	०६:२४:४१:५५	०६:०९:२१:३४	०६:२६:५४:५७	०७:१२:०५:३२	००:१६:४०:१७	०५:१०:२४:४२	१०:०२:३६:४३	१२:०१:४५:०८	४३:२६:५३	द·१७:२६:२०	+१७:०५	३०:२९
१३	३० चं	०६:२५:४२:३०	०६:२२:०४:२३	०६:२७:३६:१६	०७:१३:३८:२२	००:१६:३२:०९	०५:११:३२:०३	१०:०२:३७:५९	१२:०१:४१:५७	४३:२५:१६	द·१७:४३:३८	+१६:५८	०७:२७

१ नवम्बर सूर्योदयकालीन तिथिः४

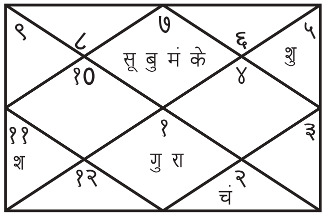

९ नवम्बर सूर्योदयकालीन तिथिः११

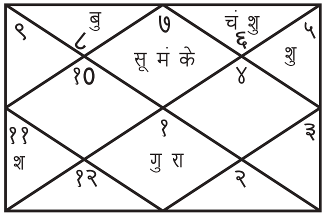

कार्तिक कृष्णपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, २९ अक्टूबर से १३ नवम्बर, २०२३ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःउत्तर । ऋतुः शरद । दक्षिणायनं । याम्यगोलः । ति·३0 अयनांशाः२२:५१:१0

दिनाङ्क / अक्टूबर	तिथि / वार	व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·)
२९	१ र	विशाखायांबुधः घं·२४:२०।
३0	२ चं	मार्गी शनि घं·१०:२४, उत्तरफल्गुन्यांशुक्रः घं·१८:२०।
३१	३ मं	**भद्रा १0:४६–२२:३३घं·।**
नवम्बर	४ बु	श्रीललिता चतुर्थी व्रत, दशरथ चतुर्थी (बंगाल), मार्गी शनिः५०:३५ ①
२	५ गु	कन्यायांशुक्रः घं·२०:२०। ① विशाखायांमङ्गलः घं·२८:२४।
३	६ शु	**भद्रारंभः २३:५७घं·।**
४	७ श	वृश्चिकेबुधः घं·२०:२८, **भद्रांतः १२:३७घं·।**
५	८ र	श्रीराधाकुण्ड स्नान (गोवर्धन), प्रथमाष्टमी (उड़ीसा)।
६	९ चं	**गण्डान्तः ७:२९–२0:४५,** अनुराधायांबुधः घं·२०:२३।
७	१0 मं	**भद्रा १८:२0–३१:२४घं·,** विशाखायांरविः घं·१४:५३।
८	१0 बु	**भद्रांतः ७:२४घं·।**
९	११ गु	वैधृति पुण्यम्।
१0	१२ शु	। **② श्री पद्मप्रभ जयंती**
११	१३ श	**भद्रा १२:४२–२५:१५घं·, श्रीहनुमान जयन्ती** (१४ सायंकाले मेषलग्ने), **यमनिमित्त चौमुखा दीपदान, ②**
१२	१४ र	**सायं दीपदान, लक्ष्मी– गणेश–सरस्वती–इन्द्र–कुबेर पूजा, भगवान् महावीर निर्वाण दिवस।**
१३	३0 चं	बलिराज पूजा, बुध पश्चिमोदित घं·००:३१। **② मास शिवरात्रि व्रतम्,** कामेश्वरी जयन्ती, हस्तेशुक्रःघं·२२:०६।

ति	**श्राद्धकालं** घं·मि·
१	११:४७–१३:१६
३0	११:४८–१३:१४

ॐ ❀❀ ॐ ❀❀ ॐ ❀❀ ॐ

दीपावली लक्ष्मीपूजन मुहूर्त्त
१२ नवम्बर २०२३

ॐ ❀❀ ॐ ❀❀ ॐ ❀❀ ॐ

❀ **प्रदोषकाल** –
१७:३२ – १८:४४

❀ **सर्वश्रेष्ठ स्थिर वृष लग्न** –
१७:५२ – १९:४७

वृष लग्न में सिंह नवांश–
१८:०२ – १८:१३

वृष लग्न में वृष नवांश –
१८:३८ – १८:५०

❀ **रात्रिकालीन सिंह लग्न** –
००:२२ – २६:३४

❀ कार्तिक मास कृत्य ❀

कार्तिक मास श्रीकृष्ण भगवान को अ**त्यधिक प्रिय है।** जो गृहस्थ कार्तिक मास में व्रत नहीं करता है, उसके इष्ट–पूर्तादि सब कर्म नाश हो जाते हैं। संन्यासी हो, विधवा हो, अथवा बालक ही क्यों न हो, ये वैष्णव होने पर कार्तिक में व्रत न करें तो वे नरक को अवश्य जाते हैं। अतः कार्तिक में स्नान दान ध्यान आदि नियमपूर्वक अवश्य करें। **कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी** को श्रीधन्वन्तरि भगवान् का पूजन करें। संध्या समय धर्मराज के निमित्त घृत दीपक प्रज्वलित करें। **कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी** को प्रातःकाल तैलाभ्यंग करके स्नान करें तथा रात्रि को दीप दान करें।

❀ **कार्तिक** अ**मावस्या दीपावली– उबटन प्रयोग–** चतुर्दशी, अमावस्या या प्रतिपदा में से किसी भी दिन प्रातःकाल में स्वाति नक्षत्र हो तो उबटन अवश्य लगावें, इससे शीतकाल तक स्वास्थ्य बना रहता है(ब्रह्मपुराण)। **सफेद रंग की प्रधानता**– पूजनकर्त्ता को श्वेत वस्त्र व सफेदमाला पहननी चाहिए– *सित वस्त्रोपशोभिना*//सफेद चूने(सुधा) से दीवाल को लीपना चाहिए– *सुधाधवलिताकार्या पुष्पमालोपशोभिता* । दीपावली को प्रदोषकाल में भगवती लक्ष्मी, इन्द्र एवं कुबेर की पूजा व दीपोत्सव करें। लक्ष्मीपूजन में प्रदोषकाल मुख्य है और अर्धरात्रिकाल गौण है। **लक्ष्मी प्रार्थना मंत्र– नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये। या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात् त्वदर्चनात्।।** निर्णय सिन्धु के अनुसार पहले लक्ष्मी पूजन करे, बाद में दीप दान करे। *प्रदोषसमये लक्ष्मीं पूजयित्वा ततः क्रमात्। दीप वृक्षाश्च दातव्याः शक्त्या देवगृहेषु च*// चौराहे, नदी, पर्वत, वृक्ष, गृह, गोशाला तथा चबूतरा आदि सभी जगहों पर दीप जलाना चाहिए। कमल और पान के पत्ते की माला भगवती लक्ष्मी को अतिशय प्रिय है। लाजा, गुड़, मिष्ठान्न, मेवा, देवी को चढ़ाएं और प्रसाद खाएं। कार्तिक मास में आकाश दीपदान करने वाले को समस्त दानों का फल मधुसूदन देते हैं।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

अक्टूबर	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
२९	१७:११	१८:४७	२0:४३	२२:५७	0१:१७	0३:३३	0५:४८	0८:0७	१0:२६	१२:३२	१४:१६	१५:४५
३0	१७:0७	१८:४३	२0:३९	२२:५३	0१:१३	0३:२९	0५:४४	0८:0३	१0:२२	१२:२८	१४:१२	१५:४१
३१	१७:0३	१८:३९	२0:३५	२२:४९	0१:0९	0३:२५	0५:४0	0७:५९	१0:१८	१२:२४	१४:0८	१५:३७
नवम्बर	१६:५९	१८:३५	२0:३१	२२:४५	0१:0५	0३:२२	0५:३६	0७:५५	१0:१४	१२:२0	१४:0४	१५:३३
२	१६:५५	१८:३१	२0:२७	२२:४१	0१:0१	0३:१८	0५:३३	0७:५१	१0:१0	१२:१६	१४:00	१५:२९
३	१६:५१	१८:२७	२0:२३	२२:३७	00:५७	0३:१४	0५:२९	0७:४७	१0:0६	१२:१२	१३:५६	१५:२५
४	१६:४७	१८:२३	२0:१९	२२:३३	00:५३	0३:१0	0५:२५	0७:४३	१0:0२	१२:0८	१३:५२	१५:२१
५	१६:४३	१८:१९	२0:१५	२२:२९	00:४९	0३:0६	0५:२१	0७:४0	0९:५८	१२:0४	१३:४८	१५:१७
६	१६:३९	१८:१५	२0:११	२२:२५	00:४५	0३:0२	0५:१७	0७:३६	0९:५४	१२:00	१३:४४	१५:१४
७	१६:३५	१८:११	२0:0७	२२:२१	00:४१	0२:५८	0५:१३	0७:३२	0९:५0	११:५६	१३:४0	१५:१0
८	१६:३२	१८:0७	२0:0३	२२:१७	00:३७	0२:५४	0५:0९	0७:२८	0९:४७	११:५२	१३:३६	१५:0६
९	१६:२८	१८:0४	१९:५९	२२:१३	00:३३	0२:५0	0५:0५	0७:२४	0९:४३	११:४८	१३:३३	१५:0२
१0	१६:२४	१८:00	१९:५५	२२:0९	00:३0	0२:४६	0५:0१	0७:२0	0९:३९	११:४४	१३:२९	१४:५८
११	१६:२0	१७:५६	१९:५१	२२:0५	00:२६	0२:४२	0४:५७	0७:१६	0९:३५	११:४0	१३:२५	१४:५४
१२	१६:१६	१७:५२	१९:४७	२२:0१	00:२२	0२:३८	0४:५३	0७:१२	0९:३१	११:३६	१३:२१	१४:५0
१३	१६:१२	१७:४८	१९:४३	२१:५७	00:१८	0२:३४	0४:४९	0७:0८	0९:२७	११:३२	१३:१७	१४:४६

अक्टू·	सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग
२९	**मृत्यु**·१, **द·न**·भ, **त्रिपुष्करः**२+कृ,
३0	**मृत्यु**·२, **सर्वार्थ**·रो,
३१	**सिद्ध**·३,
नव·	**सर्वार्थ**·मृ
२	**सिद्ध**·५,
३	**सिद्ध**·६, **सर्वार्थ**·पुन, **रवियोग**ःपुन, **मृत्यु**·७,
४	**रवियोग**ःपुन, **त्रिपुष्करः**७+पुन,
५	**सर्वार्थ**·पु, **सिद्ध**·८
६	**अमृत**·१०,
८	**अमृत**·११,
९	**द·ति**·१२, **द·न**·उफा
१0	**द·ति**·१२, **मृत्यु**·१२
११	**सिद्ध**·१४, **सर्वार्थ**·स्वा,
१२	**अमृत**·१५
१३	**अमृत**·१५, **सिद्ध**·१, **सर्वार्थ**·अनु,

❀ **दीपावली का समय–** दीपावली में दीपप्रदीपन और लक्ष्मीपूजा के तीन काल महत्वपूर्ण हैं – प्रदोषकाल, वृष और सिंह लग्न। सूर्यास्त के एक घण्टा बारह मिनट बाद तक प्रदोषकाल श्रेष्ठ होता है। इसके तत्काल बाद वृषलग्न होता है और सिंहलग्न प्रायः ढलती रात में आता है।

❀ **पूजन सामग्री–** धूप, गोघृतदीप, नैवेद्य,ऋतुफल, वस्त्र, रोली, मिष्ठान्न, लाजा, पंचामृत, बिल्व पत्र, कमल, कनेर, जाती, चम्पा, जूही, मालती, पारिजात पुष्प, तुलसी आदि।

❀ **हवन–** दीपावली की रात्रि में आम, बेल, अनार की लकड़ी पर खीर, बेलफल, लाजा,कमलगट्टा, लोंग, इलायची, कमलपुष्प से हवन करने का अमोघ फल होता है। **श्रीसूक्त के मन्त्रों का पाठ–हवन चमत्कारी होता है।** बिल्ववृक्ष के **मूल** में बैठकर जो श्रीसूक्त का जप करता है एक वर्ष के भीतर सुखी, धनाढ्य, प्रभावशाली हो जाता है। **"श्रीम्"** एकाक्षर मन्त्र का जप हवनकर्ता समृद्ध, दानदाता हो जाता है।

कार्तिक शुक्लपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, १४ नवम्बर से २७ नवम्बर, २०२३ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– १४:११:२०२३ वक्री गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः; मार्गी शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपश्चिमास्त; मार्गी बुधःपश्चिमोदितः;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		✠ व्रत–पर्व–उत्सव ✠
नवम्बर	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	१४ नवम्बर से २७ नवम्बर
१४	१ मं	१८:१५	१४:०६	अनु·	५२:५३	२७:५७	शोभ·	२०:५१	१५:०८	बव	१८:१५	बाल	४७:४३	२६:४७	६:४८	१७:३१	वृश्चिक	अहोरात्र	वज्र	२७	१४	**श्री गोवर्धन पूजा, अन्नकूटमहोत्सव**
१५	२ बु	१६:५२	१३:३३	ज्ये·	५२:२३	२७:४६	अतिग·	१६:४५	१३:३१	कौल	१६:५२	तैति	४५:४४	२६:४४	६:४९	१७:३०	ध·५२:२३	२७:४६	ध्वांक्ष	२८	१५	**भ्रातृ द्वितीया, भैया दूज, यम द्वितीया,** चित्रगुप्त पूजा
१६	३ गु	१४:१९	१२:३३	मूल	५०:५०	२७:०९	सुकर्मा	११:४४	११:३१	गर	१४:१९	वणि	४२:४०	२६:४१	६:५०	१७:३०	धनु	अहोरात्र	धूम्र	२९	१६	**वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी,** छठ व्रतारम्भ नहाय खाय (बिहार)
१७	४ शु	१०:४६	११:०९	पू·षा·	४८:२३	२६:१२	धृति शूल	०५:५५ ५३:३१	०९:१२ ३०:३६	विष	१०:४६	बव	३८:४१	२६:३८	६:५०	१७:३०	धनु	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	३०	१७	श्रीसूर्यषष्ठी छठ व्रत द्वितीयदिन (खरना)
१८	५ श	०६:२२	०९:२४	उ·षा·	४५:१३	२४:५६	गण्ड	५२:२२	२७:४८	बाल	०६:२२	कौल	३३:५५	२६:३५	६:५१	१७:२९	म·०२:३९	०७:५५	राक्षस	१	१८	**लाभ पंचमी,** श्रीसूर्यषष्ठी छठ व्रतम् (सायंकालीन अर्घ्यदान)
१९	६ र ७ र	०१:१७ ५४:२७	०७:२३ २९:१०	श्रवण	४१:३१	२३:२८	वृद्धि	४४:५२	२४:४९	तैति	०१:१७	गर	२८:३४	२६:३२	६:५२	१७:२९	मकर	अहोरात्र	गद	२	१९	अरुणोदये द्वितीयअर्घ्यदान, श्रीसूर्यषष्ठी छठ व्रतपारणा
२०	८ चं	४९:५२	२६:४९	धनि·	३७:२७	२१:५२	ध्रुव	३७:०६	२१:४३	विष	२२:४९	बव	४९:५२	२६:२९	६:५३	१७:२८	कु·०९:३०	१०:४१	शुभ	३	२०	**श्रीगोपाष्टमी, दुर्गाष्टमी**
२१	९ मं	४३:५४	२४:२७	शत·	३३:१५	२०:११	व्याघ·	२९:१३	१८:३५	बाल	१६:५२	कौल	४३:५४	२६:२६	६:५३	१७:२८	कुंभ	अहोरात्र	मृत्यु	४	२१	**अक्षय नवमी, श्रीआँवला नवमी,** कूष्माण्ड नवमी
२२	१० बु	३८:०३	२२:०७	पू·भा·	२९:०७	१८:३३	हर्षण	२१:२२	१५:२७	तैति	१०:५६	गर	३८:०३	२६:२३	६:५४	१७:२८	मी·१५:०७	१२:५७	पद्म	५	२२	
२३	११ गु	३२:३१	१९:५६	उ·भा·	२५:१६	१७:०२	वज्र	१३:४४	१२:२५	वणि	०५:१३	विष	३२:३१	२६:२१	६:५५	१७:२८	मीन	अहोरात्र	छत्र	६	२३	**श्री देवप्रबोधिनी एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त)**
२४	१२ शु	२७:३०	१७:५६	रेवती	२१:५४	१५:४१	सिद्धि व्यतीपात	०६:२७ ५३:१५	०९:३१ ३०:४९	बाल	२७:३०	कौल	५५:१५	२६:१८	६:५६	१७:२७	मे·२१:५४	१५:४१	श्रीवत्स	७	२४	**प्रदोष व्रतम्,** चातुर्मास्य व्रत समाप्तिः, **गोवत्सद्वादशी,**
२५	१३ श	२३:१२	१६:१३	अश्वि·	१९:१३	१४:३८	वरी·	५३:३४	२८:२२	तैति	२३:१२	गर	५१:२२	२६:१६	६:५७	१७:२७	मेष	अहोरात्र	सौम्य	८	२५	श्रीकाशी विश्वनाथ प्रतिष्ठादिवस, श्रीराधावल्लभजी पाटोत्सव
२६	१४ र	१९:४५	१४:५१	भरणी	१७:२१	१३:५४	परिघ	४८:११	२६:१४	वणि	१९:४५	विष	४८:२५	२६:१३	६:५७	१७:२७	वृ·३२:०३	१९:४७	कालदंड	९	२६	**श्रीवैकुण्ठचतुर्दशी व्रतम्, पूर्णिमा व्रतम्,** चौमासी चौदस जैन
२७	१५ चं	१७:२०	१३:५४	कृत्ति·	१६:३०	१३:३४	शिव	४३:३९	२४:२६	बव	१७:२०	बाल	४६:३४	२६:११	६:५८	१७:२७	वृष	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	१०	२७	**कार्तिक पूर्णिमा (स्नान–दान), देव दीपावली, भीष्मपंचक समाप्त**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क नवम्बर	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	वक्री गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	राहुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मिःसे	चन्द्रोदयः
१४	१ मं	०६:२६:४३:०७	०७:०५:०२:०३	०६:२८:१७:३७	०७:१५:०९:४७	००:१६:२४:०५	०५:१२:३९:३६	१०:०२:३९:२२	१२:०१:३८:४६	४३:२३:४०	द·१८:००:३९	+१६:५०	०७:२८
१५	२ बु	०६:२७:४३:४५	०७:१८:१५:१४	०६:२८:५९:०१	०७:१६:३९:३९	००:१६:१६:०३	०५:१३:४७:२१	१०:०२:४०:५२	१२:०१:३५:३६	४३:२२:०७	द·१८:१७:२०	+१६:४१	०८:२७
१६	३ गु	०६:२८:४४:२५	०८:०१:४३:५०	०६:२९:४०:२६	०७:१८:०७:५२	००:१६:०८:०६	०५:१४:५५:१६	१०:०२:४२:२८	१२:०१:३२:२५	४३:२०:३४	द·१८:३३:४२	+१६:३२	०९:२७
१७	४ शु	०६:२९:४५:०७	०८:१५:२६:५७	०७:००:२१:५४	०७:१९:३४:१९	००:१६:००:१२	०५:१६:०३:२२	१०:०२:४४:१०	१२:०१:२९:१४	४३:१९:०३	द·१८:४९:४५	+१६:२१	१०:२३
१८	५ श	०७:००:४५:५१	०८:२९:२२:६०	०७:०१:०३:२५	०७:२०:५८:५३	००:१५:५२:२२	०५:१७:११:३८	१०:०२:४५:५९	१२:०१:२६:०३	४३:१७:३४	द·१९:०५:२८	+१६:०९	११:१७
१९	६ र	०७:०१:४६:३६	०९:१३:२९:४२	०७:०१:४४:५७	०७:२२:२१:२५	००:१५:४४:३७	०५:१८:२०:०५	१०:०२:४७:५४	१२:०१:२२:५२	४३:१६:०७	द·१९:२०:५०	+१५:५७	१२:०५
२०	८ चं	०७:०२:४७:२२	०९:२७:४४:१६	०७:०२:२६:३२	०७:२३:४१:४८	००:१५:३६:५७	०५:१९:२८:४१	१०:०२:४९:५६	१२:०१:१९:४१	४३:१४:४१	द·१९:३५:५१	+१५:४४	१२:५०
२१	९ मं	०७:०३:४८:१०	१०:१२:०३:२७	०७:०३:०८:०९	०७:२४:५९:५१	००:१५:२९:२२	०५:२०:३७:२७	१०:०२:५२:०४	१२:०१:१६:३१	४३:१३:१७	द·१९:५०:३१	+१५:३०	१३:३१
२२	१० बु	०७:०४:४८:६०	१०:२६:२३:३८	०७:०३:४९:४९	०७:२६:१५:२४	००:१५:२१:५३	०५:२१:४६:२३	१०:०२:५४:१८	१२:०१:१३:२०	४३:११:५५	द·२०:०४:५०	+१५:१५	१४:१०
२३	११ गु	०७:०५:४९:५१	११:१०:४०:४९	०७:०४:३१:३१	०७:२७:२८:१६	००:१५:१४:३०	०५:२२:५५:२८	१०:०२:५६:३९	१२:०१:१०:०९	४३:१०:३५	द·२०:१८:४६	+१४:५९	१४:४८
२४	१२ शु	०७:०६:५०:४४	११:२४:५१:३९	०७:०५:१३:१५	०७:२८:३८:१७	००:१५:०७:१४	०५:२४:०४:४२	१०:०२:५९:०६	१२:०१:१२:५८	४३:०९:१७	द·२०:३२:२१	+१४:४२	१५:२६
२५	१३ श	०७:०७:५१:३८	००:०८:५३:०६	०७:०५:५५:०२	०७:२९:४५:१३	००:१५:००:०४	०५:२५:१४:०५	१०:०३:०१:३९	१२:०१:०३:४७	४३:०८:००	द·२०:४५:३२	+१४:२५	१६:०७
२६	१४ र	०७:०८:५२:३३	००:२२:४२:३७	०७:०६:३६:५१	०८:००:४८:५१	००:१४:५३:०१	०५:२६:२३:३७	१०:०३:०४:१८	१२:०१:००:३७	४३:०६:४६	द·२०:५८:२०	+१४:०६	१६:५०
२७	१५ चं	०७:०९:५३:३०	०१:०६:१८:१८	०७:०७:१८:४२	०८:०१:४८:५८	००:१४:४६:०५	०५:२७:३३:१६	१०:०३:०७:०३	१२:००:५७:२६	४३:०५:३४	द·२१:१०:४५	+१३:४७	१७:३६

१७ नवम्बर सूर्योदयकालीन तिथिः**४**

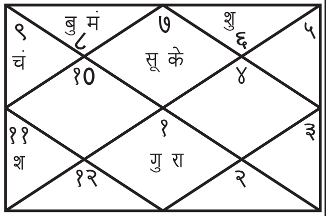

२३ नवम्बर सूर्योदयकालीन तिथिः**११**

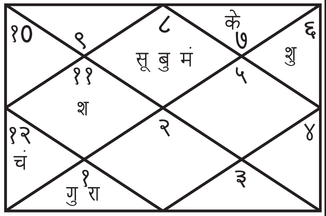

कार्तिक शुक्लपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, १४ नवम्बर से २७ नवम्बर, २०२३ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःउत्तर । ऋतुः शरद वृश्चिककार्कतः ऋतुःहेमन्त । दक्षिणायन। याम्यगोलः । ति·१५ अयनांशाः२२:५२:९

दिनाङ्क नवम्बर	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
१४	१ मं	**जैन नवसंवत् २०५९ आरम्भः**, मार्गपाली।
१५	२ बु	**कलमदान पूजा**, विश्वकर्मा पूजा, यमुना स्नान, **गण्डान्तारम्भः २१:५२, ①**
१६	३ गु	**भद्रारंभः २३:५४घं·**, मासान्तः, **गण्डान्तः ९:४०**, वृश्चिकेमङ्गलः घं·१८:१६।
१७	४ शु	**भद्रांतः ११:०९घं·**, **वृश्चिक संक्रान्ति पुण्यकालं,६:५०–१२:४४घं·**, वृश्चिकेरविः घं·१२:४४।
१८	५ श	सौभाग्यपञ्चमी, पाण्डव पंचमी, ज्ञान पंचमी (जैन), मासादिः, **अभिजितः ३१:०४–४८:५९।**
१९	६ र	**भद्रारंभः २९:१०घं·**, कल्पादि, श्रीकार्तवीर्यसहस्रार्जुन जयन्ती।
२०	८ चं	**पंचकारंभः१०:४१, भद्रांतः१६:०१घं·**, अनुराधायांरविः घं·१९:४७।
२१	९ मं	कृतयुगादि, जगधात्री पूजा (बंगाल), रंगनाथ जयन्ती, **पंचक**, अनुराधायांमङ्गलः घं·१३:५०।
२२	१० बु	**पंचक।** ① ज्येष्ठायांबुधः घं·०७:०३।
२३	११ गु	**भद्रा ९:०१–१९:५६घं·, श्रीतुलसी विवाह, भीष्मपंचक आरम्भ, पंचक, ②**
२४	१२ शु	मन्वादि, हरिवासर, गरुड़ द्वादशी, **पंचकान्तः १५:४२, ③**
२५	१३ श	मूलेधनुषिबुधः घं·१२:३३। ② चित्रायांशुक्रः घं·१५:३५।
२६	१४ र	**भद्रा १४:५२–२६:२०घं·, त्रिपुरोत्सव।** ③ **गण्डान्तः १०:०१–२१:२४।**
२७	१५ चं	**श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा, आद्य श्रीमद्भगवन् निम्बार्काचार्य जयन्ती, श्रीकार्तिकेय जयन्ती, श्री संभवनाथ जयंती,** मन्वादि, कार्तिक स्नान समाप्तिः, गुरु नानक जयन्ती।

ति	**श्राद्धकालं** घं·मि·
१	११:४८–१३:१४
१५	११:५२–१३:१६

❀ कार्तिक मास कृत्य ❀

❀ **यमद्वितीया**– कार्तिक शुक्ल द्वितीया के दिन यमद्वितीया होती है। आज के दिन यमुना जी में स्नान कर यम का पूजन करने से यमलोक का दर्शन नहीं होता है। आज बहन का सत्कार करना चाहिए।

❀ **सूर्यषष्ठी (छठ व्रत)**– षष्ठी तिथि में सायं सूर्यार्घ्य दान तथा सप्तमी तिथि में उदित सूर्य को अर्घ्य दान देकर पारणा की जाती है। यह व्रत त्रिदिनात्मक होता है। बिहार में यह प्रमुख पर्व है।

❀ **कार्तिक शुक्ल नवमी** – धात्री नवमी को आंवला वृक्ष की छाया में बैठकर भोजन करे, आंवला वृक्षारोपण करे। ''पीपल और आंवले को अगल बगल लगावे, बड़े हो जाने पर पीपल से धात्री का विवाह करे। इससे वही पुण्य होता है जो श्री तुलसी शालग्राम विवाह कराने का होता है।''–व्रतराज

❀ **कार्तिक शुक्ल प्रबोधिनी एकादशी**– रात्रि में स्नानादि करके शयन करते हुए भगवान् श्रीहरि का अभिषेक कर, नृत्य–गीत–वाद्य और पुरुषसूक्त व विष्णुस्तोत्रों से भगवान् को जगावे। **उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविंद उत्तिष्ठ गरुडध्वज। उत्तिष्ठ कमलाकान्त त्रैलोक्यं मंगलं कुरु।।** आज श्रीविष्णु एवं तुलसीजी का विवाह सम्पन्न करे।

❀ **भीष्मपंचक (पचभीकम)** – यह व्रत प्रबोधिनी एकादशी से पूर्णिमा तक होता है। गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्यादि से लक्ष्मीनारायण का पूजन करके पाँच दिन तक निराहार, फलाहार, एकभुक्त, या नक्त व्रत करे। पूजन में सामान्य पूजा के सिवा– पहले दिन भगवान् के हृदय का कमल पुष्पों से, दूसरे दिन कटिप्रदेश का बिल्वपत्रों से, तीसरे दिन घुटनों का केतकी (केवड़े) पुष्पों से, चौथे दिन चरणों का चमेली पुष्पों से और पाँचवें दिन सम्पूर्ण अंग का तुलसी की मंजरियों से पूजन करे। नित्यप्रति *'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'* के सौ, हजार या यथाशक्ति जप करे और व्रतान्त में पारणा के समय ब्राह्मणदम्पति को भोजन कराकर स्वयं भोजन करे।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

नवम्बर	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१४	१६:०८	१७:४४	१९:३९	२१:५४	००:१४	०२:३०	०४:४५	०७:०४	०९:२३	११:२८	१३:१३	१४:४२
१५	१६:०४	१७:४०	१९:३५	२१:५०	००:१०	०२:२६	०४:४१	०७:००	०९:१९	११:२४	१३:०९	१४:३८
१६	१६:००	१७:३६	१९:३१	२१:४६	००:०६	०२:२२	०४:३७	०६:५६	०९:१५	११:२०	१३:०५	१४:३४
१७	१५:५६	१७:३२	१९:२७	२१:४२	००:०२	०२:१८	०४:३३	०६:५२	०९:११	११:१६	१३:०१	१४:३०
१८	१५:५२	१७:२८	१९:२३	२१:३८	२३:५८	०२:१४	०४:२९	०६:४८	०९:०७	११:१२	१२:५७	१४:२६
१९	१५:४८	१७:२४	१९:२०	२१:३४	२३:५४	०२:१०	०४:२५	०६:४४	०९:०३	११:०८	१२:५३	१४:२२
२०	१५:४४	१७:२०	१९:१६	२१:३०	२३:५०	०२:०६	०४:२१	०६:४०	०८:५९	११:०४	१२:४९	१४:१८
२१	१५:४०	१७:१६	१९:१२	२१:२६	२३:४६	०२:०३	०४:१८	०६:३६	०८:५५	११:००	१२:४५	१४:१४
२२	१५:३६	१७:१२	१९:०८	२१:२२	२३:४२	०१:५९	०४:१४	०६:३२	०८:५१	१०:५७	१२:४१	१४:१०
२३	१५:३२	१७:०८	१९:०४	२१:१८	२३:३८	०१:५५	०४:१०	०६:२९	०८:४७	१०:५३	१२:३७	१४:०६
२४	१५:२८	१७:०४	१९:००	२१:१४	२३:३४	०१:५१	०४:०६	०६:२५	०८:४३	१०:४९	१२:३३	१४:०२
२५	१५:२४	१७:००	१८:५६	२१:१०	२३:३०	०१:४७	०४:०२	०६:२१	०८:३९	१०:४५	१२:२९	१३:५८
२६	१५:२०	१६:५६	१८:५२	२१:०६	२३:२६	०१:४३	०३:५८	०६:१७	०८:३५	१०:४१	१२:२५	१३:५४
२७	१५:१६	१६:५२	१८:४८	२१:०२	२३:२२	०१:३९	०३:५४	०६:१३	०८:३१	१०:३७	१२:२१	१३:५०

नवम्बर	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
१४	**मृत्यु**·१, **अमृत**·२
१५	**सिद्ध**·२, **मृत्यु**·३, **रवियोग**ःमू,
१६	**अमृत**·३, **रवियोग**ःमू, **मृत्यु**·४,
१७	**अमृत**·४, **रवियोग**ःउषा,
१८	**मृत्यु**·५, **रवियोग**ःउषा, **अमृत**·६, **सर्वार्थ**·श्र,
१९	**मृत्यु**·६, **द्विपुष्करः**७+ध, **सिद्ध**·८,
२१	**रवियोग**ःपूभा,
२२	द·ति·१०, **रवियोग**ःपूभा, **रवियोग**ःउभा, **अमृत**·११
२३	द·ति·१०, **रवियोग**ःउभा, **सर्वार्थ**·रे
२४	**सर्वार्थ**·रे, **मृत्यु**·१२, **सर्वार्थ**·अ,
२५	**रवियोग**ःभ, **सिद्ध**·१४,
२६	**रवियोग**ःभ, द·न·भ, **अमृत**·१५,
२७	**अमृत**·१५, **सर्वार्थ**·रो, **सिद्ध**·१,

जो पाप आदि अपकर्म से तार दे उसे तीर्थ कहते हैं– तारयति पापादिकेभ्यः। जहाँ जाने, दर्शन करने से लौकिक–पारलौकिक दुःखोंसे मुक्ति मिलती हो उसे तीर्थ कहते हैं। गुरु, ऋषि की तप–स्थली, जल–प्रवाह और पवित्र क्षेत्र का सम्मिलन तीर्थ कहलाता है। भक्त, गुरु, माता–पिता, पति–पत्नी यह छह भी तीर्थ हैं। गुरु ज्ञान मूर्ति होने से तीर्थ होते हैं।

तीर्थ भेद– तपस्वी ब्राह्मण चलता फिरता जंगम तीर्थ है। पवित्र भाव मानस तीर्थ हैं। पृथ्वी पर विद्यमान पूज्यस्थल भौम तीर्थ हैं।

तीर्थ यात्रा का फल– भगवान परशुराम जी ने अपने तेज हरण के बाद तीर्थ यात्रा कर पुनः सभी लोकों को प्राप्त कर लिया।

तीर्थ यात्रा तप है पिकनिक नहीं– बिना जूता चप्पल पहने पैदल, उपवास पूर्वक, स्नान करके तीर्थदर्शन से अपूर्व फल की प्राप्ति होती है। तीर्थ में किया पाप वज्रलेप हो जाता है।

मार्गशीर्ष कृष्णपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, २८ नवम्बर से १२ दिसम्बर, २०२३ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– २८:१२:२०२३ वक्री गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः; मार्गी शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपश्चिमास्त; मार्गी बुधःपश्चिमोदितः;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
नवम्बर	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	२८ नवम्बर से १२ दिसम्बर
२८	१ मं	१६:०५	१३:२५	रोहि·	१६:४७	१३:४२	सिद्ध	४०:०५	२३:०१	कौल	१६:०५	तैति	४५:५६	२६:०८	६:५९	१७:२७	मि·४७:२३	२५:५६	मातङ्ग	११	२८	कार्तिकमास व्रत पारणा
२९	२ बु	१६:०६	१३:२६	मृग·	१८:१७	१४:१९	साध्य	३७:२९	२२:०१	गर	१६:०६	वणि	४६:३६	२६:०६	७:००	१७:२७	मिथुन	अहोरात्र	अमृत	१२	२९	
३०	३ गु	१७:२५	१३:५८	आर्द्रा	२१:०२	१५:२६	शुभ	३५:५४	२१:२२	विष	१७:२५	बव	४८:३४	२६:०४	७:०१	१७:२६	मिथुन	अहोरात्र	काण	१३	३०	संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी,चन्द्रोदय घं·१९:५४
दिसम्बर	४ शु	१९:५९	१५:०१	पुन·	२४:६०	१७:०१	शुक्ल	३५:१४	२१:०७	बाल	१९:५९	कौल	५१:४३	२६:०२	७:०१	१७:२६	क·०८:५४	१०:३५	लुम्ब	१४	दिस·	
२	५ श	२३:४२	१६:३१	पुष्य	३०:०१	१९:०३	ब्रह्म	३५:२३	२१:१२	तैति	२३:४२	गर	५५:५६	२६:००	७:०२	१७:२६	कर्क	अहोरात्र	मित्र	१५	२	सुविधानाथ जयन्ती, दीक्षा दिवस (जैन)
३	६ र	२८:२०	१८:२३	आश्ले·	३५:५४	२१:२५	ऐन्द्र	३६:१२	२१:३२	वणि	२८:२०	विष	६०:००	२५:५८	७:०३	१७:२६	सिं·३५:५४	२१:२५	वज्र	१६	३	
४	७ चं	३३:३४	२०:२९	मघा	४२:१८	२३:५९	वैधृ·	३७:२५	२२:०२	विष	००:५३	बव	३३:३४	२५:५६	७:०४	१७:२६	सिंह	अहोरात्र	ध्वांक्ष	१७	४	
५	८ मं	३८:६०	२२:४१	पू·फा·	४८:५०	२६:३७	विष्कु·	३८:४५	२२:३५	बाल	०६:१७	कौल	३८:६०	२५:५४	७:०५	१७:२६	सिंह	अहोरात्र	धूम्र	१८	५	श्रीकालभैरवाष्टमी, श्री कालाष्टमी
६	९ बु	४४:१०	२४:४५	उ·फा·	५५:०३	२९:०७	प्रीति	३९:५४	२३:०३	तैति	११:३८	गर	४४:१०	२५:५३	७:०५	१७:२७	कं·०५:२६	०९:१६	प्रवर्द्ध	१९	६	श्री जम्भेश्वर पुण्य दिवस (विश्नोई)
७	१० गु	४८:४१	२६:३४	हस्त	६०:००	अहोरात्र	आयु·	४०:३४	२३:२०	वणि	१६:३१	विष	४८:४१	२५:५१	७:०६	१७:२७	कन्या	अहोरात्र	राक्षस	२०	७	
८	११ शु	५२:१४	२८:०१	हस्त	००:३५	०७:२१	सौभा·	४०:३३	२३:२०	बव	२०:३५	बाल	५२:१४	२५:४९	७:०७	१७:२७	तु·३३:०१	२०:१९	अमृत	२१	८	श्रीउत्पन्ना एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त)
९	१२ श	५४:३७	२८:५८	चित्रा	०५:१०	०९:१२	शोभ·	३९:४०	२३:०१	कौल	२३:३४	तैति	५४:३७	२५:४८	७:०८	१७:२७	तुला	अहोरात्र	काण	२२	९	श्रीउत्पन्ना एकादशी (निम्बार्क)
१०	१३ र	५५:४४	२९:२६	स्वाती	०८:३६	१०:३५	अतिग·	३७:५०	२२:१६	गर	२५:२०	वणि	५५:४४	२५:४७	७:०८	१७:२७	वृ·५५:२३	२९:१८	लुम्ब	२३	१०	सोम प्रदोष व्रतम्
११	१४ चं	५५:३४	२९:२२	विशा·	१०:४९	११:२९	सुकर्मा	३४:६०	२१:०९	विष	२५:४८	बव	५५:३४	२५:४५	७:०९	१७:२७	वृश्चिक	अहोरात्र	मित्र	२४	११	मासशिवरात्रि व्रतम्
१२	३० मं	५४:०९	२८:४९	अनु·	११:४६	११:५२	धृति	३१:११	१९:३८	चतु	२४:६०	नाग	५४:०९	२५:४४	७:१०	१७:२८	वृश्चिक	अहोरात्र	वज्र	२५	१२	अमावस्या (देव–पितृकार्य)

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क	तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः (मा/व)	वक्री गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर	चन्द्रोदयः
नवम्बर	वार	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि			मि:से	
२८	१ मं	०७:१०:५४:२८	०१:१९:३८:५३	०७:०८:००:३६	०८:०२:४५:२०	००:१४:३९:१७	०५:२८:४३:०५	१०:०३:०९:५५	१२:००:५४:१५	४३:०४:२४	द·२१:२२:४६	+१३:२७	१८:२७
२९	२ बु	०७:११:५५:२८	०२:०२:४३:५४	०७:०८:४२:३२	०८:०३:३७:४१	००:१४:३२:३७	०५:२९:५३:०१	१०:०३:१२:५२	१२:००:५१:०४	४३:०३:१७	द·२१:३४:२३	+१३:०६	१९:१८
३०	३ गु	०७:१२:५६:२९	०२:१५:३३:३८	०७:०९:२४:३१	०८:०४:२५:४५	००:१४:२६:०५	०६:०१:०३:०५	१०:०३:१५:५५	१२:००:४७:५३	४३:०२:११	द·२१:४५:३५	+१२:४५	२०:१४
दिसम्बर	४ शु	०७:१३:५७:३१	०२:२८:०९:०८	०७:१०:०६:३२	०८:०५:०९:१७	००:१४:१९:४२	०६:०२:१३:१७	१०:०३:१९:०४	१२:००:४४:४३	४३:०१:०८	द·२१:५६:२२	+१२:२३	२१:०९
२	५ श	०७:१४:५८:३४	०३:१०:३२:०९	०७:१०:४८:३६	०८:०५:४७:६०	००:१४:१३:२८	०६:०३:२३:३७	१०:०३:२२:२०	१२:००:४१:३२	४३:००:०८	द·२२:०६:४४	+११:००	२२:०४
३	६ र	०७:१५:५९:३८	०३:२२:४५:०६	०७:११:३०:४२	०८:०६:२१:३८	००:१४:०७:२२	०६:०४:३४:०४	१०:०३:२५:४०	१२:००:३८:२१	४२:५९:१०	द·२२:१६:४१	+११:३६	२२:५९
४	७ चं	०७:१७:००:४४	०४:०४:५०:५३	०७:१२:१२:५१	०८:०६:४९:५४	००:१४:०१:२६	०६:०५:४४:३८	१०:०३:२९:०७	१२:००:३५:१०	४२:५८:१४	द·२२:२६:१२	+११:१२	२३:५२
५	८ मं	०७:१८:०१:५१	०४:१६:५२:४७	०७:१२:५५:०२	०८:०७:१२:३३	००:१३:५५:३९	०६:०६:५५:१९	१०:०३:३२:३९	१२:००:३१:५९	४२:५७:२१	द·२२:३५:१६	+१०:४७	२४:४५
६	९ बु	०७:१९:०२:५९	०४:२८:५४:३७	०७:१३:३७:१६	०८:०७:२९:२२	००:१३:५०:०२	०६:०८:०६:०७	१०:०३:३६:१७	१२:००:२८:४९	४२:५६:३०	द·२२:४३:५५	+१०:२१	२५:३७
७	१० गु	०७:२०:०४:०८	०५:११:००:१४	०७:१४:१९:३२	०८:०७:४०:०७	००:१३:४४:३५	०६:०९:१७:०२	१०:०३:४०:०१	१२:००:२५:३८	४२:५५:४२	द·२२:५२:०६	+ ९:५५	२६:३०
८	११ शु	०७:२१:०५:१८	०५:२३:१२:५४	०७:१५:०१:५१	वक्री ०७:४४:३८	००:१३:३९:१८	०६:१०:२८:०४	१०:०३:४३:५०	१२:००:२२:२७	४२:५४:५७	द·२२:५९:५१	+ ९:२८	२७:२४
९	१२ श	०७:२२:०६:२९	०६:०५:३५:३३	०७:१५:४४:१२	०८:०७:४२:५१	००:१३:३४:१२	०६:११:३९:१२	१०:०३:४७:४४	१२:००:१९:१६	४२:५४:१४	द·२३:०७:०८	+ ९:०१	२८:२०
१०	१३ र	०७:२३:०७:४१	०६:१८:१०:३६	०७:१६:२६:३६	०८:०७:३४:४०	००:१३:२९:१६	०६:१२:५०:२७	१०:०३:५१:४४	१२:००:१६:०५	४२:५३:३५	द·२३:१३:५८	+ ८:३३	२९:१८
११	१४ चं	०७:२४:०८:५४	०७:००:५९:४९	०७:१७:०९:०३	०८:०७:२०:११	००:१३:२४:३१	०६:१४:०१:४७	१०:०३:५५:५०	१२:००:१२:५५	४२:५२:५८	द·२३:२०:२१	+ ८:०४	३०:१६
१२	३० मं	०७:२५:१०:०८	०७:१४:०४:१७	०७:१७:५१:३२	०८:०६:५९:३०	००:१३:१९:५७	०६:१५:१३:१४	१०:०४:००:००	१२:००:०९:४४	४२:५२:२४	द·२३:२६:१५	+ ७:३६	०७:१५

१ दिसम्बर सूर्योदयकालीन तिथिः**४**

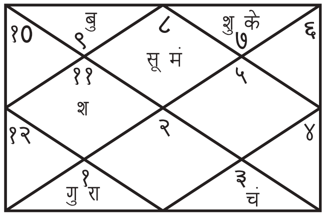

८ दिसम्बर सूर्योदयकालीन तिथिः**११**

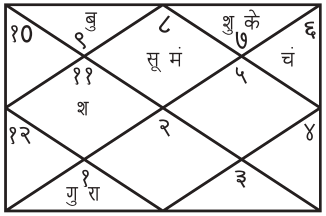

मार्गशीर्ष कृष्णपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, २८ नवम्बर से १२ दिसम्बर, २०२३ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःपूर्व । ऋतुःहेमन्त । दक्षिणायनं । याम्यगोलः । ति·३० अयनांशाः२२:५२:१२

दिनाङ्क नवम्बर	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
२८	१ मं	अशून्य शयन व्रत।
२९	२ बु	**भद्रारंभः २५:३९घं·**, तुलायांशुक्रः घं·०९:३२।
३०	३ गु	**भद्रांतः १३:५९घं·**, सौभाग्य सुन्दरी व्रत।
दिसम्बर	४ शु	।
२	५ श	।
३	६ र	**भद्रा १८:२४–३१:२५घं·, गण्डान्तः १४:४८–२८:०३,** ①
४	७ चं	**भद्रांतः ७:२६घं·**, स्वात्यांशुक्रः घं·२६:०१।
५	८ मं	। ① ज्येष्ठायांरविः घं·२२:५५।
६	९ बु	अनलानवमी (उड़ीसा)।
७	१० गु	**भद्रा १३:४३–२६:३५घं·**, महावीर स्वामी दीक्षा दिवस (जैन)।
८	११ शु	वक्री बुधः घं·१७:४९।
९	१२ श	।
१०	१३ र	**भद्रारंभः २९:२७घं·**, ज्येष्ठायांमङ्गलः घं·१४:५०।
११	१४ चं	**भद्रांतः १७:२९घं·**।
१२	३० मं	**गण्डान्तारम्भः २९:५१**।

ति	**श्राद्धकाल** घं·मि·
१	११:५२–१३:१६
३०	११:५९–१३:२१

✻ मार्गशीर्ष मास कृत्य ✻

इसके नाम से ही सिद्ध होता है कि यह मासों में शीर्ष पर स्थित होने के कारण अग्रणी एवं महत्त्वपूर्ण है। ***तत्रादौ मार्गशीर्षे तु प्रभातस्नानपूर्वकम्। पूजयेद्राधिकाकृष्णौ भक्त्या परमया सुधीः।। (वाराहपुराण)*** मार्गशीर्ष मास में प्रभातकाल में स्नानादिपूर्वक परम अनन्य भक्ति के साथ श्रीराधाकृष्ण की समर्चना करें।

✻ आठ–महाद्वादशी ✻

उन्मीलिनी, वञ्जुलिनी, त्रिस्पर्शा, पक्षवर्धिनी, जया, विजया, जयन्ती और पापनाशिनी ये आठ महाद्वादशियां पुण्यप्रद हैं और सम्पूर्ण पापों को हरण करने वाली हैं। *उन्मीलिनी वञ्जुलिनी त्रिस्पर्शा पक्षवर्द्धिनी। जया च विजया चैव जयन्ती पापनाशिनी।। द्वादश्योऽष्टौ महापुण्याः सर्वपापहरा द्विज।। (ब्रह्मवैवर्त)* इनका योग जानने का क्रम निम्नप्रकार से हैं –

१. जैसे एकादशी पूर्ण हो दूसरे दिन भी कुछ एकादशी हो, तो वह महाद्वादशी **'उन्मीलिनी'** कहलाती है।
२. एकादशी तथा द्वादशी सम्पूर्ण हो और फिर त्रयोदशी को भी कुछ अवशिष्ट हो, तो **'वञ्जुलिनी'** महाद्वादशी होती है।
३. प्रातःकाल एकादशी हो फिर द्वादशी का क्षय होकर रात्रि शेष में त्रयोदशी हो, तो वह महाद्वादशी **'त्रिस्पर्शा** होती है।
४. अमावस्या या पूर्णिमा तिथि यदि दो हो जाय तो वह महाद्वादशी **'पक्षवर्द्धिनी'** नाम से कही जाती है।
५. किसी भी मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी यदि पुनर्वसु नक्षत्र से युक्त हो तो वह **'जया'** नाम महाद्वादशी होती है।
६. किसी भी मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी यदि श्रवण नक्षत्र से युक्त हो तो वह **'विजया'** नाम की महाद्वादशी होती है।
७. किसी भी मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी रोहिणी नक्षत्र से युक्त हो, तो वह **'जयन्ती'** नाम की महाद्वादशी कहलाती है।
८. किसी भी मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी पुष्य नक्षत्र से युक्त हो तो वह **'पापनाशिनी'** महाद्वादशी कहलाती है।

अतः इन आठों महाद्वादशियों में से किसी का भी योग आ जावे तो शुद्धा वेध रहित एकादशी को भी छोड़कर महाद्वादशी में व्रत करना चाहिये।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

नवम्बर	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
२८	१५:१२	१६:४८	१८:४४	२०:५८	२३:१८	०१:३५	०३:५०	०६:०९	०८:२७	१०:३३	१२:१७	१३:४७
२९	१५:०८	१६:४४	१८:४०	२०:५४	२३:१४	०१:३१	०३:४६	०६:०५	०८:२३	१०:२९	१२:१३	१३:४३
३०	१५:०५	१६:४१	१८:३६	२०:५०	२३:११	०१:२७	०३:४२	०६:०१	०८:१९	१०:२५	१२:०९	१३:३९
दिसम्बर	१५:०१	१६:३७	१८:३२	२०:४६	२३:०७	०१:२३	०३:३८	०५:५७	०८:१६	१०:२१	१२:०६	१३:३५
२	१४:५७	१६:३३	१८:२८	२०:४२	२३:०३	०१:१९	०३:३४	०५:५३	०८:१२	१०:१७	१२:०२	१३:३१
३	१४:५३	१६:२९	१८:२४	२०:३९	२२:५९	०१:१५	०३:३०	०५:४९	०८:०८	१०:१३	११:५८	१३:२७
४	१४:४९	१६:२५	१८:२०	२०:३५	२२:५५	०१:११	०३:२६	०५:४५	०८:०४	१०:०९	११:५४	१३:२३
५	१४:४५	१६:२१	१८:१६	२०:३१	२२:५१	०१:०७	०३:२२	०५:४१	०८:००	१०:०५	११:५०	१३:१९
६	१४:४१	१६:१७	१८:१२	२०:२७	२२:४७	०१:०३	०३:१८	०५:३७	०७:५६	१०:०१	११:४६	१३:१५
७	१४:३७	१६:१३	१८:०८	२०:२३	२२:४३	००:५९	०३:१४	०५:३३	०७:५२	०९:५७	११:४२	१३:११
८	१४:३३	१६:०९	१८:०५	२०:१९	२२:३९	००:५६	०३:११	०५:२९	०७:४८	०९:५३	११:३८	१३:०७
९	१४:२९	१६:०५	१८:०१	२०:१५	२२:३५	००:५२	०३:०७	०५:२५	०७:४४	०९:४९	११:३४	१३:०३
१०	१४:२५	१६:०१	१७:५७	२०:११	२२:३१	००:४८	०३:०३	०५:२२	०७:४०	०९:४५	११:३०	१२:५९
११	१४:२१	१५:५७	१७:५३	२०:०७	२२:२७	००:४४	०२:५९	०५:१८	०७:३६	०९:४१	११:२६	१२:५५
१२	१४:१७	१५:५३	१७:४९	२०:०३	२२:२३	००:४०	०२:५५	०५:१४	०७:३२	०९:३८	११:२२	१२:५१

नवम्बर	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
२८	**मृत्यु**·१, **अमृत**·२, **द्विपुष्करः**२+मृ,
२९	**सर्वार्थ**·मृ, **सिद्ध**·२, **मृत्यु**·३,
३०	**अमृत**·३, **मृत्यु**·४, **सर्वार्थ**·पुन,
दिसम्बर	**सर्वार्थ**·पुन, **अमृत**·४
२	**मृत्यु**·५, **अमृत**·६, **रवियोग**ःआश्ले
३	**मृत्यु**·६, **रवियोग**ःआश्ले, **रवियोग**ःम
४	**मृत्यु**·७, **रवियोग**ःम,
५	**सिद्ध**·८,
६	**सर्वार्थ**·ह,
७	**द·ति**·१०, **सिद्ध**·१०
८	**द·ति**·१०, **सिद्ध**·११, **मृत्यु**·१२
९	**द्विपुष्करः**१२+चि, **सर्वार्थ**·स्वा
१०	**सिद्ध**·१३,
११	**सर्वार्थ**·अनु, **अमृत**·१५,
१२	**मृत्यु**·१,

❀ **व्रत के भेद–** व्रत के तीन भेद होते हैं, १· एकभुक्त व्रत, २·नक्तव्रत और ३·अयाचितव्रत।

❀ **एकभुक्त व्रत–** में रात्रि में उपवास कर दूसरे दिन दोपहर बाद पारणा करते हैं– *मध्याह्नव्यापिनी ग्राह्या एकभुक्ते सदा तिथिः।*

❀ **नक्तव्रत–** दिन में उपवास रहकर रात्रि में पारणा करते हैं। इसमें प्रदोष में पारणा की जाती है– *प्रदोष व्यापिनी ग्राह्या तिथिः नक्तव्रते सदा।*

❀ **अयाचित व्रत–** बिना मांगे जो कुछ मिल जाये उसे खाकर रहना, न मिले तो नहीं खाना अयाचित व्रत कहलाता है। दूसरों से प्राप्त व्रत भी अयाचित कहलाता है। इसमें केवल उपवास होता है पूजन गौण होता है।

❀ **व्रत निषेध–** अधिक मास, क्षय मास, गुरु, शुक्र के अस्त होने पर नया व्रत आरम्भ नहीं करते हैं न ही उद्यापन करते हैं।

❀ **व्रत में ग्राह्य–** सावा, नीवार, सिंघाड़ा, तिल, कंद, आलू, केला, नारियल, हरड़, पिपली, आवंला, गन्ना रस हमेशा व्रत में ग्राह्य होता है।

मार्गशीर्ष शुक्लपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, १३ दिसम्बर से २६ दिसम्बर, २०२३ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– १३:१२:२०२३ वक्री गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः; मार्गी शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपश्चिमास्त; वक्री बुधःपश्चिमास्तः;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
दिसम्बर	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	१३ दिसम्बर से २६ दिसम्बर
१३	१ बु	५१:३५	२७:४८	ज्ये·	११:३३	११:४८	शूल	२६:२६	१७:४५	किं	२२:५९	बव	५१:३५	२५:४३	७:१०	१७:२८	ध·११:३३	११:४८	ध्वांक्ष	२६	१३	श्री पुष्पदंत जयंती
१४	२ गु	४८:०१	२६:२४	मूल	१०:१५	११:१७	गण्ड	२०:५१	१५:३२	बाल	१९:५४	कौल	४८:०१	२५:४२	७:११	१७:२८	धनु	अहोरात्र	धूम्र	२७	१४	
१५	३ शु	४३:३७	२४:३९	पू·षा·	०८:०१	१०:२४	वृद्धि	१४:३३	१३:०१	तैति	१५:५४	गर	४३:३७	२५:४१	७:१२	१७:२९	म·२२:२०	१६:०८	प्रवर्द्ध	२८	१५	रम्भा तृतीया
१६	४ श	३८:३३	२२:३८	उ·षा·	०५:०१	०९:१३	ध्रुव	०७:३८	१०:१६	वणि	११:०९	विष	३८:३३	२५:४१	७:१२	१७:२९	मकर	अहोरात्र	सुस्थिर	२९	१६	अंगारकी वैनायकी गणेश चतुर्थी, धनु मलमास प्रारम्भ
१७	५ र	३२:६०	२०:२५	श्रवण धनिष्ठा	०१:२६ ५६:०२	०७:४७ ३०:११	व्याघ· हर्षण	००:१५ ५२:१८	०७:१९ २८:१४	बव	०५:४९	बाल	३२:६०	२५:४०	७:१३	१७:२९	कु·२९:२९	१९:०१	गद	१	१७	विवाह पञ्चमी, श्रीसीताराम विवाहोत्सव
१८	६ चं	२७:१०	१८:०६	शत·	५३:१७	२८:३३	वज्र	४४:४०	२५:०६	कौल	००:०६	तैति	२७:१०	२५:३९	७:१४	१७:३०	कुंभ	अहोरात्र	अमृत	२	१८	श्रीस्कन्दषष्ठी, चम्पा षष्ठी, अन्नपूर्णा व्रतारम्भ
१९	७ मं	२१:१५	१५:४४	पू·भा·	४९:०८	२६:५४	सिद्धि	३६:४७	२१:५७	वणि	२१:१५	विष	४८:२०	२५:३९	७:१४	१७:३०	मी·३५:०९	२१:१८	काण	३	१९	त्रितयसप्तमी, मित्रसप्तमी, विष्णुसप्तमी, नन्दासप्तमी
२०	८ बु	१५:२९	१३:२६	उ·भा·	४५:१४	२५:२०	व्यति·	२९:०३	१८:५२	बव	१५:२९	बाल	४२:४२	२५:३९	७:१५	१७:३१	मीन	अहोरात्र	लुम्ब	४	२०	श्रीदुर्गाष्टमी, बुधाष्टमी
२१	९ गु	१०:०२	११:१६	रेवती	४१:४५	२३:५८	वरी·	२१:३८	१५:५५	कौल	१०:०२	तैति	३७:३०	२५:३८	७:१५	१७:३१	मे·४१:४५	२३:५८	मित्र	५	२१	महानन्दा नवमी, कल्पादि
२२	१० शु	०५:०८	०९:१९	अश्वि·	३८:५५	२२:५०	परिघ	१४:४०	१३:०८	गर	०५:०८	वणि	३२:५६	२५:३८	७:१६	१७:३२	मेष	अहोरात्र	वज्र	६	२२	श्री अरहनाथ जयंती ⑪ श्री त्रिस्पर्शा महाद्वादशी
२३	११ श १२ श	००:५७ ५६:४१	०७:३९ ३०:१९	भरणी	३६:५२	२२:०२	शिव	०८:१७	१०:३६	विष	००:५७	बव	२९:१०	२५:३८	७:१७	१७:३२	वृ·५१:३०	२७:५३	ध्वांक्ष	७	२३	श्रीमोक्षदा एकादशी (वैष्णव,स्मार्त्त) ,श्रीगीताजयन्ती ⑪
२४	१३ र	५५:२२	२९:२६	कृत्ति·	३५:४८	२१:३६	सिद्ध साध्य	०२:३७ ५५:१०	०८:२० ३०:२४	कौल	२६:२२	तैति	५५:२२	२५:३८	७:१७	१७:३३	वृष	अहोरात्र	धूम्र	८	२४	सोम प्रदोष व्रतम्,
२५	१४ चं	५४:१७	२९:०१	रोहि·	३५:५०	२१:३७	शुभ	५३:५३	२८:५१	गर	२४:४१	वणि	५४:१७	२५:३८	७:१८	१७:३३	वृष	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	९	२५	त्रिपुरभैरव जयन्ती, संभवनाथ जयन्ती
२६	१५ मं	५४:२८	२९:०५	मृग·	३७:०४	२२:०८	शुक्ल	५०:५७	२७:४१	विष	२४:१३	बव	५४:२८	२५:३९	७:१८	१७:३४	मि·०६:१८	०९:४९	राक्षस	१०	२६	पूर्णिमा (व्रत–स्नान–दान) , श्री दत्तात्रेय जयन्ती

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क दिसम्बर	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	वक्री बुधः रा अं क वि	वक्री गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	राहुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
१३	१ बु	०७:२६:११:२३	०७:२७:२४:१८	०७:१८:३४:०४	०८:०६:३२:५४	००:१३:१५:३४	०६:१६:२४:४७	१०:०४:०४:१६	१२:००:१२:३३	४२:५१:५२	द·२३:३१:४२	+ ७:०६	०७:१६
१४	२ गु	०७:२७:१२:३८	०८:१०:५९:२३	०७:१९:१६:३८	०८:०६:००:४५	००:१३:११:२२	०६:१७:३६:२६	१०:०४:०८:३७	१२:००:०३:२२	४२:५१:२४	द·२३:३६:४०	+ ६:३७	०८:१४
१५	३ शु	०७:२८:१३:५५	०८:२४:४८:२२	०७:१९:५९:१५	०८:०५:२३:३४	००:१३:०७:२२	०६:१८:४८:१०	१०:०४:१३:०३	१२:००:००:१२	४२:५०:५८	द·२३:४१:१०	+ ६:०७	०९:०८
१६	४ श	०७:२९:१५:१२	०९:०८:४९:१७	०७:२०:४१:५५	०८:०४:४१:६०	००:१३:०३:३४	०६:२०:००:००	१०:०४:१७:३४	११:२९:५७:०१	४२:५०:३६	द·२३:४५:११	+ ५:३६	०९:५९
१७	५ र	०८:००:१६:३०	०९:२२:५९:४०	०७:२१:२४:३८	०८:०३:५६:४८	००:१२:५९:५७	०६:२१:११:५६	१०:०४:२२:१०	११:२९:५३:५०	४२:५०:१६	द·२३:४८:४४	+ ५:०६	१०:४४
१८	६ चं	०८:०१:१७:४९	१०:०७:१६:२८	०७:२२:०७:२३	०८:०३:०८:५१	००:१२:५६:३२	०६:२२:२३:५७	१०:०४:२६:५१	११:२९:५०:३९	४२:४९:५९	द·२३:५१:४७	+ ४:३५	११:२८
१९	७ मं	०८:०२:१९:०९	१०:२१:३६:२०	०७:२२:५०:११	०८:०२:१९:०७	००:१२:५३:१९	०६:२३:३६:०३	१०:०४:३१:३७	११:२९:४७:२९	४२:४९:४६	द·२३:५४:२२	+ ४:०४	१२:०६
२०	८ बु	०८:०३:२०:२९	११:०५:५५:१९	०७:२३:३३:०१	०८:०१:२८:३७	००:१२:५०:१९	०६:२४:४८:१५	१०:०४:३६:२७	११:२९:४४:१८	४२:४९:३५	द·२३:५६:२८	+ ३:३२	१२:४५
२१	९ गु	०८:०४:२१:५०	११:२०:०९:४५	०७:२४:१५:५५	०८:००:३८:३७	००:१२:४७:३०	०६:२६:००:३१	१०:०४:४१:२२	११:२९:४१:०७	४२:४९:२८	द·२३:५८:०५	+ ३:०१	१४:०१
२२	१० शु	०८:०५:२३:१२	००:०४:१६:२५	०७:२४:५८:५१	०७:२९:५०:१२	००:१२:४४:५४	०६:२७:१२:५३	१०:०४:४६:२२	११:२९:३७:५६	४२:४९:२३	द·२३:५९:१२	+ २:२९	१४:०१
२३	११ श	०८:०६:२४:३४	००:१८:१२:२९	०७:२५:४१:५०	०७:२९:०४:१९	००:१२:४२:३०	०६:२८:२५:१९	१०:०४:५१:२६	११:२९:३४:४६	४२:४९:२२	द·२३:५९:५०	+ १:५८	१४:४४
२४	१३ र	०८:०७:२५:५७	०१:०१:५५:४१	०७:२६:२४:५२	०७:२८:२१:५२	००:१२:४०:१९	०६:२९:३७:५०	१०:०४:५६:३५	११:२९:३१:३५	४२:४९:२३	द·२३:५९:५९	+ १:२६	१५:२७
२५	१४ चं	०८:०८:२७:२०	०१:१५:२४:२४	०७:२७:०७:५६	०७:२७:४३:३९	००:१२:३८:२०	०७:००:५०:२६	१०:०५:०१:४९	११:२९:२८:२४	४२:४९:२८	द·२३:५९:३९	+ ०:५४	१६:१९
२६	१५ मं	०८:०९:२८:४४	०१:२८:३७:४३	०७:२७:५१:०३	०७:२७:१०:१९	००:१२:३६:३४	०७:०२:०३:०६	१०:०५:०७:०६	११:२९:२५:१३	४२:४९:३५	द·२३:५८:५०	+ ०:२२	१७:१०

१६ दिसम्बर सूर्योदयकालीन तिथि:४

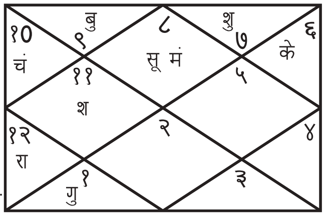

२३ दिसम्बर सूर्योदयकालीन तिथि:११

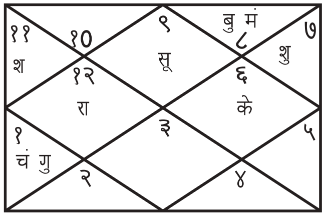

मार्गशीर्ष शुक्लपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, १३ दिसम्बर से २६ दिसम्बर, २०२३ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःपूर्व । ऋतुःहेमन्त । दक्षिणायनं । याम्यगोलः । ति·१५ अयनांशाः२२:५२:१४

दिनाङ्क दिसम्बर	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
१३	१ बु	भैरव षट्रात्र उत्सव आरम्भ (महाराष्ट्र), गण्डान्तः १७:४३।
१४	२ गु	।
१५	३ शु	**अभिजितारम्भः ५०:५०**, विशाखायांशुक्रः घं·०७:२१, कन्यायांकेतु मीने राहुश्च घं·०८:४०।
१६	४ श	**भद्रा ११:४१–२२:३८घं·**, मासान्तः, गुरुतेगबहादुर पु·दि·, **अभिजितान्तः८:४७**, ①
१७	५ र	**पंचकारंभः १९:०१, पुण्यकालं,७:१२–१३:२६घं**, श्रीबिहारीजी प्राकट्योत्सव।
१८	६ चं	**पंचक**, मासादिः, बुध पश्चिमास्त घं·०६:१८। ① संक्रान्ति, मूलेधनुषिरविः घं·२४:४६।
१९	७ मं	**पंचक, भद्रा १५:४५–२६:३५घं·**, श्रीमार्तण्ड भैरवोत्थापन (महाराष्ट्र), मित्र सप्तमी।
२०	८ बु	**पंचक।**
२१	९ गु	**पंचकान्तः २३:५८, गण्डान्तः १८:१८–२९:४०**, ज्येष्ठायां वृश्चिकेबुधः घं·२६:२७।
२२	१० शु	**भद्रारंभः २०:२७घं·।**
२३	११ श	**व्यञ्जन द्वादशी, श्रीदेवर्षि नारद जयन्ती, मत्स्यद्वादशी, भद्रांतः७:४०घं·**, ②
२४	१३ र	वृश्चिकेशुक्रःघं·१४:४६। ② **श्री मल्लिनाथ जयंती**,अखण्डद्वादशी,व्यतीपात पुण्यं।
२५	१४ चं	**भद्रारंभः २९:०१घं·**, महामना मालवीय जयन्ती, अटलबिहारी जयन्ती।
२६	१५ मं	**मार्गशीर्ष श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा**, श्री त्रिपुरभैरवी जयन्ती, **भद्रांतः १६:६०घं·।**

ति	**श्राद्धकालं** घं·मि·
१	११:५९–१३:२१
१५	१२:०६–१३:२८

❀ वारों में करणीय अनुकूल कार्य ❀

❀ **रविवार** को राज्याभिषेक, उत्सव, वाहन क्रय-विक्रय, सेवा नौकरी, गो, अग्नि, मन्त्र से सम्बन्धित कर्म, औषध, शास्त्र, स्वर्ण, ताँबा, ऊन, चमड़ा, काष्ठ, युद्ध और व्यापारादि से सम्बन्धित कार्य करना चाहिए। चित्रकला, धातुकला, आभूषण निर्माण, बाजार सम्बन्धी कार्य भी रविवार को होता है।

❀ **सोमवार** को शंख, कमल, मोती, चाँदी, ईख, भोजन सम्बन्धी कार्य, स्त्री, वृक्ष, कृषि-कर्म, जल, आभूषण, गीत, यज्ञ, दुग्ध, पुष्प, विद्यारम्भ, वास्तुकर्म, नृत्यारम्भ आदि कार्य करना चाहिए।

❀ **मंगलवार** को भेद नीति, झूठ, चोरी, आरोप, जहर, अग्नि, शस्त्र, बंधन, अभिघात, युद्ध, कपट, दंभ, सैन्यकर्म, खनिज कर्म, स्वर्ण, धातु, मूँगा, रक्त एवं लाल वस्तु से सम्बन्धित कार्य किया जाता है।

❀ **बुधवार** को विद्या, चातुर्य, पुण्य, कल्प, शिल्पविद्या, नौकरी, लेखन लिपि, धातुकर्म, स्वर्ण, युक्ति, मित्रता, व्यायाम, वाद विवाद, गणितविद्या, वेदाध्ययन, नैपुण्य कर्म आदि से सम्बन्धित कार्य करना चाहिए।

❀ **गुरूवार** को धार्मिक, पौष्टिक, यंत्र, विद्या, मांगल्य सुवर्ण, वस्त्र, घर, यात्रा, रथ, घोड़ा, औषध, आभूषण, उद्यान सम्बन्धित व शुभकार्य करना चाहिए।

❀ **शुक्रवार** को स्त्री, संगीत, शय्या, मणि, रत्न, गंध, वस्त्र, उत्सव, अलंकार, भूमि, व्यापार, गौ, द्रव्य, कोष, कृषि, हीरा, मोती, चाँदी, सुगन्ध, उद्यान, पुष्प, रचनात्मक, अश्वकर्म आदि अनेक शुभ कार्य किये जाते हैं।

❀ **शनिवार** को लोहा, पत्थर, जस्ता, शीशा, पीतल, नौकर, शस्त्र, झूठ, पाप, चोरी, विष, निंद्यकर्म, शराब, निर्माणादि, वाहन क्रय, गृहप्रवेश, दीक्षा, स्थिर कर्म, गदहा, ऊँट, तुलादान, शनि सम्बन्धित कार्य किया जाता है।

❀ धनु मलमास ❀

बृहस्पति ग्रह की धनु एवं मीन राशि में सूर्य के प्रवेश करते ही खरमास दोष लगता है। अतः समस्त शुभकर्म वर्जित हो जाते हैं। १६ दिसम्बर २०२३, **रात्रि** २४.४६ बजे से, १५ जनवरी २०२४ दिन ८.४१ बजे तक धनु संक्रान्ति जनित खरमास/मलमास दोष रहेगा।

❀ मासों में करणीय दान ❀

(विष्णुधर्मोत्तरे)

चैत्र – चित्र व वस्त्रदान से सौभाग्य प्राप्ति
वैशाख – पूआदान से स्वर्ग प्राप्ति
ज्येष्ठ – छत्रदान से कामनापूर्ति
आषाढ़–चन्दन, कर्पूर से महाफल प्राप्ति
श्रावण– वस्त्रदान से कीर्ति महाफल प्राप्ति
भाद्रपद – गुड़ दान से कफ/रोगमुक्ति
आश्विन – घृतदान से रूपवान हो
कार्तिक – दीपदान से उज्वलता प्राप्ति
मार्गशीर्ष – लवणदान से सौभाग्य प्राप्ति
पौष – स्वर्णदान से परापुष्टि प्राप्ति
माघ – तिलदान से यमलोक न जाना पड़े
फाल्गुन– प्रियंगुदान से भूतल पर प्रिय हो

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

दिसम्बर	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१३	१४:१३	१५:४९	१७:४५	१९:५९	२२:१९	००:३६	०२:५१	०५:१०	०७:२८	०९:३४	११:१८	१२:४७
१४	१४:०९	१५:४५	१७:४१	१९:५५	२२:१५	००:३२	०२:४७	०५:०६	०७:२४	०९:३०	११:१४	१२:४३
१५	१४:०५	१५:४१	१७:३७	१९:५१	२२:११	००:२८	०२:४३	०५:०२	०७:२०	०९:२६	११:१०	१२:३९
१६	१४:०१	१५:३७	१७:३३	१९:४७	२२:०७	००:२४	०२:३९	०४:५८	०७:१६	०९:२२	११:०६	१२:३५
१७	१३:५७	१५:३३	१७:२९	१९:४३	२२:०४	००:२०	०२:३५	०४:५४	०७:१२	०९:१८	११:०२	१२:३२
१८	१३:५४	१५:३०	१७:२५	१९:३९	२२:००	००:१६	०२:३१	०४:५०	०७:०८	०९:१४	१०:५८	१२:२८
१९	१३:५०	१५:२६	१७:२१	१९:३५	२१:५६	००:१२	०२:२७	०४:४६	०७:०४	०९:१०	१०:५५	१२:२४
२०	१३:४६	१५:२२	१७:१७	१९:३१	२१:५२	००:०८	०२:२३	०४:४२	०७:०१	०९:०६	१०:५१	१२:२०
२१	१३:४२	१५:१८	१७:१३	१९:२८	२१:४८	००:०४	०२:१९	०४:३८	०६:५७	०९:०२	१०:४७	१२:१६
२२	१३:३८	१५:१४	१७:०९	१९:२४	२१:४४	००:००	०२:१५	०४:३४	०६:५३	०८:५८	१०:४३	१२:१२
२३	१३:३४	१५:१०	१७:०५	१९:२०	२१:४०	२३:५६	०२:११	०४:३०	०६:४९	०८:५४	१०:३९	१२:०८
२४	१३:३०	१५:०६	१७:०१	१९:१६	२१:३६	२३:५२	०२:०७	०४:२६	०६:४५	०८:५०	१०:३५	१२:०४
२५	१३:२६	१५:०२	१६:५८	१९:१२	२१:३२	२३:४९	०२:०४	०४:२२	०६:४१	०८:४६	१०:३१	१२:००
२६	१३:२२	१४:५८	१६:५४	१९:०८	२१:२८	२३:४५	०२:००	०४:१८	०६:३७	०८:४२	१०:२७	११:५६

दिसम्बर	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, अमृत, रवि आदि योग 卐
१३	**अमृत**·१, **सिद्ध**·२
१४	**अमृत**·३
१५	**रवियोग**ःउषा, **अमृत**·४,
१६	**सिद्ध**·४, **रवियोग**ःउषा, **सर्वार्थ**·श्र, **मृत्यु**·५, **रवियोग**ःश्र
१७	**अमृत**·५, **रवियोग**ःश्र, **मृत्यु**·६, **रवियोग**ःश,
१८	**सिद्ध**·६, **रवियोग**ःश, **मृत्यु**·७,
१९	**अमृत**·७, **त्रिपुष्कर**ः७+पूभा, **सिद्ध**·८, **सर्वार्थ**·उभा,
२०	**मृत्यु**·८, **रवियोग**ःरे
२१	**सर्वार्थ**·रे, **मृत्यु**·९, **रवियोग**ःरे, **सिद्ध**·१०, **सर्वार्थ**·अ, **रवियोग**ःअ,
२२	**सर्वार्थ**·अ, **रवियोग**ःअ, **सिद्ध**·११,
२३	**अमृत**·११, **त्रिपुष्कर**ः१२+कृ,
२४	**सिद्ध**·१३, **रवियोग**ःरो,
२५	**सर्वार्थ**·रो, **रवियोग**ःरो, **सर्वार्थ**·मृ, **अमृत**·१५,
२६	**मृत्यु**·१,

श्रीकृष्ण ने गीताजी में कहा है कि "मासानां *मार्गशीर्षोऽहं*" अतः यह माह अत्यंत पवित्र है। मार्गशीर्ष में यत्नपूर्वक तुलसी के पवित्र वन में जाकर परम भक्ति से भगवान् श्रीविष्णु की पूजा करें। **श्रीमोक्षदा एकादशी** व्रत एवं **श्रीगीता जयन्ती** मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी के दिन कुरुक्षेत्र में भगवान् ने अर्जुन को युद्धकाल में मोह होने पर श्रीगीताजी का उपदेश किया। मार्गशीर्ष शुक्ल द्वादशी **श्रीव्यंजन द्वादशी** कहलाती है, विभिन्न व्यञ्जनों का श्रीठाकुर जी को भोग लगावें। इसी दिन कल्पभेद से **श्रीनारद जयन्ती** होती है, भक्ति–ज्ञान–वैराग्य आदि समस्त साधनों का समस्त लोकों में घूम–घूमकर प्रचार–प्रसार करने वाले कीर्तनकला विशेषज्ञ देवर्षिवर्य श्रीनारद जी सभी जीवों पर समान भाव रखते हुए सबका हितचिन्तन किया करते हैं।

पौष कृष्णपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, २७ दिसम्बर से ११ जनवरी, २०२३–२०२४ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– २७:१२:२०२३ वक्री गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः; मार्गी शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपश्चिमास्त; वक्री बुधःपश्चिमोदितः;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
दिसम्बर	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	२७ दिसम्बर से ११ जनवरी
२७	१ बु	५५:५७	२९:४१	आर्द्रा	३९:३३	२३:०८	ब्रह्म	४९:००	२६:५५	बाल	२५:०३	कौल	५५:५७	२५:३९	७:१९	१७:३४	मिथुन	अहोरात्र	मुसल	११	२७	श्रीरसिकमाधुरी जयन्ती
२८	२ गु	५८:४१	३०:४७	पुन·	४३:१५	२४:३७	ऐन्द्र	४८:०२	२६:३२	तैति	२७:१०	गर	५८:४१	२५:३९	७:१९	१७:३५	क·२७:१३	१८:१२	सिद्धि	१२	२८	मानवाधिकार दिवस
२९	३ शु	६०:००	अहोरात्र	पुष्य	४८:०५	२६:३३	वैधृ·	४७:५५	२६:२९	वणि	३०:२९	विष	६०:००	२५:४०	७:१९	१७:३६	कर्क	अहोरात्र	उत्पात	१३	२९	
३०	३ श	०२:३३	०८:२१	आश्ले·	५३:४९	२८:५१	विष्कु·	४८:३१	२६:४४	विष	०२:३३	बव	३४:५१	२५:४१	७:२०	१७:३६	सिं·५३:४९	२८:५१	मानस	१४	३०	**संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी, चन्द्रोदय घं·२०:२३**
३१	४ र	०७:१९	१०:१६	मघा	६०:००	अहोरात्र	प्रीति	४९:३८	२७:११	बाल	०७:१९	कौल	३९:५६	२५:४१	७:२०	१७:३७	सिंह	अहोरात्र	मुद्गर	१५	३१	
जनवरी	५ चं	१२:३८	१२:२४	मघा	००:०९	०७:२४	आयु·	५०:५८	२७:४४	तैति	१२:३८	गर	४५:२३	२५:४२	७:२१	१७:३८	सिंह	अहोरात्र	ध्वांक्ष	१६	जनवरी	वैधृति पुण्यम्, **ईस्वी २०२४ आरम्भ**
२	६ मं	१८:०७	१४:३६	पू·फा·	०६:४३	१०:०२	सौभा·	५२:१२	२८:१४	वणि	१८:०७	विष	५०:४६	२५:४३	७:२१	१७:३८	कं·२३:२०	१६:४१	धूम्र	१७	२	
३	७ बु	२३:१८	१६:४०	उ·फा·	१३:०४	१२:३५	शोभ·	५३:०४	२८:३५	बव	२३:१८	बाल	५५:३८	२५:४४	७:२१	१७:३९	कन्या	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	१८	३	
४	८ गु	२७:४७	१८:२८	हस्त	१८:४९	१४:५३	अतिग·	५३:१८	२८:४१	कौल	२७:४७	तैति	५९:४०	२५:४५	७:२१	१७:४०	तु·५१:२२	२७:५४	राक्षस	१९	४	**श्रीकालाष्टमी**, मार्गी गुरु घं·१६:४५,
५	९ शु	३१:१७	१९:५२	चित्रा	२३:४०	१६:४९	सुकर्मा	५२:४३	२८:२७	गर	३१:१७	वणि	६०:००	२५:४७	७:२२	१७:४१	तुला	अहोरात्र	मुसल	२०	५	अन्वष्टका श्राद्ध
६	१० श	३३:३६	२०:४८	स्वाती	२७:२३	१८:१९	धृति	५१:१४	२७:५२	वणि	०२:३६	विष	३३:३६	२५:४८	७:२२	१७:४१	तुला	अहोरात्र	सिद्धि	२१	६	
७	११ र	३४:३८	२१:१३	विशा·	२९:५५	१९:२०	शूल	४८:४५	२६:५२	बव	०४:१७	बाल	३४:३८	२५:४९	७:२२	१७:४२	वृ·१४:२४	१३:०८	उत्पात	२२	७	**श्रीसफला एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त)**, मन्वादि
८	१२ चं	३४:२३	२१:०७	अनु·	३१:११	१९:५०	गण्ड	४५:१७	२५:२९	कौल	०४:४१	तैति	३४:२३	२५:५१	७:२२	१७:४३	वृश्चिक	अहोरात्र	मानस	२३	८	सुरूपा द्वादशी (गुजरात)
९	१३ मं	३२:५३	२०:३२	ज्ये·	३१:१५	१९:५२	वृद्धि	४०:५२	२३:४३	गर	०३:४८	वणि	३२:५३	२५:५३	७:२२	१७:४४	ध·३१:१५	१९:५२	मुद्गर	२४	९	**प्रदोष व्रतम्, मासशिवरात्रि व्रतम्**
१०	१४ बु	३०:१५	१९:२९	मूल	३०:१२	१९:२७	ध्रुव	३५:३५	२१:३६	विष	०१:४३	बव	३०:१५	२५:५४	७:२३	१७:४४	धनु	अहोरात्र	ध्वज	२५	१०	
११	३० गु	२६:३९	१८:०२	पू·षा·	२८:११	१८:३९	व्याघ·	२९:३१	१९:११	नाग	२६:३९	किं	५४:३०	२५:५६	७:२३	१७:४५	म·४२:३३	२४:२४	धाता	२६	११	**अमावस्या (देव–पितृकार्य)**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क	तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः (मा/व)	गुरुः (मा/व)	शुक्रः	शनिः	राहुः	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर	चन्द्रोदयः
दिसम्बर	वार	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि			मि:से	
२७	१ बु	०८:१०:३०:०८	०२:११:३५:३०	०७:२८:३४:१३	०७:२६:४२:२५	००:१२:३४:६०	०७:०३:१५:५१	१०:०५:१२:२८	११:२९:२२:०३	४२:४९:४६	द·२३:५७:३१	– ०:०९	१८:०५
२८	२ गु	०८:११:३१:३२	०२:२४:१८:२४	०७:२९:१७:२६	०७:२६:२०:२२	००:१२:३३:३९	०७:०४:२८:४०	१०:०५:१७:५४	११:२९:१८:५२	४२:५०:००	द·२३:५५:४३	– ०:४१	१९:०१
२९	३ शु	०८:१२:३२:५७	०३:०६:४७:४७	०८:००:००:४२	०७:२६:०४:२६	००:१२:३२:३१	०७:०५:४१:३४	१०:०५:२३:२४	११:२९:१५:४१	४२:५०:१६	द·२३:५३:२५	– १:१३	१९:५६
३०	३ श	०८:१३:३४:२२	०३:१९:०५:४१	०८:००:४४:०१	मार्गी २५:५४:४८	००:१२:३१:३५	०७:०६:५४:३२	१०:०५:२८:५९	११:२९:१२:३०	४२:५०:३६	द·२३:५०:३९	– १:४४	२०:५२
३१	४ र	०८:१४:३५:४७	०४:०१:१४:४६	०८:०१:२७:२२	०७:२५:५१:३३	००:१२:३०:५२	०७:०८:०७:३३	१०:०५:३४:३७	११:२९:०९:२०	४२:५०:५९	द·२३:४७:२४	– २:१५	२१:४६
जनवरी	५ चं	०८:१५:३७:१२	०४:१३:१८:०७	०८:०२:१०:४७	०७:२५:५४:३८	००:१२:३०:२२	०७:०९:२०:३९	१०:०५:४०:१९	११:२९:०६:०९	४२:५१:२५	द·२३:४३:३९	– २:४६	२२:३८
२	६ मं	०८:१६:३८:३७	०४:२५:१९:१३	०८:०२:५४:१४	०७:२६:०४:००	००:१२:३०:०५	०७:१०:३३:४९	१०:०५:४६:०५	११:२९:०२:५८	४२:५१:५३	द·२३:३९:२६	– ३:१७	२३:३१
३	७ बु	०८:१७:४०:०२	०५:०७:२२:०२	०८:०३:३७:४४	०७:२६:१९:२९	००:१२:३०:०१	०७:११:४७:०३	१०:०५:५१:५५	११:२८:५९:४८	४२:५२:२५	द·२३:३४:४४	– ३:४७	२४:२३
४	८ गु	०८:१८:४१:२७	०५:१९:३०:०८	०८:०४:२१:१८	०७:२६:४०:५३	मार्गी १२:३०:०९	०७:१३:००:२१	१०:०५:५७:४९	११:२८:५६:३७	४२:५२:५९	द·२३:२९:३४	– ४:१७	२५:१७
५	९ शु	०८:१९:४२:५३	०६:०१:४६:३८	०८:०५:०४:५५	०७:२७:०७:६०	००:१२:३०:३०	०७:१४:१३:४३	१०:०६:०३:४६	११:२८:५३:२६	४२:५३:३६	द·२३:२३:५५	– ४:४७	२६:१२
६	१० श	०८:२०:४४:१७	०६:१४:१४:१६	०८:०५:४८:३४	०७:२७:४०:३४	००:१२:३१:०४	०७:१५:२७:०९	१०:०६:०९:४७	११:२८:५०:१५	४२:५४:१६	द·२३:१७:४८	– ५:१७	२७:०९
७	११ र	०८:२१:४५:४२	०६:२६:५५:१०	०८:०६:३२:१७	०७:२८:१८:१९	००:१२:३१:५१	०७:१६:४०:३८	१०:०६:१५:५१	११:२८:४७:०५	४२:५४:५९	द·२३:११:१३	– ५:४६	२८:०७
८	१२ चं	०८:२२:४७:०६	०७:०९:५०:४७	०८:०७:१६:०२	०७:२९:०१:००	००:१२:३२:५०	०७:१७:५४:११	१०:०६:२१:५९	११:२८:४३:५४	४२:५५:४५	द·२३:०४:१०	– ६:१४	२९:०५
९	१३ मं	०८:२३:४८:३०	०७:२३:०१:५२	०८:०७:५९:५१	०७:२९:४८:२१	००:१२:३४:०२	०७:१९:०७:४७	१०:०६:२८:१०	११:२८:४०:४३	४२:५६:३३	द·२२:५६:४०	– ६:४२	३०:०५
१०	१४ बु	०८:२४:४९:५४	०८:०६:२८:२३	०८:०८:४३:४२	०८:००:४०:०५	००:१२:३५:२६	०७:२०:२१:२६	१०:०६:३४:२५	११:२८:३७:३३	४२:५७:२४	द·२२:४८:४२	– ७:१०	३०:५९
११	३० गु	०८:२५:५१:१७	०८:२०:०९:३१	०८:०९:२७:३६	०८:०१:३५:५७	००:१२:३७:०४	०७:२१:३५:०८	१०:०६:४०:४२	११:२८:३४:२२	४२:५८:१८	द·२२:४०:१७	– ७:३७	०७:५३

३१ दिसम्बर सूर्योदयकालीन तिथिः ४

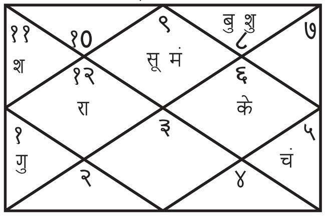

७ जनवरी सूर्योदयकालीन तिथिः ११

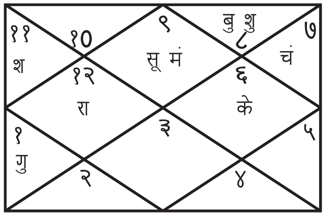

पौष कृष्णपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, २७ दिसम्बर से ११ जनवरी, २०२३–२०२४ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःपूर्व । ऋतुःहेमन्त । दक्षिणायनं । याम्यगोलः । ति·३० अयनांशाः२२:५२:१६

दिनाङ्क दिसम्बर	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
२७	१ बु	बुध पूर्वोदित घं·०५:३२, अनुराधायांशुक्रः घं·०८:४९।
२८	२ गु	मूलेधनुषिमङ्गलः घं·३०:५८।
२९	३ शु	**भद्रा १९:३२–३२:२१घं·**, पूर्वाषाढ़ेरविः घं·२६:४३
३०	३ श	**भद्रांतः ८:२२घं·**, सौभाग्य सुन्दरी व्रत, **गण्डान्तारम्भः २२:१६** ①
३१	४ र	**गण्डान्तः ११:२९।** ① मार्गी बुधः घं·२७:५३।
जनवरी	५ चं	। ③ श्री जयप्रभु विजय पुण्य त्रिस्तुति (जैन), स्वामी श्रद्धानन्द पुण्य दिवस।
२	६ मं	**भद्रा १४:३६–२७:४०घं·**, मार्गी बुधः०८:४१।
३	७ बु	मार्गी बुधः०८:४१।
४	८ गु	।
५	९ शु	**भद्रारंभः ३२:२४घं·।**
६	१० श	**भद्रा ८:२५–२०:४९घं·**, ज्येष्ठायांशुक्रः घं·३१:११।
७	११ र	**श्री चन्द्रप्रभु जयन्ती, श्रीपार्श्वनाथ जन्मकल्याणक जयन्ती।**
८	१२ चं	।
९	१३ मं	**भद्रारंभः २०:३२घं·, गण्डान्तः१३:५५–२५:४९,** मूलेधनुषिबुधः घं·१३:२।
१०	१४ बु	**भद्रांतः ०८:०४घं·**, शतभिषायांशनिः घं·२८:४८, ③
११	३० गु	उत्तराषाढ़ेरविः घं·२६:२६। घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

ति	**श्राद्धकालं** घं·मि·
१	१२:०६–१३:२८
३०	१२:१४–१३:३६

❀ बाल दृष्टि (नजर) दोष निवारण ❀

छोटे, सुकुमार, सुन्दर, सजे, हंसमुख और वाचाल बच्चों पर दृष्टि (नजर) दोष लग जाने से वे बीमार हो जाते हैं, या रुदन करने लगते हैं।

दृष्टिदोष उतारने की भस्मधारण विधि–

हवन के भस्म या पवित्राग्नि भस्म को अभिमंत्रित कर बच्चे के शिर, ललाट, हृदय आदि अंगों पर लगाना चाहिए। मंत्र यह है–

वासुदेवो जगन्नाथः पूतना तर्जनो हरिः।
रक्षतु त्वरितो बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ।१।
कृष्ण रक्ष शिशुं शंख–मधु–कैटभमर्दन।
प्रातः संगव–मध्याह्न–सायांह्नेषु संध्ययोः ।२।
महानिशि सदा रक्ष कंसारिष्टनिषूदन।
पद्मोरगपिशाचांश्च ग्रहान्मातृग्रहान्नपि ।३।
बालग्रहान् विशेषेण छिन्धि छिन्धि महाभयान्।
त्राहि–त्राहि हरे! नित्यं त्वद्रक्षाभूषितं शिशुम् ।४।

दृष्टिदोष उतारने की यन्त्रधारण विधि–

भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही या लाल स्याही से निम्न मंत्र को लिखकर उसे धूप–दीप दिखाकर बालक के बाहुमूल में बाँधने से नजर दूर होता है।

रक्ष रक्ष महादेव नीलग्रीव जटाधर ।
ग्रहैस्तु सहितो रक्ष मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ।।

❀ प्राणायाम की दुर्लभ एवं पूर्ण विधि ❀

क्रमः--१. पूरक, २. अन्तः–कुम्भक, ३. रेचक, ४. बाह्य कुम्भक

पूरक – तीन सावित्री मन्त्र तेजी से पढ़ते हुए सम गति से श्वास अन्दर लेना ।

अन्तः–कुम्भक – तीन सावित्री मन्त्र तेजी से पढ़ते हुए श्वास अन्दर रोकना ।

रेचक – तीन सावित्री मन्त्र तेजी से पढ़ते हुए सम गति से श्वास बाहर त्यागना ।

बाह्य कुम्भक–तीन सावित्री मन्त्र तेजी से पढ़ते हुए श्वास बाहर त्यागकर रोकना।

गायत्री मन्त्र का ही विस्तारित रूप है सावित्री मन्त्र। प्राणायाम में जप हेतु **सावित्री मन्त्र–**

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम् ।
भर्गो देवस्य धीमहि । धि यो यो नः प्रचोदयात् ।।
ॐ आपो ज्योतिरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वर् ।। ॐ ।।

''स्वर् ।। ॐ'' का उच्चारण है ''स्वरोम्'' ।।

बाह्य कुम्भक कष्टदायक होता है, अतः अधिकाँश जगह लिखा नहीं होता है। बाह्य कुम्भक जितना कष्टदायक होता है उतने ही पिछले और वर्तमान जन्मों के प्रकट (क्रियमाण) और छुपे हुए (सञ्चित) कुसंस्कार नष्ट होते हैं और सद्–बुद्धि बढती है। प्राणायाम वैदिक सन्ध्यावन्दन का अनिवार्य भाग है। प्रातः (और सम्भव हो तो सन्ध्याकाल में भी) नित्यकर्म के पश्चात न्यूनतम तीन प्राणायाम बाएँ नाक से और तीन दाहिने नाक से करने चाहिए: बारी–बारी से, अर्थात पहले बाएँ, फिर दाँए, फिर बाएँ..। बाह्य कुम्भक अचेतन मन के कुसंस्कारों को ध्वस्त करने और पूर्ण चैतन्य बनने का सर्वोत्तम साधन है। जो जनेऊ नहीं पहनते हैं वे उतने ही काल तक अपने इष्टदेव के मन्त्र का जप कर सकते हैं।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी

दिसम्बर	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
२७	११:५२	१३:१८	१४:५४	१६:५०	१९:०४	२१:२४	२३:४१	०१:५६	०४:१५	०६:३३	०८:३८	१०:२३
२८	११:४८	१३:१४	१४:५०	१६:४६	१९:००	२१:२०	२३:३७	०१:५२	०४:११	०६:३०	०८:३४	१०:१९
२९	११:४४	१३:१०	१४:४६	१६:४२	१८:५६	२१:१६	२३:३३	०१:४८	०४:०७	०६:२६	०८:३०	१०:१५
३०	११:४०	१३:०६	१४:४२	१६:३८	१८:५२	२१:१२	२३:२९	०१:४४	०४:०३	०६:२२	०८:२७	१०:११
३१	११:३६	१३:०२	१४:३८	१६:३४	१८:४८	२१:०८	२३:२५	०१:४०	०३:५९	०६:१८	०८:२३	१०:०७
जनवरी	११:३२	१२:५८	१४:३४	१६:३०	१८:४४	२१:०४	२३:२१	०१:३६	०३:५५	०६:१४	०८:१९	१०:०३
२	११:२८	१२:५४	१४:३०	१६:२६	१८:४०	२१:००	२३:१७	०१:३२	०३:५१	०६:१०	०८:१५	०९:५९
३	११:२५	१२:५०	१४:२६	१६:२२	१८:३६	२०:५६	२३:१३	०१:२८	०३:४७	०६:०६	०८:११	०९:५५
४	११:२१	१२:४६	१४:२२	१६:१८	१८:३२	२०:५३	२३:०९	०१:२४	०३:४३	०६:०२	०८:०७	०९:५१
५	११:१७	१२:४३	१४:१९	१६:१४	१८:२८	२०:४९	२३:०५	०१:२०	०३:३९	०५:५८	०८:०३	०९:४७
६	११:१३	१२:३९	१४:१५	१६:१०	१८:२४	२०:४५	२३:०१	०१:१६	०३:३५	०५:५४	०७:५९	०९:४४
७	११:०९	१२:३५	१४:११	१६:०६	१८:२०	२०:४१	२२:५७	०१:१२	०३:३१	०५:५०	०७:५५	०९:४०
८	११:०५	१२:३१	१४:०७	१६:०२	१८:१७	२०:३७	२२:५३	०१:०८	०३:२७	०५:४६	०७:५१	०९:३६
९	११:०१	१२:२७	१४:०३	१५:५८	१८:१३	२०:३३	२२:४९	०१:०४	०३:२३	०५:४२	०७:४७	०९:३२
१०	१०:५७	१२:२३	१३:५९	१५:५४	१८:०९	२०:२९	२२:४५	०१:००	०३:१९	०५:३८	०७:४३	०९:२८
११	१०:५३	१२:१९	१३:५५	१५:५०	१८:०५	२०:२५	२२:४१	००:५६	०३:१५	०५:३४	०७:३९	०९:२४

दिसम्बर	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
२७	**अमृत**·१, **सिद्ध**·२,
२८	**द·ति**·२, **सर्वार्थ**·पुन, **सर्वार्थ**·पु, **अमृत**·३,
२९	**द·ति**·२,
३०	**सिद्ध**·४,
३१	**अमृत**·५
जनवरी	**अमृत**·५, **सिद्ध**·६
३	**सिद्ध**·७, **रवियोग**ःउफा, **सर्वार्थ**·ह, **मृत्यु**·८,
४	**अमृत**·८, **मृत्यु**·९,
५	**अमृत**·९,
६	**सर्वार्थ**·स्वा, **मृत्यु**·१०, **अमृत**·११,
७	**मृत्यु**·११
८	**सर्वार्थ**·अनु, **मृत्यु**·१२
९	**सिद्ध**·१३
११	**सिद्ध**·१५,

❀ **व्रत परिभाषा–**ऋषि,मुनि व परमाचार्यों द्वारा प्रसिद्धि प्राप्त विषय के संकल्प विशेष को व्रत कहते हैं। अतः सामान्य व्यक्ति नया व्रत नहीं बना सकता।

अभियुक्तप्रसिद्धिविषयो यः संकल्पविशेषः स एव व्रतम्।

❀ **व्रत के अंग–** किसी भी व्रत के तीन अंग होते हैं १· उपवास, २· पूजन और ३· पारणा। तत् पूजनोपवासपारणारूपम्। वस्तुतः उपवास ही मुख्य रूप से व्रत होता है पर पूजन और पारणा के बिना यह पूर्ण नहीं होता है। “उपवासएवव्रतम्”

❀ **व्रत फल–** व्रत करने से जीवन में अलभ्य का लाभ तथा असाध्य की प्राप्ति होती है।

❀ **व्रत नाशक तत्व–** बारबार जल पीना, पान खाना, दिन में सोना, मैथुन, मिथ्याभाषण, जुआ खेलना, पाप करना, दो बार अल्पाहार लेना मना है।

❀ **व्रत में अनिवार्य–** प्रत्येक व्रत के देवता की पूजा अवश्य करनी चाहिए। क्षमा, सत्य, दया, दान, शौच, इन्द्रियनिग्रह, देवपूजा, हवन, संतोष और अचौर्य ये दशतत्व व्रत में अनिवार्य हैं।

पौष शुक्लपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, १२ जनवरी से २५ जनवरी, २०२४ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– **१२:०१:२०२४** मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः; मार्गी शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपश्चिमास्त; मार्गी बुधःपूर्वोदितः;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
जनवरी	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	१२ जनवरी से २५ जनवरी २०२४
१२	१ शु	२२:१२	१६:१६	उ·षा·	२५:२२	१७:३२	हर्षण	२२:४९	१६:३०	बव	२२:१२	बाल	४९:४३	२५:५८	७:२३	१७:४६	मकर	अहोरात्र	आनन्द	२७	१२	स्वामी विवेकानन्द जयन्ती, राष्ट्रीय युवा दिवस
१३	२ श	१७:०६	१४:१३	श्रवण	२१:५६	१६:०९	वज्र	१५:३६	१३:३७	कौल	१७:०६	तैति	४४:२२	२६:००	७:२३	१७:४७	कु·५०:०१	२७:२३	प्रवर्द्ध	२८	१३	**लोहड़ी (पंजाब)**
१४	३ र	११:३३	१२:०१	धनि·	१८:०३	१४:३६	सिद्धि	०८:००	१०:३५	गर	११:३३	वणि	३८:३९	२६:०२	७:२३	१७:४८	कुंभ	अहोरात्र	मातङ्ग	२९	१४	**वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी**, भौम पूर्वोदित घं·१४:०५,
१५	४ चं ५ चं	०५:४४ ५४:०६	०९:४० ३१:१८	शत·	१३:५५	१२:५७	व्यति· वरीयान	००:११ ५२:०६	०७:२७ २८:१७	विष	०५:४४	बव	३२:४६	२६:०४	७:२३	१७:४९	मी·५५:४७	२९:४१	अमृत	३०	१५	**मकर संक्रान्ति पुण्यकालं सूर्योदय·सूर्यास्त, पतंगोत्सव**
१६	६ मं	५४:०६	२९:०१	पू·भा·	०९:४६	११:१७	परिघ	४४:३०	२५:११	कौल	२६:५६	तैति	५४:०६	२६:०६	७:२३	१७:४९	मीन	अहोरात्र	काण	१	१६	अनरुपा षष्ठी (बंगाल)
१७	७ बु	४८:४३	२६:५२	उ·भा·	०५:४८	०९:४२	शिव	३६:५९	२२:१०	गर	२१:२२	वणि	४८:४३	२६:०९	७:२३	१७:५०	मीन	अहोरात्र	लुम्ब	२	१७	गुरु गोविन्दसिंह जयन्ती,श्रीराजेन्द्रसूरीश्वर स्तुति (जैन)
१८	८ गु	४३:५३	२४:५६	रेवती अश्विनी	०२:१४ ५७:००	०८:१६ ३१:०४	सिद्ध	२९:५१	१९:१९	विष	१६:१४	बव	४३:५३	२६:११	७:२३	१७:५१	मे·०२:१४	०८:१६	मित्र	३	१८	**श्रीदुर्गाष्टमी, शाकम्भरी देवी नवरात्र प्रारम्भ**
१९	९ शु	३९:४८	२३:१७	भरणी	५७:०१	३०:११	साध्य	२३:१७	१६:४१	बाल	११:४५	कौल	३९:४८	२६:१३	७:२२	१७:५२	मेष	अहोरात्र	मुद्गर	४	१९	आचार्य जिनानन्द सागर पुण्य खरतरगच्छ (जैन)
२०	१० श	३६:३५	२२:०१	कृत्ति·	५५:४४	२९:४०	शुभ	१७:२४	१४:२०	तैति	०८:०५	गर	३६:३५	२६:१६	७:२२	१७:५३	वृ·११:३७	१२:०१	ध्वज	५	२०	सूर्यपूजा व साम्बदशमी (उड़ीसा)
२१	११ र	३४:२७	२१:०९	रोहि·	५५:३१	२९:३४	शुक्ल	१२:१७	१२:१७	वणि	०५:२३	विष	३४:२७	२६:१८	७:२२	१७:५४	वृष	अहोरात्र	धाता	६	२१	**श्रीपुत्रदा एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त), मन्वादि**
२२	१२ चं	३३:२९	२०:४५	मृग·	५६:२९	२९:५८	ब्रह्म	०८:०५	१०:३६	बव	०३:४९	बाल	३३:२९	२६:२१	७:२२	१७:५४	मि·२५:५२	१७:४३	आनन्द	७	२२	**श्रीकूर्म द्वादशी**
२३	१३ मं	३३:४७	२०:५३	आर्द्रा	५८:४२	३०:५१	ऐन्द्र	०४:५०	०९:१८	कौल	०३:२९	तैति	३३:४७	२६:२४	७:२२	१७:५५	मिथुन	अहोरात्र	सुस्थिर	८	२३	**प्रदोष व्रतम्**, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती
२४	१४ बु	३५:२४	२१:३१	पुन·	६०:००	अहोरात्र	वैधृ·	०२:३५	०८:२४	गर	०४:२७	वणि	३५:२४	२६:२६	७:२१	१७:५६	क·४६:१२	२५:५०	गद	९	२४	
२५	१५ गु	३८:१५	२२:३९	पुन·	०२:११	०८:१४	विष्कु·	०१:१९	०७:५३	विष	०६:४१	बव	३८:१५	२६:२९	७:२१	१७:५७	कर्क	अहोरात्र	सिद्धि	१०	२५	**पौष पूर्णिमा (स्नान–दान–व्रत), माघ स्नानारम्भ**

❀ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❀

दिनाङ्क जनवरी	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	राहुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
१२	१ शु	०८:२६:५२:३९	०९:०४:०३:४५	०८:१०:११:३४	०८:०२:३५:४१	००:१२:३८:५३	०७:२२:४८:५४	१०:०६:४७:०३	११:२८:३१:११	४२:५९:१४	द·२२:३१:२६	– ८:०३	०७:५३
१३	२ श	०८:२७:५४:०१	०९:१८:०८:५३	०८:१०:५५:३४	०८:०३:३९:०४	००:१२:४०:५५	०७:२४:०२:४२	१०:०६:५३:२७	११:२८:२८:००	४३:००:१२	द·२२:२२:०७	– ८:२९	०८:३९
१४	३ र	०८:२८:५५:२२	१०:०२:२२:११	०८:११:३९:३८	०८:०४:४५:५१	००:१२:४३:१०	०७:२५:१६:३४	१०:०६:५९:५४	११:२८:२४:५०	४३:०१:१४	द·२२:१२:२३	– ८:५४	०९:२३
१५	४ चं	०८:२९:५६:४३	१०:१६:४०:२८	०८:१२:२३:४४	०८:०५:५५:५०	००:१२:४५:३७	०७:२६:३०:२८	१०:०७:०६:२३	११:२८:२१:३९	४३:०२:१७	द·२२:०२:१२	– ९:१९	१०:०३
१६	६ मं	०९:००:५८:०३	११:०१:००:०८	०८:१३:०७:५४	०८:०७:०८:४७	००:१२:४८:१६	०७:२७:४४:२५	१०:०७:१२:५६	११:२८:१८:२८	४३:०३:२३	द·२१:५१:३६	– ९:४३	१०:४२
१७	७ बु	०९:०१:५९:२२	११:१५:१७:१४	०८:१३:५२:०७	०८:०८:२४:३२	००:१२:५१:०८	०७:२८:५८:२५	१०:०७:१९:३१	११:२८:१५:१८	४३:०४:३१	द·२१:४०:३४	–१०:०६	११:५८
१८	८ गु	०९:०३:००:४०	११:२९:२८:१९	०८:१४:३६:२२	०८:०९:४२:५४	००:१२:५४:११	०८:००:१२:२८	१०:०७:२६:०९	११:२८:१२:०७	४३:०५:४२	द·२१:२९:०८	–१०:२९	११:५८
१९	९ शु	०९:०४:०१:५८	००:१३:३०:२०	०८:१५:२०:४१	०८:११:०३:४१	००:१२:५७:२७	०८:०१:२६:३३	१०:०७:३२:४९	११:२८:०८:५६	४३:०६:५४	द·२१:१७:१६	–१०:५१	१२:४०
२०	१० श	०९:०५:०३:१५	००:२७:२०:४१	०८:१६:०५:०३	०८:१२:२६:४५	००:१३:००:५५	०८:०२:४०:४१	१०:०७:३९:३३	११:२८:११:४६	४३:०८:०९	द·२१:०५:०१	–११:१२	१३:२३
२१	११ र	०९:०६:०४:३१	०१:१०:५७:२४	०८:१६:४९:२८	०८:१३:५१:५६	००:१३:०४:३४	०८:०३:५४:५१	१०:०७:४६:१८	११:२८:०२:३५	४३:०९:२६	द·२०:५२:२१	–११:३२	१४:१०
२२	१२ चं	०९:०७:०५:४६	०१:२४:१९:०८	०८:१७:३३:५६	०८:१५:१९:०७	००:१३:०८:२६	०८:०५:०९:०३	१०:०७:५३:०६	११:२७:५९:२४	४३:१०:४५	द·२०:३९:१७	–११:५२	१५:०१
२३	१३ मं	०९:०८:०६:६०	०२:०७:२५:२०	०८:१८:१८:२७	०८:१६:४८:०८	००:१३:१२:२९	०८:०६:२३:१७	१०:०७:५९:५६	११:२७:५६:१४	४३:१२:०६	द·२०:२५:५०	–१२:११	१५:५४
२४	१४ बु	०९:०९:०८:१३	०२:२०:१६:१३	०८:१९:०३:०१	०८:१८:१८:५३	००:१३:१६:४४	०८:०७:३७:३३	१०:०८:०६:४९	११:२७:५३:०३	४३:१३:२९	द·२०:१२:००	–१२:२९	१६:५१
२५	१५ गु	०९:१०:०९:२५	०३:०२:५२:४३	०८:१९:४७:३८	०८:१९:५१:१५	००:१३:२१:१०	०८:०८:५१:५०	१०:०८:१३:४४	११:२७:४९:५२	४३:१४:५४	द·१९:५७:४८	–१२:४६	१७:४७

१५ जनवरी सूर्योदयकालीन तिथिः**४**

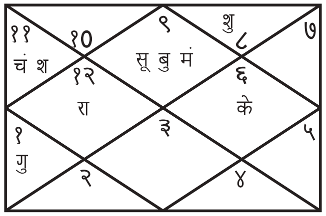

२१ जनवरी सूर्योदयकालीन तिथिः**११**

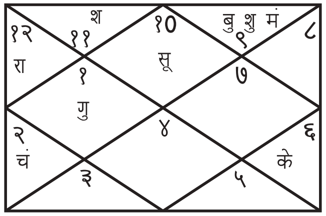

पौष शुक्लपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, १२ जनवरी से २५ जनवरी, २०२४ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःपूर्व । ऋतुःहेमन्त दक्षिणायनं मकरार्कतः ऋतुःशिशिर उत्तरायणं ।याम्यगोलः । ति·१५ अयनांशाः२२:५२:१८

दिनाङ्क जनवरी	तिथि वार	ब्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·)
१२	१ शु	**अभिजितः ११:०९–२९:०९।**
१३	२ श	**श्रीयतीन्द्र सूरीश्वर पुण्यत्रिस्तुति (जैन) , पंचकारंभः २७:२३।**
१४	३ र	**भद्रारंभः २२:५१घं·, पंचक,** मासान्तः।
१५	४ चं	**पंचक, भद्रांतः ९:४१घं·,** गंगासागर स्नान, मकरेरविः घं·०८:४१, ⓘ
१६	६ मं	**पंचक,** पूर्वाषाढ़ेमङ्गलः घं·१४:०४, मासादिः।
१७	७ बु	**पंचक, भद्रारंभः २६:५२घं·, गण्डान्तारम्भः २६:३७,** मूलेधनुषिशुक्रः घं·२७:२९।
१८	८ गु	**भद्रांतः १३:५३घं·, गण्डान्तः १३:५७, पंचकान्तः ८:१७।**
१९	९ शु	। ⓘ मलमास समाप्त,पोंगल (केरल) ।
२०	१० श	पूर्वाषाढ़ेबुधः घं·२२:३५।
२१	११ र	**भद्रा ९:३२–२१:०९घं·।**
२२	१२ चं	।
२३	१३ मं	।
२४	१४ बु	श्रवणायांरविः घं·२७:४०, भरण्यांगुरुः घं·२५:१५, **भद्रारंभः२१:३२घं·।**
२५	१५ गु	**श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा, शाकम्भरी जयन्ती, भद्रांतः १०:०२घं·।**

ति	श्राद्धकाल घं·मि·
१	१२:१४–१३:३७
१५	१२:१८–१३:४३

❀ मकर संक्रान्ति कृत्य ❀

❀ **मकर संक्रान्ति– सूर्यसिद्धान्तीय गणना से सूर्य १५ जनवरी को प्रातः ०८ बजके ४१ मिनट पर मकर में प्रवेश करेगा** अतः **मकर संक्रान्ति १५ जनवरी को ही होगी, उसी दिन सूर्यास्त तक पुण्यकाल स्नान दान होगा।** अतः **संशयरहित होकर मकर संक्रान्ति १५ जनवरी २०२४ को ही मनाएं।** मकर संक्रान्ति से ही देवताओं का दिन आरम्भ होता है। यहीं से उत्तरायण का शुभारम्भ होता है। **मकर संक्रान्ति को स्नान न करने वाला व्यक्ति जन्म–जन्मान्तर में रोगी तथा निर्धन होता है–**

रविसंक्रमणे प्राप्ते न स्नायाद्यस्तु मानवः । सप्तजन्मनि रोगी स्यान्निर्धनश्चैव जायते। (धर्मसिन्धु)

यह भगवान सूर्य नारायण का विशेष व्रत है। अतः **मकर संक्रान्ति के दिन स्नान, दान, हवन करने का शुभफल जन्मजन्मान्तर में भगवान् श्री सूर्यनारायण द्वारा प्रदान किया जाता है–** *संक्रान्तौ यानि दत्तानि हव्यकव्यानि दातृभिः। तानि नित्यं ददात्यर्कः पुनर्जन्मनि जन्मनि। (धर्मसिन्धु)* **मकर संक्रान्ति** के दिन शिवलिंग का घी से अभिषेक करने का विशेषफल होता है। स्वर्ण दान तथा तिल से भरे पात्र का दान करना अक्षय फल देता है। इस दिन श्रीआदित्यहृदयस्तोत्र के पाठ करें और भगवान् श्रीसूर्यनारायण को तांबे के कलश में लाल चन्दन, लाल पुष्प, चावल, तिल डालकर अर्घ्य देवें।

मकर राशि में सूर्य के प्रवेश के साथ ही देवमार्ग खुलता है। गीता८/२४–

अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणः। तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः ॥

अनेक आकाशीय वीथियों का वर्णन वैदिक वांग्मय में वर्णित है। उत्तरायण शुभ आत्मा का सहचर पथ है। इस पथ पर आरूढ़ आत्मा भटकती नहीं, शुभलोक में जाती है।

स्कन्दपुराण में वर्णित श्रीसूर्यनारायण की स्तुति श्रीजयादित्य अष्टकम् के १२०० पाठ करने से सूर्य भगवान् प्रसन्न होते हैं व सूर्यजनित अशुभ फल, विशेषतः त्वचा, नेत्र सम्बन्धी रोग–व्याधि, धन, राजकार्य आदि समस्या में लाभ होता है।

सूर्यास्त के बाद मकरसंक्रान्ति होने पर पुण्यकाल अगले दिन होता है, *''यद्यस्तमयवेलायां मकरं याति भास्करः। प्रदोषे वाऽर्धरात्रे वा स्नानं दानं परेऽहनि।''* (धर्मसिन्धु)। 'उत्तरायण और दक्षिणायन में तीस घड़ी कर्क की और बीस घड़ी मकर की पुण्य काल की कही हैं।'' –वृद्धवशिष्ठ, 'रात्रि में मकर संक्रांति हो तो पर दिन में सूर्योदय उपरान्त दिन के पूर्वभाग में अर्थात् दोपहर तक पुण्यकाल होता है।''

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

जनवरी	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१२	१२:१५	१३:५१	१५:४६	१८:०१	२०:२१	२२:३७	००:५२	०३:११	०५:३०	०७:३५	०९:२०	१०:४९
१३	१२:११	१३:४७	१५:४३	१७:५७	२०:१७	२२:३३	००:४८	०३:०७	०५:२६	०७:३१	०९:१६	१०:४५
१४	१२:०७	१३:४३	१५:३९	१७:५३	२०:१३	२२:३०	००:४५	०३:०३	०५:२२	०७:२७	०९:१२	१०:४१
१५	१२:०३	१३:३९	१५:३५	१७:४९	२०:०९	२२:२६	००:४१	०२:५९	०५:१८	०७:२३	०९:०८	१०:३७
१६	११:५९	१३:३५	१५:३१	१७:४५	२०:०५	२२:२२	००:३७	०२:५५	०५:१४	०७:१९	०९:०४	१०:३३
१७	११:५५	१३:३१	१५:२७	१७:४१	२०:०१	२२:१८	००:३३	०२:५२	०५:१०	०७:१६	०९:००	१०:२९
१८	११:५१	१३:२७	१५:२३	१७:३७	१९:५७	२२:१४	००:२९	०२:४८	०५:०६	०७:१२	०८:५६	१०:२५
१९	११:४७	१३:२३	१५:१९	१७:३३	१९:५३	२२:१०	००:२५	०२:४४	०५:०३	०७:०८	०८:५२	१०:२१
२०	११:४३	१३:१९	१५:१५	१७:२९	१९:४९	२२:०६	००:२१	०२:४०	०४:५९	०७:०४	०८:४८	१०:१७
२१	११:३९	१३:१५	१५:११	१७:२५	१९:४५	२२:०२	००:१७	०२:३६	०४:५५	०७:००	०८:४४	१०:१३
२२	११:३५	१३:११	१५:०७	१७:२१	१९:४१	२१:५८	००:१३	०२:३२	०४:५१	०६:५६	०८:४०	१०:०९
२३	११:३१	१३:०७	१५:०३	१७:१७	१९:३७	२१:५४	००:०९	०२:२८	०४:४७	०६:५२	०८:३६	१०:०६
२४	११:२७	१३:०३	१४:५९	१७:१३	१९:३३	२१:५०	००:०५	०२:२४	०४:४३	०६:४८	०८:३२	१०:०२
२५	११:२४	१३:००	१४:५५	१७:०९	१९:२९	२१:४६	००:०१	०२:२०	०४:३९	०६:४४	०८:२८	०९:५८

जनवरी	सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग
१२	द·ति·२, **सिद्ध**·१, **मृत्यु**·२, **सर्वार्थ**·श्र,
१३	द·ति·२, **सर्वार्थ**·श्र,
१४	**सिद्ध**·३, **रवियोग**ःश,
१५	**रवियोग**ःश, **अमृत**·५, **सिद्ध**·६,
१६	**मृत्यु**·६, **सर्वार्थ**·उभा, **रवियोग**ःउभा, **अमृत**·७,
१७	**सिद्ध**·७, **रवियोग**ःउभा, **मृत्यु**·८,
१८	**सर्वार्थ**·रे, **अमृत**·८, **सर्वार्थ**·अ, **मृत्यु**·९, **रवियोग**ःभ
१९	**अमृत**·९, **रवियोग**ःभ, **रवियोग**ःकृ
२०	**मृत्यु**·१०, **रवियोग**ःकृ, **अमृत**·११, **सर्वार्थ**·रो,
२१	**मृत्यु**·११, **द्विपुष्कर**ः१२+मृ,
२२	द·ति·१२, **सर्वार्थ**·मृ, **मृत्यु**·१२, **रवियोग**ःआ
२३	द·ति·१२, **सिद्ध**·१३, **रवियोग**ःआ
२४	**रवियोग**ःपुन,
२५	**सर्वार्थ**·पुन, **सिद्ध**·१५, **रवियोग**ःपुन, **सर्वार्थ**·पु,

द्विज का दाहिना कान पवित्र होता है। कान में वेदमन्त्र सुनते सुनते प्रभास आदि तीर्थ, गंगा आदि नदियों का पावित्र्य और प्रभाव रहता है– ***प्रभासादीनि तीर्थानि गंगाद्याः सरितस्तथा। द्विजस्य दक्षिणे कर्णे नित्यं तिष्ठन्ति देवताः॥*** इसी कान से दीक्षा ग्रहण की जाती है। इसी के ऊपर हमेशा यज्ञोपवीत चढ़ाकर मल–मूत्र का त्याग किया करते हैं। कर्णवेध के समय इसी में स्वर्णकुण्डल धारण किया जाता है। पराशर स्मृति में लिखा है कि छींक, थूक, दांत खोदने के बाद दाहिना कान स्पर्श करना चाहिए– ***क्षुते निष्ठीविते चैव दंतश्लिष्टे तथाऽनृते। पतितानाम् च संभाषे दक्षिणम् श्रवणं स्पृशेत्॥*** पैर की द्वितीय उंगली में चांदी की अंगूठी पहनने की रीति प्राचीनकाल में थी। इससे मानसिक शान्ति बनी रहती है। मणि, मन्त्र और औषधि का प्रभाव अतुलनीय होता है।

माघ कृष्णपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, २६ जनवरी से ९ फरवरी, २०२४ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– २६:१:२०२४ मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः; मार्गी शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपूर्वोदितः;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः	
जनवरी	वार	घ.प.	घं:मि	नक्षत्र	घ.प.	घं:मि	योग	घ.प.	घं:मि	क१	घ.प.	क२	घ.प.	घ.प.	घं:मि	घं:मि	राशि घ.प.	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी
२६	१ शु	४२:१२	२४:१४	पुष्य	०६:४७	१०:०३	प्रीति	००:५७	०७:४४	बाल	१०:०७	कौल	४२:१२	२६:३२	७:२१	१७:५८	कर्क	अहोरात्र	उत्पात	११	२६
२७	२ श	४७:०१	२६:०९	आश्ले.	१२:२१	१२:१७	आयु.	०१:२३	०७:५४	तैति	१४:३२	गर	४७:०१	२६:३५	७:२०	१७:५९	सिं.१२:२१	१२:१७	मानस	१२	२७
२८	३ र	५२:२२	२८:१७	मघा	१८:३६	१४:४६	सौभा.	०२:२३	०८:१७	वणि	१९:४०	विष	५२:२२	२६:३८	७:२०	१८:००	सिंह	अहोरात्र	मुद्गर	१३	२८
२९	४ चं	५७:५०	३०:२८	पू.फा.	२५:१०	१७:२४	शोभ.	०३:४२	०८:४९	बव	२५:०८	बाल	५७:५०	२६:४१	७:२०	१८:००	कं.४१:४८	२४:०३	ध्वज	१४	२९
३०	५ मं	६०:००	अहोरात्र	उ.फा.	३१:३७	१९:५८	अतिग.	०५:०३	०९:२१	कौल	३०:२८	तैति	६०:००	२६:४४	७:१९	१८:०१	कन्या	अहोरात्र	धाता	१५	३०
३१	५ बु	०२:५८	०८:३०	हस्त	३७:३३	२२:२०	सुकर्मा	०६:०७	०९:४६	तैति	०२:५८	गर	३५:१६	२६:४७	७:१९	१८:०२	कन्या	अहोरात्र	आनन्द	१६	३१
फरवरी	६ गु	०७:२२	१०:१५	चित्रा	४२:३८	२४:२२	धृति	०६:३८	०९:५८	वणि	०७:२२	विष	३९:११	२६:५१	७:१८	१८:०३	तु.१०:१४	११:२४	सुस्थिर	१७	फरवरी
२	७ शु	१०:४५	११:३६	स्वाती	४६:३९	२५:५८	शूल	०६:२४	०९:५२	बव	१०:४५	बाल	४१:५९	२६:५४	७:१८	१८:०४	तुला	अहोरात्र	गद	१८	२
३	८ श	१२:५६	१२:२८	विशा.	४९:२८	२७:०५	गण्ड	०५:१६	०९:२४	कौल	१२:५६	तैति	४३:३३	२६:५७	७:१७	१८:०५	वृ.३३:५४	२०:५१	शुभ	१९	३
४	९ र	१३:५१	१२:४९	अनु.	५१:०३	२७:४२	वृद्धि	०३:११	०८:३३	गर	१३:५१	वणि	४३:४८	२७:०१	७:१७	१८:०५	वृश्चिक	अहोरात्र	मृत्यु	२०	४
५	१० चं	१३:२८	१२:३९	ज्ये.	५१:२४	२७:५०	ध्रुव व्याघ.	००:०५ ५५:५५	०७:१८ २९:४०	विष	१३:२८	बव	४२:४७	२७:०४	७:१६	१८:०६	ध.५१:२४	२७:५०	पद्म	२१	५
६	११ मं	११:५१	१२:००	मूल	५०:३६	२७:३०	हर्षण	५१:०२	२७:४०	बाल	११:५१	कौल	४०:३६	२७:०७	७:१६	१८:०७	धनु	अहोरात्र	छत्र	२२	६
७	१२ बु	०९:०७	१०:५४	पू.षा.	४८:४९	२६:४७	वज्र	४५:१५	२५:२१	तैति	०९:०७	गर	३७:२१	२७:११	७:१५	१८:०८	धनु	अहोरात्र	श्रीवत्स	२३	७
८	१३ गु	०५:२४	०९:२४	उ.षा.	४६:१२	२५:४३	सिद्धि	३८:४८	२२:४६	वणि	०५:२४	विष	३३:१३	२७:१४	७:१५	१८:०९	म.०३:१५	०८:३३	सौम्य	२४	८
९	१४ शु ३० शु	००:५३ ५४:४८	०७:३५ २९:३०	श्रवण	४२:५३	२४:२३	व्यति.	३१:४७	१९:५७	शकु	००:५३	चतु	२८:२१	२७:१८	७:१४	१८:०९	मकर	अहोरात्र	धूम्र	२५	९

व्रत–पर्व–उत्सव

२६ जनवरी से ९ फरवरी २०२४

- २६ — **गणतन्त्र दिवस**, माघ में मूली भक्षण निषेध
- २७ — वैधृति पुण्यम्
- २८ — सौभाग्य सुन्दरी व्रत
- २९ — **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी, चन्द्रोदय घं.२०:५९**
- २ — **श्रीकालाष्टमी**, श्रीमद् रामानन्दाचार्य जयन्ती
- ४ — अन्वष्टका श्राद्ध
- ५ — **गण्डान्तारम्भः २१:५१**
- ६ — **श्रीषट्तिला एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त)**
- ७ — **प्रदोष व्रतम्**, तिल द्वादशी
- ८ — **मास शिवरात्रि व्रतम्**, बुध पूर्वास्त घं.११:०४,
- ९ — **मौनी अमावस्या (देव–पितृकार्य)**

औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः

दिनाङ्क जनवरी	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	राहुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
२६	१ शु	०९:११:१०:३६	०३:१५:१६:३३	०८:२०:३२:१८	०८:२१:२५:०८	००:१३:२५:४८	०८:१०:०६:०९	१०:०८:२०:४०	११:२७:४६:४२	४३:१६:२०	द.१९:४३:१४	–१३:०२	१८:४२
२७	२ श	०९:१२:११:४६	०३:२७:३०:००	०८:२१:१७:०२	०८:२३:००:२४	००:१३:३०:३७	०८:११:२०:२९	१०:०८:२७:३९	११:२७:४३:३१	४३:१७:४९	द.१९:२८:१७	–१३:१८	१९:३७
२८	३ र	०९:१३:१२:५५	०४:०९:३५:५७	०८:२२:०१:४८	०८:२४:३६:५८	००:१३:३५:३७	०८:१२:३४:५१	१०:०८:३४:४०	११:२७:४०:२०	४३:१९:१९	द.१९:१२:५९	–१३:३२	२०:३१
२९	४ चं	०९:१४:१४:०३	०४:२१:३७:३८	०८:२२:४६:३८	०८:२६:१४:४६	००:१३:४०:४९	०८:१३:४९:१४	१०:०८:४१:४३	११:२७:३७:१०	४३:२०:५१	द.१८:५७:२१	–१३:४६	२१:२३
३०	५ मं	०९:१५:१५:१०	०५:०३:३८:४८	०८:२३:३१:३१	०८:२७:५३:४१	००:१३:४६:११	०८:१५:०३:३८	१०:०८:४८:४७	११:२७:३३:५९	४३:२२:२४	द.१८:४१:२१	–१३:५९	२२:१५
३१	५ बु	०९:१६:१६:१६	०५:१५:४३:१८	०८:२४:१६:२७	०८:२९:३३:४०	००:१३:५१:४५	०८:१६:१८:०३	१०:०८:५५:५४	११:२७:३०:४८	४३:२३:५९	द.१८:२५:०२	–१४:१२	२३:०८
फरवरी	६ गु	०९:१७:१७:२१	०५:२७:५४:३०	०८:२५:०१:२६	०९:०१:१४:३७	००:१३:५७:२९	०८:१७:३२:३०	१०:०९:०३:०२	११:२७:२७:३८	४३:२५:३५	द.१८:०८:२२	–१४:२३	२४:०२
२	७ शु	०९:१८:१८:२४	०६:१०:१५:२१	०८:२५:४६:२८	०९:०२:५६:२८	००:१४:०३:२४	०८:१८:४६:५८	१०:०९:१०:११	११:२७:२४:२७	४३:२७:१३	द.१७:५१:२४	–१४:३३	२४:५८
३	८ श	०९:१९:१९:२६	०६:२२:४८:२०	०८:२६:३१:३३	०९:०४:३९:०९	००:१४:०९:२९	०८:२०:०१:२६	१०:०९:१७:२२	११:२७:२१:१६	४३:२८:५३	द.१७:३४:०६	–१४:४३	२५:५६
४	९ र	०९:२०:२०:२७	०७:०५:३५:१९	०८:२७:१६:४१	०९:०६:२२:३६	००:१४:१५:४६	०८:२१:१५:५६	१०:०९:२४:३५	११:२७:१८:०६	४३:३०:३३	द.१७:१६:३०	–१४:५१	२६:५४
५	१० चं	०९:२१:२१:२७	०७:१८:३७:२५	०८:२८:०१:५२	०९:०८:०६:४५	००:१४:२२:१२	०८:२२:३०:२७	१०:०९:३१:४९	११:२७:१४:५५	४३:३२:१५	द.१६:५८:३५	–१४:५९	२७:५३
६	११ मं	०९:२२:२२:२५	०८:०१:५५:०४	०८:२८:४७:०७	०९:०९:५१:३३	००:१४:२८:४९	०८:२३:४४:५८	१०:०९:३९:०४	११:२७:११:४४	४३:३३:५८	द.१६:४०:२३	–१५:०६	२८:४९
७	१२ बु	०९:२३:२३:२२	०८:१५:२७:५३	०८:२९:३२:२४	०९:११:३६:५६	००:१४:३५:३५	०८:२४:५९:३१	१०:०९:४६:२१	११:२७:०८:३४	४३:३५:४३	द.१६:२१:५४	–१५:१२	२९:४३
८	१३ गु	०९:२४:२४:१८	०८:२९:१४:४५	०९:००:१७:४५	०९:१३:२२:५१	००:१४:४२:३२	०८:२६:१४:०४	१०:०९:५३:३८	११:२७:११:२३	४३:३७:२८	द.१६:०३:०८	–१५:१७	३०:३३
९	१४ शु	०९:२५:२५:१२	०९:१३:१३:५०	०९:०१:०३:०९	०९:१५:०९:१४	००:१४:४९:३९	०८:२७:२८:३८	१०:१०:००:५७	११:२७:०२:१२	४३:३९:१५	द.१५:४४:०५	–१५:२२	०७:१७

२९ जनवरी सूर्योदयकालीन तिथिः४

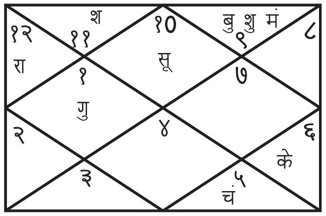

६ फरवरी सूर्योदयकालीन तिथिः११

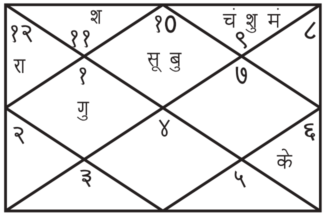

माघ कृष्णपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, २६ जनवरी से ९ फरवरी, २०२४ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःपूर्व । ऋतुःशिशिर उत्तरायणं । याम्यगोलः ।
ति·३० अयनांशाः२२:५२:२०

दिनाङ्क जनवरी	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
२६	१ शु	**गण्डान्तारम्भः२९:४२।**
२७	२ श	**गण्डान्तः१८:५३।**
२८	३ र	**भद्रा १५:१३–२८:१८घं·**, पूर्वाषाढ़ेशुक्रः घं·२२:०३।
२९	४ चं	**तिलकुट चौथ**, उत्तराषाढ़ेबुधः घं·१३:३७।
३०	५ मं	।
३१	५ बु	मकरेबुधः घं·१३:४५।
फरवरी	६ गु	**भद्रा १०:१६–२२:५९घं·।**
२	७ शु	।
३	८ श	उत्तराषाढ़ेमङ्गलः घं·११:५४। ① श्रवणायांबुधः घं·०९:२०।
४	९ र	**भद्रारंभः २४:४९घं·।** ② मकरेमङ्गलः घं·२१:५८।
५	१० चं	**भद्रांतः १२:४०घं·।** ③ उत्तराषाढ़ेशुक्रः घं·१५:४४।
६	११ मं	**गण्डान्तः ९:४८**, धनिष्ठायांरविः घं·२९:५६, ①
७	१२ बु	**श्रीशीतलनाथ जयन्ती**, मेरु त्रयोदशी (जैन) ②
८	१३ गु	**भद्रा ९:२५–२०:३२घं·, अभिजितः ३१:५५–४९:५९**, ③
९	१४ शु	द्वापरयुगादि, मेला हरिद्वार, प्रयाग।

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	१२:१९–१३:४३
३०	१२:२०–१३:४८

❀ भूमि सम्बन्धी समस्त अवरोध निवारक अचूक प्रयोग ❀ – *'नवग्रह विज्ञान'*

भूमि के क्रय विक्रय व भवननिर्माण सम्बन्धी समस्त अवरोधों–विघ्नबाधाओं के निवारण हेतु श्रीमद्देवीभागवत महापुराण के पृथ्वी स्तोत्र/भूमिदेवी महास्तोत्र का १२०० पाठ एक दुर्लभ एवं अविफल प्रयोग है। इसे इच्छित संकल्पपूर्वक स्वयं या ब्राह्मण द्वारा कराना चाहिए। जन्मकुण्डली के लग्न या चन्द्र से चतुर्थ भाव पर जब मंगल का गोचर होता है या दृष्टि पड़ती है तब भूमि संबंधी कार्य का योग बनता हैं। **प्रारूप संकल्प –** देशकाल संकीर्त्य अमुक गोत्रोत्पन्नोऽहं अमुक नामाहं मम भूमिसम्बन्धी क्रय–विक्रय–भवननिर्माण सम्बन्धी समस्त विघ्नबाधा–शत्रुकृतअवरोध निवारणार्थं उत्तमोत्तम मूल्ये भूमि विक्रयार्थं / उत्तमोत्तम शुभभूमि प्राप्त्यर्थं / सर्वबाधानिवृत्ति पूर्वकं ग्रहादीनां स्थितिवशात् उत्पन्नदोषेण च विघ्नानां प्रशमनपूर्वकं श्रीभूमिदेवी प्रीत्यर्थं श्रीभूमिदेवी महास्तोत्रस्य द्वादश शत पाठ कर्माहं करिष्ये/ब्राह्मणानां कारयिष्ये।

ध्यान–

श्वेतपंकजवर्णाभां शरच्चन्द्रनिभाननाम्।
चन्दनोत्क्षिप्तसर्वांगीं रत्नभूषणभूषिताम्।
रत्नाधारां रत्नगर्भां रत्नाकरसमन्विताम्।
वह्निशुद्धांशुकाधानां सस्मितां वन्दितां भजे।

श्वेतकमल के समान आभा युक्त, शरदपूर्णिमा के चन्द्रमा के समान मुख वाली, जिनके सम्पूर्ण अंग चन्दन से लिप्त हैं, जो रत्नमय अलंकारों से सुशोभित हैं, रत्नों की आधारस्वरूपा हैं, रत्नगर्भा हैं व रत्नों के आकर (खान) से समन्वित हैं। जो अग्नि सदृश शुद्ध वस्त्र धारण किए हैं, मुस्कान से युक्त हैं व सभी के द्वारा वन्दित हैं। मैं ऐसी पृथ्वीदेवी का ध्यान करता हूँ।

पृथ्वीस्तोत्र–

श्रीनारायण उवाच

जये जये जलाधारे जलशीले जलप्रदे।
यज्ञसूकरजाये त्वं जयं देहि जयावहे ।।
मङ्गले मङ्गलाधारे माङ्गल्ये मङ्गलप्रदे।
मङ्गलार्थं मङ्गलेशे मङ्गलं देहि मे भवे ।।
सर्वाधारे च सर्वज्ञे सर्वशक्तिसमन्विते।
सर्वकामप्रदे देवि सर्वेष्टं देहि मे भवे ।।
पुण्यस्वरूपे पुण्यानां बीजरूपे सनातनि।
पुण्याश्रये पुण्यवतामालये पुण्यदे भवे ।।
सर्वशस्यालये सर्वशस्याढ्ये सर्वशस्यदे।
सर्वशस्यहरे काले सर्वशस्यात्मिके भवे।।
भूमे भूमिपसर्वस्वे भूमिपालपरायणे ।
भूमिपानां सुखकरे भूमिं देहि च भूमिदे ।।
इदं स्तोत्रं महापुण्यं प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
कोटिजन्मसु स भवेद्बलवान्भूमिपेश्वरः।।
भूमिदानकृतं पुण्यं लभ्यते पठनाज्जनैः।
भूमिदानहरात्पापान्मुच्यते नात्र संशयः।।
अम्बुवाची भूकरणपापात्स मुच्यते ध्रुवम्।
अन्यकूपे कूपखननपापात्स मुच्यते ध्रुवम्।।
परभूमिहरात्पापान्मुच्यते नात्र संशयः।
भूमौ वीर्यत्यागपापाद्भूमौ दीपादिस्थापनात्।।
पापेन मुच्यते सोऽपि स्तोत्रस्य पठनान्मुने।
अश्वमेधशतं पुण्यं लभते नात्र संशयः ।।
भूमिदेव्या महास्तोत्रं सर्वकल्याणकारकम्।।
।। इति भूमिदेवीमहास्तोत्रम् ।।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

जनवरी	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
२६	११:२०	१२:५६	१४:५१	१७:०५	१९:२६	२१:४२	२३:५७	०२:१६	०४:३५	०६:४०	०८:२५	०९:५४
२७	११:१६	१२:५२	१४:४७	१७:०१	१९:२२	२१:३८	२३:५३	०२:१२	०४:३१	०६:३६	०८:२१	०९:५०
२८	११:१२	१२:४८	१४:४३	१६:५७	१९:१८	२१:३४	२३:४९	०२:०८	०४:२७	०६:३२	०८:१७	०९:४६
२९	११:०८	१२:४४	१४:३९	१६:५३	१९:१४	२१:३०	२३:४५	०२:०४	०४:२३	०६:२८	०८:१३	०९:४२
३०	११:०४	१२:४०	१४:३५	१६:५०	१९:१०	२१:२६	२३:४१	०२:००	०४:१९	०६:२४	०८:०९	०९:३८
३१	११:००	१२:३६	१४:३१	१६:४६	१९:०६	२१:२२	२३:३७	०१:५६	०४:१५	०६:२०	०८:०५	०९:३४
फरवरी	१०:५६	१२:३२	१४:२७	१६:४२	१९:०२	२१:१८	२३:३३	०१:५२	०४:११	०६:१६	०८:०१	०९:३०
२	१०:५२	१२:२८	१४:२३	१६:३८	१८:५८	२१:१४	२३:२९	०१:४८	०४:०७	०६:१२	०७:५७	०९:२६
३	१०:४८	१२:२४	१४:१९	१६:३४	१८:५४	२१:१०	२३:२५	०१:४४	०४:०३	०६:०८	०७:५३	०९:२२
४	१०:४४	१२:२०	१४:१६	१६:३०	१८:५०	२१:०६	२३:२१	०१:४०	०३:५९	०६:०५	०७:४९	०९:१८
५	१०:४०	१२:१६	१४:१२	१६:२६	१८:४६	२१:०२	२३:१७	०१:३६	०३:५५	०६:०१	०७:४५	०९:१४
६	१०:३६	१२:१२	१४:०८	१६:२२	१८:४२	२०:५८	२३:१३	०१:३२	०३:५१	०५:५७	०७:४१	०९:१०
७	१०:३२	१२:०८	१४:०४	१६:१८	१८:३८	२०:५४	२३:०९	०१:२८	०३:४७	०५:५३	०७:३७	०९:०६
८	१०:२८	१२:०४	१४:००	१६:१४	१८:३४	२०:५१	२३:०५	०१:२४	०३:४३	०५:४९	०७:३३	०९:०२
९	१०:२४	१२:००	१३:५६	१६:१०	१८:३०	२०:४७	२३:०२	०१:२०	०३:३९	०५:४५	०७:२९	०८:५८

जनवरी	卐 सर्वार्थसिद्धि, रवि आदि योग 卐
२६	**सिद्ध**·१, **मृत्यु**·२
२८	**सिद्ध**·३
२९	**अमृत**·५,
३१	**सर्वार्थ**·ह, **अमृत**·६, **रवियोग**:चि,
फरवरी	**रवियोग**:चि,
२	**मृत्यु**·७,
३	**सिद्ध**·९,
४	**अमृत**·१०,
५	**अमृत**·१०, **सिद्ध**·११,
६	**द·ति**·१२, **मृत्यु**·११, **अमृत**·१२,
७	**द·ति**·१२, **सिद्ध**·१२, **मृत्यु**·१३,
८	**अमृत**·१३, **मृत्यु**·१४,
९	**सर्वार्थ**·श्र, **अमृत**·१४, **सिद्ध**·१,

❀ माघमास में स्नान दान व्रत नियम का महत्व ❀

पद्मपुराण के उत्तरखण्ड में माघमास के माहात्म्य का वर्णन करते हुए कहा है कि व्रत, दान और तपस्या से भी भगवान् श्रीहरि को उतनी प्रसन्नता नहीं होती, जितनी कि माघ महीने में स्नानमात्र से होती है। इसलिये स्वर्गलाभ, सभी पापों से मुक्ति और भगवान् वासुदेव की प्रीति प्राप्त करने के लिये प्रत्येक मनुष्य को माघ स्नान करना चाहिये।*(पद्मपुराण)* माघमास में पूर्णिमा को जो व्यक्ति ब्रह्मवैवर्त पुराण दान करता है, उसे ब्रह्मलोक प्राप्ति होती है । *(मत्स्यपुराण ५३/३५)* माघ मास में स्नान, दान, उपवास और भगवान् माधव की पूजा अत्यन्त फलदायी है। महाभारत के अनुशासनपर्व में कहा है– हे भरतश्रेष्ठ ! माघमास की अमावास्या को प्रयागराज में तीन करोड़ दस हजार अन्य तीर्थों का समागम होता है। जो नियमपूर्वक उत्तम व्रत का पालन करते हुए माघमास में प्रयाग में स्नान करता है, वह सब पापों से मुक्त होकर स्वर्ग में जाता है। *(महा, अनु २५/३६–३८)* जो माघमास में ब्राह्मणों को तिल दान करता है, वह समस्त जन्तुओं से भरे हुए नरक का दर्शन नहीं करता। *(महा०, अनु० ६६/८)* जो माघ मास को नियमपूर्वक एक समय के भोजन से व्यतीत करता है, वह धनवान् कुल में जन्म लेकर अपने कुटुम्बीजनों में महत्त्व को प्राप्त होता है।*(महा०, अनु० १०६/ २१)*

माघ शुक्लपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, १० फरवरी से २४ फरवरी, २०२४ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– १०:२:२०२४ मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः; मार्गी शनिःपश्चिमास्तः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपूर्वास्तः;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
फरवरी	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	१० फरवरी से २४ फरवरी २०२४
१०	१ श	५०:०५	२७:१५	धनि·	३९:०६	२२:५२	वरी·	२४:२०	१६:५७	किं	२२:५६	बव	५०:०५	२७:२२	७:१३	१८:१०	कु·११:०३	११:३९	प्रवर्द्ध	२६	१०	**गुप्त नवरात्र आरम्भः**, श्रीमद् वल्लभाचार्य जयन्ती
११	२ र	४४:१३	२४:५४	शत·	३५:०२	२१:१३	परिघ	१६:३७	१३:५१	बाल	१७:११	कौल	४४:१३	२७:२५	७:१३	१८:११	कुंभ	अहोरात्र	राक्षस	२७	११	
१२	३ चं	३८:१९	२२:३१	पू·भा·	३०:५२	१९:३३	शिव	०८:४६	१०:४२	तैति	११:१६	गर	३८:१९	२७:२९	७:१२	१८:१२	मी·१६:५५	१३:५८	मुसल	२८	१२	**गौरी तृतीया**
१३	४ मं	३२:३५	२०:१३	उ·भा·	२६:५२	१७:५६	सिद्ध साध्य	००:५९ ५२:२३	०७:३५ २८:३२	वणि	०५:२६	विष	३२:३५	२७:३३	७:११	१८:१२	मीन	अहोरात्र	सिद्धि	२९	१३	**वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी**, उमा चतुर्थी, तिल चौथ
१४	५ बु	२७:१३	१८:०४	रेवती	२३:१२	१६:२७	शुभ	४६:०८	२५:३८	बाल	२७:१३	कौल	५४:४३	२७:३६	७:१०	१८:१३	मे·२३:१२	१६:२७	उत्पात	१	१४	**श्रीवसन्तपञ्चमी, श्रीसरस्वती पूजन,**
१५	६ गु	२२:२५	१६:०८	अश्वि·	२०:०४	१५:११	शुक्ल	३९:२५	२२:५६	तैति	२२:२५	गर	५०:१६	२७:४०	७:१०	१८:१४	मेष	अहोरात्र	मानस	२	१५	मन्दार षष्ठी, शनि पश्चिमास्त घं·१२:२७,
१६	७ शु	१८:२२	१४:३	भरणी	१७:४१	१४:१३	ब्रह्म	३३:१९	२०:२९	वणि	१८:२२	विष	४६:३९	२७:४४	७:०९	१८:१५	वृ·३२:१२	१९:०२	मुद्गर	३	१६	**भानुसप्तमी, रथसप्तमी**, श्री देवनारायण जयन्ती
१७	८ श	१५:१२	१३:१३	कृत्ति·	१६:१०	१३:३६	ऐन्द्र	२७:६०	१८:२०	बव	१५:१२	बाल	४४:००	२७:४८	७:०८	१८:१५	वृष	अहोरात्र	ध्वज	४	१७	**श्रीदुर्गाष्टमी व्रतम्**, भीष्माष्टमी (मध्याह्नव्यापिनी)
८	९ र	१३:०७	१२:२२	रोहि·	१५:४२	१३:२४	वैधृ·	२३:३२	१६:३२	कौल	१३:०७	तैति	४२:३०	२७:५१	७:०७	१८:१६	मि·४५:५३	२५:२९	धाता	५	१८	**गुप्त नवरात्र समाप्तिः**, महानन्दा नवमी
१९	१० चं	१२:१३	१२:०१	मृग·	१६:२५	१३:४०	विष्कु·	२०:००	१५:०७	गर	१२:१३	वणि	४२:१३	२७:५५	७:०६	१८:१७	मिथुन	अहोरात्र	आनन्द	६	१९	**गुप्त नवरात्रोत्थापन, श्री अजीतनाथ जयन्ती**
२०	११ मं	१२:३५	१२:०८	आर्द्रा	१८:२१	१४:२६	प्रीति	१७:२९	१४:०५	विष	१२:३५	बव	४३:१४	२७:५९	७:०६	१८:१७	मिथुन	अहोरात्र	सुस्थिर	७	२०	**श्रीजया एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त)**,
२१	१२ बु	१४:१५	१२:४७	पुन·	२१:३२	१५:४२	आयु·	१५:५७	१३:२८	बाल	१४:१५	कौल	४५:३१	२८:०३	७:०५	१८:१८	क·०५:३८	०९:२०	गद	८	२१	**श्रीभीष्म द्वादशी, श्री जया महाद्वादशी**, तिलद्वादशी,
२२	१३ गु	१७:०८	१३:५५	पुष्य	२५:५३	१७:२५	सौभा·	१५:२१	१३:१२	तैति	१७:०८	गर	४८:५९	२८:०७	७:०४	१८:१९	कर्क	अहोरात्र	शुभ	९	२२	**प्रदोष व्रतम्**, मुनि श्री गोरखनाथ जयन्ती
२३	१४ शु	२१:०७	१५:३०	आश्ले·	३१:१६	१९:३३	शोभ·	१५:३५	१३:१७	वणि	२१:०७	विष	५३:२५	२८:११	७:०३	१८:२०	सिं·३१:१६	१९:३३	मृत्यु	१०	२३	**पूर्णिमा व्रतम्**, श्री रामचरण स्नेही जयन्ती
२४	१५ श	२५:५६	१७:२४	मघा	३७:२३	२१:५९	अतिग·	१६:२९	१३:३८	बव	२५:५६	बाल	५८:३२	२८:१५	७:०२	१८:२०	सिंह	अहोरात्र	पद्म	११	२४	**माघी पूर्णिमा (व्रत–स्नान–दान), होलिका रोपण**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क फरवरी	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	राहुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
१०	१ श	०९:२६:२६:०५	०९:२७:२२:४२	०९:०१:४८:३५	०९:१६:५६:०२	००:१४:५६:५५	०८:२८:४३:१२	१०:१०:०८:१७	११:२६:५९:०२	४३:४१:०२	द·१५:२४:४७	–१५:२५	०७:१७
११	२ र	०९:२७:२६:५६	१०:११:३८:२३	०९:०२:३४:०५	०९:१८:४३:१३	००:१५:०४:२१	०८:२९:५७:४७	१०:१०:१५:३८	११:२६:५५:५१	४३:४२:५१	द·१५:०५:१३	–१५:२८	०७:५९
१२	३ चं	०९:२८:२७:४६	१०:२५:५७:३५	०९:०३:१९:३८	०९:२०:३०:४३	००:१५:११:५७	०९:०१:१२:२३	१०:१०:२२:५९	११:२६:५२:४०	४३:४४:४१	द·१४:४५:२३	–१५:३०	०८:३८
१३	४ मं	०९:२९:२८:३४	११:१०:१६:२४	०९:०४:०५:१४	०९:२२:१८:२८	००:१५:१९:४२	०९:०२:२६:६०	१०:१०:३०:२२	११:२६:४९:३०	४३:४६:३१	द·१४:२५:२०	–१५:३१	०९:१६
१४	५ बु	१०:००:२९:२१	११:२४:३१:०८	०९:०४:५०:५३	०९:२४:०६:२७	००:१५:२७:३६	०९:०३:४१:३६	१०:१०:३७:४५	११:२६:४६:१९	४३:४८:२३	द·१४:०५:०१	–१५:३१	१०:३५
१५	६ गु	१०:०१:३०:०६	००:०८:३८:२८	०९:०५:३६:३५	०९:२५:५४:३६	००:१५:३५:४०	०९:०४:५६:१४	१०:१०:४५:०९	११:२६:४३:०९	४३:५०:१५	द·१३:४४:२९	–१५:३०	१०:३४
१६	७ शु	१०:०२:३०:५०	००:२२:३५:३५	०९:०६:२२:२०	०९:२७:४२:४९	००:१५:४३:५२	०९:०६:१०:५२	१०:१०:५२:३४	११:२६:३९:५८	४३:५२:०८	द·१३:२३:४४	–१५:२९	११:१८
१७	८ श	१०:०३:३१:३२	०१:०६:२०:०५	०९:०७:०८:०७	०९:२९:३१:०३	००:१५:५२:१४	०९:०७:२५:३०	१०:१०:५९:५९	११:२६:३६:४७	४३:५४:०२	द·१३:०२:४६	–१५:२६	१२:०२
१८	९ र	१०:०४:३२:१३	०१:१९:५०:१७	०९:०७:५३:५८	१०:०१:१९:१४	००:१६:००:४४	०९:०८:४०:०८	१०:११:०७:२५	११:२६:३३:३७	४३:५५:५७	द·१२:४१:३५	–१५:२३	१२:५३
१९	१० चं	१०:०५:३२:५१	०२:०३:०५:१२	०९:०८:३९:५२	१०:०३:०७:१९	००:१६:०९:२३	०९:०९:५४:४७	१०:११:१४:५१	११:२६:३०:२६	४३:५७:५२	द·१२:२०:१२	–१५:२०	१३:४४
२०	११ मं	१०:०६:३३:२९	०२:१६:०४:३५	०९:०९:२५:४९	१०:०४:५५:१७	००:१६:१८:११	०९:११:०९:२६	१०:११:२२:१७	११:२६:२७:१५	४३:५९:४८	द·११:५८:३८	–१५:१५	१४:४१
२१	१२ बु	१०:०७:३४:०४	०२:२८:४८:५९	०९:१०:११:४८	१०:०६:४३:०२	००:१६:२७:०७	०९:१२:२४:०६	१०:११:२९:४४	११:२६:२४:०५	४४:०१:४४	द·११:३६:५२	–१५:१०	१५:३७
२२	१३ गु	१०:०८:३४:३८	०३:११:१९:३९	०९:१०:५७:५१	१०:०८:३०:३४	००:१६:३६:११	०९:१३:३८:४६	१०:११:३७:११	११:२६:२०:५४	४४:०३:४१	द·११:१४:५५	–१५:०४	१६:३३
२३	१४ शु	१०:०९:३५:०९	०३:२३:३८:३४	०९:११:४३:५६	१०:१०:१७:४७	००:१६:४५:२३	०९:१४:५३:२५	१०:११:४४:३८	११:२६:१७:४३	४४:०५:३९	द·१०:५२:४८	–१४:५७	१७:२८
२४	१५ श	१०:१०:३५:३९	०४:०५:४८:१९	०९:१२:३०:०४	१०:१२:०४:३९	००:१६:५४:४४	०९:१६:०८:०५	१०:११:५२:०५	११:२६:१४:३३	४४:०७:३७	द·१०:३०:३१	–१४:५०	१८:२२

१३ फरवरी सूर्योदयकालीन तिथि:**४**

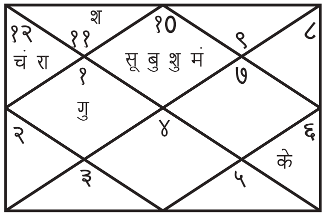

२० फरवरी सूर्योदयकालीन तिथि:**११**

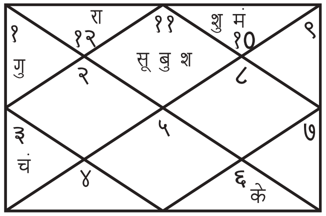

माघ शुक्लपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, १० फरवरी से २४ फरवरी, २०२४ ईस्वी

पक्षान्तः – कालःदक्षिण । ऋतुःशिशिर । उत्तरायणं ।
याम्यगोलः । ति·१५ अयनांशाः२२:५२:२२

दिनाङ्क फरवरी	तिथि वार	व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·)
१०	१ श	**पंचकारंभः** ११:३९, ब्रज महोत्सव ३ दिन भरतपुर।
११	२ र	**पंचक**, मकरेशुक्रः घं·०८:०२।
१२	३ चं	**पंचक**, मासान्तः। ① कुम्भेरविः घं·१९:३६, धनिष्ठायांबुधः घं·२१:००।
१३	४ मं	**भद्रा ९:२२–२०:१४घं·, पंचक, कुम्भ संक्रान्ति पुण्यकालं**, ०७:११–०९:३६घं·, **श्रीविमलनाथ जयंती** ①
१४	५ बु	**श्रीगोविन्ददेवजी पाटोत्सव,जयपुर, पंचकान्तः१६:२८**,मदनोत्सव, **गण्डान्तः१०:४९–२२:०७** ②
१५	६ गु	दरिद्रहरण षष्ठी (स्कन्द पुराणे)। ② रतिकाममहोत्सव, मासादिः।
१६	७ शु	मर्यादा महोत्सव (जैन), मेला तामड़िया भैरूंजी (चाकसू), मन्वादि, **भद्रा १४:३०–२५:४९घं·।**
१७	८ श	**श्री भीष्माष्टमी, मन्वादि**, भीष्मोद्देशेन श्राद्धतर्पणं, कुम्भेबुधः घं·१३:४२।
१८	९ र	③ शतभिषायांबुधःघं·३०:३३, श्रवणायांमङ्गलःघं·२५:०३।
१९	१० चं	श्रवणायांशुक्रः घं·०८:५४, **भद्रारंभः २४:००घं·।** ④ दीर्घायुलाभाय तिल से विष्णुपूजन
२०	११ मं	**भद्रांतः १२:०८घं·**, मेला बेणेश्वर प्रारम्भ १० दिन (डूंगरपुर), शतभिषायांरविः घं·०९:४२, ③
२१	१२ बु	**श्रीवाराह द्वादशी**, भीष्मोद्देशेन श्राद्धतर्पणं, **श्री अभिनन्दननाथ जयंती**, सन्तान द्वादशी। ④
२२	१३ गु	**श्री धर्मनाथ जयन्ती**, मरू महोत्सव ३ दिन (जैसलमेर)।
२३	१४ शु	अग्निउत्सव उड़ीसा, श्री जिनेन्द्र रथयात्रा (जैन), **भद्रा १५:३०–२८:२६घं·, गण्डान्तः१२:६०–२६:०९।**
२४	१५ श	**माघस्नान समाप्त, श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा, श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी राजराजेश्वरी ललिता जयन्ती**, गुरु रविदास जयन्ती, बेणेश्वर मुख्यमेला डूंगरपुर।

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	१२:२०–१३:४८
१५	१२:१९–१३:४९

❀ वसन्त पञ्चमी सरस्वती पूजन ❀

विद्यार्थी यदि एक पीत पुष्प चढ़ाकर भगवती सरस्वती का कोई स्तोत्र पाठ करले तब भी वह विद्या के क्षेत्र में सफलता को प्राप्त करता है। सरस्वती देवी की आराधना से साधारण व्यक्ति को विशिष्ट प्रतिभा प्राप्त होती है और विशिष्ट बुद्धि वाला अतीन्द्रिय ज्ञान सम्पन्न हो जाता है।

❀ वैदिक मन्त्र ❀

ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञम् वष्टु धिया वसुः ।। *ऋग्वेद १/३/१०*
ॐ चोदयित्री सुनृतानां चेतन्ती सुमतीनाम्। यज्ञम् दधे सरस्वती ।। *ऋग्वेद १/३/११*
ॐ अम्बितमे नदीतमे देवीतमे सरस्वती। अप्रशस्ता इव स्मसि प्रशस्तिमम्ब नस्कृधि।। *१/४१/१६*

❀ महर्षि आश्वलायन कृत स्तोत्र ❀

ॐ चतुर्मुख-मुखाम्भोज-वनहंस-वधूर्मम । मानसे रमतां नित्यं सर्वशुक्ला सरस्वती ।।
ॐ नमस्ते शारदे देवि काश्मीर-पुर-वासिनी । त्वामहं प्रार्थये नित्यं विद्यादानं च्र देहि मे ।।
ॐ अक्षसूत्र-धरा पाश- पुस्तक- धारिणी । मुक्ताहार-समायुक्ता वाचि तिष्ठतु मे सदा ।।
ॐ कम्बुकण्ठी सुताम्रोष्ठी सर्वाभरणभूषिता । महासरस्वती देवी जिह्वाग्रे संनिविश्यताम् ।।
ॐ या श्रद्धा धारणा मेधा वाग्देवी विधिवल्लभा। भक्तजिह्वाग्र-सदना शमादि-गुणदायिनी ।।
ॐ नमामि यामिनीनाथ लेखालंकृत-कुन्तलाम् । भवानीं भव- संताप -निर्वापण -सुधानदीम् ।।

❀ सरस्वती - स्तोत्र ❀

या कुन्देन्दु-तुषार-हार-धवला या शुभ्रवस्त्रावृता। या वीणा वर दण्ड मण्डित करा या श्वेतपद्मासना ।
या ब्रह्माच्युत शंकर प्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता। सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ।।
शुक्लां ब्रह्म विचारसार परमामाद्यां जगद्व्यापिनीं। वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फटिकमालिकां च दधतीम् पद्मासनेसंस्थितां। वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्।।
सरस्वति महाभागे विद्ये कमल-लोचने । विद्यारूपे विशालाक्षि विद्यां देहि नमोस्तुते ।।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

फरवरी	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१०	१०:२०	११:५६	१३:५२	१६:०६	१८:२६	२०:४३	२२:५८	०१:१६	०३:३५	०५:४१	०७:२५	०८:५४
११	१०:१६	११:५२	१३:४८	१६:०२	१८:२२	२०:३९	२२:५४	०१:१२	०३:३१	०५:३७	०७:२१	०८:५०
१२	१०:१२	११:४८	१३:४४	१५:५८	१८:१८	२०:३५	२२:५०	०१:०८	०३:२७	०५:३३	०७:१७	०८:४६
१३	१०:०८	११:४४	१३:४०	१५:५४	१८:१४	२०:३१	२२:४६	०१:०५	०३:२३	०५:२९	०७:१३	०८:४२
१४	१०:०४	११:४०	१३:३६	१५:५०	१८:१०	२०:२७	२२:४२	०१:०१	०३:१९	०५:२५	०७:०९	०८:३९
१५	१०:००	११:३६	१३:३२	१५:४६	१८:०६	२०:२३	२२:३८	००:५७	०३:१५	०५:२१	०७:०५	०८:३५
१६	०९:५७	११:३२	१३:२८	१५:४२	१८:०२	२०:१९	२२:३४	००:५३	०३:१२	०५:१७	०७:०१	०८:३१
१७	०९:५३	११:२९	१३:२४	१५:३८	१७:५८	२०:१५	२२:३०	००:४९	०३:०८	०५:१३	०६:५८	०८:२७
१८	०९:४९	११:२५	१३:२०	१५:३४	१७:५४	२०:११	२२:२६	००:४५	०३:०४	०५:०९	०६:५४	०८:२३
१९	०९:४५	११:२१	१३:१६	१५:३०	१७:५१	२०:०७	२२:२२	००:४१	०३:००	०५:०५	०६:५०	०८:१९
२०	०९:४१	११:१७	१३:१२	१५:२६	१७:४७	२०:०३	२२:१८	००:३७	०२:५६	०५:०१	०६:४६	०८:१५
२१	०९:३७	११:१३	१३:०८	१५:२२	१७:४३	१९:५९	२२:१४	००:३३	०२:५२	०४:५७	०६:४२	०८:११
२२	०९:३३	११:०९	१३:०४	१५:१८	१७:३९	१९:५५	२२:१०	००:२९	०२:४८	०४:५३	०६:३८	०८:०७
२३	०९:२९	११:०५	१३:००	१५:१५	१७:३५	१९:५१	२२:०६	००:२५	०२:४४	०४:४९	०६:३४	०८:०३
२४	०९:२५	११:०१	१२:५६	१५:११	१७:३१	१९:४७	२२:०२	००:२१	०२:४०	०४:४५	०६:३०	०७:५९

फरवरी	सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग
१०	**अमृत**·१
११	**त्रिपुष्कर**ः२+पूभा, **सिद्ध**·३,
१२	**रवियोग**ःउभा,
१३	**सर्वार्थ**·उभा, **रवियोग**ःउभा,
१४	**रवियोग**ःअ, **अमृत**·६,
१५	**सर्वार्थ**·अ, **रवियोग**ःअ,
१६	**मृत्यु**·७,
१७	**सिद्ध**·९, **सर्वार्थ**·रो, **रवियोग**ःरो,
१८	**रवियोग**ःरो, **अमृत**·१०, **रवियोग**ःमृ
१९	**सर्वार्थ**·मृ, **अमृत**·१०, **रवियोग**ःमृ, **सिद्ध**·११,
२०	**मृत्यु**·११, **अमृत**·१२, **रवियोग**ःआ, **त्रिपुष्कर**ः१२+पुन,
२१	**सिद्ध**·१२, **मृत्यु**·१३,
२२	**सर्वार्थ**·पु, **अमृत**·१३, **मृत्यु**·१४, **रवियोग**ःआश्ले,
२३	**अमृत**·१४, **रवियोग**ःआश्ले,
२४	**मृत्यु**·१५, **अमृत**·१,

❀ **माघ शुक्ल प्रतिपदा से नवमी** तक **गुप्त नवरात्रि** की आराधना चलती है।

❀ कुंदचतुर्थी, **तिलचतुर्थी** में गणेश जी को तिल का लड्डू चढ़ाया जाता है। गौरी माता को कुंद अर्पित किया जाता है।

❀**माघ शुक्ल पञ्चमी** के दिन विद्या की अधिष्ठात्री भगवती सरस्वती का पूजन करें। नैवेद्य भी अधिकाधिक पीले व्यंजनों का भोग लगावें। **वसंत पंचमी** के दिन से संवत् होलिका गाड़कर उसमें ईंधन डालने की प्रक्रिया लोक में शुरू होती है जो होलिकादाह के दिन जलाई जाती है।

❀**माघी पूर्णिमा** को कल्पवास की समाप्ति व भगवती ललिता महात्रिपुरसुन्दरी की जयन्ती मनाई जाती है। माघी पूर्णिमा को पितृलोक का द्वार खुला रहता है, इस दिन दान-धर्म, श्राद्ध-तर्पण का अपूर्व महत्व है। माघ स्नान और दान का मास है।

फाल्गुन कृष्णपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, २५ फरवरी से १० मार्च, २०२४ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– २५:२:२०२४ मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः; मार्गी शनिःपश्चिमास्तः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपूर्वास्त;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः	
फरवरी	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी
२५	१ र	३१:१५	१९:३१	पू·फा·	४३:५६	२४:३५	सुकर्मा	१७:४८	१४:०८	कौल	३१:१५	तैति	६०:००	२८:१९	७:०१	१८:२१	सिंह	अहोरात्र	छत्र	१२	२५
२६	२ चं	३६:३८	२१:३९	उ·फा·	५०:२७	२७:११	धृति	१९:१४	१४:४२	तैति	०३:५९	गर	३६:३८	२८:२३	७:००	१८:२१	कं·००:३६	०७:१५	श्रीवत्स	१३	२६
२७	३ मं	४१:३९	२३:३९	हस्त	५६:३२	२९:३६	शूल	२०:२९	१५:११	वणि	०९:१४	विष	४१:३९	२८:२७	६:५९	१८:२२	कन्या	अहोरात्र	सौम्य	१४	२७
२८	४ बु	४५:५५	२५:२०	चित्रा	६०:००	अहोरात्र	गण्ड	२१:१६	१५:२९	बव	१३:५५	बाल	४५:५५	२८:३१	६:५८	१८:२३	तु·२९:२०	१८:४२	कालदंड	१५	२८
२९	५ गु	४९:०९	२६:३७	चित्रा	०१:५३	०७:४३	वृद्धि	२१:२१	१५:३०	कौल	१७:४२	तैति	४९:०९	२८:३५	६:५७	१८:२३	तुला	अहोरात्र	सुस्थिर	१६	२९
मार्च	६ शु	५१:१२	२७:२५	स्वाती	०६:१०	०९:२४	ध्रुव	२०:३५	१५:१०	गर	२०:२१	वणि	५१:१२	२८:३९	६:५६	१८:२४	वृ·५३:३६	२८:२३	गद	१७	मार्च
२	७ श	५१:५८	२७:४३	विशा·	०९:१७	१०:३८	व्याघ·	१८:५१	१४:२८	विष	२१:४६	बव	५१:५८	२८:४३	६:५५	१८:२५	वृश्चिक	अहोरात्र	शुभ	१८	२
३	८ र	५१:२६	२७:२९	अनु·	११:०९	११:२२	हर्षण	१६:०८	१३:२२	बाल	२१:५३	कौल	५१:२६	२८:४७	६:५४	१८:२५	वृश्चिक	अहोरात्र	मृत्यु	१९	३
४	९ चं	४९:४२	२६:४६	ज्ये·	११:४७	११:३६	वज्र	१२:२६	११:५२	तैति	२०:४४	गर	४९:४२	२८:५१	६:५३	१८:२६	ध·११:४७	११:३६	पद्म	२०	४
५	१० मं	४६:५०	२५:३६	मूल	११:१५	११:२२	सिद्धि	०७:४८	१०:००	वणि	१८:२५	विष	४६:५०	२८:५५	६:५२	१८:२६	धनु	अहोरात्र	छत्र	२१	५
६	११ बु	४३:०१	२४:०४	पू·षा·	०९:४१	१०:४३	व्यति· वरी·	०२:२० ५३:४६	०७:४७ २९:१७	बव	१५:०३	बाल	४३:०१	२८:५९	६:५१	१८:२७	म·२४:०८	१६:३१	श्रीवत्स	२२	६
७	१२ गु	३८:२४	२२:१२	उ·षा·	०७:१४	०९:४४	परिघ	४९:१७	२६:३३	कौल	१०:४९	तैति	३८:२४	२९:०३	६:५०	१८:२८	मकर	अहोरात्र	ध्वांक्ष	२३	७
८	१३ शु	३३:०९	२०:०५	श्रवण	०४:०५	०८:२७	शिव	४२:०१	२३:३७	गर	०५:५१	वणि	३३:०९	२९:०७	६:४९	१८:२८	कु·३२:१६	१९:४४	धूम्र	२४	८
९	१४ श	२७:२८	१७:४७	धनि· शत·	००:२३ ५५:५७	०६:५७ २९:२०	सिद्ध	३४:२५	२०:३४	विष	००:२२	बव	२७:२८	२९:११	६:४८	१८:२९	कुंभ	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	२५	९
१०	३० र	२१:३३	१५:२४	पू·भा·	५२:११	२७:३९	साध्य	२६:३९	१७:२७	नाग	२१:३३	किं	४८:३३	२९:१५	६:४७	१८:२९:	मी·३८:१४	२२:०४	सुस्थिर	२६	१०

卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐

२५ फरवरी से १० मार्च २०२३

- २६ — वीर सावरकर पुण्यतिथि
- २७ — कल्पादि
- २८ — **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी, चन्द्रोदय घं·२१:३२**
- २९ — श्रीमहाकाल शिवनवरात्र महोत्सव (उज्जैन)
- ३ — **श्रीकालाष्टमी,** श्रीनाथजी पाटोत्सव (नाथद्वारा)
- ४ — समर्थ गुरु रामदास जयन्ती
- ५ — स्वामी दयानन्द सरस्वती जयन्ती (आर्यसमाज)
- ६ — **श्री विजया एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त)**
- ७ — **श्री विजया एकादशी (निम्बार्क)**
- ८ — **शनि प्रदोष व्रतम्, श्रीमहाशिवरात्रि व्रतम् ❀ ❀ सर्वत्रशिवपूजन–अभिषेक**
- १० — **सोमवती अमावस्या (देव–पितृकार्य)**

❀ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❀

दिनाङ्क फरवरी	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	राहुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
२५	१ र	१०:११:३६:०८	०४:१७:५१:५५	०९:१३:१६:१५	१०:१३:५१:०७	००:१७:०४:१३	०९:१७:२२:४६	१०:११:५९:३२	११:२६:११:२२	४४:०९:३६	द·१०:०८:०५	–१४:४२	१९:१४
२६	२ चं	१०:१२:३६:३४	०४:२९:५२:४६	०९:१४:०२:२९	१०:१५:३७:०७	००:१७:१३:४९	०९:१८:३७:२६	१०:१२:०६:५९	११:२६:०८:११	४४:११:३५	द·०९:४५:२९	–१४:३३	२०:०७
२७	३ मं	१०:१३:३६:५९	०५:११:५४:५१	०९:१४:४८:४६	१०:१७:२२:३६	००:१७:२३:३३	०९:१९:५२:०६	१०:१२:१४:२६	११:२६:११:०१	४४:१३:३५	द·०९:२२:४४	–१४:२४	२०:५९
२८	४ बु	१०:१४:३७:२१	०५:२४:०१:४७	०९:१५:३५:०५	१०:१९:०७:२९	००:१७:३३:२५	०९:२१:०६:४६	१०:१२:२१:५३	११:२६:०१:५०	४४:१५:३५	द·०८:५९:५२	–१४:१४	२१:५३
२९	५ गु	१०:१५:३७:४२	०६:०६:१६:४३	०९:१६:२१:२७	१०:२०:५१:४४	००:१७:४३:२४	०९:२२:२१:२७	१०:१२:२९:२०	११:२५:५८:४०	४४:१७:३५	द·०८:३६:५१	–१४:०३	२२:४८
मार्च	६ शु	१०:१६:३८:०१	०६:१८:४२:२८	०९:१७:०७:५२	१०:२२:३५:१६	००:१७:५३:३०	०९:२३:३६:०७	१०:१२:३६:४७	११:२५:५५:२९	४४:१९:३६	द·०८:१३:४३	–१३:५२	२३:४५
२	७ श	१०:१७:३८:१८	०७:०१:२१:१३	०९:१७:५४:१९	१०:२४:१७:६०	००:१८:०३:४४	०९:२४:५०:४७	१०:१२:४४:१४	११:२५:५२:१८	४४:२१:३७	द·०७:५०:२८	–१३:४०	२४:४२
३	८ र	१०:१८:३८:३३	०७:१४:१४:३२	०९:१८:४०:४९	१०:२५:५९:५३	००:१८:१४:०५	०९:२६:०५:२७	१०:१२:५१:४२	११:२५:४९:०८	४४:२३:३९	द·०७:२७:०६	–१३:२८	२५:४०
४	९ चं	१०:१९:३८:४६	०७:२७:२३:१६	०९:१९:२७:२१	१०:२७:४०:४९	००:१८:२४:३२	०९:२७:२०:०८	१०:१२:५९:०९	११:२५:४५:५७	४४:२५:४०	द·०७:०३:३८	–१३:१५	२६:३९
५	१० मं	१०:२०:३८:५७	०८:१०:४७:२८	०९:२०:१३:५६	१०:२९:२०:४३	००:१८:३५:०७	०९:२८:३४:४८	१०:१३:०६:३७	११:२५:४२:४६	४४:२७:४२	द·०६:४०:०४	–१३:०२	२७:३२
६	११ बु	१०:२१:३९:०६	०८:२४:२६:२७	०९:२१:००:३४	११:००:५९:३१	००:१८:४५:४८	०९:२९:४९:२७	१०:१३:१४:०४	११:२५:३९:३६	४४:२९:४४	द·०६:१६:२५	–१२:४९	२८:२६
७	१२ गु	१०:२२:३९:१३	०९:०८:१८:४७	०९:२१:४७:१४	११:०२:३७:०७	००:१८:५६:३६	१०:०१:०४:०७	१०:१३:२१:३१	११:२५:३६:२५	४४:३१:४७	द·०५:५२:४०	–१२:३४	२९:१०
८	१३ शु	१०:२३:३९:१७	०९:२२:२२:२१	०९:२२:३३:५६	११:०४:१३:२५	००:१९:०७:३१	१०:०२:१८:४६	१०:१३:२८:५७	११:२५:३३:१४	४४:३३:४९	द·०५:२८:५१	–१२:२०	२९:५५
९	१४ श	१०:२४:३९:२०	१०:०६:३४:२८	०९:२३:२०:४१	११:०५:४८:१८	००:१९:१८:३२	१०:०३:३३:२६	१०:१३:३६:२४	११:२५:३०:०४	४४:३५:५२	द·०५:०४:५८	–१२:०५	३०:३४
१०	३० र	१०:२५:३९:२१	१०:२०:५२:०२	०९:२४:०७:२८	११:०७:२१:३९	००:१९:२९:३९	१०:०४:४८:०५	१०:१३:४३:५०	११:२५:२६:५३	४४:३७:५५	द·०४:४१:०१	–११:४९	०७:१२

२८ फरवरी सूर्योदयकालीन तिथिः**४**

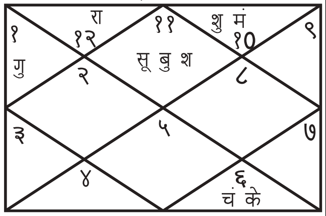

६ मार्च सूर्योदयकालीन तिथिः**११**

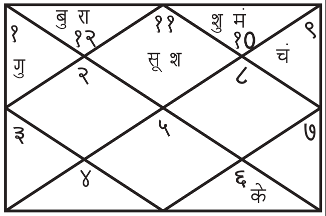

फाल्गुन कृष्णपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, २५ फरवरी से १० मार्च, २०२४ ईस्वी

पक्षान्तः – कालःदक्षिण । ऋतुःशिशिर । उत्तरायणं । याम्यगोलः । ति·३० अयनांशाः२२:५२:२५

दिनाङ्क फरवरी	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
२५	१ र	।
२६	२ चं	।
२७	३ मं	**भद्रा १०:४१–२३:३९घं·।**
२८	४ बु	पूर्वभाद्रेबुधः घं·१९:१२।
२९	५ गु	धनिष्ठायांशुक्रः घं·२५:५४।
मार्च	६ शु	**भद्रारंभः २७:२६घं·।**
२	७ श	**भद्रांतः १५:३८घं·।**
३	८ र	सीताष्टमी, अष्टका श्राद्ध, **गण्डान्तारम्भः २९:३६।**
४	९ चं	पूर्वभाद्रेरविः घं·१५:२२, **गण्डान्तः१७:३६।**
५	१० मं	**भद्रा १४:१५–२५:३७घं·**, मीनेबुधः घं·१६:३१।
६	११ बु	**अभिजितारम्भः ५२:५४, श्री श्रेयांसनाथ जयंती,** कुम्भेशुक्रःघं·१०:२३।
७	१२ गु	**अभिजितान्तः ११:०२,** उत्तरभाद्रेबुधः घं·१७:३७।
८	१३ शु	**पंचकारंभः १९:४४, भद्रारंभः २०:०५घं·,** विश्व महिला दिवस ①
९	१४ श	**भद्रांतः ६:५७घं·, पंचक, श्री वासुपूज्य जयंती,** बैद्यनाथ जयन्ती।
१०	३० र	**पंचक,** मन्वादि, बुध पश्चिमोदित घं·११:२६। ① धनिष्ठायांमङ्गलः घं·३०:३६।

ति	**श्राद्धकालं** घं·मि·
१	१२:१९–१३:४९
३०	१२:१५–१३:४९

❀ श्रीशिवपंचाक्षरी मन्त्रप्रयोगविधिः ❀

❀ **विनियोगः–** ॐ अस्य श्रीशिवपंचाक्षरीमंत्रस्य वामदेव ऋषिः, पंक्तिः छन्दः शिवो देवता, मं बीजं, यं शक्तिः, वां कीलकं, सदाशिवकृपाप्रसादोपलब्धिपूर्वक अखिलपुरुषार्थ सिद्धये जपे विनियोगः ।

❀ **ऋष्यादिन्यासः** ॐ अस्य श्रीशिवपंचाक्षरीमंत्रस्य वामदेवर्षये नमः– शिरसि। ॐ पंक्तिछन्दसे नमः– मुखे। ॐ शिवाय देवतायै नमः– हृदये। ॐ मं बीजाय नमः– गुह्ये। ॐ यं शक्तये नमः– पादयोः। ॐ वां कीलकाय नमः– नाभौ। ॐ सदाशिव कृपाप्रसादोपलब्धिपूर्वक अखिलपुरुषार्थसिद्धये जपे विनियोगाय नमः– सर्वांगे।

❀ **अथ करन्यासः**ॐ ॐ नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ नं नमः तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ मं नमः मध्यमाभ्यां नमः। ॐ शिं नमः अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ वां नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ यं नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

❀ **अथ हृदयादिन्यासः** ॐ ॐ नमः हृदयाय नमः। ॐ नं नमः शिरसे स्वाहा। ॐ मं नमः शिखायै वषट्। ॐ शिं नमः कवचाय हुम्। ॐ वां नमः नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ यं नमः अस्त्राय फट्। ॐ भूर्भुवःस्वरोमिति दिग्बन्धः।

❀ **अथ ध्यानम् :** ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं। रत्नाकल्पोज्वलांगं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नं। पद्मासीनं समन्तात्स्तुतम् अमरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं। विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रं।

❀ **श्रीशिव पंचाक्षर मन्त्रः–** **ॐ नमः शिवाय**

❀ फाल्गुन मास कृत्य ❀

❀ **महाशिवरात्रि व्रत–** फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को मध्यरात्रि में चतुर्दशी विद्यमान् होने पर महाशिवरात्रि व्रत होता है। यह त्रयोदशी विद्धा श्रेष्ठ होती है– ***पूर्वविद्धैवकर्तव्याशिवरात्रिः*** *(निर्णयसिन्धु)*। **१.** यदि दोनों दिन अर्धरात्रि में चतुर्दशी न हो तब दूसरे दिन व्रत करे। **२.** यदि दोनों दिन अर्धरात्रि में चतुर्दशी हो तो पूर्व दिन व्रत करे। ऐसा हेमाद्रि और कौस्तुभ का वचन है। **३.** परातिथि अर्थात् चतुर्दशी उदया में ही महाशिवरात्रि करनी चाहिए यह मत माधव, निर्णयसिन्धु और पुरुषार्थचिन्तामणि आदि बहुतों का है। **४.** यदि पूर्व दिन मध्यरात्रि में चतुर्दशी हो, दूसरे दिन मध्यरात्रि में न हो तो पूर्वदिन ही व्रत करना चाहिए। **५.** पूर्व मध्यरात्रि में न हो और अगले दिन मध्यरात्रि में चतुर्दशी हो तो पर (अगले) दिन ही व्रत करना चाहिए। **६.** महाशिवरात्रि की पारणा चतुर्दशी में ही की जाती है। यह व्रत नित्य और काम्य दोनों है अर्थात् इसे प्रतिवर्ष शिव की आराधना के रूप में किया जा सकता है। साथ ही पुत्र प्राप्ति तथा दीर्घायु प्राप्ति की कामना से भी इसे किया जाता है। काम्य व्रत में १२ वर्ष अथवा २४ वर्ष का संकल्प लिया जाता है– ***एवमेतद् व्रतं कुर्यात् प्रतिसंवत्सरं व्रती। द्वादशाब्दिकमेव स्याच्चतुर्विंशाब्दिकं तु वा।।***

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

फरवरी	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
२५	०९:२१	१०:५७	१२:५२	१५:०७	१७:२७	१९:४३	२१:५८	००:१७	०२:३६	०४:४१	०६:२६	०७:५५
२६	०९:१७	१०:५३	१२:४८	१५:०३	१७:२३	१९:३९	२१:५४	००:१३	०२:३२	०४:३७	०६:२२	०७:५१
२७	०९:१३	१०:४९	१२:४५	१४:५९	१७:१९	१९:३५	२१:५०	००:०९	०२:२८	०४:३३	०६:१८	०७:४७
२८	०९:०९	१०:४५	१२:४१	१४:५५	१७:१५	१९:३१	२१:४६	००:०५	०२:२४	०४:२९	०६:१४	०७:४३
२९	०९:०५	१०:४१	१२:३७	१४:५१	१७:११	१९:२७	२१:४२	००:०१	०२:२०	०४:२५	०६:१०	०७:३९
मार्च	०९:०१	१०:३७	१२:३३	१४:४७	१७:०७	१९:२३	२१:३८	२३:५७	०२:१६	०४:२१	०६:०६	०७:३५
२	०८:५७	१०:३३	१२:२९	१४:४३	१७:०३	१९:२०	२१:३४	२३:५३	०२:१२	०४:१८	०६:०२	०७:३१
३	०८:५३	१०:२९	१२:२५	१४:३९	१६:५९	१९:१६	२१:३१	२३:४९	०२:०८	०४:१४	०५:५८	०७:२७
४	०८:४९	१०:२५	१२:२१	१४:३५	१६:५५	१९:१२	२१:२७	२३:४५	०२:०४	०४:१०	०५:५४	०७:२३
५	०८:४५	१०:२१	१२:१७	१४:३१	१६:५१	१९:०८	२१:२३	२३:४१	०२:००	०४:०६	०५:५०	०७:२०
६	०८:४१	१०:१७	१२:१३	१४:२७	१६:४७	१९:०४	२१:१९	२३:३७	०१:५६	०४:०२	०५:४६	०७:१६
७	०८:३८	१०:१३	१२:०९	१४:२३	१६:४३	१९:००	२१:१५	२३:३४	०१:५२	०३:५८	०५:४२	०७:१२
८	०८:३४	१०:१०	१२:०५	१४:१९	१६:३९	१८:५६	२१:११	२३:३०	०१:४८	०३:५४	०५:३८	०७:०८
९	०८:३०	१०:०६	१२:०१	१४:१५	१६:३५	१८:५२	२१:०७	२३:२६	०१:४४	०३:५०	०५:३४	०७:०४
१०	०८:२६	१०:०२	११:५७	१४:११	१६:३१	१८:४८	२१:०३	२३:२२	०१:४१	०३:४६	०५:३०	०७:००

फरवरी	卐 सर्वार्थसिद्धि,त्रिपुष्कर,अमृत,रवि आदि योग 卐
२५	**मृत्यु**·१, **सर्वार्थ**·उफा, **त्रिपुष्कर**:२+उफा
२६	**मृत्यु**·२
२७	**सिद्ध**·३,
२८	**द·ति**·४,
२९	**द·ति**·४, **सिद्ध**·५
मार्च	**सिद्ध**·६, **रवियोग**·वि, **मृत्यु**·७,
२	**रवियोग**·वि, **त्रिपुष्कर**:७+वि,
३	**सिद्ध**·८,
४	**अमृत**·१०,
५	**मृत्यु**·११,
६	**अमृत**·११, **सिद्ध**·१२,
७	**अमृत**·१३,
८	**सर्वार्थ**·श्र, **अमृत**·१४,
९	**सिद्ध**·१४, **मृत्यु**·१५,
१०	**अमृत**·१५, **मृत्यु**·१, **सर्वार्थ**·उभा

❀ फाल्गुन मास का नाम उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के नाम पर पड़ा है। फाल्गुन पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा प्रायः पूर्वा या उ·फा· नक्षत्र पर होता है। **महाशिवरात्रि** व्रत **८ मार्च** को पड़ रहा है। यह मध्यरात्रिव्यापिनी चतुर्दशी में मानी जाती है। शिवरात्रिव्रत की पारणा चतुर्दशी में ही की जाती है। मध्यरात्रि में शिवशक्ति की पूजा करके पारण किया जाता है। यदि अगले दिन भी चतुर्दशी हो तो अगले दिन पारण करते हैं।

❀ ***नमः प्रदानेन मनः ददासि*** **–** हे आशुतोष भगवान् शिव शंकर! आप नमः कहते ही अपना मनः (प्रेम) प्रदान कर देते हैं।

❀ ***र व प्रदानेन वरं ददासि*** **–** हे भगवान् शिव! आप र व शब्द उच्चारण करने पर वर दे देते हैं। ज्ञात हो गाल फुलाकर बकरे की आवाज में गाल बजाने से भगवान् शिव प्रसन्न होते हैं। यह शब्द दक्ष प्रजापति के मुख से निकलने के कारण भूतभावन भगवान् भोलेनाथ को प्रिय है।

फाल्गुन शुक्लपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, ११ मार्च से २५ मार्च, २०२४ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– ११:३:२०२४ मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः; मार्गी शनिःपश्चिमास्त; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपश्चिमोदितः;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		व्रत–पर्व–उत्सव
मार्च	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	११ मार्च से २५ मार्च २०२३
११	१ चं	१५:३६	१३:०१	उ·भा·	४८:०७	२६:०१	शिव सिद्ध	१८:५२	१४:१९	बव	१५:३६	बाल	४२:४०	२९:१९	६:४६	१८:३०	मीन	अहोरात्र	गद	२७	११	पयो व्रतारम्भ
१२	२ मं	०९:५०	१०:४१	रेवती	४४:२२	२४:३०	शुक्ल	११:१६	११:१५	कौल	०९:५०	तैति	३७:०३	२९:२४	६:४५	१८:३०	मे·४४:२२	२४:३०	शुभ	२८	१२	**फूलेरा दौज**, श्रीखाटूश्यामजी मेला आरम्भ
१३	३ बु ४ बु	०४:२६ ५५:०८	०८:३० ३०:३३	अश्वि·	४१:०६	२३:१०	ब्रह्म ऐन्द्र	०३:५८ ५३:०८	०८:१९ २९:३४	गर	०४:२६	वणि	३१:५५	२९:२८	६:४४	१८:३१	मेष	अहोरात्र	मृत्यु	२९	१३	**वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी**, मधूक तृतीया
१४	५ गु	५५:३०	२८:५५	भरणी	३८:३२	२२:०७	वैधृ·	५०:५१	२७:०३	बव	२७:२७	बाल	५५:३०	२९:३२	६:४३	१८:३१	वृ·५३:००	२७:५५	पद्म	३०	१४	
१५	६ शु	५२:२०	२७:३७	कृत्ति·	३६:४८	२१:२५	विष्कु·	४५:१९	२४:४९	कौल	२३:४९	तैति	५२:२०	२९:३६	६:४१	१८:३२	वृष	अहोरात्र	छत्र	१	१५	गोरूपिणी छठ बंगाल
१६	७ श	५०:१४	२६:४६	रोहि·	३६:०५	२१:०७	प्रीति	४०:३८	२२:५६	गर	२१:०९	वणि	५०:१४	२९:४०	६:४०	१८:३३	वृष	अहोरात्र	श्रीवत्स	२	१६	कामदा सप्तमी, कल्याणसप्तमी व्रत
१७	८ र	४९:१९	२६:२३	मृग·	३६:३१	२१:१६	आयु·	३६:५३	२१:२५	विष	१९:३८	बव	४९:१९	२९:४४	६:३९	१८:३३	मि·०६:११	०९:०७	सौम्य	३	१७	**होलाष्टक प्रारम्भ, श्रीदुर्गाष्टमी**
१८	९ चं	४९:४०	२६:३०	आर्द्रा	३८:१०	२१:५४	सौभा·	३४:०७	२०:१७	बाल	१९:२१	कौल	४९:४०	२९:४८	६:३८	१८:३४	मिथुन	अहोरात्र	कालदंड	४	१८	ब्रज–बरसाना में होली आरम्भ
१९	१० मं	५१:१९	२७:०९	पुन·	४१:०५	२३:०३	शोभ·	३२:२१	१९:३४	तैति	२०:२१	गर	५१:१९	२९:५२	६:३७	१८:३४	क·२५:१५	१६:४३	प्रवर्द्ध	५	१९	लठ्ठमार होली (नन्दगाँव)
२०	११ बु	५४:११	२८:१६	पुष्य	४५:१०	२४:४०	अतिग·	३१:३३	१९:१३	वणि	२२:३७	विष	५४:११	२९:५६	६:३६	१८:३५	कर्क	अहोरात्र	मातङ्ग	६	२०	**श्रीआमलकी एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त)**
२१	१२ गु	५८:०७	२९:४९	आश्ले·	५०:२०	२६:४३	सुकर्मा	३१:३८	१९:१४	बव	२६:०२	बाल	५८:०७	३०:००	६:३५	१८:३५	सिं·५०:२०	२६:४३	अमृत	७	२१	**श्रीआमलकी एकादशी (निम्बार्क)**
२२	१३ शु	६०:००	अहोरात्र	मघा	५६:१९	२९:०५	धृति	३२:२६	१९:३२	कौल	३०:२५	तैति	६०:००	३०:०५	६:३४	१८:३६	सिंह	अहोरात्र	काण	८	२२	**शनि प्रदोष व्रतम्**, खाटूश्यामजी मेला समाप्त
२३	१३ श	०२:५४	०७:४२	पू·फा·	६०:००	अहोरात्र	शूल	३३:४३	२०:०२	तैति	०२:५४	गर	३५:२८	३०:०९	६:३३	१८:३६	सिंह	अहोरात्र	लुम्ब	९	२३	नन्द त्रयोदशी व्रत
२४	१४ र	०८:०८	०९:४७	पू·फा·	०२:५०	०७:३९	गण्ड	३५:१४	२०:३७	वणि	०८:०८	विष	४०:४७	३०:१३	६:३१	१८:३७	कं·१९:२८	१४:१९	छत्र	१०	२४	**पूर्णिमा व्रतम्, होलिका दहन**, हुताशनी जन्म
२५	१५ चं	१३:२५	११:५२	उ·फा·	०९:२४	१०:१६	वृद्धि	३६:३९	२१:१०	बव	१३:२५	बाल	४५:५५	३०:१७	६:३०	१८:३७	कन्या	अहोरात्र	श्रीवत्स	११	२५	**फाल्गुन पूर्णिमा (स्नान–दान), धुलण्डी**

औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः

दिनाङ्क मार्च	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	राहुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
११	१ चं	१०:२६:३९:१९	११:०५:११:३२	०९:२४:५४:१७	११:०८:५३:२३	००:१९:४०:५२	१०:०६:०२:४४	१०:१३:५१:१५	११:२५:२३:४३	४४:३९:५८	द·०४:१६:६०	–११:३४	०७:११
१२	२ मं	१०:२७:३९:१६	११:१९:२८:५८	०९:२५:४१:०९	११:१०:२३:२०	००:१९:५२:१२	१०:०७:१७:२२	१०:१३:५८:४०	११:२५:२०:३२	४४:४२:०१	द·०३:५२:५६	–११:१७	०७:५०
१३	३ बु	१०:२८:३९:१०	००:०३:४०:५१	०९:२६:२८:०३	११:११:५१:२३	००:२०:०३:३७	१०:०८:३२:००	१०:१४:०६:०४	११:२५:१७:२१	४४:४४:०४	द·०३:२८:५०	–११:०१	०८:२८
१४	५ गु	१०:२९:३९:०२	००:१७:४४:०४	०९:२७:१४:५९	११:१३:१७:२३	००:२०:१५:०९	१०:०९:४६:३८	१०:१४:१३:२७	११:२५:१४:११	४४:४६:०७	द·०३:०४:४१	–१०:४४	०९:११
१५	६ शु	११:००:३८:५२	०१:०१:३५:५८	०९:२८:०१:५७	११:१४:४१:११	००:२०:२६:४५	१०:११:०१:१६	१०:१४:२०:५०	११:२५:१०:६०	४४:४८:१०	द·०२:४०:३०	–१०:२७	०९:५५
१६	७ श	११:०१:३८:४०	०१:१५:१४:२८	०९:२८:४८:५७	११:१६:०२:३६	००:२०:३८:२८	१०:१२:१५:५३	१०:१४:२८:१२	११:२५:०७:४९	४४:५०:१३	द·०२:१६:१८	–१०:१०	१०:४५
१७	८ र	११:०२:३८:२५	०१:२८:३८:०८	०९:२९:३५:५९	११:१७:२१:२८	००:२०:५०:१६	१०:१३:३०:३०	१०:१४:३५:३३	११:२५:०४:३९	४४:५२:१७	द·०१:५२:०४	– ९:५२	११:३६
१८	९ चं	११:०३:३८:०९	०२:११:४६:२०	१०:००:२३:०३	११:१८:३७:३६	००:२१:०२:१०	१०:१४:४५:०६	१०:१४:४२:५३	११:२५:०१:२८	४४:५४:२०	द·०१:२७:५०	– ९:३४	१२:३१
१९	१० मं	११:०४:३७:५०	०२:२४:३९:०८	१०:०१:१०:०९	११:१९:५०:४८	००:२१:१४:०८	१०:१५:५९:४२	१०:१४:५०:१२	११:२४:५८:१७	४४:५६:२३	द·०१:०३:३५	– ९:१६	१३:२८
२०	११ बु	११:०५:३७:२९	०३:०७:१७:२४	१०:०१:५७:१७	११:२१:००:५०	००:२१:२६:१२	१०:१७:१४:१८	१०:१४:५७:३०	११:२४:५५:०७	४४:५८:२६	द·००:३९:२१	– ८:५८	१४:२४
२१	१२ गु	११:०६:३७:०५	०३:१९:४२:४४	१०:०२:४४:२६	११:२२:०७:३०	००:२१:३८:२१	१०:१८:२८:५३	१०:१५:०४:४६	११:२४:५१:५६	४५:००:२९	द·००:१५:०६	– ८:४०	१५:१९
२२	१३ शु	११:०७:३६:४०	०४:०१:५७:२०	१०:०३:३१:३७	११:२३:१०:३१	००:२१:५०:३५	१०:१९:४३:२८	१०:१५:१२:०२	११:२४:४८:४६	४५:०२:३२	उ·००:०९:०८	– ८:२१	१६:१४
२३	१३ श	११:०८:३६:१२	०४:१४:०४:०२	१०:०४:१८:५०	११:२४:०९:४१	००:२२:०२:५४	१०:२०:५८:०३	१०:१५:१९:१६	११:२४:४५:३५	४५:०४:३५	उ·००:३३:२०	– ८:०३	१७:०७
२४	१४ र	११:०९:३५:४२	०४:२६:०६:००	१०:०५:०६:०५	११:२५:०४:४२	००:२२:१५:१७	१०:२२:१२:३६	१०:१५:२६:२८	११:२४:४२:२४	४५:०६:३८	उ·००:५७:३२	– ७:४४	१७:५९
२५	१५ चं	११:१०:३५:०९	०५:०८:०६:५३	१०:०५:५३:२१	११:२५:५५:१८	००:२२:२७:४५	१०:२३:२७:१०	१०:१५:३३:३९	११:२४:३९:१४	४५:०८:४१	उ·०१:२१:४१	– ७:२५	१८:५१

१२ मार्च सूर्योदयकालीन तिथिः**२**

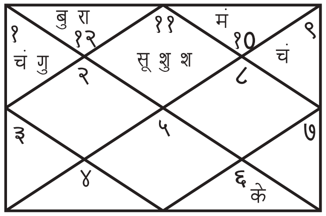

२० मार्च सूर्योदयकालीन तिथिः**११**

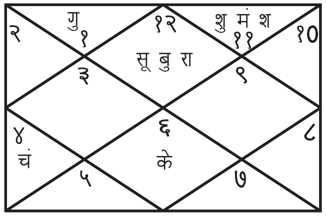

फाल्गुन शुक्लपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, ११ मार्च से २५ मार्च, २०२४ ईस्वी

पक्षान्तः – कालःदक्षिण । ऋतुःशिशिर मीनार्कतः ऋतुःवसन्त। उत्तरायणं । याम्यगोलः । ति·१५ अयनांशाः२२:५२:२७

दिनाङ्क मार्च	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
११	१ चं	**पंचक**, शतभिषायांशुक्रः घं·१८:५३।
१२	२ मं	**गण्डान्तः१८:५२–३०:०९**, **पंचकान्तः२४:३०**, श्रीरामकृष्ण परमहंस जयन्ती, ①
१३	३ बु	**भद्रा १९:३०–३०:३४घं·**, मासान्तः। ① पं· लेखराम जयन्ती।
१४	५ गु	**मीन संक्रान्ति मलमास आरम्भ**, मीनेरविः घं·१५:०८, ②
१५	६ शु	मासादिः। ② मीन संक्रान्ति पुण्यकालं,०८:४४–१५:०८घं·।
१६	७ श	**भद्रारंभः२६:४६घं·**, अर्कपुटसप्तमी व्रत, रेवत्यांबुधः घं·१८:०६।
१७	८ र	उत्तरभाद्रेरविः घं·२३:२२, कुम्भेमङ्गलः घं·१९:०३, **भद्रांतः१४:३१घं·**।
१८	९ चं	।
१९	१० मं	फागु दशमी (उड़ीसा)।
२०	११ बु	रंगभरी एकादशी, मुख्यमेला श्रीखाटूश्यामजी, **भद्रा १५:३९–२८:१७घं·**।
२१	१२ गु	श्रीगोविन्द द्वादशी, श्रीनृसिंह द्वादशी, **गण्डान्तारम्भः२०:११**, ③
२२	१३ शु	**गण्डान्तः९:१७**, पूर्वभाद्रेशुक्रः घं·१२:०२।
२३	१३ श	③ शनि पूर्वोदित घं·२१:१४।
२४	१४ र	**भद्रा ९:४७–२२:५१घं·**।
२५	१५ चं	**श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा**, **होलिका विभूतिधारणम्**, **डोलोत्सव**, मन्वादि, गौरीपूजन आरम्भ, श्रीचैतन्यमहाप्रभु जयन्ती, हाथी उत्सव जयपुर, होलाष्टक समाप्त, शतभिषायांमङ्गलः घं·३०:१९।

ति	**श्राद्धकालं** घं·मि·
१	१२:१४–१३:४८
१५	१२:०९–१३:४६

❀ फाल्गुन कृत्य ❀

फाल्गुन पूर्णिमा को भद्रा रहित प्रदोष काल में होलिकादहन का मुख्य काल होता है। यथा *'सा प्रदोष व्यापिनी भद्रा रहिता ग्राह्य'*। होलिका दहन भद्रा, प्रतिपदा और चतुर्दशी में शास्त्रनिषिद्ध है। अतः शास्त्रवचन है कि चतुर्दशी तिथि को मध्याह्न के बाद पूर्णिमा तिथि हो तो भद्रा के उपरांत सूर्योदय के पूर्व भद्रारहित शुद्ध पूर्णिमा मिले तो उसी में होलिकादहन करना चाहिए, इस वर्ष २४ मार्च को ०९:४७ पर पूर्णिमा तिथि लग रही है तथा रात्रि में २२:५१ के पश्चात् भद्रा रहित शुद्ध पूर्णिमा मिल रही है, अतः २४ मार्च को रात्रि में २२:५१ के पश्चात् ही होलिका दहन करना शास्त्रोचित है।

❀ जयन्ती ❀

कुछ समय से एक अपप्रचार हुआ है कि जयन्ती शब्द केवल मरणशील लोगों के सन्दर्भ में प्रयुक्त होता है। जबकि जयन्ती के अर्थ हैं– पताका, इन्द्र की पुत्री, दुर्गा। जयन्ती – जि जये + शतृ + ङीप् अर्थात्– वह जिसकी जय हो। कोई भी अर्थ मर्त्य मानव को सूचित नहीं करता। जयन्ती किसी महत्त्वपूर्ण कार्य के आरंभ/घटित होने की वार्षिक तिथि पर होने वाले उत्सव को कहते हैं। जैसे किसी की जन्मतिथि पर मनाया जानेवाला उत्सव चाहे वह भगवान् हों या मनुष्य। जन्माष्टमी भी जयन्ती–व्रत है।

जयन्त्याम् उपवासश्च महापातकनाशनः। सर्वैः कार्यो महाभक्त्या पूजनीयश्च केशवः।। (भविष्य पुराण, विष्णुधर्मोत्तर०) – *''श्रीकृष्ण जयन्ती का व्रत महापातक का विनाश कर देता है। अतः भक्तिपूर्वक यह व्रत करते हुए भगवान् श्रीकृष्ण का पूजन करें।''* ; *''रोहिणी नक्षत्र संयुक्ता जन्माष्टमी जयन्ती कहलाती है।''* – विष्णुधर्मोत्तर पुराण०। श्रीजीव गोस्वामीजी के मत में तो श्रीकृष्ण जन्माष्टमी ही एकमात्र जयन्ती है।

कलियुग में सात चिरंजीवी शास्त्रों में बताये गये हैं। *'अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमांश्च विभीषणः। कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरंजीविनः।।'* इनमें व्यासजी, हनुमानजी व परशुरामजी के जन्मोत्सव शास्त्र में जयन्ती नाम से ही प्रसिद्ध हैं। पराशर सहिंता में ''हनुमान जयन्ती'' का विधान दिया है। अतः श्रीहनुमान जयन्ती आदि अवसरों पर जयन्ती शब्द पर विवाद करना शास्त्रविमुखता का परिचायक है। चिरंजीवी परशुरामजी, हनुमानजी, वेदव्यास जी का जन्मदिवस भी जयंती ही कहलाता हैं। इसलिए जयंती का अर्थ हुआ जन्मोत्सव दिवस। अतः हनुमान जयंती, परशुराम जयंती कहने में कोई दोष नही हैं।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

मार्च	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
११	०८:२२	०९:५८	११:५३	१४:०७	१६:२८	१८:४४	२०:५९	२३:१८	०१:३७	०३:४२	०५:२७	०६:५६
१२	०८:१८	०९:५४	११:४९	१४:०३	१६:२४	१८:४०	२०:५५	२३:१४	०१:३३	०३:३८	०५:२३	०६:५२
१३	०८:१४	०९:५०	११:४५	१४:००	१६:२०	१८:३६	२०:५१	२३:१०	०१:२९	०३:३४	०५:१९	०६:४८
१४	०८:१०	०९:४६	११:४१	१३:५६	१६:१६	१८:३२	२०:४७	२३:०६	०१:२५	०३:३०	०५:१५	०६:४४
१५	०८:०६	०९:४२	११:३७	१३:५२	१६:१२	१८:२८	२०:४३	२३:०२	०१:२१	०३:२६	०५:११	०६:४०
१६	०८:०२	०९:३८	११:३४	१३:४८	१६:०८	१८:२४	२०:३९	२२:५८	०१:१७	०३:२२	०५:०७	०६:३६
१७	०७:५८	०९:३४	११:३०	१३:४४	१६:०४	१८:२०	२०:३५	२२:५४	०१:१३	०३:१८	०५:०३	०६:३२
१८	०७:५४	०९:३०	११:२६	१३:४०	१६:००	१८:१६	२०:३१	२२:५०	०१:०९	०३:१४	०४:५९	०६:२८
१९	०७:५०	०९:२६	११:२२	१३:३६	१५:५६	१८:१२	२०:२७	२२:४६	०१:०५	०३:१०	०४:५५	०६:२४
२०	०७:४६	०९:२२	११:१८	१३:३२	१५:५२	१८:०९	२०:२३	२२:४२	०१:०१	०३:०७	०४:५१	०६:२०
२१	०७:४२	०९:१८	११:१४	१३:२८	१५:४८	१८:०५	२०:२०	२२:३८	००:५७	०३:०३	०४:४७	०६:१७
२२	०७:३८	०९:१४	११:१०	१३:२४	१५:४४	१८:०१	२०:१६	२२:३४	००:५३	०२:५९	०४:४३	०६:१३
२३	०७:३५	०९:१०	११:०६	१३:२०	१५:४०	१७:५७	२०:१२	२२:३०	००:४९	०२:५५	०४:३९	०६:०९
२४	०७:३१	०९:०७	११:०२	१३:१६	१५:३६	१७:५३	२०:०८	२२:२७	००:४५	०२:५१	०४:३५	०६:०४
२५	०७:२७	०९:०३	१०:५८	१३:१२	१५:३२	१७:४९	२०:०४	२२:२३	००:४१	०२:४७	०४:३१	०६:००

मार्च	卐 सर्वार्थसिद्धि, अमृत, रवि आदि योग 卐
११	**सिद्ध**·१, **मृत्यु**·२,
१२	**अमृत**·२, **सिद्ध**·३, **सर्वार्थ**·अ, **रवियोग**ःअ,
१३	**द·ति**·४, **मृत्यु**·३, **रवियोग**ःअ,
१४	**सिद्ध**·५, **रवियोग**ःकृ, **द·ति**·४,
१५	**सिद्ध**·६, **रवियोग**ःकृ, **मृत्यु**·७,
१६	**सर्वार्थ**·रो, **द्विपुष्कर**ः७+मृ,
१७	**सिद्ध**·८, **रवियोग**ःआ,
१८	**रवियोग**ःपुन, **अमृत**·१०
१९	**रवियोग**ःपुन, **रवियोग**ःपु, **मृत्यु**·११
२०	**अमृत**·११, **रवियोग**ःपु, **सिद्ध**·१२
२१	**अमृत**·१३
२२	**रवियोग**ःपूफा
२३	**रवियोग**ःपूफा, **सिद्ध**·१४
२४	**रवियोग**ःपूफा, **सर्वार्थ**·उफा, **अमृत**·१५,
२५	**अमृत**·१५, **सिद्ध**·१,

होलिका पूजन– ढूँढा राक्षसी की तृप्ति के लिए और बाल रक्षा के लिए होलिका की पूजा करे। इसमें संकल्प लें– 'मैं सपरिवार ढूंढा नामक राक्षसी के प्रीत्यर्थ, उसकी पीड़ा मुक्ति के लिए होलिका पूजन कर रहा हूँ।" उपला,कण्डा,लकड़ी एकत्रित कर पुष्पादि से पूजाकर अग्निदीपन करे। ***"होलिकायै नमः"***

अस्माभिर्भय संत्रस्तैः कृता त्वं होलिके यतः।
अतस्त्वां पूजयिष्यामि भूते भूति प्रदा भव।

बोलते हुए उसे प्रणाम कर तीन परिक्रमा करे। इसके बाद मन में जो भी आ रहा हो वह गाओ, हँसो, गप्प लड़ाओ, स्वेच्छा से निःशंक होकर अपना मत प्रकट करो। होलिका दहन के बाद होलिका की भस्म धारण करे। आम्र मञ्जरी का भक्षण करे। कच्चा अन्न भूनकर खाए। सायं काल नवीन वस्त्र धारण कर बड़ों, छोटों को अबीर गुलाल लगाकर प्रणाम, आशीर्वाद लिया दिया जाता है। चाण्डाल आदि को गले लगा ले। दूसरे दिन रंग खेले, फाग गाए, गीत नृत्य करे।

चैत्र कृष्णपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५; २६ मार्च से ८ अप्रैल, २०२४ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– २६:३:२०२४ मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः; मार्गी शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपश्चिमोदितः;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		व्रत–पर्व–उत्सव
मार्च	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	२६ मार्च से ८ अप्रैल, २०२४
२६	१ मं	१८:१९	१३:४९	हस्त	१५:३७	१२:४४	ध्रुव	३७:४०	२१:३३	कौल	१८:१९	तैति	५०:२९	३०:२१	६:२९	१८:३८	तु· ४८:२८	२५:५२	सौम्य	१२	२६	**वसन्तोत्सव,** मेला बादशाह व फूलडोल ब्यावर
२७	२ बु	२२:२८	१५:२७	चित्रा	२१:०९	१४:५५	व्याघ·	३८:०३	२१:४१	गर	२२:२८	वणि	५४:०९	३०:२५	६:२८	१८:३८	तुला	अहोरात्र	कालदंड	१३	२७	**भैया दूज, श्रीचित्रगुप्त पूजा,** संत तुकाराम जयन्ती
२८	३ गु	२५:३४	१६:४१	स्वाती	२५:४१	१६:४३	हर्षण	३७:३६	२१:२९	विष	२५:३४	बव	५६:४०	३०:२९	६:२७	१८:३९	तुला	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	१४	२८	**संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी, चन्द्रोदय घं·२१:३४**
२९	४ शु	२७:२९	१७:२५	विशा·	२९:०४	१८:०४	वज्र	३६:१५	२०:५६	बाल	२७:२९	कौल	५७:५७	३०:३३	६:२६	१८:३९	वृ·१३:२१	११:४६	मातङ्ग	१५	२९	
३०	५ श	२८:०७	१७:४०	अनु·	३१:१४	१८:५४	सिद्धि	३३:५३	१९:५८	तैति	२८:०७	गर	५७:५६	३०:३७	६:२५	१८:४०	वृश्चिक	अहोरात्र	अमृत	१६	३०	**रंगपञ्चमी, श्रीपञ्चमी**
३१	६ र	२७:२९	१७:२३	ज्ये·	३२:०८	१९:१५	व्यति·	३०:३२	१८:३६	वणि	२७:२९	विष	५६:४०	३०:४१	६:२३	१८:४०	ध·३२:०८	१९:१५	काण	१७	३१	**श्रीस्कन्द षष्ठी,** श्रीवनचन्द्र जयन्ती, रांधा पुआ
अप्रैल	७ चं	२५:३७	१६:३७	मूल	३१:५२	१९:०७	वरी·	२६:१३	१६:५२	बव	२५:३७	बाल	५४:१५	३०:४५	६:२२	१८:४१	धनु	अहोरात्र	लुम्ब	१८	१	**शीतलाष्टमी, बास्योड़ा, श्रीकालाष्टमी**
२	८ मं	२२:३९	१५:२५	पू·षा·	३०:३१	१८:३४	परिघ	२१:०३	१४:४६	कौल	२२:३९	तैति	५०:४७	३०:४९	६:२१	१८:४१	म·४५:०१	२४:२२	मित्र	१९	२	केसरियाजी मेला मेवाड़
३	९ बु	१८:४४	१३:५०	उ·षा·	२८:१६	१७:३८	शिव	१५:०६	१२:२३	गर	१८:४४	वणि	४६:२७	३०:५३	६:२०	१८:४२	मकर	अहोरात्र	वज्र	२०	३	**भगवान् श्री आदिनाथ जयन्ती व तपकल्याणक दिवस**
४	१० गु	१४:०१	११:५५	श्रवण	२५:१५	१६:२५	सिद्ध	०८:३१	०९:४३	विष	१४:०१	बव	४१:२४	३०:५७	६:१९	१८:४२	कु·५३:३०	२७:४३	ध्वज	२१	४	**दशामाता व्रत**
५	११ शु	०८:४१	०९:४६	धनि·	२१:४०	१४:५८	साध्य शुभ	०१:२५ ५२:३०	०६:५२ २७:५२	बाल	०८:४१	कौल	३५:५०	३१:०१	६:१८	१८:४३	कुंभ	अहोरात्र	धाता	२२	५	**श्रीपापविमोचनी एकादशी (वैष्णव,स्मार्त्त)**
६	१२ श १३ श	०२:५६ ५३:५८	०७:२७ २९:०२	शत·	१७:४२	१३:२२	शुक्ल	४६:१४	२४:४७	तैति	०२:५६	गर	२९:५६	३१:०५	६:१७	१८:४३	मी·५९:३५	३०:०७	आनन्द	२३	६	**शनि प्रदोष व्रतम्,** मेला कैलादेवी प्रारम्भ (करौली)
७	१४ र	५०:५३	२६:३७	पू·भा·	१३:३४	११:४१	ब्रह्म	३८:३०	२१:४०	विष	२३:५४	बव	५०:५३	३१:०९	६:१६	१८:४४	मीन	अहोरात्र	सुस्थिर	२४	७	**मासशिवरात्रि व्रतम्,** काम महोत्सव
८	३० चं	४५:०३	२४:१६	उ·भा·	०९:२८	१०:०२	ऐन्द्र	३०:५३	१८:३६	चतु	१७:५७	नाग	४५:०३	३१:१३	६:१५	१८:४४	मीन	अहोरात्र	गद	२५	८	**सोमवती अमावस्या (देव–पितृकार्य)**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क मार्च	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः (मा/व) रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	राहुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
२६	१ मं	११:११:३४:३५	०५:२०:१०:३७	१०:०६:४०:३८	११:२६:४१:१२	००:२२:४०:१८	१०:२४:४१:४३	१०:१५:४०:४९	११:२४:३६:०३	४५:१०:४३	उ·०१:४५:४९	– ७:०६	१९:४४
२७	२ बु	११:१२:३३:५८	०६:०२:२०:३७	१०:०७:२७:५७	११:२७:२२:०६	००:२२:५२:५५	१०:२५:५६:१५	१०:१५:४७:५७	११:२४:३२:५२	४५:१२:४६	उ·०२:०९:५३	– ६:४७	२०:३८
२८	३ गु	११:१३:३३:१९	०६:१४:३९:५३	१०:०८:१५:१७	११:२७:५७:४५	००:२३:०५:३७	१०:२७:१०:४७	१०:१५:५५:०३	११:२४:२९:४२	४५:१४:४८	उ·०२:३३:५५	– ६:२८	२१:३४
२९	४ शु	११:१४:३२:३७	०६:२७:१०:५८	१०:०९:०२:३९	११:२८:२७:४९	००:२३:१८:२२	१०:२८:२५:१८	१०:१६:०२:०८	११:२४:२६:३१	४५:१६:५०	उ·०२:५७:५४	– ६:०९	२२:३१
३०	५ श	११:१५:३१:५३	०७:०९:५५:५०	१०:०९:५०:०१	११:२८:५२:०४	००:२३:३१:१२	१०:२९:३९:४९	१०:१६:०९:१०	११:२४:२३:२०	४५:१८:५२	उ·०३:२१:४९	– ५:५०	२३:२८
३१	६ र	११:१६:३१:०७	०७:२२:५५:४३	१०:१०:३७:२५	११:२९:१०:१४	००:२३:४४:०६	११:००:५४:२०	१०:१६:१६:११	११:२४:२०:१०	४५:२०:५३	उ·०३:४५:४१	– ५:३२	२४:२७
अप्रैल	७ चं	११:१७:३०:१९	०८:०६:११:०८	१०:११:२४:५०	वक्री २९:२२:०६	००:२३:५७:०३	११:०२:०८:४९	१०:१६:२३:१०	११:२४:१६:५९	४५:२२:५४	उ·०४:०९:२७	– ५:१३	२५:२१
२	८ मं	११:१८:२९:२८	०८:१९:४१:५०	१०:१२:१२:१६	११:२९:२७:३०	००:२४:१०:०५	११:०३:२३:१८	१०:१६:३०:०६	११:२४:१३:४९	४५:२४:५५	उ·०४:३३:१०	– ४:५४	२६:१४
३	९ बु	११:१९:२८:३५	०९:०३:२६:४६	१०:१२:५९:४२	११:२९:२६:१८	००:२४:२३:१०	११:०४:३७:४७	१०:१६:३७:०१	११:२४:१०:३८	४५:२६:५६	उ·०४:५६:४७	– ४:३५	२७:०३
४	१० गु	११:२०:२७:४१	०९:१७:२४:१४	१०:१३:४७:१०	११:२९:१८:३०	००:२४:३६:१९	११:०५:५२:१५	१०:१६:४३:५३	११:२४:०७:२७	४५:२८:५७	उ·०५:२०:१९	– ४:१७	२७:४७
५	११ शु	११:२१:२६:४४	१०:०१:३१:५०	१०:१४:३४:३८	११:२९:०४:०७	००:२४:४९:३१	११:०७:०६:४२	१०:१६:५०:४३	११:२४:०४:१७	४५:३०:५७	उ·०५:४३:४६	– ३:५९	२८:२९
६	१२ श	११:२२:२५:४४	१०:१५:४६:४३	१०:१५:२२:०७	११:२८:४३:२२	००:२५:०२:४७	११:०८:२१:०९	१०:१६:५७:३१	११:२४:०१:०६	४५:३२:५६	उ·०६:०७:०६	– ३:४०	२९:०७
७	१४ र	११:२३:२४:४३	११:००:०५:३६	१०:१६:०९:३६	११:२८:१६:३०	००:२५:१६:०६	११:०९:३५:३५	१०:१७:०४:१६	११:२३:५७:५५	४५:३४:५६	उ·०६:३०:२०	– ३:२२	२९:४६
८	३० चं	११:२४:२३:३९	११:१४:२४:४१	१०:१६:५७:०६	११:२७:४४:००	००:२५:२९:२९	११:१०:५०:००	१०:१७:१०:५९	११:२३:५४:४५	४५:३६:५५	उ·०६:५३:२७	– ३:०५	०६:२४

२९ मार्च सूर्योदयकालीन तिथि:**४**

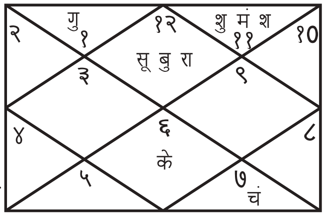

५ अप्रैल सूर्योदयकालीन तिथि:**११**

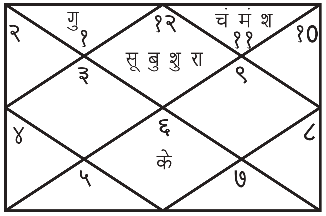

चैत्र कृष्णपक्षः पिङ्गल नाम संवत् २०८० शाके १९४५, २६ मार्च से ८ अप्रैल, २०२४ ईस्वी

पक्षान्तः – कालःदक्षिण । ऋतुःशिशिर मीनार्कतः ऋतुःवसन्त । उत्तरायणं । याम्यगोलः । ति·३० अयनांशाः२२:५२:२९

दिनाङ्क मार्च	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
२६	१ मं	आम्र पुष्प भक्षण।
२७	२ बु	कलमदान पूजा, **भद्रारंभः २८:०८घं·।**
२८	३ गु	छत्रपति शिवाजी महाराज जयन्ती (तिथि प्रमाण), **भद्रांतः १६:४१घं·।**
२९	४ शु	।
३०	५ श	मीनेशुक्रःघं·१३:। (१) व्यतीपात पुण्यम्, रेवत्यांरविःघं·१०:००।
३१	६ र	श्रीएकनाथ षष्ठी, **भद्रा १७:२३–२९:०४घं·, गण्डान्तः १३:१३–२५:१६,** (१)
अप्रैल	७ चं	मेला शील की डूंगरी चाकसू, वक्री बुधः घं·२४:२५, उत्तरभाद्रेशुक्रःघं·२९:२७।
२	८ मं	।
३	९ बु	**भद्रारंभः २४:५५घं·, अभिजितः १३:५५–३२:०५।**
४	१० गु	**भद्रांतः ११:५६घं·, पंचकारंभः २७:४३।**
५	११ शु	**पंचक,** बुध पश्चिमास्त घं·००:५८।
६	१२ श	**भद्रारंभः २९:०३घं·, पंचक, वारुणी योग १३:२२–२९:०२ तक।**
७	१४ र	**भद्रांतः १५:५०घं·, पंचक,** प्रेतत्व मुक्ति हेतु शिवसन्निधि में स्नान।
८	३० चं	**पंचक, गण्डान्तारम्भः २६:५२।**

ति	**श्राद्धकालं** घं·मि·
१	१२:०९–१३:४६
३०	१२:०४–१३:४४

❀ वास्तुखण्ड जीर्णोद्धार / तोड़ने की संक्षिप्त विधि ❀

अपने भवन वास्तु में किसी कारणवश तोड़फोड़ कराने से वास्तुभङ्ग का दोष लगता है। वास्तु में पहले से स्थित सूक्ष्म जीव, भूत आदि को अकस्मात् उस स्थान से हटाने पर वे अशुभ परिणाम देते देखे जाते हैं। इसलिए भवन में किसी बड़ी तोड़ फोड़ से पूर्व तत्तत् जीवों की प्रसन्नता हेतु बलि विधान वास्तुशास्त्र में बताया गया है। इसका सूक्ष्म रूप निम्न है।

२ इमरती, २ केले, उड़द की सूखी साबुत दाल दही में मिलाकर भिगो लें, इसपर थोड़ा घी भी डाल दें व दूध, दही, अक्षत, जल, खिचड़ी, चावल, जौ अन्न, खीर आदि में से यथाशक्ति लेकर जिस वास्तु को तोड़ना है वहाँ जाएं और एक चार मुँह का दीपक जलाएं। इस सामग्री को तोड़े जाने वाले वास्तुखण्ड में सब स्थानों पर घुमाकर लाएं।

फिर निम्न मन्त्र पढ़कर प्रार्थना करे :-

भूताः पिशाचाः नागाश्च असुराः राक्षसाः ग्रहाः।
सर्वे ते व्यपगच्छन्तु बलितुष्टाः यथा तथम् ।।
देवानां च द्विजानां च स्थानं सम्यक् करोम्यहम्।
वासुदेवस्य देवस्य सर्व भूतात्मकस्य च ।।
यक्षाः पिशाचाः नागाश्च येऽत्र तिष्ठन्ति सर्वदा।
सर्वे प्रयांतु तेऽन्यत्र स्व स्थानं करोम्यहम् ।।
अपक्रामन्तु भूतानि देवताश्च सराक्षसाः।
वासान्तरं व्रजन्त्वस्मात् कुर्यां भूमिपरिग्रहम् ।।
उत्क्रामन्तु पिशाचाः ये भूताः भूमिभागगाः।
ये भूताः विघ्नकर्तारः ते गच्छन्त्वाज्ञया हरेः ।।
अपक्रमान्तु भूतानि पिशाचप्रेतगुह्यकाः।
सर्वेषां अविरोधेन वास्तु कर्म समारभे ।।

प्रार्थना करे – इस भूखंड वास्तु में निवास कर रहे सभी भूत प्रेत, पिशाच, शक्तियाँ डाकिनी शाकिनी, जीव जंतु, समस्त ज्ञात अज्ञात जीवों योनियों से सादर सविनय निवेदन है कि कृपया इस भूखंड वास्तु के इस भाग जिसे तोड़ा जाना है को छोड़कर अन्यत्र अन्य स्थान पर चले जाएं व वहाँ पर सुखपूर्वक निवास करें, व हमारे द्वारा प्रदान की जा रही इस बलि को स्वीकार करके तृप्त होकर जाएं व अशुभता की निवृत्ति करें ताकि इस भूखंड पर बने इस भाग को शान्तिपूर्वक तोड़ा जा सके। हाथ जोड़कर प्रणाम कर लें।

वास्तुखण्ड को तोड़ने हेतु पहला प्रहार सोने की किसी चीज से करें।

इसके बाद वह सब सामग्री और दीपक जलता हुआ ही वास्तु से दूर जाकर कहीं शान्त स्थान पर रख दें, व पीछे मुड़कर न देखें।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

मार्च	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
२६	०७:२३	०८:५९	१०:५४	१३:०८	१५:२८	१७:४५	२०:००	२२:१९	००:३८	०२:४३	०४:२७	०५:५७
२७	०७:१९	०८:५५	१०:५०	१३:०४	१५:२५	१७:४१	१९:५६	२२:१५	००:३४	०२:३९	०४:२३	०५:५३
२८	०७:१५	०८:५१	१०:४६	१३:००	१५:२१	१७:३७	१९:५२	२२:११	००:३०	०२:३५	०४:२०	०५:४९
२९	०७:११	०८:४७	१०:४२	१२:५७	१५:१७	१७:३३	१९:४८	२२:०७	००:२६	०२:३१	०४:१६	०५:४५
३०	०७:०७	०८:४३	१०:३८	१२:५३	१५:१३	१७:२९	१९:४४	२२:०३	००:२२	०२:२७	०४:१२	०५:४१
३१	०७:०३	०८:३९	१०:३४	१२:४९	१५:०९	१७:२५	१९:४०	२१:५९	००:१८	०२:२३	०४:०८	०५:३७
अप्रैल	०६:५९	०८:३५	१०:३१	१२:४५	१५:०५	१७:२१	१९:३६	२१:५५	००:१४	०२:१९	०४:०४	०५:३३
२	०६:५५	०८:३१	१०:२७	१२:४१	१५:०१	१७:१७	१९:३२	२१:५१	००:१०	०२:१५	०४:००	०५:२९
३	०६:५१	०८:२७	१०:२३	१२:३७	१४:५७	१७:१३	१९:२८	२१:४७	००:०६	०२:११	०३:५६	०५:२५
४	०६:४७	०८:२३	१०:१९	१२:३३	१४:५३	१७:०९	१९:२४	२१:४३	००:०२	०२:०७	०३:५२	०५:२१
५	०६:४३	०८:१९	१०:१५	१२:२९	१४:४९	१७:०६	१९:२०	२१:३९	२३:५८	०२:०४	०३:४८	०५:१७
६	०६:३९	०८:१५	१०:११	१२:२५	१४:४५	१७:०२	१९:१७	२१:३५	२३:५४	०२:००	०३:४४	०५:१३
७	०६:३५	०८:११	१०:०७	१२:२१	१४:४१	१६:५८	१९:१३	२१:३१	२३:५०	०१:५६	०३:४०	०५:०९
८	०६:३२	०८:०७	१०:०३	१२:१७	१४:३७	१६:५४	१९:०९	२१:२७	२३:४६	०१:५२	०३:३६	०५:०५

मार्च	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
२६	**द·ति·**२, **मृत्यु·**१, **अमृत·**२, **द्विपुष्करः**२+चि
२७	**द·ति·**२, **सिद्ध·**२, **मृत्यु·**३,
२८	**अमृत·**३, **मृत्यु·**४,
२९	**अमृत·**४, **सर्वार्थ·**अनु,
३०	**मृत्यु·**५, **अमृत·**६, **रवियोगः**ज्ये,
३१	**मृत्यु·**६, **रवियोगः**ज्ये, **सर्वार्थ·**मू, **रवियोगः**मू,
अप्रैल	**मृत्यु·**७, **रवियोगः**मू,
२	**सिद्ध·**८, **द·न·**उषा,
४	**सिद्ध·**१०,
५	**सिद्ध·**११, **मृत्यु·**१२,
६	**सिद्ध·**१४,
७	**सर्वार्थ·**उभा, **अमृत·**१५,
८	**अमृत·**१५, **सिद्ध·**१,

❀ गणगौर पूजन ❀

स्त्रियाँ फाल्गुन पूर्णिमा से चैत्र कृष्णपक्षभर व्रती रहकर चैत्र शुक्ल तृतीया को ईसरजी और ईसरीजी की प्रतिमा में शिव-पार्वती का प्रतिदिन पूजन करती हैं। **स्त्रियाँ गणगौर पूजन के समय यह गीत गाती हैं-**

गौर गौर गोमती ईसर पूजे पार्वती
पार्वती का आला-गीला , गौर का सोना का टीका
टीका दे, टमका दे, बालारानी बरत करयो, करता करता आस
आयो, वास आयो, खेरे खडि लाडू आयो, लाडू ले बीरा ने दियो,
बीरो ले मने पाल दी, पाल को मै बरत करयो,
सन मन सोला, सात कचौला, ईशर गौरा, दोन्यू जोड़ा,
जोड़ ज्वारा, गेंहू ग्यारा, रानी पूजे राज ने, मैं पूजा सुहाग ने,
राण्या को राज बढ़तो जाए, म्हाको सुहाग बढ़तो जाय,
कीड़ी- कीड़ी, कीड़ी ले, कीड़ी थारी जात है, जात है गुजरात है,
गुजरात्यां को पाणी, दे दे थाम्बा ताणी, ताणी में सिंघोड़ा, बाड़ी में
भिजोड़ा, म्हारो भाई एम्ल्यो खेमल्यो, सेमल्यो सिंघाड़ा ल्यो, लाडू
ल्यो, पेड़ा ल्यो, सेव ल्यो, सिघाड़ा ल्यो,
झरझरती जलेबी ल्यो, हरीहरी दूब ल्यो, गणगौर पूजल्यो
एक, दो, तीन, चार, पाँच, छः, सात, आठ, नौ, दस, ग्यारह,
बारह, तेरह, चौदह, पंद्रह, सोलह....

❊ संवत् २०८०, सन् २०२३-२४ में जन्मे बच्चों के नामाक्षर, नक्षत्र चरण, राशि व पाया ❊

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
२२ मार्च	०५:२४ से	उ.भा.	३	झ	मीन	लोहा
	११:०८ से	उ.भा.	४	ञ	मीन	लोहा
	१६:५२ से	रेवती	१	दे	मीन	सोना
	२२:४१ से	रेवती	२	दो	मीन	सोना
२३ मार्च	०४:३१ से	रेवती	३	चा	मीन	सोना
	१०:२० से	रेवती	४	ची	मीन	सोना
	१६:१० से	अश्विनी	१	चू	मेष	सोना
	२२:०५ से	अश्विनी	२	चे	मेष	सोना
२४ मार्च	०४:०० से	अश्विनी	३	चो	मेष	सोना
	०९:५५ से	अश्विनी	४	ला	मेष	सोना
	१५:५१ से	भरणी	१	ली	मेष	सोना
	२१:५३ से	भरणी	२	लू	मेष	सोना
२५ मार्च	०३:५६ से	भरणी	३	ले	मेष	सोना
	०९:५८ से	भरणी	४	लो	मेष	सोना
	१६:०१ से	कृत्ति.	१	अ	मेष	सोना
	२२:१० से	कृत्ति.	२	ई	वृष	सोना
२६ मार्च	०४:२० से	कृत्ति.	३	ऊ	वृष	सोना
	१०:२९ से	कृत्ति.	४	ए	वृष	सोना
	१६:३९ से	रोहिणी	१	ओ	वृष	सोना
	२२:५६ से	रोहिणी	२	वा	वृष	सोना
२७ मार्च	०५:१३ से	रोहिणी	३	वी	वृष	सोना
	११:३० से	रोहिणी	४	वू	वृष	सोना
	१७:४७ से	मृगशि.	१	वे	वृष	सोना
२८ मार्च	००:११ से	मृगशि.	२	वो	वृष	सोना
	०६:३५ से	मृगशि.	३	का	मिथुन	सोना
	१२:५९ से	मृगशि.	४	की	मिथुन	सोना
	१९:२४ से	आर्द्रा	१	कू	मिथुन	चाँदी
२९ मार्च	०१:५४ से	आर्द्रा	२	घ	मिथुन	चाँदी
	०८:२५ से	आर्द्रा	३	ङ	मिथुन	चाँदी
	१४:५५ से	आर्द्रा	४	छ	मिथुन	चाँदी
	२१:२६ से	पुनर्वसु	१	के	मिथुन	चाँदी
३० मार्च	०४:०१ से	पुनर्वसु	२	को	मिथुन	चाँदी
	१०:३७ से	पुनर्वसु	३	ह	मिथुन	चाँदी
	१७:१३ से	पुनर्वसु	४	ही	कर्क	चाँदी
	२३:४९ से	पुष्य	१	हू	कर्क	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
३१ मार्च	०६:२७ से	पुष्य	२	हे	कर्क	चाँदी
	१३:०६ से	पुष्य	३	हो	कर्क	चाँदी
	१९:४४ से	पुष्य	४	डा	कर्क	चाँदी
०१ अप्रैल	०२:२३ से	आश्ले	१	डी	कर्क	चाँदी
	०९:०२ से	आश्ले	२	डू	कर्क	चाँदी
	१५:४२ से	आश्ले	३	डे	कर्क	चाँदी
	२२:२१ से	आश्ले	४	डो	कर्क	चाँदी
०२ अप्रैल	०५:०१ से	मघा	१	मा	सिंह	चाँदी
	११:३७ से	मघा	२	मी	सिंह	चाँदी
	१८:१४ से	मघा	३	मू	सिंह	चाँदी
	००:५१ से	मघा	४	मे	सिंह	चाँदी
०३ अप्रैल	०७:२८ से	पू.फा.	१	मो	सिंह	चाँदी
	१४:०० से	पू.फा.	२	टा	सिंह	चाँदी
	२०:३३ से	पू.फा.	३	टी	सिंह	चाँदी
०४ अप्रैल	०३:०६ से	पू.फा.	४	टू	सिंह	चाँदी
	०९:३९ से	उ.फा.	१	टे	सिंह	चाँदी
	१६:०६ से	उ.फा.	२	टो	कन्या	चाँदी
	२२:३३ से	उ.फा.	३	पा	कन्या	चाँदी
०५ अप्रैल	०५:०० से	उ.फा.	४	पी	कन्या	चाँदी
	११:२७ से	हस्त	१	पू	कन्या	चाँदी
	१७:४७ से	हस्त	२	ष	कन्या	चाँदी
०६ अप्रैल	००:०७ से	हस्त	३	ण	कन्या	चाँदी
	०६:२७ से	हस्त	४	ठ	कन्या	चाँदी
	१२:४८ से	चित्रा	१	पे	कन्या	चाँदी
	१९:०० से	चित्रा	२	पो	कन्या	चाँदी
०७ अप्रैल	०१:१३ से	चित्रा	३	रा	तुला	चाँदी
	०७:२५ से	चित्रा	४	री	तुला	चाँदी
	१३:३८ से	स्वाति	१	रू	तुला	चाँदी
	१९:४३ से	स्वाति	२	रे	तुला	चाँदी
०८ अप्रैल	०१:४८ से	स्वाति	३	रो	तुला	चाँदी
	०७:५३ से	स्वाति	४	ता	तुला	चाँदी
	१३:५९ से	विशाखा	१	ती	तुला	ताम्बा
	१९:५७ से	विशाखा	२	तू	तुला	ताम्बा
०९ अप्रैल	०१:५५ से	विशाखा	३	ते	तुला	ताम्बा
	०७:५३ से	विशाखा	४	तो	वृश्चिक	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
०९ अप्रैल	१३:५२ से	अनुराधा	१	ना	वृश्चिक	ताम्बा
	१९:४३ से	अनुराधा	२	नी	वृश्चिक	ताम्बा
१० अप्रैल	०१:३५ से	अनुराधा	३	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	०७:२७ से	अनुराधा	४	ने	वृश्चिक	ताम्बा
	१३:१९ से	ज्येष्ठ	१	नो	वृश्चिक	ताम्बा
	१९:०५ से	ज्येष्ठ	२	या	वृश्चिक	ताम्बा
११ अप्रैल	००:५१ से	ज्येष्ठ	३	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	०६:३७ से	ज्येष्ठ	४	यू	वृश्चिक	ताम्बा
	१२:२४ से	मूल	१	ये	धनु	ताम्बा
	१८:०५ से	मूल	२	यो	धनु	ताम्बा
	२३:४७ से	मूल	३	भा	धनु	ताम्बा
१२ अप्रैल	०५:२८ से	मूल	४	भी	धनु	ताम्बा
	११:१० से	पू.षा.	१	भू	धनु	ताम्बा
	१६:४८ से	पू.षा.	२	धा	धनु	ताम्बा
	२२:२६ से	पू.षा.	३	फा	धनु	ताम्बा
१३ अप्रैल	०४:०४ से	पू.षा.	४	ढा	धनु	ताम्बा
	०९:४३ से	उ.षा.	१	भे	धनु	ताम्बा
	१५:१९ से	उ.षा.	२	भो	मकर	ताम्बा
	२०:५५ से	उ.षा.	३	जा	मकर	ताम्बा
१४ अप्रैल	०२:३१ से	उ.षा.	४	जी	मकर	ताम्बा
	०८:०७ से	श्रवण	१	खी	मकर	ताम्बा
	१३:४२ से	श्रवण	२	खू	मकर	ताम्बा
	१९:१७ से	श्रवण	३	खे	मकर	ताम्बा
१५ अप्रैल	००:५२ से	श्रवण	४	खो	मकर	ताम्बा
	०६:२७ से	धनिष्ठा	१	गा	मकर	ताम्बा
	१२:०२ से	धनिष्ठा	२	गी	मकर	ताम्बा
	१७:३७ से	धनिष्ठा	३	गू	कुम्भ	ताम्बा
	२३:१२ से	धनिष्ठा	४	गे	कुम्भ	ताम्बा
१६ अप्रैल	०४:४७ से	शतभिषा	१	गो	कुम्भ	ताम्बा
	१०:३८ से	शतभिषा	२	सा	कुम्भ	ताम्बा
	१६:३० से	शतभिषा	३	सी	कुम्भ	ताम्बा
	२२:२२ से	शतभिषा	४	सू	कुम्भ	ताम्बा
१७ अप्रैल	०४:१४ से	पू.भा.	१	से	कुम्भ	लोहा
	०९:५३ से	पू.भा.	२	सो	कुम्भ	लोहा
	१५:३२ से	पू.भा.	३	दा	कुम्भ	लोहा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
१७ अप्रैल	२१:११ से	पू.भा.	४	दी	मीन	लोहा
१८ अप्रैल	०२:५१ से	उ.भा.	१	दू	मीन	लोहा
	०८:१९ से	उ.भा.	२	थ	मीन	लोहा
	१३:४७ से	उ.भा.	३	झ	मीन	लोहा
	१९:१५ से	उ.भा.	४	ञ	मीन	लोहा
१९ अप्रैल	००:४४ से	रेवती	१	दे	मीन	सोना
	०६:३२ से	रेवती	२	दो	मीन	सोना
	१२:२० से	रेवती	३	चा	मीन	सोना
	१८:०८ से	रेवती	४	ची	मीन	सोना
	२३:५७ से	अश्विनी	१	चू	मेष	सोना
२० अप्रैल	०५:५० से	अश्विनी	२	चे	मेष	सोना
	११:४४ से	अश्विनी	३	चो	मेष	सोना
	१७:३८ से	अश्विनी	४	ला	मेष	सोना
	२३:३२ से	भरणी	१	ली	मेष	सोना
२१ अप्रैल	०५:३२ से	भरणी	२	लू	मेष	सोना
	११:३३ से	भरणी	३	ले	मेष	सोना
	१७:३४ से	भरणी	४	लो	मेष	सोना
	२३:३५ से	कृत्ति.	१	अ	मेष	सोना
२२ अप्रैल	०५:४२ से	कृत्ति.	२	ई	वृष	सोना
	११:५० से	कृत्ति.	३	ऊ	वृष	सोना
	१७:५८ से	कृत्ति.	४	ए	वृष	सोना
२३ अप्रैल	००:०६ से	रोहिणी	१	ओ	वृष	सोना
	०६:२१ से	रोहिणी	२	वा	वृष	सोना
	१२:३७ से	रोहिणी	३	वी	वृष	सोना
	१८:५२ से	रोहिणी	४	वू	वृष	सोना
२४ अप्रैल	०१:०८ से	मृगशि.	१	वे	वृष	सोना
	०७:३० से	मृगशि.	२	वो	वृष	सोना
	१३:५३ से	मृगशि.	३	का	मिथुन	सोना
	२०:१६ से	मृगशि.	४	की	मिथुन	सोना
२५ अप्रैल	०२:३९ से	आर्द्रा	१	कू	मिथुन	चाँदी
	०९:०८ से	आर्द्रा	२	घ	मिथुन	चाँदी
	१५:३७ से	आर्द्रा	३	ङ	मिथुन	चाँदी
	२२:०६ से	आर्द्रा	४	छ	मिथुन	चाँदी
२६ अप्रैल	०४:३६ से	पुनर्वसु	१	के	मिथुन	चाँदी
	११:१० से	पुनर्वसु	२	को	मिथुन	चाँदी
	१७:४५ से	पुनर्वसु	३	ह	मिथुन	चाँदी

✻ संवत् २०८०, सन् २०२३-२४ में जन्मे बच्चों के नामाक्षर, नक्षत्र चरण, राशि व पाया ✻

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
२६ अप्रैल	००:१९ से	पुनर्वसु	४	ही	कर्क	चाँदी
२७ अप्रैल	०६:५४ से	पुष्य	१	हू	कर्क	चाँदी
	१३:३२ से	पुष्य	२	हे	कर्क	चाँदी
	२०:१० से	पुष्य	३	हो	कर्क	चाँदी
२८ अप्रैल	०२:४८ से	पुष्य	४	डा	कर्क	चाँदी
	०९:२७ से	आश्ले	१	डी	कर्क	चाँदी
	१६:०६ से	आश्ले	२	डू	कर्क	चाँदी
	२२:४५ से	आश्ले	३	डे	कर्क	चाँदी
२९ अप्रैल	०५:२४ से	आश्ले	४	डो	कर्क	चाँदी
	१२:०४ से	मघा	१	मा	सिंह	चाँदी
	१८:४१ से	मघा	२	मी	सिंह	चाँदी
३० अप्रैल	०१:१९ से	मघा	३	मू	सिंह	चाँदी
	०७:५७ से	मघा	४	मे	सिंह	चाँदी
	१४:३५ से	पू.फा.	१	मो	सिंह	चाँदी
	२१:०९ से	पू.फा.	२	टा	सिंह	चाँदी
०१ मई	०३:४३ से	पू.फा.	३	टी	सिंह	चाँदी
	१०:१७ से	पू.फा.	४	टू	सिंह	चाँदी
	१६:५१ से	उ.फा.	१	टे	सिंह	चाँदी
	२३:१९ से	उ.फा.	२	टो	कन्या	चाँदी
०२ मई	०५:४८ से	उ.फा.	३	पा	कन्या	चाँदी
	१२:१६ से	उ.फा.	४	पी	कन्या	चाँदी
	१८:४५ से	हस्त	१	पू	कन्या	चाँदी
०३ मई	०१:०६ से	हस्त	२	ष	कन्या	चाँदी
	०७:२८ से	हस्त	३	ण	कन्या	चाँदी
	१३:५० से	हस्त	४	ठ	कन्या	चाँदी
	२०:१२ से	चित्रा	१	पे	कन्या	चाँदी
०४ मई	०२:२६ से	चित्रा	२	पो	कन्या	चाँदी
	०८:४१ से	चित्रा	३	रा	तुला	चाँदी
	१४:५५ से	चित्रा	४	री	तुला	चाँदी
	२१:१० से	स्वाति	१	रू	तुला	चाँदी
०५ मई	०३:१७ से	स्वाति	२	रे	तुला	चाँदी
	०९:२४ से	स्वाति	३	रो	तुला	चाँदी
	१५:३१ से	स्वाति	४	ता	तुला	चाँदी
	२१:३८ से	विशाखा	१	ती	तुला	ताम्बा
०६ मई	०३:३७ से	विशाखा	२	तू	तुला	ताम्बा
	०९:३७ से	विशाखा	३	ते	तुला	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
०६ मई	१५:३७ से	विशाखा	४	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	२१:३७ से	अनुराधा	१	ना	वृश्चिक	ताम्बा
०७ मई	०३:३० से	अनुराधा	२	नी	वृश्चिक	ताम्बा
	०९:२३ से	अनुराधा	३	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	१५:१६ से	अनुराधा	४	ने	वृश्चिक	ताम्बा
	२१:१० से	ज्येष्ठा	१	नो	वृश्चिक	ताम्बा
०८ मई	०२:५७ से	ज्येष्ठा	२	या	वृश्चिक	ताम्बा
	०८:४५ से	ज्येष्ठा	३	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	१४:३२ से	ज्येष्ठा	४	यू	वृश्चिक	ताम्बा
	२०:२० से	मूल	१	ये	धनु	ताम्बा
०९ मई	०२:०२ से	मूल	२	यो	धनु	ताम्बा
	०७:४५ से	मूल	३	भा	धनु	ताम्बा
	१३:२८ से	मूल	४	भी	धनु	ताम्बा
	१९:११ से	पू.षा.	१	भू	धनु	ताम्बा
१० मई	००:४९ से	पू.षा.	२	धा	धनु	ताम्बा
	०६:२८ से	पू.षा.	३	फा	धनु	ताम्बा
	१२:०७ से	पू.षा.	४	ढा	धनु	ताम्बा
	१७:४६ से	उ.षा.	१	भे	धनु	ताम्बा
	२३:३७ से	उ.षा.	२	भो	मकर	ताम्बा
११ मई	०५:२९ से	उ.षा.	३	जा	मकर	ताम्बा
	११:२० से	उ.षा.	४	जी	मकर	ताम्बा
	१७:१२ से	श्रवण	१	खी	मकर	ताम्बा
	२२:३७ से	श्रवण	२	खू	मकर	ताम्बा
१२ मई	०४:०२ से	श्रवण	३	खे	मकर	ताम्बा
	०९:२७ से	श्रवण	४	खो	मकर	ताम्बा
	१४:५३ से	धनिष्ठा	१	गा	मकर	ताम्बा
	२०:२३ से	धनिष्ठा	२	गी	मकर	ताम्बा
१३ मई	०१:५३ से	धनिष्ठा	३	गू	कुम्भ	ताम्बा
	०७:२३ से	धनिष्ठा	४	गे	कुम्भ	ताम्बा
	१२:५३ से	शतभिषा	१	गो	कुम्भ	ताम्बा
	१८:२९ से	शतभिषा	२	सा	कुम्भ	ताम्बा
१४ मई	००:०५ से	शतभिषा	३	सी	कुम्भ	ताम्बा
	०५:४१ से	शतभिषा	४	सू	कुम्भ	ताम्बा
	११:१८ से	पू.भा.	१	से	कुम्भ	लोहा
	१६:५६ से	पू.भा.	२	सो	कुम्भ	लोहा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
१४ मई	२२:३५ से	पू.भा.	३	दा	कुम्भ	लोहा
१५ मई	०४:१३ से	पू.भा.	४	दी	मीन	लोहा
	०९:५२ से	उ.भा.	१	दू	मीन	लोहा
	१५:३४ से	उ.भा.	२	थ	मीन	लोहा
	२१:१६ से	उ.भा.	३	झ	मीन	लोहा
१६ मई	०२:५८ से	उ.भा.	४	ञ	मीन	लोहा
	०८:४१ से	रेवती	१	दे	मीन	सोना
	१४:२८ से	रेवती	२	दो	मीन	सोना
	२०:१५ से	रेवती	३	चा	मीन	सोना
१७ मई	०२:०२ से	रेवती	४	ची	मीन	सोना
	०७:४९ से	अश्विनी	१	चू	मेष	सोना
	१३:४१ से	अश्विनी	२	चे	मेष	सोना
	१९:३४ से	अश्विनी	३	चो	मेष	सोना
१८ मई	०१:२६ से	अश्विनी	४	ला	मेष	सोना
	०७:१९ से	भरणी	१	ली	मेष	सोना
	१३:१८ से	भरणी	२	लू	मेष	सोना
	१९:१७ से	भरणी	३	ले	मेष	सोना
१९ मई	०१:१६ से	भरणी	४	लो	मेष	सोना
	०७:१६ से	कृत्ति.	१	अ	मेष	सोना
	१३:२२ से	कृत्ति.	२	ई	वृष	सोना
	१९:२८ से	कृत्ति.	३	ऊ	वृष	सोना
२० मई	०१:३४ से	कृत्ति.	४	ए	वृष	सोना
	०७:४१ से	रोहिणी	१	ओ	वृष	सोना
	१३:५४ से	रोहिणी	२	वा	वृष	सोना
	२०:०८ से	रोहिणी	३	वी	वृष	सोना
२१ मई	०२:२१ से	रोहिणी	४	वू	वृष	सोना
	०८:३५ से	मृगशि.	१	वे	वृष	सोना
	१४:५६ से	मृगशि.	२	वो	वृष	सोना
	२१:१७ से	मृगशि.	३	का	मिथुन	सोना
२२ मई	०३:३८ से	मृगशि.	४	की	मिथुन	सोना
	१०:०० से	आर्द्रा	१	कू	मिथुन	चाँदी
	१६:२८ से	आर्द्रा	२	घ	मिथुन	चाँदी
	२२:५६ से	आर्द्रा	३	ङ	मिथुन	चाँदी
२३ मई	०५:२४ से	आर्द्रा	४	छ	मिथुन	चाँदी
	११:५२ से	पुनर्वसु	१	के	मिथुन	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
२३ मई	१८:२५ से	पुनर्वसु	२	को	मिथुन	चाँदी
२४ मई	००:५९ से	पुनर्वसु	३	ह	मिथुन	चाँदी
	०७:३२ से	पुनर्वसु	४	ही	कर्क	चाँदी
	१४:०६ से	पुष्य	१	हू	कर्क	चाँदी
	२०:४३ से	पुष्य	२	हे	कर्क	चाँदी
२५ मई	०३:२१ से	पुष्य	३	हो	कर्क	चाँदी
	०९:५८ से	पुष्य	४	डा	कर्क	चाँदी
	१६:३६ से	आश्ले	१	डी	कर्क	चाँदी
	२३:१५ से	आश्ले	२	डू	कर्क	चाँदी
२६ मई	०५:५५ से	आश्ले	३	डे	कर्क	चाँदी
	१२:३४ से	आश्ले	४	डो	कर्क	चाँदी
	१९:१४ से	मघा	१	मा	सिंह	चाँदी
२७ मई	०१:५२ से	मघा	२	मी	सिंह	चाँदी
	०८:३० से	मघा	३	मू	सिंह	चाँदी
	१५:०८ से	मघा	४	मे	सिंह	चाँदी
	२१:४७ से	पू.फा.	१	मो	सिंह	चाँदी
२८ मई	०४:२२ से	पू.फा.	२	टा	सिंह	चाँदी
	१०:५७ से	पू.फा.	३	टी	सिंह	चाँदी
	१७:३२ से	पू.फा.	४	टू	सिंह	चाँदी
२९ मई	००:०८ से	उ.फा.	१	टे	सिंह	चाँदी
	०६:३८ से	उ.फा.	२	टो	कन्या	चाँदी
	१३:०८ से	उ.फा.	३	पा	कन्या	चाँदी
	१९:३८ से	उ.फा.	४	पी	कन्या	चाँदी
३० मई	०२:०८ से	हस्त	१	पू	कन्या	चाँदी
	०८:३१ से	हस्त	२	ष	कन्या	चाँदी
	१४:५५ से	हस्त	३	ण	कन्या	चाँदी
	२१:१८ से	हस्त	४	ठ	कन्या	चाँदी
३१ मई	०३:४२ से	चित्रा	१	पे	कन्या	चाँदी
	०९:५८ से	चित्रा	२	पो	कन्या	चाँदी
	१६:१४ से	चित्रा	३	रा	तुला	चाँदी
	२२:३० से	चित्रा	४	री	तुला	चाँदी
०१ जून	०४:४७ से	स्वाति	१	रू	तुला	चाँदी
	१०:५५ से	स्वाति	२	रे	तुला	चाँदी
	१७:०४ से	स्वाति	३	रो	तुला	चाँदी
	२३:१३ से	स्वाति	४	ता	तुला	चाँदी

❊ संवत् २०८०, सन् २०२३-२४ में जन्मे बच्चों के नामाक्षर, नक्षत्र चरण, राशि व पाया ❊

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
०२ जून	०५:२२ से	विशाखा	१	ती	तुला	ताम्बा
	११:२३ से	विशाखा	२	तू	तुला	ताम्बा
	१७:२५ से	विशाखा	३	ते	तुला	ताम्बा
	२३:२६ से	विशाखा	४	तो	वृश्चिक	ताम्बा
०३ जून	०५:२८ से	अनुराधा	१	ना	वृश्चिक	ताम्बा
	११:२२ से	अनुराधा	२	नी	वृश्चिक	ताम्बा
	१७:१७ से	अनुराधा	३	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	२३:११ से	अनुराधा	४	ने	वृश्चिक	ताम्बा
०४ जून	०५:०६ से	ज्येष्ठा	१	नो	वृश्चिक	ताम्बा
	१०:५४ से	ज्येष्ठा	२	या	वृश्चिक	ताम्बा
	१६:४३ से	ज्येष्ठा	३	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	२२:३२ से	ज्येष्ठा	४	यू	वृश्चिक	ताम्बा
०५ जून	०४:२१ से	मूल	१	ये	धनु	ताम्बा
	१०:०४ से	मूल	२	यो	धनु	ताम्बा
	१५:४८ से	मूल	३	भा	धनु	ताम्बा
	२१:३२ से	मूल	४	भी	धनु	ताम्बा
०६ जून	०३:१६ से	पू.षा.	१	भू	धनु	ताम्बा
	०८:५५ से	पू.षा.	२	धा	धनु	ताम्बा
	१४:३५ से	पू.षा.	३	फा	धनु	ताम्बा
	२०:१५ से	पू.षा.	४	ढा	धनु	ताम्बा
०७ जून	०१:५५ से	उ.षा.	१	भे	धनु	ताम्बा
	०७:३२ से	उ.षा.	२	भो	मकर	ताम्बा
	१३:०९ से	उ.षा.	३	जा	मकर	ताम्बा
	१८:४६ से	उ.षा.	४	जी	मकर	ताम्बा
०८ जून	००:२३ से	श्रवण	१	खी	मकर	ताम्बा
	०५:५८ से	श्रवण	२	खू	मकर	ताम्बा
	११:३४ से	श्रवण	३	खे	मकर	ताम्बा
	१७:०९ से	श्रवण	४	खो	मकर	ताम्बा
	२२:४५ से	धनिष्ठा	१	गा	मकर	ताम्बा
०९ जून	०४:१९ से	धनिष्ठा	२	गी	मकर	ताम्बा
	०९:५४ से	धनिष्ठा	३	गू	कुम्भ	ताम्बा
	१५:२९ से	धनिष्ठा	४	गे	कुम्भ	ताम्बा
	२१:०४ से	शतभिषा	१	गो	कुम्भ	ताम्बा
१० जून	०२:४० से	शतभिषा	२	सा	कुम्भ	ताम्बा
	०८:१६ से	शतभिषा	३	सी	कुम्भ	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
१० जून	१३:५२ से	शतभिषा	४	सू	कुम्भ	ताम्बा
	१९:२८ से	पू.भा.	१	से	कुम्भ	लोहा
११ जून	०१:०६ से	पू.भा.	२	सो	कुम्भ	लोहा
	०६:४४ से	पू.भा.	३	दा	कुम्भ	लोहा
	१२:२२ से	पू.भा.	४	दी	मीन	लोहा
	१८:०१ से	उ.भा.	१	दू	मीन	लोहा
	२३:४२ से	उ.भा.	२	थ	मीन	लोहा
१२ जून	०५:२३ से	उ.भा.	३	झ	मीन	लोहा
	११:०४ से	उ.भा.	४	ञ	मीन	लोहा
	१६:४६ से	रेवती	१	दे	मीन	सोना
	२२:३१ से	रेवती	२	दो	मीन	सोना
१३ जून	०४:१७ से	रेवती	३	चा	मीन	सोना
	१०:०३ से	रेवती	४	ची	मीन	सोना
	१५:४९ से	अश्विनी	१	चू	मेष	सोना
	२१:४० से	अश्विनी	२	चे	मेष	सोना
१४ जून	०३:३१ से	अश्विनी	३	चो	मेष	सोना
	०९:२२ से	अश्विनी	४	ला	मेष	सोना
	१५:१४ से	भरणी	१	ली	मेष	सोना
	२१:११ से	भरणी	२	लू	मेष	सोना
१५ जून	०३:०९ से	भरणी	३	ले	मेष	सोना
	०९:०७ से	भरणी	४	लो	मेष	सोना
	१५:०५ से	कृत्ति.	१	अ	मेष	सोना
	२१:०९ से	कृत्ति.	२	ई	वृष	सोना
१६ जून	०३:१४ से	कृत्ति.	३	ऊ	वृष	सोना
	०९:१८ से	कृत्ति.	४	ए	वृष	सोना
	१५:२३ से	रोहिणी	१	ओ	वृष	सोना
	२१:३५ से	रोहिणी	२	वा	वृष	सोना
१७ जून	०३:४७ से	रोहिणी	३	वी	वृष	सोना
	०९:५९ से	रोहिणी	४	वू	वृष	सोना
	१६:११ से	मृगशि.	१	वे	वृष	सोना
	२२:३० से	मृगशि.	२	वो	वृष	सोना
१८ जून	०४:५० से	मृगशि.	३	का	मिथुन	सोना
	११:०९ से	मृगशि.	४	की	मिथुन	सोना
	१७:२९ से	आर्द्रा	१	कू	मिथुन	चाँदी
	२३:५५ से	आर्द्रा	२	घ	मिथुन	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
१९ जून	०६:२२ से	आर्द्रा	३	ङ	मिथुन	चाँदी
	१२:४८ से	आर्द्रा	४	छ	मिथुन	चाँदी
	१९:१५ से	पुनर्वसु	१	के	मिथुन	चाँदी
२० जून	०१:१७ से	पुनर्वसु	२	को	मिथुन	चाँदी
	०७:२० से	पुनर्वसु	३	ह	मिथुन	चाँदी
	१३:२२ से	पुनर्वसु	४	ही	कर्क	चाँदी
	१९:२५ से	पुष्य	१	हू	कर्क	चाँदी
२१ जून	०२:३१ से	पुष्य	२	हे	कर्क	चाँदी
	०९:३८ से	पुष्य	३	हो	कर्क	चाँदी
	१६:४५ से	पुष्य	४	डा	कर्क	चाँदी
	२३:५२ से	आश्ले	१	डी	कर्क	चाँदी
२२ जून	०६:३१ से	आश्ले	२	डू	कर्क	चाँदी
	१३:१० से	आश्ले	३	डे	कर्क	चाँदी
	१९:४९ से	आश्ले	४	डो	कर्क	चाँदी
२३ जून	०२:२९ से	मघा	१	मा	सिंह	चाँदी
	०९:०७ से	मघा	२	मी	सिंह	चाँदी
	१५:४६ से	मघा	३	मू	सिंह	चाँदी
	२२:२५ से	मघा	४	मे	सिंह	चाँदी
२४ जून	०५:०४ से	पू.फा.	१	मो	सिंह	चाँदी
	११:४० से	पू.फा.	२	टा	सिंह	चाँदी
	१८:१६ से	पू.फा.	३	टी	सिंह	चाँदी
	००:५२ से	पू.फा.	४	टू	सिंह	चाँदी
२५ जून	०७:२९ से	उ.फा.	१	टे	सिंह	चाँदी
	१४:०० से	उ.फा.	२	टो	कन्या	चाँदी
	२०:३२ से	उ.फा.	३	पा	कन्या	चाँदी
	०३:०३ से	उ.फा.	४	पी	कन्या	चाँदी
२६ जून	०९:३५ से	हस्त	१	पू	कन्या	चाँदी
	१६:०० से	हस्त	२	ष	कन्या	चाँदी
	२२:२५ से	हस्त	३	ण	कन्या	चाँदी
	०४:५० से	हस्त	४	ठ	कन्या	चाँदी
२७ जून	११:१५ से	चित्रा	१	पे	कन्या	चाँदी
	१७:३३ से	चित्रा	२	पो	कन्या	चाँदी
	२३:५१ से	चित्रा	३	रा	तुला	चाँदी
२८ जून	०६:०९ से	चित्रा	४	री	तुला	चाँदी
	१२:२७ से	स्वाति	१	रू	तुला	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
२८ जून	१८:३७ से	स्वाति	२	रे	तुला	चाँदी
२९ जून	००:४८ से	स्वाति	३	रो	तुला	चाँदी
	०६:५८ से	स्वाति	४	ता	तुला	चाँदी
	१३:०९ से	विशाखा	१	ती	तुला	ताम्बा
	१९:१२ से	विशाखा	२	तू	तुला	ताम्बा
३० जून	०१:१५ से	विशाखा	३	ते	तुला	ताम्बा
	०७:१८ से	विशाखा	४	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	१३:२१ से	अनुराधा	१	ना	वृश्चिक	ताम्बा
	१९:१७ से	अनुराधा	२	नी	वृश्चिक	ताम्बा
०१ जुलाई	०१:१३ से	अनुराधा	३	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	०७:०९ से	अनुराधा	४	ने	वृश्चिक	ताम्बा
	१३:०६ से	ज्येष्ठा	१	नो	वृश्चिक	ताम्बा
	१८:५६ से	ज्येष्ठा	२	या	वृश्चिक	ताम्बा
०२ जुलाई	००:४६ से	ज्येष्ठा	३	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	०६:३६ से	ज्येष्ठा	४	यू	वृश्चिक	ताम्बा
	१२:२६ से	मूल	१	ये	धनु	ताम्बा
	१८:१० से	मूल	२	यो	धनु	ताम्बा
	२३:५५ से	मूल	३	भा	धनु	ताम्बा
०३ जुलाई	०५:४० से	मूल	४	भी	धनु	ताम्बा
	११:२५ से	पू.षा.	१	भू	धनु	ताम्बा
	१७:०५ से	पू.षा.	२	धा	धनु	ताम्बा
	२२:४६ से	पू.षा.	३	फा	धनु	ताम्बा
०४ जुलाई	०४:२७ से	पू.षा.	४	ढा	धनु	ताम्बा
	१०:०८ से	उ.षा.	१	भे	धनु	ताम्बा
	१५:४५ से	उ.षा.	२	भो	मकर	ताम्बा
	२१:२३ से	उ.षा.	३	जा	मकर	ताम्बा
०५ जुलाई	०३:०० से	उ.षा.	४	जी	मकर	ताम्बा
	०८:३८ से	श्रवण	१	खी	मकर	ताम्बा
	१४:१३ से	श्रवण	२	खू	मकर	ताम्बा
	१९:४९ से	श्रवण	३	खे	मकर	ताम्बा
०६ जुलाई	०१:२४ से	श्रवण	४	खो	मकर	ताम्बा
	०७:०० से	धनिष्ठा	१	गा	मकर	ताम्बा
	१२:३४ से	धनिष्ठा	२	गी	मकर	ताम्बा
	१८:०९ से	धनिष्ठा	३	गू	कुम्भ	ताम्बा
	२३:४४ से	धनिष्ठा	४	गे	कुम्भ	ताम्बा

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

❊ संवत् २०८०, सन् २०२३-२४ में जन्मे बच्चों के नामाक्षर, नक्षत्र चरण, राशि व पाया ❊

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
०७ जुलाई	०५:१९ से	शतभिषा	१	गो	कुम्भ	ताम्बा
	१०:५४ से	शतभिषा	२	सा	कुम्भ	ताम्बा
	१६:३० से	शतभिषा	३	सी	कुम्भ	ताम्बा
	२२:०६ से	शतभिषा	४	सू	कुम्भ	ताम्बा
०८ जुलाई	०३:४२ से	पू.भा.	१	से	कुम्भ	लोहा
	०९:१९ से	पू.भा.	२	सो	कुम्भ	लोहा
	१४:५७ से	पू.भा.	३	दा	कुम्भ	लोहा
	२०:३४ से	पू.भा.	४	दी	मीन	लोहा
०९ जुलाई	०२:१२ से	उ.भा.	१	दू	मीन	लोहा
	०७:५२ से	उ.भा.	२	थ	मीन	लोहा
	१३:३३ से	उ.भा.	३	झ	मीन	लोहा
	१९:१३ से	उ.भा.	४	ञ	मीन	लोहा
१० जुलाई	००:५४ से	रेवती	१	दे	मीन	सोना
	०६:३९ से	रेवती	२	दो	मीन	सोना
	१२:२५ से	रेवती	३	चा	मीन	सोना
	१८:१० से	रेवती	४	ची	मीन	सोना
	२३:५६ से	अश्विनी	१	चू	मेष	सोना
११ जुलाई	०५:४५ से	अश्विनी	२	चे	मेष	सोना
	११:३४ से	अश्विनी	३	चो	मेष	सोना
	१७:२३ से	अश्विनी	४	ला	मेष	सोना
	२३:१३ से	भरणी	१	ली	मेष	सोना
१२ जुलाई	०५:०९ से	भरणी	२	लू	मेष	सोना
	११:०५ से	भरणी	३	ले	मेष	सोना
	१७:०१ से	भरणी	४	लो	मेष	सोना
	२२:५७ से	कृत्ति.	१	अ	मेष	सोना
१३ जुलाई	०४:५९ से	कृत्ति.	२	ई	वृष	सोना
	११:०२ से	कृत्ति.	३	ऊ	वृष	सोना
	१७:०५ से	कृत्ति.	४	ए	वृष	सोना
	२३:०८ से	रोहिणी	१	ओ	वृष	सोना
१४ जुलाई	०५:१८ से	रोहिणी	२	वा	वृष	सोना
	११:२८ से	रोहिणी	३	वी	वृष	सोना
	१७:३८ से	रोहिणी	४	वू	वृष	सोना
	२३:४९ से	मृगशि.	१	वे	वृष	सोना
१५ जुलाई	०६:०७ से	मृगशि.	२	वो	वृष	सोना
	१२:२५ से	मृगशि.	३	का	मिथुन	सोना

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
१५ जुलाई	१८:४३ से	मृगशि.	४	की	मिथुन	सोना
१६ जुलाई	०१:०१ से	आर्द्रा	१	कु	मिथुन	चाँदी
	०७:२५ से	आर्द्रा	२	घ	मिथुन	चाँदी
	१३:५० से	आर्द्रा	३	ङ	मिथुन	चाँदी
	२०:१५ से	आर्द्रा	४	छ	मिथुन	चाँदी
१७ जुलाई	०२:४० से	पुनर्वसु	१	के	मिथुन	चाँदी
	०९:११ से	पुनर्वसु	२	को	मिथुन	चाँदी
	१५:४२ से	पुनर्वसु	३	ह	मिथुन	चाँदी
	२२:१३ से	पुनर्वसु	४	ही	कर्क	चाँदी
१८ जुलाई	०४:४५ से	पुष्य	१	हू	कर्क	चाँदी
	११:२१ से	पुष्य	२	हे	कर्क	चाँदी
	१७:५७ से	पुष्य	३	हो	कर्क	चाँदी
१९ जुलाई	००:३३ से	पुष्य	४	डा	कर्क	चाँदी
	०७:०९ से	आश्ले	१	डी	कर्क	चाँदी
	१३:४७ से	आश्ले	२	डू	कर्क	चाँदी
	२०:२६ से	आश्ले	३	डे	कर्क	चाँदी
२० जुलाई	०३:०५ से	आश्ले	४	डो	कर्क	चाँदी
	०९:४४ से	मघा	१	मा	सिंह	चाँदी
	१६:२३ से	मघा	२	मी	सिंह	चाँदी
	२३:०२ से	मघा	३	मू	सिंह	चाँदी
२१ जुलाई	०५:४१ से	मघा	४	मे	सिंह	चाँदी
	१२:२१ से	पू.फा.	१	मो	सिंह	चाँदी
	१८:५७ से	पू.फा.	२	टा	सिंह	चाँदी
२२ जुलाई	०१:३४ से	पू.फा.	३	टी	सिंह	चाँदी
	०८:११ से	पू.फा.	४	टू	सिंह	चाँदी
	१४:४८ से	उ.फा.	१	टे	सिंह	चाँदी
	२१:२० से	उ.फा.	२	टो	कन्या	चाँदी
२३ जुलाई	०३:५३ से	उ.फा.	३	पा	कन्या	चाँदी
	१०:२६ से	उ.फा.	४	पी	कन्या	चाँदी
	१६:५९ से	हस्त	१	पू	कन्या	चाँदी
	२३:२५ से	हस्त	२	ष	कन्या	चाँदी
२४ जुलाई	०५:५२ से	हस्त	३	ण	कन्या	चाँदी
	१२:१८ से	हस्त	४	ठ	कन्या	चाँदी
	१८:४५ से	चित्रा	१	पे	कन्या	चाँदी
२५ जुलाई	०१:०४ से	चित्रा	२	पो	कन्या	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
२५ जुलाई	०७:२४ से	चित्रा	३	रा	तुला	चाँदी
	१३:४४ से	चित्रा	४	री	तुला	चाँदी
	२०:०४ से	स्वाति	१	रू	तुला	चाँदी
२६ जुलाई	०२:०४ से	स्वाति	२	रे	तुला	चाँदी
	०८:०४ से	स्वाति	३	रो	तुला	चाँदी
	१४:०४ से	स्वाति	४	ता	तुला	चाँदी
	२०:०४ से	विशाखा	१	ती	तुला	ताम्बा
२७ जुलाई	०२:२० से	विशाखा	२	तू	तुला	ताम्बा
	०८:३७ से	विशाखा	३	ते	तुला	ताम्बा
	१४:५४ से	विशाखा	४	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	२१:११ से	अनुराधा	१	ना	वृश्चिक	ताम्बा
२८ जुलाई	०३:०८ से	अनुराधा	२	नी	वृश्चिक	ताम्बा
	०९:०६ से	अनुराधा	३	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	१५:०४ से	अनुराधा	४	ने	वृश्चिक	ताम्बा
	२१:०२ से	ज्येष्ठ	१	नो	वृश्चिक	ताम्बा
२९ जुलाई	०२:५३ से	ज्येष्ठ	२	या	वृश्चिक	ताम्बा
	०८:४४ से	ज्येष्ठ	३	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	१४:३५ से	ज्येष्ठ	४	यू	वृश्चिक	ताम्बा
	२०:२७ से	मूल	१	ये	धनु	ताम्बा
३० जुलाई	०२:१३ से	मूल	२	यो	धनु	ताम्बा
	०७:५९ से	मूल	३	भा	धनु	ताम्बा
	१३:४५ से	मूल	४	भी	धनु	ताम्बा
	१९:३१ से	पू.षा.	१	भू	धनु	ताम्बा
३१ जुलाई	०१:१२ से	पू.षा.	२	धा	धनु	ताम्बा
	०६:५३ से	पू.षा.	३	फा	धनु	ताम्बा
	१२:३४ से	पू.षा.	४	ढा	धनु	ताम्बा
	१८:१६ से	उ.षा.	१	भे	धनु	ताम्बा
	२३:५४ से	उ.षा.	२	भो	मकर	ताम्बा
०१ अगस्त	०५:३२ से	उ.षा.	३	जा	मकर	ताम्बा
	११:१० से	उ.षा.	४	जी	मकर	ताम्बा
	१६:४९ से	श्रवण	१	खी	मकर	ताम्बा
	२२:२४ से	श्रवण	२	खू	मकर	ताम्बा
०२ अगस्त	०४:०० से	श्रवण	३	खे	मकर	ताम्बा
	०९:३६ से	श्रवण	४	खो	मकर	ताम्बा
	१५:१२ से	धनिष्ठा	१	गा	मकर	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
०२ अग	२०:४७ से	धनिष्ठा	२	गी	मकर	ताम्बा
०३ अगस्त	०२:२२ से	धनिष्ठा	३	गू	कुम्भ	ताम्बा
	०७:५७ से	धनिष्ठा	४	गे	कुम्भ	ताम्बा
	१३:३२ से	शतभिषा	१	गो	कुम्भ	ताम्बा
	१९:०७ से	शतभिषा	२	सा	कुम्भ	ताम्बा
०४ अगस्त	००:४२ से	शतभिषा	३	सी	कुम्भ	ताम्बा
	०६:१७ से	शतभिषा	४	सू	कुम्भ	ताम्बा
	११:५३ से	पू.भा.	१	से	कुम्भ	लोहा
	१७:२९ से	पू.भा.	२	सो	कुम्भ	लोहा
	२३:०६ से	पू.भा.	३	दा	कुम्भ	लोहा
०५ अगस्त	०४:४३ से	पू.भा.	४	दी	मीन	लोहा
	१०:२० से	उ.भा.	१	दू	मीन	लोहा
	१५:५९ से	उ.भा.	२	थ	मीन	लोहा
	२१:३९ से	उ.भा.	३	झ	मीन	लोहा
०६ अगस्त	०३:१९ से	उ.भा.	४	ञ	मीन	लोहा
	०८:५९ से	रेवती	१	दे	मीन	सोना
	१४:४२ से	रेवती	२	दो	मीन	सोना
	२०:२६ से	रेवती	३	चा	मीन	सोना
०७ अगस्त	०२:०९ से	रेवती	४	ची	मीन	सोना
	०७:५३ से	अश्विनी	१	चू	मेष	सोना
	१३:४१ से	अश्विनी	२	चे	मेष	सोना
	१९:३० से	अश्विनी	३	चो	मेष	सोना
०८ अगस्त	०१:१९ से	अश्विनी	४	ला	मेष	सोना
	०७:०८ से	भरणी	१	ली	मेष	सोना
	१३:०२ से	भरणी	२	लू	मेष	सोना
	१८:५६ से	भरणी	३	ले	मेष	सोना
०९ अगस्त	००:५० से	भरणी	४	लो	मेष	सोना
	०६:४५ से	कृत्ति.	१	अ	मेष	सोना
	१२:४६ से	कृत्ति.	२	ई	वृष	सोना
	१८:४७ से	कृत्ति.	३	ऊ	वृष	सोना
१० अगस्त	००:४८ से	कृत्ति.	४	ए	वृष	सोना
	०६:५० से	रोहिणी	१	ओ	वृष	सोना
	१२:५८ से	रोहिणी	२	वा	वृष	सोना
	१९:०७ से	रोहिणी	३	वी	वृष	सोना
११अग	०१:१५ से	रोहिणी	४	वू	वृष	सोना

❊ संवत् २०८०, सन् २०२३-२४ में जन्मे बच्चों के नामाक्षर, नक्षत्र चरण, राशि व पाया ❊

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
११ अगस्त	०७:२४ से	मृगशि.	१	वे	वृष	सोना
	१३:४० से	मृगशि.	२	वो	वृष	सोना
	१९:५६ से	मृगशि.	३	का	मिथुन	सोना
१२ अगस्त	०२:१२ से	मृगशि.	४	की	मिथुन	सोना
	०८:२८ से	आर्द्रा	१	कू	मिथुन	चाँदी
	१४:५१ से	आर्द्रा	२	घ	मिथुन	चाँदी
	२१:१४ से	आर्द्रा	३	ङ	मिथुन	चाँदी
१३ अगस्त	०३:३७ से	आर्द्रा	४	छ	मिथुन	चाँदी
	१०:०१ से	पुनर्वसु	१	के	मिथुन	चाँदी
	१६:३० से	पुनर्वसु	२	को	मिथुन	चाँदी
	२३:०० से	पुनर्वसु	३	ह	मिथुन	चाँदी
१४ अगस्त	०५:३० से	पुनर्वसु	४	ही	कर्क	चाँदी
	१२:०० से	पुष्य	१	हू	कर्क	चाँदी
	१८:३५ से	पुष्य	२	हे	कर्क	चाँदी
१५ अगस्त	०१:१० से	पुष्य	३	हो	कर्क	चाँदी
	०७:४५ से	पुष्य	४	डा	कर्क	चाँदी
	१४:२० से	आश्ले	१	डी	कर्क	चाँदी
	२०:५८ से	आश्ले	२	डू	कर्क	चाँदी
१६ अगस्त	०३:३६ से	आश्ले	३	डे	कर्क	चाँदी
	१०:१४ से	आश्ले	४	डो	कर्क	चाँदी
	१६:५३ से	मघा	१	मा	सिंह	चाँदी
	२३:३२ से	मघा	२	मी	सिंह	चाँदी
१७ अगस्त	०६:११ से	मघा	३	मू	सिंह	चाँदी
	१२:५० से	मघा	४	मे	सिंह	चाँदी
	१९:३० से	पू.फा.	१	मो	सिंह	चाँदी
१८ अगस्त	०२:०७ से	पू.फा.	२	टा	सिंह	चाँदी
	०८:४५ से	पू.फा.	३	टी	सिंह	चाँदी
	१५:२३ से	पू.फा.	४	टू	सिंह	चाँदी
	२२:०१ से	उ.फा.	१	टे	सिंह	चाँदी
१९ अगस्त	०४:३४ से	उ.फा.	२	टो	कन्या	चाँदी
	११:०८ से	उ.फा.	३	पा	कन्या	चाँदी
	१७:४१ से	उ.फा.	४	पी	कन्या	चाँदी
२० अगस्त	००:१५ से	हस्त	१	पू	कन्या	चाँदी
	०६:४३ से	हस्त	२	ष	कन्या	चाँदी
	१३:११ से	हस्त	३	ण	कन्या	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
२० अग	१९:३९ से	हस्त	४	ठ	कन्या	चाँदी
२१ अगस्त	०२:०७ से	चित्रा	१	पे	कन्या	चाँदी
	०८:२८ से	चित्रा	२	पो	कन्या	चाँदी
	१४:४९ से	चित्रा	३	रा	तुला	चाँदी
	२१:१० से	चित्रा	४	री	तुला	चाँदी
२२ अगस्त	०३:३२ से	स्वाति	१	रू	तुला	चाँदी
	०९:४६ से	स्वाति	२	रे	तुला	चाँदी
	१६:०० से	स्वाति	३	रो	तुला	चाँदी
	२२:१४ से	स्वाति	४	ता	तुला	चाँदी
२३ अगस्त	०४:२८ से	विशाखा	१	ती	तुला	ताम्बा
	१०:३४ से	विशाखा	२	तू	तुला	ताम्बा
	१६:४० से	विशाखा	३	ते	तुला	ताम्बा
	२२:४६ से	विशाखा	४	तो	वृश्चिक	ताम्बा
२४ अगस्त	०४:५३ से	अनुराधा	१	ना	वृश्चिक	ताम्बा
	१०:५२ से	अनुराधा	२	नी	वृश्चिक	ताम्बा
	१६:५१ से	अनुराधा	३	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	२२:५० से	अनुराधा	४	ने	वृश्चिक	ताम्बा
२५ अगस्त	०४:५० से	ज्येष्ठा	१	नो	वृश्चिक	ताम्बा
	१०:४२ से	ज्येष्ठा	२	या	वृश्चिक	ताम्बा
	१६:३५ से	ज्येष्ठा	३	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	२२:२७ से	ज्येष्ठा	४	यू	वृश्चिक	ताम्बा
२६ अगस्त	०४:२० से	मूल	१	ये	धनु	ताम्बा
	१०:०७ से	मूल	२	यो	धनु	ताम्बा
	१५:५४ से	मूल	३	भा	धनु	ताम्बा
	२१:४१ से	मूल	४	भी	धनु	ताम्बा
२७ अगस्त	०३:२८ से	पू.षा.	१	भू	धनु	ताम्बा
	०९:१० से	पू.षा.	२	धा	धनु	ताम्बा
	१४:५३ से	पू.षा.	३	फा	धनु	ताम्बा
	२०:३५ से	पू.षा.	४	ढा	धनु	ताम्बा
२८ अगस्त	०२:१८ से	उ.षा.	१	भे	धनु	ताम्बा
	०७:५६ से	उ.षा.	२	भो	मकर	ताम्बा
	१३:३५ से	उ.षा.	३	जा	मकर	ताम्बा
	१९:१३ से	उ.षा.	४	जी	मकर	ताम्बा
२९ अगस्त	००:५२ से	श्रवण	१	खी	मकर	ताम्बा
	०६:२८ से	श्रवण	२	खू	मकर	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
२९ अगस्त	१२:०४ से	श्रवण	३	खे	मकर	ताम्बा
	१७:४० से	श्रवण	४	खो	मकर	ताम्बा
	२३:१७ से	धनिष्ठा	१	गा	मकर	ताम्बा
३० अगस्त	०४:५२ से	धनिष्ठा	२	गी	मकर	ताम्बा
	१०:२७ से	धनिष्ठा	३	गू	कुम्भ	ताम्बा
	१६:०२ से	धनिष्ठा	४	गे	कुम्भ	ताम्बा
	२१:३७ से	शतभिषा	१	गो	कुम्भ	ताम्बा
३१ अगस्त	०३:१२ से	शतभिषा	२	सा	कुम्भ	ताम्बा
	०८:४७ से	शतभिषा	३	सी	कुम्भ	ताम्बा
	१४:२२ से	शतभिषा	४	सू	कुम्भ	ताम्बा
	१९:५७ से	पू.भा.	१	से	कुम्भ	लोहा
०१ सितंबर	०१:३३ से	पू.भा.	२	सो	कुम्भ	लोहा
	०७:०९ से	पू.भा.	३	दा	कुम्भ	लोहा
	१२:४५ से	पू.भा.	४	दी	मीन	लोहा
	१८:२२ से	उ.भा.	१	दू	मीन	लोहा
०२ सितंबर	००:०१ से	उ.भा.	२	थ	मीन	लोहा
	०५:४० से	उ.भा.	३	झ	मीन	लोहा
	११:१९ से	उ.भा.	४	ञ	मीन	लोहा
	१६:५८ से	रेवती	१	दे	मीन	सोना
	२२:४० से	रेवती	२	दो	मीन	सोना
०३ सितंबर	०४:२३ से	रेवती	३	चा	मीन	सोना
	१०:०५ से	रेवती	४	ची	मीन	सोना
	१५:४८ से	अश्विनी	१	चू	मेष	सोना
	२१:३५ से	अश्विनी	२	चे	मेष	सोना
०४ सितंबर	०३:२२ से	अश्विनी	३	चो	मेष	सोना
	०९:०९ से	अश्विनी	४	ला	मेष	सोना
	१४:५७ से	भरणी	१	ली	मेष	सोना
	२०:५० से	भरणी	२	लू	मेष	सोना
०५ सितंबर	०२:४३ से	भरणी	३	ले	मेष	सोना
	०८:३६ से	भरणी	४	लो	मेष	सोना
	१४:२९ से	कृत्ति.	१	अ	मेष	सोना
	२०:२८ से	कृत्ति.	२	ई	वृष	सोना
०६ सितंबर	०२:२८ से	कृत्ति.	३	ऊ	वृष	सोना
	०८:२७ से	कृत्ति.	४	ए	वृष	सोना
	१४:२७ से	रोहिणी	१	ओ	वृष	सोना

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
०६ सितं	२०:३३ से	रोहिणी	२	वा	वृष	सोना
०७ सितंबर	०२:४० से	रोहिणी	३	वी	वृष	सोना
	०८:४७ से	रोहिणी	४	वू	वृष	सोना
	१४:५४ से	मृगशि.	१	वे	वृष	सोना
	२१:०८ से	मृगशि.	२	वो	वृष	सोना
०८ सितंबर	०३:२२ से	मृगशि.	३	का	मिथुन	सोना
	०९:३६ से	मृगशि.	४	की	मिथुन	सोना
	१५:५१ से	आर्द्रा	१	कू	मिथुन	चाँदी
	२२:१२ से	आर्द्रा	२	घ	मिथुन	चाँदी
०९ सितंबर	०४:३४ से	आर्द्रा	३	ङ	मिथुन	चाँदी
	१०:५५ से	आर्द्रा	४	छ	मिथुन	चाँदी
	१७:१७ से	पुनर्वसु	१	के	मिथुन	चाँदी
	२३:४५ से	पुनर्वसु	२	को	मिथुन	चाँदी
१० सितंबर	०६:१३ से	पुनर्वसु	३	ह	मिथुन	चाँदी
	१२:४१ से	पुनर्वसु	४	ही	कर्क	चाँदी
	१९:१० से	पुष्य	१	हू	कर्क	चाँदी
११ सितंबर	०१:४४ से	पुष्य	२	हे	कर्क	चाँदी
	०८:१८ से	पुष्य	३	हो	कर्क	चाँदी
	१४:५२ से	पुष्य	४	डा	कर्क	चाँदी
	२१:२६ से	आश्ले	१	डी	कर्क	चाँदी
१२ सितंबर	०४:०३ से	आश्ले	२	डू	कर्क	चाँदी
	१०:४१ से	आश्ले	३	डे	कर्क	चाँदी
	१७:१९ से	आश्ले	४	डो	कर्क	चाँदी
	२३:५७ से	मघा	१	मा	सिंह	चाँदी
१३ सितंबर	०६:३६ से	मघा	२	मी	सिंह	चाँदी
	१३:१५ से	मघा	३	मू	सिंह	चाँदी
	१९:५४ से	मघा	४	मे	सिंह	चाँदी
१४ सितंबर	०२:३४ से	पू.फा.	१	मो	सिंह	चाँदी
	०९:१२ से	पू.फा.	२	टा	सिंह	चाँदी
	१५:५० से	पू.फा.	३	टी	सिंह	चाँदी
	२२:२८ से	पू.फा.	४	टू	सिंह	चाँदी
१५ सितंबर	०५:०६ से	उ.फा.	१	टे	सिंह	चाँदी
	११:४० से	उ.फा.	२	टो	कन्या	चाँदी
	१८:१५ से	उ.फा.	३	पा	कन्या	चाँदी
१६ सितं	००:५० से	उ.फा.	४	पी	कन्या	चाँदी

❊ संवत् २०८०, सन् २०२३-२४ में जन्मे बच्चों के नामाक्षर, नक्षत्र चरण, राशि व पाया ❊

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
१६ सितंबर	०७:२५ से	हस्त	१	पू	कन्या	चाँदी
	१३:५४ से	हस्त	२	ष	कन्या	चाँदी
	२०:२३ से	हस्त	३	ण	कन्या	चाँदी
१७ सितंबर	०२:५२ से	हस्त	४	ठ	कन्या	चाँदी
	०९:२२ से	चित्रा	१	पे	कन्या	चाँदी
	१५:४४ से	चित्रा	२	पो	कन्या	चाँदी
	२२:०७ से	चित्रा	३	रा	तुला	चाँदी
१८ सितंबर	०४:३० से	चित्रा	४	री	तुला	चाँदी
	१०:५३ से	स्वाति	१	रू	तुला	चाँदी
	१७:०८ से	स्वाति	२	रे	तुला	चाँदी
	२३:२४ से	स्वाति	३	रो	तुला	चाँदी
१९ सितंबर	०५:४० से	स्वाति	४	ता	तुला	चाँदी
	११:५६ से	विशाखा	१	ती	तुला	ताम्बा
	१८:०४ से	विशाखा	२	तू	तुला	ताम्बा
२० सितंबर	००:१२ से	विशाखा	३	ते	तुला	ताम्बा
	०६:२० से	विशाखा	४	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	१२:२८ से	अनुराधा	१	ना	वृश्चिक	ताम्बा
	१८:२८ से	अनुराधा	२	नी	वृश्चिक	ताम्बा
२१ सितंबर	००:२९ से	अनुराधा	३	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	०६:३० से	अनुराधा	४	ने	वृश्चिक	ताम्बा
	१२:३१ से	ज्येष्ठा	१	नो	वृश्चिक	ताम्बा
	१८:२५ से	ज्येष्ठा	२	या	वृश्चिक	ताम्बा
२२ सितंबर	००:१९ से	ज्येष्ठा	३	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	०६:१३ से	ज्येष्ठा	४	यू	वृश्चिक	ताम्बा
	१२:०७ से	मूल	१	ये	धनु	ताम्बा
	१७:५५ से	मूल	२	यो	धनु	ताम्बा
	२३:४३ से	मूल	३	भा	धनु	ताम्बा
२३ सितंबर	०५:३१ से	मूल	४	भी	धनु	ताम्बा
	११:२० से	पू.षा.	१	भू	धनु	ताम्बा
	१७:०३ से	पू.षा.	२	धा	धनु	ताम्बा
	२२:४६ से	पू.षा.	३	फा	धनु	ताम्बा
२४ सितंबर	०४:२९ से	पू.षा.	४	ढा	धनु	ताम्बा
	१०:१३ से	उ.षा.	१	भे	धनु	ताम्बा
	१५:५२ से	उ.षा.	२	भो	मकर	ताम्बा
	२१:३१ से	उ.षा.	३	जा	मकर	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
२५ सितंबर	०३:१० से	उ.षा.	४	जी	मकर	ताम्बा
	०८:५० से	श्रवण	१	खी	मकर	ताम्बा
	१४:२६ से	श्रवण	२	खू	मकर	ताम्बा
	२०:०३ से	श्रवण	३	खे	मकर	ताम्बा
२६ सितंबर	०१:४० से	श्रवण	४	खो	मकर	ताम्बा
	०७:१७ से	धनिष्ठा	१	गा	मकर	ताम्बा
	१२:५२ से	धनिष्ठा	२	गी	मकर	ताम्बा
	१८:२७ से	धनिष्ठा	३	गू	कुम्भ	ताम्बा
२७ सितंबर	००:०२ से	धनिष्ठा	४	गे	कुम्भ	ताम्बा
	०५:३८ से	शतभिषा	१	गो	कुम्भ	ताम्बा
	११:१२ से	शतभिषा	२	सा	कुम्भ	ताम्बा
	१६:४७ से	शतभिषा	३	सी	कुम्भ	ताम्बा
	२२:२२ से	शतभिषा	४	सू	कुम्भ	ताम्बा
२८ सितंबर	०३:५७ से	पू.भा.	१	से	कुम्भ	लोहा
	०९:३३ से	पू.भा.	२	सो	कुम्भ	लोहा
	१५:०९ से	पू.भा.	३	दा	कुम्भ	लोहा
	२०:४५ से	पू.भा.	४	दी	मीन	लोहा
२९ सितंबर	०२:२१ से	उ.भा.	१	दू	मीन	लोहा
	०७:५९ से	उ.भा.	२	थ	मीन	लोहा
	१३:३७ से	उ.भा.	३	झ	मीन	लोहा
	१९:१५ से	उ.भा.	४	ञ	मीन	लोहा
३० सितंबर	००:५४ से	रेवती	१	दे	मीन	सोना
	०६:३५ से	रेवती	२	दो	मीन	सोना
	१२:१७ से	रेवती	३	चा	मीन	सोना
	१७:५८ से	रेवती	४	ची	मीन	सोना
	२३:४० से	अश्विनी	१	चू	मेष	सोना
०१ अक्टूबर	०५:२६ से	अश्विनी	२	चे	मेष	सोना
	११:१२ से	अश्विनी	३	चो	मेष	सोना
	१६:५८ से	अश्विनी	४	ला	मेष	सोना
	२२:४४ से	भरणी	१	ली	मेष	सोना
०२ अक्टूबर	०४:३५ से	भरणी	२	लू	मेष	सोना
	१०:२७ से	भरणी	३	ले	मेष	सोना
	१६:१९ से	भरणी	४	लो	मेष	सोना
	२२:११ से	कृत्ति.	१	अ	मेष	सोना
०३ अक्टू	०४:०८ से	कृत्ति.	२	ई	वृष	सोना

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
०३ अक्टूबर	१०:०६ से	कृत्ति.	३	ऊ	वृष	सोना
	१६:०४ से	कृत्ति.	४	ए	वृष	सोना
	२२:०२ से	रोहिणी	१	ओ	वृष	सोना
०४ अक्टूबर	०४:०७ से	रोहिणी	२	वा	वृष	सोना
	१०:१२ से	रोहिणी	३	वी	वृष	सोना
	१६:१७ से	रोहिणी	४	वू	वृष	सोना
	२२:२३ से	मृगशि.	१	वे	वृष	सोना
०५ अक्टूबर	०४:३५ से	मृगशि.	२	वो	वृष	सोना
	१०:४८ से	मृगशि.	३	का	मिथुन	सोना
	१७:०० से	मृगशि.	४	की	मिथुन	सोना
	२३:१३ से	आर्द्रा	१	कू	मिथुन	चाँदी
०६ अक्टूबर	०५:३२ से	आर्द्रा	२	घ	मिथुन	चाँदी
	११:५२ से	आर्द्रा	३	ङ	मिथुन	चाँदी
	१८:१२ से	आर्द्रा	४	छ	मिथुन	चाँदी
०७ अक्टूबर	००:३२ से	पुनर्वसु	१	के	मिथुन	चाँदी
	०६:५९ से	पुनर्वसु	२	को	मिथुन	चाँदी
	१३:२६ से	पुनर्वसु	३	ह	मिथुन	चाँदी
	१९:५३ से	पुनर्वसु	४	ही	कर्क	चाँदी
०८ अक्टूबर	०२:२० से	पुष्य	१	हू	कर्क	चाँदी
	०८:५२ से	पुष्य	२	हे	कर्क	चाँदी
	१५:२५ से	पुष्य	३	हो	कर्क	चाँदी
	२१:५८ से	पुष्य	४	डा	कर्क	चाँदी
०९ अक्टूबर	०४:३१ से	आश्ले	१	डी	कर्क	चाँदी
	११:०८ से	आश्ले	२	डू	कर्क	चाँदी
	१७:४५ से	आश्ले	३	डे	कर्क	चाँदी
१० अक्टूबर	००:२२ से	आश्ले	४	डो	कर्क	चाँदी
	०६:५९ से	मघा	१	मा	सिंह	चाँदी
	१३:३८ से	मघा	२	मी	सिंह	चाँदी
	२०:१७ से	मघा	३	मू	सिंह	चाँदी
११ अक्टूबर	०२:५६ से	मघा	४	मे	सिंह	चाँदी
	०९:३५ से	पू.फा.	१	मो	सिंह	चाँदी
	१६:१४ से	पू.फा.	२	टा	सिंह	चाँदी
	२२:५२ से	पू.फा.	३	टी	सिंह	चाँदी
१२ अक्टूबर	०५:३१ से	पू.फा.	४	टू	सिंह	चाँदी
	१२:१० से	उ.फा.	१	टे	सिंह	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
१२ अक्टू	१८:४५ से	उ.फा.	२	टो	कन्या	चाँदी
१३ अक्टूबर	०१:२१ से	उ.फा.	३	पा	कन्या	चाँदी
	०७:५६ से	उ.फा.	४	पी	कन्या	चाँदी
	१४:३२ से	हस्त	१	पू	कन्या	चाँदी
	२१:०२ से	हस्त	२	ष	कन्या	चाँदी
१४ अक्टूबर	०३:३३ से	हस्त	३	ण	कन्या	चाँदी
	१०:०४ से	हस्त	४	ठ	कन्या	चाँदी
	१६:३५ से	चित्रा	१	पे	कन्या	चाँदी
	२२:५९ से	चित्रा	२	पो	कन्या	चाँदी
१५ अक्टूबर	०५:२४ से	चित्रा	३	रा	तुला	चाँदी
	११:४८ से	चित्रा	४	री	तुला	चाँदी
	१८:१३ से	स्वाति	१	रू	तुला	चाँदी
१६ अक्टूबर	००:३० से	स्वाति	२	रे	तुला	चाँदी
	०६:४७ से	स्वाति	३	रो	तुला	चाँदी
	१३:०४ से	स्वाति	४	ता	तुला	चाँदी
	१९:२२ से	विशाखा	१	ती	तुला	ताम्बा
१७ अक्टूबर	०१:३१ से	विशाखा	२	तू	तुला	ताम्बा
	०७:४१ से	विशाखा	३	ते	तुला	ताम्बा
	१३:५१ से	विशाखा	४	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	२०:०१ से	अनुराधा	१	ना	वृश्चिक	ताम्बा
१८ अक्टूबर	०२:०३ से	अनुराधा	२	नी	वृश्चिक	ताम्बा
	०८:०६ से	अनुराधा	३	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	१४:०८ से	अनुराधा	४	ने	वृश्चिक	ताम्बा
	२०:११ से	ज्येष्ठा	१	नो	वृश्चिक	ताम्बा
१९ अक्टूबर	०२:०६ से	ज्येष्ठा	२	या	वृश्चिक	ताम्बा
	०८:०२ से	ज्येष्ठा	३	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	१३:५७ से	ज्येष्ठा	४	यू	वृश्चिक	ताम्बा
	१९:५३ से	मूल	१	ये	धनु	ताम्बा
२० अक्टूबर	०१:४२ से	मूल	२	यो	धनु	ताम्बा
	०७:३२ से	मूल	३	भा	धनु	ताम्बा
	१३:२१ से	मूल	४	भी	धनु	ताम्बा
	१९:११ से	पू.षा.	१	भू	धनु	ताम्बा
२१ अक्टूबर	००:५५ से	पू.षा.	२	धा	धनु	ताम्बा
	०६:४० से	पू.षा.	३	फा	धनु	ताम्बा
	१२:२४ से	पू.षा.	४	ढा	धनु	ताम्बा

❊ संवत् २०८०, सन् २०२३-२४ में जन्मे बच्चों के नामाक्षर, नक्षत्र चरण, राशि व पाया ❊

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
२१ अक्टूबर	१८:०९ से	उ.षा.	१	भे	धनु	ताम्बा
	२३:४९ से	उ.षा.	२	भो	मकर	ताम्बा
२२ अक्टूबर	०५:२९ से	उ.षा.	३	जा	मकर	ताम्बा
	११:०९ से	उ.षा.	४	जी	मकर	ताम्बा
	१६:५० से	श्रवण	१	खी	मकर	ताम्बा
	२२:२७ से	श्रवण	२	खू	मकर	ताम्बा
२३ अक्टूबर	०४:०४ से	श्रवण	३	खे	मकर	ताम्बा
	०९:४१ से	श्रवण	४	खो	मकर	ताम्बा
	१५:१९ से	धनिष्ठ	१	गा	मकर	ताम्बा
	२०:५४ से	धनिष्ठ	२	गी	मकर	ताम्बा
२४ अक्टूबर	०२:३० से	धनिष्ठ	३	गू	कुम्भ	ताम्बा
	०८:०५ से	धनिष्ठ	४	गे	कुम्भ	ताम्बा
	१३:४१ से	शतभिषा	१	गो	कुम्भ	ताम्बा
	१९:१६ से	शतभिषा	२	सा	कुम्भ	ताम्बा
२५ अक्टूबर	००:५१ से	शतभिषा	३	सी	कुम्भ	ताम्बा
	०६:२६ से	शतभिषा	४	सू	कुम्भ	ताम्बा
	१२:०१ से	पू.भा.	१	से	कुम्भ	लोहा
	१७:३६ से	पू.भा.	२	सो	कुम्भ	लोहा
	२३:११ से	पू.भा.	३	दा	कुम्भ	लोहा
२६ अक्टूबर	०४:४६ से	पू.भा.	४	दी	मीन	लोहा
	१०:२२ से	उ.भा.	१	दू	मीन	लोहा
	१५:५९ से	उ.भा.	२	थ	मीन	लोहा
	२१:३७ से	उ.भा.	३	झ	मीन	लोहा
२७ अक्टूबर	०३:१५ से	उ.भा.	४	ञ	मीन	लोहा
	०८:५३ से	रेवती	१	दे	मीन	सोना
	१४:३३ से	रेवती	२	दो	मीन	सोना
	२०:१४ से	रेवती	३	चा	मीन	सोना
२८ अक्टूबर	०१:५५ से	रेवती	४	ची	मीन	सोना
	०७:३६ से	अश्विनी	१	चू	मेष	सोना
	१३:२१ से	अश्विनी	२	चे	मेष	सोना
	१९:०६ से	अश्विनी	३	चो	मेष	सोना
२९ अक्टूबर	००:५१ से	अश्विनी	४	ला	मेष	सोना
	०६:३६ से	भरणी	१	ली	मेष	सोना
	१२:२६ से	भरणी	२	लू	मेष	सोना
	१८:१६ से	भरणी	३	ले	मेष	सोना

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
३० अक्टूबर	००:०६ से	भरणी	४	लो	मेष	सोना
	०५:५७ से	कृत्ति.	१	अ	मेष	सोना
	११:५३ से	कृत्ति.	२	ई	वृष	सोना
	१७:५० से	कृत्ति.	३	ऊ	वृष	सोना
	२३:४६ से	कृत्ति.	४	ए	वृष	सोना
३१ अक्टूबर	०५:४३ से	रोहिणी	१	ओ	वृष	सोना
	११:४६ से	रोहिणी	२	वा	वृष	सोना
	१७:५० से	रोहिणी	३	वी	वृष	सोना
	२३:५३ से	रोहिणी	४	वू	वृष	सोना
०१ नवंबर	०५:५७ से	मृगशि.	१	वे	वृष	सोना
	१२:०७ से	मृगशि.	२	वो	वृष	सोना
	१८:१८ से	मृगशि.	३	का	मिथुन	सोना
०२ नवंबर	००:२९ से	मृगशि.	४	की	मिथुन	सोना
	०६:४० से	आर्द्रा	१	कू	मिथुन	चाँदी
	१२:५८ से	आर्द्रा	२	घ	मिथुन	चाँदी
	१९:१६ से	आर्द्रा	३	ङ	मिथुन	चाँदी
०३ नवंबर	०१:३४ से	आर्द्रा	४	छ	मिथुन	चाँदी
	०७:५३ से	पुनर्वसु	१	के	मिथुन	चाँदी
	१४:१८ से	पुनर्वसु	२	को	मिथुन	चाँदी
	२०:४४ से	पुनर्वसु	३	ह	मिथुन	चाँदी
०४ नवंबर	०३:०९ से	पुनर्वसु	४	ही	कर्क	चाँदी
	०९:३५ से	पुष्य	१	हू	कर्क	चाँदी
	१६:०६ से	पुष्य	२	हे	कर्क	चाँदी
	२२:३८ से	पुष्य	३	हो	कर्क	चाँदी
०५ नवंबर	०५:०९ से	पुष्य	४	डा	कर्क	चाँदी
	११:४१ से	आश्ले	१	डी	कर्क	चाँदी
	१८:१७ से	आश्ले	२	डू	कर्क	चाँदी
०६ नवंबर	००:५३ से	आश्ले	३	डे	कर्क	चाँदी
	०७:२९ से	आश्ले	४	डो	कर्क	चाँदी
	१४:०६ से	मघा	१	मा	सिंह	चाँदी
	२०:४५ से	मघा	२	मी	सिंह	चाँदी
०७ नवंबर	०३:२४ से	मघा	३	मू	सिंह	चाँदी
	१०:०३ से	मघा	४	मे	सिंह	चाँदी
	१६:४२ से	पू.फा.	१	मो	सिंह	चाँदी
	२३:२१ से	पू.फा.	२	टा	सिंह	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
०८ नवंबर	०६:०० से	पू.फा.	३	टी	सिंह	चाँदी
	१२:३९ से	पू.फा.	४	टू	सिंह	चाँदी
	१९:१८ से	उ.फा.	१	टे	सिंह	चाँदी
०९ नवंबर	०१:५४ से	उ.फा.	२	टो	कन्या	चाँदी
	०८:३१ से	उ.फा.	३	पा	कन्या	चाँदी
	१५:०८ से	उ.फा.	४	पी	कन्या	चाँदी
	२१:४५ से	हस्त	१	पू	कन्या	चाँदी
१० नवंबर	०४:१७ से	हस्त	२	ष	कन्या	चाँदी
	१०:४९ से	हस्त	३	ण	कन्या	चाँदी
	१७:२१ से	हस्त	४	ठ	कन्या	चाँदी
	२३:५४ से	चित्रा	१	पे	कन्या	चाँदी
११ नवंबर	०६:२० से	चित्रा	२	पो	कन्या	चाँदी
	१२:४६ से	चित्रा	३	रा	तुला	चाँदी
	१९:१२ से	चित्रा	४	री	तुला	चाँदी
१२ नवंबर	०१:३८ से	स्वाति	१	रू	तुला	चाँदी
	०७:५७ से	स्वाति	२	रे	तुला	चाँदी
	१४:१६ से	स्वाति	३	रो	तुला	चाँदी
	२०:३५ से	स्वाति	४	ता	तुला	चाँदी
१३ नवंबर	०२:५४ से	विशाखा	१	ती	तुला	ताम्बा
	०९:०५ से	विशाखा	२	तू	तुला	ताम्बा
	१५:१७ से	विशाखा	३	ते	तुला	ताम्बा
	२१:२८ से	विशाखा	४	तो	वृश्चिक	ताम्बा
१४ नवंबर	०३:४० से	अनुराधा	१	ना	वृश्चिक	ताम्बा
	०९:४१ से	अनुराधा	२	नी	वृश्चिक	ताम्बा
	१५:४३ से	अनुराधा	३	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	२१:४५ से	अनुराधा	४	ने	वृश्चिक	ताम्बा
१५ नवंबर	०३:४७ से	ज्येष्ठ	१	नो	वृश्चिक	ताम्बा
	०९:४६ से	ज्येष्ठ	२	या	वृश्चिक	ताम्बा
	१५:४६ से	ज्येष्ठ	३	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	२१:४६ से	ज्येष्ठ	४	यू	वृश्चिक	ताम्बा
१६ नवंबर	०३:४६ से	मूल	१	ये	धनु	ताम्बा
	०९:३६ से	मूल	२	यो	धनु	ताम्बा
	१५:२७ से	मूल	३	भा	धनु	ताम्बा
	२१:१८ से	मूल	४	भी	धनु	ताम्बा
१७ नवं	०३:०९ से	पू.षा.	१	भू	धनु	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
१७ नवंबर	०८:५४ से	पू.षा.	२	धा	धनु	ताम्बा
	१४:४० से	पू.षा.	३	फा	धनु	ताम्बा
	२०:२६ से	पू.षा.	४	ढा	धनु	ताम्बा
१८ नवंबर	०२:१२ से	उ.षा.	१	भे	धनु	ताम्बा
	०७:५३ से	उ.षा.	२	भो	मकर	ताम्बा
	१३:३४ से	उ.षा.	३	जा	मकर	ताम्बा
	१९:१५ से	उ.षा.	४	जी	मकर	ताम्बा
१९ नवंबर	००:५६ से	श्रवण	१	खी	मकर	ताम्बा
	०६:३४ से	श्रवण	२	खू	मकर	ताम्बा
	१२:१२ से	श्रवण	३	खे	मकर	ताम्बा
	१७:५० से	श्रवण	४	खो	मकर	ताम्बा
	२३:२८ से	धनिष्ठ	१	गा	मकर	ताम्बा
२० नवंबर	०५:०४ से	धनिष्ठ	२	गी	मकर	ताम्बा
	१०:४० से	धनिष्ठ	३	गू	कुम्भ	ताम्बा
	१६:१६ से	धनिष्ठ	४	गे	कुम्भ	ताम्बा
	२१:५२ से	शतभिषा	१	गो	कुम्भ	ताम्बा
२१ नवंबर	०३:२६ से	शतभिषा	२	सा	कुम्भ	ताम्बा
	०९:०१ से	शतभिषा	३	सी	कुम्भ	ताम्बा
	१४:३६ से	शतभिषा	४	सू	कुम्भ	ताम्बा
	२०:११ से	पू.भा.	१	से	कुम्भ	लोहा
२२ नवंबर	०१:४६ से	पू.भा.	२	सो	कुम्भ	लोहा
	०७:२२ से	पू.भा.	३	दा	कुम्भ	लोहा
	१२:५७ से	पू.भा.	४	दी	मीन	लोहा
	१८:३३ से	उ.भा.	१	दू	मीन	लोहा
२३ नवंबर	००:१० से	उ.भा.	२	थ	मीन	लोहा
	०५:४७ से	उ.भा.	३	झ	मीन	लोहा
	११:२४ से	उ.भा.	४	ञ	मीन	लोहा
	१७:०२ से	रेवती	१	दे	मीन	सोना
	२२:४१ से	रेवती	२	दो	मीन	सोना
२४ नवंबर	०४:२१ से	रेवती	३	चा	मीन	सोना
	१०:०१ से	रेवती	४	ची	मीन	सोना
	१५:४१ से	अश्विनी	१	चू	मेष	सोना
	२१:२५ से	अश्विनी	२	चे	मेष	सोना
२५ नवंबर	०३:०९ से	अश्विनी	३	चो	मेष	सोना
	०८:५३ से	अश्विनी	४	ला	मेष	सोना

❊ संवत् २०८०, सन् २०२३-२४ में जन्मे बच्चों के नामाक्षर, नक्षत्र चरण, राशि व पाया ❊

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
२५ नवंबर	१४:३८ से	भरणी	१	ली	मेष	सोना
	२०:२७ से	भरणी	२	लू	मेष	सोना
२६ नवंबर	०२:१६ से	भरणी	३	ले	मेष	सोना
	०८:०५ से	भरणी	४	लो	मेष	सोना
	१३:५४ से	कृत्ति.	१	अ	मेष	सोना
	१९:४९ से	कृत्ति.	२	ई	वृष	सोना
२७ नवंबर	०१:४४ से	कृत्ति.	३	ऊ	वृष	सोना
	०७:३९ से	कृत्ति.	४	ए	वृष	सोना
	१३:३४ से	रोहिणी	१	ओ	वृष	सोना
	१९:३६ से	रोहिणी	२	वा	वृष	सोना
२८ नवंबर	०१:३८ से	रोहिणी	३	वी	वृष	सोना
	०७:४० से	रोहिणी	४	वू	वृष	सोना
	१३:४२ से	मृगशि.	१	वे	वृष	सोना
	१९:५१ से	मृगशि.	२	वो	वृष	सोना
२९ नवंबर	०२:०० से	मृगशि.	३	का	मिथुन	सोना
	०८:०९ से	मृगशि.	४	की	मिथुन	सोना
	१४:१९ से	आर्द्रा	१	कू	मिथुन	चाँदी
	२०:३५ से	आर्द्रा	२	घ	मिथुन	चाँदी
३० नवंबर	०२:५२ से	आर्द्रा	३	ङ	मिथुन	चाँदी
	०९:०९ से	आर्द्रा	४	छ	मिथुन	चाँदी
	१५:२६ से	पुनर्वसु	१	के	मिथुन	चाँदी
	२१:४९ से	पुनर्वसु	२	को	मिथुन	चाँदी
०१ दिसंबर	०४:१३ से	पुनर्वसु	३	ह	मिथुन	चाँदी
	१०:३७ से	पुनर्वसु	४	ही	कर्क	चाँदी
	१७:०१ से	पुष्य	१	हू	कर्क	चाँदी
	२३:३१ से	पुष्य	२	हे	कर्क	चाँदी
०२ दिसंबर	०६:०२ से	पुष्य	३	हो	कर्क	चाँदी
	१२:३२ से	पुष्य	४	डा	कर्क	चाँदी
	१९:०३ से	आश्ले	१	डी	कर्क	चाँदी
०३ दिसंबर	०१:३८ से	आश्ले	२	डू	कर्क	चाँदी
	०८:१४ से	आश्ले	३	डे	कर्क	चाँदी
	१४:४९ से	आश्ले	४	डो	कर्क	चाँदी
	२१:२५ से	मघा	१	मा	सिंह	चाँदी
०४ दिसंबर	०४:०३ से	मघा	२	मी	सिंह	चाँदी
	१०:४२ से	मघा	३	मू	सिंह	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
०४ दिसंबर	१७:२० से	मघा	४	मे	सिंह	चाँदी
	२३:५९ से	पू.फा.	१	मो	सिंह	चाँदी
०५ दिसंबर	०६:३८ से	पू.फा.	२	टा	सिंह	चाँदी
	१३:१८ से	पू.फा.	३	टी	सिंह	चाँदी
	१९:५७ से	पू.फा.	४	टू	सिंह	चाँदी
०६ दिसंबर	०२:३७ से	उ.फा.	१	टे	सिंह	चाँदी
	०९:१४ से	उ.फा.	२	टो	कन्या	चाँदी
	१५:५२ से	उ.फा.	३	पा	कन्या	चाँदी
	२२:२९ से	उ.फा.	४	पी	कन्या	चाँदी
०७ दिसंबर	०५:०७ से	हस्त	१	पू	कन्या	चाँदी
	११:४० से	हस्त	२	ष	कन्या	चाँदी
	१८:१४ से	हस्त	३	ण	कन्या	चाँदी
०८ दिसंबर	००:४७ से	हस्त	४	ठ	कन्या	चाँदी
	०७:२१ से	चित्रा	१	पे	कन्या	चाँदी
	१३:४८ से	चित्रा	२	पो	कन्या	चाँदी
	२०:१६ से	चित्रा	३	रा	तुला	चाँदी
०९ दिसंबर	०२:४४ से	चित्रा	४	री	तुला	चाँदी
	०९:१२ से	स्वाति	१	रू	तुला	चाँदी
	१५:३२ से	स्वाति	२	रे	तुला	चाँदी
	२१:५३ से	स्वाति	३	रो	तुला	चाँदी
१० दिसंबर	०४:१४ से	स्वाति	४	ता	तुला	चाँदी
	१०:३५ से	विशाखा	१	ती	तुला	ताम्बा
	१६:४८ से	विशाखा	२	तू	तुला	ताम्बा
	२३:०२ से	विशाखा	३	ते	तुला	ताम्बा
११ दिसंबर	०५:१५ से	विशाखा	४	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	११:२९ से	अनुराधा	१	ना	वृश्चिक	ताम्बा
	१७:३४ से	अनुराधा	२	नी	वृश्चिक	ताम्बा
	२३:४० से	अनुराधा	३	नू	वृश्चिक	ताम्बा
१२ दिसंबर	०५:४६ से	अनुराधा	४	ने	वृश्चिक	ताम्बा
	११:५२ से	ज्येष्ठा	१	नो	वृश्चिक	ताम्बा
	१७:५१ से	ज्येष्ठा	२	या	वृश्चिक	ताम्बा
	२३:५० से	ज्येष्ठा	३	यी	वृश्चिक	ताम्बा
१३ दिसंबर	०५:४९ से	ज्येष्ठा	४	यू	वृश्चिक	ताम्बा
	११:४८ से	मूल	१	ये	धनु	ताम्बा
	१७:४० से	मूल	२	यो	धनु	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
१३ दिसं	२३:३२ से	मूल	३	भा	धनु	ताम्बा
१४ दिसंबर	०५:२४ से	मूल	४	भी	धनु	ताम्बा
	११:१७ से	पू.षा.	१	भू	धनु	ताम्बा
	१७:०३ से	पू.षा.	२	धा	धनु	ताम्बा
	२२:५० से	पू.षा.	३	फा	धनु	ताम्बा
१५ दिसंबर	०४:३७ से	पू.षा.	४	ढा	धनु	ताम्बा
	१०:२४ से	उ.षा.	१	भे	धनु	ताम्बा
	१६:०६ से	उ.षा.	२	भो	मकर	ताम्बा
	२१:४८ से	उ.षा.	३	जा	मकर	ताम्बा
१६ दिसंबर	०३:३० से	उ.षा.	४	जी	मकर	ताम्बा
	०९:१३ से	श्रवण	१	खी	मकर	ताम्बा
	१४:५१ से	श्रवण	२	खू	मकर	ताम्बा
	२०:३० से	श्रवण	३	खे	मकर	ताम्बा
१७ दिसंबर	०२:०८ से	श्रवण	४	खो	मकर	ताम्बा
	०७:४७ से	धनिष्ठा	१	गा	मकर	ताम्बा
	१३:२३ से	धनिष्ठा	२	गी	मकर	ताम्बा
	१८:५९ से	धनिष्ठा	३	गू	कुम्भ	ताम्बा
१८ दिसंबर	००:३५ से	धनिष्ठा	४	गे	कुम्भ	ताम्बा
	०६:११ से	शतभिषा	१	गो	कुम्भ	ताम्बा
	११:४६ से	शतभिषा	२	सा	कुम्भ	ताम्बा
	१७:२२ से	शतभिषा	३	सी	कुम्भ	ताम्बा
	२२:५७ से	शतभिषा	४	सू	कुम्भ	ताम्बा
१९ दिसंबर	०४:३३ से	पू.भा.	१	से	कुम्भ	लोहा
	१०:०८ से	पू.भा.	२	सो	कुम्भ	लोहा
	१५:४३ से	पू.भा.	३	दा	कुम्भ	लोहा
	२१:१८ से	पू.भा.	४	दी	मीन	लोहा
२० दिसंबर	०२:५४ से	उ.भा.	१	दू	मीन	लोहा
	०८:३० से	उ.भा.	२	थ	मीन	लोहा
	१४:०७ से	उ.भा.	३	झ	मीन	लोहा
	१९:४३ से	उ.भा.	४	ञ	मीन	लोहा
२१ दिसंबर	०१:२० से	रेवती	१	दे	मीन	सोना
	०६:५९ से	रेवती	२	दो	मीन	सोना
	१२:३९ से	रेवती	३	चा	मीन	सोना
	१८:१८ से	रेवती	४	ची	मीन	सोना
	२३:५८ से	अश्विनी	१	चू	मेष	सोना

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
२२ दिसंबर	०५:४१ से	अश्विनी	२	चे	मेष	सोना
	११:२४ से	अश्विनी	३	चो	मेष	सोना
	१७:०७ से	अश्विनी	४	ला	मेष	सोना
	२२:५० से	भरणी	१	ली	मेष	सोना
२३ दिसंबर	०४:३८ से	भरणी	२	लू	मेष	सोना
	१०:२६ से	भरणी	३	ले	मेष	सोना
	१६:१४ से	भरणी	४	लो	मेष	सोना
	२२:०२ से	कृत्ति.	१	अ	मेष	सोना
२४ दिसंबर	०३:५५ से	कृत्ति.	२	ई	वृष	सोना
	०९:४९ से	कृत्ति.	३	ऊ	वृष	सोना
	१५:४२ से	कृत्ति.	४	ए	वृष	सोना
	२१:३६ से	रोहिणी	१	ओ	वृष	सोना
२५ दिसंबर	०३:३६ से	रोहिणी	२	वा	वृष	सोना
	०९:३६ से	रोहिणी	३	वी	वृष	सोना
	१५:३६ से	रोहिणी	४	वू	वृष	सोना
	२१:३७ से	मृगशि.	१	वे	वृष	सोना
२६ दिसंबर	०३:४४ से	मृगशि.	२	वो	वृष	सोना
	०९:५२ से	मृगशि.	३	का	मिथुन	सोना
	१६:०० से	मृगशि.	४	की	मिथुन	सोना
	२२:०८ से	आर्द्रा	१	कू	मिथुन	चाँदी
२७ दिसंबर	०४:२३ से	आर्द्रा	२	घ	मिथुन	चाँदी
	१०:३८ से	आर्द्रा	३	ङ	मिथुन	चाँदी
	१६:५३ से	आर्द्रा	४	छ	मिथुन	चाँदी
	२३:०८ से	पुनर्वसु	१	के	मिथुन	चाँदी
२८ दिसंबर	०५:३० से	पुनर्वसु	२	को	मिथुन	चाँदी
	११:५२ से	पुनर्वसु	३	ह	मिथुन	चाँदी
	१८:१४ से	पुनर्वसु	४	ही	कर्क	चाँदी
२९ दिसंबर	००:३७ से	पुष्य	१	हू	कर्क	चाँदी
	०७:०६ से	पुष्य	२	हे	कर्क	चाँदी
	१३:३५ से	पुष्य	३	हो	कर्क	चाँदी
	२०:०४ से	पुष्य	४	डा	कर्क	चाँदी
३० दिसंबर	०२:३३ से	आश्ले	१	डी	कर्क	चाँदी
	०९:०७ से	आश्ले	२	डू	कर्क	चाँदी
	१५:४२ से	आश्ले	३	डे	कर्क	चाँदी
	२२:१६ से	आश्ले	४	डो	कर्क	चाँदी

❊ संवत् २०८०, सन् २०२३-२४ में जन्मे बच्चों के नामाक्षर, नक्षत्र चरण, राशि व पाया ❊

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
३१ दिसंबर	०४:५१ से	मघा	१	मा	सिंह	चाँदी
	११:२९ से	मघा	२	मी	सिंह	चाँदी
	१८:०७ से	मघा	३	मू	सिंह	चाँदी
०१ जनवरी	००:४५ से	मघा	४	मे	सिंह	चाँदी
	०७:२४ से	पू.फा.	१	मो	सिंह	चाँदी
	१४:०३ से	पू.फा.	२	टा	सिंह	चाँदी
	२०:४३ से	पू.फा.	३	टी	सिंह	चाँदी
०२ जनवरी	०३:२२ से	पू.फा.	४	टू	सिंह	चाँदी
	१०:०२ से	उ.फा.	१	टे	सिंह	चाँदी
	१६:४० से	उ.फा.	२	टो	कन्या	चाँदी
	२३:१८ से	उ.फा.	३	पा	कन्या	चाँदी
०३ जनवरी	०५:५६ से	उ.फा.	४	पी	कन्या	चाँदी
	१२:३५ से	हस्त	१	पू	कन्या	चाँदी
	१९:०९ से	हस्त	२	ष	कन्या	चाँदी
०४ जनवरी	०१:४४ से	हस्त	३	ण	कन्या	चाँदी
	०८:१८ से	हस्त	४	ठ	कन्या	चाँदी
	१४:५३ से	चित्रा	१	पे	कन्या	चाँदी
	२१:२२ से	चित्रा	२	पो	कन्या	चाँदी
०५ जनवरी	०३:५१ से	चित्रा	३	रा	तुला	चाँदी
	१०:२० से	चित्रा	४	री	तुला	चाँदी
	१६:४९ से	स्वाति	१	रू	तुला	चाँदी
	२३:११ से	स्वाति	२	रे	तुला	चाँदी
०६ जनवरी	०५:३४ से	स्वाति	३	रो	तुला	चाँदी
	११:५६ से	स्वाति	४	ता	तुला	चाँदी
	१८:१९ से	विशाखा	१	ती	तुला	ताम्बा
०७ जनवरी	००:३४ से	विशाखा	२	तू	तुला	ताम्बा
	०६:४९ से	विशाखा	३	ते	तुला	ताम्बा
	१३:०४ से	विशाखा	४	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	१९:२० से	अनुराधा	१	ना	वृश्चिक	ताम्बा
०८ जनवरी	०१:२७ से	अनुराधा	२	नी	वृश्चिक	ताम्बा
	०७:३५ से	अनुराधा	३	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	१३:४२ से	अनुराधा	४	ने	वृश्चिक	ताम्बा
	१९:५० से	ज्येष्ठा	१	नो	वृश्चिक	ताम्बा
०९ जनवरी	०१:५० से	ज्येष्ठा	२	या	वृश्चिक	ताम्बा
	०७:५१ से	ज्येष्ठा	३	यी	वृश्चिक	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
०९ जनवरी	१३:५१ से	ज्येष्ठा	४	यू	वृश्चिक	ताम्बा
	१९:५२ से	मूल	१	ये	धनु	ताम्बा
१० जनवरी	०१:४५ से	मूल	२	यो	धनु	ताम्बा
	०७:३९ से	मूल	३	भा	धनु	ताम्बा
	१३:३३ से	मूल	४	भी	धनु	ताम्बा
	१९:२७ से	पू.षा.	१	भू	धनु	ताम्बा
११ जनवरी	०१:१५ से	पू.षा.	२	धा	धनु	ताम्बा
	०७:०३ से	पू.षा.	३	फा	धनु	ताम्बा
	१२:५१ से	पू.षा.	४	ढा	धनु	ताम्बा
	१८:३९ से	उ.षा.	१	भे	धनु	ताम्बा
१२ जनवरी	००:२२ से	उ.षा.	२	भो	मकर	ताम्बा
	०६:०५ से	उ.षा.	३	जा	मकर	ताम्बा
	११:४८ से	उ.षा.	४	जी	मकर	ताम्बा
	१७:३२ से	श्रवण	१	खी	मकर	ताम्बा
	२३:११ से	श्रवण	२	खू	मकर	ताम्बा
१३ जनवरी	०४:५० से	श्रवण	३	खे	मकर	ताम्बा
	१०:२९ से	श्रवण	४	खो	मकर	ताम्बा
	१६:०९ से	धनिष्ठा	१	गा	मकर	ताम्बा
	२१:४५ से	धनिष्ठा	२	गी	मकर	ताम्बा
१४ जनवरी	०३:२२ से	धनिष्ठा	३	गू	कुम्भ	ताम्बा
	०८:५९ से	धनिष्ठा	४	गे	कुम्भ	ताम्बा
	१४:३६ से	शतभिषा	१	गो	कुम्भ	ताम्बा
	२०:११ से	शतभिषा	२	सा	कुम्भ	ताम्बा
१५ जनवरी	०१:४६ से	शतभिषा	३	सी	कुम्भ	ताम्बा
	०७:२१ से	शतभिषा	४	सू	कुम्भ	ताम्बा
	१२:५७ से	पू.भा.	१	से	कुम्भ	लोहा
	१८:३२ से	पू.भा.	२	सो	कुम्भ	लोहा
१६ जनवरी	००:०७ से	पू.भा.	३	दा	कुम्भ	लोहा
	०५:४२ से	पू.भा.	४	दी	मीन	लोहा
	११:१७ से	उ.भा.	१	दू	मीन	लोहा
	१६:५३ से	उ.भा.	२	थ	मीन	लोहा
	२२:२९ से	उ.भा.	३	झ	मीन	लोहा
१७ जनवरी	०४:०५ से	उ.भा.	४	ञ	मीन	लोहा
	०९:४२ से	रेवती	१	दे	मीन	सोना
	१५:२० से	रेवती	२	दो	मीन	सोना

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
१७ जन	२०:५९ से	रेवती	३	चा	मीन	सोना
१८ जनवरी	०२:३७ से	रेवती	४	ची	मीन	सोना
	०८:१६ से	अश्विनी	१	चू	मेष	सोना
	१३:५८ से	अश्विनी	२	चे	मेष	सोना
	१९:४० से	अश्विनी	३	चो	मेष	सोना
१९ जनवरी	०१:२२ से	अश्विनी	४	ला	मेष	सोना
	०७:०४ से	भरणी	१	ली	मेष	सोना
	१२:५० से	भरणी	२	लू	मेष	सोना
	१८:३७ से	भरणी	३	ले	मेष	सोना
२० जनवरी	००:२४ से	भरणी	४	लो	मेष	सोना
	०६:११ से	कृत्ति.	१	अ	मेष	सोना
	१२:०३ से	कृत्ति.	२	ई	वृष	सोना
	१७:५५ से	कृत्ति.	३	ऊ	वृष	सोना
	२३:४७ से	कृत्ति.	४	ए	वृष	सोना
२१ जनवरी	०५:४० से	रोहिणी	१	ओ	वृष	सोना
	११:३८ से	रोहिणी	२	वा	वृष	सोना
	१७:३७ से	रोहिणी	३	वी	वृष	सोना
	२३:३५ से	रोहिणी	४	वू	वृष	सोना
२२ जनवरी	०५:३४ से	मृगशि.	१	वे	वृष	सोना
	११:४० से	मृगशि.	२	वो	वृष	सोना
	१७:४६ से	मृगशि.	३	का	मिथुन	सोना
	२३:५२ से	मृगशि.	४	की	मिथुन	सोना
२३ जनवरी	०५:५८ से	आर्द्रा	१	कू	मिथुन	चाँदी
	१२:११ से	आर्द्रा	२	घ	मिथुन	चाँदी
	१८:२४ से	आर्द्रा	३	ङ	मिथुन	चाँदी
२४ जनवरी	००:३७ से	आर्द्रा	४	छ	मिथुन	चाँदी
	०६:५१ से	पुनर्वसु	१	के	मिथुन	चाँदी
	१३:११ से	पुनर्वसु	२	को	मिथुन	चाँदी
	१९:३२ से	पुनर्वसु	३	ह	मिथुन	चाँदी
२५ जनवरी	०१:५३ से	पुनर्वसु	४	ही	कर्क	चाँदी
	०८:१४ से	पुष्य	१	हू	कर्क	चाँदी
	१४:४१ से	पुष्य	२	हे	कर्क	चाँदी
	२१:०८ से	पुष्य	३	हो	कर्क	चाँदी
२६ जनवरी	०३:३५ से	पुष्य	४	डा	कर्क	चाँदी
	१०:०३ से	आश्ले	१	डी	कर्क	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
२६ जनवरी	१६:३६ से	आश्ले	२	डू	कर्क	चाँदी
	२३:१० से	आश्ले	३	डे	कर्क	चाँदी
२७ जनवरी	०५:४३ से	आश्ले	४	डो	कर्क	चाँदी
	१२:१७ से	मघा	१	मा	सिंह	चाँदी
	१८:५४ से	मघा	२	मी	सिंह	चाँदी
२८ जनवरी	०१:३१ से	मघा	३	मू	सिंह	चाँदी
	०८:०८ से	मघा	४	मे	सिंह	चाँदी
	१४:४६ से	पू.फा.	१	मो	सिंह	चाँदी
	२१:२५ से	पू.फा.	२	टा	सिंह	चाँदी
२९ जनवरी	०४:०५ से	पू.फा.	३	टी	सिंह	चाँदी
	१०:४४ से	पू.फा.	४	टू	सिंह	चाँदी
	१७:२४ से	उ.फा.	१	टे	सिंह	चाँदी
३० जनवरी	००:०२ से	उ.फा.	२	टो	कन्या	चाँदी
	०६:४१ से	उ.फा.	३	पा	कन्या	चाँदी
	१३:१९ से	उ.फा.	४	पी	कन्या	चाँदी
	१९:५८ से	हस्त	१	पू	कन्या	चाँदी
३१ जनवरी	०२:३३ से	हस्त	२	ष	कन्या	चाँदी
	०९:०९ से	हस्त	३	ण	कन्या	चाँदी
	१५:४४ से	हस्त	४	ठ	कन्या	चाँदी
	२२:२० से	चित्रा	१	पे	कन्या	चाँदी
०१ फरवरी	०४:५० से	चित्रा	२	पो	कन्या	चाँदी
	११:२१ से	चित्रा	३	रा	तुला	चाँदी
	१७:५१ से	चित्रा	४	री	तुला	चाँदी
०२ फरवरी	००:२२ से	स्वाति	१	रू	तुला	चाँदी
	०६:४६ से	स्वाति	२	रे	तुला	चाँदी
	१३:१० से	स्वाति	३	रो	तुला	चाँदी
	१९:३४ से	स्वाति	४	ता	तुला	चाँदी
०३ फरवरी	०१:५८ से	विशाखा	१	ती	तुला	ताम्बा
	०८:१४ से	विशाखा	२	तू	तुला	ताम्बा
	१४:३१ से	विशाखा	३	ते	तुला	ताम्बा
	२०:४८ से	विशाखा	४	तो	वृश्चिक	ताम्बा
०४ फरवरी	०३:०५ से	अनुराधा	१	ना	वृश्चिक	ताम्बा
	०९:१४ से	अनुराधा	२	नी	वृश्चिक	ताम्बा
	१५:२३ से	अनुराधा	३	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	२१:३२ से	अनुराधा	४	ने	वृश्चिक	ताम्बा

❊ संवत् २०८०, सन् २०२३-२४ में जन्मे बच्चों के नामाक्षर, नक्षत्र चरण, राशि व पाया ❊

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
०५ फरवरी	०३:४२ से	ज्येष्ठा	१	नो	वृश्चिक	ताम्बा
	०९:४४ से	ज्येष्ठा	२	या	वृश्चिक	ताम्बा
	१५:४६ से	ज्येष्ठा	३	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	२१:४८ से	ज्येष्ठा	४	यू	वृश्चिक	ताम्बा
०६ फरवरी	०३:५० से	मूल	१	ये	धनु	ताम्बा
	०९:४५ से	मूल	२	यो	धनु	ताम्बा
	१५:४० से	मूल	३	भा	धनु	ताम्बा
	२१:३५ से	मूल	४	भी	धनु	ताम्बा
०७ फरवरी	०३:३० से	पू.षा.	१	भू	धनु	ताम्बा
	०९:१९ से	पू.षा.	२	धा	धनु	ताम्बा
	१५:०८ से	पू.षा.	३	फा	धनु	ताम्बा
	२०:५७ से	पू.षा.	४	ढा	धनु	ताम्बा
०८ फरवरी	०२:४७ से	उ.षा.	१	भे	धनु	ताम्बा
	०८:३१ से	उ.षा.	२	भो	मकर	ताम्बा
	१४:१५ से	उ.षा.	३	जा	मकर	ताम्बा
	१९:५९ से	उ.षा.	४	जी	मकर	ताम्बा
०९ फरवरी	०१:४३ से	श्रवण	१	खी	मकर	ताम्बा
	०७:२३ से	श्रवण	२	खू	मकर	ताम्बा
	१३:०३ से	श्रवण	३	खे	मकर	ताम्बा
	१८:४३ से	श्रवण	४	खो	मकर	ताम्बा
१० फरवरी	००:२३ से	धनिष्ठा	१	गा	मकर	ताम्बा
	०६:०० से	धनिष्ठा	२	गी	मकर	ताम्बा
	११:३७ से	धनिष्ठा	३	गू	कुम्भ	ताम्बा
	१७:१४ से	धनिष्ठा	४	गे	कुम्भ	ताम्बा
	२२:५२ से	शतभिषा	१	गो	कुम्भ	ताम्बा
११ फरवरी	०४:२७ से	शतभिषा	२	सा	कुम्भ	ताम्बा
	१०:०२ से	शतभिषा	३	सी	कुम्भ	ताम्बा
	१५:३७ से	शतभिषा	४	सू	कुम्भ	ताम्बा
	२१:१३ से	पू.भा.	१	से	कुम्भ	लोहा
१२ फरवरी	०२:४८ से	पू.भा.	२	सो	कुम्भ	लोहा
	०८:२३ से	पू.भा.	३	दा	कुम्भ	लोहा
	१३:५८ से	पू.भा.	४	दी	मीन	लोहा
	१९:३३ से	उ.भा.	१	दू	मीन	लोहा
१३ फरवरी	०१:०८ से	उ.भा.	२	थ	मीन	लोहा
	०६:४४ से	उ.भा.	३	झ	मीन	लोहा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
१३ फरवरी	१२:२० से	उ.भा.	४	ञ	मीन	लोहा
	१७:५६ से	रेवती	१	दे	मीन	सोना
	२३:३३ से	रेवती	२	दो	मीन	सोना
१४ फरवरी	०५:११ से	रेवती	३	चा	मीन	सोना
	१०:४९ से	रेवती	४	ची	मीन	सोना
	१६:२७ से	अश्विनी	१	चू	मेष	सोना
	२२:०८ से	अश्विनी	२	चे	मेष	सोना
१५ फरवरी	०३:४९ से	अश्विनी	३	चो	मेष	सोना
	०९:३० से	अश्विनी	४	ला	मेष	सोना
	१५:११ से	भरणी	१	ली	मेष	सोना
	२०:५६ से	भरणी	२	लू	मेष	सोना
१६ फरवरी	०२:४२ से	भरणी	३	ले	मेष	सोना
	०८:२७ से	भरणी	४	लो	मेष	सोना
	१४:१३ से	कृत्ति.	१	अ	मेष	सोना
	२०:०३ से	कृत्ति.	२	ई	वृष	सोना
१७ फरवरी	०१:५४ से	कृत्ति.	३	ऊ	वृष	सोना
	०७:४५ से	कृत्ति.	४	ए	वृष	सोना
	१३:३६ से	रोहिणी	१	ओ	वृष	सोना
	१९:३३ से	रोहिणी	२	वा	वृष	सोना
१८ फरवरी	०१:३० से	रोहिणी	३	वी	वृष	सोना
	०७:२७ से	रोहिणी	४	वू	वृष	सोना
	१३:२४ से	मृगशि.	१	वे	वृष	सोना
	१९:२८ से	मृगशि.	२	वो	वृष	सोना
१९ फरवरी	०१:३२ से	मृगशि.	३	का	मिथुन	सोना
	०७:३६ से	मृगशि.	४	की	मिथुन	सोना
	१३:४० से	आर्द्रा	१	कू	मिथुन	चाँदी
	१९:५१ से	आर्द्रा	२	घ	मिथुन	चाँदी
२० फरवरी	०२:०३ से	आर्द्रा	३	ङ	मिथुन	चाँदी
	०८:१४ से	आर्द्रा	४	छ	मिथुन	चाँदी
	१४:२६ से	पुनर्वसु	१	के	मिथुन	चाँदी
	२०:४५ से	पुनर्वसु	२	को	मिथुन	चाँदी
२१ फरवरी	०३:०४ से	पुनर्वसु	३	ह	मिथुन	चाँदी
	०९:२३ से	पुनर्वसु	४	ही	कर्क	चाँदी
	१५:४२ से	पुष्य	१	हू	कर्क	चाँदी
	२२:०७ से	पुष्य	२	हे	कर्क	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
२२ फरवरी	०४:३३ से	पुष्य	३	हो	कर्क	चाँदी
	१०:५९ से	पुष्य	४	डा	कर्क	चाँदी
	१७:२५ से	आश्ले	१	डी	कर्क	चाँदी
	२३:५७ से	आश्ले	२	डू	कर्क	चाँदी
२३ फरवरी	०६:२९ से	आश्ले	३	डे	कर्क	चाँदी
	१३:०१ से	आश्ले	४	डो	कर्क	चाँदी
	१९:३३ से	मघा	१	मा	सिंह	चाँदी
२४ फरवरी	०२:०९ से	मघा	२	मी	सिंह	चाँदी
	०८:४६ से	मघा	३	मू	सिंह	चाँदी
	१५:२२ से	मघा	४	मे	सिंह	चाँदी
	२१:५९ से	पू.फा.	१	मो	सिंह	चाँदी
२५ फरवरी	०४:३८ से	पू.फा.	२	टा	सिंह	चाँदी
	११:१७ से	पू.फा.	३	टी	सिंह	चाँदी
	१७:५६ से	पू.फा.	४	टू	सिंह	चाँदी
२६ फरवरी	००:३५ से	उ.फा.	१	टे	सिंह	चाँदी
	०७:१४ से	उ.फा.	२	टो	कन्या	चाँदी
	१३:५३ से	उ.फा.	३	पा	कन्या	चाँदी
	२०:३२ से	उ.फा.	४	पी	कन्या	चाँदी
२७ फरवरी	०३:११ से	हस्त	१	पू	कन्या	चाँदी
	०९:४७ से	हस्त	२	ष	कन्या	चाँदी
	१६:२३ से	हस्त	३	ण	कन्या	चाँदी
	२२:५९ से	हस्त	४	ठ	कन्या	चाँदी
२८ फरवरी	०५:३६ से	चित्रा	१	पे	कन्या	चाँदी
	१२:०७ से	चित्रा	२	पो	कन्या	चाँदी
	१८:३९ से	चित्रा	३	रा	तुला	चाँदी
२९ फरवरी	०१:११ से	चित्रा	४	री	तुला	चाँदी
	०७:४३ से	स्वाति	१	रू	तुला	चाँदी
	१४:०८ से	स्वाति	२	रे	तुला	चाँदी
	२०:३३ से	स्वाति	३	रो	तुला	चाँदी
०१ मार्च	०२:५८ से	स्वाति	४	ता	तुला	चाँदी
	०९:२४ से	विशाखा	१	ती	तुला	ताम्बा
	१५:४२ से	विशाखा	२	तू	तुला	ताम्बा
	२२:०१ से	विशाखा	३	ते	तुला	ताम्बा
०२ मार्च	०४:१९ से	विशाखा	४	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	१०:३८ से	अनुराधा	१	ना	वृश्चिक	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
०२ मार्च	१६:४९ से	अनुराधा	२	नी	वृश्चिक	ताम्बा
	२३:०० से	अनुराधा	३	नू	वृश्चिक	ताम्बा
०३ मार्च	०५:११ से	अनुराधा	४	ने	वृश्चिक	ताम्बा
	११:२२ से	ज्येष्ठा	१	नो	वृश्चिक	ताम्बा
	१७:२५ से	ज्येष्ठा	२	या	वृश्चिक	ताम्बा
	२३:२९ से	ज्येष्ठा	३	यी	वृश्चिक	ताम्बा
०४ मार्च	०५:३२ से	ज्येष्ठा	४	यू	वृश्चिक	ताम्बा
	११:३६ से	मूल	१	ये	धनु	ताम्बा
	१७:३२ से	मूल	२	यो	धनु	ताम्बा
	२३:२९ से	मूल	३	भा	धनु	ताम्बा
०५ मार्च	०५:२५ से	मूल	४	भी	धनु	ताम्बा
	११:२२ से	पू.षा.	१	भू	धनु	ताम्बा
	१७:१२ से	पू.षा.	२	धा	धनु	ताम्बा
	२३:०२ से	पू.षा.	३	फा	धनु	ताम्बा
०६ मार्च	०४:५२ से	पू.षा.	४	ढा	धनु	ताम्बा
	१०:४३ से	उ.षा.	१	भे	धनु	ताम्बा
	१६:२८ से	उ.षा.	२	भो	मकर	ताम्बा
	२२:१३ से	उ.षा.	३	जा	मकर	ताम्बा
०७ मार्च	०३:५८ से	उ.षा.	४	जी	मकर	ताम्बा
	०९:४४ से	श्रवण	१	खी	मकर	ताम्बा
	१५:२४ से	श्रवण	२	खू	मकर	ताम्बा
	२१:०५ से	श्रवण	३	खे	मकर	ताम्बा
०८ मार्च	०२:४६ से	श्रवण	४	खो	मकर	ताम्बा
	०८:२७ से	धनिष्ठा	१	गा	मकर	ताम्बा
	१४:०४ से	धनिष्ठा	२	गी	मकर	ताम्बा
	१९:४२ से	धनिष्ठा	३	गू	कुम्भ	ताम्बा
०९ मार्च	०१:१९ से	धनिष्ठा	४	गे	कुम्भ	ताम्बा
	०६:५७ से	शतभिषा	१	गो	कुम्भ	ताम्बा
	१२:३२ से	शतभिषा	२	सा	कुम्भ	ताम्बा
	१८:०८ से	शतभिषा	३	सी	कुम्भ	ताम्बा
	२३:४४ से	शतभिषा	४	सू	कुम्भ	ताम्बा
१० मार्च	०५:२० से	पू.भा.	१	से	कुम्भ	लोहा
	१०:५४ से	पू.भा.	२	सो	कुम्भ	लोहा
	१६:२९ से	पू.भा.	३	दा	कुम्भ	लोहा
	२२:०४ से	पू.भा.	४	दी	मीन	लोहा

❊ संवत् २०८०, सन् २०२३-२४ में जन्मे बच्चों के नामाक्षर, नक्षत्र चरण, राशि व पाया ❊

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
११ मार्च	०३:३९ से	उ.भा.	१	दू	मीन	लोहा
	०९:१४ से	उ.भा.	२	थ	मीन	लोहा
	१४:५० से	उ.भा.	३	झ	मीन	लोहा
	२०:२५ से	उ.भा.	४	ञ	मीन	लोहा
१२ मार्च	०२:०१ से	रेवती	१	दे	मीन	सोना
	०७:३८ से	रेवती	२	दो	मीन	सोना
	१३:१५ से	रेवती	३	चा	मीन	सोना
	१८:५२ से	रेवती	४	ची	मीन	सोना
१३ मार्च	००:३० से	अश्विनी	१	चू	मेष	सोना
	०६:१० से	अश्विनी	२	चे	मेष	सोना
	११:५० से	अश्विनी	३	चो	मेष	सोना
	१७:३० से	अश्विनी	४	ला	मेष	सोना
	२३:१० से	भरणी	१	ली	मेष	सोना
१४ मार्च	०४:५४ से	भरणी	२	लू	मेष	सोना
	१०:३८ से	भरणी	३	ले	मेष	सोना
	१६:२२ से	भरणी	४	लो	मेष	सोना
	२२:०७ से	कृत्ति.	१	अ	मेष	सोना
१५ मार्च	०३:५६ से	कृत्ति.	२	ई	वृष	सोना
	०९:४६ से	कृत्ति.	३	ऊ	वृष	सोना
	१५:३५ से	कृत्ति.	४	ए	वृष	सोना
	२१:२५ से	रोहिणी	१	ओ	वृष	सोना
१६ मार्च	०३:२० से	रोहिणी	२	वा	वृष	सोना
	०९:१६ से	रोहिणी	३	वी	वृष	सोना
	१५:११ से	रोहिणी	४	वू	वृष	सोना
	२१:०७ से	मृगशि.	१	वे	वृष	सोना
१७ मार्च	०३:०९ से	मृगशि.	२	वो	वृष	सोना
	०९:११ से	मृगशि.	३	का	मिथुन	सोना
	१५:१३ से	मृगशि.	४	की	मिथुन	सोना
	२१:१६ से	आर्द्रा	१	कू	मिथुन	चाँदी
१८ मार्च	०३:२५ से	आर्द्रा	२	घ	मिथुन	चाँदी
	०९:३५ से	आर्द्रा	३	ङ	मिथुन	चाँदी
	१५:४४ से	आर्द्रा	४	छ	मिथुन	चाँदी
	२१:५४ से	पुनर्वसु	१	के	मिथुन	चाँदी
१९ मार्च	०४:११ से	पुनर्वसु	२	को	मिथुन	चाँदी
	१०:२८ से	पुनर्वसु	३	ह	मिथुन	चाँदी
१९ मार्च	१६:४५ से	पुनर्वसु	४	ही	कर्क	चाँदी
	२३:०३ से	पुष्य	१	हू	कर्क	चाँदी
२० मार्च	०५:२७ से	पुष्य	२	हे	कर्क	चाँदी
	११:५१ से	पुष्य	३	हो	कर्क	चाँदी
	१८:१५ से	पुष्य	४	डा	कर्क	चाँदी
२१ मार्च	००:४० से	आश्ले	१	डी	कर्क	चाँदी
	०७:१० से	आश्ले	२	डू	कर्क	चाँदी
	१३:४१ से	आश्ले	३	डे	कर्क	चाँदी
	२०:१२ से	आश्ले	४	डो	कर्क	चाँदी
२२ मार्च	०२:४३ से	मघा	१	मा	सिंह	चाँदी
	०९:१८ से	मघा	२	मी	सिंह	चाँदी
	१५:५४ से	मघा	३	मू	सिंह	चाँदी
	२२:२९ से	मघा	४	मे	सिंह	चाँदी
२३ मार्च	०५:०५ से	पू.फा.	१	मो	सिंह	चाँदी
	११:४३ से	पू.फा.	२	टा	सिंह	चाँदी
	१८:२२ से	पू.फा.	३	टी	सिंह	चाँदी
२४ मार्च	०१:०० से	पू.फा.	४	टू	सिंह	चाँदी
	०७:३९ से	उ.फा.	१	टे	सिंह	चाँदी
	१४:१८ से	उ.फा.	२	टो	कन्या	चाँदी
	२०:५७ से	उ.फा.	३	पा	कन्या	चाँदी
२५ मार्च	०३:३६ से	उ.फा.	४	पी	कन्या	चाँदी
	१०:१६ से	हस्त	१	पू	कन्या	चाँदी
	१६:५३ से	हस्त	२	ष	कन्या	चाँदी
	२३:३० से	हस्त	३	ण	कन्या	चाँदी
२६ मार्च	०६:०७ से	हस्त	४	ठ	कन्या	चाँदी
	१२:४४ से	चित्रा	१	पे	कन्या	चाँदी
	१९:१६ से	चित्रा	२	पो	कन्या	चाँदी
२७ मार्च	०१:४९ से	चित्रा	३	रा	तुला	चाँदी
	०८:२२ से	चित्रा	४	री	तुला	चाँदी
	१४:५५ से	स्वाति	१	रू	तुला	चाँदी
	२१:२२ से	स्वाति	२	रे	तुला	चाँदी
२८ मार्च	०३:४९ से	स्वाति	३	रो	तुला	चाँदी
	१०:१६ से	स्वाति	४	ता	तुला	चाँदी
	१६:४३ से	विशाखा	१	ती	तुला	ताम्बा
	२३:०३ से	विशाखा	२	तू	तुला	ताम्बा
२९ मार्च	०५:२३ से	विशाखा	३	ते	तुला	ताम्बा
	११:४३ से	विशाखा	४	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	१८:०४ से	अनुराधा	१	ना	वृश्चिक	ताम्बा
३० मार्च	००:१६ से	अनुराधा	२	नी	वृश्चिक	ताम्बा
	०६:२९ से	अनुराधा	३	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	१२:४१ से	अनुराधा	४	ने	वृश्चिक	ताम्बा
	१८:५४ से	ज्येष्ठा	१	नो	वृश्चिक	ताम्बा
३१ मार्च	००:५९ से	ज्येष्ठा	२	या	वृश्चिक	ताम्बा
	०७:०४ से	ज्येष्ठा	३	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	१३:०९ से	ज्येष्ठा	४	यू	वृश्चिक	ताम्बा
	१९:१५ से	मूल	१	ये	धनु	ताम्बा
०१ अप्रैल	०१:१३ से	मूल	२	यो	धनु	ताम्बा
	०७:११ से	मूल	३	भा	धनु	ताम्बा
	१३:०९ से	मूल	४	भी	धनु	ताम्बा
	१९:०७ से	पू.षा.	१	भू	धनु	ताम्बा
०२ अप्रैल	००:५८ से	पू.षा.	२	धा	धनु	ताम्बा
	०६:५० से	पू.षा.	३	फा	धनु	ताम्बा
	१२:४२ से	पू.षा.	४	ढा	धनु	ताम्बा
	१८:३४ से	उ.षा.	१	भे	धनु	ताम्बा
०३ अप्रैल	००:२० से	उ.षा.	२	भो	मकर	ताम्बा
	०६:०६ से	उ.षा.	३	जा	मकर	ताम्बा
	११:५२ से	उ.षा.	४	जी	मकर	ताम्बा
	१७:३८ से	श्रवण	१	खी	मकर	ताम्बा
	२३:१९ से	श्रवण	२	खू	मकर	ताम्बा
०४ अप्रैल	०५:०१ से	श्रवण	३	खे	मकर	ताम्बा
	१०:४३ से	श्रवण	४	खो	मकर	ताम्बा
	१६:२५ से	धनिष्ठा	१	गा	मकर	ताम्बा
	२२:०३ से	धनिष्ठा	२	गी	मकर	ताम्बा
०५ अप्रैल	०३:४१ से	धनिष्ठा	३	गू	कुम्भ	ताम्बा
	०९:१९ से	धनिष्ठा	४	गे	कुम्भ	ताम्बा
	१४:५८ से	शतभिषा	१	गो	कुम्भ	ताम्बा
	२०:३४ से	शतभिषा	२	सा	कुम्भ	ताम्बा
०६ अप्रैल	०२:१० से	शतभिषा	३	सी	कुम्भ	ताम्बा
	०७:४६ से	शतभिषा	४	सू	कुम्भ	ताम्बा
	१३:२२ से	पू.भा.	१	से	कुम्भ	लोहा
०६ अप्रै	१८:५६ से	पू.भा.	२	सो	कुम्भ	लोहा
०७ अप्रैल	००:३१ से	पू.भा.	३	दा	कुम्भ	लोहा
	०६:०६ से	पू.भा.	४	दी	मीन	लोहा
	११:४१ से	उ.भा.	१	दू	मीन	लोहा
	१७:१६ से	उ.भा.	२	थ	मीन	लोहा
	२२:५१ से	उ.भा.	३	झ	मीन	लोहा
०८ अप्रैल	०४:२६ से	उ.भा.	४	ञ	मीन	लोहा
	१०:०२ से	रेवती	१	दे	मीन	सोना

❊ गण्डमूल के नक्षत्र व उनका फल ❊

चरण	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ
अश्विनी	पिताभय	सुखैश्वर्य	मंत्रित्व प्राप्ति	राजा समान
अश्लेषा	सुख शांति	धन-नाश	मातृ-नाश	पितृ-नाश
मघा	माता को हानि	पिता को भय	सुख	धन-विद्या
ज्येष्ठा	बड़े भाई को नेष्ट	छोटे भाई को नेष्ट	माता को नेष्ट	पिता को नेष्ट
मूल	पितृ-नाश	मातृ-नाश	धन-नाश	सुख शांति
रेवती	राज्य-सम्मान	मंत्रित्व प्राप्ति	धन सुख की प्राप्ति	अनेक कष्ट

❊ चोरी में गई वस्तु मिलेगी या नहीं? ❊

संज्ञा	नक्षत्र	दिशा	फल
अन्ध	रोहिणी पुष्य उ.फा. विशा. पूषा धनि. रेव.	पूर्व	शीघ्र मिले
मन्द	मृग अश्लेषा हस्त अनु. उषा शतभिषा अश्वि.	दक्षिण	उपाय से 3 दिन में
मध्य	आर्द्रा मघा चित्रा ज्येष्ठा अभिजित् पूभा भरणी	पश्चिम	64 दिन में मिले
सुलोचन	पुनर्वसु पूफा स्वाती मूल श्रवण उभा कृत्ति.	-	नहीं मिले

वर–कन्या वैवाहिक अष्टकूट मेलापक सारणियाँ इत्यादि

१ – वर्णस्यगुणाः

वरस्य

	वर्णाः	ब्रा·	क्ष·	वै·	शू·
कन्यायाः	ब्राह्मण	१	०	०	०
	क्षत्रिय	१	१	०	०
	वैश्य	१	१	१	०
	शूद्र	१	१	१	१

२ – वश्यगुणाः

वरस्य

	वश्याः	च·	मा·	ज·	व·	की·
कन्यायाः	चतुष्पद	२	१	१	०	१
	मानव	१	२	१	०	१
	जलचर	१	१	२	१	१
	वनचर	०	०	१	२	०
	कीट	१	१	१	०	२

४ – योनिकूटस्य गुणज्ञानाय चक्रमिदम्

वरस्य

	योनयः	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
कन्यायाः	अश्व	४	२	२	२	२	२	२	३	१	१	३	३	२	१
	गज	२	४	३	२	२	२	२	२	३	२	२	२	२	०
	मेष	३	३	४	३	२	३	२	३	३	१	३	०	३	१
	सर्प	२	२	३	४	२	२	१	१	२	२	२	२	०	२
	श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	२	१
	मार्जार	२	२	३	२	१	४	०	२	२	१	२	२	२	२
	मूषक	२	३	२	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
	गौ	३	२	३	१	२	२	२	४	३	०	३	२	३	१
	महिष	०	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
	व्याघ्र	१	२	१	२	१	१	२	०	१	४	२	१	२	२
	मृग	३	३	३	२	०	२	२	३	२	१	४	२	२	२
	वानर	२	३	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	२	३
	नकुल	२	२	३	०	२	२	१	३	२	२	२	२	४	२
	सिंह	१	१	१	२	१	२	१	१	३	२	२	३	२	४

६ – गणगुणाः

वरस्य

	गण	देव	मनुष्य	राक्षस
कन्यायाः	देव	६	५	१
	मनुष्य	६	६	०
	राक्षस	०	०	६

८ – नाड़ीगुणाः

वरस्य

	नाड़ी	आदि	मध्य	अन्त्य
कन्यायाः	आदि	०	८	८
	मध्य	८	०	८
	अन्त्य	८	८	०

३ – तारायाः गुणाः

वरस्य

	तारा	१	२	३	४	५	६	७	८	९
कन्यायाः	जन्म १	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
	संपत् २	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
	विपत् ३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१
	क्षेम ४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
	प्रत्यरि ५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१
	साधक ६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
	वध ७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१
	मैत्र ८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
	अतिमैत्र ९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

अष्टकूट मेलापक

विवाह–मेलापक विचार में वर्ण में १, वश्य में २, तारा में ३, योनि में ४, ग्रहमैत्री में ५, गणमैत्री में ६, भकूट में ७ तथा नाड़ी में ८ गुण होते हैं। इन कुल ३६ गुणों में से १८ गुण से ऊपर विवाह अत्यन्त शुभ माना जाता है। तारा देखने के लिये कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक तथा वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनकर जो आये, उसमें अलग–अलग ९ का भाग देने से जो शेष बचे, उसे तारा जाने।

अथ मेलापके विशेषस्तत्राह।

अज्ञातजन्मनां नृणां नाम्नि भं परिकल्पयेत्।
तेनैव चिन्तयेत्सर्वं राशिकूटादि जन्मवत्॥१॥
जन्मभं जन्मधिष्ण्येन नामधिष्ण्येन नामभम्।
व्यत्ययेन यदा योज्यं दम्पत्योर्निधनं भवेत्॥२॥

७ – राशिकूटस्य गुणाः

वरस्य

	राशि	मेष	वृष	मि·	कर्क	सिंह	क·	तुला	वृ·	धनु	म·	कुंभ	मीन
कन्यायाः	मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
	वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
	मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
	कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
	सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
	कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
	तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
	वृश्चिक	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
	धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
	मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
	कुंभ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
	मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

५ – ग्रहमैत्रकस्य गुणाः

वरस्य

	ग्रह	सू	च	मं	बु	गु	शु	श
कन्यायाः	सूर्य	५	५	५	४	५	०	०
	चन्द्र	५	५	४	१	४	॥	॥
	मंगल	५	४	५	॥	५	३	॥
	बुध	४	१	॥	५	॥	५	४
	गुरु	५	४	५	॥	५	॥	३
	शुक्र	०	॥	३	५	॥	५	५
	शनि	०	॥	॥	४	३	५	५

निराभिजिद् गणना

स्थानम्	नक्ष·	फलानि
शीर्षे	३	हानिः
मुखे	३	सिद्धिः
कण्ठे	३	मृत्युः
हस्ते	४	शत्रुभयं
हृदये	४	इष्टाप्तिः
उदरे	३	हानिः
कट्यां	३	इष्टाप्तिः
चरणे	४	धनाप्तिः

ग्रह	मित्र	सम	शत्रु
सूर्य	चं·मं·गु·	बुधः	शु·श·
चन्द्र	सू· बु·	मं·गु·शु·श·	०
मंगल	चं·सू·गु·	शुक्र, शनि	बुध
बुध	सू· शु·	मं,गु,श·	चन्द्र
गुरु	सू·चं·मं·	शनि	बु·शु·
शुक्र	बु· श·	मंगल,गुरु	सू·चं·
शनि	बु· शु·	गुरु	सू·चं·मं·

प्रीतिषडष्टक	मृत्युषडष्टक	शुभद्विर्दादशक	अशुभद्विर्दादशक	शुभनवपंचक	अशुभनवपंचक
सिंह–मीन	मेष–कन्या	मीन–मेष	वृष–मिथनु	मेष–सिंह	धनु–मेष
तुला–वृश्चिक	तुला–मीन	कर्क–सिंह	कुम्भ–मीन	वृष–कन्या	मकर–वृष
कुम्भ–कन्या	मिथुन–वृश्चिक	सिंह–कन्या	मेष–वृष	मिथुन–तुला	कर्क–वृश्चिक
मिथुन–मकर	मकर–सिंह	मकर–कुम्भ	मिथुन–कर्क	सिंह–धनु	कन्या–मकर
मेष–वृश्चिक	कुम्भ–कर्क	तुला–कन्या	तुला–वृश्चिक	तुला–कुम्भ	कुम्भ–मिथु·
धनु–कर्क	धनु–वृष	धनु–वृश्चिक	मकर–धनु	वृश्चिक–मीन	मीन–कर्क

वर–वधु मेलापक सारिणी

वर / वधू			मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
			अ4	भ4	कृ1	कृ3	रो4	मृ2	मृ2	आ4	पु3	पु1	पु4	श्ले4	म4	पू4	उ1	उ3	ह4	चि2	चि2	स्वा4	वि3	वि1	अनु4	ज्ये4	मू4	पू4	उ1	उ3	श्र4	ध2	ध2	श4	पू3	पू1	उ4	र4
			चू चे चो ला	लि लू ले लो	अ	इ उ ए	ओ वा वि वु	वे वो	क कि	कू घ ङ छ	के को ह	ही	हु हे हो डा	डी डू डे डो	म मी मू मे	मो टा टी टू	टे	टो प पी	पू ष ण ठ	पे पो	र री	रू रे रो ता	ति तू ते	तो	न नी नू ने	नो या यी यू	ये यो भ भी	भू धा पा ढ़ा	भे	भो ज जी	खि खू खे खो	ग गि	गु गे	गो सा सी सू	से सो द	दी	दू थ झ त्र	दे दो चा ची
मेष	अ4	चू चे चो ला	28 3	33 0	28.5	18.5 4	21.5 -4	22.5 -4	26	17 3	19 3	23.5 3	31.5	28	21 +5	25 +5	15.5 35	11 36	9 236	13 6	22.5	26.5 -2	22.5	18.5 -6	25.5 -6	14 36	13 35	25 +5	23.5 +5	25	26	20	20	15 3	16 3	14.5 34	24.5 +4	26 +4
	भ4	लि लू ले लो	34	28 3	29 01	19 041	22.5 -4	14.5 34	18 3	26	27	31.5	23.5 3	25.5 1	20 -15	18 35	26 +5	21.5 6	20 6	4 136	13.5 13	29.5	21.5 -1	17.5 -16	17.5 36	19.5 -16	20 -15	18 35	26 +5	27.5	26	10 132	10 132	20 -1	24 -2	22.5 ×24	17.5 34	26.5 +4
	कृ1	अ	27.5	29 1	28 3	18 34	10 1340	16.5 4	20	20 1	21	25.5	26.5	23.5 3	16.5 35	20 15	20 15	15.5 16	15.5 6	18 6	27.5	15.5 3	19.5 3	15.5 36	19.5 -6	25.5 -6	24.5 +5	18 125	12 315	13.5 13	11.5 23	25	25	27	19 1	17.5 14	19.5 14	11.5 34
वृष	कृ3	इ उ ए	18.5 4	20 14	19 34	28 3	20 013	26.5	17.5 +4	17.5 14	18.5 +4	22	23	20 3	18.5 3	22 1	22 1	21 15	21 +5	23.5 +5	22.5 -6	10.5 36	14.5 36	20.5 3	24.5	30.5	20 6	13.5 126	7.5 136	12 135	10 352	23.5 +5	29.5	31.5	23.5 1	20 1	22 1	14 3
	रो4	ओ वा वी वू	23.5 -4	23.5 4	11 341	20 31	28 3	36 0	27 04	23.5 +4	22.5 +4	26	27	12 31	10.5 31	24.5	27	26 +5	26 +5	20 -15	19 -16	15.5 36	9.5 316	15.5 31	29.5	23.5 1	14 16	19 6	11.5 326	16 352	17 35	20 -15	26 -1	24.5 -1	30.5	27	27	19 3
	मृ2	वे वो	23.5 -4	14.5 34	18.5 -4	27.5	35	28 3	19 34	24 04	22.5 +4	26	19 3	21	19.5	15.5 3	24.5	23.5 +5	26 +5	13 35	12 36	25 -6	18.5 -6	24.5	21.5 3	24.5	15 6	10 36	17 26	21.5 ×25	25 +5	13 35	19 3	27	29.5	26	18 3	27
मिथुन	मृ2	क की	27	18 3	22	19.5 +4	27 +4	20 34	28 3	33 0	31.5	19 -4	12 34	14 4	23.5	19.5 3	28.5	31.5	34	21 3	14 35	27 +5	20.5 +5	14 6	11 36	14 6	23	18 3	25 +2	20 -26	23.5 -6	11.5 36	13 35	21 +5	23.5 +5	25.5	17.5 3	26.5
	आ4	कू घ ङ छ	19 3	27	21 1	18.5 ×14	24.5 +4	26 +4	34	28 3	25 30	12.5 034	20 -4	13 14	23.5 1	29.5	21.5 3	24.5 3	24.5 3	27 1	20 -15	27 +5	20 ×15	13.5 16	17 26	3 1326	16 13	28	28	23 -6	23 -6	17.5 -16	19 ×15	12 135	17 35	19 3	26.5	26.5
	पु3	के को ह	20 3	27	23	20.5 +4	22.5 +4	23.5 +4	31.5	24 3	28 3	15.5 -34	22.5 40	17 -4	22.5 +2	26.5 +2	21.5 3	24.5 3	25.5 3	27.5	20.5 +5	28 +5	22 +5	15.5 6	21.5 6	7 36	14 3	27	27	22 -6	23 -6	17 -6	18.5 +5	14 35	16 35	18 3	28	27.5
कर्क	पु1	ही	22.5 3	29.5	25.5	22	24	25	18 4	10.5 34	14.5 34	28 3	35 0	29.5	16.5 ×24	20.5 24	15.5 34	18 3	19 3	21	20.5	28	22	20 +5	26 +5	11.5 35	8 36	21 -6	21 -6	26	27	21	12.5 6	8 36	10 36	16 35	26 +5	25.5 +5
	पु4	हु हे हो डा	30.5	21.5 3	26.5	23	25	18 3	11 34	18 4	21.5 4	35	28 3	30 0	19.5 +4	15.5 34	23.5 +4	26	27	12 3	11.5 3	26.5	21	19 +5	18 35	21 -5	17	11 236	21 6	26	25 -2	13 3	4.5 36	14.5 6	18 6	24 +5	18 35	27 +5
	श्ले4	डी डू डे डो	26.5	24.5 1	22.5 3	19 3	11 31	19	12 4	12 14	15 4	28.5	29	28 3	15 0342	15.5 142	18.5 14	21 1	21	26	25.5	12.5 3	17.5 3	15.5 35	20 +5	26 -5	22.5 6	16 16	8 316	13 13	13 3	26	17.5 6	19.5 6	11.5 16	17.5 15	21 15	13 35
सिंह	म4	म मी मू मे	20 +5	20 15	16.5 35	17.5 3	9.5 31	17.5	21.5	22.5 1	20.5 -2	16.5 ×24	19.5 +4	16 342	28 3	30 01	27.5 1	16.5 14	16.5 +4	21.5 4	24.5	11.5 3	16.5 3	22.5 3	25.5	33	25 +5	19 15	8.5 135	3.5 316	4.5 36	18.5 6	24.5	25.5	18.5 1	18.5 -16	19.5 16	13 36
	पू4	मो टा टी टू	26 +5	18 35	20 -15	21 1	23.5	15.5 3	19.5 3	28.5	26.5 -2	22.5 ×24	17.5 34	16.5 124	30 -1	28 3	35 0	24 04	22.5 +4	7.5 134	10.5 13	25.5	18.5 1	24.5 -1	23.5 3	25.5 -1	19 ×15	17 35	24 +5	19 6	18.5 6	4.5 136	10.5 13	19.5 1	24.5	24.5 -6	17.5 36	25.5 -6
	उ1	टे	16.5 35	26 +5	20 -15	21 1	26	24.5	28.5	20.5 3	21.5 3	17.5 34	25.5 +4	19.5 -14	27.5 -1	35	28 3	17 34	16 034	13.5 142	16.5 12	25.5	16.5 12	22.5 -12	31.5	17.5 13	9.5 135	25 +5	25 +5	20 6	20 6	11.5 16	17.5 1	11.5 13	15.5 3	15.5 36	26.5 -6	25.5 -6
कन्या	उ3	टो प पी	13 36	22.5 6	16.5 16	21 ×15	26 +5	24.5 +5	31.5	23.5 3	24.5 3	20 3	28	22 1	17.5 14	25.5 +4	18 34	28 3	27 30	24.5 ×12	16.5 124	25.5 +4	16.5 124	18 12	27	13 13	14 13	29.5	29.5	24.5 +5	24.5 +5	16 +15	16.5 -16	10.5 316	14.5 36	17.5 3	28.5	27.5
	ह4	पू ष ण ठ	10 236	20 6	17.5 6	22 +5	25 +5	26 +5	33	22.5 3	24.5 3	20 3	28	23	18.5 +4	22.5 +4	16 34	26 3	28 3	28 0	20 04	26.5 +4	18.5 +4	20	26	13 3	15 3	27	28.5	23.5 +5	24.5 +5	18.5 +5	19 -6	8.5 362	13.5 36	16.5 3	26.5	27.5
	चि2	पे पो	13 6	5 136	19 6	23.5 +5	20 15	12 35	19 3	26 1	25.5	21	12 3	27	22.5 +4	8.5 134	14.5 124	24.5 12	27	28 3	20 34	19 04	26.5 +4	28	11 3	25	27	14 13	22 1	17 15	18.5 +5	15.5 35	16 36	24 -6	16.5 16	19.5 1	10.5 132	19.5

यहाँ सारिणी में ऊपर, दायें से बाये मेष मे मीन तक वर की राशि, नक्षत्र चरण व नाम का प्रथम अक्षर है ऊपर से नीचे कन्या की राशि, नक्षत्र चरण व नाम का प्रथम अक्षर है। अष्टकूट मेलापक सारिणी में कुल गुणों का योग व नीचे दोषों के चिह्न दिये हैं। इन दोषों को इकाई के रूप में इस प्रकार समझना चाहिए। **1** – गणदोष, **2** – वैर योनि, **3** – नाड़ी दोष, **4** – द्विर्द्वादश दोष, **5** – नवम पंचम, **6** – षडाष्टक तथा जहाँ **0** लिखा है यह वर के नक्षत्र से पूर्व वधु के नक्षत्र की सूचना देता है। जो कि महादोष माना गया है। – का चिह्न दोष की न्यूनता दर्शाता है। × एवं + का चिह्न दोष का पूरा निर्वाह करता है।

वर–वधु मेलापक सारिणी

वर / वधू			मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
			अ4	भ4	कृ1	कृ3	रो4	मृ2	मृ2	आ4	पु3	पु1	पु4	श्ले4	म4	पू4	उ1	उ3	ह4	चि2	चि2	खा4	वि3	वि1	अनु4	ज्ये4	मु4	पू4	उ1	उ3	उ4	ध2	ध2	श4	पू3	पू1	उ4	र4
			चू चे चो ला	लि लू ले लो	अ	इ उ ए	ओ वा वि वु	वे वो	क कि	कू घ ङ छ	के को ह	ही	हु हे हो डा	डी डू डे डो	म मी मू मे	मो टा टी टू	टे	टो प पी	पू ष ण ठ	पे पो	र री	रू रे रो ता	ति तू ते	तो	न नी नू ने	नो या यी यू	ये यो भ भी	भू धा फा ढ़ा	भे	भो ज जी	खि खू खे खो	ग गि	गु गे	गो सा सी सू	से सो द	दी	दू थ झ ञ	दे दो चा ची
तुला	चि2	र री	22.5	14.3 13	28.5	23.5 +6	20 16	12 36	13 35	21 15	19.5 +5	20.5	11.5 3	26.5	25.5	11.5 13	17.5 12	17.5 124	20 +4	21 34	28 3	27 0	34.5	23.5 4	6.5 34	20.5 4	27	14 13	22 1	25 1	26.5	23.5 3	18 35	26 +5	18.5 15	12.5 16	3.5 6213	12.5 6
	खा4	रू रे रो ता	27.5 +2	29.5	17.5 3	12.5 36	15.5 36	26 -6	27 +5	26 +5	28 +5	29	27.5	14.5 3	13.5 3	25.5	25.5	25.5 +4	27.5 +4	21 +4	28	28 3	20 30	9 340	21.5 4	16.5 4	23	27	19 3	22 3	23 3	26.5	21 +5	20 ×52	25 +5	19 6	19.5 6	12.5 36
	वि3	ति तू ते	22.5	22.5 1	20.5 3	15.5 36	10.5 136	18.5 -6	19.5 +5	20 15	21 +5	22	21	18.5 3	17.5 3	19.5 1	17.5 12	17.5 142	18.5 +4	27.5 +4	34.5	19 3	28 3	17 34	16 04	20.5 4	27	22 1	14 13	17 13	17 3	30	24.5 +5	26 +5	20 15	14 16	13 162	4.5 36
वृश्चिक	वि1	तो	16.5 +6	16.5 16	14.5 36	19.5 3	14.5 13	22.5	12 6	12.5 16	13.5 6	19 -5	18 -5	15.5 -5	21.5 3	23.5 1	21.5 12	17 12	18	27	22.5 4	7 34	16 34	28 3	27 0	31.5	21.5 +4	16.5 41	8.5 134	12 13	12 3	25	24	25.5	19.5 1	19 15	18 15	9.5 325
	अनु4	न नी नू ने	24.5 -6	15.5 36	19.5 -6	24.5	27.5	20.5 3	10 36	15 26	20.5 6	26 -5	18 35	21 -5	24.5	20.5 3	29.5	25	26	11 3	6.5 34	21.5 4	16 4	28	28 3	31 0	15.5 ×24	13.5 34	21.5 +4	25	26	12 3	11 3	21	24.5	24 +5	18 35	27 +5
	ज्ये4	नो या यी यू	12 36	18.5 16	24.5 -6	29.5	22.5 1	22.5	12 6	2 3126	5 63	10.5 53	20 +5	26 -5	31	23.5 1	16.5 13	12 13	12 3	24	19.5 4	15.5 4	19.5 4	31.5	30	28 3	14 0234	16.5 14	16.5 14	20 1	20	25	24	18 3	10 13	9.5 135	21 15	21 +5
धनु	मु4	ये यो भ भी	12 35	20 15	24.5 +5	19 6	13 16	13 6	21	15 13	12 3	8 36	17 6	23.5 6	25 +5	19 15	9.5 153	13 31	13 3	26	26	21	26	22.5 +4	15.5 ×24	15 342	28 3	28 01	26.5 1	15 14	15 4	20 4	28.5	21.5 3	14.5 13	16 13	25 1	26.5
	पू4	भू धा फा ढ़ा	26 +5	18 35	18 125	12.5 162	18 6	10 36	18 3	27	27	23 6	12 236	17 16	19 -15	17 35	25 +5	28.5	27	13 13	13 13	27	21 1	17.5 -14	15.5 34	17.5 -14	28 +1	28 3	34 0	22.5 04	23 4	6 134	14.5 13	23.5 1	28.5	30	23 3	31
	उ1	भे	24.5 +5	26 +5	12 135	6.5 136	10.5 236	17 26	25 +2	27	27	23 6	23 6	9 163	8.5 153	24 +5	25 +5	28.5	28.5	21 1	21 1	19 3	13 13	9.5 134	23.5 +4	17.5 -14	26.5 -1	34	28 3	16.5 34	14.5 340	15 14	23.5 1	23.5 1	29.5	31	31	23 3
मकर	उ3	भो ज जी	27	28.5	14.5 13	12 135	16 235	22.5 ×25	20 ×26	22 -6	22 -6	28	28	14 13	4.5 136	20 6	21 6	24.5 +5	24.5 15	17 15	24 -1	22 3	16 13	13 31	27	21 1	16 14	23.5 4	17.5 34	28 3	26 30	26.5 +1	17 ×14	17 ×14	23 +4	30.5	30.5	22.5 3
	उ4	खि खू खे खो	27	26	13.5 32	11 352	16 35	25 +5	22.5 -6	21 -6	22 -6	28	26 +2	15 3	6.5 36	18.5 6	20 6	23.5 +5	24.5 +5	19.5 5	26.5	22 3	17 3	14 3	27	22	17 4	23 4	14.5 34	25 3	28 3	28 -0	18.5 04	18 +4	21 +4	28.5	29.5	22.5 3
	ध2	ग गि	20	11 132	26	23.5 +5	20 15	12 35	9.5 36	16.5 16	16 -6	22	13 3	28	19.5 6	5.5 136	12.5 16	16 15	17.5 +5	15.5 35	22.5 3	24.5	29	26	12 3	26	21 4	7 341	16 41	26.5 1	27	28 3	18.5 34	23.5 40	19 14	26.5 1	15.5 13	22.5 +2
कुम्भ	ध2	गू गे	20	11 132	26	30.5	27 1	19 3	12 35	19 15	18.5 +5	13.5 6	4.5 36	19.5 6	25.5	11.5 13	18.5 1	17.5 16	19 +6	17 36	18 35	20 -5	24.5 -5	25	11 3	25	29.5	15.5 13	24.5 1	18 14	18.5 +4	19.5 34	28 3	33 0	28.5 1	18 14	7 134	14 42
	श4	गो गा सी सू	15 3	21 1	28	32.5	25.5 1	27	20 +5	12 135	13 35	8.5 36	14.5 6	20.5 6	26.5	20.5 1	12.5 13	11.5 136	8.5 1236	25 6	25 +5	19 +5	26 +5	26.5	21	19 3	22.5 3	24.5 1	24.5 1	18 14	18 +4	24.5 +4	33	28 3	19 013	8.5 1340	17 14	16 4
	पू3	से सो द	18 3	25 +2	20 -1	24.5 -1	31.5	31.5	24.5 +5	17 35	18 35	13 36	20 6	13.5 16	19.5 1	25.5	16.5 3	15.5 36	15.5 ×36	17.5 16	18.5 -15	26 +5	20 -15	20.5 1	26.5	11 13	15.5 13	29.5	30.5	24 +4	23 +4	20 -14	28.5 -1	19 13	28 3	17.5 34	22.5 04	20 42
मीन	पू1	दी	14.5 346	21.5 +426	16.5 -146	19 1	26	26	25.5	18 3	19 3	18 35	25 5	18.5 15	17.5 -16	23.5 +6	14.5 36	16.5 3	16.5 3	18.5 +1	11.5 16	19 6	13 16	19 -15	25 +5	9.5 135	15 13	29	30	29.5	28.5	25.5 1	17 14	7.5 134	16.5 34	28 3	33 0	30.5 +2
	उ4	दू थ झ ञ	24.5 +4	16.5 34	18.5 -14	21 1	26	18 3	17.5 3	25.5	28	27 5	19 35	21 15	18.5 -16	16.5 36	25.5 +6	27.5	26.5	9.5 132	2.5 3216	19.5 6	12 162	18 152	19 35	21 -15	24 -1	22 3	30	29.5	29.5	14.5 13	6 134	16 14	21.5 4	33	28 3	35 0
	र4	दे दो चा ची	25 +40	24.5 +4	11.5 34	14 3	17 3	16	25.5	24.5	26.5	25.5 5	27 5	14 35	13 36	23.5 +6	23.5 +6	25.5	26.5	19.5	12.5 6	11.5 36	4.5 36	10.5 35	27 -5	22 +5	26.5	29	21	20.5 3	21.5 3	22.5 -2	14 42	16 4	18 42	29.5 +2	34	28 3

यहाँ दोषों को इकाई के रूप में मानना चाहिए। जैसे वर की राशि धनु में पूर्व **4** चरण तथा कन्या की राशि वृष कृतिका **3** चरण का मेलापक देखने पर कुल गुण योग **13.5** तथा दोष में **126** लिखा है। यहाँ **1** – गण दोष, **2** – वैर योनि, **6** – षडाष्टक दोष प्राप्त होता है।

❊ नाड़ीदोष विचार एवं परिहार ❊

जन्मकुण्डली में आदिनाड़ी, मध्यनाड़ी तथा अन्त्यनाड़ी नाम से तीन नाड़ियों का विवेचन प्राप्त होता है।

आदि नाड़ी – अश्विनी, आर्द्रा, पुनर्वसु, उ.फाल्गुनी, हस्त, ज्येष्ठा, मूल, शतभिषा, पूर्वाभाद्र.
मध्य नाड़ी – भरणी, मृगशीर्ष, पुष्य, पू.फाल्गुनी, चित्रा, अनुराधा, पू.षाढ़ा, धनिष्ठा, उ.भाद्र.
अन्त्यनाड़ी– कृतिका, रोहिणी, आश्लेषा, मघा, स्वाती, विशाखा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, रेवती

यदि वर एवं कन्या की नाड़ी अलग-अलग होती है तो आठ गुण प्राप्त होते हैं। यदि वर कन्या की नाड़ी समान हो तो शून्य गुण मिलता है। इसे ही नाड़ी दोष कहते हैं। नाड़ी दोष की तीन स्थिति बनती है- १. वर-कन्या दोनों की आदि नाड़ी हो। २. वर-कन्या दोनों की मध्य नाड़ी हो तथा ३. वर-कन्या दोनों की अन्त्य नाड़ी हो।

यदि दोनों की आदिनाड़ी हो तो विवाह करने पर वर की मृत्यु होती है। यदि दोनों की मध्यनाड़ी हो तो विवाह करने पर कन्या की मृत्यु होती है। यदि दोनों की अन्त्य नाड़ी हो तो विवाह के पश्चात् दोनों की मृत्यु होती है। अतः नाड़ी दोष त्याज्य होता है।

आदिनाडीवरं हन्ति मध्यनाडी च कन्यकाम् ।
अन्त्यनाडी द्वयोर्हन्ति नाडीदोषं त्यजेद् बुधः ।।

यह वचन प्राचीन काल से ही समादृत है। यदि वर-कन्या का एक नक्षत्र हो और नक्षत्र चरण अलग-अलग हो तो नाड़ी दोष नहीं लगता है। यदि वर-कन्या का एक नक्षत्र हो और राशि अलग-अलग हो तो भी नाड़ी दोष नहीं लगता है।

राश्यैक्ये चेद्भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव ।
नाडीदोषो नो गणानाञ्च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात् ।। -मु.चि.

जातिभेद से नाड़ीदोष परिहार

प्राचीन परम्परा से प्राप्त ज्योतिर्विदों के द्वारा 'नाडीदोष' का त्याग केवल विप्रवर्ण के लिए आदिष्ट हैं। क्षत्रिय वर्ण के लिए 'वर्णदोष' का त्याग कहा गया है। वैश्यवर्ण के लिए 'गणदोष' तथा शूद्रवर्ण के लिए 'योनिदोष' का त्याग आदिष्ट किया गया है-

नाडीदोषस्तु विप्राणां वर्णदोषस्तु भूभुजाम्। गणदोषस्तु वैश्यानां योनिदोषस्तु पादजे।।

यदि नाड़ीदोष के कारण सभी वर्गों में विवाह को रोक दिया जाये तो फिर सोलह गुण पर विवाह होना ही कठिन हो जायेगा। कभी-कभी तो अट्ठाईस गुण होते हुए भी नाड़ीदोष की प्राप्ति होने से समस्या उत्पन्न हो जाती है। फलतः सोलह गुण पर विवाह सम्पन्न होने का शास्त्रीय आदेश सिद्ध करता है कि ब्राह्मण वर्ण के लिए ही नाड़ी दोष सर्वथा वर्ज्य है। नाड़ी दोष का ज्योतिष द्वारा प्राप्त परिहार ही एकमात्र उपाय नहीं होता है, धर्मशास्त्र द्वारा बतलाया उपाय ज्यादा महत्त्वपूर्ण और प्रभावशाली होता है।

फलतः नाड़ीदोष परिहार के लिए ज्योतिषशास्त्रीय परिहार के अतिरिक्त धर्मशास्त्रीय परिहार का भी अवलम्बन लेना चाहिए। भारत में प्राचीन काल से ही धर्मशास्त्रीय परिहारों की मान्यता बनी हुयी है। यह भी देखा गया है कि धर्मशास्त्रीय परिहार के बाद नवदम्पती के जीवन में विवाह के बाद किसी प्रकार की कोई दुर्घटना नहीं होती है। यह आवश्यक है कि परिहार विद्वान् वैदिक द्वारा सम्पन्न कराया जाय।

❊ नाड़ीदोष परिहार ❊

यदि ज्योतिषशास्त्रोक्त परिहार न मिले तो धर्मशास्त्रोक्त परिहार द्वारा नाड़ीदोष का निवारण करके विवाह किया जाता है। ऐसा करने पर नाड़ीदोष से उत्पन्न दुष्प्रभाव वर-कन्या को नहीं प्राप्त होता है। धर्मशास्त्रीय परिहार में बृहस्पति के वचन के अनुसार सवालाख महामृत्युंजय मंत्र जप कन्या का पिता कराकर तब विवाह करे। साथ ही विवाह मण्डप में नाड़ीदोष परिहार हेतु कन्या का पिता ब्राह्मण को गोदान-स्वर्णदान करे –

दोषापनुत्तये नाड्या मृत्युञ्जयजपादिकम्।
विधाय ब्राह्मणांश्चैव तर्पयेत्काञ्चनादिना।। -बृहस्पतिः

नारायणभट्ट द्वारा दी गयी धर्मशास्त्रीय व्यवस्था पूरे देश में मान्य है। आज भी यही धर्मशास्त्रीय व्यवस्था नाड़ी दोष के लिए प्रभावशाली उपाय है। नारायणभट्ट के अनुसार वर-कन्या की नाड़ी यदि एक हो जाये तो विवाह मण्डप में प्रत्यक्ष गोदान एवं स्वर्णदान करके ही कन्या का पिता विवाह करे –

द्व्यर्के ताम्रसुवर्णमष्टरिपुके गोयुग्ममर्थांकके।
रौप्यं कांस्यमथैकनाडियुजिभे गोस्वर्णादिदत्वोद्वहेत्।।

इस उपाय को करके हजारों की संख्या में नाड़ी दोष युक्त विवाह का परिहार किया गया है। इस परिहार के पश्चात् दम्पती के जीवन में कोई अनिष्ट नहीं होता है। ध्येय है कि कन्या का पिता मण्डप में पाणिग्रहण संस्कार से पूर्व ही अपने कुल पुरोहित या श्रेष्ठ विद्वान् को संकल्पपूर्वक गोदान तथा स्वर्णदान करे। संकल्प में नाड़ीदोष परिहारार्थ गोदान तथा स्वर्णदान का उल्लेख आवश्यक होता है। इस उल्लेख के बिना किया हुआ संकल्प या दान व्यर्थ होता है। अतः विद्वान् वैदिक द्वारा ही इस कृत्य का संपादन होना चाहिए। निष्कर्षतः नाड़ीदोष होने पर विवाह का त्याग ही एकमात्र मार्ग नहीं होता, बल्कि परिहारपूर्वक विवाह करना श्रेष्ठ मार्ग है।

नाड़ीकूट सर्वश्रेष्ठ है

आठ प्रकार के कूटों में नाड़ी सर्वश्रेष्ठ कूट होने के कारण कूटशिरोमणि नाम से प्रसिद्ध है। अतः नाड़ीदोष को लेकर पारम्परिक विद्वानों में भारी सजगता देखी जाती है। प्रायशः विद्वान् सामान्य ग्रन्थों में कहे गये परिहार को स्वीकार नहीं करते। फलतः मुहूर्त्तचिंतामणि या फिर नारायणभट्ट द्वारा कहा गया परिहार ही आज विद्वानों में स्वीकार्य है।

❊ मंगली कुण्डली विचार ❊

मंगल को लेकर ज्योतिषीगण न भ्रम में रहें, न भ्रमयुक्त निर्णय दें। भ्रमयुक्त निर्णय दाम्पत्य का नाश कर सकता है। अतः सावधानीपूर्वक मंगली कुण्डली का निर्णय दें।

❊ कुण्डली में १, ४, ७, ८, १२वें भाव में मंगल बैठा हो तो कुण्डली मंगली होती है। इसी तरह से चन्द्रमा के साथ मंगल बैठा हो या चन्द्रमा से ४, ७, ८, १२वें भाव में बैठा हो तो कुण्डली चन्द्र मंगली होती है। प्रमाणवचन–

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे। कन्या भर्तुर्विनाशाय भत्ता पत्नी विनाशकृत्।।

❊ यदि लड़की मंगली कुण्डली वाली है तो लड़का भी मंगली कुण्डली वाला होना चाहिए।

❊ मंगल दोष का परिहार शनि करता है। यदि शनि कुण्डली में लग्न या चन्द्रमा से१, ४, ७, ८, १२वें भाव में बैठा हो तो वह मंगल दोष का शमन (नाश) करता है–

जामित्रे च यदा सौरिः लग्ने वा हिबुकेऽथवा। अष्टमे द्वादशे वाऽपि भौमदोषविनाशकृत्।।

❊ यह व्यवस्था पूरे देश में मान्य है। सॉफ्टवेयर द्वारा कुण्डली मेलापक में चन्द्रमंगली दोष पर विचार नहीं किया गया है। यह घातक प्रवृत्ति है।

❊ मंगल दोष का परिहार अपनी ही कुण्डली में नहीं देखा जाता है।

❊ यदि कन्या की कुण्डली मंगली है तो परिहार वर की कुण्डली में देखा जाता है ।

❊ यदि वर की कुण्डली मंगली है तो परिहार कन्या की कुण्डली में देखा जाता है।

❊ १, ४, ७ केन्द्रों में बैठा मेष, वृश्चिक, मकर का मंगल राजयोगकारी होने पर भी मंगली–कुण्डली का दोष देता है। यह दाम्पत्य के लिए बाधक होता है।

परिहार (उपाय)

❊ यदि लड़की की कुण्डली मंगली है और लड़के की कुण्डली मंगली नहीं है और कोई ज्योतिषीय परिहार न निकले तो धर्मशास्त्रीय परिहार करना चाहिए। ऐसा करने से विच्छेद या वैधव्यादि दोष नहीं उत्पन्न होता है।

❊ कुम्भ विवाह, विष्णु प्रतिमा विवाह और अश्वत्थविवाह ये तीन धर्मशास्त्रीय परिहार कन्या के लिए बतलाये गये हैं। ये उपाय आज भी व्यवहार में हैं।

❊ अर्कविवाह वर के लिए होता है। इससे कन्या के जीवन की रक्षा होती है।

❊ मंगलदोष परिहार के लिए लड़का या लड़की (जो मंगल दोष से ग्रस्त हो) हेतु ब्राह्मणों द्वारा सवा लाख महामृत्युंजय मंत्र का जप कराया जाता है। यह भी परम्परा प्राप्त एवं शास्त्रोक्त परिहार है।

❊ धर्मशास्त्रीय परिहार प्रायशः विवाह से पूर्व और तिलकोत्सव के बाद किया जाता है। अभी बहुतायत में यही परम्परा सक्रिय है।

❊ शनि की साढ़ेसाती ❊

शनिग्रह जिस राशि पर रहता है उससे एक राशि आगे और एक राशि पीछे इस प्रकार कुल तीन राशि को प्रभावित करता है। शनि एक राशि पर ढ़ाई वर्ष रहता है। कुल तीन राशि पर इसका काल साढ़ेसात वर्ष का होता है। इसे ही शनि की सार्द्धसप्तवार्षिकी (साढ़ेसाती) कहते हैं।

द्वादशे जन्मगे राशौ द्वितीये च शनैश्चरः। सार्द्धानि सप्तवर्षाणि तदा दुःखैर्युतो भवेत्।

सूर्यसिद्धान्त अनुसार संवत् २०८० मे शनि पूरे वर्ष कुम्भ राशि में रहेगा।

❊ अतः **२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक** शनि की साढ़ेसाती मकर, कुम्भ व मीन राशियों पर चलेगी।

कुम्भ एवं मीन राशि के ऊपर साढ़ेसाती का प्रभाव अपने चरम पर दिखाई देगा। १३ फरवरी २०२३ से मकर राशि पर साढ़ेसाती का प्रभाव शुभकारी हो जाएगा। कुम्भ एवं मीन पर शनि का प्रभाव अत्यधिक होगा। अतः शनि का जप हवन तथा श्रीहनुमान जी की आराधना करने से साढ़ेसाती का दुष्प्रभाव शान्त होगा।

❊ शनि की ढैय्या ❊

जब अपनी जन्मराशि से शनि चतुर्थ या अष्टम में स्थित हो तो शनि की ढैय्या चलती है। इसकी अवधि ढाई वर्ष की होती है। शनि की ढैया का प्रभाव भी जातक को प्रभावित करता है। यदि कुण्डली में चन्द्रमा शुभ स्थान में स्थित होकर योगकारी हो तो शनि की ढैया का प्रभाव कल्याणकारी होता है। कतिपय लोग इसे शनि की कल्याणी भी कहते हैं। **वर्षारम्भ से शनि की ढैया कर्क व वृश्चिक राशि के ऊपर है।**

मेष – कर्क, वृश्चिक का शनि ढैया कारक।	**वृष** – सिंह, धनु का शनि ढैया कारक।
मिथुन – कन्या, मकर का शनि ढैया कारक।	**कर्क** – तुला, कुम्भ का शनि ढैया कारक।
सिंह – वृश्चिक, मीन का शनि ढैया कारक।	**कन्या** – धनु, मेष का शनि ढैया कारक।
तुला – मकर, वृष का शनि ढैया कारक।	**वृश्चिक** – कुम्भ, मिथुन का शनि ढैया कारक।
धनु – मीन, कर्क का शनि ढैया कारक।	**मकर** – मेष, सिंह का शनि ढैया कारक।
कुम्भ – वृष, कन्या का शनि ढैया कारक।	**मीन** – मिथुन, तुला का शनि ढैया कारक।

शनि साढ़ेसाती शांति स्तोत्र

महर्षि पिप्लाद कृत शनि की साढ़ेसाती के शांति स्तोत्र के पाठ से साढ़ेसाती जनित रोग, कष्ट, जीविका तथा कलह आदि बाधाएं दूर होती हैं। शनिवार को १०८ पाठ कल्याणकारी है:--

नमस्ते कोणसंस्थाय पिङ्गलाय नमोऽस्तु ते। नमस्ते बंधु रूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तु ते।।
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो ।।
नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च ।।

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष, पर शनि शान्ति के उपाय दिए गए हैं

※ नवग्रहों के वैदिक मन्त्र ※

※ सूर्य- **जपसंख्या** - ७०००

विनियोगः- अस्य श्रीआकृष्णेनमंत्रस्य हिरण्यस्तूपऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः सवितादेवता श्रीसूर्यप्रीत्यर्थे सकलरोगकष्टनिवृत्तये जपे विनियोगः।

आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च ।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ।।

※ चन्द्र- **जपसंख्या** - ११०००

विनियोगः- अस्य श्रीइमन्देवामंत्रस्य गौतमऋषिः द्विपदाविराट् छन्दः सोमोदेवता, श्रीचन्द्रप्रीत्यर्थे सकलरोगकष्टनिवृत्तये जपे विनियोगः।

इमं देवा ऽअसपत्न ँ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते
जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय । इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश
एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ँ राजा ।।

※ भौम- **जपसंख्या** - १००००

विनियोगः- अस्य श्रीअग्निमूर्धामंत्रस्य विरूपाक्षअङ्गिरस ऋषिः अग्निर्देवता गायत्री छन्दः श्रीभौमप्रीत्यर्थे सकलरोगकष्टनिवृत्तये जपे विनियोगः।

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअय्यम् ।
अपा ँ रेता ँ सिजिन्वति ।।

※ बुध- **जपसंख्या** - ९०००

विनियोगः- अस्य श्रीउद्बुद्ध्यस्वाग्नेमंत्रस्य परमेष्ठी ऋषिः बुधोदेवता त्रिष्टुप् छन्दः श्रीबुधप्रीत्यर्थे सकलरोगकष्टनिवृत्तये जपे विनियोगः।

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ँ सृजेथामयञ्च।
अस्मिन्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च च सीदत।।

※ गुरु- **जपसंख्या** - १९०००

विनियोगः - अस्य श्रीबृहस्पतेमंत्रस्य गृत्समदऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः ब्रह्मादेवता श्रीबृहस्पतिप्रीत्यर्थे सकलरोगकष्टनिवृत्तये जपे विनियोगः।

ॐ बृहस्पतेऽअति यदर्योऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।।

※ शुक्र- **जपसंख्या** - १६०००

विनियोगः- अस्य श्रीअन्नात्परिस्रुतो मन्त्रस्य अश्विसरस्वतीन्द्रा देवताः प्रजापतिऋषिः जगतीछन्दः श्रीशुक्रप्रीत्यर्थे सकलरोगकष्टनिवृत्तये जपे विनियोगः।

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः।
ऋ तेन सत्यमिन्द्रियंविपान शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतंमधु।।

※ श्री सर्वेश्वर अष्टकम् ※

(श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज विरचित)

सनन्दनाद्यैः परिसेविताय, युग्मस्वरूपेण विराजिताय ।
चक्राङ्कितायाऽतिमनोहराय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ।।
श्रीनारदान्तर्हृदि संस्थिताय, मुनीन्द्रनिम्बार्कसुपूजिताय ।
सौन्दर्यलावण्यगुणार्णवाय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ।।
केशेन्द्रदेवैरभिवन्दिताय, गोपाङ्गनागोकुलजीवनाय ।
निजाश्रिताऽतङ्कनिवर्तकाय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ।।
राधाहृदागारनिमज्जिताय, निकुञ्जलीलारतिवर्द्धकाय ।
कालिन्दिकूले रसलासिताय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ।।
वृन्दावनश्रीक्षणहर्षिताय, कदम्बकुञ्जान्तशोभिताय ।
सखीसहस्रैरनुरञ्जिताय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ।।
नन्दात्मजायाऽखिलमोहनाय, सर्वैः समाराध्यशुचिस्मिताय।
कृष्णाय पूर्णाय सुकोमलाय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ।।
वंशीरवाऽकर्षितश्रीवनाय, हैयङ्गवीनाऽशननिर्गताय ।
श्रीरासलीलारससंप्लुताय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ।।
गोचारणाऽनारतनैपुणाय, वेदान्तवेद्याय सुलोचनाय ।
संसारदावानलमोचनाय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ।।
सर्वेश्वराष्टकं स्तोत्रं भक्ताभीष्टप्रदायकम् ।
राधासर्वेश्वराख्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

※ शनि- **जपसंख्या** - २३०००

विनियोगः- अस्य श्रीशन्नोदेवीमंत्रस्य दध्यङ्ङथर्वणऋषिः गायत्रीछन्दः आपो देवताः श्रीशनिप्रीत्यर्थे सकलरोगकष्टनिवृत्तये जपे विनियोगः।

ॐ शन्नो देवीरभिष्ट्यऽआपो भवन्तु पीतये।
शं योरभि स्त्रवन्तु नः।।

※ राहु- **जपसंख्या** - १८०००

विनियोगः- अस्य श्रीकयानश्चित्रमंत्रस्य वामदेवऋषिः गायत्रीछन्दः राहुर्देवता श्रीराहुप्रीत्यर्थे सकलरोगकष्टनिवृत्तये जपे विनियोगः।

ॐ कया नश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा।
कया शचिष्ठ्या वृता।।

※ केतु- **जपसंख्या** - १७०००

विनियोगः- अस्य श्रीकेतुंकृण्वन्नमन्त्रस्य मधुच्छन्दाऋषिः गायत्री छन्दः केतुर्देवता श्रीकेतुप्रीत्यर्थे सकलरोगकष्टनिवृत्तये जपे विनियोगः।

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्याऽअपेशसे।
समुषद्भिरजायथाः।।

※ श्री जयादित्य अष्टकम् ※

(श्रीस्कन्द महापुराणे)

न त्वं कृतः केवलसंश्रुतश्च यजुष्येवं व्याहरत्यादिदेव! ।
चतुर्विधा भारती दूरदूरं धृष्टः स्तौमि स्वार्थकामः क्षमैतत् ।।
मार्तण्डसूर्यांशुरविस्तथेन्द्रो भानुर्भगश्चाऽर्यमा स्वर्णरेताः ।
दिवाकरो मित्रविष्णुश्च देव! ख्यातस्त्वं वै द्वादशात्मा नमस्ते ।।
लोकत्रयं वै तव गर्भगेहं जलाधारः प्रोच्यसे खं समग्रम् ।
नक्षत्रमाला कुसुमाभिमाला तस्मै नमो व्योमलिङ्गाय तुभ्यम् ।।
त्वं देवदेवस्त्वमनाथनाथस्त्वं प्राप्यपालः कृपणे कृपालुः ।
त्वं नेत्रनेत्रं जनबुद्धिबुद्धिराकाशकाशो जय जीवजीवः ।।
दारिद्र्यदारिद्र्य निधे निधीनामामङ्गलामङ्गल शर्मशर्म ।
रोगप्ररोगः प्रथितः पृथिव्यां चिरं जयाऽऽदित्य! जयाऽऽप्रमेय! ।।
व्याधिग्रस्तं कुष्ठरोगाभिभूतं भग्नप्राणं शीर्णदेहं विसंज्ञम् ।
मातापिताबान्धवाः सन्त्यजन्ति सर्वैस्त्यक्तं पासि कोऽस्तित्वदन्यः।।
त्वं मे पिता त्वं जननी त्वमेव त्वं मे गुरुर्बान्धवाश्च त्वमेव ।
त्वं मे धर्मस्त्वञ्च मे मोक्षमार्गो दासस्तुभ्यं त्यज वा रक्ष देव! ।।
पापोऽस्मि मूढोऽस्मि महोग्रकर्मा रौद्रोऽस्मि नाऽऽचारनिधानमस्मि।
तथापि तुभ्यं प्रणिपत्य पादयोर्जयं भक्तानामर्पयं श्रीजयार्क! ।।
।। इति श्रीस्कन्दमहापुराणे श्रीजयादित्य अष्टकम् ।।

विश्वरूप जयादित्य जय विष्णो जयाच्युत।
जय केशव ईशान जय कृष्ण नमोऽस्तु ते।।
-- वराहपुराणम्, अध्यायः १६९/ श्लोकः २३

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

जयादित्य जय स्वामिञ्जय भानो जयामल।
जय वेदपते शश्वत्तारयास्मानहर्पते।।
-- स्कन्दपुराणम्/खण्डः१/अध्यायः५१/श्लोकः५४

प्रकाशकः- श्रीनिम्बार्क परिषद् , जयपुर

※ तंत्रसारोक्त (तांत्रिक) नवग्रह मंत्र ※

सूर्य- ॐ घृणिः सूर्याय नमः **चन्द्र-** ॐ सों सोमाय नमः
मंगल- ॐ अं अंगारकाय नमः
बुध- ॐ बुं बुधाय नमः **गुरु-** ॐ बृं बृहस्पतये नमः
शुक्र- ॐ शुं शुक्राय नमः
शनि- ॐ शं शनैश्चराय नमः **राहु-** ॐ रां राहवे नमः
केतु- ॐ कें केतवे नमः

✻ अवकहडाचक्रम् -- शतपदचक्रम् ✻

नक्षत्र अक्षर	चू.चे. चो.ला.	ली.लू. ले.लो.	अ.ई. उ.ए.	ओ.वा. वी.वू.	वे.वो. का.की.	कू.घ. ङ.छ.	के.को. हा.ही.	हू.हे. हो.डा.	डी.डू. डे.डो.
नक्षत्र	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
राशि	मेष	मेष	मेष१, वृष३	वृष	वृष२, मिथु२	मिथुन	मिथु३, कर्क१	कर्क	कर्क
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रि१ वैश्य३	वैश्य	वैश्य२ शूद्र२	शूद्र	शूद्र३ विप्र१	विप्र	विप्र
वश्य	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	चतु२ मान२	मानव	मान३ जल१	जलचर	जलचर
योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	सर्प	श्वान	मार्जार	मेष	मार्जार
यो.वै.	महिष	सिंह	वानर	नकुल	नकुल	मृग	मूषक	वानर	मूषक
राशीश	भौम	भौम	भौम१,शुक्र३	शुक्र	शुक्र२,बुध२	बुध	बुध३,चन्द्र१	चन्द्र	चन्द्र
गण	देव	मनुष्य	राक्षस	मनुष्य	देव	मनुष्य	देव	देव	राक्षस
नाडी	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य

नक्षत्र अक्षर	मा.मी. मू.मे.	मो.टा. टी.टू.	टे.टो. पा.पी.	पू.ष. ण.ठ.	पे.पो. रा.री.	रू.रे. रा.ता.	ती. तू. ते.तो.	ना.नी. नू.ने.	नो.या. यी.यू.
नक्षत्र	मघा	पू.फा.	उ.फा	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनु.	ज्येष्ठा
राशि	सिंह	सिंह	सिंह१, कन्या३	कन्या	कन्या२, तुला२	तुला	तुला३, वृश्चि१	वृश्चिक	वृश्चिक
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रि१ वैश्य३	वैश्य	वैश्य२ शूद्र२	शूद्र	शूद्र३ विप्र१	विप्र	विप्र
वश्य	वनचर	वनचर	वन१ मान३	मानव	मानव	मानव	मान३ कीट१	कीट	कीट
योनि	मूषक	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	महिष	व्याघ्र	मृग	मृग
यो.वै.	मार्जार	मार्जार	व्याघ्र	अश्व	गौ	अश्व	गौ	श्वान	श्वान
राशीश	सूर्य	सूर्य	सूर्य१,बुध३	बुध	बुध२,शुक्र२	शुक्र	शुक्र३,भौम१	भौम	भौम
गण	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	देव	राक्षस	देव	राक्षस
नाडी	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि

नक्षत्र अक्षर	ये.यो. भा.भी.	भू.ध, फ.ढ.	भे,भो. जा.जी.	खी.खू. खे.खो.	गा.गी. गू.गे.	गो.सा. सी.सू.	से.सो. दा.दी	दू.थ. झ.ञ	दे.दो. चा.ची.
नक्षत्र	मूल	पू.षा	उ.षा	श्रवण	धनिष्ठा	शत	पू.भा	उ.भा	रेवती
राशि	धनु	धनु	धनु१, मक३	मकर	मक.२, कुंभ२	कुम्भ	कुम्भ३, मीन१	मीन	मीन
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रि१ वैश्य३	वैश्य	वैश्य२ शूद्र२	शूद्र	शूद्र३ विप्र१	विप्र	विप्र
वश्य	मानव	मान१ चतु३	चतुष्प	चतु१जल३	जल२ मान२	मानव	मान३ जल१	जलचर	जलचर
योनि	श्वान	वानर	नकुल	वानर	सिंह	अश्व	सिंह	गौ	गज
यो.वै.	मृग	मेष	सर्प	मेष	गज	महिष	गज	व्याघ्र	सिंह
राशीश	गुरु	गुरु	गुरु१,शनि३	शनि	शनि	शनि	शनि३,गुरु१	गुरु	गुरु
गण	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव
नाडी	आदि	मध्य	अन्त्य		मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य

✻ नवग्रह स्तोत्रम् ✻

जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महद्द्युतिम्।
तमोऽरिंसर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णव संभवम्।
नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुटभूषणम्।।
धरणीगर्भ संभूतं विद्युत्कांति समप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणाम्यहम्।।
प्रियंगुकलिकाश्यामं रुपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।
देवानां च ऋ षीणां च गुरुं कांचनसन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।
हिमकुंद मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।
नीलांजन समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्ड संभूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।
अर्धकायं महावीर्यं चंद्रादित्य विमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रह मस्तकम्।
रौद्रंरौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।
इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत्सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।।
नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशनम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।

✻ नवग्रहों के बीजमंत्र ✻

ग्रह	बीज मन्त्र	जपसंख्या
सूर्य -	ॐ ह्रीं ह्रौं सूर्याय नमः।	७५००
चन्द्र -	ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः।	१९०००
मंगल-	ॐ हूँ श्रीं भौमाय नमः।	१०५००
बुध -	ॐ ऐं श्रीं श्रीं बुधाय नमः।	२१०००
गुरु -	ॐ ह्रीं क्लीं हूँ बृहस्पतये नमः	२४०००
शुक्र -	ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।	२६०००
शनि -	ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।	१५०००
राहु -	ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः।	१५०००
केतु -	ॐ ह्रीं ऐं केतवे नमः।	१५०००

✻ नवग्रहपीडाहर स्तोत्रम् ✻

ग्रहाणामादिरादित्यो लोकरक्षणकारकः।
विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु मे रविः।।
रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः।
विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु मे विधुः।।
भूमिपुत्रो महातेजा जगतां भयकृत् सदा।
वृष्टिकृद् वृष्टिहर्ता च पीडां हरतु मे कुजः।।
उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः।
सूर्यप्रियकरो विद्वान् पीडां हरतु मे बुधः।।
देवमन्त्री विशालाक्षः सदा लोकहिते रतः।
अनेकशिष्यसम्पूर्णः पीडां हरतु मे गुरुः।।
दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः।
प्रभुस्ताराग्रहाणां च पीडां हरतु मे भृगुः।।
सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः।
मन्दचारः प्रसन्नात्मा पीडां हरतु मे शनिः।।
महाशिरा महावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः।
अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां हरतु मे शिखी।।
अनेकरूपवर्णैश्च शतशोऽथ सहस्रशः।
उत्पातरूपो जगतां पीडां हरतु मे तमः।।

दिन का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उत्पात
काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत
उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात्रि का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उत्पात
चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत
काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
लाभ	शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग
उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ

पुरुष की जन्मकुण्डली में द्वादश भावों में स्थित ग्रहों के फल

ग्रह	तनु १	धन २	भ्राता ३	सुख ४	पुत्र ५	शत्रु ६	स्त्री ७	मृत्यु ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभ ११	व्यय १२
सूर्य	अङ्गपीड़ा	धननाश	निरोगी	दुःखी	सुतहानि	शत्रुनाश	स्त्रीदुष्टा	अल्पायु	दुष्टमति	शूर	धनी	दुष्ट स्वभाव
चन्द्र	कान्तिसुख	सम्पत्तिवान्	कीर्तिमान्	सुखभोगी	धनी, पुत्रवान्	अल्पायु	सुभार्यावान्	योगी	धर्मात्मा	तेजयुक्त	धनी	कामी
मंगल	रक्तकोप	ऋणी	विक्रमी	दुःखी	पुत्रहीन	शत्रुनाश	स्त्रीनाश	शरीर पीड़ा	पापरत	तेजस्वी	धनी	पतितदार
बुध	सुखी	धनी, गुणी	अरिमर्दन	सुखी	अल्पपुत्र	रोगी	धर्मज्ञ	गुणी	सुखी	कीर्तिमान	धनी	दरिद्र
गुरु	विद्वान्	धनागम	पापी	सुखी	प्रतापी	कामी	सुभार्या	नीचस्व	धार्मिक	सम्पत्तिवान्	सुलाभ	खल
शुक्र	सुखी	धनी	पापी	सुखी	बुद्धिमान्	रोगी	कामी	नीच	तपस्वी	सम्पत्ति	सुमति	रोगी
शनि	दुःखी	धनहानि	पराक्रमी	दुःखी	पुत्रहीन	शत्रुजित्	स्त्रीकुलटा	नेत्ररोगी	दुष्टबुद्धि	पराक्रमी	धनवान्	दुःखी
राहु	रोगी	निर्धन	विक्रमी	मातृहानि	कुमति	सबल	स्त्री रोगी	रोगी	देन्ययुक्त	मानी	सुख्यात	पतित
केतु	सकाम	खल	शूर	दुःखी	मूर्ख	सबल	स्त्री हानि	क्लेशयुक्त	पापी	पितृहीन	धनी	दुर्जन

स्त्री की जन्मकुण्डली में द्वादश भावों में स्थित ग्रहों के फल

ग्रह	तनु १	धन २	भ्राता ३	सुख ४	पुत्र ५	शत्रु ६	स्त्री ७	मृत्यु ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभ ११	व्यय १२
सूर्य	क्रोधनी	दरिद्रा	सुसुता	सपीड़ा	विपुत्रा	सुखिनी	दुःखार्ता	विधवा	धर्मज्ञा	सुकर्मा	सुलाभा	सरोगा
चन्द्र	अल्पायुषी	बहुधना	सुखिनी	सुभगा	सुपुत्रा	सरोगा	पतिप्रिया	रोगिणी	सुखिनी	धर्मज्ञा	गुणज्ञा	हीनांगी
मंगल	विधवा	बन्ध्या	विसहजा	सुःखार्ता	विपुत्रा	अरोगा	विधवा	नेत्ररोगणी	दुःखिनी	कुपुत्रा	सुलाभा	खला
बुध	सौभाग्या	धनाढ्य	पुत्रवती	सुगृहा	धीकान्तियुक्ता	सकोपा	पतिव्रता	कृतघ्ना	सुभोगा	सत्कर्मा	पतिव्रता	कृशाङ्गी
गुरु	सती	धनाढ्य	सुसहजा	सुखिनी	सुगुणा	सापदा	कीर्तियुक्ता	सरोगा	पुत्राढ्या	साधवी	सुपुत्रा	सुव्यया
शुक्र	ससुखा	सुभगा	धनाढ्य	सुखिनी	पुत्रवती	दरिद्रा	पतिप्रिया	विसुखा	धर्मरता	सधना	सुपुत्रा	सुव्यया
शनि	बन्ध्या	दुःखिनी	सुदक्षा	हृद्रोगा	विपुत्रा	गुणज्ञा	विधवा	दुःखनी	बन्ध्या	पापिनी	सुलाभा	मूढा
राहु	पुत्रहीना	दरिद्रा	सवित्ता	रोगार्त्ता	विपुत्रा	सधना	दुःखिता	विधवा	बन्ध्या	दुष्कर्मा	नीरोगा	दुष्टा
केतु	दुःखिनी	दुःखार्ता	रोगणी	मातृहानि	अपुत्रा	धनयुता	विधवा	दुःखिनी	शोकयुक्ता	पापिनी	सुभगा	रोगिणी

गोचर कुण्डली में द्वादश भावों में स्थित ग्रहों के फल

ग्रह	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पञ्चम्	षष्ठम्	सप्तम्	अष्टम्	नवम्	दशम्	एकादश	द्वादश
सूर्य	स्थाननाश	भय	श्रीप्राप्ति	मानभंग	दैन्य	विजय	यात्रा	पीड़ा	सुकृतिनाश	सिद्धि	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्र	अन्नलाभ	धननाश	सुख	रोग	कार्यनाश	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोग	धर्मलाभ	सुख	धनलाभ	धननाश
मंगल	शत्रुभीति	धननाश	धनलाभ	शत्रुभय	धननाश	धनलाभ	द्रव्यनाश	शत्रुभय	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	धननाश
बुध	बन्धन	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुख	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सुख	धनलाभ	धननाश
गुरु	भय	धननाश	क्लेश	धननाश	सुख	शोक	राजमान	पीड़ा	सुख	दैन्य	धनलाभ	पीड़ा
शुक्र	शत्रुनाश	धनलाभ	सुख	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दुःख	धनलाभ	धननाश
शनि	भय	धननाश	ऐश्वर्य	शत्रुभय	पुत्रनाश	धनलाभ	दोष	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मनस्य	धनलाभ	धननाश
राहु	हानि	धननाश	धनलाभ	वैर	शोक	श्रीप्राप्ति	कलह	मृत्यु	दुःख	वैर	सुख	शोक
केतु	रोग	वैर	सुख	भय	सुख	धनलाभ	कलह	रोग	पाप	शोक	कीर्ति	शत्रुभय

❁ जयपुर के लग्न प्रवेश से प्रमुख शहरों के लग्न प्रवेश संस्कार ❁

नगर \ लग्न	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुम्भ मि.	मीन मि.
अजमेर	+५	+६	+६	+६	+६	+५	+५	+४	+४	+४	+४	+५
अलवर	−३	−४	−४	−४	−३	−३	−३	−२	−१	−२	−३	−३
बांसवाड़ा	+८	+११	+१३	+१३	+९	+६	+२	००	−१	−१	+३	+६
बारां	−१	+१	+१	००	−२	−३	−५	−६	−७	−७	−४	−२
बाड़मेर	+१९	+२०	+२०	+२०	+१८	+१७	+१६	+१५	+१५	+१५	+१७	+१९
भरतपुर	−७	−७	−७	−७	−७	−७	−७	−६	−६	−६	−६	−६
भीलवाड़ा	+७	+८	+८	+७	+६	+४	+३	+२	+१	+२	+४	+६
बीकानेर	+९	+८	+८	+७	+९	+१०	+११	+१२	+१२	+१२	+११	+१०
बूंदी	+२	+४	+४	+३	+२	००	−२	−२	−३	−२	००	+१
चित्तौड़	+६	+९	+९	+९	+७	+५	+३	+१	००	+१	+४	+६
चूरू	+३	+२	००	००	+१	+२	+३	+५	+६	+६	+६	+५
दौसा	−२	−२	−३	−३	−४	−४	−४	−४	−३	−३	−२	−२
धौलपुर	−७	−७	−८	−८	−९	−९	−९	−९	−९	−८	−७	−७
डूंगरपुर	+११	+१३	+१५	+१४	+१२	+९	+५	+३	+१	+२	+६	+१०
हनुमानगढ़	+४	+२	+१	+१	+२	+४	+७	+१०	+११	+१०	+१०	+८
जैसलमेर	+२०	+२०	+२०	+२०	+२०	+२०	+२०	+२०	+२०	+२०	+२०	+२०
जालौर	+१४	+१६	+१६	+१५	+१४	+१२	+१०	+१०	+९	+९	+१०	+१२
झालावाड़	+१	+३	+४	+३	+१	−१	−४	−५	−७	−६	−३	००
झुंझुनूं	+१	००	−१	−१	००	+१	+२	+३	+३	+४	+४	+३
जोधपुर	+१३	+१३	+१३	+१३	+१२	+१२	+१२	+१२	+११	+११	+१२	+१२
करौली	−४	−४	−४	−४	−४	−५	−५	−६	−६	−५	−४	−४
कोटा	+१	+२	+४	+४	+३	+१	−१	−३	−५	−४	−२	−१
नागौर	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+९	+९	+९	+९	+९
पाली	+१०	+१२	+१२	+१२	+११	+१०	+८	+७	+७	+७	+९	+१०
प्रतापगढ़	+८	+१०	+११	+१०	+८	+५	+२	००	−१	−१	+२	+५
राजसमंद	+१०	+१२	+१२	+११	+९	+८	+५	+४	+३	+४	+६	+८
सवाईमाधोपुर	−१	००	−१	−१	−२	−३	−४	−४	−४	−४	−२	−१
सीकर	+२	+२	+१	+१	+१	+	+३	+३	+३	+४	+५	+४
सिरोही	+९	+११	+१२	+११	+१०	+८	+५	+५	+३	+३	+८	+६
टोंक	+१	+२	+१	+१	००	−१	−२	−२	−२	−२	००	+१
उदयपुर	+१०	+१३	+१४	+१३	+१२	+१०	+७	+५	+३	+३	+५	+८

नगर \ लग्न	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुम्भ मि.	मीन मि.
अम्बाला	+७	+११	+१२	+११	+८	+५	+१	−२	−४	−३	०	+३
अमृतसर	−१	−४	−८	−६	−३	+२	+६	+१०	+१४	+१३	+१०	+६
अलीगढ़	−१०	−१०	−१०	−१०	−९	−९	−९	−८	−७	−८	−३	−२
अयोध्या	−२६	−२५	−२४	−२४	−२६	−२५	−२५	−२५	−२५	−२६	−२६	−२६
अहमदाबाद	+१६	+२०	+२१	+२१	+१७	+१४	+१०	+६	+५	+५	+८	+१२
आगरा	−९	−९	−९	−९	−९	−९	−९	−९	−९	−८	−७	−८
अकोला	−१	+५	+८	−११	−८	−८	−८	−८	−८	−८	−८	−९
इंदोर	+३	+७	+९	+८	+५	००	−४	−७	−१०	−९	−४	००
इलाहाबाद	−२३	−२१	−२१	−२१	−२२	−२४	−२६	−२६	−२८	−२७	−२५	−२४
उज्जैन	+३	+७	+८	+७	+४	+१	−३	−६	−८	−७	−३	००
गुड़गाँव	−६	−७	−८	−८	−७	−५	−४	−२	−२	−२	−२	−३
गौरखपुर	−३१	−३०	−३०	−३०	−३०	−३०	−३१	−३१	−३०	−३१	−३०	−३१
गोहाटी	−५९	−५८	−५८	−५८	−५९	−६०	−६१	−६१	−६१	−६१	−६०	−६०
गोवा	+१६	+२६	+३१	+२९	+२१	+१०	+२	−१०	−१५	−१३	−४	+१
चण्डीगढ़	−८	−११	−१३	−१२	−९	−५	००	+३	+४	+३	+१	−३
जलगाँव	+४	+९	+११	+१०	+७	+४	−३	+७	+९	+९	+४	+१
डिब्रुगढ़	−७३	−७३	−७४	−७४	−७३	−७३	−७३	−७२	−७१	−७२	−७१	−७२
नासिक	+१३	+१९	+२२	+२१	+१६	+९	+२	−३	−७	−५	+१	+८
पटना	−३७	−३५	−३५	−३५	−३६	−३७	−३९	−३९	−४०	−४०	−३८	−३७
बड़ौदा	+१४	+१८	+२०	+२०	+१६	+११	+६	+३	००	+१	+६	+११
भोपाल	−४	०	+१	+१	−२	−६	−९	−११	−१५	−१४	−१०	−७
रतलाम	+६	+९	+१०	+१०	+७	+४	००	−३	−५	−४	००	+३
लखनऊ	−२१	−२०	−२०	−२०	−२०	−२१	−२१	−२०	−२१	−२१	−२०	−२०
वाराणसी	−२८	−२६	−२६	−२६	−२६	−२८	−३०	−३२	−३३	−३३	−३१	−३०
सूरत	+१६	+२२	+२४	+२३	+१९	+१३	+७	+३	००	+१	+६	+१२
दिल्ली	−७	−८	−९	−८	−७	−४	−४	−२	−१	−२	−४	−५
कोलकाता	−४७	−४३	−४०	−४१	−४४	−५०	−५४	−५७	−६०	−५९	−५६	−५०
चेन्नई	−७	+४	+१०	+८	−२	−१६	−२८	−४०	−४६	−४४	−३३	−२०
मुम्बई	+१८	+२५	+२९	+२७	+२१	+१३	+६	−१	−५	−४	+३	+११
बैंगलुरु	+३	+१५	+२०	+१८	+८	−४	−१७	−२९	−३४	−३२	−२२	−१०
देहरादून	−८	−११	−१३	−१३	−१०	−६	−३	+२	+३	+२	+१	+६

राजस्थान के प्रमुख नगरों की अक्षांश–रेखांश सारिणी

स्टैण्डर्ड अन्तर = स्थानीय देशी टाइम व स्टैण्डर्ड टाइप का अन्तर **देशान्तर = जयपुर से पूर्व में (+) तथा पश्चिम में (–)**

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
अजमेर				
अजमेर	२६–२७	७४–४०	३१–२०	–४/३६
किशनगढ़	२६–३४	७४–५२	३०–३२	–३/४८
केकड़ी	२५–५६	७५–१०	२९–२०	–२/३६
टॉडगढ़	२५–४२	७४–००	३४–००	–७/१६
नसीराबाद	२६–१८	७४–४४	३१–०४	–४/२०
पीसांगन	२६–२५	७४–२३	३२–२८	–५/४४
पुष्कर	२६–३०	७४–२३	३१–४८	–५/०४
ब्यावर	२६–०६	७४–२०	३२–४०	–५/५६
बांदनवाडा	२६–०९	७४–४२	३१–१२	–४/२८
विजयनगर	२५–५५	७४–३८	३१–२८	–४/४४
भिनाय	२६–०४	७४–४७	३०–५२	–४/०८
मसूदा	२६–०५	७४–३०	३२–००	–५/१६
रामसर	२६–१३	७४–५३	३०–२८	–३/४४
रूपनगर	२६–४८	७४–५४	३०–२४	–३/४०
सरवाड़	२६–०२	७४–५५	३०–२०	–३/३६
अलवर				
अलवर	२७–३४	७६–३८	२३–२८	–३/१६
कटूमर	२७–१८	७७–०२	२१–५२	–४/५२
किशनगढ़बास	२७–४५	७६–४९	२२–४४	–४/००
खैरथल	२७–४८	७६–३६	२३–३६	–३/०८
खेड़ली	२७–१२	७६–०६	२१–३६	–५/०८
कोटकासिम	२७–०३	७६–४४	२३–०४	–३/४०
तिजारा	२७–५५	७६–५०	२२–४०	–४/०४
थानागाजी	२७–२५	७६–१९	२४–४४	–२/००
बहरोड	२७–५४	७६–१८	२४–४८	–१/५६
बानसूर	२७–४१	७६–२२	२४–३२	–२/१२
मण्डावर	२७–५३	७६–३६	२३–३६	–३/०८
राजगढ़	२७–१५	७६–३८	२३–२८	–३/१६
रामगढ़	२७–३६	७६–४९	२२–४४	–४/००
लक्ष्मणगढ़	२७–२३	७६–५२	२२–३२	–४/१२

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
उदयपुर				
उदयपुर	२४–३५	७३–४१	३५–१६	–८/३२
एकलिंगजी	२४–४३	७३–४६	३४–५६	–८/१२
ऋषभदेव	२४–०४	७३–४२	३५–१२	–८/२८
कोटड़ा	२४–२०	७३–१०	३७–२०	–१०/३६
खेरवाड़ा	२४–००	७३–३५	३५–४०	–८/५६
गोगुंदा	२४–४४	७३–३५	३५–४०	–८/५६
झाड़ोल	२४–२४	७३–२९	३६–०६	–९/२२
धरियाबाद	२४–०७	७४–२७	३२–१२	–५/२८
परसाद	२४–११	७३–४२	३५–१२	–८/२८
फतेहनगर	२४–४८	७४–०६	३३–३६	–६/५२
भिंडर	२४–३०	७४–१२	३३–१२	–६/२८
मावली	२४–४७	७३–५८	३४–०८	–७/२४
मोदरी	२४–२५	७३–२५	३६–२०	–९/३६
वल्लभनगर	२४–४१	७४–०२	३३–५२	–७/०८
सलुम्बर	२४–०६	७४–०६	३३–३६	–६/५२
सराड़ा	२४–०८	७३–४८	३४–४८	–८/०४
करौली				
करनपुर	२६–१२	७६–५४	२२–२४	+४/२०
करौली	२६–३०	७७–०१	२१–५६	+४/४८
केलादेवी	२६–२१	७६–५४	२२–२४	+४/२०
टोड़ाभीम	२६–५४	७६–४८	२२–४८	+३/५६
नादौती	२६–४३	७६–४४	२३–०४	+३/४०
लसारड़ा	२६–०९	७७–०२	२१–५२	+४/५२
शहर	२६–३६	७६–४४	२३–०४	+३/४०
श्रीमहावीरजी	२६–४१	७६–५९	२२–०४	+४/४०
सपोटरा	२६–१७	७६–४५	२३–००	+३/४४
हिण्डौनसिटी	२६–४३	७७–०१	२१–५६	+४/४८

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
कोटा				
इन्द्रगढ़	२५–४४	७६–१२	२५–१२	+१/३२
कोटा	२५–१०	७५–५२	२६–३२	+०/१२
दीगोद	२५–१३	७४–०५	२५–४०	+१/०४
पीपलदाकला	२५–३३	७६–२७	२४–१२	+२/३२
मुकंदरा	२४–४९	७५–५९	२६–०४	+०/४०
रामगंज मंडी	२४–३६	७५–५४	२६–२४	+०/२०
रावतभाटा	२४–४५	७५–३५	२७–४०	–०/५६
सांगोद	२४–५५	७६–२१	२४–३६	+२/०८
गंगानगर				
अनूपगढ़	२९–०७	७३–०६	३७–३६	–१०/५२
केसरीसिंहपुर	२९–५८	७३–४५	३५–००	–८/१६
गंगानगर	२९–४९	७३–५०	३४–४०	–७/५६
गजसिंहपुर	२९–४२	७३–२४	३६–२४	–९/४०
घड़साना	२८–५९	७३–०१	३७–५६	–११/१२
जेतसर	२९–२२	७३–२३	३६–२८	–९/४४
पदमपुर	२९–३५	७३–३१	३५–५६	–९/१२
रामसिंहपुर	२९–१०	७३–२४	३६–२४	–९/४०
रायसिंह नगर	२९–३२	७३–२७	३६–१२	–९/२८
श्रीविजयनगर	२९–१३	७३–३०	३६–००	–९/१६
करणपुर	२९–५०	७३–५०	३४–४४	–८/००
सरूपसर	२९–२२	७३–३७	३५–३२	–८/४८
सूरतगढ़	२९–१९	७३–५७	३४–१२	–७/२८
हिन्दूमलकोट	३०–००	७३–५४	३४–२४	–७/४०
चित्तौड़गढ़				
अरनोद	२३–५३	७४–४९	३०–४४	–४/००
कपासन	२४–५४	७४–१८	३२–४८	–६/०४
गंगरार	२५–०३	७४–३८	३१–२८	–४/४४
चित्तौड़गढ़	२४–५४	७४–४०	३१–२०	–४/३६

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
छोटीसादड़ी	२४–२४	७४–४२	३१–१२	–४/२८
डूंगरा	२४–२९	७४–२१	३२–३६	–५/५२
देवलिया	२४–०३	७४–४३	३१–०८	–४/२४
निम्बाहेड़ा	२४–३७	७४–४५	३१–००	–४/१६
प्रतापगढ़	२४–०२	७४–४७	३०–५२	–४/०८
पिपलोदा	२३–३५	७४–५०	३०–४०	–३/५६
बड़ी सादड़ी	२४–२५	७४–२८	३२–०८	–५/२४
बेगूं	२४–५७	७५–०६	२९–३६	–२/५२
भदेसर	२४–३९	७४–३१	३१–५६	–५/१२
भैसरोड़गढ़	२४–४८	७५–३३	२७–४८	–१/०४
राशमी	२५–०४	७४–२३	३२–२८	–५/४४
चूरू				
चूरू	२८–१९	७५–०१	२९–५६	–३/१२
छापर	२७–५०	७४–२५	३२–२०	–५/३६
जोधासर	२८–०७	७३–५०	३४–४०	–७/५६
तारानगर	२८–४२	७५–०६	२९–३६	–२/५२
पुनरासर	२८–१२	७३–४७	३४–५२	–८/०८
बीदासर	२७–५०	७४–२५	३२–२०	–५/३६
रतनगढ़	२८–०५	७४–३७	३१–३२	–४/४८
रतननगर	२८–१३	७४–५७	३०–१२	–३/२८
राजगढ़	२८–३९	७५–२६	२८–१६	–१/३२
राजावास	२८–३४	७४–४४	३१–०४	–४/२०
राजलदेसर	२८–०२	७४–२८	३२–०८	–५/२४
रेनी	२८–४१	७५–०५	२९–४०	–२/५६
श्रीडूंगरगढ़	२८–०६	७४–०१	३३–५६	–७/२
सरदारशहर	२८–२७	७४–३०	३२–००	–५/१६
सार्दुलपुर	२८–३८	७५–२४	२८–२४	–१/४०
सालासर	२७–४३	७४–४०	३१–२०	–४/३६
साहवा	२८–५३	७४–४९	३०–४४	–४/००
सुजानगढ़	२७–४२	७४–३०	३२–००	–४/१६

❀ राजस्थान के प्रमुख नगरों की अक्षांश-रेखांश सारिणी ❀

स्टैण्डर्ड अन्तर = स्थानीय देशी टाइम व स्टैण्डर्ड टाइप का अन्तर **देशान्तर = जयपुर से पूर्व में (+) तथा पश्चिम में (-)**

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
जयपुर				
अचरोल	२७-०२	७५-५४	२६-२४	+०/२०
आमेर	२६-५९	७५-५२	२६-३२	+०/१२
आसलपुर	२६-५५	७५-२६	२८-१६	-१/३२
कालाडेरा	२७-११	७५-३८	२७-२८	-०/४४
कोटपूतली	२७-४२	७६-१२	२५-१२	+१/३२
चाकसू	२६-३६	७५-५९	२६-०४	+०/४०
चौमूँ	२७-०८	७५-४७	२६-५२	-०/०८
जयपुर	२६-५५	७५-४९	२६-४४	०/००
जमवारामगढ़	२७-०१	७६-०१	२५-५६	+०/४८
जोबनेर	२६-५७	७५-२४	२८-२४	-१/४०
दूदू	२६-४१	७५-१६	२८-५६	-२/१२
नरैना	२६-५०	७५-११	२९-१६	-२/३२
पावटा	२७-३७	७६-०६	२५-३६	+१/०८
फागी	२६-३४	७५-३५	२७-४०	-०/५६
फुलेरा	२६-५२	७५-१६	२८-५६	-२/१२
बस्सी	२६-५२	७६-०३	२५-४८	+०/५६
बगरू	२६-४७	७५-३३	२७-४८	-१/०४
बैराठ	२७-२७	७६-११	२५-१६	+१/२८
महलां	२६-५०	७५-३०	२८-००	-१/१६
वनस्थली	२६-२३	७५-५०	२६-४०	+०/०४
शाहपुरा	२७-२३	७५-५८	२६-०८	+०/३६
सामोद	२७-१२	७५-४८	२६-४८	-०/०४
सांगानेर	२६-४९	७५-४६	२६-५६	-०/१२
सांभरलेक	२६-५४	७५-१२	२९-१२	-२/२८
जालोर				
आहोर	२५-२३	७२-५२	३८-३२	-११/४८
जसवंतपुरा	२४-४९	७२-३०	४०-००	-१३/१६
जालोर	२५-२२	७२-३८	३९-२८	-१२/४४
बागरा	२५-१५	७२-२८	४०-०८	-१३/२४
बाकरा	२५-१२	७२-३२	३९-५२	-१३/०८
भीनमाल	२५-००	७२-१९	४०-४४	-१४/००
मोरसीम	२५-०९	७१-५४	४२-२४	-१५/४०
रानीवाड़ा	२४-४४	७२-१४	४१-०४	-१४/२०
सांचोर	२४-४५	७१-५०	४२-४०	-१५/५६
सीयाणा	२५-०९	७२-४०	३९-२०	-१२/२६
जैसलमेर				
किशनगढ़	२७-५२	७०-३४	४७-४४	-२१/००
खुड़ी	२६-४२	७०-४०	४७-२०	-२०/३६
खुईआला	२७-०६	७०-२५	४८-२०	-२१/३६
घोटारू	२७-१८	७०-०४	४९-४४	-२३/००
चांदन	२६-५९	७१-१९	४४-४४	-१८/००
जैसलमेर	२६-५५	७०-५४	४६-२४	-१९/४०
तनोट	२७-४८	७०-२१	४८-३६	-२१/५२
देओरा	२६-३०	७०-४२	४७-१२	-२०/२८
देधा	२६-५१	७०-४२	४७-१२	-२०/२८
देवीकोट	२६-४२	७१-१२	४५-१२	-१८/२८
नाचना	२७-२९	७१-४५	४३-००	-१६/१६
पोकरण	२६-५७	७१-५६	४२-१६	-१५/३२
मियालजर	२६-१८	७०-२२	४८-३२	-२१/४८
रामगढ़	२७-२२	७०-३०	४८-००	-२१/१६
रामदेवरा	२७-००	७१-५२	४२-३२	-१५/४८
लाठी	२७-०३	७१-३०	४४-००	-१७/१६
शाहगढ़	२७-०८	६९-५३	५०-२८	-२३/४४
श्रीभादरिया	२७-०५	७१-४१	४३-१६	-१६/३२
श्रीमोहनगढ़	२७-१८	७१-१५	४५-००	-१८/१६
सम	२६-५०	७०-३१	४७-५६	-२१/१२
जोधपुर				
आसोप	२६-४८	७३-३५	३५-४०	-८/५६
ओसियां	२६-४३	७२-५५	३८-२०	-११/३६
जोधपुर	२६-१७	७३-०३	३७-४८	-११/०४
देचूं	२६-४७	७२-२०	४०-४०	-१३/५६
पीपाड़ रोड़	२६-२७	७३-२७	३६-१२	-९/२८
फलौदी	२७-०९	७२-२२	४०-३२	-१३/४८
बाप	२७-२२	७२-२२	४०-३२	-१३/४८
बालेसर	२६-२२	७२-३१	३९-५६	-१३/१२
बिलाड़ा	२६-१०	७३-४२	३५-१२	-८/२८
भोपालगढ़	२६-३९	७३-३०	३६-००	-९/१६
भोजासर	२७-००	७२-५०	३८-४०	-११/५६
मथानियां	२६-३१	७२-५९	३८-०४	-११/२०
लूनी	२६-००	७२-५२	३८-३२	-११/४८
लोहावट	२६-५९	७२-३६	३९-३६	-१२/५२
शेरगढ़	२६-२५	७२-२१	४०-३६	-१३/५२
झालावाड़				
अकलेरा	२४-२३	७६-३६	२३-३६	+३/०८
खानपुर	२४-४४	७६-२३	२४-२८	+२/१६
गंगधार	२३-५७	७५-३८	२७-२८	-०/४४
झालावाड़	२४-३६	७६-०९	२५-२४	+१/२०
झालरापाटन	२४-३३	७६-१०	२५-२०	+१/२४
देवगढ़	२३-५९	७५-४५	२७-००	-०/१६
पचपहाड़	२४-२४	७५-४७	२६-५२	-०/०८
पिड़ावा	३४-१३	७६-०३	२५-४८	+०/५६
भवानीमण्डी	२४-२४	७५-४८	२६-४८	-०/०४
भवानीगंज	२४-२६	७५-४९	२६-४४	+०/००
मण्डावर	२४-३५	७६-१५	२५-००	+१/४४
मनोहरथाना	२४-१४	७६-४८	२२-४८	+३/५६
झुंझुनू				
अलसीसर	२८-१९	७५-१८	२८-४८	-२/०४
उदयपुरवाटी	२७-४३	७५-२९	२८-०४	-१/२०
खेतड़ी	२८-००	७५-४८	२६-४८	-०/०४
गुढ़ा	२७-५३	७५-३६	२७-३६	-०/५२
चिड़ावा	२८-१५	७५-३८	२७-२८	-०/४४
झुंझुनू	२८-०५	७५-२५	२८-२०	-१/३६
नवलगढ़	२७-५१	७५-१८	२८-४८	-२/०४
पिलानी	२८-२३	७५-३५	२७-४०	-०/५६
बगड़	२८-१२	७५-३०	२८-००	-१/१६
बबाई	२७-५३	७५-४५	२७-००	-०/१६
बिसाऊ	२८-१३	७५-०५	२९-४०	-२/५६
मण्डावा	२८-०३	७५-१०	२९-२०	-२/३६
मलसीसर	२८-२४	७५-१४	२९-०४	-२/२०
मुकुन्दगढ़	२७-५७	७५-१५	२९-००	-२/१६
सूरजगढ़	२८-१९	७५-४५	२७-००	-०/१६
टोंक				
अलीगढ़	२५-५८	७६-०७	२५-३२	+१/१२
उनियारा	२५-५४	७६-०६	२५-३६	+१/०८
गंगापुर	२६-२९	७६-३६	२३-३६	+३/०८
गनवर	२६-३०	७५-१५	२९-००	-२/१६
चाँदसेन	२६-१९	७५-२९	२८-०४	-१/२०
टोंक	२६-११	७५-५०	२६-४०	+०/०४
टोडारायसिंह	२६-००	७५-२९	२८-०४	-१/२०
डिग्गी	२६-२२	७५-२७	२८-१२	-१/२८
देवली	२५-४६	७५-२५	२८-२०	-१/३६
नगर (देवली)	२५-५५	७५-५०	२६-४०	+०/०४
नगर (मालपुरा)	२६-२७	७५-१४	२९-०४	-२/२०
निवाई	२६-२४	७५-५४	२६-२४	+०/२०
पचेवर	२६-२९	७५-२०	२८-४०	-१/५६
बम्बोर	२६-०९	७५-५२	२६-३२	+०/१२
मण्डावर	२६-१०	७५-५९	२६-०४	+०/४०
मालपुरा	२६-१८	७५-२५	२८-२०	-१/३६
लाम्बाहरिसिंह	२६-१६	७५-१०	२९-२०	-२/३६

राजस्थान के प्रमुख नगरों की अक्षांश–रेखांश सारिणी

स्टैण्डर्ड अन्तर = स्थानीय देशी टाइम व स्टैण्डर्ड टाइप का अन्तर

देशान्तर = जयपुर से पूर्व में (+) तथा पश्चिम में (–)

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
डूंगरपुर				
आसपुर	२३–५८	७४–०३	३३–४८	–७/०४
गलियाकोट	२३–३१	७४–०१	३३–५६	–७/१२
डूंगरपुर	२३–५०	७३–४३	३५–०८	–८/२४
पीठ	२३–३१	७३–४५	३५–००	–८/१६
बीछीवाड़ा	२३–५१	७३–३२	३५–५२	–९/०८
रामगढ़	२३–५८	७३–५७	३४–१२	–७/२८
सागवाड़ा	२३–४१	७४–०१	३३–५६	–७/१२
सिमलवाड़ा	२३–३४	७३–४७	३४–५२	–८/०८
दौसा				
गीजगढ़	२६–५६	७६–३८	२३–२८	+३/१६
दौसा	२६–५३	७६–२०	२४–४०	+२/०४
बसवा	२७–०६	७६–३२	२३–५२	+२/५२
बांदीकुई	२७–०३	७६–३४	२३–४४	+३/००
महवा	२७–०३	७६–५६	२२–१६	+४/२८
लालसोट	२६–३४	७६–२३	२४–२८	+२/१६
सिकराय	२६–५५	७६–४०	२३–०४	+३/४०
धौलपुर				
धौलपुर	२६–४२	७७–५३	१८–२८	+८/१६
बसईनवाब	२६–५५	७७–४८	१८–४८	+७/५६
बसेड़ी	२६–४५	७७–२३	२०–२८	+६/१६
बाड़ी	२६–३९	७७–३६	१९–३६	+७/०८
राजाखेड़ा	२६–५४	७८–१२	१७–१२	+९/३२
वनसराय	२६–४१	७७–२५	२०–२०	+६/२४
सरमथुरा	२६–३१	७७–२२	२०–३२	+६/१२
नागौर				
कुचामनसिटी	२७–०९	७४–५२	३०–३२	–३/४८
कुचेरा	२७–००	७३–५४	३४–२४	–७/४०
खाटू	२७–०७	७४–१७	३२–५२	–६/०८
गोटन	२६–३९	७३–४४	३५–०४	–८/२०
चान्दरूप	२६–५७	७४–२१	३२–३६	–५/५२
जसवन्तगढ़	२७–४९	७४–२७	३२–१२	–५/२८
जायल	२७–१५	७४–१२	३३–१२	–६/२८
डीडवाना	२७–२४	७४–३४	३१–४४	–५/००
डेगाना	२६–५०	७४–१८	३२–४८	–६/०४
नागौर	२७–११	७३–४४	३५–०४	–८/२०
नावां	२७–००	७५–०१	२९–५६	–३/१२
परबतसर	२६–५२	७४–४५	३१–००	–४/१६
पीपासर	२७–३३	७३–४१	३५–१६	–८/३२
बालसमन्द	२७–३६	७४–२८	३२–०८	–५/२४
बोरावड़	२७–०१	७४–३६	३१–३६	–४/५२
भदवासी	२७–१२	७३–४०	३५–२०	–८/३६
मकराना	२७–०३	७४–४३	३१–०८	–४/२४
मेड़ता सिटी	२६–३९	७४–०६	३३–३६	–६/५२
मेड़ता रोड़	२६–४३	७३–५५	३४–२०	–७/३६
लाडनू	२७–३९	७४–२३	३२–२८	–५/४४
पाली				
अटबड़ा	२६–०५	७३–४५	३५–००	–८/१६
ऐरनपुर	२५–०९	७३–०६	३७–३६	–१०/५२
खारची	२५–४३	७३–३६	३५–३६	–८/५२
घाणेराव	२५–१५	७३–३३	३५–४८	–९/०४
चंदावल	२६–००	७३–५०	३४–४०	–७/५६
जवाईबांध	२५–०४	७३–१५	३७–००	–१०/१६
जैतारन	२६–१३	७३–५६	३४–१६	–७/३२
टाडगढ़	२५–४२	७४–००	३४–००	–७/१६
देसुरी	२५–२०	७३–३७	३५–३२	–८/४८
निम्बाज	२६–१०	७४–००	३४–००	–७/१६
पाली	२५–४६	७३–२०	३६–४०	–९/५६
फालना	२५–१२	७३–१२	३७–१२	–१०/२८
बर	२६–०६	७४–०८	३३–२८	–६/४४
बाली	२५–०५	७३–१८	३६–४८	–१०/०४
बीजापुर	२५–०७	७३–१०	३७–२०	–१०/३६
भंवर	२५–४१	७३–०६	३७–३६	–१०/५२
मुण्डारा	२५–१२	७३–२३	३६–२८	–९/४४
राणावास	२५–३९	७३–४५	३५–००	–८/१६
रानी	२५–२२	७३–१८	३६–४८	–१०/०४
रायपुर	२६–०३	७४–०२	३३–५२	–७/०८
रोहट	२५–५७	७३–०८	३७–२८	–१०/४४
सरदारसमंद	२५–५८	७३–२३	३६–२८	–९/४४
साण्डेराव	२५–१८	७३–१०	३७–२०	–१/३६
सोजत	२६–५६	७२–४२	३५–१२	–८/२८
सेंदडा	२६–०५	७४–११	३३–१६	–६/३२
बाड़मेर				
आसोतरा	२५–४६	७२–१९	४०–४४	–१४/००
गडरा रोड	२५–४०	७०–३७	४७–३२	–२०/४८
गागरिया	२५–४४	७०–४५	४७–००	–२०/१६
गिराव	२६–०२	७०–३५	४७–४०	–२०/५६
गुढ़ामालानी	२५–१२	७१–४८	४२–४८	–१६/००४
गूंगा	२६–१५	७१–१३	४५–०८	–१८/२४
चौहटन	२५–२९	७१–०४	४५–४४	–१९/००
जसोल	३५–५०	७२–१४	४१–०४	–१४/२०
धोरीमना	२५–१२	७१–२५	४४–२०	–१७/३६
पचपदरा	२५–५५	७२–२१	४०–३६	–१३/५२
पाटोदी	२६–०५	७२–१६	४०–५६	–१४/१२
पुजांसर	२५–०९	७१–०२	४५–५२	–१९/०८
बनियासांडधोरा	२५–५३	७१–४१	४३–१६	–१६/३२
बंबोरा	२५–१९	७१–१८	४४–४८	–१८/०४
बाड़मेर	२५–४६	७१–२३	४४–२८	–१७/४४
बालोतरा	२५–४९	७२–१४	४१–०४	–१४/२०
बायतू	२५–५५	७१–४६	४२–५६	–१६/१२
मूनबाव	२५–४३	७०–१५	४९–००	–२२/१६
रामसर	२५–४५	७०–५४	४६–२४	–१९/४०
रावतसर	२५–३२	७०–५६	४६–१६	–१९/३२
शिव	२६–११	७१–१५	४५–००	–१८/१६
समदड़ी	२५–४९	७२–३५	३९–४०	–१२/५६
सिन्दरी	२५–३३	७१–५५	४२–२०	–१५/३६
सिवाना	२५–३६	७२–२७	४२–१२	–१३/२८
बारां				
अटरू	२४–५०	७६–३३	२३–४८	+२/५६
किशनगंज	२५–०६	७६–३९	२३–२४	+३/२०
छबड़ा	२४–४०	७६–५०	२२–४०	+४/०४
छीपाबड़ोद	२४–३६	७६–४३	२३–०८	+३/३६
थानाकस्बा	२५–१३	७७–२०	२०–४०	+६/०४
देवरी	२५–२२	७७–१२	२१–१२	+५/३२
बारां	२५–०६	७६–३१	२३–५६	+२/४८
भंवरगढ़	२५–०६	७६–५०	२२–४०	+४/०४
मनोहरथाना	२५–२२	७६–०९	२५–२४	+१/२०
मांगरोल	२५–२०	७६–३०	२४–००	+२/४४
शाहबाद	२५–२०	७७–०८	२१–२८	+५/१६
बांसवाड़ा				
अर्थुना	२३–३५	७४–०६	३३–३६	–६/५२
कलिंजरा	२३–२१	७४–१८	३२–४८	–६/०४
कुशलगढ़	२३–१०	७४–२७	३२–१२	–५/२८
खांटू	२३–२८	७४–२२	३२–३२	–५/४८
गढ़ी	२३–३६	७४–०८	३३–२८	–६/४४
घाटोल	२३–४६	७४–२४	३२–२४	–५/४०
दानपुर	२३–३२	७४–४४	३१–०४	–४/२०
परतापुर	२३–३६	७४–१०	३३–२०	–६/३६
बागीदौरा	२३–२५	७४–१८	३२–४८	–६/०४
बांसवाड़ा	२३–३०	७४–२४	३२–२४	–५/४०
लौहरिया	२३–४८	७४–१५	३३–००	–६/१६

राजस्थान के प्रमुख नगरों की अक्षांश-रेखांश सारिणी

स्टैण्डर्ड अन्तर = स्थानीय देशी टाइम व स्टैण्डर्ड टाइप का अन्तर

देशान्तर = जयपुर से पूर्व में (+) तथा पश्चिम में (−)

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
बीकानेर				
ककराला	२८–३८	७२–५९	३८–०४	–११/२०
कपुरीसर	२८–३९	७३–५६	३४–१६	–७/३२
कालू	२८–२२	७३–५२	३४–३२	–७/४८
कोलायत	२७–५०	७२–५७	३८–१२	–११/२८
गजनेर	२७–५८	७३–०४	३७–४४	–११/००
चारणवाला	२७–५३	७२–१०	४१–२०	–१४/३६
चीलो	२७–२२	७३–३०	३६–००	–९/१६
छतरगढ़	२८–४१	७३–०८	३७–२८	–१०/४४
जसरासर	२७–४५	७३–५०	३४–४०	–७/५६
जोधासर	२८–०७	७३–४०	३५–२०	–८/३६
दांतौर	२८–२६	७२–३१	३९–५६	–१३/१२
देशनोक	२७–४८	७३–२१	३६–३६	–९/५२
नापासर	२७–५८	७३–३३	३५–४८	–९/०४
नोखा	२७–३५	७३–२९	३६–०४	–९/२०
नोरंगदेसर	२८–०५	७३–३३	३५–४८	–९/०४
पूगल	२८–३१	७३–४७	३८–५२	–१२/०८
बज्जू	२७–५९	७३–३०	३६–००	–९/१६
बीकानेर	२८–०१	७३–२०	३४–४०	–९/५६
महाजन	२८–४८	७३–५३	३४–२८	–७/४४
लूणकसर	२८–३०	७३–४५	३५–००	–८/१६
धौलपुर				
धौलपुर	२५–२९	७५–५१	२६–३६	+०/०८
बसईनवाब	२५–२४	७६–०६	२५–३६	+१/०८
बसेड़ी	२५–१८	७५–५६	२६–१६	+०/२८
बाड़ी	२५–२७	७५–४०	२७–२०	–०/३६
राजाखेड़ा	२५–४५	७५–५७	२६–१२	+०/३२
वनसराय	२५–३६	७६–१२	२५–१२	+१/३२
सरमथुरा	२५–३४	७५–३०	२८–००	–१/१६
भरतपुर				
कामां	२७–४०	७७–१६	२०–५६	+५/४८
कुम्हेर	२७–१९	७७–२३	२०–२८	+६/१६
डीग	२७–२८	७७–२०	२०–४०	+६/०४
नदबई	२७–१४	७७–१२	२१–१२	+५/३२
नगर	२७–२६	७७–०६	२१–३६	+५/०८
पहाड़ी	२७–४१	७७–०६	२१–३६	+५/०८
बयाना	२६–५४	७७–१७	२०–५२	+५/५२
बल्लभगढ़	२६–५८	७७–०६	२१–३६	+५/०८
भरतपुर	२७–१५	७७–३०	२०–००	+६/४४
रूपवास	२७–००	७७–३५	१९–४०	+७/०४
वैर	२७–००	७७–१२	२१–१२	+५/३२
सिकरीपट्टी	२७–२५	७७–०६	२१–३६	+५/०८
हेलाना	२७–०७	७७–१०	२१–२०	+५/२४
भीलवाड़ा				
आकोला	२५–१७	७४–५३	३०–२८	–३/४४
आसीन्द	२५–४२	७४–१८	३२–४८	–६/०४
कोटड़ी	२५–२५	७४–५४	३०–२४	–३/४०
खमनोर	२५–४६	७४–४७	३०–५२	–४/०८
गंगापुर	२५–१४	७४–१७	३३–००	–६/१६
गुलाबपुरा	२५–५४	७४–४२	३१–१२	–४/२८
जहाजपुर	२५–३८	७५–१८	२८–४८	–२/०४
पाटन	२५–४५	७४–२३	३२–२८	–५/४४
पुरा	२५–१९	७४–३३	३१–४८	–५/०४
बनेड़ा	२५–३१	७४–४०	३१–२०	–४/३६
बिजोलिया	२५–१०	७५–२०	२८–४०	–१/५६
बिगोद	२५–१५	७५–००	३०–००	–३/१६
भीलवाड़ा	२५–२१	७४–२०	३१–२०	–४/३६
मांडल	२५–२७	७४–३६	३१–३६	–४/५२
माण्डलगढ़	२५–१२	७५–२४	२९–२४	–०/४०
रायपुर	२५–२५	७४–२४	३३–२४	–६/४०
लसाड़िया	२५–२२	७४–१२	३२–१२	–५/२८
शंभूगढ़	२५–५०	७४–२०	३२–२०	–५/३६
शाहपुरा	२५–४०	७४–५०	३०–४०	–३/५६
सहाड़ा	२५–१२	७४–१६	३२–५६	–६/१२
हुरड़ा	२५–५५	७४–४४	३१–०४	–४/२०
राजसमन्द				
आमेट	२५–२०	७३–५९	३४–०४	–७/२०
कांकरोली	२५–०४	७३–५४	३४–२४	–७/४०
कुम्भलगढ़	२५–०९	७४–३६	३५–३६	–८/५२
खेतश्वर	२५–५८	७३–५१	३४–३६	–७/५२
देवगढ़	२५–३०	७३–५४	३४–२४	–७/४०
नाथद्वारा	२५–५६	७३–५०	३४–४०	–७/५६
भीम	२५–३९	७४–०९	३३–२४	–६/४०
राजसमन्द	२५–०४	७३–५२	३४–३२	–७/४८
रेलमगरा	२५–०३	७४–१२	३३–१२	–६/२८
राजसमन्द				
खण्डार	२६–०१	७६–३७	२३–३२	+३/१२
गंगापुर	२६–२९	७६–४५	२३–००	+३/४४
बोनली	२६–१९	७६–१४	२५–०४	+१/४०
भगवतगढ़	२६–०९	७७–१५	२१–००	+५/४४
मलारनाडूंगर	२६–१७	७६–२९	२४–०४	+२/४०
रणथम्भौर	२६–०२	७६–२७	२४–१२	+२/३२
वामनवास	२६–३३	७६–३३	२३–४८	+२/५६
सवाईमाधोपुर	२५–५८	७६–२५	२४–२०	+२/२४
सिरोही				
अनादरा	२४–३५	७२–३८	३९–२८	–१२/४४
आबूरोड	२४–२९	७२–४७	३८–५२	–१२/०८
आबू	२४–३७	७२–४५	३९–००	–१२/१६
पिंडवाड़ा	२४–४९	७३–०५	३७–४०	–१०/५६
रेवदर	२४–३७	७२–३१	३९–५६	–१३/१२
शिवगंज	२५–०९	७३–०४	३७–४४	–११/००
स्वरूपगंज	२४–४०	७२–५६	३८–१६	–११/३२
सिरोही	२४–५३	७२–५४	३८–२४	–११/४०
सीकर				
अजीतगढ़	२७–२५	७५–४८	२६–४८	–०/०४
कावंट	२७–३६	७५–४२	२७–१२	–०/२८
कोछोर	२७–२६	७५–१६	२८–५६	–२/१२
खण्डेला	२७–३७	७५–३२	२७–५२	–१/०८
खाटूश्यामजी	२७–२२	७५–२५	२८–२०	–१/३६
दातारामगढ़	२७–१५	७५–१२	२९–१२	–२/२८
दातां	२७–१८	७५–१२	२९–१२	–२/२८
धोद	२७–२४	७५–०१	२९–५६	–३/१२
नीम का थाना	२७–४४	७५–४८	२६–४८	–०/०४
पलसाना	२७–२५	७५–२६	२८–१६	–१/३२
पाटन	२७–४८	७५–५९	२६–०४	–०/४०
फतेहपुर	२८–००	७५–००	३०–००	–३/१६
रामगढ़	२८–१०	७४–५९	३०–०४	–३/२०
रींगस	२७–२१	७५–३४	२७–४४	–१/००
लक्ष्मणगढ़	२७–४५	७५–०४	२९–४४	–३/००
लोसल	२७–२६	७४–५४	३०–२४	–३/४०
श्रीमाधोपुर	२७–२५	७५–३६	२७–३६	–०/५२
सीकर	२७–३६	७५–०९	२९–२४	–२/४०
हनुमानगढ़				
कानसर	२८–५८	७४–२५	३२–२०	–५/३६
टीबी	२९–३३	७४–३१	३१–५६	–५/१२
नोहर	२९–११	७४–४६	३०–५६	–४/१२
पल्लू	२८–५६	७४–१३	३३–०८	–६/२४
पीलबिंगा	२९–३६	७४–०६	३३–३६	–६/५२
बड़ोपल	२९–२१	७४–०५	३३–४०	–६/५६
भादरा	२९–०५	७५–१५	२९–००	–२/१६
मलसीसर	२८–४५	७५–०५	२९–४०	–२/५६
रावतसर	२९–१६	७४–२४	३२–२४	–५/४०
संगरिया	२९–४८	७४–२५	३२–२०	–५/३६
सादुलशहर	२९–५४	७४–१२	३३–१२	–६/२८
हनुमानगढ़	२९–३५	७४–२१	३२–३६	–५/५२

भारत के प्रमुख नगरों की अक्षांश–रेखांश सारिणी

स्टैण्डर्ड अन्तर = स्थानीय देशी टाइम व स्टैण्डर्ड टाइप का अन्तर **देशान्तर = जयपुर से पूर्व में (+) तथा पश्चिम में (–)**

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.	नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.	नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.	नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
अकोला	२०–४३	७७–०२	–२१/५२	+४/५२	कारगिल	३०–३०	७६–१३	–२५/०८	+१/३६	जलपाईगुड़ी	२६–३२	८८–४४	+२४/५६	+५१/४०	पटियाला	३०–२२	७६–२५	–२४/२०	+२/२४
अल्मोड़ा	२९–३७	७९–४०	–११/२०	+१५/२४	कालका	३०–४७	७६–५७	–२२/१२	+४/३२	जलगांव	२१–०१	७५–३९	–२७/२४	–०/४०	पठानकोट	३२–१८	७५–४२	–२७/१२	–०/२८
अलीगढ़	२७–५४	७८–०५	–१७/४०	+९/०४	कालीकट	११–१५	७५–४५	–२७/००	–०/१६	जमशेदपुर	२२–५०	८६–१०	+१४/४०	+४१/२४	पणजी	१५–४१	७३–१०	–३७/२०	–१०/३६
अयोध्या	२६–४८	८२–१४	–१/०४	+२५/४०	काशी	२५–२०	८३–००	+२/००	+२८/४४	जामनगर	२२–२७	७०–०५	–४९/४०	–२२/५६	प्रयागराज	२५–२५	८१–५३	–२/२८	+२४/१६
अमेठी	२६–०८	८१–४८	–२/४८	+२३/५६	कुरूक्षेत्र	३०–००	७६–४८	–२२/४८	+३/५६	जालंधर	३१–१९	७५–३५	–२७/४०	–०/५६	पाण्डिचेरी	११–५६	७९–४८	–१०/४८	+१५/५६
अम्बाला	३०–२१	७६–५२	–२२/३२	+४/१२	कुभकोणम	१०–५८	७९–२३	–१२/२८	+१४/१६	जींद	२९–१९	७६–२३	–२४/२८	+२/१६	पानीपत	२९–२७	७६–५९	–२२/०४	+४/४०
अगरतला	२३–४९	९१–१८	+३५/१२	+६१/५६	कूचबिहार	२६–२०	८९–२५	+२७/४०	+५४/२४	जूनागढ़	२१–३२	७०–२७	–४८/१२	–२१/२८	पालनपुर	२४–११	७२–२७	–४०/१२	–१३/२८
अहमदाबाद	२३–०२	७२–२७	–३९/३२	–१२/४८	कोचीन	१०–००	७६–१५	–२५/००	+१/४४	जोनपुर	२५–४३	८२–४३	+०/५२	+२७/३६	पीलीभीत	२८–४२	७९–४८	–१०/४८	+१५/५६
आइजोल	२३–४५	९२–४५	+४१/००	+६७/४४	कोल्हापुर	१६–४१	७४–१३	–३३/०८	–६/२४	झाँसी	२५–२६	७८–३४	–१५/४४	+११/००	पालमपुर	३२–०७	७६–३२	–२३/५२	+२/५२
अमृतसल	३१–३७	७४–५३	–३०/२८	–३/४४	कोहिमा	२५–४१	९४–००	+४६/००	+७२/४४	टाटानगर	२४–४६	८६–१३	+१४/५२	+४१/३६	पूर्णिया	२५–४९	८७–३१	+२०/०४	+४६/४८
आगरा	२७–११	७८–०२	–१७/५२	+८/५२	कोन्नूर	११–२०	७६–४८	–२२/४८	+३/५६	टूंड़ला जं.	२७–१३	७८–१३	–१७/०८	+९/३६	पुरूलिया	२३–२०	८६–२४	+१५/३६	+४०/२०
आरा (बि.)	२५–३६	८४–४२	+८/४८	+३५/३२	खण्डवा	२१–५०	७६–२०	–२४/४०	+२/०४	टेहरी गढ़वाल	३०–२३	७८–३०	–१६/००	+१०/४४	पूंछ	३३–५१	७४–०८	–३३/२८	–६/४४
आदिलाबाद	१९–४०	७८–३१	–१५/५६	+१०/४८	खण्डाला	१८–४५	७३–२२	–३६/३२	–९/४८	डिबरूगढ़	२७–२९	९४–५६	+४९/४४	+७६/२८	पूना	१८–३१	७३–५२	–३४/३२	–७/४८
आसनसोल–बि.	२४–१४	८७–१५	+१९/००	+४५/४४	खंभांत	२२–१९	७२–३६	–३९/३६	–१२/५२	तिरूपति	१३–४०	७९–२०	–१२/४०	+१४/०४	पोर्टब्लेयर	११–५०	९२–४६	+४१/०४	+६७/४८
इटानगर	२६–५४	९३–३६	–४४/२४	+७१/०८	खडगपुर	२२–२०	८७–१९	+१९/१६	+४६/००	त्रिचनापल्ली	१०–५०	७८–४६	–१४/५६	+११/४८	पोरबन्दर	२१–३८	६९–३६	–५१/३६	–२४/५२
इन्दौर	२२–४३	७५–५३	–२६/२८	+०/१६	खेडब्रह्म	२४–०३	७३–०४	–३७/४४	–११/००	त्रिवेन्द्रम	८–३०	७६–५७	–२२/१२	+४/३२	फतेहपुरसिकरी	२७–०६	७७–४०	–१९/२०	+७/२४
इम्फाल	२४–५४	९३–५४	+४५/३६	+७२/२०	गुड़गांव	२८–२७	७७–०४	–२१/४४	+५/००	दरभंगा	२६–१०	८५–५५	+१३/४०	+४०/२४	फरीदकोट	३०–४०	७४–४५	–३१/००	–४/१६
इलाहाबाद	२५–२८	८१–५२	–२/३२	+२४/१२	गयाजी	२४–४८	८५–०१	+१०/०४	+३६/४८	दार्जिलिंग	२७–०३	८८–१७	+२३/०८	+४९/५२	फिरोजपुर	३०–५७	७४–३६	–३१/३६	–४/५२
एलोरा	२०–०५	७५–१०	–२९/२०	–२/३६	ग्वालियर	२६–१४	७८–१०	–१७/२०	+९/२४	दिल्ली	२८–३८	७७–१४	–२१/०४	+५/४०	फिरोजाबाद	२७–०९	७८–२४	–१६/२४	+१०/२०
उज्जैन	२३–११	७५–४४	–२७/०४	–०/२०	गंगटोक	२७–२०	८८–२५	+२३/४०	+५०/२४	दिसपुर	२६–२०	९२–१०	+३८/४०	+६५/२४	फैजाबाद	२६–४७	८२–०८	–१/२८	+२५/१६
उधमपुर	३२–५५	७५–०७	–२९/३२	–२/४८	गुना	२४–४०	७७–३०	–२०/००	+६/४४	देवप्रयाग	३०–०९	७८–३७	–१५/३२	+११/१२	बक्सर	२५–३४	८३–५९	+५/५६	+३२/४०
ऊँझा	२३–४७	७२–२४	–४०/२४	–१३/४०	गुरूदासपुर	३२–०३	७५–२७	–२८/१२	–१/२८	देहरादून	३०–१९	७८–०४	–१७/४४	+९/००	बंगलौर	१२–५८	७७–३५	–१९/४०	+७/०४
औरंगाबाद महा.	१९–५२	७५–१९	–२८/४४	–२/००	गौहाटी	२६–११	९१–४५	+३७/००	+६३/४४	दौलताबाद	१९–५७	७५–१२	–२९/१२	–२/२८	बड़ौदा	२२–१८	७३–१२	–३७/१२	–१०/२८
औरंगाबाद बि.	२४–४५	८४–२५	+७/४०	+३४/२४	गौरखपुर	२६–४७	८३–२४	+३/३६	+३०/२०	धनबाद	२३–४७	८६–३०	+१६/००	+४२/४४	बद्रीनाथ कर्ना.	१५–३४	७६–५२	–२२/३२	+४/१२
कन्नौज	२७–०२	७९–५८	–१०/०८	+१६/३६	गोवा	१५–२५	७३–४७	–३४/५२	–८/०८	धारवाड़	१५–२८	७५–०२	–२९/५२	–३/०८	बद्रीनाथ उ.प्र.	३०–४४	७९–३२	–११/५२	+१४/५२
कन्याकुमारी	०८–०४	७७–३६	–१९/३६	+७/०८	चण्डीगढ़	३०–४०	७६–५२	–२२/३२	+४/१२	नडियावाद	२२–४१	७२–५२	–३८/३२	–११/४८	बरेली	२८–२२	७९–२४	–१२/२४	+१४/२०
करनाल	२९–४२	७७–०२	–२१/५२	+४/५२	चिकमंगलूर	१३–१९	७५–४७	–२६/५२	–०/०८	नागपुर	२१–०९	७९–०६	–१३/३६	+१३/०८	बलिया	२४–४४	८४–०९	+६/३६	+३३/२०
कलकत्ता	२२–३५	८८–२४	+२३/३६	+५०/२०	चित्रकूट	२५–१२	८०–५४	–६/२४	+२०/२०	नारनौल	२८–०२	७६–०७	–२५/३२	+१/१२	बहराइच	२७–३४	८१–३७	–३/३२	+२३/१२
कटक	२०–२८	८५–५४	+१३/३६	+४०/२०	चेरापूंजी	२५–१६	९१–४५	+३७/००	+६३/४४	नासिक	२१–००	७३–४७	–३४/५२	–८/०८	बागलकोट	१६–१२	७५–४२	–२७/१२	–०/२८
कटनी	२३–५०	८०–२३	–८/२८	+१८/१६	छपरा (बी)	२५–४७	८४–४७	+०९/०८	+३५/५२	नीमच	२४–२८	७४–५१	–३०/३६	–३/५२	बाराबंकी	२६–५६	८१–१०	–५/२०	+२१/२४
कोण्णूर	११–५१	७५–२१	–२८/३६	–१/५२	छतपरपुर	२४–५५	७९–३६	–११/३६	+१५/०८	नैनीताल	२९–२५	७९–२७	–१२/१२	–१४/३२	बारामूला	३४–१०	७४–२०	–३२/४०	–५/५६
कांगड़ा	३२–०९	७६–१८	–२४/४८	+१/५६	जगन्नाथपुरी	१९–४६	८५–५०	+१३/२०	+४०/०४	पंचमढ़ी	२२–३०	७८–२२	–१६/३२	–१०/१२	बिलासपुर म.प्र.	२२–०५	८२–१०	–१/२०	+२२/२४
कांचिपुरम्	१२–५१	७९–५३	–१०/२८	+१६/१६	जबलपुर	२३–१८	७९–५८	–१०/०८	+१६/३६	पंचकूला	३०–४२	७६–५२	–२२/३२	+४/१२	बिलासपुर हि.प्र.	३१–१९	७६–५०	–२२/४०	+४/०४
कानपुर	२६–२७	८०–२१	–८/३६	+१८/०८	जम्मूकश्मीर	३२–४४	७४–५४	–३०/२४	–३/४०	पटना	२५–३७	८५–१३	+१०/५२	+३७/३६	बीजापुर	१६–५०	७५–४२	–२७/१२	–०/२८

भारत के प्रमुख नगरों की अक्षांश-रेखांश सारिणी

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
बुलन्दशहर	२८–२४	७७–५२	–१८/३२	+८/१२
बेलगाँव	१५–५५	७४–३१	–३१/५६	–५/१२
बेल्लारी	१५–११	७६–५४	–२२/२४	+४/२०
भटिंडा	३०–११	७४–५७	–३०/१२	–३/२८
भंडारा	२१–१०	७९–४०	–११/२०	+१५/२४
भद्रावती	१३–५२	७५–४०	–२७/२०	–०/३६
भागलपुर	२५–१३	८६–५९	+१७/५६	+४४/४०
भावनगर	२१–४७	७२–१०	+४१/२०	–१४/३६
भिवानी	२८–४८	७६–०८	–२५/२८	+१/१६
भुवनेश्वर	२०–५४	८५–५२	+१३/२८	+४०/१२
भोपाल	२३–१६	७७–२३	–२०/२८	+६/१६
मणिपुर	२४–२०	९३–५८	+४५/५२	+७२/३६
मथुरा	२७–२८	७७–४१	–१९/१६	+७/२८
मद्रास	१३–०५	८०–१७	–८/५२	+१७/५२
मुदरई	९–५५	७८–०७	–१७/३२	+९/१२
महेन्द्रगढ़	२८–१७	७६–०९	–२५/२४	+१/२०
मुम्बई	१८–५५	७२–५०	–३८/४०	–११/५६
मुगलसराय	२५–१७	८३–११	+२/४४	+२९/२८
मुजफ्फरपुर	२६–०७	८५–२७	+११/४८	+३८/३२
मुजफ्फरनगर	२९–३०	७७–४४	–१९/०४	+७/४०
मुजफ्फराबाद	३४–३३	७३–२७	–३६/१२	–९/२८
मेघालय	२५–५७	९२–००	+३८/००	+६४/४४
मेरठ	२९–०१	७७–४५	–१९/००	+७/४४
मैसूर	१२–२९	७६–४०	–२३/२०	+३/२४
मैनपुरी	२७–१३	७९–०२	–१३/५२	+१२/५२
रत्नागिरी	१६–५९	७३–१९	–३६/४४	–१०/००
रतलाम	२३–१९	७५–०६	–२९/४८	–३/०४
राँची	२३–२०	८५–२०	+११/२०	+३८/०४
राजकोट	२२–१८	७०–५०	–४६/४०	–१९/५६
रामेश्वरम्	९–१७	७९–१८	–१२/४८	+१३/५६
रायगढ़	२१–५८	८३–२६	+३/४४	+३०/२८
रायपुर	२१–१५	८१–३८	–३/२८	+२३/१६
रायबरेली	२६–१४	८१–१३	–५/०८	+२१/३६
रेवाड़ी जं.	२८–१२	७६–४०	–२३/२०	+३/२४

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
रोपड़	३०–५७	७६–३०	–२४/००	+२/४४
रोहतक	२८–५४	७६–३८	–२३/२८	+३/१६
लखनऊ	२६–५१	८०–५९	–६/०४	+२०/४०
लद्दाख	३३–००	७८–४८	–१४/४८	+११/५६
लुधियाना	३०–५५	७५–५३	–२६/२८	+०/१६
लेह	३४–१०	७७–४०	–१९/२०	+७/२४
लोहारू	२८–२६	७५–४७	–२६/५२	–०/०८
वर्धा	२०–४५	७८–३९	–१५/२४	+११/२०
वाराणसी	२५–२०	८३–००	+२/००	+२८/४४
विजयवाड़ा	१६–३०	८०–३६	–७/३६	+१९/०८
विशाखपट्टनम्	१७–४२	८३–१८	+३/१२	+२९/५६
शाजापुर	२३–२४	७६–१४	–२५/०४	+१/४०
शाहदरा	२८–४०	७७–२०	–२०/४०	+६/०४
शिमला	३१–०६	७७–१०	–२१/२०	+५/२४
शिलांग	२५–३४	९१–५४	+३७/३६	+६४/२०
श्रीनगर	३४–०६	७४–५१	–३०/३६	–३/५२
सिरसा	२९–३२	७५–०४	–२९/४४	–३/००
सिंहभूम	२२–२४	८५–३०	+१२/००	+३८/४४
सीतापुर	२७–३६	८०–४०	–७/२०	+१९/२४
सीतामढ़ी	२६–३५	८५–२९	+११/५६	+३८/४०
सूरत	२१–१२	७२–५०	–३८/४०	–११/५६
सेलम	११–३९	७८–१५	–१७/००	+९/४४
सोनपुर	२०–५१	८३–५५	+५/४०	+३२/२४
सोमनाथ	२१–०१	७०–२६	–४८/१६	–२१/३२
सोनीपत	२८–५९	७७–०१	–२१/५६	+४/४८
सोलन	३०–५५	७७–०९	–२१/२४	+५/२०
सोलापुर	१७–४०	७४–४८	–३०/४८	–४/०४
हजारीबाग	२४–००	८५–२३	+११/३२	+३८/१६
हरिद्वार	२९–५८	७८–१३	–१७/०८	+९/३६
हापुड़	२८–४३	७७–५०	–१८/४०	+८/०४
हिसार	२९–१४	७५–४४	–२७/०४	–०/२०
हुबली	१५–२०	७५–१२	–२९/१२	–२/२८
हैदराबाद	१७–२७	७८–३०	–१६/००	+१०/४४
होशंगाबाद	२२–४६	७७–४३	–१९/०८	+७/३६
होशियारपुर	३१–३२	७५–५५	–२६/२०	+०/२४

विश्व के कुछ देशों के अक्षांश आदि

विदेशी नगर का नाम कोष्ठक में देश का नाम	अक्षांश उत्तर / दक्षिण	रेखांश पूर्व / पश्चिम	क्षेत्रीय स्टैट से स्थानीय समयान्तर मि. सै.	ग्रीनवीच समय से क्षेत्रीय स्टे अन्तर घ. मि.	भारतीय स्टेट से क्षेत्रीय स्टैट समयान्तर घ. मि.
अंकारा (तुर्किस्तान)	३९–५२ उ.	३२–५९ पू.	+११/५६	+२/००	–३/३०
अर्जेन्टाइना (द.अमेरिका)	२६–१२ द.	६४–४५ प.	+४१/००	–५/००	–१०/३०
कोटावा (कनाडा)	४५–२६ उ.	७५–४१ प.	–२/४४	–५/००	–१०/३०
अदन (एडन)	१३–२५ उ.	४५–०० पू.	+००/००	+३/००	–२/३०
अमन (जोर्डन)	३१–५७ उ.	३५–५७ पू.	+२३/४८	+२/००	–३/३०
एडन (एडन)	१२–५८ उ.	४५–०१ पू.	+०/०४	+३/००	–२/३०
एथेन्स (ग्रीस)	३७–५९ उ.	२३–२० पू.	–२६/४०	+२/००	–३/३०
करांची (पाकिस्तान)	२४–५१ उ.	६७–०० पू.	–३२/००	+५/००	–०/३०
काबुल (अफगानिस्तान)	३४–३१ उ.	६९–१२ पू.	+६/४८	+४/३०	–१/००
काहिरा (मिश्र)	३०–०१ उ.	३१–१३ पू.	+४/५२	+२/००	–३/३०
ग्रीनविच (इंग्लैण्ड)	५१–२९ उ.	०–०० पू.	+०/००	+०/००	–५/३०
जकार्ता (इण्डोनेशिया)	७–५७ द.	११०–२० पू.	–८/४०	+७/३०	+२/००
जिनेवा (स्विट्जरलैण्ड)	४६–१२ उ.	६–०९ पू.	–३५/२४	+१/००	–४/००
टोकियो (जापान)	३५–३९ उ.	१३९–४५ पू.	+१९/००	+९/००	+३/३०
ढाका (बांग्लादेश)	२३–४३ उ.	९०–२५ पू.	+१/४०	+६/००	+०/३०
तेहरान (इरान)	३५–४४ उ.	५१–२७ पू.	–४/१२	+३/३०	–२/००
न्यूयार्क (अमेरिका)	४०–४३ उ.	७४–०० पू.	+४/००	–५/००	–१०/३०
पीकिंग (चीन)	३९–५० उ.	११६–२० पू.	–१४/४०	+८/००	+२/३०
पेरिस (फ्रांस)	४८–५० उ.	२–२० पू.	–५०/४०	+१/००	–४/३०
बगदाद (ईराक)	३३–१८ उ.	४४–३० पू.	–२/००	+३/००	–२/३०
बर्लिन (प. जर्मनी)	५२–३२ उ.	१३–२४ पू.	–६/२४	+१/००	–४/३०
बेलग्रेड (यूगोस्लाविया)	४४–५० उ.	२०–३७ पू.	+२२/२८	+१/००	–४/३०
बैंकाक (स्याम)	१३–४५ उ.	१००–३० पू.	–१८/००	+७/००	+१/३०
ब्रुसेल्स (बेल्जियम)	५०–५१ उ.	४–२१ प.	–४२/३६	+१/००	–४/३०
मैड्रिड (स्पेन)	४०–२५ उ.	३–४५ प.	–७५/००	+१/००	–४/३०
मास्को (रूस)	५५–४५ उ.	३७–३५ पू.	–२९/४०	+३/००	–२/३०
मांडले (बर्मा)	२२–०० उ.	९६–०५ पू.	–५/४०	+६/३०	+१/००
मैक्सिको (मैक्सिको)	१९–२५ उ.	९९–१७ प.	–३७/०८	–६/३०	–११/३०
रियाद (सऊदी अरब)	२४–५० उ.	४६–१८ पू.	+५/१२	+३/००	–२/३०
रोम (इटली)	४१–४५ उ.	१२–२९ पू.	–१०/०४	+१/००	–४/३०
रंगून (बर्मा)	१६–४८ उ.	९६–०८ पू.	–५/२८	+६/३०	+१/००
लंदन (इंग्लैण्ड)	५१–३२ उ.	०–०५ प.	–०/२०	–०/००	–५/३०
ल्हासा (तिब्बत)	२९–४० उ.	९१–०८ पू.	+३४/३२	+५/३०	+०/००
वाशिंगटन (अमेरिका)	३८–५३ उ.	७७–०४ प.	–८/१६	–५/००	–१०/३०
वैलिंगटन (न्यूजीलैण्ड)	४१–१९ द.	१७४–४६ पू.	–२०/५६	+१२/००	+६/३०
सिंगापुर (मलाया)	१–१६ उ.	१०३–४७ पू.	–३४/५२	+७/३०	+२/००
सियोल (द. कोरिया)	३७–४० उ.	१२७–०० पू.	–३२/००	+९/००	+३/३०
हांगकांग (हांगकांग)	२२–१८ उ.	११४–१० पू.	–२३/२०	+८/००	+२/३०

※ शास्त्रानुसार व्रतोपवासादि में सूर्यसिद्धान्तपक्षीय पञ्चाङ्गों की ग्राह्यता ※

पण्डित गङ्गाधर पाठक 'वेदाद्याचार्य', वृन्दावन (मुख्याचार्य- श्रीरामजन्मभूमिशिलापूजन, अयोध्या)

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

साङ्गोपाङ्गाय वेदाय ज्योतिषां ज्योतिषे नमः ।
सूर्याय सूर्यसिद्धान्तज्योतिर्विद्भ्यो नमो नमः ।।

व्रतोत्सवादि सम्पादनार्थ एवं यज्ञोपनयनादि धार्मिककृत्यों के लिये सम्यक् कालपरिज्ञानार्थ तिथि-वार-नक्षत्र-योग-करणात्मक विशुद्ध **आर्षपञ्चाङ्ग** की आवश्यकता होती है। परन्तु विविध भारतीय पञ्चाङ्गों में भी व्रतोपवासादि के वैमत्य से प्रायः सर्वत्र कोलाहलश्रवण होता रहता है, एतदर्थ किञ्चिच्चिन्तन अपेक्षित है।

सम्प्रति कई प्रकार के पञ्चाङ्ग उपलब्ध होते हैं- **सूर्यसिद्धान्तपक्षीय, आर्यसिद्धान्तपक्षीय (वाक्यविधि), ब्राह्मसिद्धान्तपक्षीय, दृग्गणितपक्षीय** आदि। मकरन्द-ग्रहलाघवादि के भेद से सूर्यसिद्धान्तपक्षीय पञ्चाङ्ग का भी वैविध्य है तथा चित्रा-रैवतादिपक्षीय गणित के भेद से दृक्पञ्चाङ्ग भी कई प्रकार के हैं। कोई सूर्य-चन्द्रान्तरलक्षण से तथा कोई कलालक्षणभेद से तिथियों का द्वैविध्य वर्णन करते हैं।

भारत में ही कुछ पञ्चाङ्ग चैत्रशुक्लप्रतिपत् से, कुछ आषाढ़शुक्लप्रतिपत् से, कुछ श्रावणकृष्णप्रतिपत् से और कुछ कार्तिकशुक्लप्रतिपत् से प्रारम्भ किये जाते हैं। कोई विक्रमसंवत्, कोई शकसंवत् तथा कोई अन्य स्थानीय लौकिकसंवत् का उपयोग करते हैं। कहीं पूर्णिमान्त तो कहीं अमान्तमास ग्रहण किये जाते हैं। सम्प्रदायभेदवाले पञ्चाङ्गों की तो इयत्ता ही नहीं है। परिणामतः भारत के सार्वभौम व्रतोत्सवादि भी दो या तीन विभिन्न दिनों में सम्पादित होते हैं तथा कुछ कृत्य तो पूर्णिमान्त-अमान्तमास के भेद से पक्ष-मासपर्यन्त भी आगे- पीछे हो जाते हैं।

वर्त्तमान में आर्षज्ञानविहीन नवीनों के द्वारा दृक्पञ्चाङ्ग के रूप में एक बड़ी समस्या खड़ी कर दी गई है, जो नाविकपञ्चाङ्ग (नॉटिकल एल्मानैक) पर आधारित है, जहाँ ग्रहण जैसी घटनायें मांसचक्षुर्दृष्ट ही मान्य हैं।

शास्त्रनिष्ठ प्रामाणिक सनातनियों के लिये तो दृक्पञ्चाङ्ग सर्वथा अग्राह्य है। प्रत्येक धार्मिककृत्य के संकल्प में कल्प मन्वन्तर आदि का स्मरण करने के लिये प्राचीन आर्षसिद्धान्तपक्षीय पञ्चाङ्गों की ही उपयोगिता सिद्ध होती है।

दृग्गणितके पक्षपाती विद्वान् तिथ्यादिनिर्णय में इस पद्धति की उपयोगिता सिद्ध करते हैं-
यस्मिन्पक्षे यत्र काले येन दृग्गणितैक्यम् । दृश्यते तेन पक्षेण कुर्यात्तिथ्यादिनिर्णयम् ।।

परन्तु महान् दैवज्ञ ब्रह्मगुप्त तो पैर से भी दृग्गणितके पादमात्र का स्पर्श नहीं करना चाहते-
प्रतिदिवसविसंवादात्तिथिकरणर्क्षदिवसमासानाम्। ग्रहणग्रहयोगादिषु पादं पादेन कः स्पृशेत् ।।

ग्रहलाघवकार ने भी **'सौरार्कोऽपि..'** में इसपर विचार किया है।

स्थूल दृग्गणित का भी जनक भारतीय ज्योतिषशास्त्र ही है। मल्लारि एवं सूर्यसिद्धान्तादि ने भी किञ्चित् कार्यभेद से दृक्पक्ष को ग्रहण किया है। भास्कराचार्य ने-
यात्राविवाहोत्सवजातकादौ खेटैः स्फुटैरेव फलस्फुटत्वम् ।
स्यात्प्रोच्यते तेन नभश्चराणां स्फुटक्रिया दृग्गणितैककृद्या ।।

यद्यपि कतिपयमतेन सूर्यसिद्धान्त का बीजोपनयनाध्याय सूर्यांशोक्तपक्षया प्रक्षिप्त है, तथापि मयरचित सूर्यसिद्धान्त में इसे अप्रक्षिप्त और यात्रादि में प्रशस्त माना गया है-
कालेन दृक्समो यः स्यात्ततो बीजक्रियोच्यते ।
बीजं विशेषसिद्धान्तरहस्यं परमं स्फुटम् । यात्रापाणिग्रहादीनां कार्याणां शुभसिद्धिदम् ।।

वराहमिहिर ने भी बीजसंस्कार को ग्रहण किया है-
पूर्वाचार्यमतेभ्यो यद्यच्छ्रेष्ठं लघु स्फुटं बीजम् । तत्तदिहाविकलमहरहरस्म्यभ्युद्यतो वक्तुम् ।।

मकरन्दानुसारि पञ्चाङ्गों में भी बीजसंस्कार किया जाता है, जिसपर विचारकों ने नित्य-नैमित्तिक-काम्यकर्मों में तत्तत् सिद्धान्तों के ग्रहण की चर्चा की है। इसका स्पष्टीकरण करते हुए महामहोपाध्याय श्रीसुधाकर द्विवेदी ने ब्रह्मगुप्त के तन्त्रभ्रंश की व्याख्या में कहा है कि जिस तन्त्र में दृग्गणित इष्ट है, वहीं वह आदरणीय है-
''यात्राविवाहोत्सवजातकादौ खेटैः स्फुटैरेव फलस्फुटत्वम्''
इति विषयविषयेण वाक्येन दृग्गणितैक्यकृत्स्फुटक्रिया
यात्राविवाहोत्सरवविशेषविषयेष्वेव ग्राह्या, न तु धर्मशास्त्रोपयोगितिथ्यानयने ।

अर्थात् कदाचित् यात्रा - विवाहोत्सव आदि में ही दृग्गणित की ग्राह्यता हो सकती है, धर्मशास्त्रोपयोगी तिथ्यानयन में नहीं। **इस विवेचन से सर्वविध धर्मकृत्यों में दृग्गणित की ग्राह्यता निरस्त हो गई।**

सिद्धान्ततत्त्वविवेककार ने भी अदृष्ट फलसिद्ध्यर्थ सूर्योक्तप्रमाण की ही श्रुतिवद् ग्राह्यता सिद्ध की है- **अदृष्टफलसिद्ध्यर्थं निर्बीजार्कोक्तमेव हि ।**
प्रमाणं श्रुतिवद् ग्राह्यं कर्मानुष्ठानतत्परैः ।।

शाकल्य संहिता में भी **'दृक् सिद्धा नेष्यते तिथिः'** से यही कहा है।

कालनिर्णय में भी **'तिथिनक्षत्रयोगानयनेऽबीजसंस्कृतो ग्राह्यः'** से यही बात कही है ।

भास्कराचार्यादि ने दृग्गणित को स्थूल और पुलस्त्य-वसिष्ठ-गर्गादि मुनिप्रणीत गणित को सूक्ष्म कहा है- **स्थूलं कृतं भानयनं यदेतज्ज्योतिर्विदां संव्यवहारहेतोः ।**
सूक्ष्मं प्रवक्ष्येऽथ मुनिप्रणीतं विवाहयात्रादिफलप्रसिद्ध्यै ।।

वासनाकार ने भी यही पक्ष ग्रहण किया है-

स्थूलं लोकव्यवहारमात्रम्, यात्राविवाहादावपि सम्यक्फलसिद्ध्यर्थं मुनिप्रणीतं सूक्ष्ममेव ग्राह्यम्।

कथञ्चित् लोकव्यवहारमात्र के लिये ग्रहणास्तोदयादि में आवश्यकतानुसार स्थूल दृक्पक्ष को ग्रहण किया जा सकता है, परन्तु यात्रा-विवाहादि में भी अज्ञातज्ञापक सम्यक् फल की सिद्धि के लिये प्रत्यक्षानुमानागम्य और 'अज्ञातज्ञापकं शास्त्रम्'' के और अनुसार शास्त्रैकसमधिगम्य मुनिप्रोक्त सिद्धान्तपक्षीय सूक्ष्म गणित को ही ग्रहण करना उत्तम पक्ष है।

नृसिंह दैवज्ञ ने भी- **'भास्कराचार्याणामयमेवाशयः'** से इसी पक्ष को ग्रहण किया है।

तिथिस्वरूपनिर्णय में तो स्पष्ट घोषणा की गई है-

ततो धर्मशास्त्राद्युपयुक्ततिथिसाधनं नक्षत्रयोगकरणज्ञानं चोक्तम् ।

मत्स्यमहापुराण में **भगवान् वेदव्यास** का स्पष्ट उद्घोष है-

नैष शक्यः परिज्ञातुं याथातथ्येन केनचित् ।
गतागतं मनुष्येण ज्योतिषां मांसचक्षुषा ।।

ग्रहों की सूक्ष्म गति मनुष्यों के द्वारा अदृश्य है, एतदर्थ प्रत्यक्षातिरिक्त सभी व्रत-पर्व श्रौत-स्मार्तानुष्ठानार्थ आर्षसिद्धान्त की ही उपयोगिता सिद्ध है। **सनातनधर्मानुयायियों के सभी सिद्धान्त श्रुति-स्मृति-पुराण-तन्त्रागमादिमूलक ही हैं, इसलिये अनार्ष दृग्गणितमात्रदुराग्रही प्रत्यक्षवादियों के द्वारा धर्म-व्रताद्यनुष्ठानों का सूक्ष्म निर्णय असम्भव है।** ऋषिगण तपो-योगजसामर्थ्यातिशय के कारण अतीन्द्रियार्थदर्शी होते थे, यन्त्रादिनिर्माण-प्रयोगकुशल वैज्ञानिक सूक्ष्मज्ञ होते हुए भी ऋतम्भराप्रज्ञायुक्त अदृश्यदर्शी ऋषि नहीं हो सकते।

विष्णुधर्मोत्तर, कालार्क, ज्योतिःसिद्धान्तसंग्रह, लल्ल, मुञ्जाल, श्रीनिवासीय धर्मशास्त्रादि में उपर्युक्त आर्ष पक्ष ही सम्मानित है।

स्कन्दमहापुराण के कलिमाहात्म्य में तो सिद्धान्तपक्ष के त्याग का भयावह फल और सिद्धान्तपक्ष के ग्रहण का सुखद फल भी बता दिया गया है-

दृक्सिद्धखेटग्रहसाधितासु कुर्वन्ति केचित्तिथिषु प्रमादात् ।
श्राद्धादिकं तत्पितृशापतस्ते पुण्यक्षयं दुर्गतिमाप्नुवन्ति ।।
तथापि सन्तो बहवोऽत्र धार्मिकाः पुरातनाचारमथाजहन्तः ।
सूर्यांशजोक्तार्जितकाल एव कर्माणि कुर्वन्ति सुखं लभन्ते ।।

भगवान् वेदव्यास पुनः दृढ़ता से सूर्यसिद्धान्तारिक्त सिद्धान्त को अग्राह्य बताते हैं-

सौरोपनिषदेवाद्या कल्पे त्वस्मिन् सनातनी ।
यामादित्यः स्वयं प्राह मयाय परिपृच्छते ।।
कालज्ञानं तु तत्सिद्धं विशुद्धं नान्यदुच्यते ।
तद्विरुद्धं तु यत्सर्वमपरिग्राह्यमेव तत् ।।

जब दृग्गणितवादियों के यहाँ भी चित्रा- रेवत्यादि के भेद से अयनांशभेद होता है तब तदनुसार पञ्चाङ्गीय तिथ्यादिकों में भी भेद का होना स्वाभाविक ही है। ऐसी परिस्थिति में निर्दुष्ट शास्त्रीय आर्षपक्ष का आश्रय ग्रहणकर एक स्थिर पञ्चाङ्गनिर्माण की महती उपयोगिता सिद्ध होती है।

सम्प्रति दक्षिणदेश में भी तिथि-नक्षत्र-मुहूर्त्तादि वैदिक विषयों में आर्षग्रन्थसिद्ध ग्रहस्थिति को ही ग्रहण करने की परम्परा है और ग्रहण तथा जातकर्मादि लौकिक विषयों में दृक्सिद्ध ग्रहों को ग्रहण किया जाता है।

सम्पूर्ण ज्योतिर्मण्डल गतिशील है, कालान्तर में अथवा देशभेदादि से गत्यादिमूलक गणितीय भेद हो सकते हैं; परन्तु कालान्तर या देशभेदादि के भी गणितीय भेद की उपपत्ति मुनिप्रणीत सूक्ष्म ज्योतिषीय सिद्धान्तों में ही बता दी गई है। इसलिये नवीन-प्राचीन का मानापमान अत्यन्त उपहासास्पद है। सम्प्रदायादि के भेद से भी व्रत-पर्वों का भेद दूषण नहीं, अपितु अमुकामुक सम्प्रदायनिष्ठों के लिये सम्मान्य है।

सभी प्राचीन आप्त आचार्यों और 'कुम्भतिथ्यादिनिर्णयः' आदि धर्मशास्त्रपरक ज्योतिषीय निबन्धों में सर्वभूतहृदय धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाभाग आदि ने भी समारोहपूर्वक इसी पक्ष को समुद्घाटित किया है। मौलिक अध्येताओं के लिये भारतीय सूक्ष्म गणितसिद्धान्त सर्वकाल में मान्य रहेंगे।

वर्तमान में अतिशय चिन्ता का विषय यह है कि विविधपक्षीय पञ्चाङ्गनिर्माण के लिये अगणित सॉफ्टवेयर्स उपलब्ध हैं, जिनसे अल्प प्रयास में ही पञ्चाङ्ग तो तैयार हो जाते हैं; परन्तु पञ्चाङ्गों का सम्मान व्रतोपवासादि के मीमांसामूलक धर्मशास्त्रीय सूक्ष्मविचार से ही होता है, जिसकी सम्पूर्ति पारम्परिक शास्त्राध्ययन के अत्यन्ताभाव में प्रायः नहीं हो रही है।

अन्यों के लिये भी, विशेषतः ज्योतिषियों के लिये तो सन्ध्या-गायत्र्यादि के माध्यम से ज्योतिःशास्त्र के प्रथम प्रवर्त्तक भगवान् श्रीसूर्यनारायण की सम्यक् उपासना अत्यन्त अनिवार्य है। मैं पञ्चाङ्गविभाग के प्रबुद्ध प्रणेतृमण्डल एवं प्रयोक्ताओं से इस कमी को सदा के लिये दूर करने की महती अपेक्षा रखता हूँ और पञ्चाङ्ग किसी सम्प्रदायविशेष में बँधकर अल्पोपयोगी न हो जाय, इसका भी ध्यान रखना आवश्यक है।

श्रीनिम्बार्कपरिषद्, जयपुर, राजस्थान के द्वारा **सूर्यसिद्धान्तपक्षीय श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्गम्** का प्रकाशन शास्त्रवादी सनातनियों के लिये अत्यन्त ही हर्ष का विषय है । सर्वेश्वर भगवान् श्रीराधाकृष्ण की अहैतुकी कृपा से पञ्चाङ्गप्रणेता, पञ्चाङ्गप्रयोक्ता एवं एतत्सिद्धान्तानुसार व्रत पर्वादि श्रौत-स्मार्तधर्मों के अनुष्ठाता के दृश्यादृश्य लोकद्वय मङ्गलमय हों।

शुभमिति दिक्

पश्चिम का मनगढ़न्त तर्क-

भारतीय ज्योतिष का विश्व को क्या योगदान है इस विषय पर आज विश्व मौन है। यह अवश्य सुनने को मिलेगा कि ग्रीस या मध्यपूर्व से प्राचीन भारत ने अमुक-अमुक बातें सीखीं। वराहमिहिर द्वारा विदेशी शब्दों की चर्चा तथा यवनाचार्यों की प्रशंसा और रोमक सिद्धान्त के हवाले कहा जाता है कि सिकन्दरिया के ज्योतिष का भारत पर प्रभाव पड़ा था। टॉलेमी के गणितीय ग्रन्थ अलमाजेस्ट का भारतीय सिद्धान्त ग्रन्थों, विशेषतया सूर्यसिद्धान्त से अनेक महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर साम्य और टॉलेमी के ही फलित ग्रन्थ टेट्राबिब्लॉस का भारतीय फलित ग्रन्थों, विशेषतया पाराशरी से काफी मेल बैठता है, जिनके आधार पर कहा जाता है कि सिकन्दरिया से ही भारतीयों ने गणित और फलित सीखा, और पश्चिम का ज्ञान भारत में आने से पहले भारत में जैनों के सूर्यप्रज्ञप्ति और महात्मा लगध के वेदाङ्गज्योतिष जैसे आधे-अधूरे ग्रन्थ ही थे जिनके आधार पर कुण्डली बनाना भी असम्भव था।

भाषा विज्ञान का काल्पनिक आवरण-

भारोपीय परिवार के भाषाविज्ञान के मौजूदा सिद्धान्त के आलोक में भारतीय ज्योतिष का इतिहास दूर तक नहीं जा सकता। यदि वेद ही १५०० ईसापूर्व के बाद रचा गया तो इसके अङ्ग ज्योतिष की उत्पत्ति बाद में ही हुई होगी। मिस्र और सुमेर में इससे बहुत पहले ही ज्योतिष विद्यमान था। भारतीय ज्योतिष का विकास मध्यपूर्व से आयातित ज्ञान के प्रभाववश हुआ, यह विचार वेद के भाषावैज्ञानिक कालनिर्धारण पर ही आधारित है।

१९वीं शती के पूर्वार्ध में अधिकांश यूरोपीय विद्वानों का मत था कि यूरोपीय आर्यों का मूल प्रदेश भारत में या भारत के आसपास था। श्लाइखेर ने तुलनात्मक व्याकरण के आधार पर ट्री मॉडल सुझाया। उत्तरी यूरोप की भाषायें स्लावो-जर्मेनिक शाखा में हैं। दक्षिणी यूरोप की भाषायें ग्रीक-इटैलो-केल्टिक शाखा में हैं। इन दो शाखाओं का आपस में हल्का किन्तु संस्कृत से घनिष्ठ सम्बन्ध है। अतः निष्कर्ष यह होना चाहिए कि भारत ही मूलप्रदेश था, किन्तु केन्द्रीय एशिया को आर्यों का मूल प्रदेश कहा गया, यद्यपि १९वीं शताब्दी में केन्द्रीय एशिया से किसी भी आर्य भाषा का कोई प्रमाण नहीं मिला था। यूरोपीय विद्वान जानते थे कि साक्ष्यों के आधार पर मूल प्रदेश केन्द्रीय एशिया नहीं भारत ही था। अतः मन लायक साक्ष्य जुटाने में वे लग गये। श्रोडेर ने सुझाया कि संस्कृत कारकान्त प्रत्यय 'भिस्' का समानार्थक केल्टिक एवं जर्मेनिक समूहों में प्रत्यक्ष 'मिस' है। अतएव उत्तरी एवं दक्षिणी यूरोप की शाखाओं में इस एक सम्बन्ध के आधार पर कहा गया कि भारोपीय भाषाओं का सम्बन्ध छल्ले या रिंग के रूप में था, जिसके केन्द्र में मूल प्रदेश पूर्वी यूरोप में था। भारतीय-ईरानी समूह की कल्पना रूमानिया के आसपास रहने वाले छोटे कबीलों के रूप में की गई। केवल एक भाषाई लक्षण के आधार पर यूरोप से अधिक जनसंख्या वाले हिन्द-ईरानी जनसमूहों को एक छोटा सा झुण्ड बताकर यूरोप के छोटे से कोने में डाल दिया गया। इस मत को झुठलाने वाले अनेक अकाट्य प्रमाण प्रकाश में आ चुके हैं किन्तु यूरोपवादी विद्वानों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उन्हें मनचाहा होमलैण्ड मिल गया, अब साक्ष्यों से क्या लेना देना ?

सच्चाई यह है कि सभी पाश्चात्य विद्वानों के समस्त निष्कर्ष एक भयङ्कर पूर्वाग्रह से ग्रस्त थे। भारतीय इतिहास की किसी भी घटना को ग्रीक इतिहास की प्राचीनतम घटना से पहले का नहीं माना जा सकता था। इस पूर्वाग्रह के पक्ष में भाषा विज्ञान के हवाले कहा जाता था कि चूँकि ऋग्वैदिक संस्कृति पशुचारी थी, अतः वह उसी स्तर की ग्रीक संस्कृति की समकालीन हो सकती थी, क्योंकि वैदिक एवं ग्रीक आर्यों के पूर्वज एक ही मूल से निकले थे। ग्रीक इतिहास की प्राचीनतम ज्ञात घटना ट्रॉय का युद्ध (लगभग ईसापूर्व १२००) है। अतः ऋग्वैदिक युग का मध्यमान भी वही माना गया। १९५२ ईस्वी में माइकेल वेण्ट्रिस ने लीनियर-बी अभिलेखों को पढ़ने में सफलता प्राप्त की, जिसके आधार पर सिद्ध हो गया कि १५वीं शती ईसापूर्व तक ग्रीक भाषा बोलने वाले विकसित नागरिक सभ्यता वाले माइसीनियन ग्रीक में रहते थे, जो होमर के काव्यों के पशुचारी डोरियन ग्रीक पात्रों के पूर्ववर्ती थे। अतः माइसीनियन-ग्रीक के पशुचारी पूर्वजों का काल किसी भी स्थिति में १४२५ ईसापूर्व के कई शती पूर्व होना चाहिए। जब ग्रीक में विकसित नागरिक सभ्यता के लोग रहते थे, तभी ऋग्वैदिक गड़रियों और उनके अनपढ़ गवैयों (ऋषियों) का भारत पर हमला युक्तिसङ्गत नहीं है। १७५० ईसापूर्व में हड़प्पा सभ्यता का लोप आर्यों के आक्रमण का परिणाम था, यह अब लोग नहीं मानते, क्योंकि सिन्धुघाटी में यूरोपियन हमले के भौतिक अवशेष नहीं मिलते। अतः हड़प्पाई सभ्यता से पहले वेद का काल रखा जाना चाहिए। पाश्चात्य प्रचार पर विश्वास करने के बजाय विद्वानों को स्वयं वैज्ञानिक पद्धति द्वारा वेद के कालनिर्धारण की जाँच करनी चाहिए। आधुनिक भाषाविज्ञान की पद्धति बहुत आसान है।

अंग्रेजों का संगठित आक्रमण-

भारोपीय भाषापरिवार के भाषाविज्ञान में हमारे १२ वर्षों तक शोधकार्य के भिन्न निष्कर्ष मिले। यूरोपीय भाषाविदों के मूल ग्रन्थों विशेषकर कार्ल ब्रुगमैन के प्रसिद्ध ग्रन्थ Grundriss वशी Vergleichenden Grammatik der indogermanischen Sprachen (भारोपीय भाषाओं का तुलनात्मक व्याकरण) में एक भी पृष्ठ पर सही तर्क एवं प्रमाण सहित निष्कर्ष निकालने की प्रवृत्ति नहीं मिली। **यूरोप के समस्त भाषाविद् और इतिहासकार एक-दूसरे को उद्धृत करने को ही विचारों को प्रमाणित करना मानते हैं। यूरोप की महानता के बारे में उनके पूर्वाग्रह ग्रीस से पहले उन्हें जाने नहीं देता, जबकि यूरोप का मूल अर्थ ही था पूरब से आने वाले।** आधुनिक भाषाविज्ञान की पद्धति द्वारा जितने धातुओं के प्राचीन भाषाओं में पर्याप्त संख्या में रूप मिले उनकी जाँच ने शत-प्रतिशत मामलों में वैदिक भाषा को ही प्राग्भारोपीय भाषा सिद्ध किया। किन्तु पश्चिम के विद्वान् ऐसे शोधकार्यों की जाँच करने के बदले हिन्दुत्ववाद का हौआ खड़ा करने लगते हैं। तथ्यों को नकारने के लिए आपस में एक दूसरे को उद्धृत करते रहना इन लोगों की 'वैज्ञानिक' पद्धति है, जिसके सामने छिटपुट और असङ्गठित रूप से शोध करने वाले शोधकर्ता ठहर नहीं पाते। **पाश्चात्य विद्वानों में एकता और सङ्गठन के साथ हर प्रकार के वित्तीय, यान्त्रिक एवं अकादमिक संसाधन हैं, किन्तु यदि मूल प्रमाणों की ईमानदारी से जाँच की जाय तो भारतीय विद्याओं के नाम पर पिछले दो शतियों के दुष्प्रचार का पर्दाफाश किया जा सकता है।**

सूर्यसिद्धान्त और अलमाजेस्ट

जहाँ तक खगोलीय गणित की मौलिकता और विश्वसनीयता का प्रश्न है, इस क्षेत्र में भी पश्चिम के विद्वानों ने तथ्यों को सङ्गठित प्रचार द्वारा झुठलाया। टॉलेमी के गणित का सूर्यसिद्धान्त से साम्य

है, इसमें दो राय नहीं। अधिकांश पाश्चात्य विद्वानों का मत है कि वराहमिहिर के काल तक सूर्यसिद्धान्त एक आधा-अधूरा ग्रन्थ था जिसे प्राचीन सूर्यसिद्धान्त की संज्ञा दी गई है। इन लोगों का कहना है कि सूर्यसिद्धान्त ११०० ईस्वी तक धीरे-धीरे विकसित हुआ, जिसे आधुनिक सूर्यसिद्धान्त कहा जाता है, और १५०० ईस्वी के बाद भारतीय सिद्धान्तों में बीज संस्कार जोड़कर दृक्तुल्यता की चेष्टा हुई। भारतीय सिद्धान्त गणित के बारे में पाश्चात्य दृष्टिकोण का यही निचोड़ है, जिसे अनेक भारतीय विद्वान् भी मानते हैं; किन्तु टॉलेमी के मैथमेटिका सिनेटैक्सिस या अलमाजेस्ट में कई ऐसी नवीनतायें है जिनका सूर्यसिद्धान्त में अभाव है। **उदाहरणार्थ मध्यम चन्द्र में सूर्यसिद्धान्त केवल एक ही बार मन्दफल संस्कार करता है, जो आधुनिक खगोलविज्ञान की भाषा में 'केन्द्र का समीकरण' कहलाता है, किन्तु अलमाजेस्ट में द्वितीय संस्कार भी है जिसे आधुनिक विज्ञान में 'इवेक्शन' कहते हैं। ऐसे साक्ष्यों के आधार पर बर्जेस ने मत व्यक्त किया था कि सूर्यसिद्धान्त में प्रतिपादित विचार आदिम होने के कारण टॉलेमी से पहले के हैं।** किन्तु ऐसे साक्ष्यों के आधार पर यह नहीं कहा गया कि सूर्य सिद्धान्त टॉलेमी से पहले का है, बल्कि यह कहा गया है कि टॉलेमी से पहले ही पाश्चात्य ज्ञान भारत में आ चुका था। किसी एक ही स्रोत से दोनों प्रेरित हुये होंगे, यह सूर्यसिद्धान्त के भाष्यकार बर्जेस का मत है, किन्तु बर्जेस के मतानुसार वह स्रोत ग्रीस नहीं बल्कि टॉलेमी से पहले का मिस्र या सुमेर था। **सूर्यसिद्धान्त समस्त प्राचीन भारतीय सिद्धान्तों में सर्वाधिक विकसित एवं समग्र सिद्धान्त है, किन्तु इसे भी मध्यपूर्व से आयातित विचारों के आधार पर धीरे-धीरे विकसित हुआ माना गया। अतः कुल मिलाकर निष्कर्ष यही है कि खगोलीय गणित के क्षेत्र में भारत ने विश्व को कोई भी योगदान किया यह पश्चिम नहीं स्वीकारता।**

पाराशरी और टेट्राबिब्लॉस

फलित के क्षेत्र में भी टॉलेमी के टेट्राबिब्लॉस और पाराशरी में साम्य हैं। इसमें दो मत नहीं कि मिस्र, सुमेर, चीन और भारत की ज्योतिषीय अवधारणाओं का कोई एक ही मूल स्रोत था। वह स्रोत मिस्र था या सुमेर इस पर विद्वान् बहस करते हैं। भारत के मूल स्रोत होने की सम्भावना पर भी विचार नहीं किया जाता। जब वेद ही अप्रामाणिक हैं तो वेदाङ्ग की प्रामाणिकता का प्रश्न ही नहीं उठता। अतः ज्योतिष के प्रमाणों की चर्चा करने से पहले वेद की प्रामाणिकता का कुछ कहना आवश्यक है। भारतीय स्रोत तो झूठे हैं, ग्रीक स्रोतों की देखें। ईसापूर्व पाँचवीं शती के ग्रीक कॉमेडियन अरिस्तोफेनीस् का हास्य नाटक 'दि बर्ड' या 'पक्षी' देखें, जिसमें इस तथ्य का प्रमाण है कि **प्रागैतिहासिक यवनों में कर्मकाण्डीय यज्ञ का प्रचलन था।** इसका संक्षिप्त कथानक इस प्रकार है:

'प्रागैतिहासिक ग्रीस के लोग यज्ञ में जो आहुति देते थे उससे देवों को भोजन मिलता था। ऐथेन्स के एक बुड्ढ़े को खुराफात सूझा। उसने पक्षियों को सिखाकर आकाश की घेराबन्दी करवा दी, ताकि यज्ञ की हवि स्वर्ग तक न जा पाये। देवगण भूखों मरने लगे। देवप्रमुख ज्यूस ने दूत को बुड्ढ़े के पास भेजा तो बुड्ढ़े ने शर्त रखी की ज्यूस अपनी पुत्री बुड्ढ़े को सौंप दे तभी आकाश की घेराबन्दी हटेगी। बुड्ढ़े को मनाने के लम्बे प्रयास में विफल होकर अन्त में अपनी प्रतिष्ठा का विचार त्यागकर बुड्ढ़े के पास ज्यूस ने अपनी पुत्री भेज दी, तब जाकर देवों को हवि मिलनी आरम्भ हुई एवं उनकी जान बची।'

उस समय के ग्रीक नाटक विशाल मैदान में खेले जाते थे। जिसमें प्रायः २५००० लोगों की भीड़ जुटती थी। इसी कारण दृश्य बदलने पर पर्दे का प्रयोग अनिवार्य था, जिससे भारतीय नाटककारों ने भी यवनिका का प्रयोग सिखा। विशाल भीड़ के सामने देवी-देवताओं के विरुद्ध वीभत्स नाटक का आनन्द पूरा देश उठाता था। स्पष्ट है कि प्राग्भारोपीय काल के वैदिक धर्म में ग्रीक लोगों की आस्था समाप्त हो गई थी, अन्यथा ऐसे नाटक लिखने वाले को प्राणदण्ड दिया जाता।

सुकरात का आत्मबलिदान-

सुकरात को जिस आरोप में विष दिया गया वह था 'ग्रीस की युवा पीढ़ी को प्रचलित धर्म के विरुद्ध भड़काना', प्रचलित कानून के अनुसार जिसका दण्ड था प्राणदण्ड। सुकरात ने जान-बूझकर ऐसा 'अपराध' क्यों किया? वे ग्रीस के सबसे बड़े विद्वान् थे, धन लेकर ज्ञान बेचने वाले सभी सोफिस्ट जिनसे शास्त्रार्थ में पराजित हो चुके थे। **तुलनात्मक भाषाविज्ञान के साक्ष्य स्पष्ट कहते हैं कि तथाकथित प्राग्भारोपीय काल में आर्यों के समस्त देवी देवता वैदिक ही थे; एक भी वेद- बाह्य देवी-देवता की स्तुति नहीं की जाती थी। सुकरात इसी पुरातन वैदिक धर्म की ग्रीस में पुनर्स्थापना का प्रयास कर रहे थे जिसके विरुद्ध ग्रीस हो चुका था। उन्होंने जानबूझकर आत्मबलिदान दिया, ताकि कम से कम युवा पीढ़ी जाग सके। जिस उद्देश्य के रक्षार्थ उन्होंने बलिदान दिया उसे आधुनिक यूरोप के विद्वान् जानबूझकर छुपा रहे हैं।**

यूरोप में वैदिक कर्मकाण्ड के साक्ष्य-

१९वीं शती के यूरोपीय स्नातकों को ग्रीक एवं लैटिन अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती थी। अतः यूरोप के भाषाविदों और इतिहासकारों ने प्राचीन ग्रीस के महानतम कामेडियन अरिस्तोफेनीज का नाटक 'पक्षी' नहीं पढ़ा होगा, यह विश्वास करने योग्य नहीं है। किन्तु यूरोपवासियों के आर्य - पूर्वज वैदिक कर्मकाण्ड करते थे, यह यूरोप या भारत का एक भी धर्मनिरपेक्ष इतिहासकार नहीं स्वीकारता। यूरोपीय विद्वानों ने जानबूझकर ऐसे साक्ष्यों पर पर्दा डाल रखा है। प्राग्भारोपीय लोगों में मित्र, वरुण, अग्नि, सोम, द्युपितृ जैसे वैदिक देवों की ही स्तुति होती थी, यह प्रमाणित हो जाने पर तर्क दिया जाता है कि केवल स्तुति होती थी, यज्ञ नहीं था (यद्यपि 'यज्ञ' शब्द का यज् धातु यूरोप की मुख्य भाषाओं में प्रचलित था), और **इस मनगढ़न्त आधार पर कहा जाता है कि भारत में जब आर्य आये तो केवल आग के सामने देवों की स्तुति होती थी, कर्मकाण्डीय यज्ञ नहीं होते थे। कालान्तर में जब ब्राह्मण, जो अनार्य थे, भी आर्यों के समाज में सम्मिलत हो गये तो उन्होंने आर्यों में याज्ञिक कर्मकाण्ड आरम्भ करवा दिये। ये मनगढ़न्त विचार आज भी भारत के छात्र पढ़ने के लिए विवश हैं।** ग्रीक नाटक 'पक्षी' यज्ञ के धुँए या हवि से देवों की क्षुधा मिटने का स्पष्ट उल्लेख करता है। यवनों के पूर्वजों में याज्ञिक कर्मकाण्ड का यह साक्ष्य है, जिसे प्रगतिवादी और वामपन्थी विचारों वाले इतिहासकार नहीं मानते। **यदि भारत के पुराणकार झूठे थे, तो ग्रीक साक्ष्य को प्रामाणिक क्यों नहीं माना जाता? क्योंकि तब जो सत्य स्वीकारना पड़ेगा वह भारतीय संस्कृति को हेय दृष्टि से देखने वाले गोरे और ब्राउन साहबों को नहीं पचेगा। बिना ब्राह्मणों के वैदिक कर्मकाण्ड सम्भव नहीं थे, और यूरोप में ब्राह्मणों का कभी अस्तित्व नहीं रहा। अतः पुरातन ग्रीकों में याज्ञिक कर्मकाण्ड का अर्थ यह है कि यूरोप के आर्यों का मूल प्रदेश भारत ही था।**

प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में भी यवनों के भारतीय मूल की चर्चा है। व्यास जी और अरिस्तोफेनीज को हम प्रमाण मानें, या रामशरण शर्मा के वामपन्थी गुरु गॉर्डन चाइल्ड को, जिसने भारतीय सभ्यता के प्रति अपनी घृणा को खुलकर व्यक्त किया: 'ह्वाट हैप्पेण्ड इन हिस्ट्री' पुस्तक में चाइल्ड ने लिखा है कि भारत और चीन की संस्कृतियाँ पाश्चात्य सभ्यता के महासागर में गिरकर विलीन होने वाली

नालियाँ हैं। प्राचीन मिस्र एवं सुमेर की सभ्यताओं को पाश्चात्य सभ्यता के पूर्वज मानने में इन इतिहासकारों को हिचक नहीं है, क्योंकि वे सभ्यताएं नष्ट हो चुकी हैं। किन्तु एक जीवित वैदिक धर्म को अन्य धर्म वाले अपना पूर्वज कैसे मानेंगे ? प्राचीन विश्व का समूचा इतिहास संकीर्ण दृष्टिकोण से लिखा गया है जिसे पढ़कर भारत के बुद्धिजीवी भ्रमित हो रहे हैं। प्राचीन मिस्र के भूगर्भीय मन्दिरों की भित्तियों पर करछुल के आकार के बड़े चमचों (जुहू) से धुँएदार हवि देवों को देने के अनेक चित्र मिले तो पाश्चात्य विद्वानों को वैदिक यज्ञ से सादृश्य नहीं दिखा बल्कि यह अर्थ लगाया गया कि धुँआ सूँघकर तुष्ट होने वाले कोकेन का सेवन करने वाले नशेबाज थे। निराधार तर्कों के बल पर मिस्र में यज्ञ के साक्ष्य का मजाक बनाया जाता है। राजस्थान के कालीबङ्गा में दर्जनों अग्निकुण्ड मिले जिनमें वैदिक यज्ञकुण्ड की भाँति कूप, पिण्ड आदि मिले, किन्तु उन्हें तन्दूर कहा जाता है।

द्वादश भाव और दर्शनशास्त्र का सम्बन्ध-

भारतीय ज्योतिष का भारतीय धर्म और दर्शन से जीवन्त सम्बन्ध है। टॉलेमी के फलित ग्रन्थ टेट्राबिब्लॉस में द्वादश भावों के विषयों, राशीशों, ग्रहों के उच्च-नीच आदि का जो वर्णन है वह पाराशरी से शत-प्रतिशत मेल खाता है। केवल इस मेल के आधार पर पाराशर को टॉलेमी का नकलची घोषित किया जाता है। किन्तु द्वादशभावों के विषयों की व्याख्या कुछ और ही सिद्ध करती है। सभी ग्रह सम्मुख भाव पर पूर्ण दृष्टि रखते हैं, जिसका एक कारण है- परस्पर सम्मुख भावों में कारण और परिणाम का सम्बन्ध रहता है। इस घनिष्ठ सम्बन्ध के कारण ही सम्मुख भाव पर पूर्ण दृष्टि रहती है। प्रथम भाव है देह और सम्मुख में सप्तम भाव है काम। काम से देह तथा निष्कामता से विदेहभाव की प्राप्ति होती है। अतः देह और काम के भावों में कारण और परिणाम का सम्बन्ध है। द्वितीय भाव है मारकेश और सम्मुख में अष्टम मृत्यु भाव है। तृतीय भाव है पराक्रम और सम्मुख में भाग्य है, जो पराक्रम का फल है। चतुर्थ भाव है भूमि और सम्मुख राज्य एवं प्रतिष्ठा। पञ्चम है विद्या और सम्मुख है आय। षष्ठ भाव है शत्रु और रोग, तथा सम्मुख है हानि। यह सरलीकृत वर्णन है। विदेहभाव से मोक्ष और देहभाव से काम का सम्बन्ध है, ऐसा दर्शन और ऐसा धर्म भारत से बाहर ढूँढ़े न मिलेगा। निष्काम कर्म करने से देह में बारम्बार आने से मुक्ति मिलती है। दूसरा भाव है धन, जो बन्धन अर्थात् मृत्यु का कारण है, क्योंकि भारतीय धर्म के अनुसार अपरिग्रह मोक्ष हेतु अनिवार्य है। इस प्रकार हम देखते हैं कि द्वादशभावों का निरूपण ऊटपटाँग नहीं है, बल्कि इसके पीछे एक सुसङ्गत दर्शन और धार्मिक मान्यता छुपी है जो वेद और इसके उपानों से ही सम्बद्ध है। प्राचीन ग्रीस, मिस्र, सुमेर और चीन के ज्योतिष में द्वादशभाव तो हैं किन्तु द्वादशभाव की सन्तोषप्रद व्याख्या करने वाला धर्म और दर्शन केवल भारत में ही था। **अतः द्वादशभाव और उनके विषयों की अवधारणाओं की उत्पत्ति भारतीय परिवेश में ही सम्भव थी, अन्यत्र नहीं। अतः भारत से ही ये विचार बाहर फैले। मिस्र से चीन तक के प्रदेश के लगभग मध्य में भारत है भी। चूँकि द्वादशभावों के बिना ज्योतिषशास्त्र कोई अर्थ नहीं रखता। अतः सम्पूर्ण ज्योतिषशास्त्र की उत्पत्ति भारत में ही हुई। ज्योतिष पर जितना प्राचीन साहित्य भारत में बचा है उसका दशमांश भी अन्य प्राचीन देशों ने नहीं छोड़ा। ऐसे अकाट्य साक्ष्यों के बावजूद भारतीय ज्योतिष को मध्यपूर्व से आयातित बतलाया जाता है।** भारतीय ज्योतिष का महत्त्व वही समझ सकेगा जो समझना चाहेगा, पश्चिम के विद्वान् भारतीय ज्योतिष को समझने से पहले ही उसे नकारने का हठ पाले रहते हैं। ऐसे तथाकथित वैज्ञानिक दृष्टिकोण लिए वेद- वेदाङ्गों को गाली पढ़ना प्रगतिशीलता और विकास का द्योतक है। अतः यह मत निकृष्ट एवं त्याज्य है।

बारह राशियों एवं भावों का जनक भारत-

ईसापूर्व चौथी और तीसरी सहस्राब्दि के सुमेर में १२ राशियों के नामों के वही अर्थ थे जो पाराशरी में हैं। मिस्र के थीबिज और देन्देर्रा में १२ राशियों और सभी ग्रहों के चित्र मिले हैं। तुर्की के मेत्सामोर में ईसापूर्व २८०० के साक्ष्य बताते हैं कि १२ राशियों की अवधारणा वहाँ विद्यमान थी। चीन में भी द्वादशभाव प्रचलित थे। आधुनिक वैज्ञानिकों के अनुसार आकाश में लगभग एक सौ तारा मण्डल हैं। टॉलेमी ने ४८ और उससे पहले ईसापूर्व २७० के ग्रीस में ४४ तारामण्डलों के नाम अरातुस् ने गिनाये, जिसका आधार प्राचीन मिस्र के ४३ तारामण्डलों की सूची है। किन्तु आकाश के दर्जनों तारामण्डलों में केवल १२ की ही राशियों में गिनती सभी देशों में थी। १२ राशियों का सम्बन्ध ज्योतिष से है, भौतिकविज्ञान से नहीं। न केवल द्वादशभावों की संख्या ही समान थी, भावों के नाम भी समानार्थक थे और उनके ज्योतिषीय फल भी समान थे। टॉलेमी और पराशर के द्वादशभावों के नामों और विषयों में रत्ती भर भी अन्तर नहीं है। इसी कारण विद्वानों का मत है कि इन ज्योतिषीय अवधारणाओं का कोई एक ही उद्गम होगा, जो उनकी दृष्टि में मिस्र या सुमेर होना चाहिए; किन्तु द्वादशभावों में जो कारण परिणाम के दर्शनशास्त्रीय सम्बन्ध हैं वे सिद्ध करते हैं कि ज्योतिषशास्त्र का मूल स्रोत भारत था। मिस्र या सुमेर नहीं। पाराशरी की तुलना में टॉलेमी का फलित ग्रन्थ टेट्राबिब्लॉस स्थूल एवं अधूरा ग्रन्थ है।

पलड़ा भारत का भारी-

अब प्रश्न यह उठता है कि ज्योतिषशास्त्र की उत्पत्ति का काल कैसे तय किया जाय? अफ्रीका में क्वाजुलु सीमा पर ईसापूर्व ३२५०० की गुफा में तारामण्डल का चित्र पाया गया। जर्मनी की आख घाटी में मैमथ दाँत पर तारामण्डल का गुहाचित्र पाया गया जिसका काल ईसापूर्व ३२५०० से ३८००० के बीच माना जाता है। साइबेरिया में ३२००० से २२००० ईसापूर्व के स्थलों से सौरवर्ष और चान्द्र तिथियों की गणना हेतु स्थूल यन्त्र पाये गये हैं। फ्रांस के लैस्को में ईसापूर्व १६००० के गुहाचित्रों में तारामण्डल हैं जिसे विशेषज्ञों ने वृष राशि माना है। ध्रुवतारा के चारों ओर प्रत्येक तीन मास पर सप्तर्षि की स्थिति देखकर सौरमास और ऋतु का ज्ञान होता है, जिससे स्वस्तिक की आकृति बनी। चीन, जापान, भारत और दक्षिणी यूरोप में ईसा से पहले से ही इसका प्रचलन था। चीनी कब्रों में स्वस्तिक के प्रमाण ईसापूर्व ६००० के हैं। सिन्धुदेश के मेहरगढ़ में चीन से भी एक हजार साल पहले स्वस्तिक का साक्ष्य मिला है। हित्ती, ग्रीक और केल्टो में इसका प्रचलन था। नाविकों के लिए सप्तर्षि तारामण्डल का विशेष महत्त्व तो था ही, सामान्य जन भी स्वस्तिक द्वारा सौरमास का ज्ञान कर सकते थे। सम्भवतः लम्बी यात्राओं में दिशाज्ञानजनित सुरक्षा में सहायक होने के कारण स्वस्तिक का प्रचलन और नामकरण हुआ था, ऐसा कुछ पाश्चात्य विद्वान् मानते हैं। अफ्रीका से लेकर फ्रांस और साइबेरिया तक राशियों, सौरवर्ष और चान्द्र तिथि के प्रचलन के जो साक्ष्य मिले हैं उनके आधार पर यह कहा जा सकता है कि आधुनिक मानव ज्योतिषशास्त्र के ज्ञान के साथ ही उत्पन्न हुआ था, क्योंकि आधुनिक मानव का प्रादुर्भाव ईसापूर्व ४०००० वर्ष माना जाता है, जबकि राशियों, तिथियों और वर्ष का ज्ञान ईसापूर्व ३२ से ३८ हजार वर्ष पहले हो गया था। यह गुहामानवों के चित्रों से स्पष्ट है। इतने पुराने लिखित साक्ष्य उपलब्ध न होने के कारण यह कहना कठिन है कि ईसापूर्व ३०-४० हजार वर्ष पहले जब ज्योतिषशास्त्र पृथ्वी पर आया तो किस देश में और किस भाषा के साथ आया? तथ्यों के आधार पर पलड़ा भारत का ही भारी है, जबकि पाश्चात्य विद्वान् भारत को महत्त्व नहीं देते।

वेदों की उत्पत्ति–

१२ वर्षों तक भारोपीय भाषाविज्ञान पर आधुनिक पद्धति द्वारा शोधकार्य के पश्चात् हमारा निष्कर्ष निकला कि सभी प्राग्भारोपीय धातु वैदिक धातुओं से पूर्ण साम्य रखते हैं। शत-प्रतिशत मामलों में वेद की भाषा ही सबकी पूर्वज निकली। इसके बाद मन में जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि यदि वेद इतना प्राचीन है तो मानवजाति का सभ्यता की ओर विकास की कहानी पर वेद के अध्ययन से अवश्य कुछ न कुछ प्रकाश पड़ेगा। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से वेद का अध्ययन मैंने आरम्भ किया तो चौंकाने वाले निष्कर्ष सामने आये। इस तथ्य के प्रमाण मिले कि मानव समाज में शब्दों के जो लौकिक अर्थ प्रचलित हैं, उनके आधार पर वेद का अर्थ स्पष्ट नहीं हो सकता। उदाहरणार्थ, ऋग्वेद में 'भ्रातृ' शब्द अपने सभी रूपों में ३३ स्थलों पर प्रयुक्त हुआ है, जिनमें ३२ स्थलों पर 'भाई' से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है। केवल 'सूर्य' के लिए इसका प्रयोग हुआ है। केवल एक स्थल पर सूर्य के बदले सूर्यपुत्र के लिए इसका प्रयोग हुआ है। दसवें मण्डल के यम यमी संवाद में, किन्तु वहाँ भी 'भाई' के साथ साथ 'सूर्यपुत्र' अर्थ भी है। इसी कारण वैयाकरणों ने 'भ्रातृ' की व्युत्पत्ति भू एवं भ्राश् या भ्राज् (चमकना) दोनों धातुओं से सम्भावित बतलायी। कन्या का भरण पहले पिता और बाद में भर्त्ता करता है, भाई भरण नहीं करता। भाई चमकता भी नहीं। अतः 'भाई' लौकिक अर्थ है, जबकि सूर्य भ्रातृ का वैदिक अर्थ है। इसी प्रकार अग्नि शब्द भी जो अग् धातु से बना है वह लौकिक आग या Fire से दूर का भी सम्बन्ध नहीं रखता, बल्कि अग्निदेव के अदृश्य रूप से सर्वत्र गमन करने के लक्षण का बोध कराता है। व्युत्पत्यर्थ प्राचीन और लौकिक अर्थ बाद के होते हैं। वेद में लौकिक अर्थो का गौण महत्त्व है। वैदिक पदों के ऐसे अर्थों से सङ्केत मिलता है कि वेद पहले बने, लोक बाद में अस्तित्व में आये। अग्निदेव पहले से थे, भौतिक अग्नि बाद की वस्तु है। ऋग्वेद विश्व का प्राचीनतम ग्रन्थ है, यह पहले ही स्पष्ट हो चुका था। अब यह भी साफ हो गया कि 'मानव समाज में प्रचलित अर्थ रूढ़ होने से पूर्व ही वेद की भाषा अन्तिम रूप ले चुकी थी। मनुष्यों ने वेद नहीं बनाई तो फिर किसने बनाई ? नास्तिकों को वेद का भाषाविज्ञान समझाना सम्भव नहीं है; वे पूर्वाग्रही हैं, प्रमाण नहीं मानते।

कोलब्रुक की गणना में भारी त्रुटि है–

वेदाङ्गज्योतिष में उल्लेख है कि उत्तरायण होने पर दिनवृद्धि तथा दक्षिणायन होने पर इसका विपरीत होता है। दिन या रात की वृद्धि या ह्रास सायन पर निर्भर है, निरयन पर नहीं। सायन मकर संक्रान्ति के समय दिनमान न्यूनतम होता है, तथा उसी दिन से दिनवृद्धि आरम्भ होती है। वेदाङ्ग ज्योतिष के अनुसार दिनवृद्धि निरयन धनिष्ठारम्भ से आरम्भ थी, जब साय मकरसंक्रान्ति थी। किन्तु तिथि का भी योग मिलना चाहिए। वेदाङ्ग ज्योतिष में लिखा है कि जब सूर्य और चन्द्र सायन धनिष्ठा में आते हैं तब माघ शुक्लादि से उत्तरायण आरम्भ होता है। कोलब्रुक ने ईसापूर्व १४०० में वेदाङ्ग ज्योतिष का उपरोक्त योग माना। आजकल अयनांश + २३° के आसपास है। दृक्पक्षीय गणनानुसार ईसापूर्व १३८७ में -२३°:२०' दृक्पक्षीय अयनांश था। सायन उत्तरायण अर्थात् २७०° परसूर्य का अर्थ था कि निरयन सूर्य २९३°:२०' पर थे, जो कि धनिष्ठारम्भ था। यहाँ तक तो कोलब्रुक ठीक थे। किन्तु कोलब्रुक ने तिथि की जाँच नहीं की और उनके समस्त देशी-विदेशी चेलों ने रोयाल एशियाटिक सोसायटी के उनके रुतबे को देखकर उनकी गलत गणना को मान लिया। प्रत्येक २४५९ वर्षों पर मेष संक्रान्ति एक मास आगे भागती है। इसी कारण कलियुगादि में मेष संक्रान्ति माघ शुक्लादि को थी किन्तु अब चैत्र शुक्लादि को है। ५००० वर्षों में दो मास का अन्तर पड़ा है। **ईसापूर्व १४०० में माघशुक्लादि निरयन ३३७°:४६' या सायन ४४°:२०' की भयङ्कर त्रुटि है। पिछले २०००० वर्षों की जाँच में ऐसा एक भी वर्ष नहीं मिला जिसमें वेदाङ्गज्योतिष में बताया गया योग वास्तव में घटित हुआ हो। अतः वेदाङ्गज्योतिष उससे भी पहले की वस्तु है। कोलब्रुक का गणित सर्वथा अशुद्ध है इसमें सन्देह नहीं, किन्तु अनेक भारतीय लेखक आज भी बेहिचक कोलब्रुक के मत को ही दुहरा रहे हैं। अब प्रचार हो रहा है कि भाषा के आधार पर वेदाङ्ग ज्योतिष का काल ईसापूर्व ३०० के आसपास का है, आकाशीय योग के आधार पर मूल ग्रन्थ का कालनिर्धारण करने की विधि को ही त्याग दिया गया है।**

लाप्लास एवं रेवरेण्ड विंसी का मत–

अब पश्चिम के ही कुछ शीर्षस्थ वैज्ञानिकों के मत देखें। अपने समय के विश्व के महानतम खगोलवैज्ञानिक लाप्लास का कहना था कि उनके सिद्धान्त के अनुसार ईसापूर्व ३१०२ में शनि और बृहस्पति की वार्षिक औसत गति भारतीय खगोलशास्त्र के मान से पूर्णतः मेल खाती हैं। अपने ग्रन्थ A Complete System of Astronomy के द्वितीय खण्ड के पृष्ठ २५२ में कैम्ब्रिज के खगोलशास्त्री प्रोफेसर रेवरेण्ड विंसी लिखते हैं कि हिन्दूओं में शनि का परम मन्दफल.... ३१०२ ईसापूर्व में उनके (कलि) युग आरम्भ होने के काल में वैज्ञानिक मन्दफल से काफी मेल खाता है। ऐसे तथ्यों का उल्लेख करते हुए **प्रो. विंसी कहते हैं: "ऐसे अनेक साम्यों के आधार पर इस बात की अत्यधिक संभावना है कि भारतीय खगोलशास्त्र उतना प्राचीन होना चाहिए जितना ब्राह्मणों द्वारा बताया जाता है।"**

न्यूटन ने कलन पर कार्य तो किया था, किन्तु उनकी 'प्रिंसिपिया' ज्यामितीय उपपत्तियों पर ही आश्रित थी, जिसके कारण ग्रह सूत्रों के अल्पमान वाले पद स्पष्ट नहीं हो पाते थे। लाप्लास ने सम्पूर्ण खगोलविज्ञान को कैलकुलस के ठोस आधार पर खड़ा किया। अतः डिफ्रैंशल सूत्रों के अल्पमान वाले पदों की गणना भी सम्भव हो गई। इसके अलावा लाप्लास ट्रांसफॉर्म द्वारा कठिन सूत्रों को आसान रूपों में बदल कर उनका हल ढूंढ़ना सुगम हो गया। इन अल्पमान वाले पदों का मान दीर्घ काल में बहुत बढ़ जाता है, जिसके कारण न्यूटन की विधि से सही हल नहीं मिलते। लाप्लास की विधि द्वारा ५००० वर्ष पहले की ग्रह कक्षाओं का सही स्वरूप निर्धारित करना सम्भव हो गया। इसी विधि द्वारा लाप्लास ने पाया कि शनि और बृहस्पति के सूर्यसिद्धान्तीय मान वर्तमान दृक्पक्षीय मान से नहीं बल्कि ३१०२ ईस्वी के दृक्पक्षीय मान से मेल खाते हैं। भाषा वैज्ञानिकों का विश्वास है कि ईसापूर्व ३००० में भारत में आर्य थे ही नहीं। अतः कहा जाता है कि भारतीय ज्योतिष में वर्णित जिन तथ्यों का ईसापूर्व ३००० से सम्बन्ध है वे ईसापूर्व ३००० में मिस्र या सुमेर में खोजी गई होगी। इस प्रकार आर्य आक्रमण की कल्पना द्वारा तथ्यों की गलत व्याख्या की जाती है। **लाप्लास और विंसी जैसे शीर्षस्थ वैज्ञानिकों के शोधकार्यों को चर्चा के लायक नहीं समझा जाता और बर्जेस तथा बेण्टली की गलत गणनाओं को घड़ल्ले से प्रचारित किया जाता है।** न्यूटन और आइंसटाइन के बीच ढाई शतियों के अन्तराल में लाप्लास जैसा खगोलविदब और गणितज्ञ कहीं नहीं हुआ, जबकि बर्जेस और बेण्टली की गणनाओं में ऐसी त्रुटियाँ हैं जिनपर स्कूली छात्रों को भी शर्म आनी चाहिए। नया रास्ता बनाने के कारण न्यूटन का नाम अधिक है, किन्तु न्यूटन का केवल ऐतिहासिक महत्त्व रह गया है। **आधुनिक वैज्ञानिक लाप्लास और आइंसटाइन के सूत्रों द्वारा गणना करते हैं। किन्तु वेद या ज्योतिष पर कलम चलाने वाला एक भी लेखक भारतीय खगोलशास्त्र पर लाप्लास या विंसी के मतों की चर्चा भी नहीं करता।**

ब्रिटेन के स्टोनहेन्ज और आउटर हेब्राइडीज के कैलेनिश इन दोनों स्थलों पर प्रागैतिहासिक वेधशालायें थीं। स्टोनहेन्ज ऐसे अक्षांश पर है जहाँ चन्द्र- अक्षांश सूर्य से ९०° तक का कोण बना लेता है, और कैलेनिश ऐसे अक्षांश पर है जहाँ चन्द्रमा का परम अक्षांश क्षितिज तक चला जाता है। अतः इन दो वेधशालाओं से प्राप्त आँकड़ों से पृथ्वी की गोलाई और आकार सिद्ध हो जाती है। हजारों मील दूर की वेधशालाओं में साम्य से स्पष्ट है क इन प्रागैतहासिक वेधशालाओं के निर्माताओं की योजना वैश्विक थी। **ग्वाटेमाला में माया जाति के धर्म ग्रन्थ 'पापुल-वुह' में लिखा है कि आदिमानव अत्यधिक मेघावी थे और आकाशीय गोल के चारो कोनों तथा पृथ्वी के गोल चेहरे का उन्हें ज्ञान था।** भारतीय गणित ग्रन्थों में इसके लिए शब्द ही थे भूगोल और खगोल। टॉम्पकिन्स ने 'एट दि सेण्टर ऑव दि वर्ल्ड' में लिखा है कि मिस्र में शून्य रेखांश मानकर न केवल मध्यपूर्व के सूसा जैसे प्राचीनतम नगरों बल्कि चीन की प्राचीनतम राजधानी अनयाङ्ग तक के रेखांश निर्धारित किये जाते थे। **मिस्र के थीबिज, ग्रीस के डेल्फी जैसे धार्मिक केन्द्रों में शिवलिङ्गाकार के पत्थर मिले हैं जिन्हें पाश्चात्य लेखक पृथ्वी की नाभि कहते हैं।** कई जगह इनपर लिपटे सर्प की मूर्तियाँ पायी गयी हैं। इन शिवलिङ्गों के आधार पर न केवल रेखांश मापे जाते थे, बल्कि सम्भवतः वार्षिक राष्ट्रीय कुण्डलियाँ भी बनती थीं। रोमन चर्च ने प्राचीन ज्ञान को कुचलकर पृथ्वी को चपटी घोषित किया। मिस्र और सुमेर के बचे-खुचे प्राचीन ज्ञान का सफाया मुसलमानों ने कर दिया। मिस्रवासियों को मङ्गल के वक्री होने और सूर्य के चतुर्दिक् बुध और शुक्र के घूमने का ज्ञान था। सिकन्दरिया के क्लीमेण्ट ने चार प्राचीन मिस्री ग्रन्थों के नाम बताये थे, जो पुरोहित केवल अपने पास रखते थे। वे थे : स्थिर राशियों के स्वभाव, ग्रहों के स्वभाव, तिथिनिर्णय एवं उदय। पहले ग्रन्थ का नाम ही था स्थिर राशि। निरयन पद्धति का मिस्र में प्रचलन का यह एक साक्ष्य है। टॉलेमी के ग्रन्थ में भी राशियों को बारम्बार स्थिर कहा गया है। एक अध्याय का नाम ही है 'स्थिर राशि'। किन्तु समस्त पाश्चात्य टीकाकार मूल अर्थ को तोड़-मरोड़कर मिस्र और ग्रीस का सायन पद्धति प्रचलित होने की झूठी कल्पना करते हैं। सायन पद्धति का सीमित उपयोग था, जैसे कि सूर्योदय और लग्नसाधन में। ज्योतिषशास्त्र सर्वत्र निरयन पद्धति पर ही आश्रित था। किन्तु सभी पाश्चात्य लेखक सायन के प्रति वर्तमान पाश्चात्य पूर्वाग्रह को बलपूर्वक इतिहास पर थोपते हैं। सुमेर में वसन्त संक्रान्ति के दिन नववर्ष का आरम्भ होता था, जिसका अर्थ आधुनिक लेखक लगाते हैं कि सायन मेषारम्भ से वर्षारम्भ होता था। टॉलेमी के टेट्राबिब्लॉस में एक अध्याय का शीर्षक है 'नववर्ष का नया चाँद', जिसे टॉलेमी ने मेषारम्भ के पास की अमावस के रूप में परिभाषित किया। टीकाकारों ने इसका गलत अर्थ लगाया कि सायन मेषारम्भ से ही नया वर्ष शुरू होता था, किन्तु टॉलेमी ने इसी ग्रन्थ में राशियों को बारम्बार स्थिर कहा है। अतः निरयन मेष संक्रान्ति की निकटतम अमावस से वर्ष का आरम्भ होता था, जैसा कि भारत में आज भी होता अर्थात् चैत्र शुक्लादि से। राजकाज हेतु एक स्थूल सौरवर्ष का मिस्र में प्रचलन था जिसमें चान्द्रमास का उपयोग नहीं था। अतः टॉलेमी ने जिस शुक्लादि वाले वर्ष का उल्लेख किया वह धार्मिक वर्ष था, जैसा कि भारत के पञ्चाङ्गों में है। टॉलेमी का विषय भी ज्योतिष था जिसका सम्बन्ध धर्म से है। निरयन प्रणाली को पश्चिम भूल चुका है। अतः इतिहास से भी इसे मिटा देना चाहता है। सुमेर में भी इसी निरयन सौरवर्ष के साथ चान्द्रमास की प्रथा थी और मलमास का भी प्रचलन था। रोम का कैलेण्डर भी सौरवर्ष एवं चान्द्रमासों का मिश्रण था। प्रागैतिहासि रोम में वर्ष का आरम्भ मार्च में था, जिसका साक्ष्य है जुलाई से दिसम्बर मासों में संख्यावाचक नाम, दशम मास दशमवर के बाद ग्यारहवाँ जनवरी और बारहवाँ फरवरी था। उन दिनों निरयन और सायन दोनो मेष संक्रान्तियाँ मार्च में ही थीं। किन्तु ईद पर्व मास मध्य में होते थे जो निरयन संक्रान्ति से मेल खाते थे, सायन से नहीं। बाद में रोमन गणतन्त्र के ही काल में जनवरी से वर्ष का आरम्भ माना जाने लगा।

अयनांश और सम्पातचलन (Equinoxes) में भेद-

भारतीय ज्योतिष में आकाश को स्थिर माना गया है, जिसमें विभिन्न पिण्ड गतिशील हैं। इस निरयन पद्धति में **आकाश के राश्यात्मक एवं नक्षत्रात्मक विभाग स्थिर रहते हैं। यूरोप में निरयन पद्धति अब नहीं है। अयनांश की अवधारणा का किसी यूरोपियन भाषा में अब प्रचलन नहीं है, क्योंकि दृक्पक्षीय खगोल विज्ञान में इसकी आवश्यकता नहीं पड़ती। दृपक्षीय विषुव-सम्पात बिन्दु के पुरस्सरण** (precession of the equinoxes) **की वार्षिक गति (५०.३'') अयनांश परिवर्तन की वार्षिक गति (५४'') से एक सीमा तक भ्रामक साम्य रखती है। किन्तु पुरस्सरण पूरे ३६०° के भचक्र में होता है जबकि सूर्यसिद्धान्तीय अयनांश + २७° से - २७° के बीच कुल १०८° लोलक की भाँति दोलन करता है।** ३६०° का चक्रभ्रमण का सिद्धान्त भी प्राचीन भारतीयों को ज्ञात था, जिसके एक प्रवक्ता मुञ्जाल थे। सौरपक्षीय पुरस्सरण-चक्रभ्रमण २४००० वर्षों में ३६०° का होता है, जिसमें ०.३ से गुणा करने पर अयनांश - दोलाभ्रमण का आवर्त्तकाल ७२०० वर्ष में १०८° का एक दोलन अथवा १८०० वर्ष में २७° का एक पाद-दोलन निकलता है। अपनी पुस्तक Small Commentary to the Handy Tables में ग्रीक लेखक थिओन ने अज्ञानतावश ०.३ से दुबारा गुणा कर दिया, जिस कारण २७° तक के स्थान पर ८° तक के अयनांश की अवधारणा बनी। किन्तु थिओन की भ्रान्त धारणा प्रचलित नहीं हो सकी। मध्ययुग के लातीनी और अरब खगोल शास्त्र में सर्वमान्य अयनांश दोलन चक्र उतने ही काल का था जितना सूर्यसिद्धान्त में वर्णित है, जिसे आधुनिक वैज्ञानिकों ने खगोलविज्ञान से हटाया और अब भारतीय ज्योतिष से भी हटाने के प्रयास चल रहे हैं। अयनांश की अवधारणा को अवैज्ञानिक माना जाता है, किन्तु एक अवैज्ञानिक अवधारणा भारत, यूरोप और अरबों में पृथक रूप से उत्पन्न नहीं हो सकती, इसका कोई एक ही स्रोत होना चाहिए। **चूँकि ७२०० वर्षीय दोलनचक्र वाले अयनांश की स्वीकृति का प्राचीनतम साक्ष्य सूर्यसिद्धान्त में ही मिलता है। अतः अयनांश के इतिहास पर कुछ भी लिखना पाश्चात्य विद्वानों को नापसन्द है।** १३वीं शती की अल्फोन्साइन सारिणियों में अरब लेखक थबित के मार्फत सूर्यसिद्धान्त से आयातित अयनांश ही प्रयुक्त किया गया, किन्तु २४००० वर्षों के सम्पूर्ण अयनांश- चक्र और २५८०० वर्षों के पुरस्सरण-चक्र को जोड़कर लगभग ४९००० वर्षों के चक्र की कल्पना की गई; इसी भ्रान्त अवधारणा का उपयोग कॉपरनिकस ने भी किया।

'सूर्यसिद्धान्त' ग्रन्थ की विश्व व्यापकता-

१९वीं और २०वीं शती में जब भारतीय ज्योतिष का पाश्चात्य पद्धति से अध्ययन आरम्भ हुआ तो पुरस्सरण को ही अयनांश घोषित कर दिया गया। सूर्यसिद्धान्त में ऐसे मौलिक परिवर्तन करने वालों में से एक भी 'विद्वान्' ऐसा नहीं था जिसे सूर्यसिद्धान्तीय गणित का ज्ञान हो। सूर्यसिद्धान्त का जितना अंश इन दोनों के पल्ले पड़ा उतने को 'सूर्यसिद्धान्त' से निकाल बाहर कर दिया गया। पाश्चात्य विद्वानों ने सूर्यसिद्धान्त की वास्तविक परम्परा को प्रकाश में लाने की चेष्टा नहीं की, क्योंकि

उनका मूल उद्देश्य सूर्यसिद्धान्त को समझना नहीं, सूर्यसिद्धान्त का खण्डन करना और यवनों की तुलना में प्राचीन भारतीय आचार्यों को मूर्ख सिद्ध करना ही था। कैम्ब्रिज के खगोलशास्त्री प्रोफेसर विंसी लिखते हैं कि ६३८ ईस्वी को गणना का आधार मानने वाली एक हिन्दू पञ्चाङ्ग निर्माण सारिणी थाईलैण्ड (सिआम) से १६८७ ईस्वी में राजदूत लूबेर वापस लाये थे जिसमें सूर्य और चन्द्र स्पष्ट करने के नियम भी थे। इसमें चन्द्रमा का परममन्दफल ४°:५६' था जो पञ्चसिद्धान्तोक्त सूर्यसिद्धान्तीय चन्द्र मन्दपरिध्यंश ३१ को २π से भाग देने पर प्राप्त फल था।

सूर्य का परममन्दफल सूर्यसिद्धान्तीय सम एवं विषम परिध्यंशों के औसत को २π से विभक्त करने पर फल के तुल्य था, जो केवल तथाकथित आधुनिक सूर्यसिद्धान्त से ही मेल खाता है। इस थाई सारिणी का चन्द्रोच्च-आवर्त्तकाल भी तथाकथित आधुनिक सूर्यसिद्धान्त से मेल खाता है। प्रो. विंसी ने इस सारिणी का जो वर्षमान बताया वह सूर्यसिद्धान्तीय वर्षमान से १ सेकेण्ड का भी अन्तर नहीं रखता। १९ वर्षीय सारिणी द्वारा चान्द्रमास बनाये जाते थे। आज भी मलमाससाधन हेतु कई परम्परागत पञ्चाङ्गकार १९ वर्षीय मलमास सारिणी का प्रयोग करते हैं। तात्पर्य यह है कि तथाकथित आधुनिक सूर्यसिद्धान्त भारत में प्रचलित होने से पहले ही थाईलैण्ड में ६३८ ईस्वी में स्थापित हो चुका था! सूर्यसिद्धान्त को मिस्र से आयातित सिद्ध करना था, अतः थाईलैण्ड के प्रमाण की चर्चा भी कोई नहीं करता।

दृश्यपक्षीय ग्रहस्थिति (वेधमान) के साथ सूर्यसिद्धान्तीय (अर्थात् सौरपक्षीय) ग्रहस्थिति का सामञ्जस्य न बैठने के कारण सूर्यसिद्धान्त पर अंग्रेजों के आगमन से पहले से ही प्रश्नचिह्न लगाये जाते थे। पिछली ढाई शतियों से सूर्यसिद्धान्त की मूल पद्धति द्वारा पञ्चाङ्ग बनना बन्द है, यद्यपि बीसवीं शती के पूर्वार्ध तक अनेक परम्परावादी पञ्चाङ्गकार सूर्यसिद्धान्त को अपौरुषेय ग्रन्थ मानते हुये धूप-दीप दिखाते रहे। पाश्चात्य विशेषज्ञों ने इस कसर को भी पूरा कर दिया, न केवल सूर्यसिद्धान्तको पौरुषेय कहा बल्कि अन्य सिद्धान्तों की तुलना में इसे परवर्ती भी घोषित किया। उनके विचारों की निष्पक्ष जाँच करने का प्रयास किसी ने नहीं किया, यद्यपि पं. सुधाकर द्विवेदी ने सूर्यसिद्धान्त के पक्ष में पण्डितों को एकजुट करने का अथक प्रयास किया था।

चिदाकाश और भूताकाश की पृथकता

आकाश दिखता नहीं। इसका अंशों में विभाग करके उसे स्थिर मानने पर भौतिकवादियों द्वारा प्रश्नचिन्ह लगाया जाता है। आधुनिक विज्ञान पूर्णतया भौतिकवादी है। जिन वस्तुओं एवं परिघटनाओं का मानवीय पञ्चेन्द्रियों द्वारा प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूप से सत्यापन सम्भव नहीं, उनके अस्तित्व को आधुनिक विज्ञान, स्वीकृति नहीं देता। अतः आत्मा, देवता, परलोक, कर्मफल, पुनर्जन्म, जैसे विषय आधुनिक विज्ञान के क्षेत्र से बाहर हैं। न्यूटन के नियमानुसार बुध की कक्षा में ०.०१७५' वार्षिक त्रुटि रह जाती है जिसकी कोई व्याख्या भौतिकी में नहीं थी। ५०० वर्षों में यह त्रुटि इकट्ठी होकर प्रायः ९'' हो जाती है। आइंसटाइन ने गणित द्वारा इस समस्या का समाधान कर दिया, किन्तु जब तक कैमरे द्वारा चित्र खींचकर आइंसटाइन के सिद्धान्त को सत्यापित नहीं किया जा सका तब तक उनके विचारों को मान्यता नहीं मिली। सूर्य के गुरुत्वाकर्षण के कारण आकाश की वक्रता का जो आकलन आइंसटाइन ने १९०५ ईस्वी में किया था, १३ वर्षों के पश्चात् दूरस्थ तारे की स्थिति में ठीक उतना ही वक्रताजनित विचलन सूर्यग्रहण काल में देखी गई। फलतः यह सिद्ध हो गया कि भौतिक पदार्थ की भाँति आकाश भी एक भौतिक तत्त्व है, जिस पर गुरुत्त्वाकर्षण जैसी भौतिक शक्तियों का प्रभाव पड़ता है। **भारतीय दर्शन में इसे पञ्चभौतिक भूताकाश कहा जाता है, जो ब्रह्मस्वरूप चिदाकाश से नितान्त भिन्न है। दृक्पक्ष का आकाश भूताकाश है, जिसका भौतिक ग्रहपिण्ड स्थित हैं। सौरपक्ष का आकाश ब्रह्म है, जिसमें चैतन्य ग्रह (देवता) स्थित हैं।** कैमरे द्वारा भूताकाश के सत्यापन के पश्चात् भी भूताकाश को आधुनिक विज्ञान एक पृथक् तत्त्व के रूप में मान्यता नहीं देता, क्योंकि आकाश का प्रत्यक्ष दर्शन सम्भव नहीं है। फिर चैतन्य ब्रह्मस्वरूप सौरपक्षीय चिदाकाश का बाह्य चक्षु द्वारा दर्शन किये बिना आधुनिक वैज्ञानिक ब्रह्म के अस्तित्व का प्रमाणपत्र कैसे दे सकते हैं? भूताकाश सर्वत्र एकसमान समरस नहीं रहता। इसमें प्रकाश की गति भी सर्वत्र है। वह हमें दिखती नहीं। किन्तु चिदाकाश सर्वत्र एकसमान समरस एवं सदैव स्थिर है।

चिदाकाश के निरयन विभागों में चैतन्य ग्रहों की स्थिति पर ही भारतीय फलित ज्योतिष का समस्त फलादेश निर्भर करता है। प्राणियों के पिछले कर्म के अनुरूप चैतन्य ग्रह ही फल देते हैं तथा जप-तप द्वारा चैतन्य देव को ही मना सकते हैं। भौतिक ग्रह तो पिण्डमात्र हैं, जो प्राणियों का भूत भविष्य जानने और उसे बदलने की शक्ति रखते हों यह अवधारणा भौतिकविज्ञान एवं वेद दोनों के विरुद्ध है। यूरोप-अमरीका के बहुसंख्यक वैज्ञानिक ऐसी भ्रान्ति नहीं रखते; किन्तु भारत में ऐसे विज्ञानवादियों की भरमार हैजो शास्त्र में आस्था नहीं रखते, विज्ञान का हवाला देकर शास्त्र को आउट-ऑफ-डेट सिद्ध करते हैं, किन्तु विज्ञान की बजाय ज्योतिषशास्त्र में बलपूर्वक अपना बहुमूल्य योगदान करने के लिए कटिबद्ध हैं। भाँति-भाँति के अयनांश, एफेमेरिस, यहाँ तक कि नये फलितसिद्धान्त भी प्रचलित किये जा रहे हैं।

विश्व का प्राचीनतम गणित ग्रन्थ सूर्यसिद्धान्त

निरयन गणना को आधार बनायें तो सौरपक्ष तथा दृक्पक्ष के मध्यमसूर्य में २००० ईस्वी में परस्पर नगण्य अन्तर था। **अतः सूर्यसिद्धान्त का रचनाकाल २००० ईस्वी से १५२४९२ वर्ष पहले मानना पड़ेगा, क्योंकि प्रत्येक १५२४९२ वर्षों में सौरपक्ष तथा दृपक्ष के मध्यमसूर्य पुनः समान स्थान पर चले आते हैं।** अतः बर्जेस, बेण्टली जैसे विद्वानों ने सायन पद्धति से ही सूर्यसिद्धान्त की जाँच को उचित समझा। मध्यम सायन गणना के आधार पर सूर्यसिद्धान्तीय सूर्य का वेध से मेल ७८२ ईस्वी में और स्पष्ट गणना के आधार पर ९०८ ईस्वी में वेध से मेल था। एक छोटे से तारे जीटा पीशियम को रेवती मानकर दोनों का मेल ५६० ईस्वी में बिठाने की चेष्टा थीबो जैसों ने की। बेण्टली ने मध्यमसूर्य से मध्यमग्रहों के अन्तरों के आधार पर १०९१ ईस्वी सूर्यसिद्धान्त का रचनाकाल निर्धारित किया। बेण्टली ने सूर्यसिद्धान्त के आँकड़ों में भी मनमाना परिवर्तन कर दिया, जिस कारण हिटनी ने बेण्टली को वर्थलेस और बर्जेस ने आलोचनात्मक बुद्धि से विहीन व्यक्ति की संज्ञा दी। किन्तु बर्जेस ने स्वयं आँकड़ों में हेराफेरी करके सूर्यसिद्धान्त का रचनाकाल २५० ईस्वी निकाला, जबकि गणना में त्रुटि दूर की जाय तो १०८ ईस्वी निकलती है। आधुनिक विज्ञान में आस्था रखने वाले अधिकांश लोग सूर्यसिद्धान्त का रचनाकाल सायन गणना द्वारा निर्धारित काल में ही मानते हैं। इसे 'आधुनिक सूर्यसिद्धान्त' की संज्ञा दी जाती है; और कहा जाता है कि वराहमिहिर की पञ्चसिद्धान्तिका में वर्णित सूर्यसिद्धान्त आधुनिक सूर्यसिद्धान्त का था।

बेण्टली और बर्जेस की अज्ञानता-

तथ्यों को तोड़-मरोड़कर अथवा एकपक्षीय रीति से प्रस्तुत करके सूर्यसिद्धान्त के विरुद्ध झूठा प्रचार किया गया है। **वास्तव में यह तथाकथित 'आधुनिक' सूर्यसिद्धान्त ही विश्व के समस्त प्राचीन एवं**

अर्वाचीन खगोलविषयक सिद्धान्तों का मूल स्त्रोत है, इसके कई प्रमाण हैं। पश्चिमी विद्वानों ने जानबूझकर केवल सायनसूर्य की तुलना के आधारपर सूर्यसिद्धान्त का रचनाकाल निर्धारित किया, क्योंकि सभी ग्रहों की तुलना करने पर यूरोपियन विद्वानों के निष्कर्षों का स्वतः खण्डन हो जाता है। **ऐसा कोई काल नहीं है जिसमें सभी ग्रहों के दृक्पक्षीय मान सौरपक्षीय मान से लगभग भी मेल खाते हों। यह तथ्य बर्जेस भी स्वीकारते हैं। आर्यभटीय और वराहमिहिर की पञ्चसिद्धान्तिका में सूर्य का महायुगभगणमान वही है जो तथाकथित आधुनिक सूर्यसिद्धान्त में है। चूँकि कालनिर्धारण का आधार सूर्य हैं; अतः आर्यभटीय, वराहमिहिर एवं सूर्यसिद्धान्त तीनों को ९०८ ईस्वी के आसपास रखना पड़ेगा।**

किन्तु ऐसा काल निर्धारण ऐतिहासिक तथ्यों से मेल नहींखाता। **महायुगभगणमान में अन्तर के कारण पञ्चसिद्धान्तिका के सूर्यसिद्धान्त को प्राचीन तथा उपलब्ध सूर्यसिद्धान्त को आधुनिक कहने वालों को मालूम था कि पञ्चसिद्धान्तिका की पद्धति करण ग्रन्थ की थी, जबकि उपलब्ध सूर्यसिद्धान्त सिद्धान्त ग्रन्थ है।** करण प्रक्रिया में पास के किसी काल में गणना आरम्भ की जाती है एवं सृष्टियादि से इष्टकाल तक का सारा बीजसंस्करण करणकाल से इष्टकाल तक के काल खण्ड पर बैठा दिया जाता है, जिस कारण महायुग-भगणमान में भारी अन्तर दिखने लगता है। **पञ्चसिद्धान्तिकाकरण ग्रन्थ होने के कारण बीजसंस्कृत है, जबकि सूर्यसिद्धान्त सिद्धान्त ग्रन्थ होने के कारण सैद्धान्तिक विषयों की विवेचना पर केन्द्रित है, न कि बीज संस्कार द्वारा व्यावहारिक पञ्चाङ्ग निर्माण पर।** व्यवहार में सूर्यसिद्धान्तीय परम्परा में बिना बीज संस्कार के ग्रहस्पष्ट करने की प्रथा नहीं थी। किन्तु **विदेशी लेखकों ने प्रचार किया कि सूर्यसिद्धान्त में बीजसंस्कार नहीं है और इसी भ्रान्ति के कारण पञ्चसिद्धान्तिका के बीजसंस्कार सूर्यसिद्धान्तीय करण प्रकार को प्राचीन सूर्यसिद्धान्त एवं बिना बीज संस्कार वाले सिद्धान्त ग्रन्थ को आधुनिक सूर्यसिद्धान्त की संज्ञा दी।** बर्जेस की अज्ञानता का एक साक्ष्य यह है कि टीका में उन्होंने बेण्टली को उद्धृत करते हुए लिखा है कि १६वीं शती के आरम्भ में सूर्यसिद्धान्तीय प्रणाली में बीज संस्कार करने की प्रथा का श्रीगणेश हुआ। बीज संस्कार की जो तालिका बर्जेस ने बेण्टली के सौजन्य से प्रकाशित की, वह मकरन्द सारिणी के बीज संस्कार से शत प्रतिशत मेल खाती है, केवल बुध में +१६ के स्थान पर -१६ छप गया था। मकरन्द सारिणी सूर्यसिद्धान्त पर आश्रित तन्त्र सारिणी है जो १४७८ ई. में बनी, जबकि बर्जेस और बेण्टली ने १६वीं शती का हवाला दिया। **स्पष्ट है कि बीजसंस्कार की विधि का ज्ञान बर्जेस को नहीं था। अपने अज्ञान पर पर्दा डालने के लिए बीज संस्कार के महत्त्वपूर्ण विषय की जाँच करने के स्थान पर उसने बीज के २१ श्लाकों को सूर्यसिद्धान्त ही से बाहर कर दिया।**

मकरन्दीय ग्रहसारिणी का आधार सूर्यसिद्धान्त-

ग्रहलाघवकार ने लिखा है कि गुरु, मङ्गल, राहु और ५° से अधिक का शनि आर्यसिद्धान्त के अनुसार वेध से मिलता है। गणना करने पर हम देख हैं कि इन ग्रहों के ग्रहलाघवीय बीज मकरन्दीय बीज से नगण्य अन्तर रखते हैं, केवल मङ्गल का बीजसंस्करण मकरन्दाचार्य भूल गये थे। मकरन्दाचार्य ने अपनी सारिणियों को 'श्रीसूर्यसिद्धान्तमतेन' कहा, जबकि आर्यभटीय के बीज संस्कार केवल परिमाण में बल्कि चिह्न में भी मकरन्दीय बीजों से बहुत अन्तर रखते हैं। अतः ग्रहलाघवकार ने आर्यभट्ट के जिस ग्रन्थ की सहायता ली वह आर्यभटीय न होकर आर्यभट्ट का ही सूर्यसिद्धान्तीय ग्रन्थ था जिसका उल्लेख अनेक प्राचीन आचार्य कर चुके हैं, किन्तु जो अब उपलब्ध नहीं हैं। १६४६ ईस्वी में मुनीश्वर ने भी लिखा कि आर्यभट्ट ही सूर्यसिद्धान्त के भाष्यकार थे। आर्यभटीय के रचयिता से इस सूर्यसिद्धान्तीय भाष्यकार आर्यभट्ट का साम्य नहीं बैठता, क्योंकि युगविधान एवं ग्रहस्पष्टीकरण की रीति जैसे महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर सूर्यसिद्धान्त और आर्यभटीय में मौलिक अन्तर है। महासिद्धान्तकार ने पाताधिकार की १४वीं आर्या में कहा है कि वृद्ध आर्यभट्ट का जो सिद्धान्त नाना पाठभेदों के कारण नष्ट हो गया था मैंने प्रतिपादित किया है। **युगविधान, भूभ्रमण, कल्पारम्भ का वार, आदि महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर आर्यभटीय से महासिद्धान्त भिन्न है, परन्तु उन्हीं बिन्दुओं पर सूर्यसिद्धान्त से महासिद्धान्त का साम्य है। अलबेरुनी ने लिखा कि आर्यभटीय के रचयिता कुसुमपुर के आर्यभट्ट थे जो वृद्ध आर्यभट्ट के परवर्ती थे।**

सूर्यसिद्धान्त का यह भाष्य अब अनुपलब्ध है, किन्तु ग्रहलाघवकार ने इसी के आधार पर बाहरी ग्रहों का बीज निर्धारित किया, केवल बुध और शुक्र में ब्रहासिद्धान्त की सहायता ली थी, और मकरन्द सारिणी भी इसी के आधार पर बनी।

सूर्यसिद्धान्त भाष्यकार वृद्ध आर्यभट्ट को इस देश ने सदा श्रद्धा से स्मरण किया, केवल पिछले एक-डेढ़ शतियो में उन्हें पूरी तरह नकारने या आर्यभटीय के रचनाकार के साथ एकीकृत करने की चेष्टा चल रही है। ये वृद्ध आर्यभट्ट आर्यभटीय के लेखक से बहुत पहले हुए थे, क्योंकि बाद के किसी कालखण्ड में उन्हें रखना सम्भव नहीं है। सूर्यसिद्धान्त वृद्ध आर्यभट्ट से भी बहुत पहले की वस्तु है। किन्तु सूर्यसिद्धान्त में ही लिखा है कि यह रहस्य है। अतः प्राचीन काल में यह सर्वसुलभ नहीं था। सूर्यसिद्धान्त के कुछ रहस्यों की आज चर्चा करेंगे। पहला रहस्य तो यह है कि सूर्यसिद्धान्त के एक भी भाष्यकार को ग्रहस्पष्टीकरण की शास्त्रीय पद्धति का या तो ज्ञान नहीं था या फिर वे बताना नहीं चाहते थे। बर्जेस या बेण्टली को मकरन्दसारिणी का ज्ञान था किन्तु इस सूर्यसिद्धान्तीय सारिणी की गणितीय उपपत्ति में असफल होने के कारण इन लोगों ने मकरन्दसारिणी को सूर्यसिद्धान्तीय मानने से ही इंकार कर दिया। मकरन्दाचार्य का पहला श्लोक ही कहता है कि उनकी सारिणी सूर्यसिद्धान्तीय है। यह सारिणी जिन सूत्रों से बनी है। उनका ज्ञाता ही सूर्यसिद्धान्त का भाष्य लिखने को अधिकार रखता है।

बर्जेस की भयङ्कर त्रुटियाँ-

बर्जेस द्वारा सूर्यसिद्धान्त के कालनिर्धारण की जाँच करें। उन्होंने अपने काल के सूर्यसिद्धान्त एवं आधुनिक वैज्ञानिक मध्यमग्रहों के सायन मान अपनी टीका में दिये हैं। स्पष्टसूर्य का मान निर्धारित करने में बर्जेस ने १७८° की भयङ्कर त्रुटि सर्वत्र की। यह सर्वविदित है कि २२-२३ दिसम्बर को सायनसूर्य की मकर संक्रान्ति होती है, किन्तु बर्जेस ने कर्क में सूर्य दिखाया। बर्जेस ने सूर्य का जो मान १ जनवरी हेतु दिया है, वह जुलाई के आरम्भ का मान है। दूसरी भयङ्कर त्रुटि है बुध के बीजसंस्कार में चिह्न का उलटना, जिस कारण कुल १३° से अधिक की त्रुटि हुई (इस त्रुटि का कारण था बेण्टली)। तीसरी त्रुटि को त्रुटि या लापरवाही के बदले मूर्खता कहना उचित होगा: बर्जेस ने जो सबीज एवं निर्बीज सूर्यसिद्धान्तीय मान दिये हैं वे मूल ग्रन्थ से कदापि मेल नहीं खाते, सभी ग्रहों में लगभग २ अंशों की त्रुटि है। उसने सूर्य का परममन्दफल सभी ग्रहों में घटा दिया, जिसका कोई औचित्य नहीं है। ऐसे अनाड़ी को सूर्यसिद्धान्त का महानतम विशेषज्ञ होने की मान्यता १५० वर्षों से मिली हुई है। इस विचित्र पद्धति द्वारा बर्जेस ने जो मान निकाले, उसके आधार पर सूर्यसिद्धान्त का काल २५० ईस्वी निर्धारित किया। उसे यह नहीं सूझा कि सायन सूर्य में १८६० ईस्वी में जो त्रुटि उसे मिली थी

उसमें निरयन वर्षों के अन्तर से नहीं, सायन वर्षों के अन्तर से भाग देना चाहिए था। गणना की पद्धति में एकरूपता नहीं रखने वाले को स्कूल की परीक्षा में उत्तीर्ण होना असम्भव हो जाता है। किन्तु बर्जेस मूर्ख नहीं था, और उसे महानतम भाष्यकार बताने वाले भी मूर्ख नहीं हैं। ये लोग मूर्ख नहीं, दुष्ट और बेईमान हैं। इन्हें मालूम था कि सायन वर्ष में अन्तर को सायन वर्ष के अन्तर से भाग देने पर सूर्य में शून्य त्रुटि का काल सुदूर प्रागैतिहासिक ईसापूर्व १००६ में चला जायगा। इस निष्कर्ष से बर्जेस घबड़ा गया, क्योंकि ऐसा यदि वह लिखता भी तो पश्चिम में उसकी पुस्तक प्रकाशित नहीं हो पाती। अतः उसने सायन अन्तर को जानबूझकर निरयन से भाग देकर २५० ईस्वी निकालने की बेईमानी की।

सही गणना करता तो मध्यम मान ७८२ ईस्वी और स्पष्ट मान ९०८ ईस्वी में मिलते। बर्जेस ने जिस बचकाने तरीके से सूर्यसिद्धान्त का काल निर्धारण किया और जिस हठधर्मिता के साथ समूचा पाश्चात्य जगत् ऐसे गलत भाष्यकार की वकालत में जुटा है वह अत्यन्त दुःखद है।

सच्चाई यह है कि टॉलेमी और ग्रीस के पूर्ववर्ती आचार्यों ने पूर्व से ज्योतिष सीखा, किन्तु बाद में भौतिकवाद का वर्चस्व होने के कारण ग्रीक ज्योतिष को दृक्पक्षवादी बनाने का प्रयास हुआ, जिसमें टॉलेमी की अग्रणी भूमिका है। भारत में भी ऐसे प्रयास होते रहे हैं; किन्तु सूर्यसिद्धान्त सदा ऐसे चार्वाकपन्थियों के विरुद्ध हिमालय की भाँति डटकर खड़ा रहा। भारतीय ज्योतिष वेद का अङ्ग रहा है। जैसा कि आदि शङ्कर बृहदारण्यकोपनिषद के भाष्य में लिखा है, बाह्य चक्षु द्वारा आत्मा, परमात्मा, परलोक, कर्मफल जैसी वस्तुओं का ज्ञान नहीं होता, ऐसी वस्तुओं का जो ज्ञान कराये उसे वेद कहते हैं। सङ्कलित मन्त्रों की संहिता वेद है, किन्तु वेद इससे कहीं अधिक है। वेद वास्तविक ज्ञान को कहते हैं। ऐसा ज्ञान जो मरने के बाद भी साथ न छोड़े। जन्म-जन्मान्तरों के कर्मफल से बने संस्कार तले जीव दबा रहता है। संस्कारवश नये कर्म करता है और फिर अपने ही बुने कर्मफल के जाल में फँसता चला जाता है। इसी जञ्जाल से उद्धार का उपाय है वेद। जिसकी आँख है ज्योतिष। ज्योतिष कर्मफल का ऐसा प्रत्यक्ष दर्शन कराता है कि मूर्ख से मूर्ख व्यक्ति की भी आँख खुल सकती है और वह आत्मकल्याण का मार्ग पकड़ सकता है। मनुष्य के सुख दुःख पिछले कर्मों के फल हैं। यह देख लेने के बाद जीव में अच्छे कर्म करने की प्रेरणा जागती है। अच्छे कर्मों द्वारा ग्रहशान्ति होती देखकर यह प्रेरणा और भी बलवती होती है। भारतीय ज्योतिष के पीछे जो जीवन दर्शन है वह भारतीय धर्म का अभिन्न अङ्ग है। भारतीय ज्योतिष भारतवर्ष की आत्मा से अभिन्न रूप से जुड़ा है। भारतीय ज्योतिष का गणित भी अपने आप में परिपूर्ण और समग्र है। ऐसा युगविधान विश्व के किसी अन्य अशुद्ध है-ज्योतिष में नहीं मिलेगा। इस युगविधान को पाश्चात्य लेखकों ने भारतीयों की कृत्रिम खोज घोषित किया, किन्तु इसी युगविधान पर समस्त सौरपक्षीय एवं वपक्षीय गणित खड़ा है। जिस सौर वर्ष को अशुद्ध कहा जाता है, उसके आधार पर न केवल दृपक्षीय सृष्टि का गणित खड़ा है, ब्रह्मा जी की परम का ऐसा गणित भी इस पर आधारित है जिसकी सूक्ष्मता मानवीय बुद्धि से परे की चीज है। यह गूढ़ सौरगणित हाल ही में प्रकाशित हुआ है। भारतीय ज्योतिषमें जो कुछ भी अभारतीय है वह हेय और त्याज्य है। ताजिक नीलकण्ठी द्वारा अशुद्ध वर्षफल बनता है, सूर्यसिद्धान्त द्वारा वर्षफल एवं मासफल सर्वथा शुद्ध बनते हैं।

इन सभी भौतिकवादियों ने इस तथ्य की अनदेखी की कि सूर्यसिद्धान्त के दो पक्ष हैं : सौरपक्ष एवं दृक्पक्ष सौरपक्ष प्राथमिक है; दृक्पक्ष गौण सा है। सौरपक्ष का उपयोग पञ्चाङ्ग एवं फलित हेतु होता आया है। दृक्पक्ष का उपयोग पञ्चभौतिक जगत् को परमसत्य समझने वाले भौतिकवादियों के विरुद्ध शास्त्र की रक्षार्थ किया जाता था। प्राचीन भारत में दृक्पक्ष के कई आचार्य हुये, किन्तु उनके कार्यों के छिटपुट अंश ही शेष हैं। सूर्यसिद्धान्त वेद का अङ्ग है, कालातीत है। न तो वेद- वेदाङ्ग की कभी रचना होती है, और न ही इनका कभी लोप हो सकता है। आज भी जो द्विज ब्रह्मचर्यपूर्वक विधिवत् ऋषियज्ञ करेगा वह किसी भी वेद-वेदाङ्ग की लुप्त शाखायें भी आवश्यकता पड़ने पर प्राप्त कर सकता है। **सूर्यसिद्धान्त का जो स्थूल स्वरूप आजकल उपलब्ध है, उसी में सूर्यसिद्धान्त के विस्मृत अंशों के भी बीज निहित हैं। सूर्यसिद्धान्त का अलौकिक गणित जो भलीभाँति समझ लेगा वह ऐसे विलक्षण ग्रन्थ को पौरुषेय कदापि नहीं मान सकेगा।**

सूर्यसिद्धान्त के कालनिर्धारण की विधि ही अशुद्ध है -

सौरपक्षीय सूर्य या शनि के मान जिस काल में दृक्पक्षीय मान के तुल्य हों, वही सूर्यसिद्धान्त का रचनाकाल होगा, यह मात्र एक भौतिकवादी पूर्वाग्रह है। **सूर्यसिद्धान्त की रचना न तो १०९१ या २५० ईस्वी में हुई थी, और न ही ३१०२ या ४००० ईसापूर्व में, क्योंकि ऐसा कोई काल नहीं है जिसमें सभी ग्रहों के सारे लक्षण दृक्पक्ष से साम्य रखते हों।** आधुनिक विद्वानों का दृढ़ विश्वास है कि सौरपक्षीय सायनवर्ष का मान निर्धारित करने में भूल हुई थी। अतः दृक्पक्षीय सायनवर्ष से सौरपक्षीय सायनवर्ष मेल नहीं खाता। इस कल्पित त्रुटि के आधार पर सूर्यसिद्धान्त का रचनाकाल निर्धारित किया जाता है। सौरपक्षीय वर्षमान को अशुद्ध मानकर उसके आधार पर सूर्यसिद्धान्त का कालनिर्णय करने की विधि ही गलत है। सूर्यसिद्धान्त के विज्ञानसम्मत होने के अकाट्य प्रमाण ग्रन्थाकाररूप में प्रकाशित हो चुका है। इस ग्रन्थ में प्राचीन भारतीय तथा पाश्चात्य सिद्धान्तों की गूढ़ पहेलियों के समाधानों का स्रोत सूर्यसिद्धान्त में होने के भी प्रमाण दिये गये हैं। इस गूढ गणित की यहाँ चर्चा सम्भव नहीं है। सूर्यसिद्धान्त की सत्यता के कुछ सरल एवं अकाट्य प्रमाणों की यहाँ चर्चा करते हैं।

ग्रीनविच इंग्लैण्ड का केन्द्र है भूगोल का नहीं-

भारतीय ज्योतिष का विश्व को सबसे पहला योगदान तो यही हैं कि भारत ने ही विश्व को उज्जैन दिया है जहाँ से सृष्टि के आरम्भ में ग्रहों की गति आरम्भ होती है। भूत, वर्तमान और भविष्य तीनों कालों का दर्शन ज्योतिष कराता है। अतः काल के इस विज्ञान का आरम्भ महाकाल के मन्दिर से होना स्वाभाविक ही है। भारत के सभी सिद्धान्तों में ग्रहगणित उज्जैन से ही बनता है। तत्पश्चात् उसमें देशान्तर संस्कार करके इष्टस्थान के पञ्चाङ्ग बनते हैं। ग्रीनविच तो इंग्लैण्ड का ही केन्द्र है, किन्तु धन और तलवार के बल पर उसे भूगोल का केन्द्र घोषित किया जाता है, जो कि सरासर अवैज्ञानिक प्रयास है। उज्जैन वास्तव में काल का आरम्भ बिन्दु न होता तो ऐसे सिद्धान्त के आधार पर बने पञ्चाङ्गों और कुण्डलियों के फलादेश वास्तव में घटित न होते। इस तथ्य के हमारे पास अकाट्य प्रमाण हैं जिनकी जाँच जो कोई चाहे कर सकता है।

उज्जैन, विदिशा और मेरु का महत्त्व-

उज्जैन देश का नहीं, काल का केन्द्र है। देश का केन्द्र भारत के लिए विदिशा और सृष्टि के लिए मेरु है। प्राचीन भारत को उत्तर-दक्षिण और फिर पूर्व-पश्चिम बराबर भागों में विभक्त करें तो केन्द्र में विदिशा मिलेगी। प्राचीन भारत से यहाँ तात्पर्य है सिन्धु से लेकर कामरूप तक के ब्रह्मपुत्र के बीच का प्रदेश। विदिशा का महत्त्व यही है कि मानचित्र पर राशिचक्र को रखकर विदिशा से यदि

कुण्डली बनाई जाय तो वह पूरे राष्ट्र का फल बताती है। मानचित्र पर स्थिर राशिचक्र इस प्रकार रखा जाता है कि मेष का मध्य सदैव पूर्व में रहे। स्थिर राशियों पर भावचलित चलायमान रहता है। स्थिर राशिचक्र के अनुसार ग्रहों के उच्च-नीच, वैर- मैत्री आदि बनते हैं, और भावफल भावचलित द्वारा बनाया जाता है। मेषसंक्रान्ति कालीन कुण्डली से वर्ष भर के राष्ट्रीय आय - व्यय, कृषि, उद्योग-व्यापार, वाणिज्य, युद्ध आदि के साथ-साथ क्षेत्रानुसार साल भर की वर्षा का पूर्वानुमान लगता है। नक्षत्र सञ्चारकालीन कुण्डलियों से वर्षा का ज्ञान होता है। विदिशा के बदले किसी दूसरे स्थान से गणना करने पर फलादेश घटित नहीं होता। राष्ट्रकेन्द्र होने के कारण अर्थात् दिशाओं के मध्य में होने के कारण ही ऋषियों ने विदिशा नाम रखा। विदिशा से बनी कुण्डलियों द्वारा वर्षा की भविष्यवाणियों की जाँच पिछले कई वर्षों से की जा रही है। ये फलादेश सत्य सिद्ध हुए हैं।

विज्ञान की विश्वप्रसिद्ध अमेरिकी संस्था नासा के मुख्यालय की क्लाइमेट नाम की शाखा में इन भविष्यवाणियों की जाँच हुई, जिसकी रिपोर्ट रखी हुई है। बङ्गलूर के 'इण्डियन इंस्टिट्यूट ऑफ सांइस' की अङ्गीभूत संस्था 'सेण्टर फॉर एटमॉसफेरिक एण्ड ऑर्सनिक सांइस' ने भविष्यवाणियों पर शोध लेख को जाँच के बाद अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन हेतु स्वीकृति दी। यह दूसरी बात है कि उस लेख में जानबूझकर ज्योतिष की चर्चा नहीं की गई थी, क्योंकि कई वैज्ञानिक ज्योतिष का नाम सुनते ही बिदक जाते हैं। राष्ट्रीय ज्योतिष की गिनती गोपनीय विद्याओं में होती थी, क्योंकि शत्रु राज्यों से अपने राज्य का भविष्यफल छुपाना आवश्यक समझा जाता था। मुस्लिम और ईसाई वर्चस्व के युगों में राष्ट्रीय ज्योतिष को राज्याश्रय नहीं मिला। आर्थिक लाभ का अभाव तथा गोपनीयता, इन्हीं दो कारणों से राष्ट्रीय ज्योतिष की व्यावहारिक प्रक्रियाओं को कालान्तर में लोग भूल गये।

मेरु का रहस्य नहीं खोज सके विदेशी-

विदिशा में मेष संक्रान्ति की कुण्डली द्वारा भारत के सभी द्वादश भावों में स्थित प्रदेशों का वर्षा सम्बन्धी पूर्वानुमान लग जाता है, किन्तु पूरे राष्ट्र की वार्षिक वर्षा का पता नहीं चलता। इसके लिए मेरु से मेष संक्रान्ति कालीन कुण्डली बनानी पड़ती है। सूर्यसिद्धान्त में वर्णित है कि मेरु जम्बूनद के प्रदेश में भूमध्य में है, जिसका अर्थ बर्जेस ने भूकेन्द्र लगा लिया। भूकेन्द्र में पर्वत या नदी की कल्पना अस्वाभाविक है, किन्तु सूर्यसिद्धान्त को काल्पनिक सिद्ध करना बर्जेस का उद्देश्य ही था। वह एक ईसाई पादरी था। किसी अच्छे एटलस में भूमध्यरेखा पर स्थित माउण्ट केन्या को खोजें। उसी पर्वत की तलहटी में मेरु शहर मिल जायगा। अतः सूर्यसिद्धान्त में भूगोलमध्य का अर्थ भूमध्यरेखा है। मेरु का दूसरा प्रमाण यह है कि मेरु के अक्षांश-रेखांश से सूर्यसिद्धान्त की मूल पद्धति द्वारा जो मेषप्रवेशकालीन कुण्डली बनती है वह पूरे संसार का वर्षफल और वर्षा का फल बताती है। मेरु से बनी कुण्डलियों की जाँच पिछले १३५ वर्षों के सरकारी आँकड़ों द्वारा सम्पन्न हो चुकी है। एक भी अपवाद नहीं मिला। जो कोई चाहे जाँच कर सकता है। मेरु में वर्षकुण्डली बनाकर पूरे कल्प का भूत और भविष्य जान सकते हैं। शर्त यही है कि गणित सूर्यसिद्धान्त की मूल पद्धति से और फलित पराशर के अनुसार हो।

सूर्यसिद्धान्त कलियुग की रचना नहीं है-

मेरु सृष्टि का केन्द्र न होता तो सही फल न देता। मेरु सभी लोकों का सनातन केन्द्र है। कलियुग में लोगों ने मानव जाति के आदि प्रदेश मेरु को भुला दिया। कलियुग के किसी आचार्य ने मेरु की सही स्थिति नहीं बताई। यह सिद्ध करता है सूर्यसिद्धान्त कलियुग की रचना नहीं है। पुराणकारों ने बारम्बार मेरु के सृष्टिकेन्द्र होने की चर्चा की और यहाँ तक लिखा कि ध्रुव भी समस्त तारों के साथ मेरु के चतुर्दिक ही घूमता है। पुराणों के ये अंश भी कलियुग के नहीं हैं। मेरुकेन्द्रिक सृष्टिचक्र का गणित अत्यन्त क्लिष्ट है। जिस प्रकार भौगोलिक उत्तर ध्रुव से अक्षांश और रेखांश बनाये जाते हैं, वैसे ही भौगोलिक विषुवत् रेखा पर स्थित मेरु को उत्तर ध्रुव मानकर अक्षांश बनायें और उन्हें ३०-३० अंश की राशियों में बाँटें। इस राशिचक्र पर मेषप्रवेशकालीन भावचलित कुण्डली ही संसार का वर्षफल बताती है। अतः मेरु फलित हेतु उत्तर ध्रुव है, किन्तु आधुनिक टीकाकारों ने वराहमिहिर और भाष्कराचार्य का गलत अर्थ लगाया और कहा कि भौगोलिक उत्तर ध्रुव को मेरु कहते थे। आधुनिक वैज्ञानिक मानते हैं कि केन्या के आसपास ही मानवजाति के प्रथम पूर्वज उत्पन्न हुए थे। पुराणकार भी सृष्टि का आरम्भ मेरू से ही बताते हैं। मेरु से बनी वर्षकुण्डली द्वारा अलग-अलग देशों का वर्षफल जानने के लिए कुछ और भी चक्र हैं।

यामलादि तन्त्र के ग्रन्थों से नरपति ने ८४ चक्रों का सङ्कलन किया, जिनमें से पञ्चशलाका, सप्तशलाका, सर्वतोभद्र, सप्तनाड़ी जैसे चक्रों की जाँच मेरु की वर्षकुण्डली में करने पर अच्छा परिणाम निकला। सभी चक्रों की जाँच अभी तक नहीं हो पाई है, क्योंकि कुछ चक्र तो ठीक से वर्णित ही नहीं है। यह प्राचीन वेदविज्ञान राष्ट्र के लिए बड़ा हितकारी सिद्ध होगा।

पृथ्वी की नाभि की खोज-

मेरु सृष्टि की मुख्य नाभि है। अलग- अलग देशों के लिए राष्ट्रीय नाभियाँ हुआ करती सकते हैं। हैं। भारत की नाभि विदिशा है। टॉलेमी ने भूमध्यसागर के पूर्वी भाग में संसार की नाभि मानी, क्योंकि वह भूमध्यसागर को भूमध्य में स्थित मानता था, जो सत्य नहीं है। अन्य देशों की नाभियाँ कहाँ- कहाँ हैं इसपर मैंने कोई कार्य नहीं किया है, किन्तु जर्मनी और ब्रिटेन के कुछ लोग इस खोज में जुटे हैं। उनका मानना है कि प्राचीन महापाषाणीय वेधशालाओं के भौगोलिक विवरण द्वारा ऐसी नाभियाँ ढूँढ़ी जा सकती हैं। मिस्र और ग्रीस में ऐसी नाभियाँ मिली हैं जहाँ कालसर्प से लिपटे विशालकाय लिङ्ग मिले हैं। इन लिङ्गों को ही नाभियाँ कहा जाता है। इन्हें उज्जैन महाकाल के क्षेत्रीय प्रतिरूप कहना चाहिए। भारत से सम्बन्ध टूट जाने के बहुत बाद ये नाभियाँ बनी होंगी, अतः यह भी सम्भव है कि ये वास्तविक राष्ट्रफल बताने में समर्थ न हों। इस विषय पर शोध की आवश्यकता है। सूर्यसिद्धान्तीय कुण्डली के सॉफ्टवेयर का निःशुल्क वितरण किया जा रहा है। जन्मकाल सही हो तो फलादेश कभी गलत नहीं बनेगा। भारतीय ज्योतिष और उसके साथ-साथ भारतीय धर्म, दर्शन एवं संस्कृति की वैज्ञानिकता का यह सॉफ्टवेयर प्रत्यक्ष प्रमाण है। जो सूर्यसिद्धान्तीय पञ्चाङ्ग बनाना चाहें या राष्ट्रीय ज्योतिष, वर्षा के पूर्वानुमान आदि में रुचि रखते हैं वे भी सॉफ्टवेयर की निःशुल्क सेवा प्राप्त कर सकते हैं।

भारतीय ज्योतिष वेद का अङ्ग है, भौतिकविज्ञान का नहीं। ज्योतिष की सच्चाई की कसौटी फलादेश की सत्यता है, न कि आकाश के भौतिक पिण्ड। अतः सूर्यसिद्धान्तीय गणित और पाराशरी फलित द्वारा फलादेश की जाँच करें, सदा सही फल मिलेगा। खगोलविज्ञान के भौतिक पिण्डों से ज्योतिष के ग्रहों की तुलना में समय नष्ट न करें। क्योंकि हाथ कुछ नहीं लगेगा। माध्यन्दिन शाखा के यजुर्वेद का अन्तिम मन्त्र का अर्थ है : इस हिरण्यमय ढक्कन अर्थात् दृक्पक्षीय माया ने सत्य अर्थात् वेद-वेदाङ्ग का मुख ढाँप रखा है। अतः आप सब से निवेदन है कि इस दृक्पक्षीय ढक्कन को हटाकर सूर्यसिद्धान्त के सत्य का लाभ उठायें-

हिरण्यमयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितंमुखम्। योसावादित्येपुरुषोश्सोसावहम्।। ॐ खं ब्रह्म ।।

(अखिल भारतीय विद्वत् परिषद् की 'त्रिस्कन्ध ज्योतिषम्' के जुलाई, २०१०, अंक से साभार)

❊ गृहप्रवेश से भी महत्त्वपूर्ण है गृहारम्भ मुहूर्त्त ❊

गृहारम्भ यानि नींव का मुहूर्त्त भूमि का गर्भ धारण कहा गया है। जिस प्रकार जितना उत्तम गर्भ होता है उतनी ही उत्तम सन्तान होती है, उसी प्रकार भूमि का नींव रूपी गर्भाधान जितना उत्तम होता है वह गृह भी उतना ही उत्तम व शुभदायक बनता है। गर्भकाल में जिस तरह सुभद्रा ने अभिमन्यु को संस्कृत किया था, उसी तरह भूमि को नींव मुहूर्त्त से गृहप्रवेश के मध्य गर्भकाल में संस्कृत करना चाहिए। गृहारम्भ/नींव मुहूर्त्त रूपी भूमि के गर्भाधान के लिए वास्तुशास्त्र में बताए गए विधान को जितना समग्रता से किया जाए वह गृह उतना महान् बनता है। विश्वकर्मावास्तुशास्त्र ६.१६-१७ में कहा गया है,

स्त्रीगर्भेण यथा जीवो वर्धते भुवि नित्यशः । तथा भूगर्भमाहात्म्यात् जीवराशिस्तु वर्धते ।।
तत्रत्यानां सुखं दिव्यं यावद्गर्भो न नश्यति । तस्माद्गर्भं शिल्पिवरैश्शाश्वतं कारयेद्भुवि ।।

१. नींव मुहूर्त्त श्रेष्ठतम शुभ मुहूर्त्त में, उचित दिशा में करना चाहिए। मुहूर्त्त जितना ही शुद्ध होगा भवन निर्माण उतनी ही निर्विघ्नता से होगा व उस भवन में सदा शुभता भी बनी रहेगी, क्योंकि गृहारम्भ की कुण्डली ही उस भवन की कुण्डली वास्तुशास्त्र में बताई गई है। हमने देखा है क्षयतिथि में जिसने मुहूर्त्त किया उनके निर्माण कार्य का भी क्षय हो गया।

२. शास्त्र में बताए गए श्रेष्ठ, शुभ, मंगल पदार्थों की नींव में प्रयत्नपूर्वक स्थापना करनी चाहिए। नींव मूहूर्त्त से पहले इन्हें परिश्रम करके इकट्ठा करना चाहिए। नींव में डाली गई शुभ वस्तुएं तब तक रहती हैं जब तक वह भवन रहता है, इन्हें कोई चोरी नहीं कर सकता, पर भवन की कोख में रहकर यह उस भूमि को ऊर्जावान कर देती हैं। नींव का गर्त रूपी यह गर्भ अटल सम्पदा होती है, व किसी पदार्थ के कम रहने पर या गर्भन्यास न होने पर यह उस निर्मित भवन व उसके निवासियों के लिए विपत्तियों का कारण बनता है। मयमतम् १२.२-३ में मयाचार्य ने कहा है, *सर्वद्रव्यैस्तुसम्पन्नं गर्भं तत्सम्पदां पदम् ।*
द्रव्यहीनमसम्पन्नं गर्भं सर्वविपत्करम् ।। तस्मात्सर्वप्रयत्नेन गर्भं सम्यग् विनिक्षिपेत् ।

यहाँ मयाचार्य द्वारा बताए गए नींव में डालने योग्य शुभपदार्थों की सूचि दी जा रही है:-

धान्य- गेंहू, चावल, मूंग, उड़द, जौ, तिल, सावाँ, तिन्नी, कुलथी, लाल मसूर, चना, कुल्थी, **रत्न**-पंच, सप्त या नवरत्न मोती, माणिक्य, मूंगा, पन्ना, पुखराज, हीरा/जर्कन, गोमेद, नीलम, लहसुनिया, **धातु**-पंचधातु आदि, सोना, चाँदी, तांबा, लोहा, राँगा, काँसा, सीसा, पारा, अभ्रक, **मिट्टियाँ**-राजद्वार की, हाथीशाला की, हाथीदाँत के अग्रभाग से खोदी हुई, साँड़ की खोदी हुई, गौशाला की, पर्वतशिखर की, वराह की खोदी हुई, अपने कुलदेवी-देवता के स्थान की, अपने इष्ट तीर्थस्थानों की, नदीतट-नदियों की, घोड़ाशाला की, चौराहे की, कमलसमूह के नीचे की/जड़, बिमौट दीमक की, अपने नगर के प्रमुख मंदिरों, तीर्थस्थानों की, खेत की, खस, **शुभ जल**- तीर्थों का जल, गंगाजल, नदियों के जल, सुगंधित जल, सर्वऔषधि जल, पंचामृत, शस्यपुष्पमिश्रित जल, स्वर्ण-रत्न मिश्रित, गाय के सींग से छुआ हुआ जल, पंचगव्य, गौमूत्र, अपराजिता, रक्तचन्दन, अगरु, श्रीखण्ड, सर्वौषधि, समुद्री शैवाल, लाल-कमल, नीलकमल, दूर्वा, इलायची, लौंग, शुभ वृक्षों की गोंद, पत्र, लकड़ी आदि, १२ अंगुल खैर की लकड़ी, बरगद, गूलर, पीपल, आम, जामुन, नवग्रह समिधा, सोने/चांदी का सर्प, चाँदी का कछुआ, शंख, चाँदी का सुअर, चाँदी का सिक्का, तांबे का लोटा। अधिक शुभता के लिए सामर्थ्यानुसार और भी वस्तुएं बताई गई हैं- चाँदी का सांड, चाँदी का घोड़ा, लोहे का सिंह, चाँदी का हाथी, स्वस्तिक, लोहे का हल, तांबे का केकड़ा, तलवार, धनुष, दण्ड, चक्र आदि।

गृहारम्भ नींव मूहूर्त्त से पूर्व भूमि की शुद्धि व पवित्रता भी आवश्यक है। भूमि शुद्धि के लिए मनुस्मृति ५.१२४ में कहा है कि, भूमि पर झाड़ू लगाना, गोमूत्र, गङ्गाजल आदि का अच्छे से छिड़काव कर गोबर से लीपना-पोतना, सींचना, और गायों को लाकर बान्धना, इन पाँच प्रकारों से भूमि की शुद्धि होती है।

सम्मार्जनोपाञ्जनेन सेकेनोल्लेखनेन च। गवां च परिवासेन भूमिः शुद्ध्यति पञ्चभिः।।

भूमि शुद्धि के लिए गायों का महत्त्व सर्वोपरि है। **मयमतम् में मयाचार्य कहते हैं**, ''वास्तुनिर्माण हेतु ग्रहण की जा रही भूमि में खुदाई कर अनेक प्रकार के गोबरमिश्रित बीजों को उसमें बो देना चाहिये। उन बीजों के उग जाने और उनमें पके हुए फल देखकर सांड़ एवं बछड़ों के साथ गायों को वहाँ बसा देना चाहिए, क्योंकि गायों के वहाँ चलने एवं सूँघने से वह भूमि पवित्र हो जाती है। प्रसन्न वृषों के नाद से एवं बछड़ों के मुख से गिरे हुये फेन से भूमि परिष्कृत हो जाती है एवं उसके सभी दोष धुल जाते हैं। गोमूत्र से सींची गई तथा गोबर से लीपी हुई, गायों के शरीर रगड़ने से गिरे हुये रोमों से युक्त, तथा गायों के पैरों द्वारा किये गये खेल से भूमि शुद्ध हो जाती है। गाय के गन्ध से युक्त, इसके पश्चात् पुण्यजल से पुनः पवित्र की गई भूमि पर निर्माणकार्य के लिये शुभ तिथि नक्षत्र से युक्त मूहूर्त्त का विचार करना चाहिए।''

कृष्ट्वा गोमयमिश्राणि सर्वबीजानि वापयेत् । दृष्ट्वा तानि विरूढानि फलपक्वगतानि च ।।
सवृषाश्च सवत्साश्च ततो गास्तत्र वासयेत् । यतो गोभिः परिक्रान्तमुपघ्राणैश्च पूजितम् ।।
संहृष्टवृषनादैश्च निर्धौतकलुषीकृतम् । वत्सवक्त्रच्युतैः फेनैः संस्कृतं प्रस्नवैरपि ।।
स्नातं गोमूत्रसेकैश्च गोपुरीषैः सलेपनम्। च्युतरोमन्थनोहारैर्गोष्पदैः कृतकौतुक ।।
गोगन्धेन समाविष्टं पुण्यतोयैः शुभं पुनः। पुण्यतिथोपेते नक्षत्रविषये शुभे।। *- मयमतम् ४.४-८*

गृहारम्भ कालिक कुंडली में विभिन्न राशियों, भावों, नक्षत्रों में स्थित ग्रहों के आधार पर भवन का विस्तृत फल वास्तुशास्त्र में बताया गया है। वर-वधु के विवाहार्थ मेलापक की तरह गृहारम्भ नक्षत्र के साथ गृहस्वामी के जन्मनक्षत्र का मेलापक देखने का भी निर्देश है। अतः गृहारम्भ कालिक कुंडली, नवांश आदि की शुद्धि करवाकर श्रेष्ठ मूहूर्त्त में गृहारम्भ (नींव मुहूर्त्त) करना चाहिए। भगवान् विश्वकर्मा कहते हैं-

न दोषो यत्र वेधादिर्नवं यत्राखिलं गृहम् । बहु द्वाराणि नो यत्र यत्र स्याद् धान्यसंचयम् ।।
पूज्यन्ते देवता यत्र यत्रान्वेक्षणमादरात् । रक्ता च जनिका यत्र यत्र स्यान्मार्जनादिकम् ।।
यत्र ज्येष्ठ-कनिष्ठादिव्यवस्था सुप्रतिष्ठिता । मा स्वीयपरजो भावो यत्र स्यात्समतीर्थता ।।
दीप्यते कोषको यत्र पालनं यत्र रोगिणाम् । श्रान्तसंवाहना यत्र तत्र स्यात्कमला गृहे ।।

जिस घर में यह १३ गुण होते हैं, उस गृह में चिरकाल तक लक्ष्मी निवास करती है :-

१. नवनिर्मित भवन की वास्तु का परिपूर्ण होना।	८. अतिथियों का आदर सत्कार।
२. भवन का वास्तुशास्त्रोक्त वेधादि दोष से रहित होना।	९. घर की उत्तम स्वच्छता।
३. घर में बहुत अधिक द्वारों का न होना।	१०. बालकों की प्रसन्नता।
४. देवताओं, गुरु में श्रद्धा, और उनका पूजन।	११. छोटे-बड़ों का दूसरे के प्रति कर्त्तव्य।
५. आपस में अपने पराए के भेद-भाव से रहित व्यवहार।	१२. घर में कोई रोगी हो तो उसकी सेवा।
६. गृहस्वामी का दीन-हीनता से मुक्त होकर हर्षित रहना।	१३. जन्म देने वाली माताओं की सेवा।
७. गाय घोड़ों यानि पशुओं को भी विश्राम देना।	

श्रीमद्भागवत महापुराण ४.२२.११ में कहा गया है,

व्यालालयद्रुमा वै तेऽप्यरिक्ताखिलसम्पदः। यद्गृहास्तीर्थपादीय-पादतीर्थविवर्जिताः।।

जिन घरों में तीर्थपाद महाभागवतों के चरणामृत का छिड़काव नहीं हुआ हैं, वे घर सम्पूर्ण समृद्धियों से परिपूर्ण होने पर भी सर्पों से भरे हुए वृक्षों के समान मृत्यु का भय प्रदान करने वाले होते हैं।

गृहवास्तु जितना शुभ होगा, भवनवासियों की बुद्धि और जीवन भी उतना ही शुभ होगा, व जिन्हें देवताओं, गुरुजनों में श्रद्धा होती है, उनका वास्तु भी शुभ हो ही जाता है, क्योंकि वह सभी सुखों का आधार है।

- मुदित मित्तल
7737114950

❊ मासफल २०८० ❊

- डॉ. पारसनाथ ओझा

(२२ मार्च २०२३ से ८ अप्रैल २०२४ तक)

❊ चैत्रशुक्ल - वैशाखकृष्ण २ अप्रैल-३० अप्रैल

चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त, ग्रहों के राशि नक्षत्र संचार के अनुसार देश के उच्च स्तरीय राजनेताओं में परस्पर आन्तरिक विरोध, निम्नस्तरीय तथा नीच प्रवृत्ति के लोगों द्वारा चोरी, डकैती, अपहरण, छिनैती जैसी अशोभनीय घटनाएँ होंगी। अनेक रोगों से जनता में भय तथा मानसिक तनाव बना रहेगा। जंगली जानवरों के लिए क्षतिकारक रहेगा। जौ, गेहूँ, दूध, ईख आदि में औसतन मन्दी रहेगी। झंझावात के साथ यत्र-तत्र खण्डवृष्टि होगी। जिससे चैती फसल के लिए क्षतिकारक रहेगा। *बुधेऽश्विन्यां तु पीड्यन्ते गोधूमश्च यवादयः। इक्षुदुग्धरसादीनां समर्घ च घृतादिषु।।*

❊ वैशाखशुक्ल - ज्येष्ठकृष्ण १ मई-३० मई

चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त एवं ग्रहों के राशि नक्षत्र संचार के अनुसार इस मास में चोरी, डकैती, अपहरण, छिनैती आदि की घटनाएँ होंगी। राजनेताओं के आपसी विवाद से देश की मान सम्मान पर ठेस पहुँचेगा। जौ, गेहूँ, और तरलीय पदार्थो मन्दी रहेगी। सुवर्ण, चाँदी मे तथा इनसे निर्मित वस्तुओं में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। तिल, वस्त्र, कपास, सुपाड़ी, नारियल आदि में तेजी रहेगी।

'पूभामहीजे तिलवस्त्र सूत्र कर्पास पूगादि महर्घता वा''

❊ ज्येष्ठशुक्ल - आषाढकृष्ण ३१ मई-२९ जून

चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त ग्रहों के राशि नक्षत्र सचार के अनुसार इस मास के प्रारम्भ में झंझावात के साथ अल्पवृष्टि होगी। मास के उत्तरार्ध में कृषियोग्य वृष्टिहोगी। तुष्य, धान्य, कपास, सूत, तिल, तिलहन, दलहन, डीजल, पेट्रोल, गैस आदि के दामों में तेजी रहेगी। सुवर्ण, चाँदी, ताँबा तथा गृह निर्माण की वस्तुओं में तेजी रहेगी। सुभिक्ष रहेगी। अन्न, धन, लक्ष्मी से प्रजा प्रसन्न रहेगी। रोग की अधिकता देखी जायेगी।

सौख्यं सुभिक्षं क्षितिजे सपौष्णे नरेषु रोगाः बहुधान्यलक्ष्मी।

❊ आषाढशुक्ल - श्रावणकृष्ण ३० जून-२८ जुलाई

चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त ग्रहों के राशि नक्षत्र संचार के अनुसार मास के पूर्वार्ध में झंझावात के साथ कृषि योग्य वर्षा होगी। गेहूँ, यव, तिल, मसूर, मटर, चना, तेलहन, दलहन आदि में तेजी रहेगी। मास के उत्तरार्ध में उपर्युक्त वस्तुओं में औसतन न्यूनता आयेगी। यत्र-तत्र ग्रहपात्, आकाशीय विद्युत पात, जलपात, जलप्रवाह आदि से धन की क्षति होगी। शिशुओं के लिए कष्टप्रद रहेगा। विप्रगण अपने-अपने कर्मों से च्युत होते दिखाई देंगे, जिससे सत्कर्मों में न्यूनता देखी जायेगी। *गोधूमतिलमाषादि समर्घ सुखिनो जनाः। आर्द्रायां वृष्टिरतुला ग्रहपाता प्रवाहतः ।।*

❊ श्रावणशुक्ल - भाद्रकृष्ण २९ जुलाई-२७ अगस्त

चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त ग्रहों के राशि नक्षत्र संचार के अनुसार इस मास में यत्र-तत्र वर्षाधिक्य के चलते धान्य की फसल की क्षति, जनधन की क्षति, प्रजा में भय की स्थिति, राजनेताओं में परस्पर तनाव की स्थिति, सीमा विवाद की स्थिति पूर्ववत् रहेगी। मास के उत्तरार्ध में धान्य तुष धान्य, गेहूँ, चावल, दलहन, तेलहन, चाँदी, सोना, दूधाऊ पशुओं में तेजी रहेगी। आश्रमवासियों के लिए उत्तम नहीं रहेगा।

सर्वदेशग्रामपीड़ा धान्यानां च महर्घता।
कृत्तिकायां देशभंगो पीडा तापस आश्रमे ।।
पूफायां नृप संग्रामः क्षेत्रबाधान मन्दता ।

❊ भाद्रशुक्ल - आश्विनकृष्ण २८ अगस्त-२५ सितम्बर

चन्द्रदर्शन मुहूते ग्रहों के राशि नक्षत्र संचार के अनुसार पूर्वार्ध में कृषि योग्य वर्षा होगी। मास को - उत्तरार्ध में खण्डवृष्टि होगी। धान में रोग की सम्भावना अधिक रहेगी। जनता में अनेक प्रकार के रोग, कष्ट रहेंगे। प्रजा भययुक्त रहेगी। वृक्षों मे रोग व्याप्त रहेगा। पालतु जानवरों के लिए कष्ट्रप्रद रहेगा। कपास, सूत में तेजी रहेगी।

वृक्षपीडाश्चापदानां रोगः स्याद्रोहिणी कुजे ।
महर्घतापि कार्पासे वस्त्रे सूत्रे विशेषतः ।।

❊ आश्विनशुक्ल - कार्तिककृष्ण २६ सित.- २५ अक्टू.

चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त ग्रहों के राशि नक्षत्र संचार को अनुसार इस मास के पूर्वार्ध में कृषियोग्य वर्षा होगी। मास के उत्तरार्ध में खण्डवृष्टि होगी। कन्याबुधः बहुधान्यसौख्यम्' अर्थात् कार्तिकी धान की उपज अच्छी होगी। गुड़, खण्ड, लवण, घी, धान्य, कपास, तेलहन, दलहन आदि में तेजी-रहेगी। विक्री करने वाले को चतुर्गुणित लाभ होगा। *लवणं घृत तैलादि सर्वधान्यमहर्घता। कार्पासस्यार्थ सम्प्राप्तिः लाभः तेषां चतुर्गुणः।।*

❊ कार्तिक शुक्ल - मार्गशीर्षकृष्ण २६ अक्टू.-२३ नव.

चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त एवं ग्रहों के राशि नक्षत्र संचार के अनुसार इस मास में यत्र-तत्र खण्डवृष्टि होगी। प्रजा में सुखशान्ति तथा सुभिक्ष की स्थिति रहेगी। पालतु जानवरों में रोगादि की बाहुल्यता देखी जायेगी। तरलीय पदार्थों में डीजल, पेट्रोल, शाली गुड़, शुगर, घी, तेल आदि में तेजी रहेगी। साथ ही साथ कपास, सूत, सूती वस्त्र, सुवर्ण तथा सुवर्ण से निर्मित वस्तुओं में औसतन तेजी रहेगी। *सुभिक्षमनुराधायां पक्षिपीडा प्रजासुखम्। ज्येष्ठयामिक्षु शाल्याज्यमहर्घताश्च रोगिता।।*

❊ मार्गशीर्षशुक्ल - पौषकृष्ण २४ नव.-२३ दिस.

चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त एवं ग्रहों के राशि नक्षत्र संचार के अनुसार इस मास में शीताधिक रहेगी। धान की ऊपज अच्छी होगी। धान के भाव में औसतन तेजी रहेगी। गेहूं, चावल, दलहन, तेलहन, पन्सारी की वस्तुओं में तेजी रहेगी। सुवर्ण, चाँदी, ताँबा, लोह में आदि में तथा इनसे निर्मित वस्तुओं में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। प्रजा में प्रसन्नता रहेगी। पशु, पक्षी, बालक, फल, पुष्प, वृक्षादि के लिए पीड़ाप्रद रहेगा। कुरू देश के राजा के लिए उत्तम नहीं रहेगा। *मूले पक्षि पशूनां च बाल पीडा विजायते। धान्यं मन्दं च पूषायां व्याधिर्गीष्मेपि वर्षणम्।।*

❊ पौषशुक्लपक्ष - माघकृष्ण २४ दिस. २०२२-२१ जन २०२३

इस मास में कड़ाके की ठंढ़ी रहेगी। पशु, पक्षी, शिशू, फल, पुष्प, वृक्षादि में रोगाधिक्य होगी। विशेषकर ब्राह्मण क्षत्रियों में लिए कष्ट्दायक रहेगा। धान्य, गेहूँ, चावल, बाजरा, दलहन, तेलहन, मूँग, मक्का तथा पन्सारी की वस्तुओं में तेजी का रूख रहेगा। पीली धातु, चाँदी, ताँबा, अष्टधातुओं में तथा इनसे निर्मित वस्तुओं में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। शुक्र के सुवर्ण द्वार में होने से प्रजा में सुख शान्ति तथा सुभिक्ष की स्थिति बनी रहेगी। *श्रुत्यादिसमके शुक्रोदये सुखं बहु। कनकद्वारमादिष्टं सुभिक्षं तत्र निश्चितम् ।*

❊ माघशुक्ल - फाल्गुनकृष्ण २२ जन. से २० फर.

चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त एवं ग्रहों के राशि नक्षत्र संचार के अनुसार इस मास में शीताधिक्य रहेगी। धान, शाली, तुष्य, घी, तेल, दूध, दही, फल-फूल, खाद्यान्न तथा पन्सारी वस्तुओं के कीमतों में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। सुवर्ण, चाँदी, ताँबा तथा इनसे निर्मित वस्तुओं में औसतन तेजी का रूख बना रहेगा। अन्न की ऊपज अच्छी होगी। विशेषकर आठ वर्षों तक के बालकों के लिए कष्ठ्कारी रहेगा। *उषायां सस्यनिष्पत्तिः अष्ठ्वर्ष शिशूक्षयः ।*

❊ फाल्गुनशुक्ल - चैत्रकृष्ण २१ फर. से २१ मार्च

चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त एवं ग्रहों के राशि नक्षत्र संचार के अनुसार इस मास में गर्मी का प्रारम्भ हो जायेगा, विदेशी मुद्राओं में स्थिरता बनी रहेगी। देश के उच्चस्तरीय राजनेताओं में परस्पर विरोध की स्थिति बनी रहेगी। जिससे देश की आर्थिक स्थिति पर प्रभाव पड़ेगा। सुवर्ण, चाँदी, ताँबा में तथा इनसे निर्मित वस्तुओं में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। धान, चना, मंसूर, मटर, अरहर, मूँग-आदि के भाव में स्थिरता बनी रहेगी। कपास कृषि क्षतिकारक तथा खण्डवृष्टि होगी। *कापस नाशः प्रबलं सुभिक्षं। मृगे कुजे भूः जलपूरितेव।।*

❊ श्रीसुदर्शन कवचम् ❊

विनियोग :- ॐ अस्य श्री सुदर्शनकवच-महामन्त्रस्य अहिर्बुध्न्यो भगवान् ऋषि: अनुष्टुप् छन्द: श्रीसुदर्शनमहापुरुषो विष्णुर्देवता, ॐ बीजम्, ह्रीं शक्ति:, क्रौं कीलकम्, श्री सुदर्शन-प्रसाद-सिद्धि-पुरस्सरं ममाभीष्ट-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोग:।

ऋष्यादिन्यासा :- ॐ अहिर्बुध्न्याय भगवते ऋषये नम: शिरसि। ॐ अनुष्टुम्-छन्दसे नमो मुखे। ॐ श्रीसुदर्शन-महापुरुष-विष्णु-देवतायै नमो हृदये। ॐ ॐ बीजाय नमो गुह्ये। ॐ ह्रीं शक्तये नम: पादयो:। ॐ क्रौं कीलकाय नम: सर्वाङ्गे।

दिग्बन्धनम् :-

ॐ नमो भगवते ज्वाला-चक्राय ऐं ह्रीं, प्राचीं दिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते ज्वाला-चक्राय ऐं ह्रीं, आग्नेयीं दिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते ज्वाला-चक्राय ऐं ह्रीं, याम्यां दिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते ज्वाला-चक्राय ऐं ह्रीं, नैर्ऋतिं दिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते ज्वाला-चक्राय ऐं ह्रीं, वारुणीं दिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते ज्वाला-चक्राय ऐं ह्रीं, वायवीं दिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते ज्वाला-चक्राय ऐं ह्रीं, कौबेरीं दिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते ज्वाला-चक्राय ऐं ह्रीं, ऐशानीं दिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते ज्वाला-चक्राय ऐं ह्रीं, ऊर्ध्वां दिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते ज्वाला-चक्राय ऐं ह्रीं, अधो दिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते ज्वाला-चक्राय ऐं ह्रीं, सर्वां दिशं चक्रेण बध्नामि।

विनियोग :- अस्य श्रीसुदर्शन-षडक्षर-महामन्त्रस्य अहिर्बुध्न्यो भगवान् ऋषि:, अनुष्टुप् छन्द:, श्री सुदर्शन-देवता, ॐ बीजम्, ह्रीं शक्ति:, क्रौं कीलकम्, श्रीसुदर्शन-प्रसाद-सिद्धि- पुरस्सरं ममाभीष्ट-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोग:।

ऋष्यादिन्यासा :- ॐ अहिर्बुध्न्याय भगवते ऋषये नम: शिरसि। ॐ अनुष्टुप्-छन्दसे नमो मुखे। ॐ सुदर्शन-देवतायै नमो हृदये। ॐ ॐ बीजाय नमो गुह्ये। ॐ ह्रीं शक्तये नम: पादयो:। ॐ क्रौं कीलकाय नम: सर्वाङ्गे।

कर-न्यासा:- ॐ सं आचक्राय स्वाहा अङ्गुष्ठभ्यां नम:। ॐ हं विचक्राय स्वाहा तर्जनीभ्यां नम:। ॐ स्रां सुचक्राय स्वाहा मध्यमाभ्यां नम:। ॐ रं त्रैलोक्य-रक्षण-चक्राय स्वाहा अनामिकाभ्यां नम:। ॐ हुं ज्वाला-चक्राय स्वाहा कनिष्ठिकाभ्यां नम:। ॐ फट् असुरान्तक-चक्राय स्वाहा करतल-करपृष्ठाभ्यां नम:।

हृदयादि-न्यासा :- ॐ सं आचक्राय स्वाहा ज्ञानाय हृदयाय नम:। ॐ हं विचक्राय स्वाहा ऐश्वर्याय शिरसे स्वाहा। ॐ स्रां सुचक्राय स्वाहा शक्तये शिखायै वषट्। ॐ रं त्रैलोक्य-रक्षण-चक्राय स्वाहा बलाय कवचाय हुम्। ॐ हुं ज्वाला-चक्राय स्वाहा तेजसे नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ फट् असुरान्तक- चक्राय स्वाहा वीर्याय अस्त्राय फट्।

अक्षर-न्यासा :- ॐ नमो मस्तके। ॐ सं नमो भ्रुवोर्मधये। ॐ हं नमो मुखे। ॐ स्रां नमो हृदि। ॐ रं नमो गुह्ये। ॐ हुं नमो जान्वो:। ॐ फट् नम: पादयो:। ॐ भूर्भुव: स्वरोमिति सर्वाङ्गे।

ध्यानम्-

सुदर्शन महाज्वाल सूर्य-कोटि-सम-प्रभ।
अज्ञानान्धस्य मे देव विष्णोर्मार्गं प्रदर्शय।।1।।
यस्य स्मरणमात्रेण विद्रवन्ति सुरारय:।
सहस्रार नमस्तुभ्यं विष्णु-पाणि-तलाश्रय।।2।।
क्षिप्रं सुदर्शन-चक्र ज्वाला-मालातिभीषण।
सर्व-रोग-प्रशान्तिं त्वं कुरु देववराऽच्युत।।3।।
सुदर्शन-महाज्वाल गोविन्द-स्वकरायुध।
तीक्ष्ण-धारमहावेग कोटि-सूर्य-सम-प्रभ।।4।।
त्रैलोक्यं रक्ष रक्ष त्वं दुष्ट-दानव-मर्दन।
सुदर्शन महाज्वाल छिन्धि छिन्धि महागदम्।।5।।
छिन्धि वातं च पित्तं च छिन्धि घोरं महाविषम्।
रुजं दाहं च शूलं च निमिषं जाल-गर्दभम्।।6।।
सुदर्शनस्य मन्त्रेण ग्रहा यान्तु दिशो दश।
चौर-व्यालादयो यान्तु सर्वबाधा प्रशाम्यतु।।7।।

(इति ध्यात्वा पञ्चोपचारै: सम्पूज्य सुदर्शन-षडक्षरमन्त्रमष्टोत्तर- शतं सुदर्शन गायत्रीं च द्वादशवारं जपित्वा सुदर्शन-कवच-पाठं कुर्यात्।)

श्रीसुदर्शन-षडक्षर-मन्त्र :- ''ॐ सहस्रार हुँ फट्''

श्रीसुदर्शन-गायत्री-मन्त्र :- ॐ सुदर्शनाय विद्महे, हेतिराजाय धीमहि, तन्नश्चक्रं प्रचोदयात्।

श्री सुदर्शन-कवचम् :- ॐ नमो भगवते भो भो सुदर्शन दुष्ट-दारिद्र्यं दुरितं हन हन जहि जहि पापं मथ मथ ममाऽऽरोग्यं कुरु कुरु ठ: ठ: ह्रीं ह्रीं ह्रां हुं ॐ सहस्त्रार हुं फट् स्वाहा।

ॐ त्रैलोक्याभयकर्ता त्वमाज्ञापय जनार्दन।
सर्व-दु:खानि रक्षांसि क्षयं नय च सत्वरम्।।
प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च दक्षिणोत्तरयोस्तथा।
रक्षां करोतु सर्वत्र नृसिंहस्य स्व-गर्जनै:।।
श्रीमहावैष्णव रक्ष, दुष्टान् हन हन फट् स्वाहा।।

ॐ सहस्रादित्य-संकाशं सहस्र-वदनं परम्।
सहस्रदो: सहस्रारं प्रपद्येऽहं सुदर्शनम्।।1।।
हसन्तं हार-केयूर-मुकुटाऽङ्गद-भूषणम्।
भूषणोद्भासिताङ्गं च प्रपद्येऽहं सुदर्शनम्।।2।।
स्राकारसहितं मन्त्रं जपता शत्रु-निग्रहम्।
सर्व-दोषस्य हर्त्तारं प्रपद्येऽहं सुदर्शनम्।।3।।
रणत्किङ्किणीजालेन राक्षसघ्नं महाद्भुतम्।
व्याप्तकेशं विरूपाक्षं प्रपद्येऽहं सुदर्शनम्।।4।।
हुङ्कारं भैरवं भीमं प्रपन्नार्त्तिहरं प्रभुम्।
धन-धान्य-प्रदातारं प्रपद्येऽहं सुदर्शनम्।।5।।
फट्-कारान्तमनिर्देश्यं महामन्त्रेण संयुतम्।
शिवं प्रसन्न-वक्त्रं च प्रपद्येऽहं सुदर्शनम्।।6।।
एतै: षड्भि: स्तुतो देवो भगवान् श्रीसुदर्शन:।
रक्षां करोतु सर्वत्र सर्वत्र विजयी भवेत्।।7।।

सर्वस्मिन् वैष्णवे धर्मे प्रीतिं वर्द्धयतां सदा।
सर्व-विघ्नान् समान् दोषान् विनाशयतु सत्वरम्।।8।।
ब्रह्मादिदेव - मुनि - वन्दित - पादपद्मं।
चक्रादि - षोडशभुजं - ज्वलन - प्रकाशम्।।
नानाविद्याभरण - भूषित - चारुगात्रं।
चक्रादिदेवमनिशं हृदि भावयामि।।9।।

शङ्खं चक्रं गदाब्जे शरमसिमिषुधिंचाप-पाशाङ्कुशाब्जान्
बिभ्राणं वज्र-खेटं-हल-मुसल-लसत्कुन्तमत्युग्रदंष्ट्रम्।
ज्वाला-केशं त्रिनेत्रं ज्वलदनलनिभं हार-केयूर-भूषं
ध्याये षट्कोण-संस्थं सकल-रिपु-जन-प्राण-संहार-चक्रम्।।10।।

ॐ नमो भगवते महासुदर्शनाय महोग्राय महाचक्राय महामन्त्र-महावीर-महातेजो भयङ्कराय सर्वदुष्ट-भयङ्कराय सर्वशत्रून् ग्रस ग्रस भक्ष भक्षं, परमन्त्रान् ग्रस ग्रस भक्ष भक्ष, परतन्त्रान् ग्रस ग्रस भक्ष भक्षं, पर-विद्यां ग्रस ग्रस भक्ष भक्ष, दैत्यान् ग्रस ग्रस भक्ष भक्ष, पर-शक्तिं ग्रस ग्रस भक्ष भक्ष, मूढान् ग्रहान् ग्रस ग्रस भक्ष भक्ष, दैत्य-दानव-राक्षसान् ग्रस ग्रस भक्ष भक्ष।

गन्धर्व-यक्ष-भूत-प्रेत-पिशाचान् ब्रह्मराक्षसादीन् ग्रहान् ग्रस ग्रस भक्ष भक्ष, दह दह, मर्दय मर्दय, छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि, खादय खादय कालय कालय, कुरु कुरु, हूँ फट् स्वाहा। ॐ श्रीचक्राय सुदर्शनाय स्वाहा।

प्रार्थना :-

भूम्यां च ह्यन्तरिक्षे च पार्श्वत: पृष्ठतोऽग्रत:।
रक्षां करोतु भगवान् विश्वरूपी जनार्दन:।।
यथा विष्णो: स्मृते: सद्य: संक्षयं याति पातकम्।
तथैव सकलं दु:खं प्रशाम्यतु सुदर्शन:।।

फल-स्तुति :-

इदं वर्म पवित्रं वै सर्वथा भय-नाशनम्।
सर्वाभीष्ट-प्रदं सद्य: सर्व-रोग-निवारणम्।।

इति श्रीसुदर्शन-संहितान्तर्गतं सुदर्शन-कवचं सम्पूर्णम्।

❋ पर्व-त्यौहारों की प्रामाणिकता व एकरूपता के लिए सूर्यसिद्धान्त की अनिवार्यता ❋

गत २ दशकों से पर्वों की एकरूपता में भयावह संकट की स्थिति उत्पन्न हुई है। एकादशी आदि अनेक पर्व दो या तीन दिन हो जा रहे हैं। यदि पर्वों की तिथि में यह वैषम्य सिद्धान्तगत हो तो यह माननीय है परन्तु गणितागत दोष से पर्वों में विखण्डन की स्थिति धर्मशास्त्रीय फल की नाशक है। ध्यातव्य है कि एकादशी को लेकर विभिन्न सिद्धान्त सम्प्रदाय परम्परा के भेद से शास्त्रों द्वारा कथित हैं। स्मार्त्त परम्परा में एकादशी तिथि होने पर दशमी विद्धा एकादशी में भी व्रत होता है। परन्तु वैष्णव परम्परा में एकादशी यदि दशमी विद्धा हो तो वह त्यागकर द्वादशी में व्रत होता है। रामानन्द, गौड़ीय, वल्लभ एवं अन्य वैष्णव सम्प्रदायों में ५५ घटी से अधिक की दशमी का वेध माना जाता है, अर्थात् दशमी मान यदि ५५ घटी से अधिक हो, सूर्योदय से दो घण्टे पूर्व एकादशी प्रारम्भ न हो तो ऐसी एकादशी विद्धा होकर व्रत के लिए त्याज्य होती है। निम्बार्क सम्प्रदाय में मध्यरात्रि का वेध माना जाता है, अर्थात् मध्यरात्रि में एकादशी उपस्थित हो तभी अगले दिन व्रत होता है। यह शास्त्र आधारित भेद परम्परा से पालनीय होता है।

आज से २ दशक पूर्व जब अधिकांश पञ्चाङ्ग सूर्यसिद्धान्तीय रीति से प्रकाशित होते थे तब पर्वों में ऐसा सिद्धान्तगत भेद बहुत कम हुआ करता था व समाज में पर्व की दिनांक को लेकर भ्रम नहीं रहता था। परन्तु जब से '**बाणवृद्धिरसक्षयः**' सिद्धान्त का अपलाप करने वाले दृश्य गणित आधारित पञ्चाङ्ग बढ़े तब से पर्वों का यह सरस संयोग भी टूट गया व एक ही पर्व दो दो दिन होने लग गया।

व्रतपर्वों के काल निर्धारण का सर्वमान्य ग्रन्थ निर्णयसिंधु है, जिसे सभी पञ्चाङ्ग मानते हैं। निर्णयसिन्धुकार आचार्य कमलाकर भट्ट ने पर्व निर्णय हेतु अदृष्ट सूर्यसिद्धान्तीय गणित को वेद के समान कहकर स्वीकार किया है। स्पष्ट है कि व्रत पर्व का सटीक निर्धारण इसी गणित से हो सकता है। पर जब आचार्य कमलाकर के इस निर्णय को नकारकर सूर्यसिद्धान्त को छोड़ दिया जाएगा व भौतिक स्थूल दृश्य गणित अपनाकर उन्हीं के ग्रन्थ से व्रत पर्वों का निर्णय किया जाएगा तो वह निर्णय शास्त्रसम्मत कैसे हो सकेगा?

अदृष्टफलसिद्ध्यर्थं यथार्काद् युक्तितः कुरु।
गणितं यद्धि दृष्टार्थं तद्दृष्ट्युद्भवतः सदा।

– आचार्य कमलाकर भट्ट, सिद्धान्ततत्त्वविवेक, मध्य० ३२६

अर्थात् एकादशी आदि व्रत अदृष्टफल के जनक हैं, इनका निर्णय सूर्यसिद्धान्त-साधित ग्रहों द्वारा करे और जो सूर्यग्रहण आदि प्रत्यक्ष आकाश में दर्शनीय हैं, उनका दृश्यगणित से करे।

आचार्य आनन्दगिरि ने स्मृतिसमुच्चय में कहा है,

सूर्यसिद्धान्तशास्त्रेण सम्मानीता ग्रहाः सदा।
नित्ये कर्मण्युपादेया न तु दृग्गणितागताः।।
सूर्यसिद्धान्तपंचांगं विलोक्यैव प्रवर्तयेत्।
प्रमाणं तदिति ज्ञेयमन्यथा व्याकुलं भवेत्।।

अर्थात् सूर्यसिद्धान्तीय रीत्या प्राप्त ग्रह ही सदा सम्माननीय व नित्यकर्म में उपादेय हैं, दृग्गणित के ग्रह नहीं। सूर्यसिद्धान्त पञ्चाङ्ग का अवलोकन करके ही व्रत उपवसादि शास्त्रीय कर्मों को करना चाहिए। यह पञ्चाङ्ग ही (कालनिर्णय के लिए) प्रमाण है, ऐसा जानना चाहिए अन्यथा किया गया कर्मानुष्ठान व्याकुल (निष्फल या अल्पफल वाला) ही होता है।

सूर्यसिद्धान्तीय पञ्चाङ्ग में व्रत पर्वों का भेद केवल साम्प्रदायिक सिद्धान्त के भेद के कारण आता है अतः बहुत ही कम दृष्टिगोचर होता है, व पर्वों में एकरूपता रहती है। सूर्यसिद्धान्तीय गणित के पञ्चाङ्ग में कभी गणित के दोष से व्रत त्यौहार का विखण्डन नहीं होता। उदाहरणतया वर्तमान संवत् **२०८०** में सूर्यसिद्धान्तीय **श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग** में एक भी एकादशी विभक्त नहीं हुई है। जबकि जयपुरस्थ दृक् पंचांगों में ३ एकादशियाँ वैष्णव स्मार्त्त भेद के कारण विभक्त हुई हैं। संवत् **२०७९** में सूर्यसिद्धान्तीय **श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग** में केवल एक एकादशी- मार्गशीर्ष कृष्ण एकादशी, वैष्णव-स्मार्त्त में विभक्त हुई थी। जबकि जयपुरस्थ दृक् पंचांगों में २४ में से ६ एकादशियाँ वैष्णव स्मार्त्त भेद के कारण विभक्त हुई थीं। यह हैं ज्येष्ठ शुक्ल, भाद्रपद कृष्ण, भाद्रपद शुक्ल, मार्गशीर्ष शुक्ल, फाल्गुन कृष्ण, फाल्गुन शुक्ल। ऐसे ही संवत् **२०७८** में सूर्यसिद्धान्तीय **श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग** में २ एकादशियाँ वैष्णव-स्मार्त्त में विभक्त हुई हैं, व दृश्य पंचांगों में ६ एकादशियाँ विभक्त हुई हैं। जितनी भी अतिरिक्त एकादशियाँ गणितभेद से विभक्त हुई हैं, उसमें त्रुटिपूर्ण तिथि पर बिना पर्व के व्रत करने पर व्रती को कैसे पुण्यफल प्राप्त होगा? अन्य व्रत पर्वों की भी ऐसी ही स्थिति है। स्वयं विचार कीजिए, क्या ऐसा पर्व विखण्डन का कुचक्र शास्त्रसम्मत है? शास्त्रों के स्वानुकूल अंशों को ले लेना, मोहवश अन्यांशों का प्रतिकूलता के कारण छोड़ देना पतन का कारण कारण है।

❋ अखिल भारतीय विद्वत् परिषद् के प्रकाशन ❋

आचार्य डॉ. कामेश्वर उपाध्याय

(राष्ट्रीय महासचिव, अ.भा.विद्वत् परिषद्)

द्वारा विरचित एवं संपादित सद्ग्रन्थ

श्रीसप्तशती	१००/-
ज्योतिषशास्त्र	५००/-
स्वप्नविद्या	२५०/-
हिन्दू जीवन पद्धति	२००/-
नवग्रह-विज्ञान	२००/-
श्रीसप्तशती पूजाविधानम्	१००/-
कात्यायनी तन्त्रम्	१००/-
देवल स्मृतिः	१००/-
अथ कवच संग्रहः	१००/-
वास्तु विद्या	१००/-
राजनीतिक मार्गदर्शिका श्रीमद्भागवद्गीता	१००/-
देवीकवचार्गलाकीलकस्तोत्राणि	१००/-
प्रपा (निबन्धसंग्रह)	१००/-
हिन्दू अंक प्रतीक	५०/-
सूर्य आराधना	५०/-
श्रीमहामृत्युञ्जय-मंत्रसाधना	२५/-
प्राग्जन्मसंस्कार	२५/-
कालसर्प/नागशापशांति	२५/-
नारायणकवच	१०/-
बजरंगबाण	१०/-
मंगलागौरीस्तोत्र	१०/-
वंशवृद्धिकरवंशकवच	१०/-
अभिलाषाष्टकस्तोत्र	१०/-
भारतवर्ष	२५/-
ध्वज का इतिहास	२५/-
शतपथ जीवन	२५/-
उपनिषत् त्रयी	२५/-
कुम्भ-विवाह	५०/-
तत्त्वसमासः	५०/-
दाल्भ्यस्मृतिः	५०/-
इतिहास का उपहास(आचार्य विनय झा)	२५/-

देवतायन, ९६, जानकीनगर, बजरडीहा, वाराणसी, उत्तरप्रदेश-२२१००६, मोबाइल नं.- ९४५१३८३०५१

धर्मनगरी जयपुर के आराध्य देव

श्रीमोतीडूंगरी गणेशजी

श्रीसूर्यनारायण जी, गलताजी

श्रीराधागोविन्ददेवजी

श्रीताड़केश्वर महादेवजी

श्रीशिला माता, आमेर

श्री खोले के हनुमानजी

कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा, 13 नवम्बर 2022 को श्रीमाधोबिहारी जी के मंदिर, जयपुर में आयोजित श्रीनिम्बार्क जयन्ती महोत्सव में श्रीशुकसम्प्रदाय पीठाधीश्वर अनन्तश्रीविभूषित श्रीअलबेलीमाधुरीशरण जी महाराज; जयपुर, महन्त श्रीबनवारीशरण जी महाराज; जूसरी नागौर, महन्त श्रीवृन्दावनदास जी महाराज; वृन्दावन, आचार्य महामण्डलेश्वर श्रीमहन्त स्वामी श्रीपद्मनाभशरण देवाचार्य जी महाराज; जयपुर, महन्त श्रीसर्वेश्वरदास जी महाराज; नायला, आचार्य श्री गङ्गाधर पाठक जी; वृन्दावन, श्री विष्णुकुमार आचार्य जी; वृन्दावन, महन्त श्री संजय गोस्वामी जी, पं. रमाकान्त जी शर्मा; जयपुर द्वारा इस पंचांग को श्रीसर्वेश्वर श्री रासबिहारी सरकार और श्रीनिम्बार्क भगवान् को समर्पित कर विमोचन किया गया।

काशी में हुआ जयपुर की 300 वर्ष पुरानी ज्योतिष परम्परा का सम्मान

अखिल भारतीय विद्वत् परिषद, काशी द्वारा 18 दिसम्बर 2022 को वाराणसी में आयोजित 22वें विद्वत् अलंकरण समारोह में जयपुर के सबसे प्राचीन पंचाङ्ग **''जयविनोदी पंचाङ्ग''** के प्रधान संपादक **पं. श्री आदित्यमोहन जी शर्मा** को ज्योतिष शास्त्र के क्षेत्र में महनीय कार्य हेतु **'विद्वद् भूषण'** की उपाधि प्रदान की गई। 'जयविनोदी जयपुर पंचाङ्ग' महाराजा सवाई जयसिंह के समय से लगभग 300 वर्षों से निरन्तर प्रकाशित हो रहा है। समारोह में स्वामी आनन्द स्वरूप जी महाराज, कन्नौज सांसद श्री सुब्रत जी पाठक, डॉ. कामेश्वर जी उपाध्याय आदि अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

संरक्षक–मार्गदर्शक

श्रीमहन्त
श्रीवृन्दावनबिहारीदास जी
महाराज 'काठिया बाबा'
सुखचर

महन्त
श्रीबनवारीशरण
जी महाराज, प्रन्यासी
अ.भा. निम्बार्काचार्यपीठ

महन्त श्रीवृन्दावनदास जी
महाराज, महामंत्री अ.भा.
श्रीनिम्बार्क महासभा, प्रन्यासी
अ.भा. निम्बार्काचार्यपीठ

आचार्य महामण्डलेश्वर
श्रीमहन्त स्वामी
श्रीपद्मनाभशरणदेवाचार्य
जी महाराज, परमाध्यक्ष
श्रीनिम्बार्क परिषद्

आचार्य श्री विनय झा
गणितज्ञ
श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पंचांग

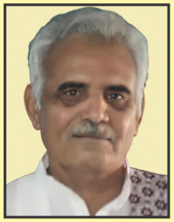
पं. श्री आदित्यमोहन शर्मा
प्रधान सम्पादक
जयविनोदी जयपुर पंचांग

आ. श्री कामेश्वर उपाध्याय
राष्ट्रीय महासचिव
अ.भा. विद्वत्परिषद्

पं. श्री गंगाधर पाठक
मुख्याचार्य श्रीरामजन्मभूमि
शिलापूजन, आयोध्या

श्री सुराचार्यः

श्री भूमिपुत्रः

श्री जयादित्यः

श्री भार्गवः

श्री सौम्यः

श्री सूर्यनन्दनः

यह श्रीसूर्यसिद्धान्त पर आधारित राजस्थान का एकमात्र श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग, श्रीनिम्बार्क परिषद, जयपुर ने सरस्वती प्रिन्टिंग इण्डस्ट्रीज से छपवाकर प्रकाशित किया।

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

श्री सोमः

-:: पञ्चाङ्ग प्राप्ति स्थल ::-

श्रीसर्वेश्वर निम्बार्क सेवाधाम
36 ई (डी), बालाजी ब्लैसिंग 20, श्रीमंगलम गार्डन
से पहले, गणतपुरा रोड, भांकरोटा, जयपुर-26
मो.: 9571108902

मन्दिर श्रीसरसबिहारी जी
मुख्य बाजार, कलवाड़ा
जयपुर-302037
मो.: 7425824413

पंडित मोहित शर्मा
शिवशक्ति ज्योतिष केन्द्र, 22, कैलाशपुरी
न्यू सांगानेर रोड, सोडाला, जयपुर-302019
मो.: 9829486839

मन्दिर श्रीवैकुण्ठनाथ जी
हरि मार्ग, शिव कॉलोनी
टोंक फाटक, जयपुर-302015
मो.: 7737114950

श्री सिंहिकासुतः

श्री ध्वजाकारः

Email : ssjayadityapanchang@gmail.com
Website : www.nimbarkparishad.com

मुद्रक : बसन्त जैन मित्तल, सरस्वती प्रिन्टिंग इण्डस्ट्रीज
चांदी की टकसाल, जयपुर - मो.: 8114417253
ईमेल : jainbasant02@gmail.com

₹ 100/-